नया हिन्द

इस नम्बर के खास मज़मून — اس نمبر کے خاص مضمون

स्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद — ستانی کلچر سوسائٹی الٰہ آباد

जनवरी 1957 جنوری

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-
Foreign Rs. 1[illegible]/-
Single Copy As. 10/- only

Can be had from —

Manager, NAYA HIND

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.

नया हिन्द نیا ہند

जिल्द 23 جلد   नम्बर 1 نمبر

जनवरी 1957 جنوری

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद   145، مٹھی گنج، الہ آباد

जनवरी 1957 جنوری

"मैं यह नहीं हूँ !"

डाक्टर भगवानदास

पिछले एक लेख में हमने एक 'महावाक्य' दिया था—"मैं यह नहीं हूँ." मुसलमान सूफ़ियों की बोली में 'महावाक्य' को 'कसूस' या 'शतहियात' कहते हैं. हमारा यह चार शब्दों का छोटा-सा महावाक्य हमारी राय में आत्म विद्या यानी इल्म रूहानी का निचोड़ है. "मैं यह नहीं हूँ", यानी मैं यह हाड़ माँस का जिस्म नहीं हूँ, जिस्म की आँखों से दिखाई देने वाला बाहर का यह सब वजूद भी मैं नहीं हूँ.

इस लेख में हम थोड़े से में यह दिखाना चाहते हैं कि इस तरह के सवालों पर, जैसे यह दुनिया क्या, कैसे और क्यों है और इस में 'मैं' और 'ग़ैर-मैं' में क्या सम्बन्ध है, जो कई तरह के सिद्धान्त माने जाते हैं या कई तरह के ख़याल विद्वानों के हैं, उनमें हमें सन्तोष क्यों नहीं मिला और उन सब में से निकलकर हम अपने इस महावाक्य तक कैसे पहुँचे और उससे हमारी तसल्ली कैसे हुई.

इस दुनिया की बाबत जो तरह-तरह के विचार लोगों में फैले हुए हैं उनमें सबसे पहला विचार वह है जिसे संस्कृत में 'आरम्भवाद' और अंगरेज़ी में 'क्रिएशनइज़्म' कहते हैं. यानी यह कि किसी एक ख़ालिक़ ने, जो अपनी ख़लक़त से अलग वजूद रखता है, इस दुनिया को बनाया है इस दुनिया की बाबत सब से ज़ियादा आम ख़याल यही है कि किसी एक ईश्वर, ख़ुदा, या गाड ने इस दुनिया को बनाया है. वही जब चाहता है बनाता है और जब चाहता है बिगाड़ देता है. अपनी मरज़ी से वह दुनिया को शुरू करता है और वही इसका अन्त कर देता है. ठीक उसी तरह जिस तरह कोई खिलौने बनाने वाला खिलौने बनाता है और फिर उन्हें बिगाड़ देता है यह ख़याल कम-समझ लोगों के लिये संतोष जनक हो सकता है लेकिन समझ के बढ़ने के साथ-साथ किसी को इससे देर तक सन्तोष नहीं मिल सकता. न्याय यानी मनतक़ की निगाह से और भलाई, बुराई, नेकी बदी की निगाह से इस ख़याल में जो ख़ामियां या त्रुटियां हैं वह जानी बूझी हैं, उन्हें यहां दुहराने की ज़रूरत नहीं है. कुछ लोगों का यह भी ख़याल है कि हिन्दू न्याय शास्त्र और वैशेषिक शास्त्र का भी यही मत है. पर ऐसा समझना भूल है.

इसके बाद दूसरा सिद्धान्त जो हमारे सामने आता है उसे संस्कृत में परिणामवाद या विकासवाद और अंगरेज़ी में 'ट्रान्सफ़ार्मेशनइज़्म' कहते हैं. वह सिद्धान्त यह है कि सारी दुनिया एक से दूसरी और दूसरे से तीसरी लगातार

"میں یہ نہیں ہوں!"

ڈاکٹر بھگوان داس

پچھلے ایک لیکھ میں ہم نے ایک 'مہا واکیہ' دیا تھا— "میں یہ نہیں ہوں." مسلمان صوفیوں کی بولی میں 'مہا واکیہ' کو 'نصوص' یا 'شطحیات' کہتے ہیں. ہمارا یہ چار شبدوں کا چھوٹا سا مہاواکیہ ہماری رائے میں آتم ودیا یعنی علم روحانی کا نچوڑ ہے. "میں یہ نہیں ہوں" یعنی میں یہ ہاڑ ماس کا جسم نہیں ہوں، جسم کی آنکھوں سے دکھائی دینے والا باہر کا یہ سب وجود بھی میں نہیں ہوں.

اس لیکھ میں ہم تھوڑے سے میں یہ دکھانا چاہتے ہیں کہ اس طرح کے سوالوں پر، جیسے یہ دنیا کیا، کیسے اور کیوں ہے اور اس میں 'میں' اور 'غیر-میں' میں کیا سمبندھ ہے، جو کئی طرح کے سدھانت مانے جاتے ہیں یا کئی طرح کے خیال ودوانوں میں ہیں، ان سے ہمیں سنتوش کیوں نہیں ملا اور ان سب میں سے نکل کر ہم اپنے اس مہاواکیہ تک کیسے پہنچے اور اس سے ہماری تسلی کیسے ہوئی.

اس دنیا کی بابت جو طرح طرح کے وچار لوگوں میں پھیلے ہوئے ہیں ان میں سب سے پہلا وچار وہ ہے جسے سنسکرت میں 'آرمبھ واد' اور انگریزی میں 'کریشن ازم' کہتے ہیں یعنی یہ کہ کسی ایک خالق نے، جو اپنی خلقت سے الگ وجود رکھتا ہے، اس دنیا کو بنایا ہے. اس دنیا کی بابت سب سے زیادہ عام خیال یہی ہے کہ کسی ایک ایشور، خدا یا گاڈ نے اس دنیا کو بنایا ہے. وہی جب چاہتا ہے بناتا ہے اور جب چاہتا ہے بگاڑ دیتا ہے. اپنی مرضی سے وہ دنیا کو شروع کرتا ہے اور وہی اس کا انت کر دیتا ہے. ٹھیک اسی طرح جس طرح کوئی کھلونے بنانے والا کھلونے بناتا ہے اور پھر انہیں بگاڑ دیتا ہے. یہ خیال کم سمجھ لوگوں کے لئے سنتوش جنک ہو سکتا ہے لیکن سمجھ کے بڑھنے کے ساتھ ساتھ کسی کو اس سے دیر تک سنتوش نہیں مل سکتا. نیائے یعنی منطق کی نگاہ سے اور بھلائی، برائی، نیکی بدی کی نگاہ سے اس خیال میں جو خامیاں یا ترٹیاں ہیں وہ جانی بوجھی ہیں، انہیں یہاں دوہرانے کی ضرورت نہیں ہے. کچھ لوگوں کا یہ بھی خیال ہے کہ ہندو نیائے شاستر اور ویشیشک شاستر کا بھی یہی مت ہے. پر ایسا سمجھنا بھول ہے.

اس کے بعد دوسرا سدھانت جو ہمارے سامنے آتا ہے اسے سنسکرت میں پرنام واد یا وکاس واد اور انگریزی میں 'ٹرانسفارمیشن ازم' کہتے ہیں. وہ سدھانت یہ ہے کہ ساری دنیا ایک سے دوسری اور دوسرے سے تیسری لگاتار

बदलती हुई हालतों का एक सिलसिला है, और हर बाद की हालत अपने से पहली हालत का कुदरती परिणाम या नतीजा है. यही आजकल की साइन्स का सिद्धान्त है. इस सिद्धान्त के अनुसार इस सारी सृष्टि में, जो लगातार बदलती रहती है, दो अलग अलग वजूद हैं जो हमेशा से हैं और हमेशा तक रहेंगे, एक बेजान माद्दा यानी मैटर और दूसरा शक्ति (ताक़त) यानी 'फ़ोर्स'. यह शक्ति कुछ विद्वानों के अनुसार अपने अन्दर समझ बूझ लिये हुए है और कुछ के अनुसार बिलकुल अन्धी शक्ति है. शक्ति और माद्दा लगातार एक दूसरे पर अमल या असर करते रहते हैं और इस अमल या असर से ही दुनिया की सारी सूरतें, सारे गुण और सारी हरकतें यानी सब काम और सब चीज़ें पैदा होती रहती हैं और बदलती बिगड़ती रहती हैं. इस बदलने और बिगड़ने के क़ायदों को आदमी एक दरजे तक समझ भी सकता है. एक दरजे तक इसकी बेतरतीबी में तरतीब और तरतीब में बेतरतीबी भी हमारी समझ में आ सकती है. लेकिन यह दोनों चीज़ें रहती हैं हमेशा अलग-अलग और अनादि हैं, न कभी कोई कम और न कभी कोई ज़ियादा. मोटे तौर पर योग शास्त्र और सांख्य शास्त्र का यही मत है.

रामानुज का विशिष्टाद्वैत भी, जिसमें चित (चेतन) और अचित (जड़) यह दो अलग-अलग चीज़ें मानी गई हैं, इसी से मिलता जुलता है.

मशहूर यूरोपियन फ़िलासफ़र स्पाइनोज़ा का मत है कि दुनिया में दो चीज़ें हैं, एक 'ख़याल' (थॉट) और दूसरा उसका 'फैलाव' (एक्सटेंशन). कुछ और विद्वानों का ख़याल है कि ये दोनों चीज़ें 'जड़' और 'चेतन' यानी 'मैटर' और 'माइन्ड' हैं अलग-अलग लेकिन हैं दोनों एक ही वजूद के अन्दर. ये सब विचार मिलते जुलते हैं.

इन सब विचारों से यह बात तो कुछ कुछ समझ में आ जाती है कि यह दुनिया क्या है, पर ऐसा क्यों है यह बिलकुल समझ में नहीं आता. क्यों और कैसे को समझाने के लिये न जानी बूझी चीज़ों को जानी बूझी चीज़ों से समझाना होता है दूर के 'वह' को या तो पास या बिलकुल नज़दीक के 'मैं' से लाकर मिलाना होता है. तभी तो कोई बात 'मेरी' समझ में आ सकती है, नहीं तो कैसे आ सकती है? इसके अलावा दो अनन्त चीज़ों को मानना जो हमेशा से हमेशा तक अलग-अलग रहने वाली हैं, न्याय यानी मन्तक़ के ख़िलाफ़ है. लगातार और पूरी पूरी तबदीली भी समझ की चीज़ नहीं है जिज्ञासु (खोजी) यानी मुतलाशी की इस से तसल्ली नहीं हो सकती. लगातार तबदीली, जिस से सब प्राणियों को दुख ही दुख हो, दुखी हृदय के लिये कोई तसल्ली की चीज़ नहीं है.

بدلتی ہوئی حالتوں کا ایک سلسلہ ہے، اور ہر بعد کی حالت اپنے سے پہلی حالت کا قدرتی پرینام یا نتیجہ ہے۔ یہی آجکل کی سائنس کا سدھانت ہے۔ اس سدھانت کے انوسار اِس ساری سرشٹی میں، جو لگاتار بدلتی رہتی ہے، دو الگ الگ وجود ہیں جو ہمیشہ سے ہیں اور ہمیشہ تک رہینگے۔ ایک بےجان مادہ یعنی میٹر اور دوسرا شکتی (طاقت) یعنی 'فورس'۔ یہ شکتی کچھ ودوانوں کے انوسار اپنے اندر سمجھ بوجھ لئے ہوئے ہے اور کچھ کے انوسار بالکل اندھی شکتی ہے۔ شکتی اور مادہ لگاتار ایک دوسرے پر عمل یا اثر کرتے رہتے ہیں اور اِس عمل یا اثر سے ہی دنیا کی ساری صورتیں، سارے گن اور ساری حرکتیں یعنی سب کام اور سب چیزیں پیدا ہوتی رہتی ہیں اور بدلتی بگڑتی رہتی ہیں۔ اِس بدلنے اور بگڑنے کے قاعدوں کو آدمی ایک درجہ تک سمجھ بھی سکتا ہے۔ ایک درجہ تک اِس کی بےترتیبی میں ترتیب اور ترتیب میں بےترتیبی بھی ہماری سمجھ میں آسکتی ہے۔ لیکن یہ دونوں چیزیں رہتی ہیں ہمیشہ الگ الگ اور انادی ہیں، نہ کبھی کوئی کم اور نہ کبھی کوئی زیادہ۔ موٹے طور پر یوگ شاستر اور سانکھیہ شاستر کا یہی مت ہے۔

رامانج کا وششٹادویت بھی جس میں چت (چیتن) اور اچت (جڑ) یہ دو الگ الگ چیزیں مانی گئی ہیں، اِسی سے ملتا جلتا ہے۔

مشہور یوروپین فلاسفر اسپائینوزا کا مت ہے کہ دنیا میں دو چیزیں ہیں، ایک 'خیال' (تھاٹ) اور دوسری اس کا 'پھیلاؤ' (ایکسٹینشن)۔ کچھ اور ودوانوں کا خیال ہے کہ یہ دونوں چیزیں 'جڑ' اور 'چیتن' یعنی 'میٹر' اور 'مائنڈ' ہیں الگ الگ لیکن ہیں دونوں ایک ہی وجود کے اندر۔ یہ سب وچار ملتے جلتے ہیں۔

ان سب وچاروں سے یہ بات تو کچھ کچھ سمجھ میں آجاتی ہے کہ یہ دنیا کیا ہے، پر ایسا کیوں ہے یہ بالکل سمجھ میں نہیں آتا۔ کیوں اور کیسے کو سمجھانے کے لئے نہ جانی بوجھی چیزوں کو جانی بوجھی چیزوں سے سمجھانا ہوتا ہے۔ دور کے 'وہ' کو پاس یا بالکل نزدیک کے 'میں' سے لا کر ملانا ہوتا ہے۔ تبھی تو کوئی بات 'میری' سمجھ میں آسکتی ہے، نہیں تو کیسے آسکتی ہے؟ اِس کے علاوہ دو اننت چیزوں کو ماننا جو ہمیشہ سے ہمیشہ تک الگ الگ رہنے والی ہیں، نیائے یعنی منطق کے خلاف ہے۔ لگاتار اور پوری پوری تبدیلی بھی سمجھ کی چیز نہیں ہے۔ جگیاسو (کھوجی) یعنی متلاشی کی اِس سے تسلی نہیں ہو سکتی۔ لگاتار تبدیلی، جس سے سب پرانیوں کو دکھ ہی دکھ ہو، دکھی ہردے کے لئے کوئی تسلی کی چیز نہیں ہے۔

तीसरा सिद्धान्त वह है जिसे संस्कृत में 'मायावाद' या 'आभासवाद' कहते हैं. अंगरेजी में इसे 'इल्युजनइज्म' कहते हैं. सिद्धांत यह है कि यह सारी सृष्टि जो हमें दिखाई देती है और हमारे आँख, कान, हाथ, नाक से महसूस होती है, यह सब केवल माया है, एक धोखा या फ़रेब है, असत्य है, एक स्वप्न (ख़ाब) है. जिस तरह हम सोते में सपना देखते हैं उसी तरह यह जागते का सपना है. मालूम होता है कि है, पर है कुछ भी नहीं, एक ख़याल ही ख़याल है. वह आत्मा, परम आत्मा या ब्रह्म, रूहेआलम, वह सर्वव्यापक, अनादि और अनन्त आपा जो इस सब के अन्दर रमा हुआ है उसकी यह सब केवल एक कल्पना है. वही आत्मा है जिसे अंगरेज़ी में 'एनिमामुन्डी' कहते हैं. वही है, यह सब कुछ है ही नहीं. यह सिद्धांत ऊपर के दोनों सिद्धान्तों से अधिक समझ में आ सकता है.

लेकिन इसमें भी कुछ कठिनाइयाँ रह जाती हैं. आत्मा सपना देखे ही क्यों ? और वह भी इतना दर्दभरा, इतना दुखभरा सपना ? सपना देखना हालत की एक तबदीली है—तबदीली का मतलब है इच्छा, अधूरापन और कमी. अलिफ़ अलिफ़ है. यह यह है. मैं मैं हूँ, यह हम समझ सकते हैं. पर तबदीली का मतलब होता है कि कोई चीज़ थी जो नहीं रही और कोई चीज़ नहीं थी जो वजूद में आ गई. यह बात मनतक़ या न्याय शास्त्र के बुनियादी उसूलों के ख़िलाफ़ है. अंगरेज़ी मे कहते हैं 'ex nihilo nihil fit' यानी नेस्ती से कोई चीज़ वजूद मे नहीं आती. गीता मे लिखा है :—

नासतो विद्यते भावो,
नाभावो विद्यते सत:.

—यानी जो चीज़ नहीं है वह कभी वजूद में नहीं आ सकती और जो चीज़ है वह कभी ग़ैर मौजूद नहीं हो सकती.

इसके अलावा स्वप्न (ख़ाब) में हमें कोई तरतीब या सिलसिला नहीं मिलता. स्वप्न सब बेसिलसिले और बे-तरतीब होते हैं. लेकिन यह जो हमारे जागते जीवन की दुनिया है इसकी ऊपरी बेतरतीबी में भी एक साफ़ तरतीब दिखाई देती है. एक सिलसिला नज़र आता है. यह सिलसिला कहाँ से और कैसे आया ? इस सिद्धान्त के अनुसार हम अनादि, अनन्त और अपरिवर्तनीय यानी कभी न बदलने वाले ब्रह्म का सदा बदलने वाली माया के साथ मेल कैसे बैठायें ? आत्म निर्भरता यानी 'ग़नीयत' के सुख का दुनयवी जीवन के दुखों के साथ मेल कैसे हो ? इस तीसरे सिद्धान्त में यही सब से बड़ी कठिनाई आ जाती है.

इसके अलावा यह भी एक बहुत बड़ा सन्देह रह जाता है कि—क्या मैं जो इस समय अपने आपको इस मन दो मन

تیسرا سدھانت وہ ہے جسے سنسکرت میں 'مایاواد' یا 'آبھاس واد' کہتے ہیں ۔ انگریزی میں اسے 'الیوزن ازم' کہتے ہیں ۔ سدھانت یہ ہے کہ یہ ساری سرشٹی جو ہمیں دکھائی دیتی ہے اور ہمارے آنکھ، کان، ہاتھ، ناک سے محسوس ہوتی ہے، یہ سب کیول مایا ہے، ایک دھوکا یا فریب ہے، استیہ ہے، ایک سوپن (خواب) ہے ۔ جس طرح ہم سوتے میں سپنا دیکھتے ہیں اسی طرح یہ جاگتے کا سپنا ہے ۔ معلوم ہوتا ہے کہ ہے، پر ہے کچھ بھی نہیں، ایک خیال ہی خیال ہے ۔ وہ آتما، پرم آتما یا برہم، روح عالم، وہ سروویاپک، انادی اور اننت آپا جو اس سب کے اندر رما ہوا ہے اس کی یہ سب کیول ایک کلپنا ہے ۔ وہی آتما ہے جسے انگریزی میں 'اینیما مونڈی' کہتے ہیں ۔ وہی ہے، یہ سب کچھ ہے ہی نہیں ۔ یہ سدھانت اوپر کے دونوں سدھانتوں سے ادھک سمجھ میں آسکتا ہے ۔

لیکن اس میں بھی کچھ کٹھنائیاں رہ جاتی ہیں ۔ آتما سپنا دیکھے ہی کیوں ؟ اور وہ بھی ایسا درد بھرا، اتنا دکھ بھرا سپنا ؟ سپنا دیکھنا حالت کی ایک تبدیلی ہے—تبدیلی کا مطلب ہے اچھا، ادھوراپن اور کمی ۔ الف الف ہے ۔ یہ یہ ہے ۔ میں میں ہوں، یہ ہم سمجھ سکتے ہیں پر تبدیلی کا مطلب ہوتا ہے کہ کوئی چیز تھی جو نہیں رہی اور کوئی چیز نہیں تھی جو وجود میں آگئی ۔ یہ بات منطق یا نیائے شاستر کے بنیادی اصولوں کے خلاف ہے ۔ انگریزی میں کہتے ہیں 'ex nihilo nihil fit' یعنی نیستی سے کوئی چیز وجود میں نہیں آتی ۔ گیتا میں لکھا ہے :—

ناستو ودیتے بھاوو
نا بھاوو ودیتے ستہ ۔

—یعنی جو چیز نہیں ہے وہ کبھی وجود میں نہیں آسکتی اور جو چیز ہے وہ کبھی غیر موجود نہیں ہوسکتی ۔

اس کے علاوہ سوپن (خواب) میں ہمیں کوئی ترتیب یا سلسلہ نہیں ملتا ۔ سوپن سب بے سلسلے اور بے ترتیب ہوتے ہیں ۔ لیکن یہ جو ہمارے جاگتے جیون کی دنیا ہے اس کی اوپری بے ترتیبی میں بھی ایک صاف ترتیب دکھائی دیتی ہے ۔ ایک سلسلہ نظر آتا ہے ۔ یہ سلسلہ کہاں سے اور کیسے آیا ؟ اس سدھانت کے انوسار ہم انادی، اننت اور اپریورتنیہ یعنی کبھی نہ بدلنے والے برہم کا سدا بدلنے والی مایا کے ساتھ میل کیسے بٹھائیں ۔ آتم نربھرتا یعنی 'غنیت' کے سکھ کا دنیوی جیون کے دکھوں کے ساتھ میل کیسے ہو ؟ اس تیسرے سدھانت میں یہی سب سے بڑی کٹھنائی آجاتی ہے ۔

اس کے علاوہ یہ بھی ایک بہت بڑا سندیہہ رہ جاتا ہے کہ—کیا میں جو اس سمے اپنے آپ کو اس من دو من

[...] बदलने वाले शरीर के साथ बिलकुल एक समझ रहा —ऐसा मैं क्या सचमुच कुछ और ही चीज़ हूँ ? क्या सचमुच मैं आनन्द, अनादि और सर्वव्यापक, हर जगह हाज़िर नाज़िर हूँ ? क्या सचमुच ऐसा हो सकता है ?

दुनिया की सारी चीज़ों में "मैं हूँ" यही एक पक्की, टिकाऊ, कभी न बदलने वाली और इसीलिये अनादि सचाई है. पच्छिम के एक फ़िलासफ़र ने कहा है 'Cogito Ergo Sum.' यानी 'मैं सोचता हूँ इसलिये मैं हूँ.' इसमें 'मैं सोचता हूँ इसलिये' यह शब्द बिलकुल फ़जूल हैं. 'मैं हूँ' यही काफ़ी है. दुनिया भर की धार्मिक किताबों ने इस सचाई का आदर किया है और इसे जगाया किया है. इन्जील का "मैं हूँ, वह मैं हूँ", ज़िन्द अवस्ता का 'अहमी' यानी 'मैं हूँ', उपनिषद का 'सोऽहमस्मि', 'अहमनामा' और क़ुरान का 'अना', सब एक ही सचाई को ज़ाहिर करते हैं.

लेकिन 'यह' जो 'मुझ' से अलग बाहर की दुनिया है, जो मैं नहीं हूँ, जिसे मैं देखता और महसूस करता हूँ, और 'यह' कहकर पुकारता हूँ, यह भी, अगरचे ग़ैर टिकाऊ, सदा बदलने वाली, फ़ानी और नाशमान है, फिर भी यह भी 'है' ज़रूर, इसका भी वजूद है.

अगर हम इन दोनों को इस तरह मिला सकें कि हमारे अपने वजूद से बाहर जो कुछ है, जो कुछ 'ग़ैर'-'मैं' है वह हमारा 'मैं' के तुफ़ैल से और उसकी बदौलत है, न कि हमारा 'मैं' इस सबके तुफ़ैल से और इसके कारन, इस तरह कि हमारा 'मैं' इस 'ग़ैर-मैं' के साथ जो चाहे व्योहार करता हुआ भी अपने कमाल (पूर्णता) को न खो सके, आत्मा के सब सुख दुख साफ़ आत्मा के ही किये हुए दिखाई दें और, दुनिया में जो कुछ मनरंजन, लीला, क्रीड़ा, तहज़ीबनाव, मौज, इच्छा और ख़्वाहिश दिखाई देती है, वह सब अगर नियति और विधि यानी तरतीब और सिलसिले के साथ साथ चल सकती हो, दूसरे शब्दों में हम दुनिया के इस द्वन्द्व, दुई यानी विरोध को हल कर सकें, तब जाकर और केवल तब ही आत्मा को वह शान्ति, वह सकून, वह 'पीस' मिल सकती है जिसकी हम खोज में हैं.

इन तीन ख़ास सिद्धान्तों के अलावा और भी कई तरह के विचार इस दुनिया के बारे में प्रगट किये जा चुके हैं. पच्छिम में फ़िक्टे (Fichte) नाम का एक मशहूर फ़िलासफ़र, सच्चा ज्ञानी और दूरदर्शी हुआ है. उसका ख़याल है कि—"परम-आत्मा, रूहे आलम (Absolute Ego) को मानने से पहले हमें दो चीज़ें माननी होती हैं, एक आत्मा (Ego) और दूसरा ग़ैर आत्मा (Non Ego). इसके बाद आत्मा इस चीज़ को पहचानता है कि ग़ैर-आत्मा भी वही है, कोई और है ही नहीं. आत्मा और ग़ैर-आत्मा एक दूसरे को तय करते हैं. आत्मा के अन्दर शुरू में कमी या अधूरापन

کے ساتھ بدلنے والے شریر کے ساتھ بالکل ایک سمجھ رہا ہوں— ایسا میں کیا سچ مچ کچھ اور ہی چیز ہوں ؟ کیا سچ مچ میں آنند، انادی اور سرو ویاپک، ہر جگہ حاضر ناظر ہوں ؟ کیا سچ مچ ایسا ہو سکتا ہے ؟

دنیا کی ساری چیزوں میں "میں ہوں" یہی ایک پکی، ٹکاؤ، کبھی نہ بدلنے والی اور اسی لئے انادی سچائی ہے. پچھم کے ایک فلاسفر نے کہا ہے 'Cogito Ergo Sum'— یعنی 'میں سوچتا ہوں اس لئے میں ہوں'؛ اس میں 'میں سوچتا ہوں اس لئے' یہ شبد بالکل فضول ہیں. 'میں ہوں' یہی کافی ہے. دنیا بھر کی دھارمک کتابوں نے اس سچائی کا آدر کیا ہے اور اسے اجاگر کیا ہے. انجیل کا "میں ہوں، وہ میں ہوں"، ژنداوستا کا "اہمی" یعنی 'میں ہوں'، اپنشد کا 'سوہم اسمی'، 'الم نامی' اور قرآن کا 'انا' سب ایک ہی سچائی کو ظاہر کرتے ہیں.

لیکن 'یہ' جو 'مجھ' سے الگ باہر کی دنیا ہے، جو میں نہیں ہوں، جسے میں دیکھتا اور محسوس کرتا ہوں، اور 'یہ' کہہ کر پکارتا ہوں، یہ بھی، اگرچہ غیر ٹکاؤ، سدا بدلنے والی، فانی اور ناشمان ہے، پھر بھی یہ بھی 'ہے' ضرور، اس کا بھی وجود ہے.

اگر ہم ان دونوں کو اس طرح ملا سکیں کہ ہمارے اپنے وجود سے باہر جو کچھ ہے، جو کچھ 'غیر'-'میں' ہے یہ ہمارے 'میں' کے طفیل سے اور اس کی بدولت ہے، نہ کہ ہمارا 'میں' اس سب کے طفیل سے اور اس کے کارن، اس طرح کہ ہمارا 'میں' اس 'غیر میں' کے ساتھ جو چاہے ویوہار کرتا ہوا بھی اپنے کمال (پورنتا) کو نہ کھو سکے، آتما کے سب دکھ سکھ صاف آتما کے ہی کئے ہوئے دکھائی دے جائیں، دنیا میں جو کچھ بھی منورنجن، لیلا، کریڑا، کھیل تماشہ، موج، اچھا اور خواہش دکھائی دیتی ہے، وہ سب اگر نیتی اور ودھی یعنی ترتیب اور سلسلے کے ساتھ ساتھ چل سکتی ہو، دوسرے شبدوں میں ہم دنیا کے اس دوند، دوئی یعنی ورودھ کو حل کر سکیں، تب جاکر اور کیول تب ہی آتما کو وہ شانتی، وہ سکون، وہ 'پیس' مل سکتی ہے جس کی ہم کھوج میں ہیں.

ان تین خاص سدھانتوں کے علاوہ اور بھی کئی طرح کے وچار اس دنیا کے بارے میں پرگٹ کئے جا چکے ہیں. پچھم میں فکٹے (Fichte) نام کا ایک مشہور فلاسفر، سچا گیانی اور دور درشی ہوا ہے. اس کا خیال ہے کہ— پرم آتما، روح عالم (Absolute Ego) کو ماننے سے پہلے ہمیں دو چیزیں ماننی ہوتی ہیں، ایک آتما (Ego) اور دوسرا غیر آتما (Non-Ego). اس کے بعد آتما اس چیز کو پہچانتا ہے کہ غیر آتما بھی وہی ہے، کوئی اور ہے ہی نہیں. آتما اور غیر آتما ایک دوسرے کو طے کرتے ہیں. آتما کے اندر شروع میں کمی یا ادھورا پن

कैसे आत्मा यह हमारी समझ से बाहर की बात है. हमारा सारा ज्ञानवाद (thesis), प्रतिवाद (anti thesis) और समवाद (synthesis) आत्मा, ग़ैर-आत्मा, और दोनों का मेल, इन तीन से ही पैदा होता है." वेदान्त में, शंकर के शारीरिक भाष्य के अन्दर इन्हीं तीनों को अस्मत (मैं), युष्मत (तू), जो बाद में इदम यानी 'यह' हो जाता है, और अन्योन्याध्यास यानी दोनों का नाक़ाबिले बयान मेल लगभग इसी को कहा गया है. दोनों में फ़रक़ भी है पर वह और बात है.

फिर बारबार वही सवाल सामने आता है,—यह सब क्यों ? यह सब दुनिया है क्यों ? यह क्यों एक, फिर दो अलग-अलग और फिर मेल, इस सबकी ज़रूरत क्या ? और यह सब परिवर्तन या तबदीली होती कैसे है ? यह सवाल ज्यों का त्यों बना रहता है. फ़िक्ते स्वीकार करता है कि यह बात आदमी की समझ से बाहर की है तब फिर वह मेल भी अधूरा और बनावटी मेल है. किसी सिलसिले की अगर एक कड़ी समझ से बाहर है तो सारा सिलसिला समझ से बाहर है. एक कड़ी की कमज़ोरी सारी ज़ंजीर की कमज़ोरी है. अगर इस सिद्धान्त से काम चल सकता तो किसी भी दूसरे सिद्धान्त से, जैसे ईश्वर-वाद (theism) से, या इस सिद्धान्त से कि यह जगत और इसकी सारी शक्तियाँ ही ईश्वर हैं, (pantheism) रचनात्मक विकास-वाद (creative evolutin) से, परिवर्तन वाद (transformism) से, इत्तफ़ाक़ (chance) से, और अन्धी शक्ति (blind force)—जैसे किसी भी सिद्धान्त से काम चल सकता है.

फ़िक्ते के बाद उसका एक चेला हीगल (Hegel) बहुत मशहूर हुआ है. पच्छिम के लोग आम तौर पर यह समझते हैं कि हीगल अपने विचारों में फ़िक्ते से और आगे बढ़ा. पर हिन्दुस्तानी विचारधारा के अनुसार हीगल फ़िक्ते से भी और पीछे हट गया.

हीगल आत्मा, 'अहम्' यानी 'मैं' से हटकर फिर 'वह' की तरफ़ चला गया. आत्मा और ग़ैर-आत्मा से हटकर वह वजूद और ग़ैर-वजूद की तरफ़ गया उसका कहना है कि—"शुद्ध वजूद शुद्ध ग़ैर-वजूद है" (Pure Being is Pure Nothing) हीगल का एक ज़िन्दगी भर का चेला जे. एच. स्टरलिंग स्वीकार करता है कि यह, "और भी अँधेरी बात है."

फ़िक्ते इस साफ़ नतीजे पर पहुँच गया था कि वजूद केवल एक ही है और वह आत्मा का वजूद है और यह आत्मा किसी एक प्राणी की आत्मा नहीं, बल्कि सारे विश्व की व्यापक आत्मा है. फ़िक्ते के विचार पूरब की अद्वैत फ़िलासफ़ी के यानी वहदतुलवजूद के अधिक नज़दीक थे.

کیسے آتما یہ ہماری سمجھ سے باہر کی بات ہے. ہمارا سارا گیان واد (thesis), پرتی واد (anti thesis) اور سم واد (synthesis) آتما، غیر - آتما اور دونوں کا میل، ان تین سے ہی پیدا ہوتا ہے." ویدانت میں، شنکر کے شاریرک بھاشیہ کے اندر انہیں تینوں کو اسمت (میں) یشمت (تو) جو بعد میں اِدم یعنی 'یہ' ہو جاتا ہے اور انیونیادھیاس یعنی دونوں کا ناقابل بیان میل لگ بھگ اِسی کو کہا گیا ہے. دونوں میں فرق بھی ہے پر وہ اور بات ہے.

پھر بار بار وہی سوال سامنے آتا ہے —یہ سب کیوں ؟ یہ سب دنیا ہے کیوں ؟ یہ کیوں ایک، پھر دو الگ الگ اور پھر میل، اس سب کی ضرورت کیا ؟ اور یہ سب پریورتن یا تبدیلی ہوتی کیسے ہے ؟ یہ سوال جیوں کا تیوں بنا رہتا ہے. فکتے سویکار کرتا ہے کہ یہ بات آدمی کی سمجھ سے باہر کی ہے. تب پھر وہ میل بھی ادھورا اور بناوٹی میل ہے. کسی سلسلے کی اگر ایک کڑی سمجھ سے باہر ہے تو سارا سلسلہ سمجھ سے باہر ہے. ایک کڑی کی کمزوری ساری زنجیر کی کمزوری ہے. اگر اِس سدھانت سے کام چل سکتا تو کسی بھی دوسرے سدھانت سے، جیسے ایشور واد (theism) سے، یا اِس سدھانت سے کہ جگت اور اِس کی ساری شکتیاں ہی ایشور ہیں (pantheism) رچناتمک وکاس واد (creative evolution) سے، پریورتن واد (trans-formism) سے، اِتفاق (chance) سے، اور اندھی شکتی (blind force)—جیسے کسی بھی سدھانت سے کام چل سکتا ہے.

فکتے کے بعد اس کا ایک چیلا ہیگل (Hegel) بہت مشہور ہوا ہے. پچھم کے لوگ عام طور پر یہ سمجھتے ہیں کہ ہیگل اپنے وچاروں میں فکتے سے اور آگے بڑھا. پر ہندستانی وچار دھارا کے انوسار ہیگل فکتے سے بھی اور پیچھے ہٹ گیا.

ہیگل آتما، 'اہم' یعنی 'میں' سے ہٹکر پھر 'وہ' کی طرف چلا گیا. آتما اور غیر آتما سے ہٹکر وہ وجود اور غیر وجود کی طرف گیا. اُس کا کہنا ہے کہ—"شدھ وجود شدھ غیر - وجود ہے." (Pure Being is Pure Nothing) ہیگل کا ایک زندگی بھر کا چیلا جے. ایچ. اسٹرلنگ سویکار کرتا ہے کہ یہ "اور بھی اندھیری بات ہے."

فکتے اس صاف نتیجے پر پہونچ گیا تھا کہ وجود کیول ایک ہی ہے اور وہ آتما کا وجود ہے اور یہ آتما کسی ایک پرانی کی آتما نہیں، بلکہ سارے وشو کی ویاپک آتما ہے. فکتے کے وچار پورب کی ادویت فلسفی کے یعنی وحدت الوجود کے ادھک نزدیک تھے.

उपनिषद् के ऋषि यानी ब्रह्मज्ञानी के इससे अधिक सिवाय और कोई नहीं आया. यही वेदान्त है. हम किसी और वजूद को सिवाय अपनी आत्मा के जानते ही नहीं. हीगल ने पिछले के विचारों को आगे बढ़ाने के बजाय उन्हें और धुंधला कर दिया.

एकवाद या एकान्तवाद में जिसे मोनिज़्म कहते हैं और अद्वैतवाद में जिसे 'नान-डुअलिज़्म' (non dualism) कहना चाहिये बारीक लेकिन साफ़ फ़र्क़ है. एकवाद में दूसरे की गुंजाइश ही नहीं. पर अद्वैतवाद में दूसरे को मानकर उसे अपनाया जाता है और दुई को मिटाया जाता है. फ़र्क़ ऐसा ही है जैसा यह कहना कि 'ख़ुदा ही सब कुछ है' या 'मैं सब कुछ हूँ' या 'मैं ही हूँ' और यह कहना कि 'मैं ही हूँ' और यह कहना कि 'मैं ग़ैर-मैं नहीं हूँ'. इस आख़िरी महावाक्य के अन्दर सारी दुनिया की तरतीब और सारा वजूद आ गया. इससे पहले के वाक्यों में नहीं आया.

इञ्जील में लिखा है कि सुलेमान ने एक बार कहा था — "केवल एक ही है और कोई दूसरा नहीं है" शायद सुलेमान का यही मतलब था. मुसलमान सूफ़ी जब कहता है कि "शिर्क करना यानी अल्लाह के साथ दूसरे को शरीक करना कुफ़्र है, बातिल है और ग़लत है," यानी अविद्या है तो शायद उसका भी यही मतलब होता है

हीगल का यह कहना ठीक ही है कि—"वजूद ग़ैर-वजूद हो जाता है और ग़ैर-वजूद वजूद हो जाता है," इसी को वेदान्त में सतत प्रवाह कहा गया है. बात तो ठीक है पर यह केवल हालत का बयान करना है इसके क्यों और कैसे को समझाना नहीं है. हम ऊपर कह चुके हैं कि किसी चीज़ का न होकर हो जाना भी न्याय यानी मन्तक़ के ख़िलाफ़ है. हम यह महसूस करना चाहते हैं कि असलियत नहीं बदली. जहाँ तक वजूद और ग़ैर-वजूद की बात है वहाँ तक हम केवल एक वजूद को मानते हैं, और वह है "मैं हूँ" हम और किसी वजूद को न जानते हैं न पहचानते हैं. जो कुछ और हमें महसूस होता है उसे हम असत्य, नाशमान, फ़ानी "यह" मानते हैं जो ग़ैर-आत्मा है वह नहीं है. "मुझ" से बाहर कुछ नहीं.

ज़रा हम फिर से इस दलील को दुहरा कर देखें.

इस सारी दुनिया में हमारी दिलचस्पी केवल दो चीज़ों से है. हमारे सारे जीवन में केवल यही दो चीज़ें हैं. हमारा सारा विश्व केवल इन्हीं दो का बना हुआ है— एक "मैं" और दूसरी "यह", यानी "आपा" और "ग़ैर-आपा". "ग़ैर-आपे" में जो कुछ दिखाई देता है और महसूस होता है सब आ गया. कहीं न कहीं इन्हीं दो के बीच में सारी सृष्टि का राज़ यानी रहस्य छिपा हुआ है. अगर हम इन दोनों के सम्बन्ध को ठीक-ठीक समझ लें तो सारी सृष्टि का राज़ हम पर खुल जावे.

[illegible] میں اُپنشد یعنی وحدت الوجود کے اِس سے آگے تصور اور کوئی نہیں آیا. یہی ویدانت ہے. ہم کسی اور وجود کو سوائے اپنی آتما کے جانتے ہی نہیں. ہیگل نے [illegible] کے وچاروں کو آگے بڑھانے کے بجائے اُنہیں اور دھندلا کر دیا.

ایک واد یا ایکانت واد میں جسے مونزم کہتے ہیں اور ادویت واد میں جسے 'نان-ڈوئلزم' (non-dualism) کہنا چاہئے باریک لیکن صاف فرق ہے. ایک واد میں دوسرے کی گنجائش ہی نہیں. پر ادویت واد میں دوسرے کو مان کر اُسے اپنایا جاتا ہے اور دوئی کو مٹایا جاتا ہے. فرق ایسا ہی ہے جیسا یہ کہنا کہ 'خدا ہی سب کچھ ہے' یا 'میں سب کچھ ہوں' یا یہ کہنا کہ 'میں ہی ہوں' اور 'میں غیر-میں نہیں ہوں'. اِس آخری مہاواکیہ کے اندر ساری دنیا کی ترتیب اور سارا وجود آگیا. اِس سے پہلے کے واکیوں میں نہیں آیا.

انجیل میں لکھا ہے کہ سلیمان نے ایکبار کہا تھا—"کیول ایک ہی ہے اور کوئی دوسرا نہیں ہے." شاید سلیمان کا یہی مطلب تھا. مسلمان صوفی جب کہتا ہے کہ "شرک کرنا یعنی اللہ کے ساتھ دوسرے کو شریک کرنا کفر ہے، باطل ہے اور غلط ہے." یعنی اودیا ہے تو شاید اُس کا بھی یہی مطلب ہوتا ہے.

ہیگل کا یہ کہنا ٹھیک ہی ہے کہ—"وجود غیر وجود ہو جاتا ہے اور غیر وجود وجود ہو جاتا ہے." اسی کو ویدانت میں ستت پرواہ کہا گیا ہے. بات تو ٹھیک ہے پر یہ کیول حالت کا بیان کرنا ہے اُس کے کیوں اور کیسے کو سمجھانا نہیں ہے. ہم اوپر کہہ چکے ہیں کہ کسی چیز کا نہ ہو کر ہو جانا بھی نیائے یعنی منطق کے خلاف ہے. ہم یہ محسوس کرنا چاہتے ہیں کہ اصلیت نہیں بدلی. جہاں تک وجود اور غیر وجود کی بات ہے وہاں تک ہم کیول ایک وجود کو جانتے ہیں، اور وہ ہے "میں ہوں." ہم اور کسی وجود کو نہ جانتے ہیں نہ پہچانتے ہیں. جو کچھ اور ہمیں محسوس ہوتا ہے اُسے ہم استیہ، ناشمان، فانی "یہ" مانتے ہیں. جو غیر-آتما ہے وہ نہیں ہے. "مجھ" سے باہر کچھ نہیں.

ذرا ہم پھر سے اِس دلیل کو دوہرا کر دیکھیں.

اِس ساری دنیا میں ہماری دلچسپی کیول دو چیزوں سے ہے. ہمارے سارے جیون میں کیول یہی دو چیزیں ہیں. ہمارا سارا وشو انہیں دو کا بنا ہوا ہے—ایک "میں" اور دوسری "یہ" یعنی "آپا" اور "غیر-آپا". "غیر-آپے" میں کچھ دکھائی دیتا ہے اور محسوس ہوتا ہے سب آگیا. کہیں نہ کہیں انہیں دو کے بیچ میں ساری سرشٹی کا راز یعنی رہسیہ چھپا ہوا ہے. اگر ہم دونوں کے سمبندھ کو ٹھیک ٹھیک سمجھ لیں تو ساری سرشٹی کا راز ہم پر کھل جاوے.

मैं यह नहीं हूँ!

अब देखिये कि बजाय यह कहने के कि "वजूद कोई चीज़ नहीं" यह कहना ज़ियादा ठीक मालूम होता है और ज़ियादा आसानी से समझ में आता है कि "वजूद ग़ैर-वजूद नहीं है" या "वजूद कोई ख़ास चीज़ अलग नहीं है." इससे भी अच्छा यह मालूम होता है कि—"आत्मा ग़ैर आत्मा नहीं है." इससे और अच्छा यह मालूम होता है कि "मैं ग़ैर-मैं नहीं हूँ." इससे और अच्छा यह मालूम होता है कि "मैं ग़ैर-यह हूँ". और इन सब से अच्छा आख़ीर में यह मालूम होता है कि "मैं यह नहीं हूँ". संस्कृत में 'अहम्-एतत्-न' यही ठीक है, यही असलीयत है, यही सच्चा फ़लसफ़ा है.

इसमें सबसे पहले "मैं" का वजूद माना गया है. फिर "यह" का वजूद अलग फ़र्ज़ कर लिया गया है, और फिर अपने को यानी आत्मा को और शरीर को एक मान लिया गया है. तब ही "यह" "यह" होता है और फिर आख़ीर में इस 'यह' को गद्दी से हटाकर "मैं यह शरीर नहीं हूँ". "मैं यह सब नहीं हूँ" कहकर आत्मा यानी असल वजूद को अपने ग़ैर-फ़ानी अनन्त और अनादि जलाल और कमाल में छोड़ दिया जाता है.

इस नए महावाक्य से हमें क्या लाभ? लाभ. यह है कि जिस मेल की हम तलाश में थे वह हमें मिल जाता है. हमें वह एकता मिल जाती है, वह समवाद (synthesis) मिल जाता है, जिसमें सब कुछ आ गया, जिसके अन्दर वाद और प्रतिवाद सब एक हो जाते हैं.

"मैं" केवल "मैं" ही हूँ. "मैं" "ग़ैर मैं" नहीं हूँ. अपने सिवा और कुछ नहीं है—यह विचार बिलकुल एक पूरा विचार है. यह एक साफ़ सचाई है. गहरी नींद में भी यह सचाई क़ायम रहती है.

हम कह चुके हैं कि—"मैं ग़ैर-मैं नहीं हूँ" कहने की निस्बत "मैं 'यह' नहीं हूँ", कहना ज़ियादा ठीक है. इसका कारण यह है कि "ग़ैर-मैं" के मुक़ाबले में "यह" जल्दी समझ में आता है.

जिस किसी चीज़ के बाबत भी हम "यह" कह सकते हैं वह चीज़ ज़ाहिर है 'हम' से अलग है. वह 'ग़ैर-मैं' है. लेकिन इसके साथ ही 'मैं' और 'ग़ैर-मैं' में फ़रक़ इतना साफ़ है कि इन दोनों का किसी तरह भी मेल ठीक नहीं लगता. न वह एक दूसरे का अक्स कहे जा सकते हैं. लेकिन अगर हम 'ग़ैर-मैं' की जगह 'यह' कहें तो यह कठिनाई दूर हो जाती है. हमारा शरीर हमारे लिये साफ़ 'यह' है. हम इसी तरह बोलते हैं,—यह शरीर मेरा है, यह कोट मेरा है, मेरा है, मैं नहीं.—मुझसे अलग है, फिर भी मुझसे सम्बन्ध रखता है. और अकसर तो हम अपने शरीर के साथ अपने को एक महसूस करने लगते

میں یہ نہیں ہوں!

اب دیکھئے کہ بجائے یہ کہنے کے کہ "وجود کوئی چیز نہیں" یہ کہنا زیادہ ٹھیک معلوم ہوتا ہے اور زیادہ آسانی سے سمجھ میں آتا ہے کہ "وجود غیر-وجود نہیں ہے" یا "وجود کوئی خاص الگ چیز نہیں ہے." اس سے بھی اچھا یہ معلوم ہوتا ہے کہ—"آتما غیر-آتما نہیں ہے." اس سے اور اچھا یہ معلوم ہوتا ہے کہ "میں غیر-میں نہیں ہوں." اس سے اور اچھا یہ معلوم ہوتا ہے کہ "میں غیر-یہ ہوں." اور ان سب سے اچھا آخیر میں یہ معلوم ہوتا ہے کہ "میں یہ نہیں ہوں." سنسکرت میں 'اہم-ایتت-نہ' یہی ٹھیک ہے' یہی اصلیت ہے' یہی سچا فلسفہ ہے.

اس میں سب سے پہلے "میں" کا وجود مانا گیا ہے. پھر "یہ" کا وجود الگ فرض کر لیا گیا ہے' اور پھر اپنے کو یعنی آتما کو اور شریر کو ایک مان لیا گیا ہے. تب ہی "یہ" "یہ" ہوتا ہے اور پھر آخیر میں اس 'یہ' کو گدی سے ہٹا کر "میں یہ شریر نہیں ہوں" "میں یہ سب نہیں ہوں" کہہ کر آتما یعنی اصل وجود کو اپنے غیر فانی اننت اور انادی جلال اور کمال میں چھوڑ دیا جاتا ہے.

اس نئے مہاواکیہ سے ہمیں کیا لابھ؟ لابھ یہ ہے کہ جس میل کی ہم تلاش میں تھے وہ ہمیں مل جاتا ہے. ہمیں وہ ایکتا مل جاتی ہے' وہ سمواد (synthesis) مل جاتا ہے' جس میں سب کچھ آ گیا' جس کے اندر واد اور پرتی واد سب ایک ہو جاتے ہیں.

"میں" کیول "میں" ہی ہوں. "میں" "غیر-میں" نہیں ہوں. اپنے سوا اور کچھ نہیں ہے—یہ وچار بالکل ایک پورا وچار ہے. یہ ایک صاف سچائی ہے. گہری نیند میں بھی یہ سچائی قائم رہتی ہے.

ہم کہہ چکے ہیں کہ—"میں غیر-میں نہیں ہوں" کہنے کی نسبت "میں 'یہ' نہیں ہوں" یہ کہنا زیادہ ٹھیک ہے. اس کا کارن یہ ہے کہ "غیر-میں" کے مقابلہ میں "یہ" جلدی سمجھ میں آتا ہے.

جس کسی چیز کے بابت بھی ہم "یہ" کہہ سکتے ہیں وہ چیز ظاہر ہے 'ہم' سے الگ ہے. وہ 'غیر-میں' ہے. لیکن اس کے ساتھ ہی "میں" اور 'غیر-میں' میں فرق اتنا صاف ہے کہ ان دونوں کا کسی طرح بھی میل ٹھیک نہیں لگتا. نہ وہ ایک دوسرے کا عکس کہے جا سکتے ہیں. لیکن اگر ہم 'غیر-میں' کی جگہ 'یہ' کہیں تو یہ کٹھنائی دور ہو جاتی ہے. ہمارا شریر ہمارے لئے صاف 'یہ' ہے, ہم اسی طرح بولتے ہیں'—یہ شریر میرا ہے' یہ کوٹ میرا ہے میرا ہے' میں نہیں. مجھ سے الگ ہے' پھر بھی مجھ سے سمبندھ رکھتا ہے. اور اکثر تو ہم اپنے شریر کے ساتھ اپنے کو ایک محسوس کرنے لگتے

हम कहते हैं—मैं आ रहा हूँ, मैं जाता हूँ, मैं मौजूद हूँ, यहाँ हूँ, मैं कला हूँ, मैं अच्छा हूँ, मैं बीमार हूँ, मैं भूखा हूँ वगैरह. जो चीज़ मेरी है वह मैं नहीं हूँ लेकिन फिर भी वह मेरी मैं का ही एक हिस्सा या फैलाव है

मैं यह नहीं (हूँ) — जब हम यह कहते हैं तो हमारे 'यह' के अन्दर हमारे आप को छोड़कर बाकी सारी दुनिया आ जाती है. लेकिन हम अपनी असलीयत के सामने इस अपनी असलीयत से इनकार कर देते हैं मानना और इनकार यहाँ दोनों साथ-साथ चलते हैं इसी में अनन्त 'हाँ' और अनन्त 'नहीं' या गतिहीन गति आ जाती है इस गति से ही हमें देश (space) और काल (time) का पता चलता है बल्कि इस गति से ही देश और काल पैदा होते हैं, प्रलय में या गहरी नींद में जहाँ गति नहीं वहाँ न देश है और न काल

गति पूर्णता में अपूर्णता आए बिना हो ही नहीं सकती

हमारे इस महा वाक्य में—मैं यह नहीं हूँ गति है अनन्तता है, इतरता (ग़ैरियत) भी है और फिर स्थापना यानी अपने को अपनी जगह पर क़ायम कर लेना भी है तब जाकर 'मैं' और 'यह' दोनों मिलकर एक असलियत हो जाते हैं. जो अकाल कालातीत देशातीत क्रियातीत निर्विशेष एक रस लामकान, और लाज़मान ख़याल से बालातर होती है इसी हालत का नाम आत्मबोध यानी मारफ़त है फिर मैं ही मैं रह जाता है कोई ग़ैर मैं रहता ही नहीं न कोई देश, न कोई काल और न कोई ग़ैर

यही परमार्थ है इसी को कूटस्थ दृष्टि कहते हैं, अपरिमित दृष्टि, सर्व दृष्टि, व्यापक दृष्टि या अनन्त दृष्टि निगाहे कामिल भी इसी को कहते हैं फिर वहाँ न देश रहता है, न काल और न गति तब फिर उस अनन्त और अनादि की निगाह में मैं ही मैं रह जाता है कोई ग़ैर मैं रहता ही नहीं, आँखवाले के लिए उस आँख वाले के लिये जिसकी आँख कभी नहीं झपकती फिर कोई ग़ैर नहीं रह जाता.

इसी मुक़ाम पर पहुँचकर उपनिषदों के द्रष्टा अपने अन्दर सबको और सबके अन्दर अपने को देखते थे

इसी मुक़ाम पर पहुँचकर दादू ने कहा था —

इश्क़ अल्लह की ज़ात है—इश्क़ अल्लह मौजूद

लेकिन दुनयवी निगाह यानी व्यवहार दृष्टि एक अलग चीज़ है. यह खंड दृष्टि है इसीको व्यष्टि दृष्टि या परिमित दृष्टि भी कहते हैं इस दृष्टि में मैं मैं रहता है और 'यह' यह. देश, काल और ग़ैरियत सब इसी निगाह की चीज़ें हैं. जब निगाह अन्दर को पलट जाती है तो देश, काल और ग़ैरियत सब ख़त्म हो जाते हैं, तब सब 'वही वह सब मैं ही मैं' रह जाते हैं

ہیں۔ ہم کہتے ہیں — میں آرہا ہوں، میں جاتا ہوں، میں موجود ہوں، میں یہاں ہوں، میں ملا ہوں، میں اچھا ہوں، میں بیمار ہوں، میں بھوکا ہوں وغیرہ جو چیز میری ہے وہ میں نہیں ہوں۔ لیکن پھر بھی وہ میری میں کا ہی ایک حصہ یا پہلو ہے۔

میں یہ نہیں (ہوں) — جب ہم یہ کہتے ہیں تو ہمارے 'یہ' کے اندر ہمارے آپ کو چھوڑ کر باقی ساری دنیا آجاتی ہے۔ لیکن ہم اپنی اصلیت کے سامنے اس کی اصلیت سے انکار کر دیتے ہیں ماننا اور انکار یہاں دونوں ساتھ ساتھ چلتے ہیں اسی میں اننت 'ہاں' اور اننت 'نہیں' ملی گتی ہین گتی آجاتی ہے اس گتی سے ہی ہمیں دیش (space) اور کال (time) کا پتہ چلتا ہے بلکہ اس گتی سے ہی دیش اور کال پیدا ہوتے ہیں، پرلے میں یا گہری نیند میں جہاں گتی نہیں وہاں نہ دیش ہے نہ کال۔

گتی پورنتا میں اپورنتا آئے بنا ہو ہی نہیں سکتی

ہمارے اس مہاواکیہ میں — میں یہ نہیں ہوں گتی ہے، اننتتا ہے، اِترتا (غیریت) بھی ہے اور پھر ستھاپنا یعنی اپنے کو اپنی جگہ پر قائم کر لینا بھی ہے تب جاکر 'میں' اور 'یہ' دونوں مل کر ایک اصلیت ہو جاتے ہیں جو اکال، کالاتیت، دیشاتیت، کریاتیت، نروشیش، ایک رس، لامکاں اور لازماں خیال سے بالاتر ہوتی ہے اسی حالت کا نام آتم بودھ یعنی معرفت ہے پھر میں ہی میں رہ جاتا ہے کوئی غیر میں رہتا ہی نہیں نہ کوئی دیش، نہ کوئی کال اور نہ کوئی غیر

یہی پرمارتھ ہے اسی کو کوٹستھ درشٹی کہتے ہیں اپرمت درشٹی، سرو درشٹی، ویاپک درشٹی یا اننت درشٹی نگاہ کامل بھی اسی کو کہتے ہیں۔ پھر وہاں نہ دیش رہتا ہے نہ کال اور نہ گتی تب پھر اس اننت اور انادی کی نگاہ سے میں ہی میں رہ جاتا ہے کوئی غیر میں رہتا ہی نہیں آنکھ والے کے لئے، اس آنکھ والے کے لئے جس کی آنکھ کبھی نہیں جھپکتی پھر کوئی غیر نہیں رہ جاتا

اسی مقام پر پہنچ کر اپنشدوں کے درشٹا اپنے اندر سب کو اور سب کے اندر اپنے کو دیکھتے تھے

اسی مقام پر پہنچ کر دادو نے کہا تھا —

عشق اللہ کی ذات ہے — عشق اللہ موجود

لیکن دنیوی نگاہ یعنی ویوہار درشٹی ایک الگ چیز ہے۔ یہ کھنڈ درشٹی ہے۔ اسی کو ویشٹی درشٹی یا پرمت درشٹی بھی کہتے ہیں۔ اس درشٹی میں 'میں' میں رہتا ہے اور 'یہ' یہ دیش، کال اور غیریت سب اسی نگاہ کی چیزیں ہیں جب نگاہ اندر کو الٹ جاتی ہے تو دیش، کال اور غیریت سب ختم ہو جاتے ہیں، تب سب وہی 'وہ' سب 'میں ہی میں' رہ جاتے ہیں۔

लोकमान्य तिलक की याद

पंडित सुन्दरलाल

50 बरस पहले की याद काफ़ी धुंधली हो जाती है, फिर भी कुछ बातें दिल पर ऐसा गहरा असर डालती हैं कि बरसों बाद भी मालूम होता है कि अभी कल की बात है.

ईसा की उन्नीसवीं सदी विदा हो रही थी, बीसवीं आ रही थी. लाहौर में इंडियन नेशनल कांग्रेस की सालाना बैठक होने वाली थी. मैं डी० ए० वी० कालेज का विद्यार्थी था. देश के बड़े-बड़े नेता लाहौर आए. तिलक महाराज—उस समय तक 'लोकमान्य' की उपाधि उनके नाम के साथ नहीं जुड़ी थी—केवल एक राजनीतिक नेता ही नहीं थे, संस्कृत और वैदिक साहित्य के वे बहुत बड़े विद्वान और ऊंचे दर्जे के ज्योतिष जानने वाले भी थे. उन्हीं दिनों लाहौर आर्य-समाज कालेज पार्टी का सालाना जलसा हो रहा था. उस में तिलक महाराज ख़ास तौर से निमन्त्रित किये गए. वे आए. मैं भी जलसे में बैठा था. मेरे और उनके बीच शायद दो गज़ का फ़ासला रहा होगा. उनकी लाल तिल्लेदार मरहठी पगड़ी और मरहठी अंगरखा मुझे आज तक याद हैं. मैंने उस तरह की पगड़ी उस दिन पहली बार देखी. तिलक महाराज की सादगी का मेरे दिल पर बहुत गहरा असर हुआ. उनके दर्शनों का वह पहला मौक़ा था.

लगभग पाँच बरस बीत गए. मैं लाहौर से बी० ए० पास करके इलाहाबाद एल-एल० बी० पढ़ने के लिए गया.

उन दिनों भारत के राजनैतिक जीवन का सबसे बड़ा केन्द्र कलकत्ता था, दूसरा केन्द्र था पूना. उस समय तक हिन्दू मुसलमान का कोई फ़रक़ नहीं था. अंगरेज़ी शासकों ने इस देश के उभरते हुए राजनीतिक जीवन को कुचलने के लिए और हिन्दू मुसलमानों को लड़ाने के लिये बंगाल के दो टुकड़े कर दिये, पूर्वी बंगाल मुस्लिम प्रान्त था और पश्चिमी बंगाल हिन्दू प्रान्त.

इस बंग भंग के ख़िलाफ़ पहले बंगाल में और फिर देश भर में ज़ोरदार आन्दोलन शुरू हुआ. बंगाल के नगर नगर और गाँव गांव में हिन्दू और मुसलमानों ने एक दूसरे के राखी बाँधी. राखी बाँधने के वक़्त कहा जाता था:—"भाई भाई एक ठौंई, भेद नाहीं भेद नाहीं." बंग भंग के ख़िलाफ़ देश व्यापी आन्दोलन के सब से बड़े नेता थे पूना के श्री बाल गंगाधर तिलक.

इन हालात में दिसम्बर सन 1905 में बनारस में कांग्रेस का इक्कीसवां अधिवेशन हुआ. श्री गोपाल कृष्ण गोखले सभापति थे. देश में काफ़ी जोश था. इलाहाबाद से कुछ और विद्यार्थियों के साथ मैं बनारस पहुँचा. हम लोग कांग्रेस

لوکمانیہ تلک کی یاد

پنڈت سندر لال

پچاس برس پہلے کی یاد کافی دھندھلی ہو جاتی ہے، پھر بھی کچھ باتیں دل پر ایسا گہرا اثر ڈالتی ہیں کہ برسوں بعد بھی معلوم ہوتا ہے کہ ابھی کل کی بات ہے۔

عیسیٰ کی انیسویں صدی بدا ہو رہی تھی، بیسویں آ رہی تھی۔ لاہور میں انڈین نیشنل کانگریس کی سالانہ بیٹھک ہونے والی تھی۔ میں ڈی۔ اے۔ وی۔ کالج کا ودیارتھی تھا۔ دیش کے بڑے بڑے نیتا لاہور آئے۔ تلک مہاراج—اُس سمے تک 'لوکمانیہ' کی اُپادھی اُن کے نام کے ساتھ نہیں جڑی تھی—کیول ایک راجنیتک نیتا ہی نہیں تھے، سنسکرت اور ویدک ساہتیہ کے وے بہت بڑے ودوان اور اونچے درجے کے جیوتش جاننے والے بھی تھے۔ انہیں دنوں لاہور آریہ سماج، کالج پارٹی کا سالانہ جلسہ ہو رہا تھا۔ اُس میں تلک مہاراج خاص طور سے نمنترت کئے گئے۔ وے آئے۔ میں بھی جلسہ میں بیٹھا تھا۔ میرے اور اُن کے بیچ شاید دو گز کا فاصلہ رہا ہوگا۔ اُن کی لال تلےدار مرہٹی پگڑی اور مرہٹی انگرکھا مجھے آج تک یاد ہیں۔ میں نے اُس طرح کی پگڑی اُس دن پہلی بار دیکھی۔ تلک مہاراج کی سادگی کا میرے دل پر بہت گہرا اثر ہوا۔ اُن کے درشنوں کا وہ پہلا موقع تھا۔

لگ بھگ پانچ برس بیت گئے۔ میں لاہور سے بی۔ اے۔ پاس کر کے الہ آباد ایل۔ ایل۔ بی۔ پڑھنے کے لئے گیا۔

اُن دنوں بھارت کے راجنیتک جیون کا سب سے بڑا کیندر کلکتہ تھا۔ دوسرا کیندر تھا پونہ۔ اُس سمے تک ہندو مسلمان کا کوئی فرق نہیں تھا۔ انگریز شاسکوں نے اِس دیش کے اُبھرتے ہوئے راجنیتک جیون کو کچلنے کے لئے اور ہندو مسلمانوں کو لڑانے کے لئے بنگال کے دو ٹکڑے کر دیئے، پوربی بنگال مسلم پرانت تھا اور پشچمی بنگال ہندو پرانت۔

اِس بنگ بھنگ کے خلاف پہلے بنگال میں اور پھر دیش بھر میں زوردار آندولن شروع ہوا۔ بنگال کے نگر نگر اور گاؤں گاؤں میں ہندو اور مسلمانوں نے ایک دوسرے کے راکھی باندھی۔ راکھی باندھنے کے وقت کہا جاتا تھا:—"بھائی بھائی ایک ٹھائیں، بھید ناہیں بھید ناہیں۔" بنگ بھنگ کے خلاف دیش ویاپی آندولن کے سب سے بڑے نیتا تھے پونہ کے شری بال گنگا دھر تلک۔

اِن حالات میں دسمبر سن 1905 میں بنارس میں کانگریس کا اِکیسواں ادھیویشن ہوا۔ شری گوپال کرشن گوکھلے سبھاپتی تھے۔ دیش میں کافی جوش تھا۔ الہ آباد سے کچھ اور ودیارتھیوں کے ساتھ میں بنارس پہونچا۔ ہم لوگ کانگریس

सीधे स्वयंसेवक थे. उस समय इंडियन नेशनल कांग्रेस की और ही हालत थी. कांग्रेस के हर सालाना इजलास में सब से पहला प्रस्ताव जो पास हुआ करता था वह अंग्रेज़ सरकार की राजभक्ति और इंगलैंड के बादशाह की वफ़ादारी का होता था. उस साल भी सबसे पहले यही प्रस्ताव सामने आया. पहली बार देश के कुछ नेताओं ने इसका विरोध किया उनके अगुआ थे श्री बाल गंगाधर तिलक, दूसरे थे लाला लाजपतराय. मुझे तिलक महाराज के उस समय के यह शब्द आज तक याद हैं—'We have been over-loyal upto this time, let us decrease our loyalty" यानी "अब तक हम ज़रूरत से ज़ियादा वफ़ादार रहे हैं; अब हमें अपनी वफ़ादारी में कुछ कमी करनी चाहिए." उन्हीं दिनों इंगलैंड से प्रिन्स आफ़ वेल्स भारत आए हुए थे और देश का दौरा कर रहे थे. तिलक महाराज का समर्थन करते हुए लाला लाजपत राय के ये शब्द भी मुझे याद हैं :—'Let the Prince go and tell his father that there is no welcome for him in the Indian heart' यानी—'प्रिन्स आफ़ वेल्स को इंगलैंड जाकर अपने बाप से यह कहना चाहिए कि भारतवासियों के दिलों में प्रिंस के लिए कोई स्वागत का भाव नहीं है' मुझे एक तीसरे वक्ता के ये शब्द भी याद हैं:—"कांग्रेस अभी तक नाबालिग़ थी. उसे शासकों की देख रेख की ज़रूरत थी, अब वह 21 साल की यानी बालिग़ हो चुकी, अब उसे अपना काम खुद संभालना चाहिए." पर अभी उस समय तक अधिक एहतियात बरतने वाले पुराने नेताओं का कांग्रेस में ज़ोर था वफ़ादारी का प्रस्ताव किसी तरह पास हो गया, इसके साथ ही तिलक महाराज आज़ादी की उमंग रखने वाले लाखों भारतवासियों के दिलों में सबसे बड़े नेता की हैसियत से चमकने लगे मेरे दिल में भी उनकी ओर "आश्वास, स्नेह और भक्ति" बढ़ती चली गई.

बनारस कांग्रेस के बाद ही बंग भङ्ग के जवाब में तिलक महाराज ने चौमुखी प्रोग्राम देश के सामने रखा। इसमें पहला "स्वदेशी" था. देश के उद्योगधंधे उस समय बहुत दबे हुए थे. अरबों रुपयों का माल योरप से आता था जिस में साठ करोड़ रुपये सालाना का केवल कपड़ा था. देश के कारीगर भूखे मर रहे थे. देश ग़रीब होता जा रहा था स्वदेशी का मतलब था कि हम अपने देश के उद्योग धंधों को फिर से चमकाएं और अपने रोज़मर्रा के व्यवहार में विदेशों की बनी चीज़ों को छोड़कर जहां तक हो सके देश की बनी हुई चीज़ें ही काम में लायें।

दूसरा था "बायकाट" यानी यह कि हम अंगरेज़ों के अन्याय के जवाब में इंगलैंड के बने हुए हर तरह के माल का ख़ास तौर से बहिष्कार करें. यह बायकाट एक राजनैतिक

میں سویم سیوک تھے۔ اُس سمئے اِنڈین نیشنل کانگریس کی اور ہی حالت تھی۔ کانگریس کے ہر سالانہ اجلاس میں سب سے پہلا پرستاؤ جو پاس ہوا کرتا تھا وہ انگریز سرکار کی راج بھکتی اور انگلینڈ کے بادشاہ کی وفاداری کا ہوتا تھا۔ اُس سال بھی سب سے پہلے یہی پرستاؤ سامنے آیا۔ پہلی بار دیش کے کچھ نیتاؤں نے اِس کا وِرودھ کیا۔ اُن کے اگوا تھے شری بال گنگادھر تلک، دوسرے تھے لالہ لاجپت رائے۔ مجھے تلک مہاراج کے اُس سمئے کے یہ شبد آج تک یاد ہیں—"We have been over-loyal upto this time, let us decrease our loyalty." یعنی "اب تک ہم ضرورت سے زیادہ وفادار رہے ہیں، اب ہمیں اپنی وفاداری میں کچھ کمی کرنی چاہیئے۔" اِنہیں دنوں اِنگلینڈ سے پرنس آف ویلس بھارت آئے ہوئے تھے اور دیش کا دورہ کر رہے تھے۔ تلک مہاراج کا سمرتھن کرتے ہوئے لالہ لاجپت رائے کے یہ شبد بھی مجھے یاد ہیں—"Let the Prince go and tell his father that there is no welcome for him in the Indian heart." یعنی "پرنس آف ویلس کو انگلینڈ جا کر اپنے باپ سے کہہ دینا چاہیئے کہ بھارت واسیوں کے دلوں میں پرنس کے لئے کوئی سواگت کا بھاؤ نہیں ہے۔" مجھے ایک تیسرے وکتا کے یہ شبد بھی یاد ہیں—"کانگریس ابھی تک نابالغ تھی، اسے شاسکوں کی دیکھ ریکھ کی ضرورت تھی، اب وہ 21 سال کی یعنی بالغ ہو چکی، اب اسے اپنا کام خود سنبھالنا چاہیئے۔" پر ابھی اُس سمئے تک ادھک احتیاط برتنے والے پرانے نیتاؤں کا کانگریس میں زور تھا وفاداری کا پرستاؤ کسی طرح پاس ہو گیا، اِس کے ساتھ ہی تلک مہاراج آزادی کی اُمنگ رکھنے والے لاکھوں بھارت واسیوں کے دلوں میں سب سے بڑے نیتا کی حیثیت سے چمکنے لگے۔ میرے دل میں بھی اُن کی اور "آشواس، سنیہہ اور بھکتی" بڑھتی چلی گئی

بنارس کانگریس کے بعد ہی بنگ بھنگ کے جواب میں تلک مہاراج نے چومکھی پروگرام دیش کے سامنے رکھا۔ اُس میں پہلا "سودیشی" تھا۔ دیش کے اُدیوگ دھندے اُس سمئے بہت دبے ہوئے تھے۔ اربوں روپیوں کا مال یورپ سے آتا تھا جس میں ساٹھ کروڑ روپئے سالانہ کا کیول کپڑا تھا۔ دیش کے کاریگر بھوکے مر رہے تھے۔ دیش غریب ہوتا جا رہا تھا سودیشی کا مطلب تھا کہ ہم اپنے دیش کے اُدیوگ دھندوں کو پھر سے چمکائیں اور اپنے روزمرہ کے ویوہار میں ودیشوں کی بنی چیزوں کو چھوڑ کر جہاں تک ہو سکے دیش کی بنی ہوئی چیزیں ہی کام میں لائیں

دوسرا تھا 'بائکاٹ' یعنی یہ کہ ہم انگریزوں کے انیائے کے جواب میں انگلینڈ کے بنے ہوئے ہر طرح کے مال کا خاص طور سے بہشکار کریں۔ یہ بائکاٹ ایک راجنیتک

हथियार था, इस बहिष्कार में सरकारी नौकरियां और खिताब भी शामिल थे. तीसरा था "राष्ट्रीय शिक्षा" यानी यह कि अंगरेजों के बनाए स्कूलों और कालेजों को छोड़कर हम अपने बनाए हुए स्कूलों और कालेजों में राष्ट्रीय ढंग की शिक्षा प्राप्त करें. इसी सिलसिले में कलकत्ते में एक नेशनल कालेज और पूना में और जगह जगह राष्ट्रीय शिक्षा संस्थाएं कायम हुईं.

चौथा था "स्वराज", यानी देश को आजाद करना

उस जमाने के हिन्दी के राष्ट्रकवि पंडित माधव शुक्ल की एक प्रसिद्ध कविता की ये लाइनें हमे अभी तक याद हैं :—

"जय जय श्री तिलक देव ! भारत हितकारी !
स्वदेशी अरु बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा प्रचार,
हिन्द में स्वराज—चारि पंथ के पुजारी !'

उस समय देश मे दो राजनीतिक दल साफ दिखाई देने लगे. एक जिसे एक्सट्रीमिस्ट, राष्ट्रीय, अथवा गरम दल कहा जाता था, जिसके मुख्य नेता तिलक महाराज, लाला लाजपतराय, श्री बिपिनचन्द्र पाल और श्री अरविंद घोष थे, और दूसरा जो माडरेट, लिबरल या नरम दल कहलाता था, जिसके मुख्य नेता सर फीरोज शाह मेहता, श्री दिनशा ईदुलजी वाचा, पंडित मदन मोहन मालवीय और श्री गोपाल कृष्ण गोखले थे इस दूसरे दल के लोग तिलक महाराज के नये चतुर्मुखी कार्यक्रम के खिलाफ थे वे अंगरेजों से मिलकर ब्रिटिश साम्राज्य के अन्दर रहकर धीरे-धीरे देश को आगे बढ़ाना चाहते थे. कांग्रेस के अधिकतर पुराने नेता इसी दल मे थे लेकिन जनता के अन्दर देश भर में तिलक महाराज और उनके गरम दल का प्रभाव तेजी से बढ़ता जा रहा था

अंगरेज शासकों ने नए दल को दबाने और बंग भङ्ग के उद्देश्य को पूरा करने के लिए जोरदार कोशिश की ढाका के नवाब सलीमुल्ला खां को चौदह लाख रिशवत देकर मुसलिम लीग क़ायम कराई गई और उसी समय के निकट लाहौर में हिन्दू सभा की स्थापना हुई लाहौर के जिस जलसे में हिन्दू सभा की स्थापना हुई थी उसम हम भी मौजूद थे हम पंजाब युनिवर्सिटी की कानवोकेशन में अपनी डिग्री लेने गए थे

दिसम्बर सन् 1906 में कलकत्ते में कांग्रेस का बाईसवां अधिवेशन हुआ कलकत्ते की कांग्रेस में भी हमने एक स्वयं-सेवक की हैसियत से भाग लिया. जनता में जोश एक हद को पहुँचा हुआ था सरकार की चालों का उल्टा असर साफ़ दिखाई दे रहा था सलीमउल्ला खां और उनकी मुस्लिम लीग के जवाब में उनके भाई अतीक़उल्ला खां ने कांग्रेस में खुले भाग लिया गरम दल के सौभाग्य से दादा

ھتیار تھا اس بہشکار میں سرکاری نوکریاں اور خطاب بھی شامل تھے ۔ تیسرا تھا "راشٹریہ شکشا" یعنی یہ کہ انگریزوں کے بنائے اسکولوں اور کالجوں کو چھوڑ کر ہم اپنے بنائے ہوئے اسکولوں اور کالجوں میں راشٹریہ ڈھنگ کی شکشا پراپت کریں اسی سلسلے میں کلکتہ میں ایک نیشنل کالج اور پونہ میں اور جگہہ جگہہ راشٹریہ شکشا سنستھائیں قایم ہوئیں ۔

چوتھا تھا 'سوراج' یعنی دیش کو آزاد کرنا

اُس زمانے کے ھندی کے راشٹرکوی پنڈت مادھو شکل کی ایک پرسدھ کوتا کی یہ لائنیں ہمیں ابھی تک یاد ہیں —

"جے جے شری تلک دیو ! بھارت ھتکاری !
سودیشی اَرو بہشکار' راشٹریہ شکشا پرچار'
ھند میں سوراج—چاری پنتھ کے پجاری !"

اس سمے دیش میں دو راجنیتک دل صاف دکھائی دینے لگے ۔ ایک جسے ایکسٹریمسٹ' راشٹریہ اتھوا گرم دل کہا جاتا تھا' جس کے مکھیہ نیتا تلک مہاراج لالہ لاجپت رائے' شری بپن چندر پال اور شری اروند گھوش تھے اور دوسرا جو ماڈریٹ لبرل یا نرم دل کہلاتا تھا' جس کے مکھیہ نیتا سر فیروز شاہ مہتا' شری دنشا ایدل جی واچا' پنڈت مدن موہن مالویہ اور شری گوپال کرشن گوکھلے تھے اس دوسرے دل کے لوگ تلک مہاراج کے نئے چترمکھی کاریہ کرم کے خلاف تھے وہ انگریزوں سے ملکر برٹش سامراجیہ کے اندر رہ کر دھیرے دھیرے دیش کو آگے بڑھانا چاہتے تھے کانگریس کے ادھکتر پرانے نیتا اسی دل میں تھے لیکن جنتا کے اندر دیش بھر میں تلک مہاراج اور اُن کے گرم دل کا پربھاؤ تیزی سے بڑھتا جا رہا تھا

انگریز شاسکوں نے نئے دل کو دبانے اور بنگ بھنگ کے اُدیشہ کو پورا کرنے کے لئے زوردار کوشش کی ڈھاکہ کے نواب سلیم اللہ خاں کو چودہ لاکھ رشوت دیکر مسلم لیگ قائم کرائی گئی اور اُسی سمے کے نکٹ لاہور میں ھندو سبھا کی استھاپنا ہوئی لاہور کے جس جلسے میں ھندو سبھا کی استھاپنا ہوئی تھی اُس میں ہم بھی موجود تھے ہم پنجاب یونیورسٹی کی کانووکیشن میں اپنی ڈگری لینے گئے تھے

دسمبر سن 1906 میں کلکتہ میں کانگریس کا بائیسواں ادھیویشن ہوا کلکتہ کی کانگریس میں بھی ہم نے ایک سویم سیوک کی حیثیت سے بھاگ لیا ' جنتا میں جوش ایک حد کو پہونچا ہوا تھا ۔ سرکار کی چالوں کا اُلٹا اثر صاف دکھائی دے رہا تھا ۔ سلیم اللہ خاں اور اُن کی مسلم لیگ کے جواب میں اُنکے بھائی عتیق اللہ خاں نے کانگریس میں کھلے بھاگ لیا ۔ گرم دل کے سوبھاگیہ سے دادا

दादाभाई नौरोजी, जो तीस साल के राजनीतिक तजरबे के बाद उसी साल इंगलैंड से भारत आये थे, कांग्रेस के सभापति थे. दादा भाई नौरोजी ने सभापति के आसन से गरम दल वालों का खुलकर साथ दिया और कांग्रेस के मंच से इतिहास में पहली बार 'स्वराज' शब्द का उपयोग किया. गरम दल के सब प्रस्ताव थोड़े बहुत अदल बदल के साथ पास हो गए, देश में जोश बढ़ता चला गया.

कलकत्ता कांग्रेस के समय पहली बार हमें तिलक महाराज से देर तक आमने सामने बैठकर बातें करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ. वे उस समय श्री पद्मराज जैन के यहां ठहरे हुए थे. हमने तिलक महाराज से कहा कि यू० पी० और खासकर इलाहाबाद में उनके व्याख्यान होने चाहिएं. उन्होंने हमारी बात का समर्थन किया. वे चाहते थे कि यू० पी० के कोई नेता उन्हें बुलाएं. बंगाल, पंजाब और महाराष्ट्र में उन दिनों गरम दल का ज़ोर था. यू० पी०, बम्बई और मद्रास नरम दल के गढ़ थे. तिलक महाराज ने हमसे वादा किया कि कांग्रेस के दो तीन दिन बाद वे कलकत्ते से इलाहाबाद होते हुए पूना जायेंगे और अगर इलाहाबाद में उनके व्याख्यान का प्रबन्ध हो सका तो वे उसके लिए भी तैयार रहेंगे. उन्होंने यह भी वादा किया कि अपने इलाहाबाद पहुँचने की वे हमें पहले से सूचना दे देंगे.

जहाँ तक मुझे याद है जनवरी सन 1907 की 6 तारीख थी. सुबह की किसी गाड़ी से तिलक महाराज इलाहाबाद पहुँचे. बहुत से विद्यार्थी और शहर के लोग उनके स्वागत के लिये स्टेशन पहुँचे. वे दारागंज में अपने दामाद श्री साने के यहाँ ठहरे. स्टेशन पर ही हमने उनसे उनके व्याख्यान की बातें छेड़ीं. उन्होंने कहा कि वे दो एक घंटे के बाद पंडित मदन मोहन मालवीय से मिलने के लिये उनके मकान पर पहुँचेंगे और वहाँ अगर तय हुआ तो व्याख्यान देंगे.

हम भी भारती भवन मालवीय जी के मकान पर पहुँच गए. वहाँ उस समय पंडित मदन मोहन मालवीय के अलावा कांग्रेस के कई बड़े बड़े नेता तिलक महाराज से मिलने के लिए जमा थे. हमने तिलक महाराज से उनके व्याख्यान की चर्चा की. वे खुशी से राज़ी थे पर वहाँ बैठे हुए अधिकतर नेता उनके व्याख्यान के खिलाफ थे और चाहते थे कि अगर तिलक महाराज इलाहाबाद में बोलें तो "वैदिक साहित्य" पर बोलें 'राजनीति' पर नहीं. मैंने तिलक महाराज से पूछा कि अगर मैं और मेरे साथी विद्यार्थी उनके व्याख्यान का प्रबन्ध कर सकें तो वे व्याख्यान देंगे या नहीं. वे राज़ी हो गए. मैंने यह भी कहा कि इलाहाबाद की जनता आपको वैदिक साहित्य पर सुनना नहीं चाहती, 'राजनीतिक स्थिति' पर सुनना चाहती है. तिलक महाराज ने स्वीकार कर लिया.

व्याख्यान कराने की जिम्मेदारी तो हमने अपने ऊपर ले ली, लेकिन सबसे बड़ी दिक्कत हमें जगह की पड़ी. कई

بھائی نوروجی، جو تیس سال کے راجنیتک تجربے کے بعد اسی سال انگلینڈ سے بھارت آئے ہوئے، کانگریس کے سبھاپتی تھے۔ دادا بھائی نوروجی نے سبھاپتی کے آسن سے گرم دل والوں کا کھل کر ساتھ دیا اور کانگریس کے منچ سے اتہاس میں پہلی بار 'سوراج' شبد کا اپیوگ کیا۔ گرم دل کے سب پرستاؤ تھوڑے بہت ادل بدل کے ساتھ پاس ہو گئے، دیش میں جوش بڑھتا چلا گیا

کلکتہ کانگریس کے سمئے پہلی بار ہمیں تلک مہاراج سے دیر تک روبرو بیٹھکر باتیں کرنے کا سوبھاگیہ پراپت ہوا۔ وے اس سمئے شری پدم راج جین کے یہاں ٹھہرے ہوئے تھے۔ ہم نے تلک مہاراج سے کہا کہ یو پی اور خاص کر الہ آباد میں ان کے ویاکھیان ہونے چاہئیں۔ انہوں نے ہماری بات کا سمرتھن کیا۔ وے چاہتے تھے کہ یو. پی. کے کوئی نیتا انہیں بلائیں۔ بنگال، پنجاب اور مہاراشٹر میں ان دنوں گرم دل کا زور تھا۔ یو پی، بمبئی اور مدراس نرم دل کے گڑھ تھے۔ تلک مہاراج نے ہم سے وعدہ کیا کہ کانگریس کے دو تین دن بعد وے کلکتہ سے الہ آباد ہوتے ہوئے پونہ جائینگے اور اگر الہ آباد میں ان کے ویاکھیان کا پربندھ ہو سکا تو وے اس کے لئے بھی تیار رہینگے۔ انہوں نے یہ بھی وعدہ کیا کہ اپنے الہ آباد پہونچنے کی وے ہمیں پہلے سے سوچنا دے دینگے

جہاں تک مجھے یاد ہے جنوری سن 1907 کی 6 تاریخ تھی۔ صبح کی کسی گاڑی سے تلک مہاراج الہ آباد پہونچے۔ بہت سے ودیارتھی اور شہر کے لوگ ان کے سواگت کے لئے اسٹیشن پہونچے۔ وے دارا گنج میں اپنے داماد شری سانے کے یہاں ٹھہرے۔ اسٹیشن پر ہی ہم نے ان سے ان کے ویاکھیان کی بات چھیڑی۔ انہوں نے کہا کہ وے دو ایک گھنٹے کے بعد پنڈت مدن موہن مالویہ سے ملنے کے لیے ان کے مکان پر پہونچینگے اور وہاں اگر طے ہوا تو ویاکھیان دینگے

ہم بھی بھارتی بھون مالویہ جی کے مکان پر پہونچ گئے۔ وہاں اس سمئے پنڈت مدن موہن مالویہ کے علاوہ کانگریس کے کئی بڑے بڑے نیتا تلک مہاراج سے ملنے کے لئے جمع تھے۔ ہم نے تلک مہاراج سے ان کے ویاکھیان کی چرچا کی۔ وے خوشی سے راضی تھے۔ پر وہاں بیٹھے ہوئے ادھکتر نیتا ان کے ویاکھیان کے خلاف تھے اور چاہتے تھے کہ اگر تلک مہاراج الہ آباد میں بولیں ہی تو "ویدک ساہتیہ" پر بولیں "راجنیتی" پر نہیں۔ میں نے تلک مہاراج سے پوچھا کہ اگر میں اور میرے ساتھی ودیارتھی ان کے ویاکھیان کا پربندھ کر سکیں تو وے ویاکھیان دینگے یا نہیں۔ وے راضی ہو گئے۔ میں نے یہ بھی کہا کہ "الہ آباد کی جنتا آپ کو ویدک ساہتیہ پر سننا نہیں چاہتی 'راجنیتک استھتی' پر سننا چاہتی ہے۔" تلک مہاراج نے سویکار کر لیا۔

ویاکھیان کرانے کی ذمہ داری تو ہم نے اپنے اوپر لے لی، لیکن سب سے بڑی دقت ہمیں جگہ کی ہوئی۔ کئی

जगह से इनकार हो गया. आखिर इलाहाबाद एंग्लो बंगाली हाई स्कूल के उन दिनों के हेड मास्टर श्री नेपाल चन्द्र राय एक बड़े ही नेक तबीयत और उन्नतिशील विचारों के सज्जन थे. उन्होंने अपने स्कूल के कम्पाउन्ड में तिलक महाराज के व्याख्यान की इजाज़त दे दी. तीन विद्यार्थियों के दस्तखत से नोटिस छपा. वह तीन थे—नागपुर के श्री एन० एम धर्म, बरहानपुर के श्री के० पी० मिश्र और मैं. सारा प्रबन्ध चंद घन्टों के अन्दर करना पड़ा. शाम को 6 बजे बंगला स्कूल के कम्पाउन्ड में "वर्तमान राजनीतिक स्थिति" पर तिलक महाराज का व्याख्यान हुआ. लगभग दो हज़ार आदमी रहे होंगे. तिलक महाराज जोशीले वक्ता नहीं थे. पर उनकी दलीलें अकाट्य होती थीं. एक-एक शब्द दिल की गहराई से निकलता मालूम होता था, जलसे में समा बंधा हुआ था. इलाहाबाद में तिलक महाराज का वह पहला राजनीतिक व्याख्यान था. इलाहाबाद के अन्दर और एक तरह से सारे प्रान्त के अन्दर उसने नए राजनीतिक जीवन की बुनियादें डाल दीं. अगले दिन सुबह को शहर के कुछ अखबारों में उस व्याख्यान का हाल छपा, जिनमें से एक अखबार में मुझे अब तक याद है पूरे पेज का यह हेडिंग छपा हुआ था—"The Prophet of the New School at Allahabad" यानी इलाहाबाद में नए विचारो का पैग़म्बर.

तिलक महाराज के लिए मेरे दिल में भक्ति और उनके विशाल हृदय में मेरे लिए वात्सल्य दोनों बढ़ते चले गए. पत्र व्यवहार भी होने लगा. उन्होंने मुझे पूना मिलने के लिए बुलाया. कई बार पूना में कई-कई दिन तक उनके मेहमान होने का सौभाग्य भी मुझे प्राप्त हुआ.

उनके साथ सहवास की कुछ फुटकर घटनाएँ इस समय मुझे याद आ रही हैं.

सन् 1907 ही की बात है. उनके बुलाने पर मैं पहली बार पूना पहुँचा. वे गायकवाड़ वाड़ा में रहते थे. मैं शाम के बाद पूना पहुँचा. उनके मकान पर पहुँचकर संध्या आदि से निवृत्त होकर भोजन किया. रात को हम एक ही कमरे में सोए. काफ़ी देर तक अपने बिस्तर पर पड़े-पड़े वे मुझे देश भक्ति और आज़ादी की ज़रूरत के पाठ पढ़ाते रहे. बात करते-करते हम सो गए. सुबह उन्होंने मुझसे पहले उठकर मुझे आवाज़ देकर उठाया. साथ-साथ हम दोनों ने हाथ-मुँह धोया. मुँह धोते ही बग़ैर स्नान किये वे मुझे फिर अपने साथ लिए लिए अपने कमरे में आए. वहाँ वे "मराठा" और "केसरी" के प्रूफ़ देखते रहे. बीच बीच में जो लोग आते थे उनसे बातें करते जाते. जो समय बचता उसमें मुझसे बातें करते. लगभग ग्यारह बज गये. मुझे उन दिनों दोनों समय संध्या करने की आदत थी. तिलक महाराज भी वैदिक ब्राह्मण मशहूर थे. मैं हैरान था कि उन्होंने सुबह से अभी तक

جگہہ سے اِنکار ہوگیا. آخر الہ‌آباد اینگلو بنگالی ہائی اسکول کے اُن دنوں کے ہیڈ ماسٹر شری نیپال چندر رائے ایک بڑے ہی نیک طبیعت اور اُنتی شیل وچاروں کے سجن تھے. اُنھوں نے اپنے اسکول کے کمپاونڈ میں تلک مہاراج کے ویاکھیان کی اجازت دے دی. تین ودیارتھیوں کے دستخط سے نوٹس چھپا. وہ تین تھے—ناگپور کے شری ایم. ایم. دھرم، برہان پور کے شری کے. پی. مشر اور میں. سارا پربندھ چند گھنٹوں کے اندر کرنا پڑا. شام کو 6 بجے بنگلا اسکول کے کمپاونڈ میں "ورتمان راجنیتک استھتی" پر تلک مہاراج کا ویاکھیان ہوا. لگ بھگ دو ہزار آدمی رہے ہونگے. تلک مہاراج جوشیلے وکتا نہیں تھے. پر اُن کی دلیلیں اکاٹیہ ہوتی تھیں. ایک ایک شبد دل کی گہرائی سے نکلتا معلوم ہوتا تھا. جلسہ میں سماں بندھا ہوا تھا. الہ‌آباد میں تلک مہاراج کا وہ پہلا راجنیتک ویاکھیان تھا. الہ‌آباد کے اندر اور ایک طرح سے سارے پرانت کے اندر اُس نے نئے راجنیتک جیون کی بنیادیں ڈال دیں. اگلے دن صبح کو شہر کے کچھ اخباروں میں اُس ویاکھیان کا حال چھپا، جنمیں سے ایک اخبار میں مجھے اب تک یاد ہے پورے پیج کا یہ ہیڈنگ چھپا ہوا تھا—"The Prophet of the New School at Allahabad" یعنی الہ‌آباد میں نئے وچاروں کا پیغمبر.

تلک مہاراج کے لئے میرے دل میں بھکتی اور اُن کے وشال ہردئے میں میرے لئے واتسلیہ دونوں بڑھتے چلے گئے. پتر ویوہار بھی ہونے لگا. اُنھوں نے مجھے پونہ ملنے کے لئے بلایا. کئی بار پونہ میں کئی کئی دن تک اُن کے مہمان ہونے کا سوبھاگیہ بھی مجھے پراپت ہوا.

اُن کے ساتھ سہواس کی کچھ پھٹکر گھٹنائیں اِس سمئے مجھے یاد آرہی ہیں.

سن 1907 ہی کی بات ہے. اُن کے بلانے پر میں پہلی بار پونہ پہونچا. وے گائیکواڑ واڑہ میں رہتے تھے میں شام کے بعد پہونچا. اُن کے مکان پر پہونچکر سندھیا ادی سے نورت ہو کر بھوجن کیا. رات کو ہم ایک ہی کمرے میں سوئے. کافی دیر تک اپنے بستر پر پڑے پڑے وے مجھے دیش بھکتی اور آزادی کی ضرورت کے پاٹھ پڑھاتے رہے. بات کرتے کرتے ہم سوگئے. صبح اُنھوں نے مجھسے پہلے اُٹھکر مجھے آواز دیکر اُٹھایا. ساتھ ساتھ ہم دونوں نے ہاتھ منہ دھویا. منہ دھوتے ہی بغیر اسنان کئے وے مجھے پھر اپنے ساتھ لئے اپنے کمرے میں آئے. وہاں وے "مراٹھا" اور "کیسری" کے پروف دیکھتے رہے. بیچ بیچ میں جو لوگ آتے تھے اُن سے باتیں کرتے جاتے. جو سمئے بچتا اِس میں مجھسے باتیں کرتے. لگ بھگ گیارہ بج گئے. مجھے اُن دنوں دونوں سمئے سندھیا کرنے کی عادت تھی. تلک مہاراج بھی ویدک براہمن مشہور تھے. میں حیران تھا کہ اُنھوں نے صبح سے ابھی تک

संध्या क्यों नहीं की और सोच रहा था कि अब वे संध्या करेंगे तो उनके साथ ही मैं भी संध्या कर लूँगा. इतने में उनकी लड़की ने खाने के लिए आवाज़ दी. वे अब मुझे साथ लिए लिए नहाने के कमरे में गए. हम दोनों ने साथ-साथ स्नान किया. उस कमरे के स्नान की आदत अभी इतनी न फैली थी. मैंने समझ लिया कि स्नान के बाद हम दोनों संध्या करेंगे और फिर भोजन.

इतने में पास के कमरे के अन्दर दो लकड़ी के पटरे लगभग एक फ़ुट के फ़ासले पर बराबर-बराबर रख दिए गए. बीच में एक लोटे में जल था और उसके ऊपर एक छोटी सी कटोरी. मैं समझ गया कि ये दोनों पटरे हम दोनों के संध्या करने के लिए हैं और जल आचमन के लिए. स्नान करके हम दोनों उन पटरों पर आ बैठे. मैं जल लेकर आचमन करने और संध्या शुरू करने को ही था कि दोनों के सामने थालियाँ आ गईं और तिलक महाराज ने मुझे प्यार के साथ कहा—"खाना शुरू करो". मेरी हैरानी की कोई हद न रह गई. मुझे बिना संध्या किए खाना खाने की आदत न थी. मुझसे न रहा गया. मैंने फ़ौरन उनसे पूछा—"Sir, you have not performed your Sandhya to-day ?" यानी "महाराज ! आज आपने संध्या नहीं की ?" उन्होंने तुरन्त हँसते हुए मुझे जवाब दिया—"And what have I been doing all this time ?" यानी "और मैं सुबह से अब तक कर क्या रहा था ?" उनके वे शब्द आज तक मेरे हृदय-पटल पर अंकित हैं—"And what have I been doing all this time ?" खाना खाते-खाते उन्होंने मुझे ख़ूब समझाया, मैं समझ गया कि सचमुच अगर "मरहठा" और "केसरी" जैसे आज़ादी की लड़ाई के लिए जनता को तैयार करने वाले पत्रों के प्रूफ़ देखना संध्या नहीं है, अगर लोगों से देश की स्थिति पर बातें करना संध्या नहीं है, अगर किसी नौजवान को देशभक्ति का पाठ पढ़ाना संध्या नहीं है तो हज़ारों बरसों के पुराने वेद मंत्रों का उच्चारण संध्या नहीं हो सकता. उनका उस समय का यह श्लोक भी मुझे आज तक याद है:—

न जले मार्जनम् संध्या न मंत्रोच्चारणादि भिः ।
संध्यायते यया ब्रह्म सा संध्या सद्भिरुच्यते ॥

यानी पानी में स्नान करने से संध्या नहीं होती, मंत्रों का उच्चारण करने से संध्या नहीं होती. जिस काम से आदमी भगवान के अधिक निकट पहुँचे वही सन्ध्या है.

सचमुच देशसेवा और मानव सेवा से बढ़कर कोई चीज़ आदमी को भगवान के अधिक निकट लाने वाली नहीं है.

سندھیا کیوں نہیں کی اور سوچ رہا تھا کہ جب وہ سندھیا کرینگے تو اُن کے ساتھ ہی میں بھی سندھیا کر لونگا۔ اِتنے میں اُن کی لڑکی نے کھانے کے لئے آواز دی۔ وہ اب مجھے ساتھ لئے لئے نہانے کے کمرے میں گئے۔ ہم دونوں نے ساتھ ساتھ اسنان کیا۔ بند کمرے کے اسنان کی عادت ابھی اتنی نہ پھیلی تھی۔ میں نے سمجھ لیا کہ اسنان کے بعد ہم دونوں سندھیا کرینگے اور پھر بھوجن۔

اِتنے میں پاس کے کمرے کے اندر دو لکڑی کے پٹرے لگ بھگ ایک فٹ کے فاصلہ پر برابر برابر رکھ دیئے گئے۔ بیچ میں ایک لوٹے میں جل تھا اور اُس کے اُوپر ایک چھوٹی سی کٹوری۔ میں سمجھ گیا کہ یہ دونوں پٹرے ہم دونوں کے سندھیا کرنے کے لئے ہیں اور جل آچمن کے لئے۔ اسنان کر کے ہم دونوں اُن پٹروں پر جا بیٹھے۔ میں جل لیکر آچمن کرنے اور سندھیا شروع کرنے ہی کو تھا کہ دونوں کے سامنے تھالیاں آگئیں اور تلک مہاراج نے مجھے پیار کے ساتھ کہا—"کھانا شروع کرو۔" میری حیرانی کی کوئی حد نہ رہ گئی۔ مجھے بنا سندھیا کیئے کھانا کھانے کی عادت نہ تھی۔ مجھ سے نہ رہا گیا۔ میں نے فوراً اُن سے پوچھا—"Sir, you have not performed your Sandhya to-day ?" یعنی "مہاراج! آج آپنے سندھیا نہیں کی؟" اُنہوں نے ترنت ہنستے ہوئے مجھے جواب دیا—"And what have I been doing all this time ?" یعنی "اور میں صبح سے اب تک کر کیا رہا تھا؟" اُن کے وہ شبد آج تک میرے ہردئے پٹل پر انکت ہیں—"And what have I been doing all this time ?" کھانا کھاتے کھاتے اُنہوں نے مجھے خوب سمجھایا۔ میں سمجھ گیا کہ سچ مچ اگر "مرہٹہ" اور "کیسری" جیسے آزادی کی لڑائی کے لئے جنتا کو تیار کرنے والے پتروں کے پروف دیکھنا سندھیا نہیں ہے، اگر لوگوں سے دیش کی استھتی پر باتیں کرنا سندھیا نہیں ہے، اگر کسی نوجوان کو دیش بھکتی کا پاٹھ پڑھانا سندھیا نہیں ہے تو ہزاروں ورش کے پرانے وید منتروں کا اُچارن سندھیا نہیں ہوسکتا۔ اُن کا اُس سمے کا یہ شلوک بھی مجھے آج تک یاد ہے:—

نہ جلے مارجنم سندھیا نہ منتروچارنادی بھرے،
سندھی یتے یَیا برہم سا سندھیا سدبھی روچیتے۔

یعنی پانی میں اسنان کرنے سے سندھیا نہیں ہوتی، منتروں کا اُچارن کرنے سے سندھیا نہیں ہوتی۔ جس کام سے آدمی بھگوان کے ادھک نکٹ پہونچے وہی سندھیا ہے۔

سچ مچ دیش سیوا اور مانو سیوا سے بڑھکر کوئی چیز آدمی کو بھگوان کے ادھک نکٹ لانے والی نہیں ہے۔

धार्मिक प्रश्नों पर लोकमान्य के विचार बहुत उदार थे. वे पूरे आज़ाद ख़याल थे. वेदों के धुरंधर और विश्वमान्य पंडित होते हुए भी वे वेदों अथवा किसी किताब को अपौरुषेय या ईश्वरीय नहीं मानते थे, न वे किसी रूढ़ि, संस्कार या रीति रिवाज के क़ायल थे पूना में उनके एक बड़े प्रिय मित्र लेले शास्त्री थे. लेले शास्त्री कट्टर सनातनी विचारों के थे. लेले शास्त्री और लोकमान्य तिलक में इन प्रश्नो पर खूब तीखी किन्तु प्रेम-भरी बहसें होती रहती थीं. हमने कई बार उन बहसों को सुना है. लेले शास्त्री वेदों के अपौरुषेय होने, शिखा सूत्र, खान-पान की रूढ़ियों और जात-पात के समर्थक थे, लोकमान्य इन सब के विरोधी. उनके मज़ाक़ भी बड़े पैने होते थे, और दलीलें आकाट्य होती थीं. वे खुद छूआछूत के बिलकुल मानने वाले न थे. उनके उस ज़माने के यू० पी० के ज़बरदस्त भक्तों में एक ख़ास नाम मौलाना हसरत मोहानी का था. हसरत और मैं कई बार साथ-साथ पूना में उनके मेहमान रहे थे. लोकमान्य उसी प्रेम के साथ उसी जगह बैठाकर और उन्हीं बरतनों में हसरत मोहानी को अपने साथ खाना खिलाते थे जिस तरह किसी चितपावन ब्राह्मन या किसी दूसरे का

लोकमान्य का जीवन परस्पर विरोधों से ख़ाली नहीं था. शायद किसी भी महापुरुष का नहीं होता. एकबार लोकमान्य पूना के किसी ईसाई मित्र के यहाँ जाकर चाय पी आए. वह ज़माना बिलकुल दूसरा था. लेले शास्त्री से न सहा गया. उन्होने पूना म ब्राह्मणों की सभा करके लोकमान्य का जात बाहर करा दिया. लोकमान्य से फिर से जात में आने के लिए पंचगव्य (गोबर आदि) खाकर प्रायश्चित (कुफ़ारा) करने के लिए कहा गया उन्होने ख़ुशी से पंचगव्य खाकर प्रायश्चित्त कर लिया.

मैंने उनसे पूछा कि आपने यह प्रायश्चित्त क्यो किया. उन्होंने एक वाक्य के अन्दर जवाब दिया—"Social reform is not my province. It will come in its own time" यानी "समाज सुधार मेरा इस समय का काम नहीं है समाज-सुधार अपने समय पर आ जायगा."

एक और छोटी सी घटना 1905 की याद आ रही है. उन दिनों समुद्र यात्रा सनातनी हिन्दुओं के लिए पाप समझी जाती थी. लोकमान्य कांग्रेस के लिए बनारस गए हुए थे. वहाँ उन्होने चाहा कि बनारस के पंडित समुद्र यात्रा के पक्ष में व्यवस्था (फ़तवा) दे दें. बनारस के पंडितों में सबसे प्रभावशाली उस समय महा महोपाध्याय पंडित शिव कुमार शास्त्री थे. लोकमान्य पंडित शिव कुमार शास्त्री से उनके घर पर मिलने गए. शिवकुमारजी शामको शायद दिशा जाने वाले थे. उनके हाथ में जल का लोटा था. खड़े-खड़े

دھارمک پرشنوں پر لوکمانیہ کے وچار بہت اُدار تھے ۔ وے پورے آزاد خیال تھے ۔ ویدوں کے دھورندھر اور وشومانیہ پنڈت ہوتے ہوئے بھی وے ویدوں اتھوا کسی کتاب کو اپوروشیہ یا ایشوریہ نہیں مانتے تھے' نہ وے کسی روڑھی' سنسکار یا ریتی رواج کے قایل تھے ۔ پونہ میں اُنکے ایک بڑے پریہ متر لیلے شاستری تھے ۔ لیلے شاستری کٹر سناتنی وچاروں کے تھے ۔ لیلے شاستری اور لوکمانیہ تلک میں ان پرشنوں پر خوب تیکھی کنتو پریم بھری بحثیں ہوتی رہتی تھیں ہم نے کئی بار اُن بحثوں کو سنا ہے ۔ لیلے شاستری ویدوں کے اپوروشیہ ہونے' شکھا سوتر' کھان پان کی روڑھیوں اور جات پات کے سمرتھک تھے' لوکمانیہ ان سب کے ورودھی ۔ اُنکے مزاق بھی بڑے پینے ہوتے تھے' اور دلیلیں اکاٹیہ ہوتی تھیں وے خود چھوآچھوت کے بالکل ماننے والے نہ تھے ۔ اُنکے اُس زمانے کے یو ۔ پی ۔ کے زبردست بھکتوں میں ایک خاص نام مولانا حسرت موہانی کا تھا حسرت اور میں کئی بار ساتھ ساتھ پونہ میں اُنکے مہمان رہے ہے ۔ لوکمانیہ اُسی پریم کے ساتھ اُسی جگہہ بیٹھا کر اور اُنھیں برتنوں میں حسرت موہانی کو اپنے ساتھ کھانا کھلاتے تھے جس طرح کسی چت پاون براھمن یا کسی دوسرے کو ۔

لوکمانیہ کا جیون پرسپر ورودھوں سے خالی نہیں تھا ۔ شاید کسی بھی مہا پرش کا نہیں ہوتا ۔ ایک بار لوکمانیہ پونہ کے کسی عیسائی متر کے یہاں جا کر چائے پی آیے ۔ وہ زمانہ بالکل دوسرا تھا ۔ لیلے شاستری سے نہ سہا گیا ۔ اُنھوں نے پونہ میں براہمنوں کی سبھا کر کے لوکمانیہ کو جات باھر کرا دیا ۔ لوکمانیہ سے پھر سے جات میں آنے کے لئے پنچ گویہ (گوبر آدی) کھا کر پرایشچت (کفارہ) کرنے کے لئے کہا گیا ۔ اُنھوں نے خوشی سے پنچ گویہ کھا کر پرایشچت کر لیا ۔

میں نے اُن سے پوچھا کہ آپ نے یہ پرایشچت کیوں کیا اُنھوں نے ایک واکیہ کے اندر جواب دیا—Social reform is not my province It will come in its own time." یعنی 'سماج سدھار میرا اِس سمئے کا کام نہیں ہے ۔ سماج سدھار اپنے سمئے پر آجائیگا ۔"

ایک اور چھوٹی سی گھٹنا 1905 کی یاد آرہی ہے ۔ اُن دنوں سمدر یاترا سناتنی ہندؤں کے لئے پاپ سمجھی جاتی تھی ۔ لوکمانیہ کانگریس کے لئے بنارس گئے ہوئے تھے ۔ وہاں اُنھوں نے چاہا کہ بنارس کے پنڈت سمدر یاترا کے پکش میں ویوستھا (فتوا) دیدیں ۔ بنارس کے پنڈتوں میں سب سے پربھاؤ شالی اُس سمئے مہامہوپادھیائے پنڈت شوکمار شاستری تھے ۔ لوکمانیہ پنڈت شوکمار شاستری سے اُنکے گھر پر ملنے گئے ۔ شوکمار جی شاید دشا جانے والے تھے ۔ اُنکے ہاتھ میں جل کا لوٹا تھا ۔ کھڑے کھڑے

पाँच-सात मिनट बात-चीत हुई. लोकमान्य ने अपना उद्देश्य बताया. पंडित शिवकुमार शास्त्री ने आधे मिनट सोचकर उत्तर दिया—"व्यवस्था हम दे देंगे. पाँच हज़ार रुपये लगेंगे" लोकमान्य यह कहकर उसी समय चले आए—"तब मुझे आपकी व्यवस्था की ज़रूरत नहीं है."

कलकत्ता कांग्रेस के बाद आन्दोलन का ज़ोर बढ़ता जा रहा था. हिन्दू और मुसलमान पूरबी बंगाल और पच्छमी बंगाल, भारत के सारे प्रान्त और सारी जनता आन्दोलन के साथ थी. पंजाब में लाला लाजपतराय और सरदार अजीत सिंह के नेतृत्व में क्रान्ति की लपटें चारों से उठ रही थीं. पंजाब बहुत ख़तरे की जगह थी. अंग्रेज़ सरकार ने सबसे पहले लाला लाजपतराय और सरदार अजीतसिंह को यकायक गिरफ़्तार कर देश निकाला देकर मांडले भेज दिया. देश भर में सन्नाटा छा गया. जो नेता इस तरह के क्रान्तिकारी आन्दोलन को देश के लिए ख़तरनाक समझते थे उन्होंने सबसे पहले कांग्रेस को इस तरह के गरम विचारों से बचाने की कोशिश की. 1907 की सूरत कांग्रेस में, जिसमें पहले ही लाला लाजपतराय और सरदार अजीत सिंह को मुँह के गरम गरम आलुओं की तरह सरकार को छोड़ना पड़ गया था, तिलक महाराज ही तिलक महाराज दिखाई देते थे. उस समय तक लोकमान्य यानी 'देश भर की जनता के सबसे अधिक श्रद्धास्पद नेता' की उपाधि भी उनके साथ जुड़ चुकी थी. सूरत में कांग्रेस का इजलास शुरू भी न हो पाया था कि छिन्न-भिन्न हो गया. थोड़े दिनों बाद नरम दल के नेताओं ने इलाहाबाद में अपनी एक अलग कनवेनशन की, जिससे कांग्रेस पूरी तरह फिर से उनके हाथों में आ गई. कांग्रेस अब जनता की कांग्रेस न रह गई थी. नतीजा इस रूप में साफ़ दिखाई दे गया कि सन 1906 में कलकत्ते में जिस कांग्रेस के अन्दर प्रतिनिधियों की तादाद 19,063 थी सन् 1909 में लाहौर के अन्दर वही तादाद 243 रह गई और लाहौर के एक मशहूर पूंजीपति की मिल को बंद कराकर, मज़दूरों को छुट्टी देकर कांग्रेस पंडाल का थोड़ा बहुत हिस्सा भरा हुआ दिखाने की कोशिश की गई

जनता नए विचारों के साथ थी. सरकार की इन चालों के बावजूद आन्दोलन बढ़ता चला गया. सरकार को अपनी बंग-भंग की तजवीज़ वापस लेनी पड़ी. लेकिन उस बढ़ते हुए आन्दोलन को दबाने के लिए लोकमान्य तिलक को छै साल के लिये काले पानी भेज दिया गया.

लोकमान्य ने सज़ा का हुक्म सुनने के बाद अदालत में जो वाक्य कहा वह जिस किसी ने सुना या पढ़ा है उसे हमेशा याद रहेगा :—

"In spite of the verdict of the Jury I still believe I am innocent. Providence

پانچ سات منٹ بات چیت ہوئی ۔ لوکمانیہ نے اپنا اُدیشیہ بتایا ۔ پنڈت شوکمار شاستری نے آدھے منٹ سوچکر اُتر دیا—"ویوستھا ہم دیدینگے پانچ ہزار روپئے لگینگے ." لوکمانیہ یہ کہکر اسی سمئے چلے آئے—"تب مجھے آپکی ویوستھا کی ضرورت نہیں ہے ."

کلکتہ کانگریس کے بعد آندولن کا زور بڑھتا جا رہا تھا ۔ ہندو اور مسلمان پوربی بنگال اور پچھمی بنگال' بھارت کے سارے پرانت اور ساری جنتا آندولن کے ساتھ تھی ۔ پنجاب میں لالہ لجپت رائے اور سردار اجیت سنگھ کے نیترتو میں کرانتی کی لپٹیں چاروں سے اُٹھ رہی تھیں ۔ پنجاب بہت خطرہ کی جگہ تھی ۔ انگریز سرکار نے سب سے پہلے لالہ لجپت رائے اور سردار اجیت سنگھ کو یکایک گرفتار کر دیش نکالا دیکر مانڈلے بھیج دیا ۔ دیش بھر میں سناٹا چھا گیا ۔ جو نیتا اس طرح کے کرانتکاری آندولن کو دیش کے لئے خطرناک سمجھتے تھے اُنہوں نے سب سے پہلے کانگریس کو اس طرح کے گرم وچاروں سے بچانے کی کوشش کی ۔ 1907 کی سورت کانگریس میں' جس سے پہلے ہی لالہ لجپت رائے اور سردار اجیت سنگھ کو منہ کے گرم گرم آلوؤں کی طرح سرکار کو چھوڑنا پڑ گیا تھا' تلک مہاراج ہی تلک مہاراج دکھائی دیتے تھے ۔ اُس سمئے تک لوکمانیہ یعنی 'دیش بھر کی جنتا کے سب سے ادھک شردھاسپد نیتا' کی اپادھی بھی اُنکے ساتھ جڑ چکی تھی ۔ سورت میں کانگریس کا اجلاس شروع بھی نہ ہو پایا تھا کہ چھن بھن ہو گیا ۔ تھوڑے دنوں بعد نرم دل کے نیتاؤں نے الہ آباد میں اپنی ایک الگ کنوینشن کی' جس سے کانگریس پوری طرح پھر سے اُنکے ہاتھوں میں آگئی ۔ کانگریس اب جنتا کی کانگریس نہ رہ گئی تھی ۔ نتیجہ اس روپ میں صاف دکھائی دے گیا کہ سن 1906 میں کلکتہ میں جس کانگریس کے اندر پرتیندھیوں کی تعداد 19,063 تھی سن 1909 میں لاہور کے اندر وہی تعداد 243 رہ گئی اور لاہور کے ایک مشہور پونجی پتی کی مل کو بند کرا کر' مزدوروں کو چھٹی دیکر کانگریس پنڈال کا تھوڑا بہت حصہ بھرا ہوا دکھانے کی کوشش کی گئی ۔

جنتا نئے وچاروں کے ساتھ تھی ۔ سرکار کی ان چالوں کے باوجود آندولن بڑھتا چلا گیا ۔ سرکار کو اپنی بنگ بھنگ کی تجویز واپس لینی پڑی ۔ لیکن اُس بڑھتے ہوئے آندولن کو دبانے کے لئے لوکمانیہ تلک کو چھ سال کے لئے کالے پانی بھیج دیا گیا ۔

لوکمانیہ نے سزا کا حکم سننے کے بعد عدالت میں جو واکیہ کہا وہ جس کسی نے سنا یا پڑھا اُسے ہمیشہ یاد رہیگا :—

"In spite of the verdict of the Jury I still believe I am innocent. Providence

may have willed that the cause I had at heart would prosper more by my suffering than by my pen or tongue."

अर्थात्—"जूरी के मेरे खिलाफ़ राय देने के बावजूद मैं यह मानता हूँ कि मैं निर्दोष हूँ. भगवान की यही मरज़ी मालूम होती है कि जिस उद्देश्य को पूरा करने की तरफ़ मेरा दिल लगा हुआ था उसे मेरे क़लम या मेरी ज़बान से इतना फ़ायदा नहीं पहुँच सकता था जितना मेरे कष्ट सहन से."

सन् 1914 में तिलक महाराज रिहा हुए. उनके छूटते ही जनता में नई आशाएँ जाग उठीं. कांग्रेस में फिर भीड़ होनी शुरू हुई. लेकिन कांग्रेस का दरवाज़ा लोकमान्य जैसों के लिए बंद था. सन् 1914 और 15 की कांग्रेसों में चाहते हुए भी वह नहीं जा सके. अन्त में नेताओं को नियम बदलने पड़े. सन् 1916 की लखनऊ कांग्रेस में आठ बरस के बाद फिर से लोकमान्य तिलक ने हिस्सा लिया. उस साल कांग्रेस में प्रतिनिधियों की तादाद 2,801 और अगले साल 4,967 थी.

लखनऊ कांग्रेस की एक छोटी सी घटना हममें से बहुत सों के लिये आज भी काफ़ी शिक्षाप्रद है. हिन्दू मुस्लिम सवाल पर लोकमान्य के रुख़ का उससे और ख़ासा पता चलता है.

उस समय तक अंग्रेज़ चुनावों और सीटों के झगड़े देश में खड़े करके हिन्दू और मुसलमानों के बीच लड़ाई की एक नयी बुनियाद डाल चुके थे. ठीक आंकड़े मुझे इस समय याद नहीं. बात लगभग यह थी. जिना साहब मुसलमानों के लिये कुछ अधिक सीटों पर अड़े हुए थे, जो हिन्दू नेताओं को बेजा और हिन्दुओं के साथ अन्याय दिखाई देता था. श्री पद्मराज जैन और कुछ हिन्दू नेता लोकमान्य के पास पहुँचे. उनसे सारी बात कही. लोकमान्य ने, जितनी सीटें जिना साहब मांग रहे थे उससे कहीं अधिक यानी पचास फ़ीसदी सीटें मुसलमानों को देने की हिन्दुओं को सलाह दी. हिंदू नेता हैरान हो गए. बहस होने पर लोकमान्य ने कहा :—

"Now I shall say give them cent percent of seats in all Legislatures. So long as I can wrench power from the British I do not care who gets it in India."

अर्थात्—"अब मैं यह कहूँगा कि सब धारा सभाओं में मुसलमानों को सौ फ़ीसदी सीटें दे दो. अगर मैं अंग्रेज़ों के हाथों से शक्ति छीन सकूँ तो मुझे इसकी कोई परवाह नहीं कि भारत में वह शक्ति किसके हाथों में जाती है."

may have willed that the cause I had at heart would prosper more by my suffering than by my pen or tongue."

ارتھات—"جوری کے میرے خلاف رائے دینے کے باوجود میں یہ مانتا ہوں کہ میں نردوش ہوں۔ بھگوان کی یہی مرضی معلوم ہوتی ہے کہ جس ادیشیہ کو پورا کرنے کی طرف میرا دل لگا ہوا تھا اُسے میرے قلم یا میری زبان سے اتنا فائدہ نہیں پہونچ سکتا تھا جتنا میرے کشٹ سہن سے۔"

سن 1914 میں تلک مہاراج رہا ہوئے۔ انکے چھوٹتے ہی جنتا میں نئی آشائیں جاگ اٹھیں۔ کانگریس میں پھر بھیڑ ہونی شروع ہوئی۔ لیکن کانگریس کا دروازہ لوکمانیہ جیسوں کے لئے بند تھا۔ سن 1914 اور 15 کی کانگریسوں میں چاہتے ہوئے بھی وہ نہیں جا سکے۔ انت میں نیتاؤں کو نیم بدلنے پڑے۔ سن 1916 کی لکھنؤ کانگریس میں آٹھ برس کے بعد پھر سے لوکمانیہ تلک نے حصہ لیا۔ اُس سال کانگریس میں پرتیندھیوں کی تعداد 2,301 اور اگلے سال 4,967 تھی۔

لکھنؤ کانگریس کی ایک چھوٹی سی گھٹنا ہم میں سے بہت سوں کے لئے آج بھی کافی شکشاپرد ہے۔ ہندو مسلم سوال پر لوکمانیہ کے رخ کا اُس سے اور خاصہ پتہ چلتا ہے۔

اُس سمئے تک انگریز چناؤں اور سیٹوں کے جھگڑے دیش میں کھڑے کر کے ہندو اور مسلمانوں کے بیچ لڑائی کی ایک نئی بنیاد ڈال چکے تھے۔ ٹھیک آنکڑے مجھے اِس سمئے یاد نہیں۔ بات لگ بھگ یہ تھی۔ جناح صاحب مسلمانوں کے لئے کچھ ادھک سیٹوں پر اڑے ہوئے تھے جو ہندو نیتاؤں کو بیجا اور ہندوؤں کے ساتھ انیائے دکھائی دیتا تھا۔ شری پدم راج جین اور کچھ ہندو نیتا لوکمانیہ کے پاس پہونچے۔ اُن سے ساری بات کہی۔ لوکمانیہ نے، جتنی سیٹیں جناح صاحب مانگ رہے تھے اُس سے کہیں ادھک یعنی پچاس فیصدی سیٹیں مسلمانوں کو دینے کی ہندوؤں کو صلاح دی۔ ہندو نیتا حیران ہو گئے۔ بحث ہونے پر لوکمانیہ نے کہا :—

"Now I shall say give them cent percent of seats in all Legislatures. So long I can wrench power from the British I do not care who gets it in India."

ارتھات—"اب میں یہ کہونگا کہ سب دھارا سبھاؤں میں مسلمانوں کو سو فیصدی سیٹیں دے دو۔ اگر میں انگریزوں کے ہاتھوں سے شکتی چھین سکوں تو مجھے اِسکی کوئی پرواہ نہیں کہ بھارت میں وہ شکتی کس کے ہاتھوں میں جاتی ہے۔"

लोकमान्य की सन् 1916 की उस भावना में और पाँच साल बाद की महात्मा गांधी की उस बात में जो उन्होंने दिल्ली में मुसलमान नेताओं के हाथों में "कोरा चैक" दे देने की कही थी कोई फ़रक नहीं है. अपने देश के पचास साल के राजकाजी जीवन में और खासकर उसके हिन्दू मुस्लिम पहलू से हम अच्छी तरह वाक़िफ हैं अनेक हिन्दू मुस्लिम एकता कान्फ्रेंसों का इतिहास आँखों के सामने रखकर हमें बड़े दर्द के साथ यह कहना पड़ता है कि अगर देश और सब हिन्दू नेताओं में भी इतनी उदारता, उनके हृदयों में इतनी विशालता और खुद हिन्दुओं को भले बुरे की इतनी समझ होती तो न मुस्लिम लीग पैदा हो सकती थी और न देश के दो टुकड़े हो सकते थे. पर इन बातों में अभी भी हमारे दिल और दिमाग साफ़ नहीं हैं.

पहले महायुद्ध के फलस्वरूप देश में जागृति और आज़ादी की प्यास बढ़ती गई. "होमरूल" यानी स्वराज्य प्राप्त करने के लिए दो होमरूल लीग क़ायम हुईं. एक डाक्टर एनी बीसेंट की, दूसरी लोकमान्य तिलक की. मेरे अपने दिल में शुरू से डाक्टर एनी बीसेंट का भी बड़ा आदर था लोकमान्य देश के स्वतन्त्रता संग्राम के सबसे बड़े नेता थे उन्होंने बड़े प्रेम के साथ मुझे अपनी होमरूल लीग का यू० पी० के लिए आर्गेनाइज़िंग सेक्रेटरी नियुक्त किया

आज़ादी की बढ़ती हुई प्यास को दबाने के लिए इस बार "रौलट क़ानून" नाम के मशहूर काले क़ानून पास हुए देश भर ने उनका विरोध किया. उस तरह की होमरूल लीगों के लिए अब देश के बढ़ते हुए उत्साह से काम ले सकना कठिन हो गया महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से लौट चुके थे उन्होंने देश के मान को फिर से क़ायम करने और स्वराज्य की प्राप्ति के लिए सत्याग्रह का हथियार लोगों के हाथों में दिया

महात्मा गांधी का तरीक़ा बिलकुल नया तरीक़ा था दुनिया बदल चुकी थी. नई जागृति नये तरीक़ा की ज़रूरत थी. मालूम होता था कि लोकमान्य का काम पूरा हो चुका मैं और भाई मज़हरअली सोख्ता सरदार गृह बम्बई में लोकमान्य से मिलने गए हम दोनों गांधी जी से बातें कर चुके थे हमने गांधी जी का प्रोग्राम लोकमान्य के सामने रखा. वह पूरी तरह गांधी जी से सहमत नहीं हो पा रहे थे. फिर भी उन्होंने हमसे कहा कि "गांधी जी को जाकर मेरी तरफ़ से संदेशा दे दो कि देश के स्वतंत्रता संग्राम की बाग मैं पूरी तरह उनके हाथों में सौंप रहा हूँ. मेरा आशीर्वाद उनके साथ है."

पहली अगस्त महात्मा गांधी ने अपने आन्दोलन को शुरू करने के लिए देशव्यापी हड़ताल के लिए एलान की

لوکمانیہ کی سن 1916 کی اُس بھاونا میں اور پانچ سال بعد کی مہاتما گاندھی کی اُس بات میں جو انہوں نے دلی میں مسلمان لیڈروں کے ہاتھوں میں "کوراچیک" دے دینے کی کہی تھی کوئی فرق نہیں ہے۔ اپنے دیش کے پچاس سال کے راجکاجی جیون سے اور خاصکر اُسکے ہندو مسلم پہلو سے ہم اچھی طرح واقف ہیں۔ انیک ہندو مسلم ایکتا کانفرنسوں کا اِتہاس آنکھوں کے سامنے رکھکر ہمیں بڑے درد کے ساتھ یہ کہنا پڑتا ہے کہ اگر دیش اور سب ہندو نیتاؤں میں بھی اِتنی اُدارتا، اُنکے ہردیوں میں اِتنی وشالتا اور خود ہندوؤں کے بھلے بُرے کی اِتنی سمجھ ہوتی تو نہ مسلم لیگ پیدا ہو سکتی تھی اور نہ دیش کے دو ٹکڑے ہو سکتے تھے۔ پر اِن باتوں میں ابھی بھی ہمارے دل اور دماغ صاف نہیں ہیں۔

پہلے مہایدھ کے پھل سروپ دیش میں جاگرتی اور آزادی کی پیاس بڑھتی گئی۔ "ہوم رول" یعنی سوراجیہ پراپت کرنے کے لئے دو ہوم رول لیگ قائم ہوئیں۔ ایک ڈاکٹر اینی بیسنٹ کی، دوسری لوکمانیہ تلک کی۔ میرے اپنے دل میں شروع سے ڈاکٹر اینی بیسنٹ کا بھی بڑا آدر تھا لوکمانیہ دیش کے سوتنترتا سنگرام کے سب سے بڑے نیتا تھے۔ انہوں نے بڑے پریم کے ساتھ مجھے اپنی ہوم رول لیگ کا یو۔ پی کے لئے آرگنائزنگ سیکریٹری نیوکت کیا۔

آزادی کی بڑھتی ہوئی پیاس کو دبانے کے لئے اس بار "رولٹ قانون" نام کے مشہور "کالے قانون" پاس ہوئے۔ دیش بھر نے اُن کا ورودھ کیا۔ اُس طرح کی ہوم رول لیگوں کے لئے اب دیش کے بڑھتے ہوئے اُتساہ سے کام لے سکنا کٹھن ہوگیا۔ مہاتما گاندھی دکشن افریقہ سے لوٹ چکے تھے انہوں نے دیش کے مان کو پھر سے قائم کرنے اور سوراجیہ کی پراپتی کے لئے ستیاگرہ کا ہتھیار لوگوں کے ہاتھوں میں دیا۔

مہاتما گاندھی کا طریقہ بالکل نیا طریقہ تھا۔ دنیا بدل چکی تھی۔ نئی جاگرتی کے ساتھ نئے طریقوں کی ضرورت تھی۔ معلوم ہوتا تھا کہ لوکمانیہ کا کام پورا ہوچکا۔ میں اور بھائی مظہر علی سوختہ سردارگرہ بمبئی میں لوکمانیہ سے ملنے گئے۔ ہم دونوں گاندھی جی سے باتیں کرچکے تھے ہم نے گاندھی جی کا پروگرام لوکمانیہ کے سامنے رکھا۔ وہ پوری طرح گاندھی جی سے سہمت نہیں ہو پارہے تھے۔ پھر بھی انہوں نے ہم سے کہا کہ "گاندھی جی کو جاکر میری طرف سے یہ سندیش دیدو کہ دیش کے سوتنترتا سنگرام کی باگ میں پوری طرح اُن کے ہاتھوں میں سونپ رہا ہوں۔ میرا آشیرواد اُن کے ساتھ ہے۔"

پہلی اگست مہاتما گاندھی نے اپنے آندولن کے شروع کرنے کے لئے دیش ویاپی ہڑتال کے لئے اعلان کی

थी. इस तरह की हड़ताल इस देश के इतिहास में पहले कभी नहीं हुई थी. देश की एकता और बच्चे-बच्चे के अन्दर आज़ादी की लगन का इससे बढ़कर सबूत नहीं मिल सकता था. हिन्दुस्तान भर के किसी गाँव में भी उस दिन हल नहीं चलाया गया. लेकिन वह हड़ताल मातमी हड़ताल में बदल गई. ठीक 31 जुलाई और 1 अगस्त के बीच की रात को बम्बई में लोकमान्य तिलक का स्वर्गवास हो गया. बिलकुल ऐसा मालूम होता था कि कोई दैवी शक्ति इस छोटे से संसार के चक्र को चला रही है. भारत के स्वतंत्रता संग्राम के एक महत्वपूर्ण युग का अन्त हुआ और दूसरे युग का उदय.

महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक की महानता को समझते थे. अपने संग्राम के लिए उन्होंने जो एक करोड़ से ऊपर धन जमा किया उसका नाम उन्होंने 'तिलक स्वराज्य फ़ंड' रखा. स्वराज्य शब्द अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में आता है. लोकमान्य ने उसे पहले पहल देश का लक्ष्य तय किया. दादाभाई नौरोजी ने उसे कांग्रेस का मक़सद क़रार दिया. लोकमान्य ने उसे देश के कोने-कोने तक पहुँचाया. उस तक देश को पहुँचाने का श्रेय महात्मा गाँधी को मिला. परन्तु लोकमान्य तिलक का नाम भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में सदा के लिए अमर रहेगा. वे इस देश के पहले "जन नेता" थे. सचमुच वे "भारतीय क्रान्ति के जन्मदाता" थे.

अपने-अपने स्वभाव के मुताबिक़ सच्चे दिल से और ईश्वर के लिये काम करता हुआ हर आदमी अपने ही रास्ते सिद्धि या कमाल हासिल कर सकता है. यही हर आदमी का "स्वधर्म" है.

—गीता.

تھی. اسطرح کی هڑتال اِس دیش کے اِتہاس میں پہلے کبھی نہیں هوئی تھی. دیش کی ایکتا اور بچے بچے کے اندر آزادی کی لگن کا اُس سے بڑھکر ثبوت نہیں مل سکتا تھا. هندستان بھر کے کسی گاؤں میں بھی اُس دن هل نہیں چلایا گیا. لیکن وہ هڑتال ماتمی هڑتال میں بدل گئی. ٹھیک 31 جولائی اور 1 اگست کے بیچ کی رات کو بمبئی میں لوکمانیہ تلک کا سورگ واس هوگیا. بالکل ایسا معلوم هوتا تھا کہ کوئی دیوی شکتی اِس چھوٹے سے سنسار کے چکر کو چلا رهی هے. بھارت کے سوتنترتا سنگرام کے ایک مہتوپورن یگ کا انت هوا اور دوسرے یگ کا اُدے.

مہاتما گاندھی، لوکمانیہ تلک کی مہانتا کو سمجھتے تھے. اپنے سنگرام کے لئے اُنہوں نے جو ایک کروڑ سے اُوپر دھن جمع کیا اُس کا نام اُنہوں نے 'تلک سوراج فنڈ' رکھا. سوراجیہ شبد اتھروید کے پرتھوی سوکت میں آتا هے. لوکمانیہ نے اُسے پہلے پہل دیش کا لکشیہ طے کیا. دادا بھائی نوروجی نے اُسے کانگریس کا مقصد قرار دیا. لوکمانیہ نے اُسے دیش کے کونے کونے تک پہونچایا. اُس تک دیش کو پہونچانے کا شریہ مہاتما گاندھی کو ملا. پرنتو لوکمانیہ تلک کا نام بھارت کے سوتنترتا سنگرام کے اِتہاس میں سدا کے لئے امر رهیگا. وے اِس دیش کے پہلے "جن نیتا" تھے. سچ مچ وے "بھارتیہ کرانتی کے جنمداتا" تھے.

اپنے اپنے سوبھاؤ کے مطابق سچے دل سے اور اِیشور کے لئے کام کرتا هوا هر آدمی اپنے هی راستے سے سدھی یا کمال حاصل کرسکتا هے. یہی هر آدمی کا "سودھرم" هے.

—گیتا.

समाज सुधार और समाज सुधारक

महात्मा भगवानदीन

(१) सुधार और बिगाड़—

समाज सुधार का काम ऐसा काम है जिसका यह बताना कठिन है कि वह कब से शुरू हुआ, हाँ यह बताना आसान है कि उसका कब अन्त होगा. यह समाज सुधार का काम कब खतम हो जायगा? इसका यह जवाब है— "कभी खतम नहीं होगा." समाज सुधार के काम का खतम हो जाना और समाज का खतम हो जाना एक ही बात है

यह काम क्यों नहीं खतम होगा? इस का जवाब है, समाज का बिगड़ना कभी बन्द नहीं होता. मकान साफ होने पर ही मकान का साफ होना बन्द हो सकता है. मकान के रहते वह बन्द नहीं हो सकता. कूड़ा हमेशा साफ करना पड़ता है, बिगड़े-समाज को हमेशा बनाना पड़ता है.

समाज के बिगाड़ का क्या कोई और नाम है? हाँ है. वह है, समाज का रूढ़ियों पर चलना. समाज-बिगाड़ को रूढ़िवाद भी कहा जा सकता है.

रूढ़ि किसे कहते हैं? पुराने रिवाज को. रिवाज पुराने होने पर रूढ़ि नाम पाते हैं. समाज सुधारक इसके सिवाय और करता ही क्या है कि पुराने रिवाजों की जगह नए रिवाजों को जगह दिलवा देता है. नए रिवाज फिर पुराने हो जाते हैं और रूढ़ि बन जाते हैं. सुधार की फिर जरूरत हो जाती है. यूँ सुधार का काम कभी खतम नहीं हो पाता.

रिवाज एक नहीं, अनेक हैं, अनगिनत हैं. हर समय एक दो, दस बीस रिवाज रूढ़ि के रूप में रहते ही हैं इसलिये हर दम, हर घड़ी, हर क्षण सुधार की जरूरत है. सुधार का काम कभी खतम नहीं होगा इतना ही नहीं, किसी क्षण भी खतम नहीं होता. समाज के सब के सब आदमी अगर सुधारक बन जाँय तब भी यह काम कभी न निपट सकेगा. समाज के सब आदमियों से हमारा मतलब है सोलह बरस के ऊपर के सब नर नारी. अब आपने समझ लिया होगा कि समाज - सुधार का मैदान कितना लम्बा, चौड़ा, कितने फैलाव और समाई वाला है.

यह सुनकर आप दाँतों तले उँगली दबाकर रह जाएँगे कि समाज का कोई सुधार, समाज का कुछ बिगाड़ किये बिना हो ही नहीं सकता. समाज सुधारक ऐसी बात सुनकर भौंचक्का रह सकता है पर सचाई है यही.

पहले यह बताइये कि लड़के लड़कियों का मजबूत बनाना समाज सुधार है या नहीं? यदि हाँ, तब यह बताइये

سماج سدھار اور سماج سدھارک

مہاتما بھگوان دین

(1) سدھار اور بگاڑ—

سماج سدھار کا کام ایسا کام ہے جس کا یہ بتانا کٹھن ہے کہ وہ کب سے شروع ہوا، ہاں یہ بتانا آسان ہے کہ اُس کا کب انت ہوگا. یہ سماج سدھار کا کام کب ختم ہوجائیگا؟ اِس کا یہ جواب ہے—"کبھی ختم نہیں ہوگا." سماج سدھار کے کام کا ختم ہوجانا اور سماج کا ختم ہوجانا ایک ہی بات ہے.

یہ کام کیوں نہیں ختم ہوگا؟ اِس کا جواب ہے، سماج کا بگڑنا کبھی بند نہیں ہوگا. مکان صاف ہونے پر ہی مکان کا صاف ہونا بند ہوسکتا ہے. مکان کے رہتے وہ بند نہیں ہوسکتا. کوڑا ہمیشہ صاف کرنا پڑتا ہے، بگڑے سماج کو ہمیشہ بنانا پڑتا ہے.

سماج کے بگاڑ کا کیا کوئی اور نام ہے؟ ہاں ہے وہ ہے، سماج کا روڑھیوں پر چلنا. سماج - بگاڑ کو روڑھی واد بھی کہا جاسکتا ہے.

روڑھی کسے کہتے ہیں؟ پرانے رواج کو. رواج پرانے ہونے پر روڑھی نام پاتے ہیں. سماج سدھارک اِس کے سوائے اور کرتا ہی کیا ہے کہ پرانے رواجوں کی جگہ نئے رواجوں کو جگہ دلوا دیتا ہے. نئے رواج پھر پرانے ہوجاتے ہیں اور روڑھی بن جاتے ہیں. سدھار کی پھر ضرورت ہوجاتی ہے. یوں سدھار کا کام کبھی ختم نہیں ہوپاتا.

رواج ایک نہیں، انیک ہیں، انگنت ہیں. ہر سمے ایک دو، دس بیس رواج روڑھی کے روپ میں رہتے ہی ہیں اِس لئے ہردم، ہر گھڑی، ہر چھن سدھار کی ضرورت ہے سدھار کا کام کبھی ختم نہیں ہوگا. اِتنا ہی نہیں کسی چھن بھی ختم نہیں ہوتا. سماج کے سب کے سب آدمی اگر سدھارک بن جائیں تب بھی یہ کام کبھی نہ نپٹ سکیگا. سماج کے سب آدمیوں سے ہمارا مطلب ہے سولہ برس کے اوپر کے سب نرناری. اب آپنے سمجھ لیا ہوگا کہ سماج سدھار کا میدان کتنا لمبا، چوڑا، کتنے پھیلاؤ اور سمائی والا ہے.

یہ سنکر آپ دانتوں تلے اُنگلی دبا کر رہ جائینگے کہ سماج کا کوئی سدھار، سماج کا کچھ بگاڑ کئے بنا ہو ہی نہیں سکتا. سماج سدھارک ایسی بات سنکر بھونچکا رہ سکتا ہے پر سچائی ہے یہی.

پہلے یہ بتائیے کہ لڑکے لڑکیوں کا مضبوط بنانا سماج سدھار ہے یا نہیں؟ یدی ہاں، تب یہ بتائیے

कि क्या सुधरे हुए समाज के लड़की लड़के उतने ही बलवान हैं जितने उस समाज के जिनको सुधरे समाज, बिगड़े समाज कहते हैं यानी जंगली समझते हैं, आदिमवासी समझते हैं, पिछड़े समझते हैं ? क्या आज भी अंगरेज और अमरीकी उस हिन्दुस्तान को पिछड़ा हुआ देश नहीं समझते जिसने अभी कुछ दिन हुए सुधरे अंगरेजी समाज को अपने देश से बाहर निकाल दिया था ?

आप कहेंगे, इतिहासकारों का कहना है कि हमेशा बिगड़ा हुआ समाज यानी जंगली समाज लड़ाई के मैदान में सुधरे समाज को हराया करता है, हराता रहता है. इसको साबित करने के लिये इतिहास के जानकार यह दलील दिया करते हैं कि हिन्दुस्तान के आदिम वासी द्रविड़ ज़ियादा सभ्य थे तभी असभ्य आर्यों से हार गए, इसलिये अभी कुछ दिन पहले जो अंगरेज हिन्दुस्तानियों से हारे वह इसीलिये हारे कि हिन्दुस्तानी जंगली थे और अंगरेज सभ्य. आज भी अंगरेज सभ्य हैं और हम हिन्दुस्तानी जंगली.

क्या इस दलील को सच मानकर मैं यह कहूँ कि अंगरेज और अमरीकी जंगली हैं जिन्होंने जरमनी और जापान को हरा दिया ? मेरी यह बात इतिहास के आधार पर है तो सच. पर क्या अंगरेज और अमरीकी इसको सच समझेंगे ? क्या दोनों अपने को जापान और जरमनी से ज़ियादा असभ्य समझेंगे ? अगर नहीं, तो हमारी यह बात माननी होगी कि हर सुधार एक बिगाड़ को जन्म देकर अपनी जगह बनाता है.

अगर आप समाज को बलवान बनाएँगे, बलवान बनाना एक सुधार है, तो आप ज़रूर समाज को उतने ही अंशों में मूर्ख भी बना देंगे. मूर्ख बनाए बिना आप समाज को बलवान नहीं बना सकते. कमज़ोर बनाए बिना आप समाज को बुद्धिमान नहीं बना सकते. पर कभी हम समाज को बलवान देखना चाहते हैं और कभी बुद्धिमान. इसलिये बिगाड़ सुधार का सिलसिला बराबर चलता रहता है.

घरों में, आए दिन, औरतें यह किया करती हैं कि अपनी सोने की आरसी तुड़वाकर कंगन बनवा लेती हैं. पता नहीं यह कंगन रूपी सुधार आरसी के रूप को बिगाड़ कर क्या बनाया गया ? यह सवाल हरगिज़ न उठाइये कि कंगन नया पाँसा ख़रीद कर बनाया गया था, जबकि मैं ऊपर यह कह चुका हूँ कि वह आरसी तुड़वाकर बनवाया गया था. लेकिन दलील की ख़ातिर मैं यह भी माने लेता हूँ कि वह पाँसा तुड़वाकर ही बनवाया गया था. पर पाँसा क्या ख़ुद सोने का सुधरा हुआ रूप नहीं था ? कंगन चोर के हाथ पड़कर जब सराफ़ की दूकान पर पहुँचेगा तो उस कंगन को सुधरे रूप पाँसे की शकल में आना होगा तभी वह सराफ़ की अलमारी में जगह पाने के योग्य हो सकेगा. सम्भव है इस नए संस्कार में उसे कुछ टोटा भी भुगतना पड़े.

کہ کیا سدھرے ہوئے سماج کے لڑکی لڑکے اُتنے ہی بلوان ہیں جتنے اُس سماج کے جنکو سدھرے سماج، بگڑے سماج کہتے ہیں یعنی جنگلی سمجھتے ہیں، آدم واسی سمجھتے ہیں، پچھڑے سمجھتے ہیں ؟ کیا آج بھی انگریز اور امریکی اُس ہندستان کو پچھڑا ہوا دیش نہیں سمجھتے جس نے ابھی کچھ دن ہوئے سدھرے انگریزی سماج کو اپنے دیش سے باہر نکال دیا تھا ؟

آپ کہینگے، اِتہاسکاروں کا کہنا ہے کہ ہمیشہ بگڑا ہوا سماج یعنی جنگلی سماج لڑائی کے میدان میں سدھرے سماج کو ہرایا کرتا ہے، ہراتا رہتا ہے۔ اِس کو ثابت کرنے کے لئے اِتہاس کے جانکار یہ دلیل دیا کرتے ہیں کہ ہندستان کے آدم واسی دراوڑ زیادہ سبھیہ تھے تب ہی اَسبھیہ آریوں سے ہار گئے۔ اِس لئے ابھی کچھ دن پہلے جو انگریز ہندستانیوں سے ہارے وہ اِسی لئے ہارے کہ ہندستانی جنگلی تھے اور انگریز سبھیہ۔ آج بھی انگریز سبھیہ ہیں اور ہم ہندستانی جنگلی۔

کیا اِس دلیل کو سچ مان کر میں یہ کہوں کہ انگریز اور امریکی جنگلی ہیں جنہوں نے جرمنی اور جاپان کو ہرا دیا ؟ میری یہ بات اِتہاس کے آدھار پر ہے تو سچ۔ پر کیا انگریز اور امریکی اِس کو سچ سمجھیں گے ؟ کیا دونوں اپنے کو جاپان اور جرمنی سے زیادہ اسبھیہ سمجھیں گے ؟ اگر نہیں، تو ہماری یہ بات ماننی ہوگی کہ ہر سدھار ایک بگاڑ کو جنم دےکر اپنی جگہ بناتا ہے۔

اگر آپ سماج کو بلوان بنائیں گے، بلوان بنانا ایک سدھار ہے، تو آپ ضرور سماج کو اُتنے ہی انشوں میں مورکھ بھی بنادیں گے۔ مورکھ بنائے بنا آپ سماج کو بلوان نہیں بناسکتے۔ کمزور بنائے بنا آپ سماج کو بدھیمان نہیں بناسکتے۔ پر کبھی ہم سماج کو بلوان دیکھنا چاہتے ہیں اور کبھی بدھیمان۔ اِس لئے بگاڑ سدھار کا سلسلہ برابر چلتا رہتا ہے۔

گھروں میں ’آئے دن‘ عورتیں یہ کیا کرتی ہیں کہ اپنی سونے کی آرسی تڑواکر کنگن بنوا لیتی ہیں۔ پتہ نہیں یہ کنگن روپی سدھار آرسی کے روپ کو بگاڑ کے کیوں بنایا گیا ؟ یہ سوال ہرگز نہ اُٹھائیے کہ کنگن نیا پانسا خرید کر بنایا گیا تھا، جبکہ میں اوپر یہ کہ چکا ہوں کہ وہ آرسی تڑواکر بنوایا گیا تھا، لیکن دلیل کے خاطر میں یہ بھی مانے لیتا ہوں کہ وہ پانسا تڑواکر ہی بنوایا گیا تھا۔ پر پانسا کیا خود سونے کا سدھرا ہوا روپ نہیں تھا ؟ کنگن چور کے ہاتھ پڑکر جب صراف کی دوکان پر پہونچے گا تو اُس کنگن کو سدھرے روپ پانسے کی شکل میں آنا ہوگا تبھی وہ صراف کی الماری میں جگہ پانے کے یوگیہ ہوسکےگا۔ سمبھو ہے اِس نئے سنسکار میں اُسے کچھ ٹوٹا بھی بھگتنا پڑے۔

समाज सुधारक बिगाड़ें नहीं. वह यह खूब समझ लें कि वह समाज का बिगाड़ किये बिना कोई सुधार नहीं कर सकते. समाज सुधारक अगर सोलहों आने सुधारक हैं तो सोलहों आने बिगाड़क हैं. जितना कम सुधारक है उतना ही कम बिगाड़क है. उजाले और अँधेरे पाख में चाँदनी के घंटे एक बराबर होते हैं पर न जाने क्यों हम एक पाख को अच्छा और दूसरे को बुरा कहते हैं? संभव है कुछ ऐसे लोग भी हों जो अँधेरे पाख को अच्छा और उजाले पाख को बुरा समझते हों कौन हैं जो अँधेरे पाख को अच्छा समझते हैं उनसे आप खूब वाकिफ़ हैं.

एक बार एक अंगरेज और फ्रांसीसी में वाद-विवाद हो गया. अंगरेज बोला:—"हमारा राज बड़ा." फ्रांसीसी बोला:—"हमारा राज बड़ा" अंगरेज बोला—"तुम्हारा राज कैसे बड़ा?" फ्रांसीसी बोला —"हमारा राज बहुत अच्छा है. तुम बताओ तुम्हारा राज कैसे बड़ा?" अंगरेज बोला:—"हमारा राज सारी दुनिया में फैला हुआ है. हमारे राज में सूरज कभी नहीं डूबता." फ्रांसीसी बोला —"यह तो कोई अच्छी बात नहीं है. खुदा तुम्हारे राज में सूरज इसीलिये नहीं डूबने देता कि तुम चोर हो. अँधेरा हो जायगा तो चोरी करोगे." अंगरेज बिगड़कर बोला.—"तब मैं यह कहूँगा कि हमारे राज में हमेशा अँधेरा रहता है और कहीं चोरी नहीं होती." फ्रांसीसी बोला. —"तब मैं यह कहूँगा कि खुदा ने तुमको किसी पहली चोरी की सजा दी है तभी तो तुमको हमेशा अँधेरे में रखता है." यह कहानी कहकर हम अपने पढ़ने वालों के दिलों में यह बात बिठाना चाहते हैं कि समाज सुधारक जाने अनजाने समाज का बिगाड़कर जाता है. अगर उसे यह मालूम हो कि वह बिगाड़ कर रहा है तो शायद वह समाजके सुधार करने की बात सोचे ही नहीं.

(२) समाज-सुधार के आदर्श—

समाज सुधार का या समाज सुधारक का आदर्श क्या होना चाहिये? इसके जवाब से भी पहले हमें यह समझ लेना चाहिये कि आदर्श कहते किसे हैं?

हम तो आदर्श की यह परिभाषा मानते हैं.—'किसी काम का आदर्श उस काम की वह काल्पनिक अवस्था है जहाँ तक कभी नहीं पहुँचा जा सकता."

आप यह सवाल उठाएँगे कि वह आदर्श ही क्या जिस तक न पहुँचा जा सके? हम उसके जवाब में यह कहेंगे कि वह आदर्श ही क्या जिस तक हम पहुँच जाएँ? क्योंकि आदर्श तक पहुँचने पर हमारे पास करने को कुछ रह ही न जायगा और वह हालत ऐसी हालत होगी कि हम चेतन से जड़ बन गए होंगे. हमारे महर्षियों ने मुक्ति को आदर्श माना है. क्या दुनिया में कोई मुक्त जीव मिलता है? मुक्त

سماج سدھارک بگاڑیں نہیں ۔ وہ یہ خوب سمجھ لیں کہ وہ سماج کا بگاڑ کئے بنا کوئی سدھار نہیں کرسکتے ۔ سماج سدھارک اگر سولہو آنے سدھارک ہیں تو سولہو آنے بگاڑک ہیں ۔ جتنا کم سدھارک ہے اتنا ہی کم بگاڑک ہے ۔ اُجالے اور اندھیرے پاکھ میں چاندنی کے گھنٹے ایک برابر ہوتے ہیں پر نہ جانیں کیوں ہم ایک پاکھ کو اچھا اور دوسرے کو برا کہتے ہیں ؟ ممکن ہے کچھ ایسے لوگ بھی ہوں جو اندھیرے پاکھ کو اچھا اور اُجالے پاکھ کو برا سمجھتے ہیں ۔ کون ہیں جو اندھیرے پاکھ کو اچھا سمجھتے ہیں اُن سے آپ خوب واقف ہیں ۔

ایکبار ایک انگریز اور فرانسیسی میں واد وواد ہو پڑا ۔ انگریز بولا :—"ہمارا راج بڑا ." فرانسیسی بولا :—"ہمارا راج بڑا ." انگریز بولا :—"تمہارا راج کیسے بڑا ؟" فرانسیسی بولا :—"ہمارا راج بہت اچھا ہے ۔ تم بتاؤ تمہارا راج کیسے بڑا ؟" انگریز بولا :—"ہمارا راج ساری دنیا میں پھیلا ہوا ہے ۔ ہمارے راج میں سورج کبھی نہیں ڈوبتا ." فرانسیسی بولا :—"یہ تو کوئی اچھی بات نہیں ہے ۔ خدا تمہارے راج میں سورج اِس لئے نہیں ڈوبنے دیتا کہ تم چور ہو ۔ اندھیرا ہو جائیگا تو چوری کروگے ." انگریز بگڑ کر بولا .—"تب میں یہ کہونگا کہ ہمارے راج میں ہمیشہ اندھیرا رہتا ہے اور کہیں چوری نہیں ہوتی ." فرانسیسی بولا .—"تب میں یہ کہونگا کہ خدا نے تمکو کسی پہلی چوری کی سزا دی ہے تبھی تو تمکو ہمیشہ اندھیرے میں رکھتا ہے ." یہ کہانی کہکر ہم اپنے پڑھنے والوں کے دلوں میں یہ بات بٹھانا چاہتے ہیں کہ سماج سدھارک جانے انجانے سماج کا بگاڑ کر جاتا ہے ۔ اگر اُسے یہ معلوم ہو کہ وہ بگاڑ کررہا ہے تو شاید وہ سماج کے سدھار کی کی بات سوچے ہی نہیں ۔

(2) سماج سدھار کے آدرش—

سماج سدھار کا یا سماج سدھارک کا آدرش کیا ہونا چاہئے ؟ اِس کے جواب سے بھی پہلے ہمیں یہ سمجھ لینا چاہئے کہ آدرش کہتے کسے ہیں ؟

ہم تو آدرش کی یہ پریبھاشا مانتے ہیں :—"کسی کام کا آدرش اُس کام کی وہ کالپنک اوستھا ہے جہاں تک کبھی نہیں پہونچا جاسکتا ."

آپ یہ سوال اُٹھائینگے کہ وہ آدرش ہی کیا جس تک نہ پہونچا جاسکے ؟ ہم اُس کے جواب میں یہ کہینگے کہ وہ آدرش ہی کیا جس تک ہم پہونچ جائیں ؟ کیونکہ آدرش تک پہونچنے پر ہمارے پاس کرنے کو کچھ رہ ہی نہ جائیگا اور وہ حالت ایسی حالت ہوگی کہ ہم چیتن سے جڑ بن گئے ہوں گے ۔ ہمارے رشیوں نے مکتی کو آدرش مانا ہے ۔ کیا دنیا میں کوئی مکت جیو ملتا ہے ؟ مکت

जीवन सुनने, पढ़ने की चीज है. देखने छूने की नहीं. वास्तव में मुक्ति कभी मिलती ही नहीं या फिर वह हर क्षण मिलती रहती है और वह मुक्ति जिसको ऋषियों ने आदर्श माना है अगर किसी को मिल जाय तो दुनिया की अपेक्षा वह कोरा ठूँठ बन जाय—कोरा ठूँठ. पर मुक्ति के इस आदर्श ने सैकड़ों को भला आदमी बना दिया. हजारों को बड़े काम का साबित कर दिया. लाखों करोड़ों का भला कर रहा है. पर है आदर्श ऐसा ही जिस तक कभी नहीं पहुँचा जा सकता."

चाँद को निशाना बनाकर तीर फेंकने से ही तीर पूरे जोर से फेंका जा सकता है. तीर चाँद तक कभी पहुँच नहीं पाएगा.

सुधार के आदर्श की बात कभी किसी ने नहीं सोची. किसी ने सोची हो तो हमें पता नहीं. पर हम तो अपने लेख को आगे हरगिज न बढ़ने देंगे जब तक सुधार का आदर्श तय न कर लें. बिना आदर्श हम बढ़ें भी किस ओर ? और फिर ऐसी दुनिया में जहाँ हर एक सुधार एक बिगाड़ को जन्म देता है. क्या इसी विचार से बुद्ध भगवान ने मध्यम मार्ग पसन्द किया था ? क्या अब हम यह करें कि आठ आने सुधार करें और आठ आने बिगाड़ के लिये छोड़ें ताकि बिगाड़ सुधार का समतोल बना रहे ? यानी अगर समाज में दस लाख पहलवान हों तो दस लाख ही बुद्धिमान तैयार किये जाँय. दस लाख साधू पुरुष हों तो दस लाख ही चोर डाकू तैयार किये जाँय. पर यह सब हमारे तैयार किये हुए हों, अपने आप उठ खड़े हुए न हों. खेती हम हिसाब से करते हैं पर प्रकृति खेती बेहिसाब करती है. यह हम कह सकते हैं—प्रकृति देवी नहीं कह सकती. प्रकृति देवी का हिसाब वही जाने. वह जरूर सब कुछ हिसाब से करती होगी, उसके हिसाब का हमें पता नहीं. और उससे हमें लेना देना भी क्या ? हमें तो समाज को अपनी आँखों ही देखना होगा और उसी हिसाब से बिगाड़ सुधार करना होगा और आदर्श तय करना होगा.

समाज सुधार का यह आदर्श होगा :—

1. सुधरे हुए समाज में कोई अविवेकी न होगा.

2. सुधरा हुआ समाज शासनविहीन होगा यानी उस पर कोई सरकार न होगी. अराजकता ही राजकता का रूप ले लेगी.

3. विवाह जैसी प्रथा का अंत हो जाएगा, फिर भी लैंगिक भूल किसी से न होगी.

4. अस्पताल, स्कूल, अनाथालय, धर्मशाला नाम के लिये भी न होंगे.

5. सोलह बरस की उमर के बाद चोट के सिवाय किसी बीमारी पर ध्यान नहीं दिया जायगा.

سماج سدھار اور سماج سدھارک

جیون سننے، پڑھنے کی چیز ہے، دیکھنے چھونے کی نہیں۔ واستو میں مکتی کبھی ملتی ہی نہیں یا پھر وہ ہر چھن ملتی رہتی ہے اور وہ مکتی جسکو رشیوں نے آدرش مانا ہے اگر کسی کو مل جائے تو دنیا کی اپیکشا وہ کورا ٹھونٹھ بن جائے—کورا ٹھونٹھ ۔ پر مکتی کے اِس آدرش نے سیکڑوں کو بھلا آدمی بنا دیا ۔ ہزاروں کو بڑے کام کا ثابت کردیا ۔ لاکھوں کروڑوں کا بھلا کررہا ہے ۔ پر ہے آدرش ایسا ہی جس تک کبھی نہیں پہونچا جاسکتا ۔"

چاند کو نشانہ بناکر تیر پھینکنے سے ہی تیر پورے زور سے پھینکا جاسکتا ہے ۔ تیر چاند تک کبھی پہونچ نہیں پائیگا ۔

سدھار کے آدرش کی بات کبھی کسی نے نہیں سوچی ۔ کسی نے سوچی ہو تو ہمیں پتہ نہیں ۔ پر ہم تو اپنے لیکھ کو آگے ہرگز نہ بڑھنے دینگے جب تک سدھار کا آدرش طے نہ کرلیں ۔ بنا آدرش ہم بڑھیں بھی کس اور ؟ اور پھر ایسی دنیا میں جہاں ہر ایک سدھار ایک بگاڑ کو جنم دیتا ہے ۔ کیا اسی وچار سے بدھ بھگوان نے مدھیم مارگ پسند کیا تھا ؟ کیا اب ہم یہ کریں کہ آٹھ آنے سدھار کریں اور آٹھ آنے بگاڑ کے لئے چھوڑیں تاکہ بگاڑ سدھار کا سمتول بنا رہے ؟ یعنی اگر سماج میں دس لاکھ پہلوان ہوں تو دس لاکھ ہی بدھیمان تیار کئے جائیں ۔ دس لاکھ سادھو پرش ہوں تو دس لاکھ ہی چور ڈاکو تیار کئے جائیں ۔ پر یہ سب ہمارے تیار کئے ہوئے ہوں، اپنے آپ اٹھ کھڑے ہوئے نہ ہوں ۔ کھیتی ہم حساب سے کرتے ہیں پر پرکرتی کھیتی بے حساب کرتی ہے یہ ہم کہہ سکتے ہیں—پرکرتی دیوی نہیں کہہ سکتی ۔ پرکرتی دیوی کا حساب وہی جانے ۔ وہ ضرور سب کچھ حساب سے کرتی ہوگی، اس کے حساب کا ہمیں پتہ نہیں ۔ اور اس سے ہمیں لینا دینا بھی کیا ؟ ہمیں تو سماج کو اپنی آنکھوں ہی دیکھنا ہوگا اور اسی حساب سے بگاڑ سدھار کرنا ہوگا اور آدرش طے کرنا ہوگا ۔

سماج سدھار کا یہ آدرش ہوگا :—

1. سدھرے ہوئے سماج میں کوئی اوویکی نہ ہوگا

2. سدھرا ہوا سماج شاسن وہین ہوگا یعنی اس پر کوئی سرکار نہ ہوگی ۔ اراجکتا ہی راجکتا کا روپ لے لیگی ۔

3. وواہ جیسی پرتھا کا انت ہوجائیگا پھر بھی لینگک بھول کسی سے نہ ہوگی ۔

4. اسپتال، اسکول، اناتھالیہ، دھرمشالہ نام کے لئے بھی نہ ہونگے ۔

5. سولہ برس کی عمر کے بعد چوٹ کے سوائے کسی بیماری پر دھیان نہیں دیا جائیگا ۔

6. नौ बरस की उमर के बाद बच्चे दवा लेना पसन्द नहीं करेंगे. बारह बरस की उमर के बाद वैद की मदद लेना बुरी नज़र से देखा जायगा

7. सरकार न होगी तो अदालतें अपने आप न होंगी.

8. कोई दो आदमी अपने झगड़े को किसी तीसरे से चुकाने में बहुत शरम मानेंगे. अपने आप ही अपना झगड़ा निपटा लेंगे.

9. मादरज़ाद नंगा रहना कोई अनोखी बात नहीं समझा जायगा.

10 अधड़ शायद कोई मिल जाय पर नासमझ और अज्ञानी कोई ढूँढ़ा न मिलेगा

11. दुबले पतले मिल सकेंगे पर निर्बल कोई न होगा.

12 आम तौर से आदमी दो संतानों से संतोष पायेगा पर एक घर की आबादी पाँच से ज़ियादा हरगिज़ न मिलेगी

13 पच्चीस बरस तक आदमी बच्चा ही समझा जायगा और बच्चों की तरह रहने की उसे छूट होगी

14 कोई किसी का नौकर न होगा

15 जब सरकार न होगी तब मौत की या दूसरी सज़ाएँ अपने आप न होंगी

16 गुरुजन सज़ा का काम 'हाँ' इस शब्द से लिया करेंगे हर एक आदमी 'हाँ" सुनकर इतना दुख माना करेगा जिसका ठिकाना न होगा धिक शब्द तो उसकी जान लेने के लिये काफ़ी होगा

17 धर्म का कोई नाम न होगा धर्मग्रंथ न होंगे, उनकी ज़रूरत ही नहीं होगी मंदिर नहीं होंगे मंदिर अजायबघर बन चुके होंगे

18 भगवान की जगह सत्य और भगवान की खोज की जगह सत्य की खोज ले लेगी

अब आदर्श हमारे साफ़ हैं हमारे प्रयत्न अब उसी ओर होंगे अब हम अपने चरित्र को ठीक-ठीक संगठित कर सकेंगे विश्व नागरिकता की नींव डाल सकेंगे.

सुधार का मतलब है—समाज का हर तरह आज़ाद होना समाज के आज़ाद होने का मतलब है—व्यक्ति का हर तरह आज़ाद होना आज़ाद व्यक्तियों का ही आज़ाद समाज बन सकता है अब समाज सुधार व्यक्ति सुधार के सिवाय कुछ नहीं रह जाता

सुधारकों को यह ध्यान रखना चाहिये कि व्यक्ति का विकास किये बिना समाज रचना नहीं हो सकती. आज की ईंट का नाम है "गुम्मा" ईंट पुरानी ईंटों का नाम होता था— "ककैया" ईंट. आज की ईंट स्कूल से निकले हुए लड़के की

6. نو برس کی عمر کے بعد بچے دوا لینا پسند نہیں کرینگے ۔ بارہ برس کی عمر کے بعد وید کی مدد لینا بری نظر سے دیکھا جائیگا۔

7. سرکار نہ ہوگی تو عدالتیں اپنے آپ نہ ہونگی ۔

8. کوئی دو آدمی اپنے جھگڑے کو کسی تیسرے سے چکانے میں بہت شرم مانینگے اپنے آپ ہی اپنا جھگڑا نپٹا لینگے ۔

9. مادرزاد ننگا رہنا کوئی انوکھی بات نہیں سمجھا جائیگا

10. ادھڑ شاید کوئی مل جائے پر ناسمجھ اور اگیانی کوئی ڈھونڈھا نہ ملیگا

11. دبلے پتلے مل سکینگے پر نربل کوئی نہ ہوگا ۔

12. عام طور سے آدمی دو سنتانوں سے سنتوش مانیگا پر ایک گھر کی آبادی پانچ سے زیادہ ہرگز نہ ملیگی ۔

13 پچیس برس تک آدمی بچہ سمجھا جائیگا اور بچوں کی طرح رہنے کی اسے چھوٹ ہوگی

14. کوئی کسی کا نوکر نہ ہوگا

15 جب سرکار نہ ہوگی تب موت کی یا دوسری سزائیں اپنے آپ نہ ہونگی ۔

16. گروجن سزا کا کام "ہاں" اس شبد سے لیا کرینگے ہر ایک آدمی 'ہاں" سنکر اتنا دکھ مانا کریگا کہ جس کا ٹھکانا نہ ہوگا "دھک' شبد تو اس کی جان لینے کے لئے کافی ہوگا ۔

17. دھرم کا کوئی نام نہ ہوگا' دھرم گرنتھ نہ ہونگے' ان کی ضرورت ہی نہیں ہوگی' مندر نہیں ہونگے' مندر عجائب گھر بن چکے ہونگے

18. بھگوان کی جگہ ستیہ اور بھگوان کی کھوج کی جگہ ستیہ کی کھوج لے لیگی ۔

اب آدرش ہمارے صاف ہیں ہمارے پریتن اب اسی اور ہونگے اب ہم اپنے چرتر کو ٹھیک ٹھیک سنگٹھت کر سکینگے وشو ناگرکتا کی نیو ڈال سکینگے ۔

سدھار کا مطلب ہے—سماج کا ہر طرح آزاد ہونا ۔ سماج کے آزاد ہونے کا مطلب ہے—ویکتی کا ہر طرح آزاد ہونا آزاد ویکتیوں کا ہی آزاد سماج بن سکتا ہے اب سماج سدھار ویکتی سدھار کے سوائے کچھ نہیں رہ جاتا ۔

سدھارکوں کو یہ دھیان رکھنا چاہئے کہ ویکتی کا وکاس کئے بنا سماج رچنا نہیں ہوسکتی۔ آج کی اینٹ کا نام ہے "گما" اینٹ پرانی اینٹوں کا نام ہوتا تھا— "ککیا" اینٹ آج کی اینٹ اسکول سے نکلے ہوئے لڑکے کی

तरह होती है, बाकी सब एक सी होती हैं. पहली ईंटें घर में पले बच्चे की तरह होती थीं. हर एक का अपना रूप होता था. कभी-कभी रंग भी भिन्न होता था. मकान बनाने मे गुम्मा ईंट तक को कहीं न कहीं से छीलना काटना होता है, तोड़ना फोड़ना होता है. ककैया ईंटों में तो हर एक ईंट को छीलना पड़ता था और बहुत सी ईंटो को तोड़ना फोड़ना पड़ता था तब कहीं सुन्दर मकान बन सकता था. जिस तरह मकान बनाने में ईंटों को बिगाड़ना पड़ता है वैसे ही समाज का भवन बनाने में व्यक्ति को बिगाड़ना पड़ता है.

ईंटों में अगर जान होती तो वह आसानी से न छिल सकतीं, न टूट फूट सकतीं. टूटना फूटना यानी मरना. ठीक इसी तरह व्यक्ति, अगर उसका बस चले, तो समाज भवन में लगने के लिये कभी बिगड़ना पसन्द न करे. इसलिये हम यह कह सकते हैं कि व्यक्ति कभी नहीं चाहता कि समाज की रचना हो और जब व्यक्ति समाज रचना की बात सोचता है तो वह कभी यह नहीं चाहता कि वह सुधरने के लिये बिगड़े. असल में होता यह है कि उसमे अहङ्कार जागता है. अहङ्कार का जागना एक तरह से आत्म विकार ही है, पर इस आत्म विकृति का ध्यान ही अगर रहे तो वह समाज रचना की बात ही न सोचे नशे में चूर जिस तरह अपनेपन को भूलकर ऐसे काम कर डालता है जो दूसरों की नजरों मे गिरे हुए होते हैं पर वह खुद उन कामों को गिरा हुआ थोड़े ही समझता है गिरा हुआ समझे तो करे ही क्यों? ठीक इसी तरह अहङ्कारी व्यक्ति अपनी आत्मा को विकृत करके समाज की रचना की बात सोचता है. अब समाज रचना का अर्थ हो जाता है—"सारे समाज का एक आदमी के क़ाबू मे आ जाना" इसी बात का नासमझ समझदार कवि एक सूत मे माला पिराने से उपमा देते हैं. यह किस से छिपा हुआ है कि मोती माला मे आने से पहले अपनी शान खो चुका होता है, अपना पेट फटवा चुका होता है, इसलिये व्यक्ति समाज माला मे पिराए जाने से पहले अपना बहुत कुछ नुक़सान कर चुका होता है.

व्यक्ति ने इतनी तकलीफ़ यूँ ही नहीं भुगती अलग अलग उनका जीवन खतरे मे था इसलिये उन्होंने अपने सिर पर राजा का बोझ उठा लिया. यह बोझ आज तक उसके सिर पर क़ायम है. आज तो यह हाल हो गया है कि वह अपने सिर पर से एक को हटाता है तो दो सवार हो जाते हैं. दो को हटाता है तो चार सवार हो जाते हैं और चार को हटाता है तो आठ, मानो उसे मक्खियो के झुँड ने ही नहीं शहद की मक्खियों के झुंड ने घेर रक्खा है. और व्यक्ति है कि अपनी झूठी तालीम के नशे में इसमें रस ले रहा है, उसको अच्छा समझ रहा है.

क्या समाज सुधारक हमे यह बता सकते हैं कि वह जो कुछ करते हैं सुधार करते हैं या बिगाड़? अगर उन्हें

طرح ہوتی ہے، باقی سب ایک سی ہوتی ہیں۔ پہلی اینٹیں گھر میں پلے بچے کی طرح ہوتی تھیں۔ ہر ایک کا اپنا روپ ہوتا تھا۔ کبھی کبھی رنگ بھی بھن ہوتا تھا۔ مکان بنانے میں گما اینٹ تک کو کہیں نہ کہیں سے چھیلنا کاٹنا ہوتا ہے، توڑنا پھوڑنا ہوتا ہے۔ ککیا اینٹوں میں تو ہر ایک اینٹ کو چھیلنا پڑتا تھا اور بہت سی اینٹوں کو توڑنا پھوڑنا پڑتا تھا تب کہیں سندر مکان بن سکتا تھا۔ جس طرح مکان بنانے میں اینٹوں کو بگاڑنا پڑتا ہے ویسے ہی سماج کا بھون بنانے میں ویکتی کو بگاڑنا پڑتا ہے

اینٹوں میں اگر جان ہوتی تو وہ آسانی سے نہ چھل سکتیں، نہ ٹوٹ پھوٹ سکتیں۔ ٹوٹنا پھوٹنا یعنی مرنا۔ ٹھیک اسی طرح ویکتی، اگر اس کا بس چلے، تو سماج بھون میں لگنے کے لئے کبھی بگڑنا پسند نہ کرے۔ اس لئے ہم یہ کہہ سکتے ہیں کہ ویکتی کبھی نہیں چاہتا کہ سماج کی رچنا ہو اور جب ویکتی سماج رچنا کی بات سوچتا ہے تو وہ کبھی یہ نہیں چاہتا کہ وہ سدھرنے کے لئے بگڑے۔ اصل میں ہوتا یہ ہے کہ اس میں اہنکار جاگتا ہے۔ اہنکار کا جاگنا ایک طرح سے آتم وکار ہی ہے۔ پر اس آتم وکرتی کا دھیان ہی اگر رہے تو وہ سماج رچنا کی بات ہی نہ سوچے۔ نشہ میں چور جس طرح اپنے پن کو بھول کر ایسے کام کر ڈالتا ہے جو دوسروں کی نظروں میں گرے ہوئے ہوتے ہیں پر وہ خود ان کاموں کو گرا ہوا تھوڑے ہی سمجھتا ہے۔ گرا ہوا سمجھے تو کرے ہی کیوں؟ ٹھیک اسی طرح اہنکاری ویکتی اپنی آتما کو وکرت کرکے سماج کی رچنا کی بات سوچتا ہے۔ اب سماج رچنا کا ارتھ ہوجاتا ہے—"سارے سماج کا ایک آدمی کے قابو میں آجانا"۔ اسی بات کو ناسمجھ سمجھدار کوی ایک سوت میں مالا پرونے سے اپما دیتے ہیں۔ یہ کس سے چھپا ہوا ہے کہ موتی مالا میں آنے سے پہلے اپنی شان کھو چکا ہوتا ہے اپنا پیٹ پھٹوا چکا ہوتا ہے اس لئے ویکتی سماج مالا میں پروئے جانے سے پہلے اپنا بہت کچھ نقصان کر چکا ہوتا ہے

ویکتی نے اتنی تکلیف یونہی نہیں بھگتی الگ الگ ان کا جیون خطرے میں تھا۔ اس لئے انہوں نے اپنے سر پر راجا کا بوجھ اٹھا لیا۔ یہ بوجھ آج تک اس کے سر پر قائم ہے۔ آج تو یہ حال ہوگیا ہے کہ وہ اپنے سر پر سے ایک کو ہٹاتا ہے تو دو سوار ہوجاتے ہیں۔ دو کو ہٹاتا ہے تو چار سوار ہوجاتے ہیں اور چار کو ہٹاتا ہے تو آٹھ، مانو اسے مکھیوں کے جھنڈ نے ہی نہیں شہد کی مکھیوں کے جھنڈ نے گھیر رکھا ہے۔ اور ویکتی ہے کہ اپنی جھوٹی تعلیم کے نشہ میں اس میں رس لے رہا ہے، اس کو اچھا سمجھ رہا ہے۔

کیا سماج سدھارک ہمیں یہ بتا سکتے ہیں کہ وہ جو کچھ کرتے ہیں سدھار کرتے ہیں یا بگاڑ؟ اگر انہیں

हमारे आदर्श स्वीकार नहीं हैं तो वह अपने आदर्श बताएँ और फिर हम देखें कि कितने व्यक्ति उन आदर्शों पर जान देने के लिये तैयार होंगे।

मूर्ख होते तो कई तरह के हैं पर सुधार में काम करने वाले दो तरह के मूर्ख आपस में खूब लड़ते हैं. एक होते हैं—प्राचीन मूर्ख. दूसरे होते हैं—अर्वाचीन या नवीन मूर्ख. प्राचीन मूर्ख जो कुछ करते हैं वह यह कहकर करते हैं कि "ऐसा सदा से होता चला आया है" यह कहलाते हैं रूढ़िवादी. इनको वह लोग बुरा कहते हैं जो सुधार या सुधारक भक्त होते हैं. दूसरे अर्वाचीन मूर्ख जो कुछ करते हैं यह कहकर करते हैं कि 'यह बात पुरानी हो गई आज के लिये यह ज़रूरी नहीं इसलिये इसकी जगह यह नई बात करो'. यह कहलाते हैं सुधारवादी. रूढ़िवादियों के लिये क़ानून है—प्रथा. सुधारवादियों के लिये क़ानून है नवीनता. उदाहरण से हम इसे साफ़ किये देते हैं—विवाह के अवसर पर गणेश जी पूजा के लिये तैयार किये जाते हैं और वह बनते हैं इस तरह कि पीली मिट्टी के ढेले पर कलावा लपेट दिया जाता है और बस गणेश जी हो गए तैयार. यह हैं रूढ़िवादी के गणेश. अब लीजिये सुधारकों के गणेश जी. यह अगर मैंगनीज़ के हों और उसपर रेशम का हार बंधा हो तो सुधारकों को कोई एतराज़ न होगा. अगर कोई बहुत ऊँचे दर्जे के सुधारक हुए तो वह अक्ल का बहुत ज़ोर लगाकर यह कह देंगे कि रूमाल के चारों तरफ़ धागा लपेट कर गणेश जी बना लिये जाएँ. अब कहिये इन सुधारवादियों और रूढ़िवादियों में क्या अन्तर हुआ?

(3) ब्राह्मण के बाद सरकार का जूता

हमारी यह बात सुनकर हमारे पाठक हम पर बिगड़ रहे होंगे. कहते होंगे यह क्या उदाहरण है? कहाँ लम्बी चौड़ी शादियाँ और कहाँ सिविल मैरेज? सिविल मैरेज में कहाँ होते हैं गणेश जी? कहाँ होता है हवन? कहाँ होते हैं फेरे? कहाँ होती है बरात? यह सब सुधार नहीं तो क्या है? जी हाँ, आप ठीक बिगड़ रहे हैं पर मैं तो यह देख रहा हूँ कि हमारे सिर पर से अगर ब्राह्मण का जूता हटा तो सरकार का जूता आ गया और आज नहीं तो कल इसी सिविल मैरेज में वह वह शास्त्र पढ़ेगी जो सँभाले न सँभलेगी. अभी सिविल मैरेज होती ही कितनी हैं? लाख पीछे एक भी तो नहीं. हम अपनी आँखों देख रहे हैं कि जो मिलें हमें सस्ता कपड़ा देने आई थीं वह आज हमें अधनंगा रख रही हैं. जो नहरें हमारे खेतों की पैदावार बढ़ाने आई थीं वह आज करोड़ों को आधपेट रख रही हैं. इसी तरह से यह सिविल मैरेज इतनी खर्चीली होकर रहेगी कि हम पुरानी शादियों को याद करने लगेंगे, क्योंकि सिविल मैरेज में से उस डंक के निकालने की कोशिश नहीं की गई जो व्यक्ति पर चुभता

ہمارے آدرش سویکار نہیں ہیں تو وہ اپنے آدرش بتائیں اور پھر ہم دیکھیں کہ کتنے ویکتی اُن آدرشوں پر جان دینے کے لئے تیار ہونگے۔

مورکھ ہوتے تو کئی طرح کے ہیں پر سدھار میں کام کرنے والے دو طرح کے مورکھ آپس میں خوب لڑتے ہیں۔ ایک ہوتے ہیں—پراچین مورکھ۔ دوسرے ہوتے ہیں—اَرواچین یا نوین مورکھ۔ پراچین مورکھ جو کچھ کرتے ہیں وہ یہ کہہ کر کرتے ہیں کہ 'ایسا سدا سے ہوتا چلا آیا ہے' یہ کہلاتے ہیں روڑھی وادی۔ اُن کو وہ لوگ برا کہتے ہیں جو سدھار یا سدھارک بھگت ہوتے ہیں۔ دوسرے اَرواچین مورکھ جو کچھ کرتے ہیں وہ کہہ کر کرتے ہیں کہ "یہ بات پرانی ہوگئی۔ آج کے لئے یہ ضروری نہیں، اس لئے اس کی جگہ یہ نئی بات کرو۔" وہ کہلاتے ہیں سدھار وادی۔ روڑھی وادیوں کے لئے قانون ہے پرتھا۔ سدھار وادیوں کے لئے قانون ہے نوینتا۔ اُداہرن سے ہم اسے صاف کئے دیتے ہیں—وواہ کے اوسر پر گنیش جی پوجا کے لئے تیار کئے جاتے ہیں اور وہ بنتے ہیں اس طرح کہ پیلی مٹی کے ڈلے پر کلاوا لپیٹ دیا جاتا ہے اور بس گنیش جی ہوگئے تیار۔ یہ ہیں روڑھی وادی کے گنیش۔ اب لیجئے سدھارکوں کے گنیش جی۔ وہ اگر میگنیز کے ہوں اور اُس پر ریشم کا ہار بندھا ہو تو سدھارکوں کو کوئی اعتراض نہ ہوگا۔ اگر کوئی بہت اونچے درجے کے سدھارک ہوئے تو وہ عقل کا بہت زور لگاکر یہ فرمادینگے کہ رومال کے چاروں طرف "دھاگا" لپیٹ کر گنیش جی بنا لئے جائیں۔ اب کہئے ان سدھار وادیوں اور روڑھی وادیوں میں کیا انتر ہوا؟

(3) براہمن کے بعد سرکار کا جوتا

ہماری یہ بات سنکر ہمارے پاٹھک ہم پر بگڑ رہے ہونگے۔ کہتے ہونگے یہ کیا اُداہرن ہے؟ کہاں لمبی چوڑی شادیاں اور کہاں سول میرج؟ سول میرج میں کہاں ہوتے ہیں گنیش جی؟ کہاں ہوتا ہے ہون؟ کہاں ہوتے ہیں پھیرے؟ کہاں ہوتی ہے برات؟ یہ سب سدھار نہیں تو کیا ہے؟ جی ہاں، آپ ٹھیک بگڑ رہے ہیں، پر میں تو یہ دیکھ رہا ہوں کہ ہمارے سر پر سے اگر براہمن کا جوتا ہٹا تو سرکار کا جوتا آگیا اور آج نہیں تو کل اسی سول میرج میں وہ وہ شاستر پڑھینگی جو سنبھالے نہ سنبھلینگی۔ ابھی سول میرج ہوتی ہی کتنی ہیں؟ لاکھ پیچھے ایک بھی تو نہیں۔ ہم اپنی آنکھوں دیکھ رہے ہیں کہ جو ملیں ہمیں سستا کپڑا دینے آئی تھیں وہ آج ہمیں ادھ ننگا رکھ رہی ہیں۔ جو نہریں ہمارے کھیتوں کی پیداوار بڑھانے آئی تھیں وہ آج کروڑوں کو آدھ پیٹ رکھ رہی ہیں۔ اسی طرح سے یہ سول میرج اتنی خرچیلی ہوکر رہیگی کہ ہم پرانی شادیوں کو یاد کرنے لگینگے کیونکہ سول میرج میں سے اُس ڈنک کو نکالنے کی کوشش نہیں کی گئی جو ویکتی پر چبھتا

रहता है और वह है बन्धन. हम रूढ़ि में फँसकर सिर से पैर तक इतने रूढ़िवादी बन गये हैं कि हमारा हर सुधार रूढ़ि के बीज लिए हुए होता है, रूढ़ि से ही जन्मा होता है. इसका कारण यह है कि हमारे सामने कोई आदर्श नहीं होता.

समाज का आदर्श हमने ऊपर बहुत विस्तार के साथ लिख दिया. जिसके मन में हमारा यह आदर्श अपनी जगह बना लेगा उसमें एक खास तरह की ताक़त पैदा हो जायगी. उसका ज्ञान साफ हो जायगा सुधार का मार्ग उसके लिये सीधा हो जायगा अव्वल तो उससे भूल होगी ही नहीं, अगर हुई भी तो वह भूले अपने आप सुधर जाँयगी. वह अपने काम में इतना सलग्न होगा कि अपने आपको भूल जायगा. उसे हमारा आदर्श ऐसा मालूम होने लगेगा कि इस आदर्श तक पहुँचा जा सकता है, उस तक पहुँचने के रास्ते आसानी से जाने जा सकते हैं और उन रास्तों पर आसानी से चला जा सकता है.

(4) मानव एकता

हमारे आदर्श में सब से बड़ी खूबी यह है कि यह कोई भेदभाव नहीं करता. सब व्यक्तियों को बराबर का समझता है इन आदर्शों को ध्यान मे रखकर बना हुआ समाज धर्म के पचड़ों और जाति के झगड़ो से उठा हुआ होगा उसका देश-प्रेम जगत-प्रेम की एक शाखा होगा ऐसी हालत म सुधार के साथ-साथ उसमे मानव प्रेम होगा और उससे कम से कम भूले होगी भूल को जड़ में रहता है बेजा अभिमान, बड़े बनने की आकांक्षा जहाँ यह चीजे नहा हैं वहाँ भूल कैसी? वहाँ दुशमनी कैसी? वहाँ तो प्रेम ही प्रेम है

हमारे आदर्श सुधारक मे यह बात पैदा करदेंगे कि वह यह समझने लगेगा कि मानव समाज एक है उसके लिये अगर कोई पराया है तो वह है मानवेतर यानी पशु पक्षी इत्यादि मानव प्रेम के सामने पशु पक्षी प्रेम का सिर झुकाना चाहिये. सुधारक जो पशु प्रेम में फँस गया वह समाज सुधार क्या कर सकेगा? गाय के बेजा प्रेम ने मनुष्य समाज में क्या-क्या गजब ढाए हैं इससे कौन वाक़िफ नहीं है? बिल्ली की पूजा ने मिस्र देशवासियों का कितना नुक़सान किया इससे कौन अपरिचित है? सूअर के द्वेष ने जो-जो टंटे खड़े किये वे किससे छिपे हुए हैं? ईंट पत्थर के बने मन्दिर मसजिदो ने आदमियों का कितना खून बहाया—इसकी कोई गिनती हो सकती है? पत्थर की मूर्तियों ने आदमी से कितने नाकों चने चबवाए इसका कहीं लेखा जोखा है? एक सुधारक, सुधारक नहीं हो सकता जब तक वह इस सब इतिहास का ज्ञाता न हो हमारे आदर्शों पर विश्वास करने के बाद उसका ज्ञान इतना

رہتا ہے اور وہ ہے بندھن ۔ ہم روڑھی میں پھنسکر سر سے پیر تک اتنے روڑھی‌وادی بن گئے ہیں کہ ہمارا ہر سدھار روڑھی کے بیج لئے ہوئے ہوتا ہے، روڑھی سے ہی جنما ہوتا ہے ۔ اس کا کارن یہ ہے کہ ہمارے سامنے کوئی آدرش نہیں ہوتا

سماج کا آدرش ہم نے اوپر بہت وستار کے ساتھ لکھ دیا ۔ جس کے من میں ہمارا یہ آدرش اپنی جگہ بنا لیگا اس میں ایک خاص طرح کی طاقت پیدا ہوجائیگی ۔ اس کا گیان صاف ہوجائیگا سدھار کا مارگ اس کے لئے سیدھا ہوجائیگا اول تو اس سے بھولیں ہونگی ہی نہیں، اگر ہوئیں بھی تو وہ بھولیں اپنے آپ سدھر جائینگی وہ اپنے کام میں اتنا سلگن ہوگا کہ اپنے آپ کو بھول جائیگا ۔ اسے ہمارا آدرش ایسا معلوم ہونے لگیگا کہ اس آدرش تک پہونچا جا سکتا ہے اس تک پہونچنے کے راستے آسانی سے جانے جاسکتے ہیں اور ان راستوں پر آسانی سے چلا جاسکتا ہے

(4) مانو ایکتا

ہمارے آدرش میں سب سے بڑی خوبی یہ ہے کہ یہ کوئی بھید بھاؤ نہیں کرتا سب وکتیوں کو برابر کا سمجھتا ہے ۔ ان آدرشوں کو دھیان میں رکھ کر بنا ہوا سماج دھرم کے جھگڑوں اور جاتی کے جھگڑوں سے اٹھا ہوا ہوگا اس کا دیش پریم جگت پریم کی ایک شاکھا ہوگا ایسی حالت میں سدھار کے ساتھ ساتھ اس میں مانو پریم ہوگا اور اس سے کم سے کم بھولیں ہونگی بھول کی جڑ میں رہتا ہے بیجا ابھیمان، بڑے بننے کی آکانشا جہاں یہ چیزیں نہیں ہیں وہاں بھول کیسی ؟ وہاں دشمنی کیسی ؟ وہاں تو پریم ہی پریم ہے

ہمارے آدرش سدھارک میں یہ بات پیدا کردینگے کہ وہ یہ سمجھنے لگیگا کہ مانو سماج ایک ہے اس کے لئے اگر کوئی پرایا ہے تو وہ ہے مانویتر یعنی پشو پکشی آدی مانو پریم کے سامنے پشو پکشی پریم کو سر جھکانا چاہئے سدھارک جو پشو پریم میں پھنس گیا وہ سماج سدھار کیا کرسکیگا ؟ گائے کے بیجا پریم نے منشیہ سماج میں کیا کیا غضب ڈھائے ہیں اس سے کون واقف نہیں ہے ؟ بلی کی پوجا نے مصر دیش واسیوں کا کتنا نقصان کیا اس سے کون اپریچت ہے ؟ سور کے دویش نے جو جو ٹنٹے کھڑے کئے وے کس سے چھپے ہوئے ہیں ؟ اینٹ پتھر کے بنے مندر مسجدوں نے آدمیوں کا کتنا خون بہایا—اس کی کوئی گنتی ہوسکتی ہے ؟ پتھر کی مورتیوں نے آدمی سے کتنے ناکوں چنے چبوائے اس کا کہیں لیکھا جوکھا ہے ؟ ایک سدھارک سدھارک نہیں ہوسکتا جب تک وہ اس سب اتہاس کا گیاتا نہ ہو ۔ ہمارے آدرشوں پر وشواس کرنے کے بعد اس کا گیان اتنا

निश्चय हो जायगा कि उसे इस बीते इतिहास के जानने की जरूरत न रह जायगी. इसके बिना जाने भी उसका कदम सुधार के मैदान में आगे बढ़ता ही जायगा.

अब सुधारक को यह मालूम हो गया होगा कि उसे समाज में क्या करना है. बस यही तो करना है कि मानव प्रेम को शुद्ध से शुद्धतर और शुद्धतम बना दे. ऐसा करने के लिये उसे मानव के हृदय में से पर प्रेम यानी पशु, पक्षी, वनस्पति और जड़ प्रेम को कम से कम और बहुत कम करना होगा. यह ठीक है कि वह प्रेम मिटाया न मिट सकेगा पर सुधारक को तो उस मुनि की तरह जो कर्मों का सर्वनाश करके अपने जीव को मुक्त करना चाहता है, मानवेतर प्रेम को समाज के व्यक्तियों में से पूरी तरह मिटाने में लगना ही पड़ेगा. उसे यह सोचने का अधिकार नहीं है कि वह प्रेम मिटाया नहीं मिट सकता.

(5) सुधार और समझौता

सुधारक आम तौर से समझौते पर उतर आता है. यह बहुत बुरी बात है. समझौते के लालच से बड़े बड़े ऋषि, मुनि न बच सके. समझौता यानी उच्च आदर्शों से गिर जाना, सौ बरस जीने वाला आदमी तात्कालिक सफलता की खातिर आदर्शों से गिर जाना पसन्द करता है. हम अब तक एक भी ऐसा महापुरुष पैदा नहीं कर पाए जो आदर्शों से गिरा हुआ न हो. हमारी यह बात सुनकर हमारे पाठक हम से बिगड़ उठेंगे पर हम सच बात कहने से कैसे चुप रहें? यह हमारे महापुरुषों के समझौते का फल है कि हम में से कुछ लोग हिन्दू हैं और कुछ मुसलमान, हम में से कुछ शिया हैं कुछ सुन्नी, कुछ आर्य समाजी हैं कुछ सनातनी, तो कुछ जैना, फिर कुछ श्वेताम्बरी हैं तो कुछ दिगाम्बरी, कुछ शैव हैं कुछ शाक्त इत्यादि. यह सब समझौते का फल है. यह सब साम्प्रदाय हैं विजय की आकांक्षा के बच्चे. भले ही हमारे महापुरुषों ने अपनी पूजा की बात न कभी मन में सोची हो न कभी मुंह से कही हो, न कभी इशारा किया हो. फिर भी उनके अंतस्तल में पूजा की आकांक्षा थी. नहीं तो वह पुजते ही नहीं. मुहम्मद साहब के जी में अपनी मूरत पुजवाने की बात कभी नहीं आई तभी तो उनकी मूरत नहीं बन पाई. रसूल कहलवाने की आकांक्षा थी, इमाम बनने की आकांक्षा थी. बादशाह बनने की आकांक्षा थी, तभी तो यह सब चीजें मुसलमानों में मिलती हैं. जिस तरह से और महापुरुषों ने समझौता किया उसी तरह मुहम्मद साहब ने कदम-कदम पर समझौते किये और समझौता करने को हम आदर्श से गिरना कह चुके हैं. हम तो यहाँ तक कहने के लिये तैयार हैं कि अगर संसार ने अवतारों, महापुरुषों, रसूलों, पैगम्बरों, नबियों और सन्तों को जन्म न दिया होता तो आज सभ्य समाज में इस तरह की मारकाट देखने को

فرمل ہوجائیگا کہ اُسے اِس بیتے اِتہاس کے جاننے کی ضرورت نہ رہ جائیگی۔ اِس کے بنا جانے بھی اُس کا قدم سدھار کے میدان میں آگے بڑھتا ہی جائیگا۔

اب سدھارک کو یہ معلوم ہوگیا ہوگا کہ اُسے سماج میں کیا کرنا ہے۔ بس یہی تو کرنا ہے کہ مانو پریم کو شدھ سے شدھتر اور شدھتم بنادے۔ ایسا کرنے کے لئے اُسے مانو کے ہردے میں سے پر پریم یعنی پشو پکشی، بنسپتی اور جڑ پریم کو کم سے کم اور بہت کم کرنا ہوگا۔ یہ ٹھیک ہے کہ وہ پریم مٹایا نہ مٹ سکیگا پر سدھارک کو تو اُس منی کی طرح جو کرموں کا سروناش کرکے اپنے جیو کو مکت کرنا چاہتا ہے، مانویتر پریم کو سماج کے ویکتیوں میں سے پوری طرح مٹانے میں لگنا ہی پڑیگا۔ اُسے یہ سوچنے کا ادھیکار نہیں ہے کہ یہ پریم مٹایا نہیں مٹ سکتا۔

(5) سدھار اور سمجھوتہ

سدھارک عام طور سے سمجھوتے پر اُتر آتا ہے۔ یہ بہت بری بات ہے۔ سمجھوتے کے لالچ سے بڑے بڑے رشی، منی نہ بچ سکے۔ سمجھوتہ یعنی اوچ آدرش سے گر جانا، سو برس جینے والا آدمی تاتکالک سپھلتا کی خاطر آدرشوں سے گر جانا پسند کرتا ہے۔ ہم اب تک ایک بھی ایسا مہاپرش پیدا نہیں کرپائے جو آدرشوں سے گرا ہوا نہ ہو۔ ہماری یہ بات سنکر ہمارے پاٹھک ہم سے بگڑ اُٹھینگے پر ہم سچ بات کہنے سے کیسے چپ رہیں؟ یہ ہمارے مہاپرشوں کے سمجھوتے کا پھل ہے کہ ہم میں سے کچھ لوگ ہندو ہیں اور کچھ مسلمان، ہم میں سے کچھ شیعہ ہیں کچھ سنی، کچھ آریہ سماجی ہیں کچھ سناتنی، تو کچھ جینی، پھر کچھ شویتامبری ہیں تو کچھ دگامبری، کچھ شیو ہیں کچھ شاکت اتیادی۔ یہ سب سمجھوتے کا پھل ہے۔ یہ سب سامپردائے ہیں وجے کی اکانشا کے بچے۔ بھلے ہی ہمارے مہاپرشوں نے اپنی پوجا کی بات نہ کبھی من میں سوچی ہو نہ کبھی منھ سے کہی ہو، نہ کبھی اشارہ کیا ہو۔ پھر بھی اُن کے انتستل میں پوجا کی آکانشا تھی۔ نہیں تو وہ پجتے ہی نہیں۔ محمد صاحب کے جی میں اپنی مورت پجوانے کی بات کبھی نہ آئی تبھی تو اُن کی مورت نہیں بن پائی۔ رسول کہلوانے کی آکانشا تھی، امام بننے کی آکانشا تھی، بادشاہ بننے کی آکانشا تھی، تبھی تو یہ سب چیزیں مسلمانوں میں ملتی ہیں۔ جس طرح سے اور مہاپرشوں نے سمجھوتہ کیا اسی طرح محمد صاحب نے قدم قدم پر سمجھوتے کئے اور سمجھوتہ کرنے کو ہم آدرش سے گرنا کہہ چکے ہیں۔ ہم تو یہاں تک کہنے کے لئے تیار ہیں کہ اگر سنسار نے اوتاروں، مہاپرشوں، رسولوں، پیغمبروں، نبیوں اور سنتوں کو جنم نہ دیا ہوتا تو آج سبھیہ سماج میں اِس طرح کی مارکاٹ دیکھنے کو

भी न मिलती जैसी हिन्दुस्तान सन् 1947 में देख चुका है. भले ही हम जंगली हालत में होते या ऐसे होते जैसे नागा या ऐस्किमो, पर नागा या ऐस्किमो आपस में बड़े प्यार से रह लेते हैं.

महापुरुष हम में जन्म लेकर क्या कर जाते हैं? क्या कभी किसी ने कभी यह सोचा? महापुरुषों की जिन्दगी का आदर्श क्या होता है—क्या किसी ने कभी इस बात का जवाब ढूँढ़ा है? महापुरुष इतना बड़ा त्याग किस लिये करते हैं क्या किसी ने इसका कारण जानने की कोशिश की? महापुरुष का दूसरा नाम क्या हो सकता है? "महापुरुष" में से यदि "महा" कम कर दिया जाय तो "पुरुष" का क्या मतलब रह जाता है? सुधारक को इन सब सवालों का जवाब देना होगा.

हम पिछले सवाल को सब से पहले लेते हैं. महापुरुष का दूसरा नाम है—"महासुधारक." उत्तर प्रदेश में कोई ब्राह्मण अपने को "महाब्राह्मण" कहलाना पसन्द नहीं करता. "महाब्राह्मण" का उत्तर प्रदेश में दूसरा नाम है—"कट्या". कट्या उसको कहते हैं जो मुर्दे का कफ़न लेते हैं. इसी तरह हो सकता है कुछ लोगों को "महासुधारक" शब्द महापुरुष की शान घटाता हुआ मालूम हो. पर इस देश में ऐसा होना नहीं चाहिए. जिस देश में रसोइया-महाराज और पानी-पांडे जैसे शब्द रिवाज में हों वहाँ "पालिश पाँडे" शब्द भी खप सकता है. इन नामों की जड़ में भी एक मारके का इतिहास छिपा है. इस पर 26 अक्तूबर सन् 1956 को लखनऊ रेडियो ने "कातिब की कहानी" कहकर बड़ा अच्छा प्रकाश डाला था. जिनको ज़ियादा शौक़ हो वह उसका पता लगा कर पढ़लें. यहाँ तो हम सिर्फ़ इतना ही कहना चाहते हैं कि यह सब शब्द समाज सुधारकों की देन हैं. इसी से मिलते जुलते शब्द भंगियों के लिये "मेहतर" है, कुम्हारों के लिये "प्रजापति" है, चमारों के लिये "भगत" है, गड़रियों के लिये "चौधरी" है इत्यादि. अब हम समझते हैं हमारा "महासुधारक" शब्द नहीं खटकेगा और अब पुरुष के माने रह जाते हैं सुधारक. और पुरुष के माने हैं माया का मालिक. और माया का दूसरा नाम है चालाकी. इसलिये हर सुधारक को चालाक और काइयाँ होना चाहिये और वह होता भी है.

विज्ञानियों का यह कहना है कि कबूतर कबूतरी का जोड़ा या दोनों में से कोई एक अगर किसी जगह घूम आएं तो उन से पैदा हुआ बच्चा बिना रास्ता दिखाए अपने आप वहाँ जा सकता है और आ सकता है. ऐसा गुण उसे विरासत में मिला है. वह रास्ता जानता है पर यह नहीं जानता कि कैसे जानता है! अभिमन्यु ने चक्रव्यूह में घुसना माँ के पेट में ही सीखा था. यह कहकर हम कहना चाहते हैं कि

بھی نہ ملتی جیسی ہندستان سن 1947 میں دیکھ چکا ہے۔ بھلے ہی ہم جنگلی حالت میں ہوتے یا ایسے ہوتے جیسے ناگا یا ایسکیمو، پر ناگا یا ایسکیمو آپس میں بڑے پیار سے رہ لیتے ہیں۔

مہاپرش ہم میں جنم لیکر کیا کرجاتے ہیں؟ کیا کسی نے کبھی یہ سوچا؟ مہاپرشوں کی زندگی کا آدرش کیا ہوتا ہے— کیا کسی نے کبھی اِس بات کا جواب ڈھونڈھا ہے؟ مہاپرش اِتنا بڑا تیاگ کس لئے کرتے ہیں۔ کیا کسی نے اِس کا کارن جاننے کی کوشش کی؟ مہاپرش کا دوسرا نام کیا ہوسکتا ہے؟ "مہاپرش" میں سے یدی "مہا" کم کردیا جائے تو "پرش" کا کیا مطلب رہ جاتا ہے؟ سدھارک کو اِن سب سوالوں کا جواب دینا ہوگا۔

ہم پچھلے سوال کو سب سے پہلے لیتے ہیں۔ مہاپرش کا دوسرا نام ہے—"مہا سدھارک." اُتر پردیش میں کوئی براہمن اپنے کو "مہا براہمن" کہلانا پسند نہیں کرتا۔ "مہا براہمن" کا اُتر پردیش میں دوسرا نام ہے—"کٹیا." کٹیا اُس کو کہتے ہیں جو مردے کا کفن لیتے ہیں۔ اِسی طرح ہوسکتا ہے کچھ لوگوں کو "مہا سدھارک" شبد مہاپرش کی شان گھٹاتا ہوا معلوم ہو۔ پر اِس دیش میں ایسا ہونا نہیں چاہئے۔ جس دیش میں رسویا مہاراج اور پانی پانڈے جیسے شبد رواج میں ہوں وہاں "پالش پانڈے" شبد بھی کھپ سکتا ہے۔ اِن ناموں کی جڑ میں بھی ایک مارکے کا اِتہاس چھپا ہے۔ اس پر 26 اکتوبر سن 1956 کو لکھنؤ ریڈیو نے "کاتب کی کہانی" کہکر بڑا اچھا پرکاش ڈالا تھا۔ جن کو زیادہ شوق ہو وہ اس کا پتہ لگاکر پڑھ لیں۔ یہاں تو ہم صرف اِتنا ہی کہنا چاہتے ہیں کہ یہ سب شبد سماج سدھارکوں کی دین ہیں۔ اِسی سے ملتے جلتے شبد بھنگیوں کے لئے "مہتر" ہے، کمہاروں کے لئے "پرجاپتی" ہے، چماروں کے لئے "بھگت" ہے، گڑریوں کے لئے "چودھری" ہے اتیادی۔ اب ہم سمجھتے ہیں ہمارا "مہا سدھارک" شبد نہیں کھٹکیگا اور اب پرش کے معنے رہ جاتے ہیں سدھارک۔ اور پرش کے معنے ہیں مایا کا مالک۔ اور مایا کا دوسرا نام ہے چالاکی۔ اِس لئے ہر سدھارک کو چالاک اور کائیاں ہونا چاہئے اور وہ ہوتا بھی ہے۔

وگیانیوں کا یہ کہنا ہے کہ کبوتر کبوتری کا جوڑا یا دونوں میں سے کوئی ایک اگر کسی جگہ گھوم آئیں تو ان سے پیدا ہوا بچہ بلا راستہ دکھائے اپنے آپ وہاں جاسکتا ہے اور آسکتا ہے۔ ایسا گن اُسے وراثت میں ملا ہے۔ وہ راستہ جانتا ہے پر یہ نہیں جانتا کہ کیسے جانتا ہے! ابھمنیو نے چکرویوہ میں گھسنا ماں کے پیٹ میں ہی سیکھا تھا۔ یہ کہکر ہم کہنا چاہتے ہیں کہ

हमारे त्यागों की तह में हमारे बिना जाने हुए भी महत्व वाली इनाम या फल की इच्छा मौजूद रहती है. हम भूखे रह कर अपनी नज़रों में सच्चे जी से और दुनिया की नज़रों में तपस्या ज़रूर करते हैं, महीनों नहीं खाते पर हमारे बिना जाने हमारे अंतस्तल में यह बात मौजूद रहती है कि इस लम्बे चौड़े उपवास के बाद हमारा देह निर्मल हो जायगा, हमारी उमर लम्बी हो जायगी, हमारी देह का वज़न बढ़ जायगा, हम पहले से ज़ियादा स्वस्थ हो जायँगे और ज़ियादा खुश रहेंगे. इस तपस्या से जो पूजा होने लगेगी, जो प्रतिष्ठा होने लगेगी वह तो रूँगे में है, घिलौने में है. इसे तो मुफ्त की समझो. अब हमें कोई बताए कि महापुरुष तपस्या करके या भूखों रहकर एहसान किस पर करते हैं? पच्चीस पचास बरस या सौ बरस की तपस्या के बाद भी अगर महापुरुषों को अनन्त काल तक का परमात्म पद मिल जाता है तो क्या यह कोई टोटे का व्यापार है? लाखों बरस का बिगड़ा हुआ मनुष्य सौ दो सौ बरस में ठीक नहीं हो सकता और वह भी सिर्फ एक जन्म में? एक के बाद दूसरा जन्म तो तपस्या के लिये मिलता हुआ सुना नहीं गया. वहाँ तो तुरत सुधार चुका दिया जाता है परमात्मा नहीं बनाया जाता तो देवता बनाकर स्वर्ग भेज दिया जाता है. अगर यह लालच आदमी को न दी गई तो क्या कोई राज छोड़ता? अजी, मामूली सूखी रोटियाँ भी न छोड़ता.

(6) जड़ एक और कर्मकांड अलग-अलग

महापुरुष की ज़िन्दगी का आदर्श क्या होता है यह एक ऐसा सवाल है जो हमेशा पूछा जाता रहेगा और उसके जवाब में जो कुछ भी कहा जायगा उस सब का निचोड़ हमेशा एक रहेगा. शब्द सदा भिन्न रहेंगे. दुनिया के सारे धर्म, सारे सम्प्रदाय सभी तो जड़ में एक और कर्मकांड में भिन्न हैं. जिस तरह गाय के रंग से दूध के रंग में अन्तर नहीं आता वैसे ही शब्दों के आडम्बर से आदर्श के निचोड़ में कभी कोई अन्तर नहीं आता.

महापुरुष आदमी होते हैं, और मेरी राय में मामूली आदमी से भी ज़ियादा मामूली होते हैं, ज़ियादा भोले होते हैं, तभी उनको दुनिया की बहुत मामूली बात अनोखी मालूम होती है. अनोखेपन के कार्य का कारण सब ने मूर्खता को बताया है. अचरज मूर्खता का ही प्रभाव है. इसी कारण बच्चे मामूली सी घटना देखकर हँस देते हैं, उछलने कूदने लगते हैं, रो देते हैं—बेहोश हो जाते हैं. दुबले पतले आदमी रोज़ ही तो सड़कों पर फिरते रहते हैं. क्या किसी बालक ने उन्हें देखकर अचरज माना? सफ़ेद बालों वाले, कमर झुके, हाथ में लाठी लिये बूढ़े बुढ़िया रोज़ ही तो चलते फिरते दिखते हैं. क्या किसी ने इन्हें देख कर अचरज किया? गली-गली में तो रोज़ ही तो मरे हुओं की रथियाँ

ہمارے تیاگوں کی تہ میں ہمارے بنا جانے ہوئے بھی گرہن یعنی انعام یا پھل کی اِچھا موجود رہتی ہے ۔ ہم بھوکے رہ کر اپنی نظروں میں سچے جی سے اور دنیا کی نظروں میں تپسیا ضرور کرتے ہیں، مہینوں نہیں کھاتے پر ہمارے بنا جانے ہمارے انتستل میں یہ بات موجود رہتی ہے کہ اس لمبے چوڑے اپواس کے بعد ہمارا دیہہ نرمل ہو جائیگا، ہماری عمر لمبی ہو جائیگی، ہماری دیہہ کا وزن بڑھ جائیگا، ہم پہلے سے زیادہ سوستھ ہو جائینگے اور زیادہ خوش ہونگے اس تپسیا سے جو پوجا ہونے لگیگی، جو پرتشٹھا ہونے لگیگی وہ تو رونگے میں ہے، گھلوے میں ہے ۔ اُسے تو مفت کی سمجھو ۔ اب ہمیں کوئی بتائے کہ مہاپرش تپسیا کرکے یا بھوکوں رہ کر احسان کس پر کرتے ہیں؟ پچیس پچاس برس یا سو برس کی تپسیا کے بعد بھی اگر مہاپرشوں کو اننت کال تک کا پرماتم پد مل جاتا ہے تو کیا یہ کوئی ٹوٹے کا بیوپار ہے؟ لاکھوں برس کا بگڑا ہوا منشیہ سو دو سو برس میں ٹھیک نہیں ہو سکتا اور وہ بھی صرف ایک جنم میں؟ ایک کے بعد دوسرا جنم تو تپسیا کے لئے ملتا ہوا سنا نہیں گیا ۔ وہاں تو ترت سدھار چکا دیا جاتا ہے ۔ پرماتما نہیں بنایا جاتا تو دیوتا بنا کر سورگ بھیج دیا جاتا ہے ۔ اگر یہ لالچ آدمی کو نہ دی گئی ہوتی تو کیا کوئی راج چھوڑتا؟ اجی، معمولی سوکھی روٹیاں بھی نہ چھوڑتا

(6) جڑ ایک اور کرم کانڈ الگ الگ

مہاپرش کی زندگی کا آدرش کیا ہوتا ہے یہ ایک ایسا سوال ہے جو ہمیشہ پوچھا جاتا رہیگا اور اُس کے جواب میں جو کچھ بھی کہا جائیگا اُس سب کا نچوڑ ہمیشہ ایک ہوگا ۔ شبد سدا بھن رہینگے ۔ دنیا کے سارے دھرم، سارے سمپردائے سبھی تو جڑ میں ایک اور کرم کانڈ میں بھن ہیں ۔ جس طرح گائے کے رنگ سے دودھ کے رنگ میں انتر نہیں آتا ویسے ہی شبدوں کے آڈمبر سے آدرش کے نچوڑ میں کبھی کوئی انتر نہیں آتا ۔

مہاپرش آدمی ہوتے ہیں، اور میری رائے میں معمولی آدمی سے بھی زیادہ معمولی ہوتے ہیں زیادہ بھولے ہوتے ہیں، تبھی اُن کو دنیا کی بہت معمولی بات انوکھی معلوم ہوتی ہے ۔ انوکھے پن کے کاریہ کا کارن سب نے مورکھتا کو بتایا ہے ۔ اچرج مورکھتا کا ہی پربھاؤ ہے ۔ اِسی کارن بچے معمولی سی گھٹنا دیکھ کر ہنس دیتے ہیں، اُچھلنے کودنے لگتے ہیں رو دیتے ہیں—بیہوش ہو جاتے ہیں ۔ دبلے پتلے آدمی روز ہی تو سڑکوں پر پھرتے رہتے ہیں ۔ کیا کسی بالک نے اُنہیں دیکھ کر اچرج مانا؟ سفید بالوں والے، کمر جھکے، ہاتھ میں لاٹھی لئے بوڑھے بڑھیا روز ہی تو چلتے پھرتے دیکھتے ہیں ۔ کیا کسی نے انہیں دیکھ کر اچرج کیا؟ گلی گلی میں تو روز ہی تو مرے ہوؤں کی رتھیاں

निकलती हैं. क्या किसी स्कूल जाने वाले बच्चे ने उस पर जियादा ध्यान दिया ? अगर कोई ऐसा बालक निकले जो ऐसे बातों पर बहुत जियादा ध्यान दे और अचरज करे तो उसके साथी विद्यार्थी उसे निरा मूर्ख ही समझेंगे. और ऐसा समझने में वह कोई भूल नहीं करेंगे. आप खुद स्कूल जाकर देख लीजिये. इस तरह का लड़का अपनी क्लास में हमेशा पीछे बैठा हुआ मिलेगा, अध्यापक की नजरों में गिरा हुआ मिलेगा. हमारे अपने युग के महापुरुष गाँधी जी भी अपनी क्लास में निरे बुद्धू थे और इसी आधार पर हम यह कहेंगे कि बुद्ध भगवान भी ऐसे ही बुद्धू रहे होंगे.

जिस तरह का अचरज महापुरुषों को होता रहा है वैसा हम सब को नहीं होता ऐसी बात नहीं है. हम सब को भी होता है और हम उसे जाहिर करना अपनी शान के खिलाफ समझते हैं. इन बाल महापुरुषों को इतना भी स्वाभिमान नहीं होता या यूँ कहिये कि इतना भी ज्ञान नहीं होता कि कौन बात कहने की है और कौन न कहने की. फिर क्या बात है कि हम सब में से सैकड़ों हजारों बरस बाद कभी कोई एक महापुरुष बन पाता है ?

यूं तो इस सवाल का जवाब बहुत सीधा है कि समाज को ऐसे महापुरुषों की न जल्दी जरूरत होती है न जियादा संख्या में जरूरत होती है इसलिये यह सम्मान किसी न किसी के पल्ले पड़ता ही है और वह गिनती में कोई एक ही हो सकता है पर प्रकृति का ऐसा कोई बँधा हुआ नियम नहीं है. एक से जियादा भी हो सकते हैं. पर एक से जियादा होने पर समाज एक से जियादा भागों में बट जायगा. असल में होता यह है कि यह सम्मान उसी को प्राप्त होता है जो सच्ची लगन के साथ अपना सारा जीवन उसी आदर्श की खोज में लगा दे जिसको उसने अपना आदर्श मान रखा है. यहाँ पाठक यह तो समझ ही ले कि मनुष्य के दो आदर्श नहीं हो सकते. कोई महापुरुष ऐसा आदर्श बना ही नहीं सकता जिसे दूसरे और लोग आदर्श न मानते हों. इतनी बड़ी बात हम कैसे कह गए ? बात बड़ी ही नहीं है. हर एक आदमी कह सकता है. आदमी का आदर्श दुख से बचने के सिवाय और हो ही क्या सकता है ? सब तरह सुखी होना आदर्श है. जो सब तरह सुखी है वह सब से बलवान होगा ही, वह सबसे ज्ञानी होगा ही—इत्यादि इत्यादि.

क्या अब यह साफ नहीं हो जाता कि जो इस दुनिया में सबसे जियादा सुखी होना चाहता है वह यह चाहता ही है कि वह सब से बड़ा हो, सब से धनवान हो, सबसे ज्ञानवान हो, सबसे बलवान हो, सबसे प्रतिभाशाली हो, सबसे स्वस्थ्य हो. अब कहिये इतनी चीजें खरीदने के लिये कौन आदमी अपना सर्व सुख त्यागने के लिये तैयार न होगा ?

نکلتی ہیں . کیا کسی اسکول جانے والے بچے نے اُس پر زیادہ دھیان دیا ؟ اگر کوئی ایسا بالک نکلے جو ایسی باتوں پر بہت زیادہ دھیان دے اور اچرج کرے تو اُس کے ساتھی ودیارتھی اُسے نرا مورکھ ہی سمجھینگے . اور ایسا سمجھنے میں وہ کوئی بھول نہیں کرینگے . آپ خود اسکول جاکر دیکھ لیجئے . اِس طرح کا لڑکا اپنی کلاس میں ہمیشہ پیچھے بیٹھا ہوا ملیگا ' ادھیاپک کی نظروں میں گرا ہوا ملیگا . ہمارے اپنے یگ کے مہاپرش گاندھی جی بھی اپنی کلاس میں نرے بدھو تھے اور اِسی آدھار پر ہم یہ کہینگے کہ بدھ بھگوان بھی ایسے ہی بدھو رہے ہونگے .

جس طرح کا اچرج مہاپرشوں کو ہوتا رہا ہے ویسا ہم سب کو نہیں ہوتا ایسی بات نہیں ہے . ہم سب کو بھی ہوتا ہے اور ہم اُسے ظاہر کرنا اپنی شان کے خلاف سمجھتے ہیں . اِن بال مہاپرشوں کو اِتنا بھی سوابھیمان نہیں ہوتا یا یوں کہیئے کہ اِتنا بھی گیان نہیں ہوتا کہ کون بات کہنے کی ہے اور کون نہ کہنے کی . پھر کیا بات ہے کہ ہم سب میں سے سیکڑوں ہزاروں برس بعد کبھی کوئی ایک مہاپرش بن پاتا ہے ؟

یوں تو اِس سوال کا جواب بہت سیدھا ہے کہ سماج کو ایسے مہاپرشوں کی نہ جلدی ضرورت ہوتی ہے نہ زیادہ سنکھیا میں ضرورت ہوتی ہے اِس لئے یہ سمان کسی نہ کسی کے پلے پڑتا ہی ہے اور وہ گنتی میں کوئی ایک ہی ہوسکتا ہے پر پرکرتی کا ایسا کوئی بندھا ہوا نیم نہیں ہے . ایک سے زیادہ بھی ہوسکتے ہیں . پر ایک سے زیادہ ہونے پر سماج ایک سے زیادہ بھاگوں میں بٹ جائیگا . اصل میں ہوتا یہ ہے کہ یہ سمان اُسی کو پراپت ہوتا ہے جو سچی لگن کے ساتھ اپنا سارا جیون اُسی آدرش کی کھوج میں لگا دے جس کو اُس نے اپنا آدرش مان رکھا ہے . یہاں پاٹھک یہ تو سمجھ ہی لیں کہ منشیہ کے دو آدرش نہیں ہوسکتے . کوئی مہاپرش ایسا آدرش بنا ہی نہیں سکتا جسے دوسرے اور لوگ آدرش نہ مانتے ہوں . اِتنی بڑی بات ہم کیسے کہہ گئے ؟ بات بڑی ہی نہیں ہے . ہر ایک آدمی کہہ سکتا ہے . آدمی کا آدرش دکھ سے بچنے کے سوائے اور ہو ہی کیا سکتا ہے ؟ سب طرح سکھی ہونا آدرش ہے . جو سب طرح سکھی ہے وہ سب سے بلوان ہوگا ہی ' وہ سب سے گیانی ہوگا ہی — اِتیادی اِتیادی .

کیا اب یہ صاف نہیں ہوجاتا کہ جو اِس دنیا میں سب سے زیادہ سکھی ہونا چاہتا ہے وہ یہ چاہتا ہی ہے کہ وہ سب سے بڑا ہو ' سب سے دھنوان ہو ' سب سے گیانوان ہو ' سب سے بلوان ہو ' سب سے پرتبھا شالی ہو ' سب سے سوستھ ہو . اب کہئے اِتنی چیزیں خریدنے کے لئے کون آدمی اپنا سرو سکھ تیاگنے کے لئے تیار نہ ہوگا ؟

दाद को इस दाँव पर लगाकर भी धन लगा देगा. महाभारतकार ने युधिष्ठिर को जुआ खिलाकर महापुरुषों का अच्छा खाका खींच दिया है. व्यास जी ने द्रौपदी से यह कहलवाकर कि जो जुए में खुद को हार चुका हो उसको दूसरे को दाँव पर लगाने का कोई हक़ नहीं रह जाता यह साफ़ कर दिया है कि महापुरुष कितने हठी और अन्यायी होते हैं. युधिष्ठिर अपने को हारकर और दास बनकर भी अपने राजापने को नहीं भूल पाते. यही हाल जरमनी के विलियम क़ैसर का था. वह गद्दी से उतार दिया गया था फिर भी रोज़ राजा होने का नाटक किया करता था और बे मतलब के दस्तख़त करके राजगीरी की प्यास बुझाया करता था. छोड़िये विलियम क़ैसर को अपनी आँखों से देखे हुए अपने युग के राष्ट्रपिता गांधी जी को ले लीजिये. वह कांग्रेस के चवन्नी मेम्बर भी नहीं थे पर कांग्रेस का सभापति पद अपनी जेब में डाले फिरते थे. जिसको चाहें सभापति बना सकते थे. बड़े-बड़े ज़िम्मेदारी के काम कांग्रेस की तरफ़ से अपने सिर ओढ़ लेते थे और मौक़ा पड़ने पर ऐसे साफ़ निकल जाते थे मानो वह कांग्रेस के कुछ हैं ही नहीं. कहते हैं जल में कमल-पत्र की तरह रहो और यह कहावत है इसलिये कि जल की बूँद कमल-पत्र को गीला नहीं करती यानी कमल-पत्र जल की बूँद से ज़रा सी भी नमी नहीं लेता. कितना वीतरागी है? पर क्या कभी किसी ने यह सोचा कि उस कमल-पत्र का पेट पानी से इतना भरा हुआ है कि उसमें बूँद की नमी सोखने के लिये जगह ही नहीं है. सोखे तो उलटी हो जाने का डर है. बस हमारे महापुरुष इसी तरह का "जल-में-कमलवत" जीवन बिताते थे. राजपथ को छोड़कर राजाओं के राजा बन जाते थे. नंगे होकर सैकड़ों को नंगा बनाने की ताक़त पा जाते थे टाट में कहाँ रहते थे? जो उनका आदर्श था वह वही था जो हम तुम सब चाहते हैं. बस आदर्श के लिहाज़ से महापुरुषों में और हम में कोई अन्तर नहीं. हम भी सुखी होना चाहते हैं— वह भी सुखी होना चाहते थे. किसी भिखारी ने किसी धनवान से बिगड़कर अच्छी चुटकी ली है.—

"तेरा दुशाला मोल में भारी,
तो, मेरा कम्बल तोल में भारी."

महापुरुष हम में जन्म लेकर क्या कर जाते हैं? इस सवाल का जवाब अनपढ़ भी दे सकता है और विद्वान भी दे सकता है. निचोड़ में दोनों के जवाब एक ही होंगे. विस्तार में बेशक भेद होगा. यहाँ सवाल यह नहीं है कि आप हमें यह बतावें कि महापुरुष क्या-क्या काम कर गए. हमें तो यह जानना है कि उनके कामों का फल क्या हुआ? किसी चीज़ की जाँच करने के लिये यह ज़रूरी होता है कि दूसरी चीज़ से तुलना की जाय. तभी पता लग सकता है कि दोनों चीज़ों में क्या अन्तर है.

[बाक़ी अगले नम्बर में]

وہ تو اِس داؤں پر قرضہ کرکے بھی دھن لگا دیگا۔ مہابھارتکار نے یدھشٹر کو جوا کھلواکر مہاپرشوں کا اچھا خاکہ کھینچ دیا ہے۔ ویاس جی نے دروپدی سے یہ کہلواکر کہ جو آدمی جوئے میں خود کو ہار چکا ہو اُس کو دوسرے کو داؤں پر لگانے کا کوئی حق نہیں رہ جاتا یہ صاف کردیا ہے کہ مہاپرش کتنے ہٹی اور انیائی ہوتے ہیں۔ یدھشٹر اپنے کو ہار کر اور داس بنکر بھی اپنے راجہ پنے کو نہیں بھول پاتے۔ یہی حال جرمنی کے ولیم قیصر کا تھا۔ وہ گدی سے اُتار دیا گیا تھا پھر بھی روز راجہ ہونے کا ناٹک کیا کرتا تھا اور بے مطلب کے دستخط کرکے راجگیری کی پیاس بجھایا کرتا تھا۔ چھوڑئے ولیم قیصر کو اپنی آنکھوں سے دیکھے ہوئے اپنے یگ کے راشٹر پتا گاندھی جی کو لے لیجئے۔ وہ کانگریس کے چونی ممبر بھی نہیں تھے پر کانگریس کا سبھاپتی پد اپنی جیب میں ڈالے پھرتے تھے۔ جس کو چاہے سبھاپتی بنا سکتے تھے۔ بڑے بڑے ذمہ داری کے کام کانگریس کی طرف سے اپنے سر اوڑھ لیتے تھے اور موقعہ پڑنے پر ایسے صاف نکل جاتے تھے مانو وہ کانگریس کے کچھ ہیں ہی نہیں۔ کہتے ہیں جل میں کمل پتر کی طرح رہو اور یہ کہاوت ہے اس لئے کہ جل کی بوند کمل پتر کو گیلا نہیں کرتی یعنی کمل پتر جل کی بوند سے ذراسی بھی نمی نہیں لیتا۔ کتنا ویتراگی ہے؟ پر کیا کبھی کسی نے یہ سوچا کہ اُس کمل پتر کا پیٹ پانی سے اِتنا بھرا ہوا ہے کہ اُس میں بوند کی نمی سوکھنے کے لئے جگہ ہی نہیں ہے۔ سوکھے تو اُلٹی ہوجانے کا ڈر ہے۔ بس ہمارے مہاپرش اِسی طرح کا "جل میں کمل وت" جیون بتاتے تھے۔ راج پتھ کو چھوڑکر راجاؤں کے راجا بن جاتے تھے۔ ننگے ہوکر سیکڑوں کو ننگا بنانے کی طاقت پاجاتے تھے۔ ٹاٹ میں کہاں رہتے تھے؟ جو اُن کا آدرش تھا وہ وہی تو تھا جو ہم تم سب چاہتے ہیں۔ بس آدرش کے لحاظ سے مہاپرشوں میں اور ہم میں کوئی انتر نہیں۔ ہم بھی سکھی ہونا چاہتے ہیں— وہ بھی سکھی ہونا چاہتے تھے۔ کسی بھکاری نے کسی دھنوان سے بگڑکر اچھی چٹکی لی ہے :—

"تیرا دوشالہ مول میں بھاری،
تو، میرا کمبل تول میں بھاری۔"

مہاپرش ہم میں جنم لیکر کیا کر جاتے ہیں؟ اِس سوال کا جواب انپڑھ بھی دے سکتا ہے اور ودوان بھی دے سکتا ہے۔ نچوڑ میں دونوں کے جواب ایک ہی ہونگے۔ وستار میں بیشک بھید ہوگا۔ یہاں سوال یہ نہیں ہے کہ آپ ہمیں یہ بتائیں کہ مہاپرش کیا کیا کام کرگئے۔ ہمیں تو یہ جاننا ہے کہ اُن کے کاموں کا پھل کیا ہوا؟ کسی چیز کی جانچ کرنے کے لئے یہ ضروری ہوتا ہے کہ دوسری چیز سے تُلنا کی جائے۔ تبھی پتہ لگ سکتا ہے کہ دونوں چیزوں میں کیا انتر ہے۔

[باقی اگلے نمبر میں]

मुहम्मद साहब की कुछ हदीसें.

डाक्टर अबुल फ़ज़ल

मुहम्मद साहब ने कहा:—"जो कोई किसी बात की क़सम खाता है और फिर देखता है कि उसकी क़सम नेकी के ख़िलाफ़ है उसे चाहिये कि अपनी उस क़सम को रद्द समझे और वही काम करे जो नेक काम है."

अबू हुरैरह, मुसलिमः तिरमिज़ीः मालिक.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"किसी की भी ऐसी आज्ञा नहीं माननी चाहिये जिसका मानना पाप हो. आज्ञा उसी बात में माननी चाहिये जो बात समझ की हो."

--अली, बुख़ारीः मुसलिम.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"मुजाहिद (जहाद करने वाला) वह है जो ईश्वर की आज्ञा मानने के लिये ख़ुद अपनी आत्मा के साथ जहाद करता है, और मुहाजिर (हिजरत करने वाला) वह है जो सब जुर्मों और पापों से दूर रहता है."

—फ़ुज़ालह, बेहक़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"जो कोई लोगों को नाराज़ करके भी अल्लाह को ख़ुश रखने का ख़याल रखता है, अल्लाह लोगों की नाराज़गी से उसकी रक्षा करने के लिये काफ़ी है. और जो कोई अल्लाह को नाख़ुश करके लोगों को ख़ुश करने का ख़याल करता है अल्लाह उसे लोगों ही के हवाले कर देता है."

—मुआविया, तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने एक आदमी से कहा:—"ऐ जवान आदमी! अपने को बुराई से बचाकर रख, अल्लाह तेरी रक्षा करेगा, अल्लाह की आज्ञा को मान, अल्लाह तेरे साथ रहेगा. ख़ुशहाली में अल्लाह को याद रख, तो मुसीबत में अल्लाह तुझे याद रखेगा. तुझे जब कभी मांगना हो अल्लाह ही से माँग, और जब कभी मदद चाहनी हो

محمد صاحب کی کچھ حدیثیں

ڈاکٹر ابوالفضل

محمد صاحب نے کہا:—"جو کوئی کسی بات کی قسم کھاتا ہے اور پھر دیکھتا ہے کہ اُس کی قسم نیکی کے خلاف ہے اُسے چاہئے کہ اپنی اُس قسم کو رد سمجھے اور وہی کام کرے جو نیک کام ہے."

—ابو ہریرہ، مسلم: ترمذی: مالک.

محمد صاحب نے کہا:—"کسی کی بھی ایسی آگیاں نہیں ماننی چاہئے جس کا ماننا پاپ ہو. آگیاں اُسی بات میں ماننی چاہئے جو بات سمجھ کی ہو."

—علی، بخاری: مسلم.

محمد صاحب نے کہا:—"مجاہد (جہاد کرنے والا) وہ ہے جو ایشور کی آگیاں ماننے کے لئے خود اپنی آتما کے ساتھ جہاد کرتا ہے، اور مہاجر (ہجرت کرنے والا) وہ ہے جو سب جرموں اور پاپوں سے دور رہتا ہے."

—فضالہ، بیہقی.

محمد صاحب نے کہا—"جو کوئی لوگوں کو ناراض کرکے بھی اللہ کو خوش رکھنے کا خیال رکھتا ہے، اللہ لوگوں کی ناراضگی سے اُس کی رکشا کرنے کے لئے کافی ہے. اور جو کوئی اللہ کو ناخوش کرکے لوگوں کو خوش کرنے کا خیال کرتا ہے اللہ اُسے لوگوں ہی کے حوالے کردیتا ہے."

—معاویہ، ترمذی.

محمد صاحب نے ایک آدمی سے کہا:—"اے جوان آدمی! اپنے کو برائی سے بچاکر رکھ، اللہ تیری رکشا کریگا، اللہ کی آگیاں کو مان، اللہ تیرے ساتھ رہیگا. خوشحالی میں اللہ کو یاد رکھ، تو مصیبت میں اللہ تجھے یاد رکھیگا. تجھے جب کبھی مانگنا ہو اللہ ہی سے مانگ، اور جب کبھی مدد چاہنی ہو

अल्लाह ही से मांग. क्योंकि सचमुच यदि अल्लाह कोई बात तेरे लिये नहीं चाहता तो और सब प्राणी मिलकर भी तुझे उस चीज़ का फ़ायदा नहीं पहुँचा सकते. और अगर अल्लाह नहीं चाहता कि किसी ख़ास बात में तुझे नुक़सान पहुँचे तो सब प्राणी मिलकर भी तुझे वह नुक़सान नहीं पहुँचा सकते. क़लम सूख गए हैं और काग़ज़ लपेट डाले गए हैं, और अगर तू विश्वास के साथ और ख़ुशी के साथ अल्लाह के लिये काम कर सके तो काम में लगा रह. और अगर तू ऐसा न कर सके तब फिर तेरे लिये सचमुच अच्छा यही है कि जिस चीज़ के तू ख़िलाफ़ है उसे भी सब्र के साथ बरदाश्त करता रह. और इस बात को जान ले कि सच मुच सब्र करने वालों को मदद मिलती है, और रंज करने वालों को ख़ुशी भी होती है, और हर मुश्किल आसान हो जाती है."

—इब्न अब्बास, तिरमिज़ी. अहमद. रज़ीन.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"जो आदमी अपने से छोटों पर दया नहीं करता और बड़ों की इज़्ज़त नहीं करता वह हममें से नहीं है."

—अनस, तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"पाँच मुसीबतों से पहले पाँच अवसरों से पूरा फ़ायदा उठाना चाहिये. बुढ़ापे की कमज़ोरी से पहले जवानी से, बीमारी से पहले तन्दुरुस्ती से, ग़रीबी से पहले दौलत से, काम की भीड़ से पहले फ़ुरसत से, और मौत से पहले ज़िन्दगी से."

—अमरू बिन मैमून अलओदी, तिरमिज़ी.

एक आदमी ने आकर पैग़म्बर से शिकायत की कि मेरा दिल बहुत सख़्त है. पैग़म्बर ने उस से कहा :—"यतीमों के सिरों पर हाथ फेरा कर और ग़रीबों को खाना खिलाया कर."

—अबू हुरैरह, अहमद.

मुहम्मद साहब ने कहा कि,—"जो कोई किसी यतीम को अपने घर में रखता है, उसकी ख़ातिर करता है और जो ख़ुद खाता है वही उसे भी खिलाता है, इस में शक नहीं अल्लाह उसे जन्नत देगा, जब तक कि उसने कोई ऐसा गुनाह न किया हो जिसकी माफ़ी न हो सके, और जो कोई तीन बेटियों को पालता है या इसी तरह की तीन बहनों को

اللہ ہی سے چاہ ۔ کیونکہ سچ مچ یدی اللہ کوئی بات تیرے لئے نہیں چاہتا تو اور سب پرانی ملکر بھی تجھے اُس چیز کا فایدہ نہیں پہونچا سکتے۔ اور اگر اللہ نہیں چاہتا کہ کسی خاص بات میں تجھے نقصان پہونچے تو سب پرانی ملکر بھی تجھے وہ نقصان نہیں پہونچا سکتے ۔ قلم سوکھ گئے ہیں اور کاغذ لپیٹ ڈالے گئے ہیں' اور اگر تو وشواس کے ساتھ اور خوشی کے ساتھ اللہ کے لئے کام کرسکے تو کام میں لگا رہ۔ اور اگر تو ایسا نہ کرسکے تب پھر تیرے لئے سچ مچ اچھا یہی ہے کہ جس چیز کے تو خلاف ہے اسے بھی صبر کے ساتھ برداشت کرتا رہ ۔ اور اِس بات کو جان لے کہ سچ مچ صبر کرنے والے کو مدد ملتی ہے' اور رنج کرنے والے کو خوشی بھی ہوتی ہے' اور ہر مشکل آسان ہوجاتی ہے ۔"

—ابن عباس' ترمذی : احمد : رزین ۔

محمد صاحب نے کہا :—"جو آدمی اپنے سے چھوٹوں پر دیا نہیں کرتا اور بڑوں کی عزت نہیں کرتا وہ ہم میں سے نہیں ہے ۔"

—انس' ترمذی ۔

محمد صاحب نے کہا ۔—"پانچ مصیبتوں سے پہلے پانچ اوسروں سے پورا فایدہ اُٹھانا چاہئے : بڑھاپے کی کمزوری سے پہلے جوانی سے' بیماری سے پہلے تندرستی سے' غریبی سے پہلے دولت سے' کام کی بھیڑ سے پہلے فرصت سے' اور موت سے پہلے زندگی سے ۔"

—عمرو بن میمون الاودی' ترمذی ۔

ایک آدمی نے آکر پیغمبر سے شکایت کی کہ میرا دل بہت سخت ہے ۔ پیغمبر نے اُس سے کہا—"یتیموں کے سروں پر ہاتھ پھیرا کر اور غریبوں کو کھانا کھلایا کر ۔"

—ابو ہریرہ' احمد ۔

محمد صاحب نے کہا کہ —"جو کوئی کسی یتیم کو اپنے گھر میں رکھتا ہے' اُس کی خاطر کرتا ہے اور جو خود کھاتا ہے وہی اُسے بھی کھلاتا ہے' اُس میں شک نہیں اللہ اُسے جنت دیگا' جب تک کہ اُس نے کوئی ایسا گناہ نہ کیا ہو جس کی معافی نہ ہوسکے' اور جو کوئی تین بیٹیوں کو پالتا ہے یا اِسی طرح کی تین بہنوں کو

पालता है और उन्हें अच्छी तालीम देता है और उनपर दया करता है यहाँ तक कि अल्लाह उन्हें अपने पैरों खड़े होने के क़ाबिल कर देता है, तो इसमें शक नहीं अल्लाह उसे जन्नत में जगह देगा." इस पर किसी आदमी ने पूछा,—' ऐ अल्लाह के रसूल ! अगर लड़कियाँ दो ही हों तो ?' पैग़म्बर ने जवाब दिया,—"दो ही हों या चाहे एक भी हो तब भी अल्लाह ऐसा ही करेगा."

—इब्न अब्बास, बुख़ारी.

एक आदमी ने आकर पैग़म्बर से पूछा,—"ऐ अल्लाह के रसूल ! लोगों में हमारी दया का सबसे अधिक मुस्तहक़ कौन है ?" पैग़म्बर ने जवाब दिया,—"तुम्हारी माँ." पैग़म्बर ने तीन बार इन शब्दों को दुहराया और फिर कहा—"और इसके बाद तुम्हारा बाप."

—अबू हुरैरह, बुख़ारी: मुसलिम.

एक आदमी पैग़म्बर के पास आया और कहने लगा,—"ऐ अल्लाह के रसूल ! मैं अल्लाह की राह में लड़ना चाहता हूँ, और मैं आपसे सलाह करने आया हूँ." पैग़म्बर ने पूछा,—"क्या तेरी माँ ज़िन्दा है ?" उसने जवाब दिया,—"हाँ." पैग़म्बर ने कहा,—"तो जा, अपनी माँ की सेवा कर क्योंकि सच मुच माँ के पैरों के पास ही जन्नत है."

—मुआविया बिन जाहिमा, नसाई.

एक आदमी ने आकर पैग़म्बर से जहाद करने के लिये इजाज़त चाही. पैग़म्बर ने पूछा,—"क्या तेरे माँ बाप ज़िन्दा हैं ?" उसने कहा,—"हाँ." इस पर पैग़म्बर ने कहा,—"तब जा, और अपने माँ बाप के लिये जहाद कर यानी मेहनत करके उनकी सेवा कर."

—इब्न अमरू बिन अलआस, बुख़ारी: मुसलिम: अबू दाऊद: तिरमिज़ी: नसाई.

मेरी माँ जो अभी तक मुशरिक थी (यानी जो अरब के पुराने देवी देवताओं की पूजा करती थी और मुसलमान नहीं हुई थी) मुझसे मिलने आई. मैंने पैग़म्बर से जाकर पूछा,—"मेरी माँ मुझसे मिलने आई है, वह हमारे मज़हब के ख़िलाफ़ है, क्या मैं उससे मुहब्बत से पेश आऊँ ?' पैग़म्बर ने जवाब दिया,—"हाँ, तुम्हे अपनी माँ के साथ मुहब्बत ही से पेश आना चाहिये."

—असमा बिन्त अबूबक, बुख़ारी: मुसलिम: अबू दाऊद.

پالتا ھے اور اُنھیں اچھی تعلیم دیتا ھے اور اُن پر دیا کرتا ھے یہاں تک کہ اللہ اُنھیں اپنے پیروں پر کھڑے ھونے کے قابل کردیتا ھے، تو اِس میں شک نہیں اللہ اُسے جنت میں جگہ دیگا." اِس پر کسی آدمی نے پوچھا،—"اَے اللہ کے رسول ! اگر لڑکیاں دو ھی ھوں تو ؟" پیغمبر نے جواب دیا،—"دو ھی ھوں یا چاھے ایک ھی ھو تب ھی اللہ ایسا ھی کریگا."

—ابن عباس، بخاری .

ایک آدمی نے آکر پیغمبر سے پوچھا،—"اَے اللہ کے رسول ! لوگوں میں ھماری دیا کا سب سے ادھک مستحق کون ھے ؟" پیغمبر نے جواب دیا،—"تمھاری ماں." پیغمبر نے تین بار اِن شبدوں کو دوھرایا اور پھر کہا—"اور اِس کے بعد تمھارا باپ."

—ابو ھریرہ، بخاری : مسلم .

ایک آدمی پیغمبر کے پاس آیا اور کہنے لگا،—"اَے اللہ کے رسول ! میں اللہ کی راہ میں لڑنا چاھتا ھوں، اور میں آپ سے صلاح کرنے آیا ھوں." پیغمبر نے پوچھا،—"کیا تیری ماں زندہ ھے ؟" اُس نے جواب دیا،—"ھاں." پیغمبر نے کہا،—"تو جا، اپنی ماں کی سیوا کر کیونکہ سچ مچ ماں کے پیروں کے پاس ھی جنت ھے."

—معاویہ بن جاھمہ، نساعی .

ایک آدمی نے آکر پیغمبر سے جہاد کرنے کے لئے اجازت چاھی . پیغمبر نے پوچھا،—"کیا تیرے ماں باپ زندہ ھیں ؟" اُس نے کہا،—"ھاں." اِس پر پیغمبر نے کہا،—"تب جا، اور اپنے ماں باپ کے لئے جہاد کر یعنی محنت کرکے اُنکی سیوا کر."

—ابن امرو بن العاص، بخاری : مسلم : ابوداعود : ترمذی : نساعی .

میری ماں جو ابھی تک مشرک تھی (یعنی جو عرب کے پرانے دیوی دیوتاؤں کی پوجا کرتی تھی اور مسلمان نہیں ھوئی تھی) مجھ سے ملنے آئی . میں نے پیغمبر سے جاکر پوچھا،—"میری ماں مجھ سے ملنے آئی ھے، وہ ھمارے مذھب کے خلاف ھے، کیا میں اُس سے محبت سے پیش آؤں ؟" پیغمبر نے جواب دیا،—"ھاں، تمھیں اپنی ماں کے ساتھ محبت ھی سے پیش آنا چاھئے."

—اسماء بنت ابوبکر، بخاری : مسلم : ابوداعود .

मज़ीनह क़बीले का एक आदमी पैग़म्बर के पास आया और कहने लगा,—"ऐ अल्लाह के रसूल ! क्या मैं अपने माँ बाप के मर जाने के बाद भी उनके साथ कुछ नेकी कर सकता हूँ ?" पैग़म्बर ने जवाब दिया,—"हाँ, कर सकते हो, वह इस तरह कि उनके लिये दुआ करो, उनके गुनाहों के लिये अल्लाह से माफ़ी माँगो, वह जो किसी के साथ अहद पैमान कर गए हों उन्हें पूरा करो, और उन सब के साथ ख़ून का रिश्ता निबाहो जो बाप की तरफ़ से या माँ की तरफ़ से तुम्हारे रिश्तेदार हों, और उन सब का आदर करो जो तुम्हारे माँ बाप के सच्चे दोस्त थे."

—अबूउसैद मालिक बिन राबिया अस्साइदी, अबू दाऊद, इब्न माजह.

पैग़म्बर ने कहा:—"तुम में सब से अच्छा आदमी वह है जो अपनी क़ौम की किसी मुसीबत को दूर करता है, जब तक कि वह कोई गुनाह न करे."

—सुराक़ह बिन मालिक बिन जाशुम, अबू दाऊद.

मैंने पूछा,—"ऐ अल्लाह के रसूल ! हुब्बे वतन (देश भक्ति) क्या है ?" पैग़म्बर ने जवाब दिया,—"यह कि तुम अपने हमवतनों की मदद करो बावजूद उनके कोई ग़लत काम करने के."

—वासिलह बिन अलअसक़ा, अबू दाऊद.

मैंने पूछा,—"ऐ अल्लाह के रसूल ! क्या अपने वतन के लोगों से प्यार करना ही हुब्बेवतन है ?" रसूल ने जवाब दिया,—"नहीं, बल्कि हुब्बेवतन यह है कि आदमी अपने हमवतनों के ग़लतियाँ करने पर भी उनकी मदद करता रहे."

—उबादह बिन कसीर अश्शामी, (इब्न माजह): अहमद.

मुहम्मद साहब ने कहा कि,—"जो आदमी न्याय अन्याय का विचार किये बिना, देशभक्ति के नाम पर लोगों को जमा करता है और देश भक्ति के नाम पर दूसरों से लड़ता है और देशभक्ति के नाम पर जान दे देता है वह हम में से नहीं है."

—जुबैर बिन मुतीम, अबू दाऊद.

अनुवादक—श्री मुजीब रिज़वी.

ملمہ قبیلے کا ایک آدمی پیغمبر کے پاس آیا اور کہنے لگا—"اے اللہ کے رسول ! کیا میں اپنے ماں باپ کے مر جانے کے بعد بھی اُن کے ساتھ کچھ نیکی کرسکتا ہوں ؟" پیغمبر نے جواب دیا—"ہاں، کرسکتے ہو، وہ اِس طرح کہ اُن کے لئے دعا کرو، اُن کے گناہوں کے لئے اللہ سے معافی مانگو، وہ جو کسی کے ساتھ عہد پیمان کرگئے ہوں انہیں پورا کرو، اور اُن سب کے ساتھ خون کا رشتہ نبھاؤ جو باپ کی طرف سے یا ماں کی طرف سے تمہارے رشتہ‌دار ہوں، اور ان سب کا آدر کرو جو تمہارے ماں باپ کے سچے دوست تھے."

—ابوأسید مالک بن رابیعہ الساعیدی، ابوداؤد: ابن ماجہ.

پیغمبر نے کہا :—"تم میں سب سے اچھا آدمی وہ ہے جو اپنی قوم کی کسی مصیبت کو دور کرتا ہے، جب تک کہ وہ کوئی گناہ نہ کرے."

—سراقہ بن مالک بن جعشم، ابوداؤد.

میں نے پوچھا—"اے اللہ کے رسول ! حب وطن (دیش بھکتی) کیا ہے ؟" پیغمبر نے جواب دیا—"یہ کہ تم اپنے ہم وطنوں کی مدد کرو باوجود اُن کے کوئی غلط کام کرنے کے."

—واثلہ بن الاسقع، ابوداؤد.

میں نے پوچھا—"اے اللہ کے رسول ! کیا اپنے وطن کے لوگوں سے پیار کرنا ہی حب‌وطن ہے ؟" رسول نے جواب دیا—"نہیں، بلکہ حب‌وطن یہ ہے کہ آدمی اپنے ہم وطنوں کے غلطیاں کرنے پر بھی اُن کی مدد کرتا رہے"

—عبادہ بن کثیرالشامی (ابن ماجہ) ، احمد.

محمد صاحب نے کہا کہ—"جو آدمی، نیائے انیائے کا وچار کئے بنا، دیش بھکتی کے نام پر لوگوں کو جمع کرتا ہے اور دیش بھکتی کے نام پر دوسروں سے لڑتا ہے اور دیش بھکتی کے نام پر جان دے دیتا ہے وہ ہم میں سے نہیں ہے."

—جبیر ابن مطعیم، ابوداؤد.

انوادک—شری مجیب رضوی.

पुरानी चीनी वैद्यक विद्या

पंडित सुन्दरलाल

हम इससे पहले के अंकों में लिख चुके हैं कि चीन की नई सरकार ने जहाँ नई पच्छिमी डाक्टरी विद्या से पूरा पूरा लाभ उठाने की कोशिश की है और उस देश में इस समय अच्छे से अच्छे नए पच्छिमी ढंग के अस्पताल मौजूद हैं वहाँ दूसरी तरफ़ नई सरकार ने चीन की हज़ारों बरस की पुरानी वैद्यक विद्या से भी पूरा लाभ उठाया है और उसे हर तरह बढ़ावा दिया है. चीन के पत्र पत्रिकाओं में वहां की पुरानी वैद्यक विद्या पर बराबर लेख निकलते रहते हैं. इनमें अधिकतर लेख सरकारी अफ़सरों के लिखे होते हैं. इन लेखों से मालूम होता है कि चीनियों को अपनी पुरानी वैद्यक विद्या पर कितना अभिमान है. उन्हें विश्वास है कि उनका यह पुराना इलाज का तरीक़ा दुनिया की मेडिकल साइंस को बहुत सी नई चीज़ें देगा और दे रहा है. उनका कहना है कि नाड़ी की चाल, दिल की हरकत और सांस इन तीनों के सम्बंध को और इनके ज़रिये रोग का पता लगाने के तरीक़े को चीनियों ने आज से दो हज़ार बरस पहले मालूम कर लिया था. उन्हों ने यह भी पता लगा लिया था कि आदमी के चारों तरफ़ के हालात का, उसके भोजन और उसकी आदतों का तनदुरुस्ती पर किस तरह और क्या असर पड़ता है.

आज से हज़ार साल पहले चीनी वैद्यक सांस बंद हो जाने पर भी ऊपरी तरीक़ों से फिर से फेफड़ों को चला लेना जानते थे. वह बड़े बड़े आपरेशन करते थे और जिस हिस्से में आपरेशन किया जाय उसमें पीड़ा अनुभव न हो इसके लिये दवाओं का इंजेक्शन देते थे. वह बीमारियों को पहले से रोकने और ख़ास तरह के व्यायाम आसनों के द्वारा स्वास्थ को ठीक रखने के भी तरीक़े जानते थे.

चेचक जैसी बीमारियों के रोकने के लिए टीका लगाना सबसे पहले सोलहवीं सदी में चीन में शुरू हुआ. चीन से रूस ने यह तरीक़ा सीखा और बाद में रूस से यह तरीक़ा सारे योरप में फैला.

पुरानी चीनी वैद्यक विद्या में लगभग दो हज़ार दवाओं के नाम आते हैं जिनमें से अधिकतर जड़ी बूटियाँ हैं. कुछ दवाएँ जानवरों के शरीरों या धातों से भी तैयार होती हैं. इन दवाओं के दसियों हज़ार नुस्ख़े पुरानी किताबों में मिलते हैं जिनमें से बहुत से अभी तक काम में आ रहे हैं. इन दवाओं के अलावा अनगिनत और जंगली जड़ी बूटियाँ हैं जिनका करोड़ों चीनी जनता उपयोग करती है और जो ख़ास ख़ास बीमारियों में अकसीर का काम देती हैं.

پرانی چینی ویدیک ودیا

پنڈت سندر لال

ہم اس سے پہلے کے انکوں میں لکھ چکے ہیں کہ چین کی نئی سرکار نے جہاں نئی پچھمی ڈاکٹری ودیا سے پورا پورا لابھ اٹھانے کی کوشش کی ہے اور اس دیش میں اس سمے اچھے سے اچھے نئے پچھمی ڈھنگ کے اسپتال موجود ہیں وہاں دوسری طرف نئی سرکار نے چین کی ہزاروں برس کی پرانی ویدیک ودیا سے بھی پورا لابھ اٹھایا ہے اور اسے ہر طرح بڑھاوا دیا ہے . چین کے پتر پتر کاؤں میں وہاں کی پرانی ویدیک ودیا پر برابر لیکھ نکلتے رہتے ہیں . ان میں ادھکتر لیکھ سرکاری افسروں کے لکھے ہوتے ہیں۔ ان لیکھوں سے معلوم ہوتا ہے کہ چینیوں کو اپنی پرانی ویدیک ودیا پر کتنا ابھیمان ہے . انہیں وشواس ہے کہ انکا یہ پرانا علاج کا طریقہ دنیا کی میڈیکل سائنس کو بہت سی نئی چیزیں دیگا اور دے رہا ہے . انکا کہنا ہے کہ ناڑی کی چال، دل کی حرکت اور سانس ان تینوں کے سمبندھ کو اور ان کے ذریعہ روگ کا پتہ لگانے کے طریقہ کو چینیوں نے آج سے دو ہزار برس پہلے معلوم کر لیا تھا . انہوں نے یہ بھی پتہ لگا لیا تھا کہ آدمی کے چاروں طرف کے حالات کا، اس کے بھوجن اور اس کی عادتوں کا تندرستی پر کس طرح اور کیا اثر پڑتا ہے .

آج سے ہزار سال پہلے چینی ویدیک سانس بند ہو جانے پر بھی اوپری طریقوں سے پھر سے پھیپھڑوں کو چلا لینا جانتے تھے . وے بڑے بڑے آپریشن کرتے تھے اور جس حصے میں آپریشن کیا جائے اس میں پیڑا انوبھو نہ ہو اس کے لئے دواؤں کے انجیکشن دیتے تھے . اور بیماریوں کو پہلے سے روکنے اور خاص طرح کے ویایام آسنوں کے دوارا سواستھ کو ٹھیک رکھنے کے بھی طریقے جانتے تھے .

چیچک جیسی بیماریوں کے روکنے کے لئے ٹیکا لگانا سب سے پہلے سولہویں صدی میں چین میں شروع ہوا . چین سے روس نے یہ طریقہ سیکھا اور بعد میں روس سے یہ طریقہ سارے یورپ میں پھیلا .

پرانی چینی ویدیک ودیا میں لگ بھگ دو ہزار دواؤں کے نام آتے ہیں جن میں سے ادھکتر جڑی بوٹیاں ہیں . کچھ دوائیں جانوروں کے شریروں یا دھاتوں سے بھی تیار ہوتی ہیں . ان دواؤں کے دسیوں ہزار نسخے پرانی کتابوں میں ملتے ہیں جن میں سے بہت سے ابھی تک کام میں آ رہے ہیں . ان دواؤں کے علاوہ انگنت اور جنگلی جڑی بوٹیاں ہیں جس کا کروڑوں چینی جنتا اپیوگ کرتی ہے اور جو خاص خاص بیماریوں میں اکسیر کا کام دیتی ہیں .

एन्सेफेलाइटिस एक खासकर बच्चों की खतरनाक बीमारी है जिसमें दिमाग के अंदर बुखार हो जाता है. नए पच्छिमी डाक्टर इसे लाइलाज बताते हैं. चीन में पुराने ढंग से इसका इलाज होता है और सौ फ़ीसदी से लेकर कम से कम नब्बे फ़ीसदी तक बीमार बिलकुल अच्छे हो जाते हैं. चीनी सरकार ने देश भर में हुकम भेज दिया है कि सब जगह इस बीमारी का इलाज पुरानी वैद्यक विद्या के अनुसार ही किया जावे.

कुकर खांसी, पेचिश और अंतड़ियों के कीड़ों का इलाज चीनी पुराने तरीकों से और पुरानी दवाओं से ही करते हैं.

चीन की पुरानी वैद्यक विद्या में इलाज के दो बड़े खास तरीके हैं, 'एक्यूपंक्चर' और मोक्साकोटेराइज़ेशन. पहले तरीके में धात की पतली पतली सुइयाँ शरीर के खास खास हिस्सों में दी जाती हैं जिनसे नसों में फिर से जान पड़ जाती है और बहुत सी बीमारियाँ अच्छी हो जाती हैं. लिखा है कि रोगी को इससे ज़रा सी भी तकलीफ़ या दर्द नहीं होता. दूसरे तरीके में एक छड़ी के ऊपर कोई जलती हुई दवा रखकर उस छड़ी को शरीर पर रख दिया जाता है. इसमें भी खाल को बिलकुल नुक़सान नहीं पहुँचता. खासकर बढ़े हुए टोनसिल, चेहरे का फ़ालिज, जोड़ों के दर्द और न्यूरस्थीनिया का इलाज इन्हीं दो तरीकों से किया जाता है.

पुरानी चीनी विद्या की एक विशेषता यह है कि कई बीमारियाँ जिनमें नये डाक्टर आपरेशन करते हैं पुराने तरीके से बिना आपरेशन के बिलकुल अच्छी हो जाती हैं. इसकी खास मिसाल बवासीर है. दिन में दो तीन बार सात या आठ दिन तक मसों के ऊपर दवा लगा दी जाती है और आठ दिन के बाद मसे खुद बखुद सिकुड़कर खतम हो जाते हैं, न कोई दर्द होता है और न कोई दूसरा दाग रहता है, और भी बहुत सी बीमारियों का पुराने तरीके से इसी तरह इलाज होता है.

अभी बहुत सी पुरानी दवाओं पर चीनी डाक्टर और साइंसदां तजरबे और खोज कर रहे हैं. नई सरकार की पूरी कोशिश है कि पुरानी चीनी वैद्यक विद्या को पूरी खोज के बाद बिलकुल आजकल की साइंसी बुनियादों पर दुनिया के सामने रख दिया जावे. इसमें चीन के पुराने वैद्य और नए डाक्टर दोनों मिलकर प्रेम के साथ काम कर रहे हैं. नई चीनी सरकार को विश्वास है कि दुनिया के इलाज के तरीकों को पुरानी चीनी विद्या से अभी बहुत कुछ लेना और सीखना है

हाल में खबर निकली है कि पेकिंग में एक नया सरकारी अस्पताल खुल गया है जिसमें दो सौ चालीस रोगी एक साथ रक्खे जा सकते हैं और जिसमें सब बीमारियों

اینسیفلائٹس ایک خاص کر بچوں کی خطرناک بیماری ہے جس میں دماغ کے اندر بخار ہوجاتا ہے . نئے پچھمی ڈاکٹر اسے لاعلاج بتاتے ہیں . چین میں پرانے ڈھنگ سے اس کا علاج ہوتا ہے اور سو فیصدی سے لیکر کم سے کم نوے فیصدی تک بیمار بالکل اچھے ہوجاتے ہیں . چینی سرکار نے دیش بھر میں حکم بھیج دیا ہے کہ سب جگہ اس بیماری کا علاج پرانی ویدیک ودیا کے انوسار ہی کیا جاوے .

کوکر کھانسی، پیچش اور آنتڑیوں کے کیڑوں کا علاج چینی پرانے طریقوں سے اور پرانی دواؤں سے ہی کرتے ہیں .

چین کی پرانی ویدیک ودیا میں علاج کے دو بڑے خاص طریقے ہیں 'ایکیوپنکچر اور موکساکوٹیرائزیشن . پہلے طریقے میں دھات کی پتلی پتلی سوئیاں شریر کے خاص خاص حصوں میں دی جاتی ہیں جن سے نسوں میں پھر سے جان پڑ جاتی ہے اور بہت سی بیماریاں اچھی ہو جاتی ہیں . لکھا ہے کہ روگی کو اس سے ذراسی بھی تکلیف یا درد نہیں ہوتا . دوسرے طریقے میں ایک چھڑی کے اوپر کوئی جلتی ہوئی دوا رکھ کر اس چھڑی کو شریر پر رکھ دیا جاتا ہے . اس سے بھی کھال کو بالکل نقصان نہیں پہونچتا . خاص کر بڑھے ہوئے ٹونسل' چہرے کا فالج' جوڑوں کے درد اور نیورستھینیا کا علاج دو طریقوں سے کیا جاتا ہے .

پرانی چینی ودیا کی ایک وشیشتا یہ ہے کہ کئی بیماریاں جن میں نئے ڈاکٹر آپریشن کرتے ہیں پرانے طریقے سے بنا آپریشن کے بالکل اچھی ہو جاتی ہیں . اس کی خاص مثال بواسیر ہے . دن میں دو تین بار سات یا آٹھ دن تک مسوں کے اوپر دوا لگا دی جاتی ہے اور آٹھ دن کے بعد مسے خود بخود سکڑ کر ختم ہو جاتے ہیں' نہ کوئی درد ہوتا ہے اور نہ کوئی دوسرا خطرہ بعد میں رہتا ہے . اور بھی بہت سی بیماریوں کا پرانے طریقے سے اسی طرح علاج ہوتا ہے .

ابھی بہت سے پرانی دواؤں پر چینی ڈاکٹر اور سائنس‌داں تجربے اور کھوج کر رہے ہیں . نئی سرکار کی پوری کوشش ہے کہ پرانی چینی ویدیک ودیا کو پوری کھوج کے بعد بالکل آجکل کی سائنسی بنیادوں پر دنیا کے سامنے رکھ دیا جاوے . اس میں چین کے پرانے ویدیہ اور نئے ڈاکٹر دونوں مل کر پریم کے ساتھ کام کر رہے ہیں . نئی چینی سرکار کو وشواس ہے کہ دنیا نے علاج کے طریقوں کو پرانی چینی ودیا سے ابھی بہت کچھ لینا اور سیکھنا ہے .

حال میں خبر نکلی ہے کہ پیکنگ میں ایک نیا سرکاری اسپتال کھل گیا ہے جس میں دو سو چالیس روگی ایک ساتھ رکھے جا سکتے ہیں اور جس میں سب بیماریوں

का इलाज केवल पुरानी वैद्यक विद्या के अनुसार ही होता है. इस अस्पताल में पचास होशियार वैद्य काम करते हैं और एक्सरे (X-Ray) और चीर फाड़ तक के सब महकमे मौजूद हैं.

चीनी सरकार ने हुक्म दे दिया है कि चीन भर के अन्दर जितने मेडिकल कालेज, मेडिकल स्कूल और नर्सों के लिए ट्रेनिंग स्कूल हैं उन सब में इस साल से पुरानी चीनी वैद्यक विद्या की तालीम भी लाज़िमी तौर पर दी जावेगी.

पुरानी चीनी वैद्यक विद्या को देश भर में फैलाने का यह केवल एक तरीक़ा है.

क्या ही अच्छा हो कि हमारे देश की सरकार और हमारे अंग्रेजी पढ़े डाक्टर भी इस देश की वैद्यक और यूनानी तरीक़ों की क़दर को समझें, उनकी तरफ ध्यान दें और उनके ज़रिये देश की करोड़ों जनता की सच्ची सेवा कर सकें. हमें विश्वास है कि यदि सरकार इस मामले में अपना फ़र्ज़ पूरा करे तो भारत के पुराने इलाज के तरीक़े चीन के पुराने इलाज के तरीक़ों के मुक़ाबले मे कुछ अधिक उपयोगी ही साबित हो सकते हैं.

کا علاج کیول پرانی ویدیک ودیا کے انوسار ہی ہوتا ہے ۔ اس اسپتال میں پچاس ہوشیار وید کام کرتے ہیں ۔ اور ایکسرے (X-Ray) اور چیر پھاڑ تک کے سب محکمے موجود ہیں ۔

چینی سرکار نے حکم دے دیا ہے کہ چین بھر کے اندر جتنے میڈیکل کالج، میڈیکل اسکول اور نرسوں کے لئے ٹریننگ اسکول ہیں ان سب میں اس سال سے پرانی چینی ویدیک ودیا کی تعلیم بھی لازمی طور پر دی جاویگی ۔

پرانی چینی ویدیک ودیا کو دیش بھر میں پھیلانے کا یہ کیول ایک طریقہ ہے ۔

کیا ہی اچھا ہو کہ ہمارے دیش کی سرکار اور ہمارے انگریزی پڑھے ڈاکٹر بھی اس دیش کی ویدیک اور یونانی طریقوں کی قدر کو سمجھیں، ان کی طرف دھیان دیں اور ان کے ذریعہ دیش کی کروڑوں جنتا کی سچی سیوا کر سکیں ۔ ہمیں وشواس ہے کہ یدی سرکار اس معاملے میں اپنا فرض پورا کرے تو بھارت کے پرانے علاج کے طریقے چین کے پرانے علاج کے طریقوں کے مقابلہ میں کچھ ادھک اپیوگی ہی ثابت ہو سکتے ہیں ۔



भाई मंजरअली सोख्ता

स्वर्गीय मंजर अली सोख्ता का जन्म सन् 1884 में उत्तर प्रदेश के बदायूं नगर में हुआ था. उनके पिता का नाम शेख मुबारक अली सोख्ता था. एक पुराने सूफी सिलसिले से उनके घराने का सम्बन्ध था. इसी से घरवालों की अल्ल 'सोख्ता' पड़ गई थी जिसका अर्थ 'जला हुआ' है

शेख मुबारकअली नौकरी की तलाश में इलाहाबाद आकर पंडित मोतीलाल नेहरू के यहां मुन्शी हो गए. बालक मंजरअली, उनकी माता और मंजर अली की नानी सब उनके साथ आनन्द भवन में रहने लगे.

मंजर अली छोटी उमर में ही बड़े जहीन और होनहार मालूम होते थे पंडित मोतीलाल जी उन्हें बहुत प्यार करते थे. आनन्द भवन में ही वह पल कर बड़े हुए और घर के दूसरे बच्चों और लोगों में खूब हिल मिल गए. नेहरू खानदान के लोगों और उनके दूर के सम्बन्धियों तक के साथ उनका वह घर का सा और घनिष्ट सम्बन्ध अन्त तक बना रहा. सब उन्हें आम तौर पर "मन्ना भाई" कहा करते थे.

मंजर अली जब दसवें दरजे में पढ़ते थे तो बी० ए० और एम० ए० के अनेक विद्यार्थी उनसे अंगरेजी पढ़ने और खासकर शेक्सपियर के ड्रामे पढ़ने और समझने आया करते थे. मंजर अली उस समय तक शेक्सपियर के सब ड्रामे अच्छी तरह पढ़ चुके थे.

सन् 1905 में बंगाल का बटवारा हुआ उसके खिलाफ सारे देश में एक जबरदस्त आन्दोलन शुरू हो गया. मंजर अली म्योर सैण्ट्रल कालिज, इलाहाबाद की एम० ए० और एल. एल. बी. दोनों क्लासों में उन दिनों साथ साथ पढ़ रहे थे. बाबू पुरुषोत्तम दास टण्डन, पंडित रमाकान्त मालवीय, पंडित रविशंकर शुक्ल, पंडित कैलाशनाथ काटजू और मैं उनके सहपाठियों में से थे.

बंगभंग के आन्दोलन का मंजर अली पर गहरा असर पड़ा. कालिज की पढ़ाई के साथ साथ देश की स्थिति का

بھائی منظرعلی سوختہ

سورگیہ منظر علی سوختہ کا جنم سن 1884 میں اتر پردیش کے بدایوں نگر میں ہوا تھا۔ اُن کے پتا کا نام شیخ مبارک علی سوختہ تھا۔ ایک پرانے صوفی سلسلے سے اُن کے گھرانے کا سمبندھ تھا۔ اُسی سے گھر والوں کی ال 'سوختہ' پڑ گئی تھی، جس کا ارتھ 'جلا ہوا' ہے۔

شیخ مبارک علی نوکری کی تلاش میں الٰہ آباد آکر پنڈت موتی لال نہرو کے یہاں منشی ہو گئے۔ بالک منظر علی، اُنکی ماتا اور منظر علی کی نانی سب اُن کے ساتھ آنند بھون میں رہنے لگے۔

منظر علی چھوٹی عمر سے ہی بڑے ذہین اور ہونہار معلوم ہوتے تھے۔ پنڈت موتی لال جی اُنہیں بہت پیار کرتے تھے۔ آنند بھون میں ہی وہ پل کر بڑے ہوئے اور گھر کے دوسرے بچوں اور لوگوں میں خوب ہل مل گئے۔ نہرو خاندان کے لوگوں اور اُن کے دور کے سمبندھیوں تک کے ساتھ اُن کا وہ گھر کا سا اور گھنشٹ سمبندھ انت تک بنا رہا۔ سب اُنہیں عام طور پر "منا بھائی" کہا کرتے تھے۔

منظر علی جب دسویں درجے میں پڑھتے تھے تو بی۔ اے۔ اور ایم۔ اے۔ کے انیک ودیارتھی اُن سے انگریزی پڑھنے اور خاصکر شیکسپیئر کے ڈرامے پڑھنے اور سمجھنے آیا کرتے تھے۔ منظر علی اُس سمے تک شیکسپیئر کے سب ڈرامے اچھی طرح پڑھ چکے تھے۔

سن 1905 میں بنگال کا بٹوارہ ہوا۔ اُس کے خلاف سارے دیش میں ایک زبردست آندولن شروع ہو گیا۔ منظر علی میور سینٹرل کالج، الٰہ آباد کی ایم۔ اے۔ اور ایل۔ ایل۔ بی۔ دونوں کلاسوں میں اُن دنوں ساتھ ساتھ پڑھ رہے تھے۔ بابو پرشوتم داس ٹنڈن، پنڈت رماکانت مالویہ، پنڈت روی شنکر شکل، پنڈت کیلاش ناتھ کاٹجو اور میں اُن کے سہپاٹھیوں میں سے تھے۔

بنگ بھنگ کے آندولن کا منظر علی پر گہرا اثر پڑا۔ کالج کی پڑھائی کے ساتھ ساتھ دیش کی استھتی کا

उन्होंने गहरा अध्ययन करना शुरू किया. देश की आर्थिक और राजनैतिक हालत पर दादा भाई नौरोजी, रमेशचन्द्र दत्त, विलियम डिगबी जैसों की किताबें उन्होंने ध्यान से पढ़ीं. दूसरे देशों जैसे इटली आदि के स्वतत्रता सग्रामो का इतिहास भी उन्होंने उसी समय पढ़ा. ठीक उस समय एक छोटी सी घटना हुई जिसने मंज़र अली के आगे के जीवन पर और गहरा असर डाला. प्रिन्सिपल जे. जी. जेनिंग्स उन दिनों एम. ए. को अंगरेज़ी पढ़ाया करते थे. जेनिंग्स ने मंज़र अली से भारत के आए दिन के दुष्कालों और उनके कारणों पर एक निबन्ध लिखने के लिए कहा. जो किताबें कोर्स में पढ़ाई जाती थीं उनमें उन दुष्कालो का कारण बारिश की कमी बताया जाता था. मंज़र अली ने जो नई किताबें पढ़ीं उनमें दुष्कालों का कारण अंगरेज़ों की शोषक नीति को बताया गया. मंज़र अली ने अपने निबन्ध मे इसी कारण पर ज़ोर दिया. प्रिन्सिपल जेनिंग्स को निबन्ध पढ़ कर गुस्सा आ गया. उन्होने मंज़र अली को बुलाकर डांटा, डपटा, समझाया और अपना निबन्ध ठीक कर लेने की सलाह दी. जेनिंग्स और मंज़र अली में यह बहस कई दिन तक जारी रही. मंज़र अली ने अपनी राय न बदली. इसी पर वह एम. ए. क्लास से निकाल दिये गए. सन् 1908 मे उन्होने एल. एल. बी. पास कर लिया.

देश का राजनैतिक आन्दोलन ज़ोर पकड़ रहा था. सन 1908 में इलाहाबाद से उर्दू में "स्वराज" नाम का एक साप्ताहिक पत्र निकला जो उस प्रान्त मे आज़ादी की आवाज़ उठाने वाला पहला समाचारपत्र था. उसके संस्थापक और सम्पादक थे श्री शान्ति स्वरूप. दो वर्ष के अन्दर उस पत्र के नौ सम्पादक जेल गए, जिन्हे केवल उनके लेखों के ऊपर तीन बरस से लेकर आजन्म काला पानी तक की सज़ाएं दी गईं. बराबर एक दूसरे के बाद नए नए एडिटर सामने आते गए और पत्र निकलता रहा. सन 1909 मे इलाहाबाद ही से मेरे सम्पादकत्व मे "कर्मयोगी" नाम का हिन्दी साप्ताहिक निकला जो अपने ढंग का हिन्दी में पहला क्रान्तिकारी पत्र था. इन दोनो पत्रों के साथ और प्रान्त के उस समय के सारे आज़ादी के आन्दोलन के साथ मंज़र अली का बहुत गहरा सम्बन्ध था.

उन्हीं दिनों मंज़र अली के माता पिता ने उन पर शादी के लिए बार बार ज़ोर दिया. मंज़र अली ने हमेशा यह कह कर इन्कार किया कि अपने राजनैतिक विचारों और आकांक्षाओं के कारन किसी बन्धन मे फंसना नहीं चाहते थे. सन 1956 में मृत्यु के समय तक मंज़र अली ने अपनी सारी उम्र अविवाहित रहकर ही काटी.

उसी समय के आस पास उनके पिता जी की मृत्यु हो गई. पंडित मोतीलाल जी उन दिनों फ्रीमेसन सोसाइटी के

اُنھوں نے گہرا ادھین کرنا شروع کیا. دیش کی آرتھک اور راجنیتک حالت پر دادا بھائی نوروجی، رمیش چندر دت، ولیم ڈگبی جیسوں کی کتابیں اُنھوں نے دھیان سے پڑھیں ۔ دوسرے دیشوں جیسے اِٹلی آدی کے سوتنترتا سنگراموں کا اِتہاس بھی اُنھوں نے اُسی سمئے پڑھا ۔ ٹھیک اُس سمئے ایک چھوٹی سی گھٹنا ہوئی جس نے منظر علی کے آگے کے جیون پر اور گہرا اثر ڈالا ۔ پرنسپل جے ۔ جی ۔ جیننگس ان دنوں ایم ۔ اے ۔ کو انگریزی پڑھایا کرتے تھے ۔ جیننگس نے منظر علی سے بھارت کے آئے دن کے دشکالوں اور ان کے کارنوں پر ایک نبندھ لکھنے کے لئے کہا ۔ جو کتابیں کورس میں پڑھائی جاتی تھیں اُن میں دشکالوں کا کارن بارش کی کمی بتایا جاتا تھا ۔ منظر علی نے جو نئی کتابیں پڑھیں اُن میں دشکالوں کا کارن انگریزوں کی شوشک نیتی کو بتایا گیا. منظر علی نے اپنے نبندھ میں اِسی کارن پر زور دیا ۔ پرنسپل جیننگس کو نبندھ پڑھکر غصہ آگیا ۔ اُنھوں نے منظر علی کو بلاکر ڈانٹا، ڈپٹا، سمجھایا اور اپنا نبندھ ٹھیک کرانے کی صلاح دی ۔ جیننگس اور منظر علی میں یہ بحث کئی دن تک جاری رہی ۔ منظر علی نے اپنی رائے نہ بدلی ۔ اِسی پر وہ ایم ۔ اے ۔ کلاس سے نکال دیئے گئے ۔ سن 1908 میں اُنھوں نے ایل ۔ ایل ۔ بی ۔ پاس کرلیا ۔

دیش کا راجنیتک آندولن زور پکڑ رہا تھا ۔ سن 1908 میں اِلہ آباد سے اُردو میں "سوراج" نام کا ایک ساپتاہک پتر نکلا جو اُس پرانت میں آزادی کی آواز اُٹھانے والا پہلا سماچارپتر تھا ۔ اُس کے سنستھاپک اور سمپادک تھے شری شانتی سروپ ۔ دو ورش کے اندر اُس پتر کے نو سمپادک جیل گئے، جنھیں کیول اُن کے لیکھوں کے اُوپر تین برس سے لیکر آجنم کالا پانی تک کی سزائیں دی گئیں ۔ برابر ایک دوسرے کے بعد نئے نئے ایڈیٹر سامنے آتے گئے اور پتر نکلتا رہا ۔ سن 1909 میں اِلہ آباد ہی سے میرے سمپادکتو میں "کرم یوگی" نام کا ہندی ساپتاہک نکلا جو اپنے ڈھنگ کا ہندی میں پہلا کرانتکاری پتر تھا ۔ اُن دونوں پتروں کے ساتھ اور پرانت کے اُس سمئے کے سارے آزادی کے آندولن کے ساتھ منظر علی کا بہت گہرا سمبندھ تھا ۔

اُنھیں دنوں منظر علی کے ماتا پتا نے اُن پر شادی کے لئے بار بار زور دیا ۔ منظر علی نے ہمیشہ یہ کہکر اِنکار کیا کہ اپنے راجنیتک وچاروں اور آکانشاؤں کے کارن وہ اِس طرح کے کسی بندھن میں پھانسنا نہیں چاہتے تھے ۔ سن 1956 میں مرتیو کے سمئے تک منظر علی نے اپنی ساری عمر اویواہت رہکر ہی کاٹی ۔

اُسی سمئے کے آس پاس اُن کے پتا جی کی مرتیو ہوگئی. پنڈت موتی لال جی اُن دنوں فریمیسن سوسایٹی کے

एक बहुत ऊँचे पदाधिकारी और अंगरेजी राज के क़द्रदां थे. उन्होंने मंज़र अली को काफ़ी समझाया. यहाँ तक कि मंज़र अली को एक बार लगभग एक महीने के लिये इलाहाबाद छोड़कर बाहर चला जाना पड़ा. उस एक महीने के अन्दर पंडित मोतीलाल जी और मंज़र अली सोख़्ता में जो लम्बा पत्र व्यवहार हुआ वह पढ़ने के क़ाबिल था. उससे पन्डित मोतीलाल जी का मंज़र अली के लिए प्रेम, मंज़र अली का उनके लिये आदर और दोनों का अपने अपने विचारों और आदर्शों पर मज़बूती से जमे रहना, तीनों बातें साफ़ चमकती हैं. आख़िर मंज़र अली को अपनी माँ और अपनी नानी दोनों के पालन के लिए इलाहाबाद में वकालत शुरू कर देनी पड़ी.

इस बीच लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, श्री बिपिन चन्द्र पाल और श्री अरविन्द घोष के साथ मंज़र अली सोख़्ता के गहरे सम्बन्ध क़ायम हो चुके थे. ख़ासकर लाला लाजपत राय को मंज़र अली के साथ बहुत ही प्रेम था.

सन 1916-17 में मंज़र अली ने लोकमान्य तिलक की होम रूल लीग और मिसेज़ एनी बीसेन्ट की होम रूल लीग दोनों में बहुत बड़ा हिस्सा लिया. मंज़र अली उन दिनों नम्बर-3, सिटी रोड में रहते थे उसी बंगले में दोनों होम रूल लीगों के दफ़्तर थे. वह बंगला उन दिनों शहर बल्कि प्रान्त भर में होम रूल लीग के बंगले के नाम से मशहूर था. इलाहाबाद की बड़ी से बड़ी सार्वजनिक सभाएं उसी बंगले के कम्पाऊंड में होती थीं जिसमें आसानी से पन्द्रह बीस हज़ार आदमी आ जाते थे.

कांग्रेस में हिस्सा लेना मंज़र अली ने सन 1905 की बनारस कांग्रेस से ही शुरू कर दिया था. उस ज़माने के नरम दल के नेताओं का प्रभाव घटता और गरम दल वालों का प्रभाव बढ़ता जा रहा था. सन 1917 को दोनों कांग्रेसों, यानी बम्बई की स्पेशल कांग्रेस और कलकत्ते के सालाना कांग्रेस में इस प्रान्त की ओर से मंज़र अली ख़ासे पेश पेश दिखाई देते थे.

इसके बाद कुछ अरसे के लिए रंगून से निकलने वाले अंगरेज़ी दैनिक "रंगून टाइम्स" के एडिटर नियुक्त होकर मंज़र अली सोख़्ता बरमा चले गए जहाँ से लौटने मे पहले महायुद्ध के कारण उन्हें काफ़ी परेशानी उठानी पड़ी. बरमा से लौटने के बाद उन्होंने इलाहाबाद से कुछ दिनों के लिए "विवेक" नाम का एक हिन्दी साप्ताहिक निकाला.

सन 1919 में महात्मा गांधी ने अपना अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन शुरू किया. यू. पी. की सत्याग्रह सभा के प्रेसीडेण्ट गांधी जी थे और सेक्रेटरी तीन थे—मंज़र अली

ایک بہت اُونچے پدادھیکاری اور انگریزی راج کے قدرداں تھے. انہوں نے منظر علی کو کافی سمجھایا. یہاں تک کہ منظر علی کو ایک بار لگ بھگ ایک مہینے کے لئے اِلہ آباد چھوڑکر باہر چلا جانا پڑا. اُس ایک مہینے کے اندر پنڈت موتی لال جی اور منظر علی سوختہ میں جو لمبا پتر ویوہار ہوا وہ پڑھنے کے قابل تھا. اُس سے پنڈت موتی لال جی کا منظر علی کے لئے پریم، منظر علی کا اُن کے لئے آدر اور دونوں کا اپنے اپنے وچاروں اور آدرشوں پر مضبوطی سے جمے رہنا' تینوں باتیں صاف چمکتی ہیں. آخر منظر علی کو اپنی ماں اور اپنی نانی دونوں کے پالن کے لئے اِلہ آباد میں وکالت شروع کردینی پڑی.

اِس بیچ لوکمانیہ بال گنگا دھر تلک' لالہ لاجپت رائے' شری بپن چندر پال اور شری اروند گھوش کے ساتھ منظر علی سوختہ کے گہرے سمبندھ قایم ہوچکے تھے. خاصکر لالہ لاجپت رائے کو منظر علی کے ساتھ بہت ہی پریم تھا.

سن 1916-17 میں منظر علی نے لوکمانیہ تلک کی ہوم رول لیگ اور مسز اینی بیسینٹ کی ہوم رول لیگ دونوں میں بہت بڑا حصہ لیا. منظر علی اُن دنوں نمبر-3' سٹی روڈ میں رہتے تھے. اُسی بنگلے میں دونوں ہوم رول لیگوں کے دفتر تھے. وہ بنگلا اُن دنوں شہر بلکہ پرانت بھر میں ہوم رول لیگ کے بنگلے کے نام سے مشہور تھا. اِلہ آباد کی بڑی سے بڑی سارو جنک سبھائیں اُسی بنگلے کے کمپاؤنڈ میں ہوتی تھیں جس میں آسانی سے پندرہ بیس ہزار آدمی آجاتے تھے.

کانگریس میں حصہ لینا منظر علی نے سن 1905 کی بنارس کانگریس سے ہی شروع کر دیا تھا. اُس زمانے کے نرم دل کے نیتاؤں کا پربھاؤ گھٹتا اور گرم دل والوں کا پربھاؤ بڑھتا جا رہا تھا. سن 1917 کی دونوں کانگریسوں' یعنی بمبئی کی اسپیشل کانگریس اور کلکتہ کی سالانہ کانگریس' میں اس پرانت کی اور سے منظر علی خاصے پیش پیش دکھائی دیتے تھے.

اِس کے بعد کچھ عرصہ کے لئے رنگون سے نکلنے والے انگریزی دینک "رنگون ٹائمس" کے ایڈیٹر نیوکت ہوکر منظر علی سوختہ برما چلے گئے جہاں سے لوٹنے میں پہلے مہایدھ کے کارن انہیں کافی پریشانی اُٹھانی پڑی. برما سے لوٹنے کے بعد انہوں نے اِلہ آباد سے کچھ دنوں کے لئے "ویویک" نام کا ایک ہندی ساپتاہک نکالا.

سن 1919 میں مہاتما گاندھی نے اپنا اہنسا تمک اسہیوگ آندولن شروع کیا. یو. پی. کی ستیاگرہ سبھا کے پریسیڈنٹ گاندھی جی تھے اور سکریٹری تین تھے—منظر علی

सोख्ता, जवाहर लाल नेहरू और मैं 6 अप्रैल सन 1919 की इलाहाबाद की ऐतिहासिक आम सभा मंजर अली सोख्ता के होम रूल लीग वाले कम्पाऊंड में ही हुई थी इलाहाबाद में उससे पहली इतनी बड़ी आम सभा कभी नहीं हुई थी

उस समय से ही महात्मा गाधी और मजर अली सोख्ता में प्रेम और महात्मा जी और उनके सिद्धान्तों में मंजर अली की असाधारण श्रद्धा तेजी से बढ़ती चली गई.

महात्मा गांधी जब यरवदा जेल में थे तो शुरू मे एक बैरक में अकेले रखे गए थे किसी तरह किसी एक और क़ैदी का उनके साथ रखने का सवाल पैदा हुआ मजर अली सोख्ता और बहुत से राजनैतिक क़ैदी भी उसी जेल में थे आखिर मजर अली सोख्ता को गाधी जी के साथ रहने के लिए चुना गया और दोनों आखिर तक उस जेल मे साथ रहे

महात्मा गाधी ने अपना असहयोग आन्दोलन शुरू किया इसी बीच मजर अली की माँ और नानी दोनो का शरीर छूट चुका था. मजर अली ने वकालत छोड़ कर फ़क़ीरी लकर अपनी सारी शक्ति और सारा समय महात्मा गाधी के उसूलों के प्रचार में लगा दिया गाधी जी के हर आन्दोलन मे उन्होने पूरा पूरा हिस्सा लिया सन 1930 और 1932 के आन्दोलनो म उन्होने पहले बम्बई में और फिर अपने प्रात यू० पी० म आन्दोलन की खासी रहनुमाई की उस आन्दोलन मे यू० पी० कांग्रेस कमेटी के वह प्रातीय डिक्टेटर भी रहे फैज़ाबाद जेल मे जब प्रान्त के कई सौ बड़े बड़े काग्रेसी कार्यकर्ता कैद थे वहाँ भी मजर अली सोख्ता ने कुछ दिनो तक प्रान्तीय डिक्टेटर का फर्ज अजाम दिया.

सन् 1931 की कराची कांगरेस ने कानपुर के हिन्दू मुसलिम दगे की तहकीक़ात के लिये छै आदमियो की जो कमेटी नियुक्त की थी उसके यह मेम्बर थे—डाक्टर भगवान दास (सदर), मौलाना ज़फ़रुलमुल्क अलवी, बाबू पुरुषोत्तम दास टण्डन, श्री मजर अली सोख्ता, श्री अबदुल्लतीफ बिजनौरी और मैं (सेक्रटरी) इस कमेटी की रिपोर्ट का ऐतिहासिक भाग मजर अली ही का लिखा हुआ था

सन 1933 मे उन्होंने कानपुर के पास गगाघाट (जिला उन्नाव) में कुछ जमीन लेकर 'सेवा कुंज आश्रम' नाम से एक सस्था क़ायम की उस आश्रम का एक मात्र उद्देश्य गाधीवाद और गाधी जी के विचारो का फैलाना था समय समय पर उस आश्रम से सैकड़ों कार्यकर्ता गाधी जी के तरह तरह के रचनात्मक कामों को सीखकर निकले और सारे देश मे खासकर सारे प्रान्त मे फैल गए इसी आश्रम के अन्दर बारह दिसम्बर सन 1956 को लगभग दो सप्ताह की

سوختہ، جواہر لال نہرو اور میں 6 اپریل سن 1919 کی الہ آباد کی ایتہاسک عام سبھا منظر علی سوختہ کے ہوم رول لیگ والے کمپاؤنڈ میں ہی ہوئی تھی الہ آباد میں اس سے پہلے اتنی بڑی عام سبھا کبھی نہیں ہوئی تھی

اس سمئے سے ہی مہاتما گاندھی اور منظر علی سوختہ میں پریم اور مہاتما جی اور ان کے سدھانتوں میں منظر علی کی اسادھارن شردھا تیزی سے بڑھتی چلی گئی

مہاتما گاندھی جب یروڈا جیل میں تھے تو شروع میں ایک بیرک میں اکیلے رکھے گئے تھے کسی طرح کسی ایک اور قیدی کو ان کے ساتھ رکھنے کا سوال پیدا ہوا منظر علی سوختہ اور بہت سے راجنیتک قیدی بھی اسی جیل میں تھے آخر منظر علی سوختہ کو گاندھی جی کے ساتھ رہنے کے لئے چنا گیا اور دونوں آخر تک اس جیل میں ساتھ رہے

مہاتما گاندھی نے اپنا اسہیوگ آندولن شروع کیا اسی بیچ منظر علی کی ماں اور نانی دونوں کا شریر چھوٹ چکا تھا منظر علی نے وکالت چھوڑ کر فقیری لیکر اپنی ساری شکتی اور سارا سمئے مہاتما گاندھی کے اصولوں کے پرچار میں لگا دیا گاندھی جی کے ہر آندولن میں انہوں نے پورا پورا حصہ لیا سن 1930 اور 1932 کے آندولنوں میں انہوں نے پہلے بمبئی میں اور پھر اپنے پرانت یو پی میں آندولن کی خاصی رہنمائی کی اس آندولن میں یو پی کانگرس کمیٹی کے وہ پرانتیہ ڈکٹیٹر بھی رہے فیض آباد جیل میں جب پرانت کے کئی سو بڑے بڑے کانگرسی کاریہ کرتا قید تھے وہاں بھی منظر علی سوختہ نے کچھ دنوں تک پرانتیہ ڈکٹیٹر کا فرض انجام دیا

سن 1931 کی کراچی کانگرس نے کانپور کے ہندو مسلم دنگے کی تحقیقات کے لئے چھ آدمیوں کی جو کمیٹی نیوکت کی تھی اس کے یہ ممبر تھے—ڈاکٹر بھگوان داس (صدر) مولانا ظفرالملک علوی بابو پرشوتم داس ٹنڈن شری منظر علی سوختہ، شری عبداللطیف بجنوری اور میں (سکریٹری)۔ اس کمیٹی کی رپورٹ کا ایتہاسک بھاگ منظر علی ہی کا لکھا ہوا تھا

سن 1933 میں انہوں نے کانپور کے پاس گنگا گھاٹ (ضلع اناؤ) میں کچھ زمین لیکر 'سیوا کنج آشرم' نام سے ایک سنستھا قائم کی اس آشرم کا ایک ماتر اُدیش گاندھی واد اور گاندھی جی کے وچاروں کو پھیلانا تھا۔ سمئے سمئے پر اس آشرم سے سیکڑوں کاریہ کرتا گاندھی جی کے طرح طرح کے رچناتمک کاموں کو سیکھکر نکلے اور سارے دیش میں خاصکر سارے پرانت میں پھیل گئے اسی آشرم کے اندر بارہ دسمبر سن 1956 کو لگ بھگ دو سپتاہ کی

[illegible] के बाद भाई मंजर अली सोख्ता का शरीर धरती को सौंप दिया गया उस समय श्री लाल बहादुर शास्त्री, हाफ़िज़ मुहम्मद इबराहीम, श्री मुज़फ़्फ़र हुसन, श्रीमती श्यामकुमारी खान, श्रीमती तारा अग्रवाल और कानपुर के और आस पास के बहुत से पुराने और नए देश भक्त और देश सेवक वहां मौजूद थे.

भाई मंजर अली सोख्ता गांधीवाद के बड़े से बड़े विचारकों में से थे वह ऊँचे दरजे के लेखक और ओजस्वी वक्ता थे. कई बरस से वह गाधी जी की 'लाक सेवक समाज' की योजना को पूरा करने की कोशिशों में लगे हुए थे. इस विषय पर उनकी लिखी जो किताबें इस समय मिल सकती हैं उनमें दो ख़ास हैं—(1) महात्मा गांधी की वसीयत और (2) अहिंसात्मक इनक़लाब का रास्ता.

भाई मंजर अली सोख्ता का सारा जीवन जब से उन्होंने होश सम्भाला और ख़ासकर सन 1919 से अब तक हर दरजे की निस्वार्थता, त्याग और तपस्या का जीवन था इस सारे अरसे में उन्होंने अपने शरीर को कभी भी आराम देने की न सोची. उन्हें पुराना बवासीर का मर्ज़ था. शायद पैतृक था सैकड़ों बार देखने मे आया कि उनकी बवासीर से ख़ून टपकता रहता था और वह अपने विचारों के प्रचार की धुन में दसियों मील पैदल निकले चले जाते थे. अपने शरीर के ऊपर इतनी अधिक सख़्ती की मिसाल हमने अपने जीवन मे दूसरी नहीं देखी.

साम्प्रदायिक एकता के भाई मजर अली सोख्ता ज़बरदस्त हामी और जीती जागती मिसाल थे कुछ भोले और नासमझ लोग महात्मा गाधी को इस बारे मे ताने से मौलाना गांधी कहा करते थे इसी तरह कुछ नासमझ और कट्टर भाई हमें और मंजर अली को भी मौलाना सुन्दर अली और पंडित मजर लाल नामों से याद करते रहे हैं इन पचास बरस के अन्दर साम्प्रदायिक मामलो में और अनेक मामलों में हमने भाई मन्जर अली से बहुत कुछ सीखा हम बड़े फ़ख़्र के साथ उन्हें अपने मार्ग दर्शकों मे गिनते हैं आज देश मे बहुत कम लोग होगे जो पचास बरस की इस तरह की लगातार बेलाग देश सेवा और देश के लिए त्याग का गर्व कर सकें

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी के भाई मन्जर अली सोख्ता क़ायम करने वालों में से थे सोसाइटी की गवरनिंग बाडी के वह एक मेम्बर थे "नया हिन्द" के वह सम्पादकों में से थे डाक्टर भगवान दास, जो हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेण्ट रह चुके हैं और जिनके विचार सोसाइटी के आदर्श रहे हैं, अपने 1_-12-56 के पत्र में हमें लिखते हैं —अभी "लीडर' मे देखा कि मन्जर अली सोख्ता का देहान्त हो गया. चौहत्तर वर्ष

بیماری کے بعد بھائی منظر علی سوختہ کا شریر دھرتی کو سونپ دیا گیا۔ اُس سمے شری لال بہادر شاستری، حافظ محمد ابراہیم، شری مظفر حسن، شریمتی شیام کماری خاں، شریمتی تارا اگروال اور کانپور کے اور آس پاس کے بہت سے پرانے اور نئے دیش بھگت اور دیش سیوک وہاں موجود تھے

بھائی منظر علی سوختہ گاندھی واد کے بڑے سے بڑے وچارکوں میں سے تھے۔ وہ اونچے درجے کے لیکھک اور اوجسوی وکتا تھے کئی برس سے وہ گاندھی جی کی 'لوک سیوک سماج' کی یوجنا کو پورا کرنے کی کوششوں میں لگے ہوئے تھے۔ اس وشے پر اُن کی لکھی جو کتابیں اس سمے مل سکتی ہیں اُن میں دو خاص ہیں—(1) مہاتما گاندھی کی وصیت اور (2) اہنسا تمک انقلاب کا راستہ

بھائی منظر علی سوختہ کا سارا جیون جب سے اُنہوں نے ہوش سنبھالا اور خاص کر سن 1919 سے اب تک ہر درجے کی نسوارتھتا تیاگ اور تپسیا کا جیون تھا اس سارے عرصے میں اُنہوں نے اپنے شریر کو کبھی بھی آرام دینے کی نہ سوچی۔ اُنہیں پرانا بواسیر کا مرض تھا شاید پترک تھا سیکڑوں بار دیکھنے میں آیا کہ اُن کی بواسیر سے خون ٹپکتا رہتا تھا اور وہ اپنے وچاروں کے پرچار کی دھن میں دسیوں میل پیدل نکلے چلے جاتے تھے اپنے شریر کے اوپر اتنی ادھک سختی کی مثال ہم نے جیون میں دوسری نہیں دیکھی۔

سامپردایک ایکتا کے بھائی منظر علی سوختہ زبردست حامی اور جیتی جاگتی مثال تھے کچھ بھولے اور ناسمجھ لوگ مہاتما گاندھی کو اس بارے میں طعنے سے مولانا گاندھی کہا کرتے تھے اسی طرح کچھ ناسمجھ اور کٹر بھائی ہمیں اور منظر علی کو بھی مولانا سندر علی اور پنڈت منظر لال ناموں سے یاد کرتے رہے ہیں ان پچاس برس کے اندر سامپردایک معاملوں میں اور انیک معاملوں میں ہم نے بھائی منظر علی سے بہت کچھ سیکھا۔ ہم بڑے فخر کے ساتھ اُنہیں اپنے مارگ درشکوں میں گنتے ہیں آج دیش میں بہت کم لوگ ہونگے جو پچاس برس کی اس طرح کی لگاتار بےلاگ دیش سیوا اور دیش کے لئے تیاگ کا گرو کرسکیں۔

ہندوستانی کلچر سوسائٹی کے بھائی منظر علی سوختہ قائم کرنے والوں میں سے تھے سوسائٹی کی گورننگ باڈی کے وہ ایک ممبر تھے 'نیا ہند' کے وہ سمپادکوں میں سے تھے ڈاکٹر بھگوان داس' جو ہندوستانی کلچر سوسائٹی کی گورننگ باڈی کے پریسیڈینٹ رہ چکے ہیں اور جن کے وچار سوسائٹی کے آدرش رہے ہیں' اپنے 12-12-56 کے پتر میں ہمیں لکھتے ہیں — 'ابھی 'لیڈر' میں دیکھا کہ منظر علی سوختہ کا دیہانت ہو گیا چوہتر ورش

बाबू थी. आपही उनके निकटतम मित्र रहे, अत: आपको ही अपनी सहानुभूति लिखता हूँ. बहुत सज्जन थे, और दुःखी ही रहे. परलोक में, निश्चयेन, उनको इस लोक में किए स्वार्थ त्याग और देश सेवा का उत्तम फल मिलेगा.” पर भाई मन्जर अली के दिल के किसी कोने में भी अपने लिए कभी किसी फल की इच्छा नहीं थी गीता के अर्थों में वह सच्चे निष्काम कर्मयोगी थे.

कुछ बरस हुए श्री अरविन्द घोष ने गीता से हिंसात्मक युद्ध की प्रेरणा का अर्थ निकालते हुए कुछ लेख लिखे थे मन्जर अली सोख्ता ने उन लेखो के जवाब में गीता का अहिंसात्मक अर्थ करते हुए कुछ लेख लिखे अरविन्द बाबू ने मन्जर अली के लेखो का फिर जवाब दिया यह प्रेम भरा और विद्वत्तापूर्ण वाद विवाद कुछ दिनो दोना आर से चलता रहा और उस समय के कुछ पत्रों मे प्रकाशित हुआ उन लेखो से मालुम हाता था कि भाई मन्जर अली साखता गीता के कितने बड़े जानकार और प्रेमी थे इस्लाम पर भी उनके अनेक लेख समय समय पर इस तरह के प्रकाशित हाते रहे हैं जिन से क़ुरान और मुहम्मद साहब पर उनकी श्रद्धा और इस्लाम से उनकी जानकारी का पता चलता है वह सच्चे अर्थो में ‘सर्वधर्म समभावी’ थे

भाई मन्जर अली की मृत्यु के बारे मे महात्मा भगवान दीन जी का जो पत्र मेरे पास आया है उसमे लिखा है —
“सोख्ता साहब चल बसे. वह अल्लाह के प्यारे हुए या उनका विसाल हुआ यह कौन जाने ? जन्नत के बारे मे मेरी वह राय है

हम निकाले गए हैं जन्नत से,
फिर मिले इसका एतबार नहीं.”

हमारी हार्दिक अभिलाषा है कि भाई मन्जर अली सोख्ता का त्याग, उनकी तपस्या, उनकी सादगी उनकी विद्वत्ता और उनकी लगातार बेलाग देश सेवा भारत की आगे की नसलो के लिए मार्ग दर्शन का काम कर सकें.

16-12-56. —सुन्दरलाल

آپو ہی ۔ آپ ہی اُن کے نکٹتم متر رہے‘ اتہ آپ کو ہی اپنی سہانوبھوتی لکھتا ہوں ۔ بہت سجن تھے‘ اور دکھی ہی رہے پرلوک میں‘ نشچیں‘ اُن کو اس لوک میں کئے سوارتھ تیاگ اور دیش سیوا کا اُتم پھل ملیگا ۔“ پر بھائی منظار علی کے دل کے کسی کونے میں بھی اپنے لئے کبھی کسی پھل کی اچھا نہیں تھی گیتا کے ارتھوں میں وہ سچے نشکام کرم یوگی تھے

کچھ برس ہوئے شری اروند گھوش نے گیتا سے ہنسا تمک یدھ کی پریرنا کا ارتھ نکالتے ہوئے کچھ لیکھ لکھے تھے ۔ منظار علی سوختہ نے اُن لیکھوں کے جواب میں گیتا کا اہنسا تمک ارتھ کرتے ہوئے کچھ لیکھ لکھے اروند بابو نے منظار علی کے لیکھوں کا پھر جواب دیا یہ پریم بھرا اور ودوتاپورن واد وواد کچھ دنوں دونوں اور سے چلتا رہا اور اُس سمئے کے کچھ پتروں میں پرکاشت ہوا اُن لیکھوں سے معلوم ہوتا تھا کہ بھائی منظار علی سوختہ گیتا کے کتنے بڑے جانکار اور پریمی ہے ۔ اسلام پر بھی اُن کے انیک لیکھ سمئے سمئے پر اس طرح کے پرکاشت ہوتے رہے ہیں جن سے قرآن اور محمد صاحب پر اُن کی شردھا او اسلام سے اُن کی جانکاری کا پتہ چلتا ہے وہ سچے ارتھوں میں ’سرودھرم سمبھاوی‘ تھے

بھائی منظار علی کی مرتیو کے بارے میں مہاتما بھگوان دین جی کا جو پتر میرے پاس آیا ہے اس میں لکھا ہے —
سوختہ صاحب چل بسے ۔ وہ اللہ کے پیارے ہوئے یا اُن کا وصال ہوا یہ کون جانے ! جنت کے بارے میں میری یہ رائے ہے

”ہم نکالے گئے ہیں جنت سے‘
پھر ملے اس کا اعتبار نہیں ‘

ہماری ہاردک ابھیلاشا ہے کہ بھائی منظار علی سوختہ کا تیاگ‘ اُن کی تپسیا‘ اُن کی سادگی‘ اُن کی ودوتا اور اُن کی لگاتار بےلاگ دیش سیوا بھارت کی آگے کی نسلوں کے لئے مارگ درشن کا کام کرسکیں

16 . 12 56 —سندر لال

भाई मंज़रअली सोख़्ता का मिशन

भाई मंज़रअली सोख्ता का सारा जीवन हिन्दू मुसलिम एकता की कोशिशों में बीता इस एकता की वह एक जीती जागती मिसाल थे. कुछ बरसों से कानपुर शहर में मुहल्ले ,मुहल्ले जाकर और लोगों से मिलकर वह इसके लिये खास कोशिशें कर रहे थे अपनी इन कोशिशों पर उन्होंने कुछ महीने हुए उत्तर प्रदेश की सरकार को एक ख़त लिखा था जिसमें सरकार से अपने काम में मदद

بھائی منظار علی سوختہ کا مشن

بھائی منظار علی سوختہ کا سارا جیون ہندو مسلم ایکتا کی کوششوں میں بیتا ۔ اس ایکتا کی وہ ایک جیتی جاگتی مثال تھے کچھ برسوں سے کانپور شہر میں محلے محلے جاکر او لوگوں سے ملکر وہ اس کے لئے خاص کوششیں کررہے تھے اپنی ان کوششوں پر اُنھوں نے کچھ مہینے ہوئے اُتر پردیش کی سرکار کو ایک خط لکھا تھا جس میں سرکار سے اپنے کام میں مدد

[illegible] और सरकार को कुछ सलाह भी दी थी. इस खत की एक नक़ल भाई म'ज़र अली ने उन दिनों हमें दी थी. वह नक़ल इस समय हमारे सामने है उसका निचोड़ अंग्रेज़ी से अनुवाद करके लगभग भाई म'ज़र अली ही के शब्दों में हम नीचे दे रहे हैं :—

"अमन और एकता का यह काम मैंने पहले मुसलमानों में ही शुरू किया. मैंने एक 'तजवीज़' उर्दू में छपवा कर उनके सामने रखी उस तजवीज़ में मैंने जो कुछ लिखा था वह क़ुरान के आधार पर और क़ुरान के हवाले देकर लिखा था. साथ ही मैंने मुसलमानों से यह अपील की कि वह महात्मा गांधी के उसूलों के अनुसार और उन्हीं के बताए हुए तरीक़ों पर अपने को सगठित करें

"जिन हिन्दू या मुसलमानों ने मेरी तजवीज़' को पढ़ा उन सब को वह बहुत पसन्द आई पर हिन्दू कहते थे कि मुसलमान इसे नहीं मानेंगे, और मुसलमानों का शक था कि हिन्दू इस पर अमल नहीं करेंगे इससे साफ़ पता चल गया कि दोनो के दिमाग एक ही तरह काम कर रहे हैं दोनों की कलचर भी एक है, पर एक दूसरे के अविश्वास और शक ने उस कलचरी एकता को ढक रखा है. मैंने यह भी देखा कि इन दोनों में मुसलमानों का समझाना ज़ियादा मुशकिल है इसलिये मैंने पहले मुसलमानों मे ही काम करना शुरू किया

"मुसलमानों में मैंने सबसे पहले श्री इसहाक़ इलमी और उनके रोज़ाना अख़बार 'सियासत' को अपनी तरफ़ करने की कोशिश की मेरे निन्नानवे फ़ीसदी दोस्त इसे एक असम्भव कार्य समझते थे. इस काम में मुझे सोलह आने तो नहीं पर बहुत बड़ी और उम्मीद से कहीं अधिक सफलता मिली.

रोज़ाना 'सियासत' ने मेरी पूरी 'तजवीज़' को सात कालम और पाँच कालम के ज़ोरदार हेडिंग देकर अपने तीन लगातार अंकों में शाये किया और फिर तीन और अंको में मेरी अपील को छापा. इसके अलावा सियासत मे कई बहुत अच्छे लेख निकले जिनमे महात्मा गांधी के तरीक़ों और उनके कार्यक्रम की ख़ूब तारीफ़ की गई.

"मैं इसहाक़ इलमी साहब से बराबर मिलता रहा. मुझे विश्वास है कि उन्होने मेरे मिशन को अपना लिया है और उनके इस ओर बढ़ने में अगर कुछ ढील मालूम होती है तो उसका कारण केवल यह है कि मुसलमान भाइयो के दिलो और दिमाग़ों की आजकल की हालत को देखते हुए ज़रा संभल कर क़दम उठाने की ज़रूरत है. ग़लत क़दम या जल्दबाज़ी का नतीजा सियासत अख़बार की सब प्रियता पर भी पड़ सकता है. मुझे भरोसा है कि दो तीन महीने के अन्दर ही इसहाक़ इलमी और उनका अख़बार पूरी तरह मेरा साथ

چاهی تهی اور سرکار کو کچھ صلاح بهی دی تهی. اس خط کی ایک نقل بهائی منظر علی نے اُن دنوں همیں دی تهی. وہ نقل اِس سمئے همارے سامنے هے. اُس کا نچوڑ انگریزی سے انواد کرکے لگ بهگ بهائی منظر علی هی کے شبدوں میں هم نیچے دے رهے هیں —

"امن اور ایکتا کا یہ کام میں نے پہلے مسلمانوں میں هی شروع کیا. میں نے ایک 'تجویز' اُردو میں چهپوا کر اُن کے سامنے رکهی. اُس تجویز میں میں نے جو کچھ لکها تها وہ قرآن کے آدهار پر اور قرآن کے حوالے دے کر لکها تها. ساتھ هی میں نے مسلمانوں سے یہ اپیل کی کہ وہ مہاتما گاندهی کے اُصولوں کے انوسار اور انهیں کے بتائے هوئے طریقوں پر اپنے کو سنگٹهت کریں

"جن هندو یا مسلمانوں نے میری 'تجویز' کو پڑها اُن سب کو وہ بہت پسند آئی. پر هندو کہتے تهے کہ مسلمان اسے نہیں مانیں گے' اور مسلمانوں کو شک تها کہ هندو اس پر عمل نہیں کریں گے. اس سے صاف پتہ چل گیا کہ دونوں کے دماغ ایک هی طرح کام کر رهے هیں دونوں کی کلچر بهی ایک هے' پر ایک دوسرے کے اوشواس اور شک نے اُس کلچری ایکتا کو ڈهک رکها هے. میں نے یہ بهی دیکها کہ اِن دونوں میں مسلمانوں کو سمجهانا زیادہ مشکل هے. اس لئے میں نے پہلے مسلمانوں میں هی کام کرنا شروع کیا

"مسلمانوں میں میں نے سب سے پہلے شری اسحاق علمی اور اُن کے روزانہ اخبار 'سیاست' کو اپنی طرف کرنے کی کوشش کی. میرے ننانوے فیصدی دوست اسے ایک اسمبهو کاریہ سمجهتے تهے. اس کام میں مجهے سولہ آنے تو نہیں پر بہت بڑی اور اُمید سے کہیں ادهک سپهلتا ملی

"روزانہ 'سیاست' نے میری پوری 'تجویز' کو سات کالم اور پانچ کالم کے زوردار هیڈنگ دے کر اپنے تین لگاتار انکوں میں شائع کیا اور پهر تین اور انکوں میں میری اپیل کو چهاپا. اس کے علاوہ سیاست میں کئی بہت اچهے لیکھ نکلے جن میں مہاتما گاندهی کے طریقوں اور اُن کے کاریہ کرم کی خوب تعریف کی گئی.

"میں اسحاق علمی صاحب سے برابر ملتا رها. مجهے وشواس هے کہ انهوں نے میرے مشن کو اپنا لیا هے اور اُن کے اس اور بڑهنے میں اگر کچھ ڈهیل معلوم هوتی هے تو اُس کا کارن کیول یہ هے کہ مسلمان بهائیوں کے دلوں اور دماغوں کی آجکل کی حالت کو دیکهتے هوئے ذرا سنبهل کر قدم اُٹهانے کی ضرورت هے. غلط قدم یا جلد بازی کا نتیجہ سیاست اخبار کی سروپریتا پر بهی پڑ سکتا هے. مجهے بهروسہ هے کہ دو تین مہینے کے اندر شری اسحاق علمی اور اُن کا اخبار پوری طرح میرا ساتھ

हैंगे. अगर ऐसा हो जावे तो कोई नया अखबार निकालने और उसपर रुपया खर्च करने से हमें इतना लाभ नहीं हो सकता जितना इससे. सियासत के अन्दर एक लेख 'फिरक़ा-परस्ती और उसका इलाज' शीर्षक से निकला जिसके विचार और भाव बिलकुल वही हैं जो मेरे. यह बात कुछ दिन पहले असम्भव समझी जाती थी.

"इसके अलावा कानपुर शहर की कई बड़ी बड़ी पारटियों के तीस से ऊपर बाअसर मुसलिम नेताओं ने 'सियासत' में अपने दस्तखतों से एक खत छपवाया जिसमें उन्होने मेरी 'तजवीज़' और मेरे अपील की लगभग हर बात को मंजूर कर लिया और मुझसे यह प्रार्थना की कि मैं मुसलमानों की एक मीटिंग करके अपनी एकता की इस तहरीक को आगे बढ़ाऊँ.

"लगभग पच्चीस आदमियों के दस्तखत से एक दावतनामा निकला जिसमें सब पारटियों के बड़े बड़े नेताओं की एक मुक़ामी कनवेनशन बुलाई गई कि वह सारी बातो पर विचार करके मेरी इस तहरीक को रूप दे. अगर ये कनवेनशन ठीक हो जाय तो यह इस तहरीक की बड़ी अच्छी शुरूआत होगी.

"इस सब के अलावा अपने काम की दुरुस्ती को परखने के लिये मैंने कानपुर शहर के कुछ साम्प्रदायिक मामलो को हाथ में लिया. मछली बाजार की मसजिद का मामला दो बरस से चला आ रहा था. शहर की फ़िज़ा को उसने बहुत गन्दा कर रखा था. उसे निबटाने के लिये मैंने अपनी सेवाएँ पेश की. मसजिद के मुतवल्लियो ने मेरी सेवाओं का स्वागत किया. सर्राफ़ा कमेटी के कुछ बड़े बड़े मेम्बरो ने और कुछ और प्रभावशाली हिन्दू नेताओं ने भी मुझे हिम्मत दिलाई. समझौते की जो शरतें मैंने दोनों को सुझाई उन्हे आम तौर पर सबने पसन्द किया और अन्त में शहर के कलेक्टर ने बड़ी योग्यता के साथ उनको अमल मे लाने की कोशिश की. मैंने अपनी तजवीज़ में यह सुझाया था कि फिरक़ेवाराना मामलों के निबटाने के लिये हिन्दू मुसलमानों की एक मिली जुली कमेटी होनी चाहिये. दोनो तरफ़ के नेताओ और कलेक्टर तीनो ने इसे बहुत पसन्द किया. कलेक्टर ने मेरे नाम अपने आखिरी खत में मुझे यह विश्वास दिलाया है कि वह इस तरह की मिली जुली कमेटी क़ायम करने की पूरी कोशिश कर रहे हैं.

"इस तरह की मिली जुली कमेटी की तजवीज़ को सब का पसन्द करना ही यह साबित करता है कि फ़िरक़ेवाराना फ़िज़ा बहुत कुछ बदल चुकी है और थोड़ी सी हिम्मत, सचाई और लगन के साथ उसे ठीक किया जा सकता है.

"हमारा पिछला तजरबा यह बताता है कि इस तरह की मिली जुली अमन कमेटियाँ जब कभी ज़रूरत पर बनती

دیںگے۔ اگر ایسا ھو جاوے تو کوئی نیا اخبار نکالنے اور اُس پر روپیہ خرچ کرنے سے ھمیں اِتنا لابھ نہیں ھوسکتا جتنا اِس سے۔ سیاست کے اندر ایک لیکھ 'فرقہ‌پرستی اور اُس کا علاج' شیرشک سے نکلا جس کے وچار اور بھاو بالکل وھی ھیں جو میرے۔ یہ بات کچھ دن پہلے اسمبھو سمجھی جاتی تھی۔

"اِس کے علاوہ کانپور شہر کی کئی بڑی بڑی پارٹیوں کے تیس سے اوپر بااثر مسلم نیتاؤں نے 'سیاست' میں اپنے دستخطوں سے ایک خط چھپوایا جس میں اُنھوں نے میری 'تجویز' اور میری اپیل کی لگ بھگ ھر بات کو منظور کرلیا اور مجھ‌سے یہ پرارتھنا کی کہ میں مسلمانوں کی ایک میٹنگ کرکے اپنی ایکتا کی اِس تحریک کو آگے بڑھاؤں۔

"لگ بھگ پچیس آدمیوں کے دستخط سے ایک دعوت نامہ نکلا جس میں سب پارٹیوں کے بڑے بڑے نیتاؤں کی ایک مقامی کنوینشن بلائی گئی کہ وہ ساری باتوں پر وچار کرکے میری اِس تحریک کو روپ دے۔ اگر یہ کنوینشن ٹھیک ھوجائے تو یہ اِس تحریک کی بڑی اچھی شروعات ھوگی۔

"اِس سب کے علاوہ اپنے کام کی درستی کو پرکھنے کے لئے میں نے کانپور شہر کے کچھ سامپردایک معاملوں کو ھاتھ میں لیا۔ مچھلی بازار کی مسجد کا معاملہ دو برس سے چلا آرھا تھا۔ شہر کی فضا کو اُس نے بہت گندہ کر رکھا تھا۔ اُسے نپٹانے کے لئے میں نے اپنی سیوائیں پیش کیں۔ مسجد کے متولیوں نے میری سیواؤں کا سواگت کیا۔ صرافہ کمیٹی کے کچھ بڑے بڑے ممبروں نے اور کچھ اور پربھاوشالی ھندو نیتاؤں نے بھی مجھے ھمت دلائی۔ سمجھوتے کی جو شرطیں میں نے دونوں کو سُجھائیں اُنھیں عام‌طور پر سب نے پسند کیا اور انت میں شہر کے کلکٹر نے بڑی یوگیتا کے ساتھ اُن کو عمل میں لانے کی کوشش کی۔ میں نے اپنی تجویز میں یہ سُجھایا تھا کہ فرقہ‌وارانہ معاملوں کو نپٹانے کے لئے ھندو مسلمانوں کی ایک ملی جلی کمیٹی ھونی چاھئے۔ دونوں طرف کے نیتاؤں اور کلکٹر تینوں نے اِسے بہت پسند کیا۔ کلکٹر نے میرے نام اپنے آخری خط میں مجھے یہ وشواس دلایا ھے کہ وہ اِس طرح کی ملی جلی کمیٹی قایم کرنے کی پوری کوشش کررھے ھیں۔

"اِس طرح کی ملی جلی کمیٹی کی تجویز کو سب کا پسند کرنا ھی یہ ثابت کرتا ھے کہ فرقہ‌وارانہ فضا بہت کچھ بدل چکی ھے اور تھوڑی سی ھمت، سچائی اور لگن کے ساتھ اُسے ٹھیک کیا جاسکتا ھے۔

"ھمارا پچھلا تجربہ یہ بتاتا ھے کہ اِس طرح کی ملی جلی امن کمیٹیاں جب کبھی ضرورت پڑنے پر بنتی

है तो वह केवल उस खास जरूरत के समय तक थोड़ा बहुत काम करती हैं. फिर उनके लिये कोई काम नहीं रह जाता और कुदरती तौर पर वह निकम्मी होकर खतम हो जाती है. अब मैं चाहता हूँ कि इस तरह की अमन कमेटियों को बराबर जिन्दा रखा जाए इसका उपाय यह है कि साम्प्रदायिक मेल मिलाप के साथ साथ कुछ दूसरे रचनात्मक काम भी इन कमेटियों को सौंप दिए जावें, मसलन (1) अपने इलाके में भ्रष्टाचार यानी रिशवतखोरी और बेईमानी को मिटाना, और (2) उस इलाके में अमन, शिस्त और सुशासन को मजबूत करना इसके लिये जरूरी है कि समाज सेवा के कुछ ऐसे काम उन कमेटियों के सिपुर्द किये जायें जिनके जरिये कमेटी के मेम्बरो और काम करने वालों का उस इलाके की आम जनता के साथ सम्पर्क बराबर बना रहे इस तरह की कमेटियाँ और इस तरह का काम मुहल्लेवार ही होना चाहिए, यानी हर मुहल्ले की अपने मुहल्ले के काम के लिये एक मिली जुली कमेटी हो कार्य का जारी रखना जरा मुशकिल जरूर है लेकिन जरा सी लगन के साथ अच्छी तरह चल सकता है

"मैंने अपने ढंग से एक और कठिन परिस्थिति को सुलझाने की कोशिश की और मुझे खासी कामयाबी मिली बनारस वालो का डेलीगेशन सरकार से मिलने वाला था उससे कुछ बदगुमानी पैदा हुई मैंने दोना पक्षो के लोगो से मिलकर एक बयान निकलवाया जिससे शक और तनाव के कम होने में बहुत बड़ी मदद मिली आजकल हमे सब से बड़ी जरूरत इस बात की है कि ऐसी हालतो मे कुछ लोग दोनों तरफ के लोगो से मिलें और फिर उन दोनो को एक जगह लाने की कोशिश करें मेरा सुझाव है कि इस तरह के लोग और इस तरह की कमेटियाँ होनी चाहियें जो ऐसे मौक़ों पर यह काम दे सकें

"पायनियर अखबार मे जो एक इश्तहार निकल गया था जिसपर इतना शोर मचा उसके सबन्ध मे मुझे अपने तरीक़े से काम करने मे और भी अधिक सफलता मिली खुशकिस्मती से श्री इसहाक़ इलमी और श्री सम्पूर्णानन्द दोनों से मेरे अच्छे सबन्ध थे. इसलिये मैं डेपूटेशन मे ठीक तरह के लोगो का भी चुनवा सका, उनकी माँगों का भी मुनासिब रूप दे सका और सम्पूर्णानन्द जी को भी तैयार कर सका कि वह उनसे प्रेम और सहानुभूति के साथ मिल लें उस डेपूटेशन ने जो बयान निकाला, उस बयान का अपनाने के लिये इलाहाबाद के जलसे ने जो तजवीज़ पास की, श्री इसहाक़ इलमी ने उस मौक़े पर जो तक़रीर की और 'सियासत' अखबार में इसके सम्बन्ध में जो खास सम्पादकीय लेख निकला, इन सबसे यह अच्छी तरह साबित है कि शान्ति, बरदाश्त और मेल मिलाप के तरीक़ो से बड़ी से बड़ी कठिनाई अच्छी तरह हल की जा सकती है.

ہیں تو وہ کیول اُس خاص ضرورت کے سمئے تک تھوڑا بہت کام کرتی ہیں۔ پھر اُن کے لئے کوئی کام نہیں رہ جاتا اور قدرتی طور پر وہ نکمی ہوکر ختم ہوجاتی ہیں۔ اب میں چاہتا ہوں کہ اس طرح کی اَمن کمیٹیوں کو برابر زندہ رکھا جائے۔ اس کا اُپائے یہ ہے کہ سامپردایک میل ملاپ کے ساتھ ساتھ کچھ دوسرے رچنانمک کام بھی اِن کمیٹیوں کو سونپ دئے جاویں، مثلاً (1) اپنے علاقے میں بھرشٹاچار یعنی رشوت خوری اور بےایمانی کو مٹانا، اور (2) اُس علاقے میں اَمن، شسمت او سوشاسن کو مضبوط کرنا اس کے لئے ضروری ہے کہ سماج سیوا کے کچھ ایسے کام اُن کمیٹیوں کے سپرد کئے جاویں جن کے ذریعے کمیٹی کے ممبروں اور کام کرنے والوں کا اُس علاقے کی عام جنتا کے ساتھ سمپرک برابر بنا رہے۔ اس طرح کی کمیٹیوں اور اس طرح کا کام محلےوار ہونا چاہئے، یعنی ہر محلے کی اپنے محلے کے کام کے لئے ایک ملی جلی کمیٹی ہو کاریہ کا جاری رکھنا ذرا مشکل ضرور ہے۔ لیکن ذراسی لگن کے ساتھ اچھی طرح چل سکتا ہے

میں نے اپنے ڈھنگ سے ایک اور کٹھن پرستھتی کو سلجھانے کی کوشش کی اور مجھے خاصی کامیابی ملی۔ بنارس والوں کا ڈیلیگیشن سرکار سے ملنے والا تھا اُس سے کچھ خاص بدگمانی پیدا ہوئی میں نے دونوں پکشوں کے لوگوں سے ملکر ایک بیان نکلوایا جس سے شک اور تناؤ کے کم ہونے میں بہت بڑی مدد ملی۔ آجکل ہمیں سب سے بڑی ضرورت اس بات کی ہے کہ ایسی حالتوں میں کچھ لوگ دونوں طرف کے لوگوں سے ملیں اور پھر اُن دونوں کو ایک جگہ لانے کی کوشش کریں میرا سجھاؤ ہے کہ اس طرح کے لوگ اور اس طرح کی کمیٹیاں ہونی چاہئیں جو ایسے موقعوں پر یہ کام دے سکیں

'پائنیر' اخبار میں جو ایک اشتہار نکل گیا تھا جس پر اتنا شور مچا اُس کے سمبندھ میں مجھے اپنے طریقے سے کام کرنے میں اور بھی ادھک سپھلتا ملی خوش قسمتی سے شری اسحاق علمی اور شری سمپورنانند دونوں سے میرے اچھے سمبندھ تھے اس لئے میں ڈیپوٹیشن میں ٹھیک طرح کے لوگوں کو بھی چنوا سکا اُن کی مانگوں کو بھی مناسب روپ دے سکا اور سمپورنانند جی کو بھی تیار کرسکا کہ وہ اُن سے پریم اور سہانبھوتی کے ساتھ مل لیں۔ اُس ڈیپوٹیشن نے جو بیان نکالا اُس بیان کو اپنانے کے لئے الٰہ آباد کے جلسے نے جو تجویز پاس کی، شری اسحاق علمی نے اُس موقع پر جو تقریر کی اور 'سیاست' اخبار میں اس کے سمبندھ میں جو خاص سمپادکیہ لیکھ نکلا، اِن سب سے یہ اچھی طرح ثابت ہے کہ شانتی، برداشت اور میل ملاپ کے طریقوں سے بڑی سے بڑی کٹھنائی اچھی طرح حل کی جاسکتی ہے۔

"यह बात भी ध्यान रखने की है कि यह सब केवल मेरी तुच्छ कोशिशों का नतीजा है. मैं एक अकेला आदमी हूँ. न मेरा कोई दफ्तर है और न मेरे पास काम करने के कोई साधन. मेरी इन छोटी छोटी कामयाबियों से साबित है कि देश का वायुमंडल इस तरह के मेल मिलाप की तहरीक के लिये बिलकुल तैयार है, और साम्प्रदायिक मामलों में यदि हम गांधी जी के तरीक़ों से काम लें तो हम इस सारे वायु मंडल को बदल सकते हैं. इस काम में सब से बड़ी कठिनाई केवल यही है कि हमे गाँधी जी के तरीक़ो में विश्वास नहीं रहा. हमें उनकी व्यावहारिकता में सन्देह है. ऊपर की घटनाओं को सामने रखकर मैं केवल इतना कहना चाहता हूँ कि हमें गान्धी जी के तरीक़ों को पूरी तरह आज़माना चाहिये, और हमदर्दी और खुले दिल के साथ आज़माना चाहिये. मुझे विश्वास है कि अगर हमारी सरकार को भी इन तरीक़ो में विश्वास हो और वह हमें पूरी तरह मदद दे तो कामयाबी निश्चित है. इतना ही नहीं, सरकार की मदद इस काम के लिये जरूरी भी है. सरकार की मदद से इस तरह की कोशिशें बहुत जल्दी सफल हो सकती हैं. इसीलिये मैं यह पत्र लिख रहा हूँ.

"मैं यह भी कह देना चाहता हूँ कि इसमे केवल ज़बानी बातों और वादो से काम नहीं चल सकता. ज़बानी बातें मेरे साथ बहुत हो चुकी हैं मेरी उम्र अब काफ़ी हो चुकी. मुझे अब इसका हक़ है कि सरकार मुझे इस काम मे अमली मदद दे. कम से कम मैं यह जान लेना चाहता हूँ कि इस साम्प्रदायिक मेल मिलाप के काम मे सरकार मुझे मदद देने को तैयार है या नहीं और है तो किस तरह और किस हद तक.

"इस पत्र को बन्द करने से पहले मैं इस काम के एक और पहलू की तरफ़ भी ध्यान दिलाना चाहता हूँ. मुझे एक बात का डर था और वही हुआ. कुछ मौलानाओ ने मेरा विरोध करना शुरू किया. कानपुर मे इन लोगों के तीन साप्ताहिक पत्र निकलते हैं. इन तीनो पत्रो मे मेरे काम को इसलाम के ख़िलाफ़, दीन के ख़िलाफ़ और अल्लाह से बग़ावत बताया गया. इन लोगो का यह भी कहना है कि मैं मुसलमानों के ख़िलाफ़ सरकार से मिला हुआ हूँ और मुसलमानों को केवल कांग्रेस के अन्दर लाना चाहता हूँ. जमीयतुलउलमा के जनरल सेकरेटरी और साप्ताहिक 'रहबर' के एडिटर श्री हशमतुल्लाह ने साफ़ साफ़ यह इलज़ाम मेरे ऊपर लगाया. जिन मुसलमान नेताओं ने अपने दस्तख़त से 'सियासत' अख़बार के अन्दर मेरी तहरीक का 'स्वागत किया था उन पर भी इन तीनों अख़बारों ने ज़बरदस्त हमले किये.

"इस बात का ज़िकर मैंने जान बूझ कर किया है. मेरा ख़याल है कि अगर सरकार सच मुच इस देश की मुसलिम

"یہ بات بھی دھیان رکھنے کی ہے کہ یہ سب کیول میری تچھ کوششوں کا نتیجہ ہے. میں ایک اکیلا آدمی ہوں. نہ میرا کوئی دفتر ہے اور نہ میرے پاس کام کرنے کے کوئی سادھن. میری ان چھوٹی چھوٹی کامیابیوں سے ثابت ہے کہ دیش کا وایومنڈل اس طرح کے میل ملاپ کی تحریک کے لئے بالکل تیار ہے، اور سامپردایک معاملوں میں یدی ہم گاندھی جی کے طریقوں سے کام لیں تو ہم اِس سارے وایومنڈل کو بدل سکتے ہیں. اس کام میں سب سے بڑی کٹھنائی کیول یہی ہے کہ ہمیں گاندھی جی کے طریقوں میں وشواس نہیں رہا. ہمیں اُن کی ویوہارِکتا میں سندیہ ہے. اُوپر کی گھٹناؤں کو سامنے رکھکر میں کیول اتنا کہنا چاہتا ہوں کہ ہمیں گاندھی جی کے طریقوں کو پوری طرح آزمانا چاہئیے. اور ہمدردی اور کھلے دل کے ساتھ آزمانا چاہئیے. مجھے وشواس ہے کہ اگر ہماری سرکار کو بھی ان طریقوں میں وشواس ہو اور وہ ہمیں پوری طرح مدد دے تو کامیابی نشچت ہے. اتنا ہی نہیں، سرکار کی مدد اس کام کے لئے ضروری بھی ہے. سرکار کی مدد سے اِس طرح کی کوششیں بہت جلدی سپھل ہوسکتی ہیں. اِسی لئے میں یہ پتر لکھ رہا ہوں.

"میں یہ بھی کہہ دینا چاہتا ہوں کہ اِس میں کیول زبانی باتوں اور وعدوں سے کام نہیں چل سکتا. زبانی باتیں میرے ساتھ بہت ہوچکی ہیں. میری عمر اب کافی ہوچکی. مجھے اب اس کا حق ہے کہ سرکار مجھے اس کام میں عملی مدد دے. کم سے کم میں یہ جان لینا چاہتا ہوں کہ اس سامپردایک میل ملاپ کے کام میں سرکار مجھے مدد دینے کو تیار ہے یا نہیں اور ہے تو کس طرح اور کس حد تک.

"اس پتر کو بند کرنے سے پہلے میں اِس کام کے ایک اور پہلو کی طرف بھی دھیان دلانا چاہتا ہوں. مجھے ایک بات کا ڈر تھا اور وہی ہوا. کچھ مولاناؤں نے میرا ورودھ کرنا شروع کیا. کانپور میں ان لوگوں کے تین ساپتاہک پتر نکلتے ہیں. ان تینوں پتروں میں میرے کام کو اسلام کے خلاف، دین کے خلاف اور اللہ سے بغاوت بتایا گیا. ان لوگوں کا یہ بھی کہنا ہے کہ میں مسلمانوں کے خلاف سرکار سے ملا ہوا ہوں اور مسلمانوں کو کیول کانگریس کے اندر لانا چاہتا ہوں. جمیعت العلما کے جنرل سیکریٹری اور ساپتاہک 'رہبر' کے ایڈیٹر حشمت اللہ نے صاف صاف یہ الزام میرے اُوپر لگایا. جن مسلمان نیتاؤں نے اپنے دستخط سے 'سیاست' اخبار کے اندر میری تحریک کا سواگت کیا تھا اُن پر بھی اِن تینوں اخباروں نے زبردست حملے کئے.

"اِس بات کا ذکر میں نے جان بوجھکر کیا ہے. میرا خیال ہے کہ اگر سرکار سچ مچ اِس دیش کی مسلم

समस्या को हल करना चाहती है और ठीक ठीक हल करना चाहती है तो उसे अपनी पालिसी और अपने ढंग दोनों को बुनियादन बदलना होगा. आजकल सरकार मुसलमानों के वोट हासिल करने के लिये अधिकतर जमीयतुलउलमा और नेशनलिस्ट मुसलमानों का सहारा ढूँढ़ती है. लेकिन बद-क़िस्मती से वह दोनों गिरोह एक बड़ी कठिन दुविधा में फंसे हुए हैं. यूँ तो एक तरह का असन्तोष और कड़वापन कम या अधिक आजकल सब लोगों मे मौजूद है, लेकिन मुसलमान चूँकि देश के अन्दर थोड़ी तादाद में हैं उनके अन्दर यह असन्तोष और कड़वापन भी और अधिक चमक उठता है. मुसलिम जनता बिलकुल यह समझने लगती है कि उसका कोई मुआविन या मददगार है ही नहीं. बदक़िस्मती से वह हिन्दू साम्प्रदायिकता को अपनी सारी आजकल की शिकायतों और कठिनाइयों का कारण समझ बैठी है, और सरकार को यह समझती है कि वह जाने या अनजाने हिन्दू साम्प्रदायिकता के हाथो में खेलती है. नतीजा यह है कि मुसलिम जनता सरकार की तरफ़ से भी बदज़न है. दूसरी तरफ़ वह उन मुसलमानो से भी बदज़न है जो सरकार के विश्वास पात्र हैं या जिन्हें सरकार बढ़ावा देती रहती है नतीजा यह है कि जो मुसलमान सरकार के मददगार हैं वे भी मुसलिम जनता को अपने साथ लेने के लिये सरकार की नुक्ताचीनी करने लगते हैं और बराबर इस बात का साबित करने की फ़िक्र मे रहते है कि वह सरकार के असर में नहीं हैं. उन की इन कोशिशो से कोइ लाभ नहीं होता बल्कि जनता का शक और गहरा होता चला जाता है इस तरह मुसलिम जनता और इस तरह के मुसलमानो के बीच खाई बढ़ती जाती है, और उसी के साथ साथ मुसलमानो मे सरकार की तरफ़ से बदगुमानी भी बढ़ती जाती है. इस रविश को अगर समय से न रोका गया तो इस खाइ को पाटना मुशकिल हो जायगा. मुझे विश्वास है कि इस मामले मे आधे दिल से किया हुआ कोइ काम या ऊपर से लीपा पोती कोई फ़ायदा नहीं दे सकती मै इस सवाल की जड़ मे जाना चाहता हूँ. साम्प्रदायिकता याना फ़िरकावारियत किसी भी रूप रंग मे हो बिलकुल मिटनी चाहिये, और उसकी जगह सैकुलरइज़्म याना धर्म निर्पेक्षता यानो वह असली मज़हबीयत जिसका मतलब तमाम इनसानो मे भाई चारा क़ायम करना है और सब को भाई भाई की तरह समझना है क़ायम होनी चाहिये. यही मेरे काम का बुनियादी उसूल हैं. मैं इनसानी इत्तहाद यानी मानव एकता का मानने वाला हूँ. मुझे विश्वास है कि इस तरह की तहरीक के लिये फ़िज़ा बिलकुल तैयार है. समय की यही मांग है. ज़माना इसके लिये प्यासा है. मैंने जो कुछ थोड़ी बहुत नाचीज़ कोशिशें की हैं और इन दो साल मे जो कुछ तजरबा किया है उससे मुझे यक़ीन है कि इस तरह की तहरीक इस ज़माने

سمسیا کو حل کرنا چاہتی ہے اور ٹھیک ٹھیک حل کرنا چاہتی ہے تو اُسے اپنی پالیسی اور اپنے ڈھنگ دونوں کو بنیاداً بدلنا ہوگا ۔ آجکل سرکار مسلمانوں کے ووٹ حاصل کرنے کے لئے ادھکتر جمیعت العلما اور نیشنلسٹ مسلمانوں کا سہارا ڈھونڈھتی ہے ۔ لیکن بدقسمتی سے یہ دونوں گروہ ایک بڑی کٹھن دویدھا میں پھنسے ہوئے ہیں ۔ یوں تو ایک طرح کا اسنتوش اور کڑواپن کم یا ادھک آجکل سب لوگوں میں موجود ہے، لیکن مسلمان چونکہ دیش کے اندر تھوڑی تعداد میں ہیں ان کے اندر یہ اسنتوش اور کڑواپن اور بھی ادھک چمک اُٹھتا ہے ۔ مسلم جنتا بالکل یہ سمجھنے لگتی ہے کہ اُس کا کوئی معاون یا مددگار ہے ہی نہیں ۔ بدقسمتی سے وہ ہندو سامپردایکتا کو اپنی ساری آجکل کی شکایتوں اور کٹھنائیوں کا کارن سمجھ بیٹھی ہے، اور سرکار کو یہ سمجھتی ہے کہ وہ جانے یا انجانے ہندو سامپردایکتا کے ہاتھوں میں کھیلتی ہے ۔ نتیجہ یہ ہے کہ مسلم جنتا سرکار کی طرف سے بھی بدظن ہے ۔ دوسری طرف وہ اُن مسلمانوں سے بھی بدظن ہے جو سرکار کے وشواس پاتر ہیں یا جنہیں سرکار بڑھاوا دیتی رہتی ہے ۔ نتیجہ یہ ہے کہ جو مسلمان سرکار کے مددگار ہیں وے بھی مسلم جنتا کو اپنے ساتھ لینے کے لئے سرکار کی نقطہ چینی کرنے لگتے ہیں اور برابر اِس بات کو ثابت کرنے کی فکر میں رہتے ہیں کہ وہ سرکار کے اثر میں نہیں ہیں ۔ اُن کی اِن کوششوں سے کوئی لابھ نہیں ہوتا بلکہ جنتا کا شک اور گہرا ہوتا چلا جاتا ہے ۔ اِس طرح مسلم جنتا اور اِس طرح کے مسلمانوں کے بیچ کھائی بڑھتی جاتی ہے، اور اسی کے ساتھ ساتھ مسلمانوں میں سرکار کی طرف سے بدگمانی بھی بڑھتی چلی جاتی ہے ۔ اِس روش کو اگر سمے سے نہ روکا گیا تو اِس کھائی کو پاٹنا مشکل ہوجائیگا ۔ مجھے وشواس ہے کہ اِس معاملے میں آدھے دل سے کیا ہوا کوئی کام یا اوپر سے لیپا پوتی کوئی فایدہ نہیں دے سکتی ۔ میں اس سوال کی جڑ میں جانا چاہتا ہوں ۔ سامپردایکتا یعنی فرقہ واریت کسی بھی روپ رنگ میں ہو بالکل مٹنی چاہئے، اور اُس کی جگہ سیکولرازم یعنی دھرم نرپیکشتا یعنی وہ اصلی مذہبیت جس کا مطلب تمام انسانوں میں بھائی چارا قایم کرنا ہے اور سب کو بھائی بھائی کی طرح سمجھنا ہے قایم ہونی چاہئے ۔ یہی میرے کام کا بنیادی اصول ہے ۔ میں انسانی اتحاد یعنی مانو ایکتا کا ماننیوالا ہوں ۔ مجھے وشواس ہے کہ اس طرح کی تحریک کے لئے فضا بالکل تیار ہے ۔ سمے کی یہی مانگ ہے ۔ زمانہ اس کے لئے پیاسا ہے ۔ میں نے جو کچھ تھوڑی بہت ناچیز کوششیں کی ہیں اور ان دو سال میں جو کچھ تجربہ کیا ہے اُس سے مجھے یقین ہے کہ اِس طرح کی تحریک اِس زمانے

की जरूरत और जमाने की हवा के अनुकूल है और उसे अगर ठीक ठीक चलाया जावे तो कामयाब हुए बग़ैर नहीं रह सकती. सरकार अगर सचमुच सच्चे दिल से सैकुलरइज़्म यानी धर्म निर्पेक्षता और गांधी जी के सर्व-धर्म-समभाव को मानने वाली है तो उसे इस बारे में अपनी पालिसी को दुहराना और उसे अधिक विवेकपूर्ण रूप देना होगा. इस तरह की संस्थाओं का सहारा लेने से काम नहीं चलेगा जो धार्मिक प्रथकता में डूबी हुई हैं, क्योंकि यह प्रथकता ही असल में सबसे अधिक ख़तरनाक क़िस्म की फ़िरक़ेवारियत है.

"सरकार को चाहिये कि वह खुले तौर पर मेरी जैसी तहरीकों का साथ दे और उन्हें हर तरह मदद दे. अकसरीयत और अक़लीयत यानी बहुमत और अल्पमत का भेद भाव और उनके अलग अलग अधिकारो की कल्पना ही बुराई से भरी हुई है. इस कल्पना को मिटाना चाहिये और सारी जनता के अधिकारो का चाहे वह किसी भी धर्म की मानने वाली हो एक देखना और एक समझना चाहिये. हमें यह समझना चाहिये कि सारी जनता का हित एक है. अपने राजकाजी और माली अधिकारो को प्राप्त करने के लिये सबको मिलकर कोशिश करनी चाहिये. सरकार को चाहिये कि जनता को इस काम मे मदद और बढ़ावा दे. इस मतलब को पूरा करने के लिये उसी तरह के संगठन और सभाएं बननी चाहियें और उन्हें मदद मिलनी चाहिये, और जो संस्थाएं या सगठन इसके ख़िलाफ़ रास्ते पर चलते हैं उनपर से सरकार को अपनी मदद का हाथ खींच लेना चाहिये.

"इस तरह की कोशिश को कामयाब करने के लिये मुसलमानों की तरफ़ सरकार को अपना सारा रुख़ बदल देना चाहिये. सरकार और सरकारी लोगो को यह शक अपने दिलो से निकाल कर बाहर कर देना चाहिये कि देश के मुसलमान पाकिस्तानी हैं, या पैन-इसलामी हैं यानी सब मुसलमानों का कोई अलग सघ क़ायम करना चाहते हैं. सरकार को यह बात माननी चाहिये कि इस देश का हर मुसलमान इस देश को अपना प्यारा वतन बनाए रखना चाहता है और देश की सरकार का ख़ैरख़ाह और वफ़ादार होकर रहना चाहता है. यह ठीक है कि सरकार के पास शक करने के कारण हैं. पर मुसलमानो के पास भी शक करने के कारण हैं. सरकार को यह समझना चाहिये कि ठीक या ना-ठीक मुसलमानो को अपने आस पास के वायुमन्डल पर गहरी बेएतबारी है और भविष्य में मुसलमानों की यहां क्या हालत होगी इस बारे मे शक है क़ुदरती तौर पर मुसलमानों के सारे कामों और उनके बरताव पर इस शक और डर का बुरा असर पड़ता है. लेकिन मुझे पूरा

کی ضرورت اور زمانے کی ہوا کے انوکول ہے اور اُسے اگر ٹھیک ٹھیک چلایا جاوے تو کامیاب ہوئے بغیر نہیں رہ سکتی ۔ سرکار اگر سچ مچ سچے دل سے سیکولرازم یعنی دھرم نرپیکشتا اور گاندھی جی کے سرو - دھرم - سمبھاؤ کو ماننے والی ہے تو اُسے اِس بارے میں اپنی پالیسی کو دھرانا اور اُسے آدھک وویک پورن روپ دینا ہوگا ۔ اِس طرح کی سنستھاؤں کا سہارا لینے سے کام نہیں چلیگا جو دھارمک پرتھکتا میں ڈوبی ہوئی ہیں' کیونکہ یہ پرتھکتا ہی اصل میں سب سے ادھک خطرناک قسم کی فرقہ واریت ہے ۔

سرکار کو چاہئے کہ وہ کھلے طور پر میری جیسی تحریکوں کا ساتھ دے اور اُنہیں ہر طرح مدد دے ۔ اکثریت اور اقلیت یعنی بہومت اور الپمت کا بھید بھاؤ اور اُن کے الگ الگ ادھیکاروں کی کلپنا ہی برائی سے بھری ہوئی ہے ۔ اِس کلپنا کو مٹانا چاہئے اور ساری جنتا کے ادھیکاروں کو چاہے وہ کسی بھی دھرم کی ماننے والی ہو ایک دیکھنا اور ایک سمجھنا چاہئے ۔ ہمیں یہ سمجھنا چاہئے کہ ساری جنتا کا ہت ایک ہے۔ اپنے راجکاجی اور مالی ادھیکاروں کو پراپت کرنے کے لئے سب کو ملکر کوشش کرنی چاہئے ۔ سرکار کو چاہئے کہ جنتا کو اِس کام میں مدد اور بڑھاوا دے ۔ اِس مطلب کو پورا کرنے کے لئے اُسی طرح کے سنگٹھن اور سبھائیں بننی چاہئیں اور اُنہیں مدد ملنی چاہئے' اور جو سنستھائیں یا سنگٹھن اس کے خلاف راستے پر چلتے ہیں اُن پر سے سرکار کو اپنی مدد کا ہاتھ کھینچ لینا چاہئے ۔

"اِس طرح کی کوشش کو کامیاب کرنے کے لئے مسلمانوں کی طرف سرکار کو اپنا سارا رخ بدل دینا چاہئے ۔ سرکار اور سرکاری لوگوں کو یہ شک اپنے دلوں سے نکالکر باہر کر دینا چاہئے کہ دیش کے مسلمان پاکستانی ہیں' یا پین - اِسلامی ہیں یعنی سب مسلمانوں کا کوئی الگ سنگھ قائم کرنا چاہتے ہیں ۔ سرکار کو یہ بات ماننی چاہئے کہ اِس دیش کا ہر مسلمان اِس دیش کو اپنا پیارا وطن بنائے رکھنا چاہتا ہے اور دیش کی سرکار کا خیرخواہ اور وفادار ہوکر رہنا چاہتا ہے ۔ یہ ٹھیک ہے کہ سرکار کے پاس شک کرنے کے کارن ہیں ۔ پر مسلمانوں کے پاس بھی شک کرنے کے کارن ہیں ۔ سرکار کو یہ سمجھنا چاہئے کہ ٹھیک یا نا - ٹھیک مسلمانوں کو اپنے آس پاس کے وایومنڈل پر گہری بےاعتباری ہے اور بھوشیہ میں مسلمانوں کی یہاں کیا حالت ہوگی اِس بارے میں شک ہے ۔ قدرتی طور پر مسلمانوں کے سارے کاموں اور اُن کے برتاؤ پر اِس شک اور ڈر کا برا اثر پڑتا ہے ۔ لیکن مجھے پورا

विश्वास है कि इस तरह की बेएतबारी और इस तरह के शक केवल एक दूसरे को ठीक ठीक न समझ सकने का नतीजा हैं, दोनों एक दूसरे को ग़लत समझते हैं. हम अगर बड़े दिल से और इनसानी हमदर्दी के साथ इस सवाल को हल करना चाहें तो इन शकों का पूरी तरह और हमेशा के लिये दिलों से निकाल सकते हैं.

"जब मैं हमदर्दी की बात करता हूँ तो मेरा मतलब यह नहीं है कि किसी के साथ ख़ास ख़ाह रियायतें की जांय रियायतों की पालिसी के मैं बिलकुल ख़िलाफ़ हूँ. मेरा केवल यह मतलब है कि देश में इस तरह का वायुमंडल पैदा किया जाय, जिसमें मुसलिम जनता यह महसूस करने लगे कि उनकी आए दिन की ज़िन्दगी में उनके साथ पूरी तरह इनसाफ़ और ग़ैर जानिबदारी बरती जावेगी और बरती जा रही है. मुझे इस बात का भी पूरा यक़ीन है कि सरकार देश में इस तरह का वायुमंडल पैदा करना चाहती है और सच्चे जी से चाहती है. लेकिन बदक़िस्मती से इस तरह के वायुमंडल के पैदा होने के लिये जो हालतें और सूरतें होनी चाहियें वह देश मे इस समय मौजूद नहीं. हमें इस सारी हालत की फिर से हमदर्दी के साथ जाँच करनी चाहिये और इस तरह के वायुमंडल को पैदा करने के लिये मज़बूत क़दम उठाने चाहियें.

"यह सब मेरे केवल सुझाव हैं. जो कुछ मैंने कहा है उसके उसूल का अगर मान लिया जाय तो तफ़सीली बातें आसानी से तय की जा सकती हैं. सरकार अपनी आम पालिसी को इस बारे मे तय करले और साफ़ करदे और फिर इस काम को पूरा करने की ज़िम्मेवारी कुछ ऐसे लोगो को सौंप दे जो इस काम को करने की क़ाबलीयत रखते हो और ऊँचे दायरे मे उस पर अमल करा सकें.

"मेरी दरख़ास्त है कि मेरे इस बयान पर जल्दी ग़ौर किया जावे और आख़िरी फ़ैसले की मुझे इत्तला दी जाय."

(हस्ताक्षर मंज़रअली सोता.)

× × ×

ऊपर के ख़त से हिन्दू मुसलिम एकता के बारे मे भाई मंज़रअली सोख़्ता के विचारों, उनकी कोशिशों और उनकी गहरी लगन का ख़ासा पता चलता है. देश की सरकार और जनता दोनो इससे काफ़ी शिक्षा ले सकते हैं. अगर इस लगन के कुछेक आदमी भी देश मे पैदा हो जावें, जो अपना जीवन इस काम के अर्पण करदें, तो इस बारे में देश के दिन जल्दी ही फिर सकते हैं.

24-12-56 —सुन्दरलाल.

وشواس هے کہ کہ اِس طرح کی بےاعتباری اور اِس طرح کے شک کیول ایک دوسرے کو ٹھیک ٹھیک نہ سمجھ سکنے کا نتیجہ هیں . دونوں ایک دوسرے کو غلط سمجھتے هیں . هم اگر بڑے دل سے اور انسانی همدردی کے ساتھ اِس سوال کو حل کرنا چاهیں تو اِن شکوں کو پوری طرح اور همیشہ کے لئے دلوں سے نکال سکتے هیں .

"جب میں همدردی کی بات کرتا هوں تو میرا مطلب یہ نہیں هے کہ کسی کے ساتھ خواہ مخواہ رعایتیں کی جائیں . رعایتوں کی پالیسی کے میں بالکل خلاف هوں . میرا کیول یہ مطلب هے کہ دیش میں اِس طرح کا وایومنڈل پیدا کیا جائے جس میں مسلم جنتا یہ محسوس کرنے لگے کہ اُن کی آئے دن کی زندگی میں اُن کے ساتھ پوری طرح انصاف اور غیرجانبداری برتی جاویگی اور برتی جارهی هے . مجھے اس بات کا بھی پورا یقین هے کہ سرکار دیش میں اِس طرح کا وایومنڈل پیدا کرنا چاهتی هے اور سچے جی سے چاهتی هے . لیکن بدقسمتی سے اِس طرح کے وایومنڈل کے پیدا هونے کے لئے جو حالتیں اور صورتیں هونی چاهئیں وہ دیش میں اس سمے موجود نہیں . همیں اِس ساری حالت کی پھر سے همدردی کے ساتھ جانچ کرنی چاهئے اور اِس طرح کے وایومنڈل کو پیدا کرنے کے لئے مضبوط قدم اُٹھانے چاهئیں .

"یہ سب میرے کیول سجھاؤ هیں . جو کچھ میں نے کہا هے اُس کے اُصول کو اگر مان لیا جائے تو تفصیلی باتیں آسانی سے طے کی جاسکتی هیں . سرکار اپنی عام پالیسی کو اس بارے میں طے کرلے اور صاف کر دے اور پھر اِس کام کو پورا کرنے کی ذمہ‌واری کچھ ایسے لوگوں کو سونپ دے جو اِس کام کو کرنے کی قابلیت رکھتے هوں اور اُونچے دائرے میں اُس پر عمل کراسکیں .

"میری درخواست هے کہ میرے اِس بیان پر جلدی غور کیا جاوے اور آخری فیصلے کی مجھے اِطلاع دی جائے ."

(هستاکشر منظرعلی سوختہ .)

× × ×

اُوپر کے خط سے هندو مسلم ایکتا کے بارے میں بھائی منظر علی سوختہ کے وچاروں' اُن کی کوششوں اور اُن کی گہری لگن کا خاصہ پتہ چلتا هے . دیش کی سرکار اور جنتا دونوں اِس سے کافی شکشا لے سکتے هیں . مگر اِس لگن کے کچھ ایک آدمی بھی دیش میں پیدا هوجاویں' جو اپنا جیون اِس کام کے ارپن کردیں تو اِس بارے میں دیش کے دن جلدی هی پھر سکتے هیں .

—سندر لال . 24-12-56

बाबा मंज़रअली सोख़्ता !

बाबा ! क़लम से उठते नहीं बनता, हाथ चल नहीं पाता, सोख़्ता बाबा के बारे में वह क्या कहे जिसे उन्होंने जंगली जानवर से इनसान की शक्ल दी, जिसे उन्होंने अपने बल पर खड़े होने की कला बताई, जिसे उन्होंने ख़ुद को पहचानने की राह दिखाई.

कहने वाले कहते हैं के वह चले गये, उनकी याद ही रह गई. नहीं, मैं उनपर यक़ीन नहीं करता. जो ज्योति पहले एक जिस्म के अन्दर महदूद थी वह अब मुक्त होकर सारे में फैल गई. वह अब हर समय मेरे साथ है. और उनके रहते रहते उनकी मौजूदगी जितनी नहीं महसूस होती थी उससे कहीं ज़्यादा अब होती है.

जीवन के पाँच साल उनके चरणों में बैठकर बिताये. उस अर्से में कितना सीखने लायक़ सीखा, कितना भुलाने लायक़ भुलाया—यह वही कह सकता है जो उससे अलग हो. उससे पहले की हालत का ख़याल जब करता हूँ तो समझ ही नहीं पाता, वह पाँच साल मेरे लिये वरदान हैं, नियामत हैं, धरोहर हैं. जो पाठ उन दिनों मिला उसे निभा सकूँ, उसे अमली जामा पहना सकूँ, उसकी मदद से दूसरों के कुछ काम आ सकूँ—तो यह जीना सफल मानूँगा.

उन पाँच बरसों की तसवीर पर जब एक सरसरी नज़र दौड़ाता हूँ तो कुछ बातें नुमांया रूप में एकदम सामने आती हैं.

पहली चीज़ है बाबा का जीवन—आज हम सैकड़ो भाई बहन जो अपने को गाधी परिवार का सदस्य कहते हैं, सत्य और अहिंसा की हामी भरते हैं—दुनिया में ऐसा कौन है जो अपने को सत्य का पैरोकार नहा कहेगा—अपने अपने रंग से जिनको सत्य का जो दर्शन होता है उसके लिये वे अपना सब कुछ न्योछावर कर देते हैं. सिरजनहार को नहीं मानने वाले भी अपने को सत्य का मुरीद कहते हैं. इतनी बात ज़रूर है कि हममे से सभी अहिंसा की राह पर नहीं चलते. लेकिन ऐसा कौन है जो अहिंसा को ठीक व बेहतर नहीं समझता. उनके सामने कुछ ऐसी मजबूरियाँ आ जाती हैं जो वे हिंसा से परहेज़ नहीं कर पाते और उसका भी इस्तेमाल कर लेते हैं. यानी अक्सर यह देखा गया है कि अपने को अहिंसा का जो पाबन्द कहते हैं उनका जीवन अहिंसा वालों के मुक़ाबले ज़्यादा सीधा और सादा नहीं होता. नाम अहिंसा का ज़रूर लेते हैं, लेकिन रहन-सहन में कोई ख़ास फ़र्क़ नज़र नहीं आता. यही वजह है कि अहिंसा वाले समाज पर ज़्यादा असर नहीं डाल पाते और न दुनिया को अहिंसा पर पूरा यक़ीन बैठ पाता है।

بابا منظرعلی سوختہ !

بابا ! قلم سے اُٹھتے نہیں بنتا، ہاتھ چل نہیں پاتا . سوختہ بابا کے بارے میں وہ کیا کہے جسے اُنہوں نے جنگلی جانور سے انسان کی شکل دی، جسے اُنہوں نے اپنے بل پر کھڑے ہونے کی کلا بتائی، جسے اُنہوں نے خود کو پہچاننے کی راہ دکھائی .

کہنے والے کہتے ہیں کہ وہ چلے گئے، اُن کی یاد ہی رہ گئی. نہیں، میں اُن پر یقین نہیں کرتا . جو جیوتی پہلے ایک جسم کے اندر محدود تھی وہ اب مکت ہوکر سارے میں پھیل گئی . وہ اب ہر سمئے میرے ساتھ ہے . اور اُن کے رہتے رہتے اُن کی موجودگی جتنی نہیں محسوس ہوتی تھی اُس سے کہیں زیادہ اب ہوتی ہے .

جیون کے پانچ سال اُن کے چرنوں میں بیٹھکر بتائے . اُس عرصے میں کتنا سیکھنے لائق سیکھا، کتنا بھلانے لائق بھلایا— یہ وہی کہہ سکتا ہے جو اُس سے الگ ہو . اُس کے پہلے کی حالت کا خیال جب کرتا ہوں تو سمجھ ہی نہیں پاتا. وہ پانچ سال میرے لئے وردان ہیں، نعمت ہیں، دھروھر ہیں . جو پاٹھ اُن دنوں ملا اُسے نبھا سکوں، اُسے عملی جامہ پہنا سکوں، اُس کی مدد سے دوسروں کے کچھ کام آسکوں—تو یہ جینا سپھل مانونگا .

ان پانچ برسوں کی تصویر پر جب ایک سرسری نظر دوڑاتا ہوں تو کچھ باتیں نمایاں روپ میں ایکدم سامنے آتی ہیں .

پہلی چیز ہے بابا کا جیون—آج ہم سیکڑوں بھائی - بہن جو اپنے کو گاندھی پریوار کا سدسیہ کہتے ہیں، ستیہ اور اہنسا کی حامی بھرتے ہیں—دنیا میں ایسا کون ہے جو اپنے کو ستیہ کا پیروکار نہیں کہیگا— اپنے اپنے رنگ سے جن کو ستیہ کا جو درشن ہوتا ہے اُس کے لئے وے اپنا سب کچھ نیوچھاور کردیتے ہیں . سرجنہار کو نہیں ماننے والے بھی اپنے کو ستیہ کا مرید کہتے ہیں . اتنی بات ضرور ہے کہ ہم میں سے سبھی اہنسا کی راہ پر نہیں چلتے . لیکن ایسا کون ہے جو اہنسا کو ٹھیک و بہتر نہیں سمجھتا . ان کے سامنے کچھ ایسی مجبوریاں آجاتی ہیں جو وے ہنسا سے پرہیز نہیں کرپاتے اور اُس کا بھی استعمال کرلیتے ہیں. یعنی اکثر یہ دیکھا گیا ہے کہ اپنے کو اہنسا کا جو پابند کہتے ہیں، ان کا جیون ہنسا والوں کے مقابلے زیادہ سیدھا اور سادہ نہیں ہوتا . نام اہنسا کا ضرور لیتے ہیں، لیکن رہن - سہن میں کوئی خاص فرق نظر نہیں آتا . یہی وجہ ہے کہ اہنسا والے سماج پر زیادہ اثر نہیں ڈال پاتے اور نہ دنیا کو اہنسا پر پورا یقین بیٹھ پاتا ہے .

अहिंसा की असली कसौटी हमारा निजी जीवन है. अहिंसा की गाड़ी के दो पहिये हैं—अपरिग्रह और अस्वाद. यही वजह है कि बापू ने इन दोनों का अलग अलग व्रत का स्थान दिया. जहाँ अपरिग्रह और अस्वाद नहीं, वहाँ अहिंसा असली रूप में पनप ही नहीं सकती. चिराग़ के लिये जिस तरह तेल और बत्ती चाहिये, उसी तरह अहिंसा के लिये अपरिग्रह और अस्वाद की ज़रूरत है. इस निगाह से देखने पर बाबा का जीवन बेजोड़ लगता है. स्वाद और परिग्रह पर उन्होंने पूरी विजय हासिल कर ली थी. नाम लेने से कोई ख़ास फ़ायदा नहीं—मगर दिल यह कहे बिना नहीं मानता कि संत विनोबा के अलावा अगर किसी के अन्दर इन दोनों गुणों की—अपरिग्रह और अस्वाद की—ऊंची से ऊंची उड़ान देखी तो सोख़्ता बाबा के अन्दर देखी.

एक मरतबा आश्रम से कानपुर शहर जा रहे थे तो पूछने लगे कि एक फ़क़ीर और दूसरों में क्या फ़र्क़ होता है, बता सकते हो? मैंने कहा कि फ़क़ीर वह जो सब कुछ छोड़ दे और सब पर प्रेम करे. वह हँसकर बोले कि नहीं, इतना ही काफ़ी नहीं है—फ़क़ीर वही है जो हर वक़्त मौत के लिये राज़ी हो. अगर आज अभी मौत मुझसे आकर कहे कि मुझे चलना है, तो मैं एक पल भर की भी मोहलत माँगे बिना जाने को फ़ौरन तैयार रहूँ.

आश्रम में कई महीने तक उन्होंने अपनी गुज़र पंद्रह रुपये माहवार पर की. नीम की चटनी हो या ज्वार की रोटी या गाजर का हलवा—उनके लिये एक समान. इधर कई बरस से तो वह अपने शरीर की वजह से अनाज नहीं ले पाते थे. इधर फल पर रहना पड़ता था. इसका उन्हें बराबर सदमा था. वह चाहते थे कि मैं वही खाना खाऊँ जो ग़रीब से ग़रीब को मयस्सर है.

दूसरी चीज़ है उनकी सफ़ाई का अहसास. मानो उनकी नाक कोसों दूर से ही गंदगी सूँघ लेती थी. आश्रम में महीनों तक उन्होंने रोज़ दो दो तीन तीन घंटे सफ़ाई का काम किया. सफ़ाई का तो पूरा शास्त्र ही खड़ा कर लिया था. आश्रम में जब विद्यार्थी खादी आदि की ट्रेनिंग लेते थे तो बाबा को एक ही प्रोग्राम से सबसे ज़्यादा दिलचस्पी रहती थी—सफ़ाई. सारे आश्रम को हिस्सों में बाँटकर हर टोली के सिपुर्द एक एक हल्क़ा कर देते थे.

एकबार एक विद्यार्थी आश्रम के कुएँ के पास झाड़ू लगा रहा था. वहीं गूलर का पेड़ है. उस भाई ने गूलर की पत्तियाँ बटोर दीं और चलने लगा. इत्तफ़ाक़ से बाबा उधर से आगये. उन्होंने चारों तरफ़ देखा और उस भाई से कहा—क्यों भैया! तुमने पेड़ के तले तो साफ़ किया, मगर यह कुँयें के ऊपर के फ़र्श और नाली में भी तो पत्तियाँ पड़ी हैं, इन्हें कैसे छोड़ दिया? विद्यार्थी को शरम आगई

اہنسا کی اصلی کسوٹی ہمارا نجی جیون ہے ۔ اہنسا کی گاڑی کے دو پہیئے ہیں اپریگرہ اور اسواد ۔ یہی وجہ ہے کہ باپو نے ان دونوں کو الگ الگ ورت کا استھان دیا جہاں اپریگرہ اور اسواد نہیں' وہاں اہنسا اصلی روپ میں پنپ ہی نہیں سکتی۔ چراغ کے لئے جس طرح تیل اور بتی چاہئے' اسی طرح اہنسا کے لئے اپریگرہ اور اسواد کی ضرورت ہے ۔ اس نگاہ سے دیکھنے پر بابا کا جیون بےجوڑ لگتا ہے ۔ سواد اور پریگرہ پر انہوں نے پوری وجے حاصل کرلی تھی نام لینے سے کوئی خاص فائدہ نہیں— مگر دل یہ کہے بنا نہیں مانتا کہ سنت ونوبا کے علاوہ اگر کسی کے اندر ان دونوں گنوں کی—اپریگرہ اور اسواد کی—اونچی سے اونچی اڑان دیکھی تو سوختہ بابا کے اندر دیکھی ۔

ایک مرتبہ اشرم سے کانپور شہر جا رہے تھے تو پوچھنے لگے کہ ایک فقیر اور دوسروں میں کیا فرق ہوتا ہے بتا سکتے ہو ؟ میں نے کہا کہ فقیر وہ جو سب کچھ چھوڑ دے اور سب پر پریم کرے وہ ہنس کر بولے کہ نہیں' اتنا ہی کافی نہیں ہے—فقیر وہی ہے جو ہر وقت موت کے لئے راضی ہو اگر آج ابھی موت مجھ سے آکر کہے کہ مجھے چلنا ہے' تو میں ایک پل بھر کی بھی مہلت مانگے بنا جانے کو فوراً تیار رہوں

آشرم میں کئی مہینے تک انہوں نے اپنی گذر پندرہ روپئے ماہوار پر کی ۔ نیم کی چٹنی ہو یا جوار کی روٹی یا گاجر کا حلوہ—اُن کے لئے ایک سماں ادھر کئی برس سے تو وہ اپنے شریر کی وجہ سے اناج نہیں لے پاتے تھے ۔ ادھر پھل پر رہنا پڑتا تھا ۔ اس کا انہیں برابر صدمہ تھا وہ چاہتے تھے کہ میں وہی کھانا کھاؤں جو غریب سے غریب کو میسر ہے

دوسری چیز ہے اُنکی صفائی کا احساس مانو اُنکی ناک کوسوں دور سے ہی گندگی سونگھ لیتی ہو اشرم میں مہینوں تک انہوں نے روز دو دو تین تین گھنٹے صفائی کا کام کیا صفائی کا تو پورا شاستر ہی کھڑا کرلیا تھا ۔ اشرم میں جب ودیارتھی کھادی آدی کی ٹریننگ لیتے تھے تو بابا کو ایک ہی پروگرام سے سب میں زیادہ دلچسپی رہتی تھی—صفائی سارے اشرم کو حصوں میں بانٹ کر ہر ٹولی کے سپرد ایک ایک حلقہ کردیتے تھے ۔

ایکبار ایک ودیارتھی اشرم کے کوئیں کے پاس جھاڑو لگا رہا تھا وہیں گولر کا پیڑ ہے اُس بھائی نے گولر کی پتیاں بٹور دیں اور چلنے لگا اتفاق سے بابا اُدھر سے آگئے انہوں نے چاروں طرف دیکھا اور اُس بھائی سے کہا—کیوں بھیا ! تم نے پیڑ کے تلے تو صاف کیا' مگر یہ کوئیں کے اُوپر کے فرش اور نالی میں بھی تو پتیاں پڑی ہیں' اِنہیں کیسے چھوڑ دیا ؟ ودیارتھی کو شرم آگئی

और बोला—बाबा जी! अभी किये देता हूँ. बाबा ने उसकी पीठ पर हाथ रखा और कहने लगे—नहीं, तुम जाओ—दूसरे काम की घंटी बजती होगी. और फिर खुद कुँयें की नाली साफ़ करने में लग गये.

लेकिन उनकी सफ़ाई की भावना की सबसे बड़ी छाप मुझपर एक और ही घटना से पड़ी. पूज्य पंडित सुन्दरलाल जी आश्रम आये हुए थे. चंद घंटों के लिये आये थे. बाबा ने एक ज़रूरी सलाह के लिये बुलाया था. बाबा को उनका इन्तज़ार था मगर एक काम आ पड़ा और बोले कि कानपुर जा रहा हूँ. दो बजे तक लौट आऊंगा, सुन्दरलाल आयें तो उन्हें रोकना. पंडित जी इलाहाबाद से कालका मेल से चलकर कानपुर उतर कर आश्रम कोई डेढ़ बजे पहुंचे. बाबा कोई दो बजे आगये. पंडित जी को चार बजे वाले मेल से वापस लौटना था. बाबा के आते ही मैंने चटाई बिछाई ताकि बैठें और पंडित जी से बात करें. इत्तफ़ाक़ से जहाँ चटाई बिछी थी वहाँ दीवार का कुछ मसाला छूटकर गिर गया था. बाबा की आँख कब चूकने वाली थी. चटाई पर पल भर को बैठे होंगे कि उठ बैठे. मैं हैरान रह गया. कमरे के अन्दर से वह झाड़ू लेकर आये और सफ़ाई करने लगे. मुँह से एक लफ़्ज़ भी नहीं निकाला. उसके बाद पंडित जी से बातचीत की. रात को जब मैंने अपनी लापरवाही की माफ़ी माँगी तो कहने लगे—सफ़ाई में जितनी सावधानी रखो थोड़ी ही है. लेकिन उसका नाता दर असल अन्दर के अध्यात्म से है. जिस दर्जे पर अन्दर की ऊंचाई बढ़ेगी उसी दर्जे तक बाहर की सफ़ाई तुम निभा सकोगे.

उनकी तीसरी बड़ी और सब से ग़ज़ब की खूबी थी—सर्व धर्म सम्भाव. उन्हें देखकर कोई यह नहीं कह सकता था कि हिन्दू हैं, मुसलमान है या ईसाई. लेकिन क्योंकि वह आला से आला मुसलमान थे, इसलिये वह आला से आला हिन्दू भी थे, आला से आला ईसाई भी थे. एक शब्द मे, वह ईश्वर के सच्चे बन्दे थे. इस मौक़े पर बाबा के अलावा तीन और नामों की याद एकदम आती है—खान अब्दुल ग़फ्फ़ार खाँ, जे. सी. कुमारप्पा और मीरा बहन. यह चारों हिन्दू न होकर भी सच्चे से सच्चे हिन्दू के मुक़ाबले बेहतर हिन्दू हैं—क्योंकि अपने अपने धर्म के सच्चे पाबन्द हैं और इन चारों का गांधी-विचार से अपने जीवन को समरस बना देना गांधी विचार की गहराई का, उसका हक़परस्ती का सबसे बड़ा सबूत है.

कहने की जरूरत नहीं कि बाबा के अन्दर छुआछूत की परछाईं तक नहीं थी. यही कारण है कि कट्टर से कट्टर ब्राह्मण कार्यकर्ता उनकी सेवा करने में, उनके जूठे बरतन खुद साफ़ करने में, उनके कपड़े आदि धोने में गौरव महसूस करते थे. लेकिन यह सर्व-धर्म-समभाव उनके अन्दर कितना समाया हुआ था इसका अन्दाज़ मुझे एक दिन हुआ.

اور بولا—بابا جی! ابھی کئے دیتا ہوں۔ بابا نے اُسکی پیٹھ پر ہاتھ رکھا اور کہنے لگے—نہیں، تم جاؤ—دوسرے کام کی گھنٹی بجتی ہوگی۔ اور پھر خود کوئیں کی نالی صاف کرنے میں لگ گئے۔

لیکن اُنکی صفائی کی بھاونا کی سب سے بڑی چھاپ مجھ پر ایک اور ہی گھٹنا سے پڑی۔ پوجیہ پنڈت سندرلال جی آشرم آئے ہوئے تھے۔ چند گھنٹوں کے لئے آئے تھے بابا نے ایک ضروری صلاح کے لئے بلایا تھا۔ بابا کو اُن کا انتظار تھا مگر ایک کام آپڑا اور بولے کہ کانپور جارہا ہوں، دو بجے تک لوٹ آؤنگا، سندرلال آئیں تو اُنہیں روکنا۔ پنڈت جی الٰہ آباد سے کالکا میل سے چلکر کانپور اُترکر آشرم کوئی ڈیڑھ بجے پہونچے۔ بابا کوئی دو بجے آگئے۔ پنڈت جی کو چار بجے والے میل سے واپس لوٹنا تھا۔ بابا کے آتے ہی میں نے چٹائی بچھائی تاکہ بیٹھیں اور پنڈت جی سے بات کریں۔ اتفاق سے جہاں چٹائی بچھی تھی وہاں دیوار کا کچھ مصالحہ چھوٹ کر گر گیا تھا۔ بابا کی آنکھ کب چوکنے والی تھی۔ چٹائی پر پل بھر کو بیٹھے ہونگے کہ اُٹھ بیٹھے۔ میں حیران رہ گیا۔ کمرے کے اندر سے وہ جھاڑو لیکر آئے اور صفائی کرنے لگے۔ منہ سے ایک لفظ بھی نہیں نکالا۔ اُسکے بعد پنڈت جی سے بات چیت کی۔ رات کو جب میں نے اپنی لاپرواہی کی معافی مانگی تو کہنے لگے—صفائی میں جتنی ساودھانی رکھو تھوڑی ہی ہے۔ لیکن اُسکا ناتا دراصل اندر کے ادھیاتم سے ہے۔ جس درجے پر اندر کی اونچائی بڑھیگی اُسی درجے تک باہر کی صفائی تم نبھا سکوگے۔

اُنکی تیسری بڑی اور سب سے غضب کی خوبی تھی—سرودھرم سمبھاؤ۔ اُنہیں دیکھکر کوئی یہ نہیں کہہ سکتا تھا کہ ہندو ہیں، مسلمان ہیں یا عیسائی۔ لیکن کیونکہ وہ عالی سے عالی مسلمان تھے اِس لئے وہ عالی سے عالی ہندو بھی تھے، عالی سے عالی عیسائی بھی تھے۔ ایک شبد میں، وہ ایشور کے سچے بندے تھے۔ اِس موقعہ پر بابا کے علاوہ تین اور ناموں کی یاد ایکدم آتی ہے—خان عبدالغفار خاں، جے۔ سی۔ کمارپا اور میرا بہن۔ یہ چاروں ہندو نہ ہوکر بھی سچے سے سچے ہندو کے مقابلے بہتر ہندو ہیں—کیونکہ اپنے اپنے دھرم کے سچے پابند ہیں اور اِن چاروں کا گاندھی وچار سے اپنے جیون کو سمرس بنا دینا گاندھی وچار کی گہرائی کا، اُسکی حق پرستی کا سب سے بڑا ثبوت ہے۔

کہنے کی ضرورت نہیں کہ بابا کے اندر چھواچھوت کی پرچھائیں تک نہیں تھی۔ یہی کارن ہے کہ کٹر سے کٹر براہمن کاریہ کرتا اُنکی سیوا کرنے میں، اُنکے جوٹھے برتن خود صاف کرنے میں، اُنکے کپڑے آدی دھونے میں گورو محسوس کرتے تھے۔ لیکن یہ سرودھرم سمبھاؤ اُنکے اندر کتنا سمایا ہوا تھا اِسکا انداز مجھے ایک دن ہوا۔

बाबा के साथ उन्नाव जा रहा था. इक्का तैयार खड़ा था. इतने में बदायूं से बाबा के एक रिश्तेदार आ पहुँचे मामूली कद, जवान चेहरा, बदन पर शेरवानी, सर पर तुर्की टोपी. बाबा से उनकी ये पहली मुलाक़ात थी. बाबा ने कहा—"चलो इक्के में बैठलो, उन्नाव जा रहा हूँ, रास्ते में बातें होती चलेंगी. उन्नाव से तुम लखनऊ होते हुए घर लौट सकते हो."

तीनों जने इक्के में बैठे. बाबा की उनसे बातचीत होती रही और जिस सलाह के लिये वह मेहरबान आये थे वह भी उन्हें बाबा से मिल गई. इतनी देर में उन्नाव आगया. तीनों उतरे. बाबा को उन्नाव में किसी से मिलना था. हम दोनो उस तरफ़ बढ़े. बाबा ने चलते चलते उनसे कहा—"अरे माफ़ करना, मुझे ख्याल नहीं रहा. तुमसे खाने को तो पूछा ही नहीं." फिर ज़रा रुककर बोले—"खाना तो तुमने खाया नहीं होगा (उन्होंने स्टेशन के पास की दुकानों की तरफ़ इशारा किया) यह दुकानें हैं—यहीं खाना खा सकते हो."

उन सज्जन ने कुछ झिझक सी दिखाई. उन्होंने एक अजब तरह से मुँह बनाया बाबा ने ताड़ लिया और बोले—"क्यों ? खाने का वक्त तो है ही ! खाना क्यो नही खाते ?"

"यह दुकानें ·····"

उनका इतना कहना था कि बाबा भाँप गये और चेहरा लाल पड़ गया. बोले —"वल्लाह ! अभी तक आपका मौलानापन नहीं गया ? इतना पढ़े लिखे हो लेकिन हो मुल्ला के मुल्ला ! !"

बाबा ने उनकीतरफ़ देखकर फिर कहा—"हज़रत ! मेरी बात गिरह बाँध लीजिये कि गन्दे से गन्दे हिन्दु की रसोई पाक से पाक मुसलमान की रसोई से ज्यादा सफ़ होती है."

× × ×

बाबा के गुण गिनाने का यह कोई मौक़ा नहीं है न उनको इसकी ज़रूरत है. न मेरी इतना लायक़ी है. अपनी श्रद्धा के कण पेश करने की यह अपनी कोशिश है.

जितना कहा जाये थोड़ा है. मेरी पत्नी सौदामिनी को और मुझे भी यह दु.ख है कि अंतिम घड़ी उनके दरशन नहीं कर सके. भूदान की दौड़ धूप के कारण मुझे तो उनकी बिदाई का समाचार ही 17 दिसम्बर को मिला. हम दोनो के लिये वह माता पिता से बढ़कर हैं. लेकिन उनका जाना ऐसा लगता है कि अब वह अपने पास ही आ गये. हम दोनों को एक सूत्र में बाँधने वाले भी वही थे. उनकी राह पर हम सदा चलते रहें—नम्रता, ईमान और लगन के साथ चलते रहें—यही मालिक से विनती है.

—सुरेश रामभाई

بابا کے ساتھ أناؤ جارھا تھا . یکہ تیار کھڑا تھا . اِتنے میں بدایوں سے بابا کے ایک رشتہ‌دار آپہونچے . معمولی قد' جوان چہرہ' بدن پر شیروانی' سر پر ترکی ٹوپی . بابا سے اُنکی یہ پہلی ملاقات تھی . بابا نے کہا—"چلو یکے پر بیٹھ لو' أناؤ جارھا ھوں' راستے میں باتیں ھوتی چلینگی . أناؤ سے تم لکھنؤ ھوتے ھوئے گھر لوٹ سکتے ھو ."

تینوں چلے یکے میں بیٹھے . بابا کی اُن سے بات چیت ھوتی رھی اور جس صلاح کے لئے وہ مہربان آئے تھے وہ بھی اُنھیں بابا سے مل گئی . اِتنی دیر میں أناؤ آگیا . تینوں اُترے . بابا کو أناؤ میں کسی سے ملنا تھا . ھم دونوں اُس طرف بڑھے . بابا نے چلتے چلتے اُن سے کہا—"ارے معاف کرنا' مجھے خیال نہیں رھا . تم سے کھانے کو تو پوچھا ھی نہیں ."
پھر ذرا رک‌کر بولے—"کھانا تو تم نے کھایا نہیں ھوگا (اُنھوں نے اسٹیشن کے پاس کی دوکانوں کی طرف اِشارہ کیا) یہ دوکانیں ھیں—یہیں کھانا کھا سکتے ھو ."

اُن سجن نے کچھ جھجھک سی دکھائی . اُنھوں نے ایک عجب طرح سے منھ بنایا . بابا نے تاڑ لیا اور بولے—"کیوں ؟ کھانے کا وقت تو ھے ھی ! کھانا کیوں نہیں کھاتے ؟"

"یہ دوکانیں..... "

اُنکا اِتنا کہنا تھا کہ بابا بھانپ گئے اور چہرہ لال پڑ گیا . بولے—"واللہ ! ابھی تک آپ کا مولوی پن نہیں گیا ؟ اِتنا پڑھے لکھے ھو لیکن ھو ملا کے ملا ! !"

بابا نے اُنکی طرف دیکھکر پھر کہا—"حضرت ! میری بات گرہ باندھ لیجئے کہ گندے سے گندے ھندو کی رسوئی پاک سے پاک مسلمان کی رسوئی سے زیادہ صاف ھوتی ھے ."

× × ×

بابا کے گن گنانے کا یہ کوئی موقع نہیں ھے . نہ اُنکو اسکی ضرورت ھے . نہ میری اِتنی لائقی ھے . اپنی شردھا کے کن پیش کرنے کی یہ اپنی کوشش ھے .

جتنا کہا جائے تھوڑا ھے . میری پتنی سودامنی کو او مجھے بھی یہ دکھ ھے کہ انتم گھڑی انکے درشن نہیں کرسکے . بھودان کی دوڑ دھوپ کے کارن مجھے تو انکی بدائی کا سماچار ھی 17 دسمبر کو ملا . ھم دونوں کے لئے وہ ماتا پتا سے بڑھکر ھیں . لیکن اُنکا جانا ایسا لگتا ھے کہ اب وہ اپنے پاس ھی آگئے . ھم دونوں کو ایک سوتر میں باندھنے والے بھی وھی تھے . اُنکی راہ پر ھم سدا چلتے رھیں—نمرتا' ایمان اور لگن کے ساتھ چلتے رھیں—یہی مالک سے ونتی ھے .

—سریش رام‌بھائی .

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Mutthiganj, Allahabad.

इस नम्बर के ख़ास लेख — اِس نمبر کے خاص لیکھ

भारतीय दर्शन का सार	بھارتیہ درشن کا سار
—डाक्टर भगवान दास	—ڈاکٹر بھگوان داس
स्वर्गीय मंज़र भाई !	سورگیہ منظر بھائی !
—डाक्टर अमरनाथ कपूर	—ڈاکٹر امرناتھ کپور
बाबा मंज़रअली की शीतल छाया मे	بابا منظر علی کی شیتل چھایا میں
—श्री शवमूर्ति	—شری شومورتی

इसके अलावा — اِسکے علاوہ

देस बिदेस के मसलो पर हमारी राय में ज़रूरी सम्पादकी नोट

دیس بدیس کے مسئلوں پر ہماری رائے میں ضروری سمپادکی نوٹ

तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद — ستانی کلچر سوسائٹی الٰہ آباد

फ़रवरी 1957 فروری

नया हिन्द نیا ہند

जिल्द 23 جلد   नम्बर 2 نمبر

फ़रवरी 1957 فروری

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद   145، مٹھی گنج، الہ آباد

फ़रवरी 1957 فروری

भारतीय दर्शन का सार

मैं यह (माटी की दुनिया) नहीं हूँ !

डाक्टर भगवानदास

पिछले एक लेख में इस दुनिया के अन्दर असल वजूद या असल हक़ीक़त की चरचा करते हुए हमने एक महा वाक्य कहा था:—'मैं यह नहीं (हूँ)', यानी मैं यह बाहर का शरीर या बाहर की दुनिया नहीं हूँ. अरबी भाषा में महावाक्य को 'फ़ुसूस' या 'शुत्तुहियात' कहते हैं. संस्कृत में उदान भी कहते हैं. हम इस लेख में इसी महा वाक्य पर अधिक रोशनी डालने की कोशिश करेंगे.

इस सृष्टि के असल वजूद या वजूदे मुतलक़ को बयान करने के लिये एक तरीक़ा यह है कि पहले अपने आपे यानी आत्मा के वजूद को सामने रखा जावे, फिर उसके मुक़ाबिल में हम ग़ैर-आत्मा या ग़ैर-मैं के वजूद को मानें, और फिर इन दोनों यानी मैं और ग़ैर-मैं को मिला कर यह समझने की कोशिश करें कि यह दोनों एक दूसरे की सीमा को बाँधते हुए और अलग अलग होते हुए भी एक दरजे तक एक ही हैं. लेकिन यह तरीक़ा ठीक या मुकम्मिल तरीक़ा नहीं है और न इस से आख़िरी समन्वय का बोध होता है. ठीक तरीक़ा यह है कि पहले अपने आपे को समझा और माना जावे—क्योंकि अगर कोई चीज़ सृष्टि में ऐसी है जिसके वजूद में कोई शक नहीं हो सकता तो वह आत्मा ही है, "मैं' हूँ यह एक अटल और पक्की सचाई है—तब इसके बाद यही "मैं" अपने मुक़ाबिल में अपने से बाहर "ग़ैर-मैं" को फ़र्ज़ करके उसे अपने ऊपर लाद ले, उसके बाद एक दरजे तक अपने वजूद को "ग़ैर-मैं" के ऊपर लादे. फिर दोनों को मिलाकर एक 'रूह और जिस्म' या 'चेतन और शरीर', या 'चेतन और जड़', के वजूद को माने, जिसे हम आम तौर पर मिलाकर "मैं" कहते और समझते हैं, फिर उस "ग़ैर-मैं" को उसकी गद्दी से उतार कर अलग करे, और अन्त में "शुद्ध आत्मा" फिर से अपने अन्दर के सुख, अपने 'स्वे महिम्नि', यानी स्वयं अपनी महिमा के अन्दर, अपने ला महदूद, बेअन्त, अजर अमर और शान्त वजूद के अन्दर हमेशा के लिये विश्राम करे और समझे कि यही अस्ल वजूद है, और सब फ़रेब और फ़ानी, यानी धोखा और माया है.

लेकिन खोजी यानी मुतलाशी आत्मा हमेशा अनगिनत अलग-अलग 'आपों' या "मैंओं" को "ग़ैर-मैंओं" के साथ मिलाता रहता और उनमें एकता देखने की कोशिश करता रहता है. बात यह है कि आत्मा जब ज़हूर में आता है यानी व्यक्त होता है तो वह अनगिनत लपेटों और चक्रों

بھارتیہ درشن کا سار

میں یہ (ماٹی کی دنیا) نہیں ہوں !

ڈاکٹر بھگوان داس

پچھلے ایک لیکھ میں اس دنیا کے اندر اصل وجود یا اصل حقیقت کی چرچا کرتے ہوئے ہم نے ایک مہاواکیہ کہا تھا:—'میں یہ نہیں (ہوں)' یعنی میں یہ باہر کا شریر یا باہر کی دنیا نہیں ہوں۔ عربی بھاشا میں مہاواکیہ کو 'فصوص' یا 'شطحیات' کہتے ہیں۔ سنسکرت میں اُدان بھی کہتے ہیں۔ اس لیکھ میں ہم اسی مہاواکیہ پر ادھک روشنی ڈالنے کی کوشش کرینگے۔

اس سرشٹی کے اصل وجود یا وجود مطلق کو بیان کرنے کے لئے ایک طریقہ یہ ہے کہ پہلے اپنے آپے یعنی آتما کے وجود کو سامنے رکھا جاوے، پھر اُس کے مقابل میں ہم غیر-آتما یا غیر میں کے وجود کو مانیں، اور پھر اِن دونوں یعنی میں اور غیر-میں کو ملاکر یہ سمجھنے کی کوشش کریں کہ یہ دونوں ایک دوسرے کی سیما کو باندھتے ہوئے اور الگ الگ ہوتے ہوئے بھی ایک درجہ تک ایک ہی ہیں۔ لیکن یہ طریقہ ٹھیک یا مکمل طریقہ نہیں ہے اور نہ اِس سے آخری سمنوئے کا بودھ ہوتا ہے۔ ٹھیک طریقہ یہ ہے کہ پہلے اپنے آپ کو سمجھا اور مانا جاوے—کیونکہ اگر کوئی چیز سرشٹی میں ایسی ہے جس کے وجود میں کوئی شک نہیں ہو سکتا تو وہ آتما ہی ہے، "میں" ہوں یہ ایک اٹل اور پکی سچائی ہے،—تب اِس کے بعد یہی "میں" اپنے مقابل میں اپنے سے باہر "غیر-میں" کو فرض کر کے اُسے اپنے اوپر لاد لے، اُس کے بعد ایک درجہ تک اپنے وجود کو "غیر-میں" کے اوپر لادے۔ پھر دونوں کو ملاکر ایک 'روح اور جسم' یا 'چیتن اور شریر' یا 'چیتن اور جڑ' کے وجود کو مانے، جسے ہم عام طور پر ملاکر "میں" کہتے اور سمجھتے ہیں، پھر اُس "غیر-میں" کو اُس کی گدی سے اُتار کر الگ کرے اور انت میں "شدھ آتما" پھر سے اپنے اندر کے سکھ، اپنے 'سوئے مہمنی' یعنی سویم اپنی مہما کے اندر، اپنے لامحدود، بے انت، اجر، امر اور شانت وجود کے اندر ہمیشہ کے لئے وشرام کرے اور سمجھے کہ یہی اصل وجود ہے، اور سب فریب اور فانی، یعنی دھوکھا اور مایا ہے۔

لیکن کھوجی یعنی متلاشی آتما ہمیشہ انگنت الگ الگ 'آپوں' یا "میں-اوں" کو غیر-میں اوں" کے ساتھ ملاتا رہتا اور اُن میں ایکتا دیکھنے کی کوشش کرتا رہتا ہے۔ بات یہ ہے کہ آتما جو وجود میں آتا ہے یعنی ویکت ہوتا ہے تو وہ انگنت لپیٹوں اور چکروں

के अन्दर, एक दूसरे के बाद, अपने को अनगिनत शरीरों के साथ एक करता और फिर उनसे अलग करता रहता है. इस तरह एक आपे से एक दूसरे के बाद उसे अनगिनत आपे दिखाई देते हैं. यह अनगिनतपना भी हक़ीक़त की निगाह से एक धोका है. लेकिन एक निगाह से ठीक भी है. एक ही आपा मादनियात यानी मिट्टी, पत्थर, सोना वग़ैरा, उसके बाद नबातात यानी बनस्पति, उसके बाद हैवानात यानी जानवरों में से होता हुआ, वानर और नर यानी मनुष्य और उससे ऊपर की योनियों में से निकलता हुआ, जिनके जिस्म कहीं ख़ाकी, कहीं नूरी, कहीं आतशी, कहीं स्थूल, कहीं सूक्ष्म, कहीं छोटे, कहीं बड़े, कहीं दृश्य, कहीं अदृश्य, अनगिनत क़िस्मों के होते हैं, अनेक रूपों और अनेक रंगों में से होता हुआ, देश और काल यानी मकान और ज़मान के समन्दरों को पार करता हुआ इस अनन्त 'संसार चक्र' में चढ़ाव और उतार को पार करता हुआ, अन्त में अपने आप को पहचानता है. मौलाना रूम ने इसे बड़ी सुन्दरता के साथ बयान किया है. उन्होंने लिखा है :—

"एक ज़माना था कि मैं सदियों मादनियात में रहा, मादनियात से निकलकर हज़ारों बरस मैं ने नबातात में गुज़ारे, नबातात से जब मैं मरा तो हैवान पैदा हुआ, हैवान से मैं मरा तो इनसान पैदा हुआ, इनसान से मैं मरूँगा तो मलायक यानी फ़रिश्तों के बाल और पर मुझ में निकल आवेंगे, फ़रिश्तों से मैं मरूँगा तो वह हूँगा जो इस समय ख़याल और गुमान में भी नहीं आ सकता. मरने से मैं क्यों डरूँ ? आज तक मरने से मैं कभी कम नहीं हुआ, आगे ही आगे बढ़ा हूँ."

एक दूसरी जगह मौलाना रूम ने लिखा है :—

"हमचो सब्ज़ा बारहा रोईदा अम्,
हफ़्त सद हफ़्ताद क़ालिब दीदा अम."

यानी—मैं सब्ज़े यानी घासपात की तरह बार-बार पैदा हुआ हूँ, मैं सात सौ सत्तर जिस्म देख चुका हूँ

लेकिन हक़ीक़त यह है कि यह सब तरह तरह के जिस्म भी केवल एक धोखा है. असल हक़ीक़त यही है—मैं यह नहीं (हूँ).

असल आत्मा या रूह एक ही है. वही 'रूहे कुल' है वही 'परम-आत्मा' है. वह अनन्त है, अनादि है, अगम है, न उसमें कोई भेद भाव है, और न उसमें कोई सिफ़ात या गुण हैं. वह सब गुणों से ऊपर है. और "यह" जो कुछ ग़ैर-आत्मा हम देख रहे हैं यह उस आत्मा से बाहर तो नहीं है लेकिन फिर भी एक मानी में उससे अलग है. "यह" उस आत्मा की नक़ल करने की कोशिश में अनेक नाम, रूप, रंग और अनेक वजूद धारण करता है. इसकी यह अनेकता भी धोखा है, इन नाम रूपों के कारण यह अनेक दिखाई

کے اندر' ایک دوسرے کے بعد' اپنے کو انگنت شریروں کے ساتھ ایک کرتا رہتا ہے. اِس طرح ایک آپے سے ایک دوسرے کے بعد اُسے انگنت آپے دکھائی دیتے ہیں. یہ انگنت پنا بھی حقیقت کی نگاہ سے ایک دھوکھا ہے. لیکن ایک نگاہ سے ٹھیک بھی ہے. ایک ہی آپا معدنیات یعنی مٹی' پتھر' سونا وغیرہ' اُس کے بعد نبتات یعنی بنسپتی' اُس کے بعد حیوانات یعنی جانور میں سے ہوتا ہوا' وانر اور نر یعنی منشیہ اور اُس سے اوپر کی یونیوں میں سے نکلتا ہوا' جن کے جسم کہیں خاکی' کہیں نوری' کہیں آتشی' کہیں اِستھول' کہیں سوکشم' کہیں چھوٹے کہیں بڑے کہیں درشیہ کہیں ادرشیہ' انگنت قسموں کے ہوتے ہیں' انیک روپوں اور انیک رنگوں میں سے ہوتا ہوا' دیش اور کال یعنی مکان اور زمان کے سمندروں کو پار کرتا ہوا اِس اننت "سنسار چکر" میں چڑھاؤ اور اُتار کو پار کرتا ہوا' انت میں اپنے آپ کو پہچانتا ہے. مولانا روم نے اِسے بڑی سندرتا کے ساتھ بیان کیا ہے. اُنہوں نے لکھا ہے:—

"ایک زمانہ تھا کہ میں صدیوں معدنیات میں رہا' معدنیات سے نکلکر ہزاروں برس میں نے نباتات میں گذارے' نباتات سے جب میں مرا تو حیوان پیدا ہوا' حیوان سے میں مرا تو انسان پیدا ہوا' اِنسان سے میں مرونگا تو ملایک یعنی فرشتوں کے بال اور پر مجھ میں نکل آوینگے' فرشتوں سے میں مرونگا تو وہ ہونگا جو اِس سمئے خیال اور گمان میں بھی نہیں آسکتا. مرنے سے میں کیوں ڈروں ؟ آج تک مرنے سے میں کبھی کم نہیں ہوا' آگے ہی آگے بڑھا ہوں."

ایک دوسری جگہہ مولانا روم نے لکھا ہے :—

همچو سبزہ بارہا روئیدہ ام'
ہفت صد ہفتاد قالب دیدہ ام."

یعنی—میں سبزے یعنی گھاس پات کی طرح بار بار پیدا ہوا ہوں' میں سات سو ستر جسم دیکھ چکا ہوں.

لیکن حقیقت یہ ہے کہ یہ سب طرح طرح کے جسم بھی کیول ایک دھوکھا ہے. اصل حقیقت یہی ہے—میں یہ نہیں (ہوں).

اصل آتما یا روح ایک ہی ہے. وہی 'پرم-آتما' ہے وہ اننت ہے' انادی ہے' اگم ہے' نہ اُس میں کوئی بھید بھاؤ ہے' اور نہ اِس میں کوئی صفات یا گن ہیں. وہ سب گنوں سے اوپر ہے. اور "یہ" جو کچھ غیر آتما ہم دیکھ رہے ہیں یہ آتما اُس آتما سے باہر تو نہیں ہے لیکن پھر بھی ایک معنی میں اُس سے الگ ہے. "یہ" اُس آتما کی نقل کرنے کی کوشش میں انیک نام' روپ' رنگ اور انیک وجود دھارن کرتی ہے. اِس کی یہ انیکتا بھی دھوکھا ہے' اِن نام روپوں کے کارن یہ انیک دکھائی

देता है. इस तरह एक आपे के अनेक दिखाई देने लगते हैं. एक अनेक दिखाई देने लगता है, अलग-अलग शरीर बन जाते हैं. इन शरीरों में उस एक आत्मा का सम्बन्ध जुड़ता रहता है और टूटता रहता है अनेक गुणों से मिलकर कोई एक चीज या एक शरीर बनता है और फिर देखने वाला खोजी इन अनेक के अन्दर उस एक ही का दीदार पाता है और महसूस करता है कि वही उसका आपा है, वह एक है, वही वह है वह यह नहीं है, यानी—मैं यह नहीं हूँ

हर 'मैं" एक "मैं" होता है. इसीलिये हर जीवात्मा (रूह) अनगिनत जन्मों मे से निकलता हुआ अमरता यानी अबदी जिंदगी को प्राप्त करता है खिलाड़ी जब नाटक खेलने से थक जाता है तो खुद चुपचाप तमाशा देखने लगता है. जब उससे भी थक जाता है तो स्वप्न यानी ख़ाब की हालत से निकलता हुआ उस गहरी नींद में पहुँचता है जिसे योग की भाषा में सुशुप्ति कहते हैं वही मोक्ष, निर्वान या नजात है. उस हालत में पहुचकर सब भेद-भाव खतम हो जाते हैं जब रूह उस नींद से भी थक जाती है तो फिर अगर वह चाहे तो एक नई दुनिया मे जाग सकती है स्वर्ग और नरक केवल इस जागती दुनिया की ही अच्छी बुरी हालतें हैं स्वप्न की हालत मे हम प्यार और नफरत, विश्वास और डर के बन्धनो से बधे रहते हैं मित्र और शत्रु सब हमारे साथ रहते हैं लेकिन स्वप्न से आगे बढ़कर जब हम सुशुप्ति में पहुचते हैं तो शत्रु और मित्र और हम सब एक हो जाते हैं यह सब चाजें ईश्वर अल्लाह की स्मृति, उसके हाफ़ज़े में हमेशा मौजूद रहती हैं, क्योंकि वह सर्वज्ञ है यानी हर शय को जानता है साथ ही उस मुक़ाम पर पहुंचकर ज्ञान का भी लोप हो जाता है हमारी सब याद-दाश्तें, हमारे सुख दुख उस समन्दर की केवल लहरे हैं हम जो सचमुच चाहते हैं वही हमे मिलता है. वही हम हो जाते हैं हमारे दुख सुख सब हमारे ही किये हुए हैं कोई दूसरा हमें मजबूर नही करता, न कर सकता है, क्योंकि दूसरा कोई है ही नहीं.

सब अलग-अलग शरीरो या जीवों के अन्दर एक ही आत्मा है. इसीलिये उसकी इच्छा के वास्ते भी कोई हद नही है. हद किसी ग़ैर से होती है. यहाँ कोई ग़ैर है ही नहीं कोई आत्मा का विरोधी हो तो वह उसे मजबूर करे यहा कोई विरोधी है ही नहीं. जितने विरोध हम सोचते हैं वह सब अपने ही अन्दर खतम हो जाते हैं. सब एक दूसरे को काट डालते हैं यह संसार चक्र जिस में प्रेम और घृणा, नेकी और बदी, हंसी और रोना, सुख और दुख, शत्रु और मित्र सब शामिल हैं आत्मा के काम संकल्प से ही पैदा हुआ है, उसी की लीला है. उसी का नाटक है सब बंधन उसके खुद अपने ऊपर थोपे हुए बन्धन हैं. जब यह बंधन टूटने

دیتا ھے ۔ اس طرح ایک آپے کے انیک آپے دکھائی دینے لگتے ھیں ایک انیک دکھائی دینے لگتا ھے' الگ الگ شریر بن جاتے ھیں ۔ ان شریروں سے اُس ایک آتما کا سمبندھ جڑتا رھتا ھے اور ٹوٹتا رھتا ھے انیک گنوں سے ملکر کوئی ایک چیز یا ایک شریر بنتا ھے اور پھر دیکھنے والا کھوجی ان انیک کے اندر اُس ایک ھی کا دیدار پاتا ھے اور محسوس کرتا ھے کہ وھی اُس کا آپا ھے' وھی ایک ھے' وھی وہ ھے وہ یہ نہیں ھے' یعنی—میں یہ نہیں ھوں ۔

ھر "میں" ایک "میں" ھوتا ھے اسیلئے ھر جیوآتما (روح) انگنت جنموں میں سے نکلتا ھوا امرتا یعنی ابدی زندگی کو پراپت کرتا ھے ۔ کھلاڑی جب ناٹک کھیلنے سے تھک جاتا ھے تو خود چپ چاپ تماشا دیکھنے لگتا ھے جب اُس سے بھی تھک جاتا ھے تو سوپن یعنی خواب کی حالت سے نکلتا ھوا اُس گہری نیند میں پہونچتا ھے جسے یوگ کی بھاشا میں سوشوپتی کہتے ھیں وھی موکش' نروان یا نجات ھے اس حالت میں پہونچکر سب بھید بھاؤ ختم ھو جاتے ھیں جب روح اس نیند سے بھی تھک جاتی ھے تو پھر اگر وہ چاھے تو ایک نئی دنیا میں جاگ سکتی ھے سورگ اور نرک کیول اس جاگتی دنیا کی ھی اچھی بری حالتیں ھیں سوپن کی حالت میں ھم پیار اور نفرت' وشواس اور ڈر کے بندھنوں سے بندھے رھتے ھیں ۔ متر اور شترو سب ھمارے ساتھ رھتے ھیں لیکن سپن سے آگے بڑھکر جب ھم سوشوپتی میں پہونچتے ھیں تو شترو اور متر اور ھم سب ایک ھو جاتے ھیں یہ سب چیزیں ایشور اللہ کی اسمرتی' اُس کے حافظہ میں ھمیشہ موجود رھتی ھیں' کیونکہ وہ سروگیہ ھے یعنی ھر شے کو جانتا ھے ۔ ساتھ ھی اُس مقام پر پہونچکر گیان کا بھی لوپ ھو جاتا ھے ھماری سب یادداشتیں' ھمارے سکھ دکھ اُس سمندر کی کیول لہریں ھیں ھم جو سچ مچ چاھتے ھیں وھی ھمیں ملتا ھے وھی ھم ھو جاتے ھیں ۔ ھمارے سکھ دکھ سب ھمارے ھی کئے ھوئے ھیں' کوئی دوسرا ھمیں مجبور نہیں کرتا' نہ کر سکتا ھے کیونکہ دوسرا کوئی ھے ھی نہیں

سب الگ الگ شریروں یا جیووں کے اندر ایک ھی آتما ھے اسی لئے اُس کی اچھا کے واسطے بھی کوئی حد نہیں ھے ۔ حد کسی غیر سے ھوتی ھے ۔ یہاں کوئی غیر ھے ھی نہیں کوئی آتما کا ورودھی ھو تو وہ اُسے مجبور کرے یہاں کوئی ورودھی ھے ھی نہیں جتنے ورودھ ھم سوچتے ھیں وہ سب اپنے ھی اندر ختم ھو جاتے ھیں سب ایک دوسرے کو کاٹ ڈالتے ھیں ۔ یہ سنسار چکر جس میں پریم اور گھرنا' نیکی اور بدی' ھنسی اور رونا' سکھ اور دکھ' شترو اور متر سب شامل ھیں آتما کے کام سنکلپ سے ھی پیدا ھے' اُسی کی لیلا ھے اُسی کا ناٹک ھے ۔ سب بندھن اُس کے خود اپنے اوپر تھوپے ھوئے بندھن ھیں جب یہ بندھن ٹوٹنے

जाते हैं तो दुई मिट जाती है, फिर सुख दुख और शत्रु मित्र सब एक हो जाते हैं. इस तरह यह संसार उसी 'सूत्र आत्मा' के सहारे चल रहा है

हमारे महा-वाक्य (मैं यह नहीं हूँ) के अन्दर आत्मा का पूरा रूप आ जाता है इस संसार चक्र के चढ़ाव और उतार, प्रवृत्ति और निवृत्ति, आरोह और अवरोह, बन्ध और मोक्ष, जन्म और मृत्यु मे आत्मा बार-बार शरीरो का धारण करता है और बार-बार उतार फेंकता है इस तरह वह 'ग़ैर-आत्मा' को फ़र्ज़ कर लेता है, उसके फ़र्ज़ी वजूद को अपने ऊपर लाद लेता है, और फिर उसे फेंककर, उससे अलग होकर उस अलग वजूद को नेस्त या सिफ़र करते हुए स्वयं एक अकेला अपने आप आत्मा ही आत्मा रह जाता है, और पूरी तरह इस बात को अनुभव कर लेता है कि—मैं यह नहीं हूँ, और मैं ही मैं हूँ, और कुछ है ही नहीं, बाक़ी यह सब महज़ एक फ़रेब और धोखा है, केवल माया है असल वजूद केवल एक ही है और वह आत्मा है.

आध्यात्मिक या दार्शनिक निगाह से उस एक आत्मा के अन्दर, यानी रूहेकुल के अन्दर जो सब मे रमी हुई और सब को सम्हाले हुए है और जो इस समय भी और हर समय परम शान्त है, सब देश, सब काल और सब हरकत यानी गति समाई हुई है हर अलग-अलग रूप सम्बन्ध उस रूहेकुल के साथ एसा ही है जैसा किसी पदार्थ के एक भाग का कुल पदार्थ के साथ, या 'पुत्र' का 'पिता' के साथ. इसीलिए हर अलग रूह बल्कि हर अलग वजूद अपने उस सम्बन्ध का सच्चा साबित करने की तरफ दौड़ता है इसीलिए हर चीज़ सारे देश काल और गति को अपने अन्दर लेने और अपने पिता की पूर्णता अपने मे लाने की कोशिश करती है हर जीवात्मा यानी रूह और हर चीज़ सब रूपो और सब तरह के शरीरों मे से निकलती है हमारे आकाश के यह बड़े बड़े गोले, जैसे धरती, चाँद तारे, सूरज वग़ैरह तेज़ी के साथ इस विशाल जगह (मकान) के अन्दर अनन्त समय से अनन्त समय तक चक्कर लगा रहे हैं इन अनगिनत गोलो के ऊपर अनगिनत जीव और प्राणी भी इन्हीं के साथ-साथ चक्कर खा रहे है ऊपर से देखने में यह सब एक दूसरे से अलग मालूम होते हैं, लेकिन सब एक दूसरे मे गुथे और मिले हुए हैं. किसी का दूसरो से अलग नहीं किया जा सकता. इन सब मे ऐसा सम्बन्ध है जैसा एक शरीर के अन्दर जीवित अणुओं, रगो पट्ठो, बोटिया, हड्डियो, नसो, गैसों, और ख़ून वग़ैरह मे. यह सब एक ही मूल प्रकृति से पैदा होते हैं और उसी मे फिर लीन हो जाते हैं "यह" जो कुछ हमें दिखाई देता है सब उसी मूल प्रकृति से है उसी से इन सब का आहार मिलता है, उसी से शक्ति मिलती है. एक दूसरे से भी आहार मिलता है. इसीलिए एक का मल या बाहर फेंका हुआ सांस दूसरे के लिए खाद

لگتے ہیں تو دوئی مٹ جاتی ہے، پھر سکھ دکھ اور شترو متر سب ایک ہو جاتے ہیں۔ اس طرح یہ سنسار چکر سب اسی "سوتر-آتما" کے سہارے چل رہا ہے۔

ہمارے مہاواکیہ (میں یہ نہیں ہوں) کے اندر آتما کا پورا روپ آجاتا ہے۔ اس سنسار چکر کے چڑھاؤ اور اتار، پرورتی اور نورتی، آروہ اور اوروہ، بندھ اور موکش، جنم اور مرتیو میں آتما بار بار شریروں کو دھارن کرتا ہے اور بار بار اتار پھینکتا ہے اس طرح وہ غیر-آتما کو فرض کرلیتا ہے، اس کے فرضی وجود کو اپنے اوپر لاد لیتا ہے، اور پھر اسے پھینک کر، اس سے الگ ہو کر اس الگ وجود کو نیست یا صفر کرتے ہوئے سوئم ایک اکیلا اپنے آپ آتما ہی آتما رہ جاتا ہے اور پوری طرح اس بات کو انوبھو کر لیتا ہے کہ — میں یہ نہیں ہوں اور میں ہی میں ہوں، اور کچھ ہے ہی نہیں، باقی یہ سب محض ایک فریب اور دھوکا ہے، کیول مایا ہے اصل وجود کیول ایک ہی ہے اور وہ آتما ہے۔

آدھیاتمک یا دارشنک نگاہ سے اس ایک آتما کے اندر، یعنی روح کل کے اندر جو سب میں رمی ہوئی اور سب کو سنبھالے ہوئے ہے اور جو اس سمے بھی اور ہر سمے پرم شانت ہے، سب دیش، سب کال اور سب حرکت یعنی گتی سمائی ہوئی ہے، ہر الگ الگ روپ کا سمبندھ اس روح کل کے ساتھ ایسا ہی ہے جیسا کسی پدارتھ کے ایک بھاگ کا کل پدارتھ کے ساتھ یا 'پتر' کا 'پتا' کے ساتھ اسی لیے ہر الگ روح بلکہ ہر الگ وجود اپنے اس سمبندھ کو سچا ثابت کرنے کی طرف دوڑتا ہے۔ اسی لئے ہر چیز سارے دیش کال اور گتی کو اپنے اندر لینے اور اپنے پتا کی پورنتا اپنے میں لانے کی کوشش کرتی ہے ہر جیو آتما یعنی روح اور ہر چیز سب روپوں اور سب طرح کے شریروں میں سے نکلتی ہے ہمارے آکاش کے یہ بڑے بڑے گولے، جیسے دھرتی، چاند، تارے، سورج وغیرہ، تیزی کے ساتھ اس وشال جگہ (مکان) کے اندر اننت سمے سے اننت سمے تک چکر لگا رہے ہیں۔ ان انگنت گولوں کے اوپر انگنت جیو اور پرانی بھی انہیں کے ساتھ ساتھ چکر کھا رہے ہیں اوپر سے دیکھنے میں یہ سب ایک دوسرے سے الگ معلوم ہوتے ہیں، لیکن سب ایک دوسرے میں گتھے اور ملے ہوئے ہیں کسی کو دوسروں سے الگ نہیں کیا جاسکتا۔ ان سب میں ایسا ہی سمبندھ ہے جیسا ایک شریر کے اندر جیوت انوؤں، رگوں، پٹھوں، بوٹیوں، ہڈیوں، نسوں، گیسوں اور خون وغیرہ میں۔ یہ سب ایک ہی مول پرکرتی سے پیدا ہوتے ہیں اور اسی میں پھر لین ہو جاتے ہیں۔ "یہ" جو کچھ ہمیں دکھائی دیتا ہے سب اسی مول پرکرتی سے ہے۔ اسی سے ان سب کو آہار ملتا ہے، اسی سے شکتی ملتی ہے۔ انہیں ایک دوسرے سے بھی آہار ملتا ہے۔ اسی لئے ایک کا مل یا باہر پھینکا ہوا سانس دوسرے کے لئے کھاد

का आहार है, और एक का आहार दूसरे का मल है. ये सब तरह-तरह के लतीफ़ और कसीफ़ (सूक्ष्म और स्थूल) माद्दे के समन्दरों के अन्दर गोते लगा रहे हैं. सब एक दूसरे के साथ बंधे हुए हैं. हरेक पर हर दूसरे की हर छोटी से छोटी गति और हर तबदीली का असर पड़ता है. यह असर कहीं आकर्षण शक्ति (ग्रेविटेशन) के ज़रिये पड़ता है, कहीं बिजली के ज़रिये, कहीं मक़नातीसी ताक़तों के ज़रिये, और कहीं प्राणियों की दिमाग़ी और रूहानी ताक़तों के ज़रिये. इनमें से हर चीज़ और हर शरीर के अंदर जो माद्दा है वह अनगिनत शरीरों में से होकर निकल चुका है और अनगिनत शरीरों में से होकर निकलता रहेगा. हर जीवात्मा के अंदर जो चेतनाएं, इच्छाएं, क्रियाएं, विचार, भाव, संकल्प, सुखदुख के अनुभव आदि हैं वह सब अनगिनत दूसरी रूहों और दूसरे जीवों में रह चुके हैं और इसी तरह रहते रहेंगे. इन सब चेतनाओं आदि के समूह का नाम ही जीवात्मा या रूह है. इन सब का सदा एक चक्र चलता रहता है जिसके अंदर ये सब एक दूसरे से बंधे हैं. बड़े चक्रों के अंदर छोटे चक्र. गोलों के अंदर गोले, जगत् के अंदर जगत्, निज़ाम के अंदर निज़ाम. अलग-अलग और समूहों में सब एक और सब अलग-अलग. इस प्रवाह का कोई अंत नहीं. हर जगत ज़र्रों का बना हुआ और हर ज़र्रे के अंदर जगत्. इनका तार कहीं टूटता ही नहीं. सब मिलाकर एक विराट शरीर है. इनका यह सतत प्रवाह और इनकी अखण्डता ही ज़ाहिर करती है कि "यह" सब "एक" है. सचमुच सब "एक" है. सचमुच सब एक ही आत्मा है, जो अनादि और अनन्त है. वही "मैं" हूँ. आकाश के इन बेअन्त गोलों सितारों और सैयारों के अनन्त चक्र, उसी 'एक' और उसी 'एकता' की तरफ़ संकेत कर रहे हैं.

दो अलग-अलग निगाहों से इस सब को देखा जा सकता है. एक निगाह अनन्त की निगाह है जो दार्शनिक यानी आध्यात्मिक निगाह है. दूसरी निगाह दिखाई देने वाली नश्वर यानी फ़ानी दुनिया की निगाह है. यह दूसरी निगाह देश, काल और गति के अन्दर रंग बिरंगे तजुरबे की निगाह है. अगर हम इस फ़रक़ को अच्छी तरह समझ लें तो हम इस बात को भी समझ सकते हैं कि आध्यात्मिक यानी रूहानी निगाह से कहीं कोई तबदीली है ही नहीं. 'सर्वम् सर्वत्र सर्वदा सर्वथा' सब, सब समय, सब जगह, सब तरह, एक ही हक़ीक़त है, एक ही वजूद है, एक ही नूर है. एक ही रोशनी है जो तरह-तरह के फ़ानूसों में से ताक-झाँक और चमक रही है. न कोई क्यों और न कोई कैसे. सब एक ही आत्मा है.

ध्यान से सोचने पर यह अच्छी तरह समझ में आ सकता है कि हमारी वह पाँचों इन्द्रियाँ, जिनके ज़रिये हम

یا آہار ہے، اور ایک کا آہار دوسرے کا مل ہے. یہ سب طرح طرح کے لطیف اور کثیف (سوکشم اور استھول) مادے کے سمندروں کے اندر غوطے لگا رہے ہیں. سب ایک دوسرے کے ساتھ بندھے ہوئے ہیں. ہر ایک پر ہر دوسرے کی ہر چھوٹی سے چھوٹی گتی اور ہر تبدیلی کا اثر پڑتا ہے. یہ اثر کہیں اکرشن شکتی (گریویٹیشن) کے ذریعے پڑتا ہے. کہیں بجلی کے ذریعے، کہیں مقناطیسی طاقتوں کے ذریعے، اور کہیں پرانیوں کی دماغی اور روحانی طاقتوں کے ذریعے. اِن میں سے ہر چیز اور ہر شریر کے اندر جو مادہ ہے وہ انگنت شریروں میں سے ہو کر نکل چکا ہے اور انگنت شریروں میں سے ہو کر نکلتا رہیگا. ہر جیو آتما کے اندر جو چیتنائیں، اِچھائیں، کریائیں، وچار، بھاؤ، سنکلپ، سکھ دکھ کے انوبھو آدی ہیں وہ سب انگنت دوسری روحوں اور دوسرے جیوؤں میں رہ چکے ہیں اور اِسی طرح رہتے رہینگے. ان سب چیتناؤں آدی کے سموہ کا نام ہی جیو آتما یا روح ہے. اِن سب کا سدا ایک چکر چلتا رہتا ہے جس کے اندر یہ سب ایک دوسرے سے بندھے ہیں. بڑے چکروں کے اندر چھوٹے چکر. گولوں کے اندر گولے. جگت کے اندر جگت. نظام کے اندر نظام. الگ الگ اور سموہوں میں سب ایک اور سب الگ الگ. اِس پرواہ کا کوئی انت نہیں. ہر جگت ذرّوں کا بنا ہوا اور ہر ذرہ کے اندر جگت. اِن کا تار کہیں ٹوٹتا ہی نہیں. سب ملاکر ایک وراٹ شریر ہے. اِن کا یہ ستت پرواہ اور اِن کی اکھنڈتا ہی ظاہر کرتی ہے کہ "یہ" سب ایک ہے. سچ مچ سب ایک ہی آتما ہے، جو انادی اور اننت ہے. وہی "میں" ہوں. آکاش کے اِن بے انت گولوں، ستاروں اور سیاروں کے اننت چکر اِسی 'ایک' اور اُسی 'ایکتا' کی طرف سنکیت کر رہے ہیں.

دو الگ الگ نگاہوں سے اِس سب کو دیکھا جا سکتا ہے. ایک نگاہ اننت کی نگاہ ہے جو دارشنک یعنی ادھیاتمک نگاہ ہے. دوسری نگاہ دکھائی دینے والی نشور یعنی فانی دنیا کی نگاہ ہے. یہ دوسری نگاہ دیش، کال اور گتی کے اندر رنگ برنگے تجربے کی نگاہ ہے. اگر ہم اِس فرق کو اچھی طرح سمجھ لیں تو ہم اِس بات کو بھی سمجھ سکتے ہیں کہ ادھیاتمک یعنی روحانی نگاہ سے کہیں کوئی تبدیلی ہے ہی نہیں. 'سروم سروتر سروداً سروتھا' سب، سب سمے، سب جگہ، سب طرح، ایک ہی حقیقت ہے، ایک ہی وجود ہے، ایک ہی نور ہے. ایک ہی روشنی ہے جو طرح طرح کے فانوسوں میں سے تاک جھانک اور چمک رہی ہے. نہ کوئی کیوں اور نہ کوئی کیسے. سب ایک ہی آتما ہے.

دھیان سے سوچنے پر یہ اچھی طرح سمجھ میں آسکتا ہے کہ ہماری وہ پانچوں اندریاں، جس کے ذریعے ہم

बाहर के सब पदार्थों को जानते और उनके वजूद को साबित करते हैं, खुद अपने को न जानती हैं और न अपने वजूद को साबित कर सकती हैं. आँख सब चीज़ों को देखती है पर अपने को नहीं देखती, कान बाहर की आवाज़ों का सुनता है पर अपने का नहीं सुनता न हमारी खाल खुद अपने का छू सकती है न ज़बान अपना सवाद ले सकती है, और न नाक अपने को सूँघ सकती है लेकिन "मैं" खुद इन इन्द्रियो को जानता हूँ और 'मैं" ही इनके वजूद का साबित करता हूँ 'मैं" ही यह अनुभव करता, जानता और समझता हूँ कि ये सब इन्द्रिया हैं और देखती, सुनती, छूती, चखती, और सूँघती हैं सच यह है कि मैं'' ही इन इन्द्रियों का रूप धारण करके और खुद इन्द्रियाँ बनकर देखता, सुनता, छूता, चखता और सूँघता हूँ मेरा यह अपने वजूद का ज्ञान ही यह बुनियादी सचाई है, यह वह बुनियादी असलियत है जो और सब असलियतों ,और वजूदों को साबित करती है और जिसे कोई दूसरी चीज़ साबित नहीं कर सकती "मैं' ही सारे अनुभवों के बीच की बिन्दी हूँ, चाहे वह अनुभव अच्छे हो या बुरे, ठीक हों या ग़लत, सुखकर हों या दुखकर. मेरा यह अपने वजूद का ज्ञान व्यापक और सदा एक रस है चाहे वह मेरे अन्दर हा या दूसरो के अन्दर यह विचार या यह विश्वास कि मेरे अलावा 'कोई दूसरा भी है" यह भी मेरा ही विचार या विश्वास है वह "दूसरा" भी मेरे ही यानी मेरे ही विचार या बोध के अन्दर है अन्दर और बाहर दानो अन्दर हैं. कोइ भी 'पदार्थ' और उसका विचार दानो विचार' ही हैं यह फरक करना कि यह काइ पदार्थ है और यह कोई विचार है यह भी मेरा ही विचार है. जिसक अन्दर पदार्थ और विचार दोनो शामिल हैं मानसिक और भौतिक दानो मानसिक हैं अगर हम इन सब बातो का अच्छी तरह समझ ले और मान लें ता हम आसानी से यह भी समझ सकते हैं कि हमारी सब मुसीबतें और हमारे दुख, हमारी खुशियाँ और हमारे सुख, सब हमारे ही अन्दर हैं और सब हमारे "मैं' यानी हमारे आपे ही की सृष्टि हैं

छान्दोग्य उपनिषद् मे लिखा है —'आत्मा ने इच्छा की कि मैं सूँघूँ ता उसने नाक का रूप ले लिया जब उसने चाहा कि मैं सुनूँ तो वह आत्मा ही कान बन गया" लुई बरमन ने अपनी किताब The Personal Equation (P 162) मे लिखा है —''शहतूत का एक छोटा सा कच्चा अकुवा यह तय करता है कि मेरे मुँह हा जिससे मैं दुनिया का खा सकूँ यही उसका मक़सद होता है उसकी इस इच्छा का नतीजा यह होता है कि छोटे से शहतूत की सतह पर एक सूराख़ दिखाई देने लगता है, वह सूराख़ बढ़ता है और बड़ा होता है

باہر کے سب پدارتھوں کو جانتے اور اُن کے وجود کو ثابت کرتے ہیں' خود اپنے کو نہ جانتی ہیں اور نہ اپنے وجود کو ثابت کر سکتی ہیں آنکھ سب چیزوں کو دیکھتی ہے پر اپنے کو نہیں دیکھتی' کان باہر کی آوازوں کو سنتا ہے پر اپنے کو نہیں سنتا ۔ نہ ہماری کھال خود اپنے کو چھو سکتی ہے' نہ زبان اپنا سواد لے سکتی ہے' اور نہ ناک اپنے کو سونگھ سکتی ہے ۔ لیکن "میں' خود ان سب اندریوں کو جانتا ہوں اور "میں' ہی ان کے وجود کو ثابت کرتا ہوں "میں" ہی یہ انوبھو کرتا' جانتا اور سمجھتا ہوں کہ یہ سب اندریاں ہیں اور دیکھتی' سنتی چھوتی' چکھتی اور سونگھتی ہیں ۔ سچ یہ ہے کہ "میں" ہی ان اندریوں کا روپ دھارن کر کے اور خود اندریاں بن کر دیکھتا' سنتا" چھوتا' چکھتا اور سونگھتا ہوں میرا یہ اپنے وجود کا گیان ہی وہ بنیادی سچائی ہے یا وہ بنیادی اصلیت ہے جو اور سب اصلیتوں اور وجودوں کو ثابت کرتی ہے اور جسے کوئی دوسری چیز ثابت نہیں کر سکتی "میں' ہی سارے انوبھووں کے بیچ کی بندی ہوں' چاہے وہ انوبھو اچھے ہوں یا برے' ٹھیک ہوں یا غلط' سکھکر ہوں یا دکھکر میرا یہ اپنے وجود کا گیان ویاپک او سدا ایکرس ہے چاہے وہ میرے اندر ہو یا دوسروں کے اندر یہ وچار یا یہ وشواس کہ میرے علاوہ "کوئی دوسرا بھی ہے" یہ بھی میرا ہی وچار یا وشواس ہے وہ "دوسرا" بھی میرے ہی یعنی میرے ہی وچار یا بودھ کے اندر ہے ۔ اندر اور باہر دونوں اندر ہیں کوئی بھی 'پدارتھ' اور اُس کا وچار دونوں "وچار' ہی ہیں یہ فرق کرنا کہ یہ کوئی پدارتھ ہے اور یہ کوئی وچار ہے یہ بھی میرا ہی وچار ہے جس کے اندر پدارتھ اور وچار دونوں شامل ہیں مانسک اور بھوتک دونوں مانسک ہیں اگر ہم ان سب باتوں کو اچھی طرح سمجھ لیں اور مان لیں تو ہم آسانی سے یہ بھی سمجھ سکتے ہیں کہ ہماری سب مصیبتیں اور اور ہمارے دکھ' ہماری خوشیاں اور ہمارے سکھ سب ہمارے ہی اندر ہیں اور سب ہماری "میں' یعنی ہمارے آپے ہی کی سرشٹی ہیں

چھاندوگیہ اُپنشد میں لکھا ہے — "آتما نے اچھا کی کہ میں سونگھوں تو اُس نے ناک کا روپ لے لیا' جب اُس نے چاہا کہ میں سنوں تو وہ آتما ہی کان بن گیا" لوئی برمن نے اپنی کتاب The Personal Equation (P 162) میں لکھا ہے—شہتوت کا چھوٹا سا کچا انوایہ طے کرتا ہے کہ میرے منھ ہو جس سے میں دنیا کو کھاسکوں۔ یہی اس کا مقصد ہوتا ہے. اس کی اِس اِچھا کا نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ چھوٹے سے شہتوت کی سطح پر ایک سوراخ دکھائی دینے لگتا ہے' وہ سوراخ بڑھتا ہے اور بڑا ہوتا ہے

यहाँ तक कि वह एक प्याली की शकल का दिखाई देने लगता है." जीव विज्ञान (Biology) के विद्वानों में एक नए विचार के लोग पैदा हो गए हैं जिनकी तादाद दिन-दिन बढ़ती जा रही है. वह मानते हैं कि वनस्पति में भी वैसी ही जान होती है जैसी जानवरों या आदमियो में उनकी किताबों में हमारी ऊपर की बात का खूब समर्थन मिलेगा. इस तरह पुराना फ़लसफ़ा और नई साइन्स दोनों की इस बारे में एक ही राय है.

हमें यह भी याद रखना चाहिये कि 'आत्मा' शब्द का अर्थ 'अद्' धातु से 'खाने वाला' ही होता है जो सारे विषयों को खावे वह आत्मा.

आजकल के Psycho-analytic साहित्य में और इस लेखक की किताब The Science of Emotions में बताया गया है कि आदमी का आपा किस तरह खुद दुखों और ताक़तो को चाहता है और सचमुच खुद उन्हे अपने ऊपर लेता है

आत्मा खुद अपनी इच्छा, अपनी खुशी / और अपनी मरजी से सब चीजों को गढ़ता है. हम अपने से यह पूछें कि हमने अमुक काम क्यो किया, तब हम कोई न कोई वजह बतला देंगे. लेकिन अन्त मे इस तरह के सब सवालों का जवाब यही मिलता है कि —क्योंकि यही मेरी इच्छा थी, ऐसा करने मे ही मेरी खुशी थी, अपने को खुद तकलीफ़ देने में ही मुझे खुशी थी. यहाँ आकर सब सवाल खतम हो जाते हैं.

हर चीज मुक़ाबिल से साबित होती है आत्मा अपने मुक़ाबिल मे एक गैर-आत्मा की कल्पना करता है उसका खाका बनाता है और फिर उसी के ज़रिये अपने सामने खुद अपने वजूद को साबित करता है अगर हम सुख भोगना चाहते हैं तो उसका केवल यही तरीक़ा है कि हम दुख की कल्पना करें, दुख की तरफ बढें, दुख अनुभव करें और दुख भोगें, और इस तरह दुख से सुख को अलग करें और दोनो में फ़रक़ करें, सुषुप्ति यानी गहरी नींद मे, चाहे वह व्यक्तिगत हो या प्रलय की नींद हो, न सुख रहता है और न दुख, उस हालत में कोई फ़रक़ रह ही नही जाता, लेकिन जागरन यानी बेदारी की हालत मे चाहे वह व्यक्तिगत हो और चाहे सब की, चाहे पिन्ड की हो और चाहे ब्रह्मान्ड की, परस्पर विरोधी हालतों का होना जरूरी है.

कोई प्राणी जब कोई दर्द अनुभव करता है, अपने को मजबूर और घिरा हुआ पाता है तब वह उस घेरे में से निकलने का रास्ता खोजता है, अपने दर्द का इलाज ढूँढता है. सब रुकावटों, रोगों और दर्दों का अन्तिम इलाज भी यही है कि हम इस बात को अनुभव करें कि हमारा अपना आपा, हमारी आत्मा, अनादि, अनन्त, अजर, अमर और

یہاں تک کہ وہ ایک پیالی کی شکل کا دکھائی دینے لگتا ہے." جیو وگیان (Biology) کے ودوانوں میں ایک نئے وچار کے لوگ پیدا ہو گئے ہیں جن کی تعداد دن دن بڑھتی جا رہی ہے. وہ مانتے ہیں کہ ونسپتی میں بھی ویسی ہی جان ہوتی ہے جیسی جانوروں یا آدمیوں میں. اُن کی کتابوں میں ہماری اوپر کی بات کا خوب سمرتھن ملیگا. اس طرح پرانا فلسفہ اور نئی سائنس دونوں کی اس بارے میں ایک ہی رائے ہے.

ہمیں یہ بھی یاد رکھنا چاہیئے کہ 'آتما' شبد کا ایک ارتھ 'اد' دھاتو سے 'کھانے والا' ہی ہوتا ہے جو سارے وشیوں کو کھاوے وہ آتما.

آجکل کے Psycho analytic ساہتیہ میں اور اس لیکھک کی کتاب The Science of Emotions میں بتایا گیا ہے کہ آدمی کا آپا کس طرح خود دکھوں اور آفتوں کو چاہتا ہے اور سچ مچ خود انہیں اپنے اوپر لیتا ہے.

آتما خود اپنی اچھا، اپنی خوشی اور اپنی مرضی سے سب چیزوں کو گڑھتا ہے ہم اپنے سے یہ پوچھیں کہ ہم نے امک کام کیوں کیا، تو ہم کوئی نہ کوئی وجہ بتا دینگے کسی دوسرے کام کی بابت ہم وہی بات پوچھیں تب ہم کوئی دوسری وجہ بتا دینگے لیکن انت میں اس طرح کے سب سوالوں کا جواب یہی ملتا ہے کہ —کیونکہ یہی میری اچھا تھی، ایسا کرنے میں ہی میری خوشی تھی، اپنے کو خود تکلیف دینے میں ہی مجھے خوشی تھی یہاں آکر سب سوال ختم ہو جاتے ہیں

ہر چیز اپنے مقابل سے ثابت ہوتی ہے آتما اپنے مقابل میں ایک غیر-آتما کی کلپنا کرتا ہے اُس کا خاکہ بناتا ہے اور پھر اُسی کے ذریعے اپنے سامنے خود اپنے وجود کو ثابت کرتا ہے اگر ہم سکھ بھوگنا چاہتے ہیں تو اُس کا کیول یہی طریقہ ہے کہ ہم دکھ کی کلپنا کریں، دکھ کی طرف بڑھیں، دکھ انوبھو کریں اور دکھ بھوگیں، اور اس طرح دکھ سے سکھ کو الگ کریں اور دونوں میں فرق کریں. سوشوپتی یعنی گہری نیند میں، چاہے وہ ویکتی گت ہو یا پرلے کی نیند ہو، نہ سکھ رہتا ہے اور نہ دکھ. اُس حالت میں کوئی فرق رہ ہی نہیں جاتا. لیکن جاگرن یعنی بیداری کی حالت میں، چاہے وہ ویکتی گت ہو اور چاہے سب کی، چاہے پنڈ کی ہو اور چاہے برہمانڈ کی، پرسپر ورودھی حالتوں کا ہونا ضروری ہے.

کوئی پرانی جب کوئی درد انوبھو کرتا ہے، اپنے کو مجبور اور گھرا ہوا پاتا ہے تب وہ اُس گھیرے میں سے نکلنے کا راستہ کھوجتا ہے، اپنے درد کا علاج ڈھونڈھتا ہے. سب روکاوٹوں، روگوں اور دردوں کا انتم علاج بھی یہی ہے کہ ہم اِس بات کو انوبھو کریں کہ ہمارا اپنا آپا، ہماری آتما، انادی، اننت، اجر، اور

... है. जब हम इस सचाई को अनुभव कर लेते और स्वयं अपनी आत्मा को पहचान लेते हैं. तब ही सब ... के डर और शंकाएं दूर होती हैं, और आत्म निर्भरता और मुक्ति यानी निजात का आनन्द प्राप्त होता है. मुहम्मद साहब की एक मशहूर हदीस है—"जिसने अपने आप को पहचान लिया उसने अपने रब्ब को पहचान लिया."

सब सवालों का यही अन्तिम जवाब है.

यहाँ पहुंच कर सब खोज खत्म हो जाती है. आत्मा को पूरी शान्ति और पूर्णानन्द प्राप्त हो जाता है. यह तब ही सम्भव है जब हम पहले यह समझलें कि यह जो कुछ बाहर दिखाई दे रहा है—"मैं" यह नहीं (हूँ).

एक अंश में इसकी एक छोटी सी मिसाल यह दी जा सकती है कि एक बड़ी किताब के अन्दर वे सब तब्दीलियां लिखी हुई हैं जो लाखों और करोड़ों बरस के बाद इस धरती के मादे, उसकी बनावट और उसके रूप वग़ैरह में होती रही हैं. वे सब तब्दीलियां उस किताब में एक साथ दर्ज हैं. जीवों और मनुष्यों का पूरा इतिहास भी शुरू से अब तक का उसके अन्दर दर्ज है. लेकिन पढ़ने वालो को वह हजारो घटनाएं तरतीबवार एक दूसरे के बाद होती हुई ही मालूम होती हैं, एक साथ नहीं.

आजकल की साइन्स की नई-नई ईजादें—फ़ोटोग्राफ़ी, ग्रैमोफ़ोन, रेडियो, सिनेमा, टेलीफ़ोन, वग़ैरा से भी पता चलता है कि सब चीजें, सदा सब जगह एक साथ मौजूद हैं. इंगलैंड के कवि टैनिसन ने किसी ख़ास प्रकाश की हालत में एक जगह बहुत अच्छा कहा है:—For was and is and will be are but is—यानी—'था', 'है' और 'होगा' तीनों असल में 'है' ही हैं. अध्यात्म यानी इल्मे रूहानी यह बात उतनी ही सच है जितनी यह कि एक और एक दो होते हैं.

हमारी याददाश्त यानी स्मरनशक्ति भी इस की एक ख़ासी अच्छी मिसाल है. हमारे अब तक के जीवन की सारी घटनाएं उसमें एक साथ जमा रहती हैं, सब एक साथ और पूरी-पूरी. वहां सब 'भूत' 'वर्त्तमान' होता है. हिपनोटिज्म में आदमी के अन्दर सब पुरानी यादें जिस तरह जाग उठती हैं वह इसका और भी सुन्दर सबूत हैं. इस बारे में जितनी साइन्सी खोज अब तक हुई हैं उसमें भविष्य की घटनाओं के पहले से साफ़-साफ़ ज्ञान की भी मिसालें मिलती हैं. जो लोग ज्योतिष विद्या यानी इल्मे नजूम में कुछ सचाई का अंश पाते हैं वह आसानी से समझ सकते हैं कि भूत यानी माज़ी और भविष्य यानी आइन्दा दोनों वर्तमान यानी हाल के अन्दर मौजूद हैं.

سدا ایکرس ہے ۔ جب ہم اِس سچائی کو انوبھو کر لیتے ہیں اور سوئیم اپنی آتما کو پہچان لیتے ہیں' تب ہی سب طرح کے ڈر اور شنکائیں دور ہوتی ہیں' اور آتم نربھرتا اور مکتی یعنی نجات کا آنند پراپت ہوتا ہے ۔ محمد صاحب کی ایک مشہور حدیث ہے— "جس نے اپنے آپ کو پہچان لیا اُس نے اپنے رب کو پہچان لیا ۔"

سب سوالوں کا یہی انتم جواب ہے ۔

یہاں پہونچکر سب کھوج ختم ہو جاتی ہے ۔ آتما کو پوری شانتی اور پورنانند پراپت ہو جاتا ہے ۔ یہ تب ہی سمبھو ہے جب ہم پہلے یہ سمجھ لیں کہ یہ جو کچھ باہر دکھائی دے رہا ہے— "میں یہ نہیں (ہوں) ."

ایک انش میں اِس کی ایک چھوٹی سی مثال یہ دی جاسکتی ہے کہ ایک بڑی کتاب کے اندر وے سب تبدیلیاں لکھی ہوئی ہیں جو لاکھوں اور کروڑوں برس کے اندر ایک دوسرے سے بعد اِس دھرتی کے مادے' اُس کی بناوٹ اور اُس کے روپ وغیرہ میں ہوتی رہی ہیں وے سب تبدیلیاں اُس کتاب میں ایک ساتھ درج ہیں ۔ جیوں اور منشیوں کا پورا اِتہاس بھی شروع سے اب تک کا اُس کے اندر درج ہے ۔ لیکن پڑھنے والے کو وہ ہزاروں گھٹنائیں ترتیب وار ایک دوسرے کے بعد ہوتی ہوئی ہی معلوم ہوتی ہیں' ایک ساتھ نہیں ۔

آجکل کی سائنس کی نئی نئی ایجادیں—فوٹو گرافی' گراموفون' ریڈیو' سنیما' ٹیلیفون' وغیرہ سے بھی پتہ چلتا ہے کہ سب چیزیں' سدا سب جگہہ ایک ساتھ موجود ہیں ۔ انگلینڈ کے کوی ٹینیسن نے کسی خاص پرکاش کی حالت میں ایک جگہہ بہت اچھا کہا ہے :—For was and is and will be are but is—یعنی—'تھا' ہے اور ہوگا تینوں اصل میں 'ہے' ہی ہیں ۔ ادھیاتم یعنی علم روحانی میں یہ بات اُتنی ہی سچ ہے جتنی یہ کہ ایک اور ایک دو ہوتے ہیں ۔

ہماری یاد داشت یعنی اسمرن شکتی بھی اِس کی ایک خاصی اچھی مثال ہے ۔ ہمارے اب تک کے جیون کی ساری گھٹنائیں اُس میں ایک ساتھ جمع رہتی ہیں' سب ایک ساتھ ور پوری پوری ۔ وہاں سب 'بھوت' 'ورتمان' ہوتا ہے ۔ ہپناٹزم میں آدمی کے اندر سب پرانی یاد جس طرح جاگ اُٹھتی ہیں وہ اِس کا اور بھی سندر ثبوت ہیں ۔ اِس بارے میں جتنی سائنسی کھوج اب تک ہوئی ہے اُس میں بھوشیہ کی گھٹناؤں کے پہلے صاف سے صاف گیان کی بھی مثالیں ملتی ہیں ۔ جولوگ جیوتش ودیا یعنی علم نجوم میں کچھ سچائی کا انش پاتے ہیں وہ آسانی سے سمجھ سکتے ہیں کہ بھوت یعنی ماضی اور بھوشیہ یعنی آئندہ دونو ورتمان یعنی حال کے اندر موجود ہیں ۔

अल्लाह के हाफ़िज़े यानी परमात्मा या रूहेकुल स्मृति में सब चीज़ें, सब घटनाएं, एक साथ, एक समय मौजूद हैं, वहां भूत, भविष्यत् और वर्तमान सब एक हैं. क़ुरान में उसी को "लौहेमहफ़ूज़" कहा गया है. वही असली वेद, असली इंजील और असली क़ुरान है. क़ुरान में उसे 'सब धार्मिक किताबों की मां' भी कहा गया है. जो सर्वज्ञ है उसके लिये न कोई भूत है न भविष्य. सारा संसार चक्र उसके अन्दर है. अनगिनत रूहें, जीव, जन्तु, अनगिनत घटनाएं और सारा इतिहास जो हो चुका है और जो होना है, वह सब हमेशा से हमेशा के लिये उसके अन्दर है. ये सब उसी अमर किताब के पन्ने हैं. इस संसार चक्र से ऊपर उठकर ही आत्मा उसे समझ सकता है और अपने अनादि अनन्त रूप को पहचान सकता है.

الله کے حافظے یعنی پرماتما یا روح کل کی اِسمرتی میں سب چیزیں، سب گھٹنائیں، ایک ساتھ ایک سمئے موجود ہیں. وہاں بھوت، بھوشیت اور ورتمان سب ایک ہیں. قران میں اُسی کو "لوحِ محفوظ" کہا گیا ہے. وہی اصلی وید، اصلی انجیل اور اصلی قرآن ہے. قرآن میں اُسے 'سب دھارمک کتابوں کی ماں' بھی کہا گیا ہے. جو سروگیہ ہے اُس کے لئے نہ کوئی بھوت ہے نہ بھوشیہ. سارا سنسار چکر اُس کے اندر ہے. انگنت روحیں، جیو، جنتو، انگنت گھٹنائیں اور سارا اِتہاس جو ہو چکا ہے اور جو ہونا ہے وہ سب ہمیشہ سے ہمیشہ کے لئے اُس کے اندر ہے. یہ سب اُسی امر کتاب کے پنے ہیں. اِس سنسار چکر سے اُوپر اُٹھکر ہی آتما اُسے سمجھ سکتا ہے اور اپنے انادی انت روپ کو پہچان سکتا ہے.

समाज सुधार और समाज सुधारक

महात्मा भगवानदीन

[पिछले नम्बर से आगे]

आजकल के विज्ञानी कुछ जानवरों को खास-खास चीज खिलाकर रखते हैं और फिर देखते हैं कि दो जानवरों का अलग-अलग चीज खाकर क्या हाल रहा. और फिर वह अपने नतीजों को दुनिया के सामने रख देते हैं.

आइये हम भी परीक्षा भवन में प्रवेश करें. एक ऐसे समाज को लीजिये कि जिसने अपने में एक महापुरुष को जन्म दिया और एक ऐसे समाज को लीजिये जिसने अब तक किसी महापुरुष को जन्म नहीं दिया और फिर दोनों के आज के कारनामों की जाँच कीजिये और देखिये कि क्या नतीजा होता है ? उदाहरण के लिए यहूदी समाज को ले लीजिए. इसने ईसा को जन्म दिया. हजरत ईसा का सिद्धान्त था कि तुम्हारे गाल पर अगर कोई चपत मारे तो दूसरा गाल भी थप्पड़ के लिये उसकी तरफ फेर दो. और आज हैं उन्हीं के अनुयायी जो हिरोशिमा पर एटम बम गिराकर लाखों जानें पट कर गए. अब इसी के मुक़ाबले में लीजिये टुंड्रा के रहने वाले ऐस्कीमों और नागा पहाड़ियों के रहने वाले नागा या और जगह-जगह के आदिमवासी,—क्या किसी ने भी अपनी जात पर या पराई जात पर ऐसे अनहोने जुल्म तोड़े हैं ?

यह महापुरुष के अनुयायी ही क्यों इतने क्रूर बन जाते हैं ? क्या इसमें महापुरुष का हाथ बिलकुल नहीं होता ? मेरे खयाल से सौ के सौ फ़ीसदी यही चिल्लाकर कह बैठेंगे कि इसमें महापुरुष का क्या दोष ? उसने तो ऐसा कभी नहीं सिखाया था. उसकी बताई हुई किताब के किसी भी शब्द से टेढ़े-सीधे यह अर्थ निकलते ही नहीं कि लड़ाई में लाखों की जानें ले लो. फिर इसमें महापुरुष का क्या दोष ?

अब हम अपने पाठकों से ये पूछेंगे कि धर्म के रंग में चूर माँ या बाप अपने एक बच्चे को उपवास के फल का सब्ज बाग़ दिखलाकर उसे उपवास के लिये तैयार करते हैं. लड़के की उम्र है बारह बरस की. वह उपवास की प्रतिज्ञा ले बैठता है. दोपहर के बारह बजे के बाद से ही उसके पेट में खुद-बुद शुरू होती है. खाना माँगना या खाना वह अपनी शान के खिलाफ़ समझता है. थोड़ी देर में प्यास भी जाग जाती है. अब तो वह और भी घबराता है. उसमें सूझ-बूझ जाग जाती है. पानी की पट्टी पेट पर रखकर प्यास बुझाने की कोशिश करता है. धीरे-धीरे पट्टी छाती तक पहुँचती है, फिर गले

سماج سدھار اور سماج سدھارک

مہاتما بھگوان دین

[پچھلے نمبر سے آگے]

آجکل کے وگیانی کچھ جانوروں کو خاص خاص چیز کھلاکر رکھتے ہیں اور پھر دیکھتے ہیں کہ دو جانوروں کا الگ الگ چیز کھاکر کیا حال رہا ۔ اور پھر وہ اپنے نتیجوں کو دنیا کے سامنے رکھ دیتے ہیں ۔

آئیے ہم بھی پریکشا بھون میں پرویش کریں ۔ ایک ایسے سماج کو لیجئے کہ جسنے اپنے میں ایک مہاپرش کو جنم دیا اور ایک ایسے سماج کو لیجئے جس نے اب تک کسی مہاپرش کو جنم نہیں دیا پھر دونوں کے آج کے کارناموں کی جانچ کیجئے اور دیکھئے کہ کیا نتیجہ ہوتا ہے ؟ اداہرن کے لئے یہودی سماج کو لے لیجئے. اِس نے عیسیٰ کو جنم دیا ۔ حضرت عیسیٰ کا سدھانت تھا کہ تمھارے گال پر اگر کوئی چپت مارے تو دوسرا گال بھی تھپڑ کے لئے اُس کی طرف پھیر دو ۔ اور آج ہیں اُنھیں کے انویائی جو ھیرو شیما پر ایٹم بم گرا کر لاکھوں جانیں پٹ کر گئے ۔ اب اِسی کے مقابلے میں لیجئے ٹنڈرا کے رہنے والے ایسکیمو اور ناگا پہاڑیوں کے رہنے والے ناگا یا اور جگہہ جگہہ کے آدم واسی — کیا کسی نے بھی اپنی جات پر یا پرائی جات پر ایسے انہونے ظلم توڑے ہیں ؟

یہ مہاپرش کے انویائی ہی کیوں اِتنے کرور بن جاتے ہیں ؟ کیا اِس میں مہاپرش کا ہاتھ بالکل نہیں ہوتا ؟ میرے خیال سے سو کے سو فیصدی یہی چلا کر کہہ بیٹھینگے کہ اِس میں مہاپرش کا کیا دوش ؟ اُس نے تو ایسا کبھی نہیں سکھایا تھا ۔ اُس کی بتائی ہوئی کتاب کے کسی بھی شبد سے ٹیڑھے سیدھے یہ ارتھ نکلتے ہی نہیں کہ لڑائی میں لاکھوں کی جانیں لے لو ۔ پھر اِس میں مہاپرش کا کیا دوش ؟

اب ہم اپنے پاٹھکوں سے یہ پوچھینگے کہ دھرم کے رنگ میں چور ماں یا باپ اپنے ایک بچے کو اُپواس کے پھل کا سبز باغ دکھلا کر اُسے اُپواس کے لئے تیار کرتے ہیں ۔ لڑکے کی عمر ہے بارہ برس کی ۔ وہ اُپواس کی پرتگیا لے بیٹھتا ہے. دوپہر کے بارہ بجے کے بعد سے ہی اُس کے پیٹ میں کھد بد شروع ہوتی ہے ۔ کھانا مانگنا یا کھانا وہ اپنی شان کے خلاف سمجھتا ہے ۔ تھوڑی دیر میں پیاس بھی جاگ جاتی ہے. اب تو وہ اور بھی گھبراتا ہے ۔ اُس میں سوجھ بوجھ جاگ جاتی ہے ۔ پانی کی پٹی پیٹ پر رکھکر پیاس بجھانے کی کوشش کرتا ہے ۔ دھیرے دھیرے پٹی چھاتی تک پہونچتی ہے، پھر گلے

तक, गाल तक, होंठ तक और जीभ के अग्र भाग तक. और भी तरह-तरह की ध्यान बटाने की कोशिशों में लगता है. किसी तरह शाम के चार बजा देता है. अब उसकी हिम्मत टूट चुकी होती है और वह चोरी पर उतारू हो जाता है. जहाँ चाह होती है वहाँ राह निकल आती है. कहीं से लड्डू पा जाता है. खाता है, पानी पा जाता है, प्यास बुझाता है और सबकी नज़रों में अपना उपवास बनाए रखता है, शान बनाए रखता है. खुलासा यह कि वह सत्यव्रत को लतिया देता है, अहिंसा व्रत को भूल जाता है, अचौर्य की खिल्ली उड़ाता है, अपरिग्रह को बेमतलब समझता है, शील और ब्रह्मचर्य को धता बताता है. उपवास नाम का झूठा व्रत पाँच सच्चे व्रतों को खा जाता है. क्या इसमें बच्चे का दोष है ? आप कहेंगे—"क्या इसमें माँ-बाप का दोष है ? माँ-बाप ने कब कहा था कि चोरी से लड्डू खाना, चोरी से पानी पीना." पाठक हमें माफ़ करें. बच्चे का इसमें कोई क़ुसूर नहीं. सोलहों आने माँ-बाप का दोष है. उन्होंने न पात्र देखा, न काल देखा, न क्षेत्र देखा, न द्रव्य, न भाव. समाज जिस तरह रह रहा है बालक ने उसी का अनुकरण किया. उसने कोई ग़लती नहीं की. ऊपर का उदाहरण रखकर हम यह कहना चाहते हैं कि महापुरुष समाज को एकदम भलाई के पहाड़ की चोटी पर चढ़ा देते हैं. वह समय बे समय, पात्र अपात्र नहीं देखते—न देख सकते हैं. वे अपने ऊपर के मन में भले ही पूरे वीतरागी हों पर उनका अंतस्तल पूजा का भूखा होता है. वही उनके सब कामों का प्रेरक होता है. वही उन्हें मजबूर करता है कि वे समाज को इतना ऊँचा ले जाय और ऐसी जगह ले जायं कि जहाँ वह उनकी मदद के बिना एक पल भी न टिक सकें और अगर वह ज़ियादा जीवित रहें तो ख़ुद ही थककर उन्हें गिरते हुए देख सकें. महापुरुष अपने अंतस्तल से वाक़िफ़ नहीं होते और अगर हो भी जाते हैं तो वह उस जगह से हटना पसन्द नहीं करते जो जगह उन्होंने पा ली है, और अगर हिम्मत करके वह अपनी जगह छोड़ भी दें तो समाज उनको उस रोगी की तरह छोड़ती भी नहीं है जिस रोगी को किसी वैद्य ने एक बार चमत्कार करके बहुत स्वस्थ बना दिया हो. यूं महापुरुष अपने बनाए हुए जाले में आप फँस जाते हैं. जो समाज भलाई के पहाड़ की चोटी पर चढ़ चुका होता है वह वहाँ से गिरकर उस वक़्त तक दम नहीं लेता जबतक बुराई के गर्त के तले में न पहुँच जाय. हज़रत ईसा के अहिंसक समाज ने यह सब करके दिखा दिया. बुद्ध और महावीर के अनुयायी चन्द्रगुप्त और अशोक जैसे राजा पहले ही करके दिखा चुके हैं. दया मूर्ति मुहम्मद साहब के अनुयायी जितने ज़ुल्म तोड़ चुके हैं वह कुछ कम नहीं हैं. नादिरशाह के

تک، گال تک، ہونٹ تک اور جیبھ کے اگر بھاگ تک. اور بھی طرح طرح کی دھیان بٹانے کی کوششوں میں لگتا ہے. کسی طرح شام کے چار بجا دیتا ہے. اب اُس کی ہمت ٹوٹ چکی ہوتی ہے اور وہ چوری پر اُتارو ہو جاتا ہے. جہاں چاہ ہوتی ہے وہاں راہ نکل آتی ہے، کہیں سے لڈو پا جاتا ہے. کھاتا ہے، پانی پا جاتا ہے، پیاس بجھاتا ہے اور سب کی نظروں میں اپنا اُپواس بنائے رکھتا ہے، شان بنائے رکھتا ہے. خلاصہ یہ کہ یہ ستیہ ورت کو لتیا دیتا ہے، اہنسا ورت کو بھول جاتا ہے، اچوریہ کی کھلی اُڑاتا ہے، اپریگرہ کو بے مطلب سمجھتا ہے، شیل اور برہمچریہ کو دھتا بتاتا ہے. اُپواس نام کا جھوٹا ورت پانچ سچے ورتوں کو کھا جاتا ہے. کیا اِس میں بچے کا دوش ہے ؟ آپ کہینگے—"کیا اِس میں ماں باپ کا دوش ہے ؟ ماں باپ نے کب کہا تھا کہ چوری سے لڈو کھانا، چوری سے پانی پینا." پاٹھک ہمیں معاف کریں. بچے کا اِس میں کوئی قصور نہیں. سولہوں آنے ماں باپ کا دوش ہے. اُنہوں نے نہ پاتر دیکھا، نہ کال دیکھا، نہ چھیتر دیکھا، نہ درویہ، نہ بھاؤ. سماج جس طرح رہ رہا ہے بالک نے اُسی کا انوکرن کیا. اُس نے کوئی غلطی نہیں کی. اُوپر کا اُداہرن رکھکر ہم یہ کہنا چاہتے ہیں کہ مہاپرش سماج کو ایکدم بھلائی کے پہاڑ کی چوٹی پر چڑھا دیتے ہیں. وہ سمے بے سمے پاتر اپاتر نہیں دیکھتے—نہ دیکھ سکتے ہیں. وے اپنے اوپر کے من میں بھلے ہی پورے ویتراگی ہوں پر اُن کا انتستل پوجا کا بھوکا ہوتا ہے. وہی اُن کے سب کاموں کا پریرک ہوتا ہے. وہی اُنہیں مجبور کرتا ہے کہ وے سماج کو اِتنا اُونچا لے جائیں اور ایسی جگہہ لے جائیں کہ جہاں وہ اُن کی مدد کے بنا ایک پل بھی نہ ٹک سکیں اور اگر وہ زیادہ جیوت رہیں تو خود ہی تھک کر اُنہیں گرتے ہوئے دیکھ سکیں. مہاپرش اپنے انتستل سے واقف نہیں ہوتے اور اگر ہو بھی جاتے ہیں تو وہ اُس جگہہ سے ہٹنا پسند نہیں کرتے جو جگہہ اُنہوں نے پالی ہے، اور اگر ہمت کر کے وہ اپنی جگہہ چھوڑ بھی دیں تو سماج اُن کو اُس روگی کی طرح چھوڑتی بھی نہیں ہے جس روگی کو کسی وید نے ایکبار چمتکار کر کے بہت سوستھ بنا دیا ہو. یوں مہاپرش اپنے بنائے ہوئے جالے میں آپ پھنس جاتے ہیں. جو سماج بھلائی کے پہاڑ کی چوٹی پر چڑھ چکا ہوتا ہے وہ وہاں سے گر کر اُس وقت تک دم نہیں لیتا جب تک برائی کے گرت کے تلے میں نہ پہونچ جائے. حضرت عیسیٰ کے اہنسک سماج نے یہ سب کر کے دکھا دیا. بدھ اور مہاویر کے انویائی چندرگپت اور اشوک جیسے راجا پہلے ہی کر کے دکھا چکے ہیں. دیا کی مورتی محمد صاحب کے انویائی جتنے ظلم توڑ چکے ہیں وہ کچھ کم نہیں ہیں. نادرشاہ کے

[illegible] नाम से कोई अपरिचित नहीं है. हमारे युग के नए महापुरुष गाँधीजी की अहिंसा आज क्या रंग ला रही है और आगे क्या क्या रंग लाएगी इस का अनुमान नहीं लगाया जा सकता. गाँधीजी के ग्यारह व्रत किस रूप में फल रहे हैं यह किसी से छिपे हुए नहीं हैं. इसमें लोगों को भले ही अचरज हो हमें अचरज नहीं. हम अच्छी तरह समझते हैं. बहुत खाने के लिये ही भूखों मरा जाता है, बहुत पहनने के लिये ही नंगा रहा जाता है. बहुत मालदार बनने के लिये ही भिखारी बना जाता है, बहुत सुख के खातिर ही तपस्या की जाती है. पर हम तो यहाँ सिर्फ़ यह बताना चाहते हैं कि अगर संसार ने महापुरुषों को जन्म न दिया होता तो आज हम कहाँ होते ?

ऊपर के सवाल का जवाब हम बिलकुल ठीक तो नहीं दे सकते—अंदाज़न ही बता सकते हैं और वह हमारा जवाब यह है कि बेमहापुरुषों के इस भारतवर्ष में आज चाहे रेलें न होतीं, बिजली न होती, बड़े-बड़े कल कारखाने न होते, पर हम भूखों न मरते होते. हाँ हमारे यहाँ चोर डाकू भी होते पर वह सीमित चोरी कर रहे होते. लाखों की जानें न ले रहे होते. जिस तरह पांच लाख हिन्दू मुसलमान मरे वैसा कभी न हुआ होता. जैसे पशुओं को शरमिन्दा कर देने वाले कृत्य हिन्दू मुसलमानों ने धर्म की रू से तुच्छ कहलाने वाले स्वराज की ख़ातिर किये वैसे कभी न होते. प्रमाण में हम आदिमजातियो को पेश कर सकते हैं. वे आपस में एक दूसरे की जान तो कभी लेते ही नहीं. हाँ एक दल दूसरे दल की जान लेने पर ज़रूर उतारू हो जाता है. पर वह मार काट भी उस पैमाने को नहीं पहुँचती जिस पैमाने तक अवतारियों की औलादें पहुँचती हैं. थोड़े से शब्दों में यही समझ लेना चाहिये कि महापुरुष समाज में इतना ऊँचा सुधार कर जाते हैं कि उस ऊँचाई की ख़ातिर बिगाड़ का गड्ढा बिला मेहनत के बन जाता है जहां की मिट्टी से ईंटों का पज़ावा बनता है वहाँ पोखर अपने आप बन जाता है.

प्रकृति मनुष्य समाज को अपने ढंग से, अपनी चाल से आगे बढ़ाए चली जा रही है. वह उसकी चाल बिलकुल ठीक है. वह भले ही कछुए की चाल हो मगर ख़रगोश से बाज़ी ले जाने वाली है. समाज की दौड़ में महापुरुष हमेशा ख़रगोश साबित होते हैं, वह बड़ी ऊँची उड़ान लेते हैं और ख़रगोश की तरह यह समझ बैठते हैं कि अब है क्या, मार ली बाज़ी और फिर लम्बी नींद सो जाते हैं. सैकड़ों हज़ारों बरस के बाद जागते हैं. तब देखते हैं कि दुनिया उस समय से ज़रूर आगे बढ़ी है जिस वक़्त हमने जन्म लिया था और जब हमने इसको ऊँचा उठाने की बात सोची थी. हमारा सुधार टिकाऊ न रहा. प्रकृति हम से बाज़ी ले गई.

قتل عام سے کوئی اپریچت نہیں ہے ۔ ہمارے یگ کے نئے مہاپرش گاندھی جی کی اہنسا آج کیا رنگ لا رہی ہے اور آگے کیا کیا رنگ لائیگی اِس کا انومان نہیں لگایا جا سکتا ۔ گاندھی جی کے گیارہ ورت کس روپ میں پھل رہے ہیں یہ کسی سے چھپے ہوئے نہیں ہیں ۔ اِس میں لوگوں کو بھلے ہی اچرج ہوتا ہو ہمیں اچرج نہیں ۔ ہم اچھی طرح سمجھتے ہیں ۔ بہت کھانے کے لئے ہی بھوکوں مرا جاتا ہے' بہت پہننے کے لئے ہی ننگا رہا جاتا ہے' بہت مالدار بننے کے لئے ہی بھکاری بنا جا تا ہے' بہت سکھ کی خاطر ہی تپسیا کی جاتی ہے ۔ پر ہم تو یہاں صرف یہ بتانا چاہتے ہیں کہ اگر سنسار نے مہاپرشوں کو جنم نہ دیا ہوتا تو آج ہم کہاں ہوتے ؟

اُوپر کے سوال کا جواب ہم بالکل ٹھیک تو نہیں دے سکتے —اندازاً ہی بتا سکتے ہیں اور وہ ہمارا جواب یہ ہے کہ بے مہاپرشوں کے اِس بھارت ورش میں آج چاہے ریلیں نہ ہوتیں' بجلی نہ ہوتی' بڑے بڑے کل کارخانے نہ ہوتے پر ہم بھوکوں نہ مرتے ہوتے ۔ ہاں ہمارے یہاں چور ڈاکو بھی ہوتے پر وہ سیمت چوری کر رہے ہوتے ۔ لاکھوں کی جانیں نہ لے رہے ہوتے ۔ جس طرح پانچ لاکھ ہندو مسلمان مرے ویسا کبھی نہ ہوا ہوتا ۔ جیسے پشوؤں کو شرمندہ کر دینے والے کرتیہ ہندو مسلمانوں نے دھرم کی رو سے تچھ کہلانے والے سوراج کی خاطر کئے ویسے کبھی نہ ہوتے ۔ پرمان میں ہم آدم جاتیوں کو پیش کر سکتے ہیں ۔ وے آپس میں ایک دوسرے کی جان تو کبھی لیتے ہی نہیں ۔ ہاں ایک دل دوسرے دل کی جان لینے پر ضرور اُتارو ہو جاتا ہے ۔ پر وہ مار کاٹ بھی اُس پیمانے کو نہیں پہونچتی جس پیمانے تک اوتاریوں کی اولادیں پہونچتی ہیں ۔ تھوڑے سے شبدوں میں یہی سمجھ لینا چاہیئے کہ مہاپرش سماج میں اِتنا اُونچا سدھار کر جاتے ہیں کہ اُس اُونچائی کی خاطر بگاڑ کا گڈھا بلا محنت کے بن جاتا ہے ۔ جہاں کی مٹی سے اینٹوں کا پجاوا بنتا ہے وہاں پوکھر اپنے آپ بن جاتی ہے ۔

پرکرتی منشیہ سماج کو اپنے ڈھنگ سے' اپنی چال سے آگے بڑھائے چلی جا رہی ہے ۔ وہ اُس کی چال بالکل ٹھیک ہے ۔ وہ بھلے ہی کچھوئے کی چال ہو مگر خرگوش سے بازی لے جانے والی ہے ۔ سماج کی دوڑ میں مہاپرش ہمیشہ خرگوش ثابت ہوتے ہیں' وہ بڑی اُونچی اُڑان لیتے ہیں اور خرگوش کی طرح یہ سمجھ بیٹھتے ہیں کہ اب ہے کیا' مار لی بازی اور پھر لمبی نیند سو جاتے ہیں ۔ سیکڑوں ہزاروں برس کے بعد جاگتے ہیں ۔ تب دیکھتے ہیں کہ دنیا اُس سمے سے ضرور آگے بڑھی ہے جس وقت ہم نے جنم لیا تھا اور جب ہم نے اِس کو اُونچا اُٹھانے کی بات سوچی تھی ۔ ہمارا سدھار ٹکاؤ نہ رہا ۔ پرکرتی ہم سے بازی لے گئی ۔

(7) मनुष्य के सिवा सब पूजा सुधार में बाधक है

सुधारक ने अब सारा नक़्शा अपने ज़ेहन में जमा लिया होगा और उसने अब समझ लिया होगा कि समाज सुधार के काम में उसे आगे किन-किन बातों पर ध्यान रखना होगा. समाज सुधार में कौन सी चीज़ बाधक होती है यह हम ऊपर गिना आए हैं. समाज सुधार का "स्व' क्या है और समाज सुधार का "पर" क्या है इसको ठीक-ठीक समझे बिना सुधार के मैदान में क़दम उठाना बेकार होगा और हम इस "स्व" और "पर" को ऊपर खोलकर बता चुके हैं. याद दिलाने की ख़ातिर यहाँ फिर दुहराते हैं कि मनुष्य के सिवा और सब तरह की पूजा सुधार में बाधक होती है. सुधारक को उससे हमेशा दूर रहना होगा. समाज सुधार के लिये वह हर किसी से इस बात को लेकर लड़ता नहीं फिरेगा, पर उसका समर्थन भी नहीं करेगा. इस तरह की पूजा महापुरुषों को पसन्द नहीं थी पर उन्होंने समझौता किया इसलिये किसी समाज में कुछ और किसी समाज में कुछ बच रहीं और वह आज के दिन तक क़ायम हैं.

हज़रत मुहम्मद की बाबत कुछ किताबों में लिखा है कि उन्होने अरब के और सब सैकड़ों देवी देवताओं की पूजा को नाजायज़ ठहराकर भी एक बार अरब क़ौम की तीन सबसे बड़ी देवियों लात, उज़्ज़ा और मनात को 'आदरणीय हस्तियां' मान लिया था. कहते हैं इस विषय की एक आयत भी उतर आई थी. पर अगले दिन ही अल्लाह ने उनसे कहा कि एक दिन पहले की वह आयत शैतान की 'वही' थी अल्लाह की 'वही' नहीं. क़ुरान में उसके बाद लात उज़्ज़ा और मनात की पूजा को भी नाम लेकर ग़लत बताया गया. पर काबे की दो पुरानी पहाड़ियों 'सफ़ा' और 'मरवा' को क़ुरान में भी "अल्लाह की निशानियों" में से गिनाया गया है और इन दोनों पत्थर के तूदों की परिक्रमा को हज्ज के वक़्त जायज़ क़रार दिया गया है. आज तक सब हाजी ऐसा करते भी हैं. यह सब समझौते थे. इन समझौतों का समर्थन अपने आपको धोखा देना है. सुधारक को चाहिये कि वह समझौतों के चक्कर में न पड़े. अपने जीवन भर सचाई पर अड़ा रहे. प्रकृति को अपनी चाल पर चलने दे. उसकी गति को रोके नहीं. तभी वह समाज का कुछ भला कर जा सकता है. सब महापुरुषों में से हम से कोई पूछे तो हम यह कहेंगे कि हमें तो ऐसे संत पसन्द हैं जो "डायाजीनीज़' जैसे हों, जो सिकन्दर के समान हों, गुरु नानक जैसे हों, कबीर जैसे हों. मतलब यह कि अपनी उमरें अकेले रहकर बिता दें और कोई पंथ क़ायम न करें. सुधारक अगर सच्चे जी से सुधार के काम में लगेगा और सफल होने की जल्दबाज़ी न करेगा तो बड़ा

(7) منشیہ کے سوا سب پوجا سدھار میں بادھک ہے

سدھارک نے اب سارا نقشہ اپنے ذہن میں جما لیا ہوگا اور اُس نے اب سمجھ لیا ہوگا کہ سماج سدھار کے کام میں اُسے آگے کن کن باتوں پر دھیان رکھنا ہوگا. سماج سدھار میں کون سی چیز بادھک ہوتی ہے یہ ہم اوپر گنا آئے ہیں. سماج سدھار کا "سوا" کیا ہے اور سماج سدھار کا "پر" کیا ہے اِس کو ٹھیک ٹھیک سمجھے بنا سدھار کے میدان میں قدم اُٹھانا بیکار ہوگا اور ہم اِس 'سوا' اور 'پر' کو اوپر کھولکر بتا چکے ہیں. یاد دلانے کی خاطر یہاں پھر دوہراتے ہیں کہ منشیہ کے سوا اور سب طرح کی پوجا سدھار میں بادھک ہوتی ہے. سدھارک کو اُس سے ہمیشہ دور رہنا ہوگا. سماج سدھار کے لئے وہ ہر کسی سے اِس بات کو لیکر لڑتا نہیں پھریگا' پر اُس کا سمرتھن بھی نہیں کریگا. اِس طرح کی پوجا مہاپرشوں کو پسند نہیں تھی پر اُنہوں نے سمجھوتہ کیا اِسلئے کسی سماج میں کچھ اور کسی سماج میں کچھ بچ رہیں اور وہ آج کے دن تک قایم ہیں.

حضرت محمد کی بابت کچھ کتابوں میں لکھا ہے کہ اُنہوں نے عرب کے اور سب سیکڑوں دیوی دیوتاؤں کی پوجا کو ناجایز ٹھہرا کر بھی ایکبار عرب قوم کی تین سب سے بڑی دیویوں لات' عزا اور منات کو 'آدرنیہ ہستیاں' مان لیا تھا. کہتے ہیں اِس وشئہ کی ایک آیت بھی اُتر آئی تھی. پر اگلے دن ہی اللہ نے اُن سے کہا کہ ایک دن پہلے کی وہ آیت شیطان کی 'وحی' تھی اللہ کی 'وحی' نہیں. قرآن میں اُس کے بعد لات' عزا اور منات کی پوجا کو بھی نام لیکر غلط بتایا گیا. پر کعبہ کی دو پرانی پہاڑیوں 'صفا' اور 'مروا' کو قرآن میں بھی "اللہ کی نشانیوں" میں سے گنایا گیا ہے اور اِن دونوں پتھر کے تودوں کی پریکرما کو حج کے وقت جایز قرار دیا گیا ہے. آج تک سب حاجی ایسا کرتے بھی ہیں. یہ سب سمجھوتے تھے. اِن سمجھوتوں کا سمرتھن اپنے آپ کو دھوکا دینا ہے. سدھارک کو چاہئے کہ وہ سمجھوتوں کے چکر میں نہ پڑے. اپنے جیون بھر سچائی پر اڑا رہے. پرکرتی کو اپنی چال پر چلنے دے. اُس کی گتی کو روکے نہیں. تبھی وہ سماج کا کچھ بھلا کر سکتا ہے. سب مہاپرشوں میں سے ہم سے کوئی پوچھے تو ہم یہ کہینگے کہ ہمیں تو ایسے سنت پسند ہیں جو "ڈایوجی نیز" جیسے ہوں' جو سکندر کے سمان ہوں' گرونانک جیسے ہوں' کبیر جیسے ہوں مطلب یہ کہ اپنی عمریں اکیلے رہکر بتا دیں اور کوئی پنتھ قایم نہ کریں. سدھارک اگر سچے جی سے سدھار کے کام میں لگیگا اور سپھل ہونے کی جلد بازی نہ کریگا تو بڑا

ठोस काम कर जायगा. एक सुधारक जो सुधरा हुआ जीवन बिताता है और जो किसी पर सुधार का जोर नहीं देता वह जितना ठोस काम कर जाता है उतना वह सुधारक नहीं कर सकता जो किसी नाम से एक सुधरा समाज क़ायम कर जाता है और समझौते के चक्कर में फँसकर एक नए कर्मकांड को जगह दे जाता है. नए देवालय खड़े कर जाता है, नए मठ बना जाता है, नया मत खड़ा कर जाता है, सुधारक यह समझ ही नहीं पाता कि ऊपर बताई हुई बातें सुधार नहीं बिगाड़ हैं क्योंकि पर पूजा की पोषक हैं, समाज का 'स्व', 'पर' पूजा से कमज़ोर हो जाता है. समाज के बँधे रखने के लिये मानव प्रेम काफ़ी होना चाहिये, मन्दिर मसजिद नहीं बनने चाहियें. किसी का भी घर ज़रूरत के वक़्त मन्दिर मसजिद समझा जा सकता है. समाज को बाँधे रखने के लिये जब तक इन पर चीज़ों से ज़रूरत से ज़ियादा मदद ली जाती रहेगी तब तक समाज उठते हुए भी गिरता रहेगा क्योंकि आजतक जितने महापुरुष पैदा हुए सबने समाज को एक सूत्र में बाँधना चाहा पर वह एक अपनी छोटी सी नई माला बनाकर और उसमें गाँठ देकर चलते बने. 'पर' पूजा क़ायम करके समाज का एक टुकड़ा और बढ़ा गये और फ़ायदा करने की जगह नुक़सान कर गए. सुधारक को यह असलियत अच्छी तरह याद कर लेनी चाहिये. गाँधीजी ने काँग्रेस को नाप-नाप कर अगर नया संगठन बनाया होता तो बहुत टोटे में रहते. शायद कुछ न कर पाते. हिन्दुस्तान को आज़ाद करने के लिये बहुत से नए संगठन बन चुके थे. सब नाकामियाब रहे होते. आज भी काँगरेस से हटकर जितने नए संगठन बन रहे हैं राजनीतिक मैदान में सब निकम्मे साबित होते जा रहे हैं. वह निकम्मे साबित हों तो हों हिन्दुस्तानी समाज में बुद्धि भेद पैदा करके भारत का ज़बरदस्त नुक़सान कर रहे हैं. सुधारक को नई समाज रचना के चक्कर में कभी न पड़ कर अपना पूरा सुधरा हुआ जीवन बिताना चाहिये. उसका सुधरा हुआ जीवन उसमें वह शक्ति पैदा कर देगा कि जहाँ वह जायगा वहीं लोग सुधरा जीवन बिताने लगेंगे. जिस घर में वह ठहरेगा वह घर सुधर जायगा. जिस जगह रहेगा उस जगह अपना प्रभाव फैला सकेगा. यह सुधरा हुआ जीवन क्या होगा इसको हम खोलकर बता देना चाहते हैं. समाज सुधरना चाहता है. सुधारक पैदा करता है. सुधारक खड़े हो जाते हैं. सुधारक समाज को सुधारना चाहते हैं. पर यह कैसी अनोखी बात है कि सुधारक ख़ुद इतने सुधरे हुए नहीं होते जितने होने चाहियें. हर तरह सुधरे हुए सुधारक तो समाज में मिल ही नहीं सकते पर कम से कम इतने सुधरे हुए तो हों कि जिस तरह का सुधार वह समाज में चाहते हैं उस तरह के

ٹھوس کام کر جائیگا ۔ ایک سدھارک جو سدھرا ہوا جیون بِتاتا ہے اور جو کسی پر سدھار کا زور نہیں دیتا وہ جِتنا ٹھوس کام کر جاتا ہے اُتنا وہ سدھارک نہیں کر سکتا جو کسی نام سے ایک سدھرا سماج قایم کر جاتا ہے اور سمجھوتے کے چکر میں پھنس کر ایک نئے کرم کانڈ کو جگہ دے جاتا ہے۔ نئے دیوالیہ کھڑے کر جاتا ہے' نئے مٹھ بنا جاتا ہے' نیا مت کھڑا کر جاتا ہے ۔ سدھارک یہ سمجھ ہی نہیں پاتا کہ اُوپر بتائی ہوئی باتیں سدھار نہیں بگاڑ ہیں کیونکہ پر پوجا کی پوشک ہیں ۔ سماج کا 'سوا' 'پر' پوجا سے کمزور ہو جاتا ہے ۔ سماج کے باندھے رکھنے کے لئے مانو پریم کافی ہونا چاہئیے ۔ مندر مسجد نہیں بننے چاہئیں۔ کسی کا بھی گھر ضرورت کے وقت مندر مسجد سمجھا جا سکتا ہے۔ سماج کو باندھے رکھنے کے لئے جب تک اِن پر چیزوں سے ضرورت سے زیادہ مدد لی جاتی رہیگی تب تک سماج اُٹھتے ہوئے بھی گرتا رہیگا کیونکہ آج تک جتنے مہاپرش پیدا ہوئے سب نے سماج کو ایک سوتر میں باندھنا چاہا پر وہ ایک اپنی چھوٹی سی نئی مالا بنا کر اور اُس میں گانٹھ دیکر چلتے بنے ۔ 'پر' پوجا قایم کر کے سماج کا ایک ٹکڑا اور بڑھا گئے اور فایدہ کرنے کی جگہہ نقصان کر گئے ۔ سدھارک کو یہ اصلیت اچھی طرح یاد کر لینی چاہئے ۔ گاندھی جی نے کانگریس کو ناپ ناپ کر اگر نیا سنگٹھن بنایا ہوتا تو بہت ٹوٹے میں رہتے ۔ شاید کچھ نہ کر پاتے ۔ ہندستان کو آزاد کرنے کے لئے بہت سے نئے سنگٹھن بن چکے تھے۔ سب ناکامیاب رہے ہوتے ۔ آج بھی کانگریس سے ہٹ کر جتنے نئے سنگٹھن بن رہے ہیں راجنیتک میدان میں سب نکمے ثابت ہوتے جا رہے ہیں۔ وہ نکمے ثابت ہوں تو ہوں ہندستانی سماج میں بدھی بھید پیدا کر کے بھارت کا زبردست نقصان کر رہے ہیں ۔ سدھارک کو نئی سماج رچنا کے چکر میں کبھی نہ پڑ کر اپنا پورا سدھرا ہوا جیون بتانا چاہئے ۔ اُس کا سدھرا ہوا جیون اس میں وہ شکتی پیدا کر دیگا کہ جہاں وہ جائیگا وہیں لوگ سدھرا جیون بتانے لگیں گے جس گھر میں وہ ٹھہریگا وہ گھر سدھر جائیگا ۔ جس جگہہ رہیگا اُس جگہہ اپنا پربھاؤ پھیلا سکیگا ۔ یہ سدھرا ہوا جیون کیا ہوگا اِس کو ہم کھولکر بتا دینا چاہتے ہیں ۔ سماج سدھرنا چاہتا ہے ۔ سدھارک پیدا کرتا ہے ۔ سدھارک کھڑے ہو جاتے ہیں ۔ سدھارک سماج کو سدھارنا چاہتے ہیں ۔ پر یہ کیسی انوکھی بات ہے کہ سدھارک خود اِتنے سدھرے ہوئے نہیں ہوتے جتنے ہونے چاہئیں ۔ ہر طرح سدھرے ہوئے سدھارک تو سماج میں مِل ہی نہیں سکتے پر کم سے کم اِتنے سدھرے ہوئے تو ہوں کہ جس طرح کا سدھار وہ سماج میں چاہتے ہیں اُس طرح کے

सुधार में खुद पूरे रंगे हुए हों. जो रंगीन पानी अपने में पड़े हुए कपड़े को रंगीन न बना सके वह किसी कपड़े पर गिर कर उसको रंगीन कैसे बना सकता है ? उदाहरण के तौर पर अगर एक आदमी सचाई के रंग में रंगा हुआ नहीं है और अपने घर वालों को सच बोलना नहीं सिखा सका है तो वह समाज को सच्चा बनाने का कैसे साहस कर बैठता है ? और किसी अंश में भी कैसे सफल हो जाता है—इसका पता नहीं आम तौर पर जितने सुधारक देखे गए वह समाज सुधारक ही पाए गए. न पड़ौस सुधारक, न घर सुधारक. खुद सुधरे हुए तो वह होते ही नहीं.

उस बुढ़िया की कथा सुनकर जो अपने लड़के को गुरु जी के पास गुड़ छुड़ाने के लिये ले गई थी और जिसे गुरुजी ने दूसरे दिन लाने के लिये कहा था और फिर दूसरे दिन गुरुजी ने उस लड़के को सिर्फ यह उपदेश देकर कि बेटा गुड़ न खाया करो यह समझ लिया था कि इतना गुरु मंत्र काफ़ी है और वह काफ़ी साबित हुआ भी था, क्यों सुधारक यह नहीं सोचते कि सुधार के काम में लगने से पहले उनका खुद सुधरा हुआ होना निहायत ज़रूरी है एक धोबी मैले कपड़े पहन कर दूसरों के कपड़े साफ़ कर सकता है, एक मैली नायन दूसरों के बदन का मैल छुड़ा सकती है यहाँ तक कि काला मंजन और काला अंजन दाँत को चमका सकते हैं और आँख में दमक ला सकते हैं पर यह सब सफ़ाई के उपदेश नहीं बन सकते, सुधारक नहीं बन सकते—न सुधारक कहला सकते हैं. बीड़ी पीने वाला बाप शायद अपने बेटे से बीड़ी छुड़ाने में सफल हो जाय पर वह दूसरों से बीड़ी छुड़ाने में उस वक़्त तक सफल नहीं हो सकता जब तक खुद बीड़ी पीना न छोड़ दे बीड़ी पीने वाला बाप अपने बेटे की बीड़ी छुड़ाने में अगर कोई सफल हो भी गया है तो उसे यही समझना चाहिये कि यह उसकी मेहनत का फल नहीं है वह उस पवित्र काम में हलका निमित्त मात्र बना है उसके बेटे ने जो बीड़ी पीना छोड़ा है वह या तो किसी दूसरे के उपदेश का फल है या समय की हवा का परिणाम है या उसके भीतर बैठे ईश्वर का चमत्कार है दूसरे का सुधारना आसान काम नहीं है. सुधारने की क्रिया की सिद्धि बड़ी तपस्या चाहती है, बड़े त्याग से हासिल होती है हर वक़्त के संयम की अपेक्षा रखती है. क्या यह सब आज के सुधारक में होते हैं ? यदि नहीं तो वह कैसे समाज को सुधार सकता है ? ऐसे आदमियों से समाज सुधार भी कैसे हो सकता है ? आज के सुधारक समाज का यदि एक सुधार करते हैं तो सवा बिगाड़ कर देते हैं इसलिये इनके सुधार को अगर बिगाड़ कह कर पुकारा जाय तो यह अत्युक्ति नहीं समझा जाना चाहिये.

आम तौर से जो सुधारक मिलते हैं वह उस कहानी के

سدھار میں خود پورے رنگے ہوئے ہوں ۔ جو رنگین پانی اپنے میں پڑے ہوئے کپڑے کو رنگین نہ بنا سکے وہ کسی کپڑے پر گر کر اُس کو رنگین کیسے بنا سکتا ہے ؟ اُداھرن کے طور پر ایک آدمی سچائی کے رنگ میں رنگا ہوا نہیں ہے اور اپنے گھر والوں کو سچ بولنا نہیں سکھا سکا ہے تو وہ سماج کو سچا بنانے کا کیسے ساھس کر بیٹھتا ہے ؟ اور کسی انش میں بھی کیسے سپھل ہو جاتا ہے—اِس کا پتہ نہیں عام طور سے جتنے سدھارک دیکھے گئے وہ سماج سدھارک ہی پائے گئے ۔ نہ پڑوس سدھارک نہ گھر سدھارک خود سدھرے ہوئے تو وہ ہوتے ہی نہیں ۔

اُس بڑھیا کی کتھا سن کر جو اپنے لڑکے کو گرو جی کے پاس گڑ چھڑانے کے لئے لے گئی تھی اور جسے گروجی نے دوسرے دن لانے کے لئے کہا تھا اور پھر دوسرے دن گروجی نے اُس لڑکے کو صرف یہ اُپدیش دیکر کہ بیٹا گڑ نہ کھایا کرو یہ سمجھ لیا تھا کہ اتنا گرو منتر کافی ہے اور وہ ثابت ہوا بھی تھا، کیوں سدھارک یہ نہیں سوچتے کہ سدھارک کے کام میں لگنے سے پہلے اُنکا خود سدھرا ہوا ہونا نہایت ضروری ہے ایک دھوبی میلے کپڑے پہن کر دوسروں کے کپڑے صاف کر سکتا ہے، ایک میلی نائن دوسروں کے بدن کا میلا چھڑا سکتی ہے یہاں تک کہ کالا منجن اور کالا انجن دانت کو چمکا سکتے ہیں اور آنکھ میں دمک لا سکتے ہیں پر یہ سب صفائی کے اُپدیش نہیں بن سکتے، سدھارک نہیں بن سکتے—نہ سدھارک کہلا سکتے ہیں ۔ بیڑی پینے والا باپ شاید اپنے بیٹے سے بیڑی چھڑانے میں سپھل ہو جائے پر وہ دوسروں سے بیڑی چھڑانے میں اُس وقت تک سپھل نہیں ہو سکتا جب تک خود بیڑی پینا نہ چھوڑ دے ۔ بیڑی پینے والا باپ اپنے بیٹے کی بیڑی چھڑانے میں اگر کوئی سپھل ہو بھی گیا ہے تو اسے یہی سمجھنا چاہیئے کہ یہ اُس کی محنت کا پھل نہیں ہے وہ اُس پوتر کام میں ہلکا نمت ماتر بنا ہے ۔ اُس کے بیٹے نے جو بیڑی پینا چھوڑا ہے وہ تو کسی دوسرے کے اُپدیش کا پھل ہے یا سمئے کی ہوا کا پرنام ہے یا اُس کے بھیتر بیٹھے ایشور کا چمتکار ہے دوسرے کو سدھارنا آسان کام نہیں ہے ۔ سدھارنے کی کریا کی سدھی بڑی تپسیا چاہتی ہے، بڑے تیاگ سے حاصل ہوتی ہے ہر وقت کے سنیم کی اپیکشا رکھتی ہے ۔ کیا یہ سب آج کے سدھارک میں ہوتے ہیں ؟ یدی نہیں تو وہ کیسے سماج کو سدھار سکتا ہے ؟ ایسے آدمیوں سے سماج سدھار بھی کیسے ہو سکتا ہے ؟ آج کے سدھارک سماج کا یدی ایک سدھار کرتے ہیں تو سوا بگاڑ کر دیتے ہیں اس لئے اِن کے سدھارک کو اگر بگاڑ کہہ کر پکارا جائے تو یہ اتیکت نہیں سمجھا جانا چاہئیے

عام طور سے جو سدھارک ملتے ہیں وہ اُس کہانی کے

... हैं जो "बया के बैगन" नाम से मशहूर है ... कभी ऐसा भी होता है कि सुधारक तो काफी अच्छा होता है पर समाज इतना पतित होता है कि उसकी सीख का पात्र नहीं होता. ऐसे समय सुधारक को चाहिये कि वह सुधार के ... का भी संयम करे. उसे उस बया की कहानी को याद रखना चाहिये जिसने बन्दर को सीख देकर अपने घोंसले को बरबाद करा लिया था और अपने बच्चों की जान खतरे में डाल दी थी और जिस कहानी के आधार पर यह कहावत चल पड़ी है—

"सीख दीनी बाँदरा, बया को घर जाय रे"

(८) गांधीजी और दूसरे वैष्णव

सुधारक को सुधार के मैदान में आने से पहले इसी तरह वरदी पहनकर सजना होगा और इसी तरह जरूरी हथियारों से लैस होना होगा जिस तरह एक सिपाही लड़ाई के मैदान में उतरता है सुधारक की वरदी है उसका त्याग, उसकी तपस्या की तैयारी, उसका धैर्य, उसकी विनय सम्पन्नता (इनकसार), उसका शील (नेकचलनी), उसका दृढ़ विश्वास, उसका सच्चा ज्ञान, उसकी वत्सलता (प्यार), उसकी निर्भीकता (निडरता), उसकी निकांक्षा (बेलौसी) उसकी सब तरह की सेवा की तैयारी, उसका स्वाभिमान (खुद्दारी), समाज की प्रभावना का खयाल, उसकी चारों तरह की तप गूहनता इत्यादि हम बातें तो बहुत सी गिना गए हैं इन सब को अलग अलग खोल कर इस लेख को बढ़ाना नहीं चाहते यह सब गुण गिनाने में ही बहुत मालूम होते हैं, पर यह ऐसे एक दूसरे से गुथे हुए हैं कि इन में से कोई भी आदमी किसी एक को भी मजबूती से पकड़ ले तो सब के सब इतनी आसानी से खिंचे हुए चले आते हैं जिस तरह हजारों मन सामान से लदी नाव एक मामूली रस्सी के सहारे नदी के तल पर बिना किसी परिश्रम के खिंची चली आती है इसलिये सुधारक को इस बड़ी गिनती से भयभीत नहीं होना चाहिये यह गिनती तो और भी बढ़ सकती थी हमारा "इत्यादि" यह सूचना भी दे रहा है पर यह कितनी भी लम्बी क्यों न हो जाती अमल करने के लिये रहती उतनी ही सुगम जितनी यह अब है जिस तरह रानी मक्खी अनगिनत अंडे देकर अनगिनत मक्खियां तैयार कर लेती है वैसे ही समाज सुधार के जोर की लगन और सुधार का सच्चा ज्ञान—यह सब गुण एक क्षण में मनुष्य में पैदा कर देता है और यह गुण जल्दी ही बड़े होकर पंख वाले हो जाते हैं और शहद की मक्खियों की तरह भिनभिना कर समाज की सेवा करने लगते हैं.

जिस तरह मामूली तार और बिजली से भरे तार में हमारी आँखों के लिये कोई अन्तर नहीं होता वैसे ही समाज

( )

سمجھ پاتر ہوتے ہیں جو کتھا کے "بیگن" نام سے مشہور ہیں۔ کبھی کبھی ایسا بھی ہوتا ہے کہ سدھارک تو کافی اچھا ہوتا ہے پر سماج اتنا پتت ہوتا ہے کہ اس کی سیکھ کا پاتر نہیں ہوتا ایسے سمے سدھارک کو چاہئے کہ وہ سدھار کے آندولن کا بھی سنیم کرے اسے اس بیا کی کہانی کو یاد رکھنا چاہئے جس نے بندر کو سیکھ دیکر اپنے گھونسلے کو برباد کرا لیا تھا اور اپنے بچوں کی جان خطرے میں ڈال دی تھی اور جس کہانی کے آدھار پر یہ کہاوت چل پڑی ہے—

"سیکھ دینی باندرا بیا کو گھر جائے رے"

(8) گاندھی جی اور دوسرے ویشنو

سدھارک کو سدھار کے میدان میں آنے سے پہلے اسی طرح وردی پہن کو سجنا ہوگا اور اسی طرح ضروری ہتھیاروں سے لیس ہونا ہوگا جس طرح ایک سپاہی لڑائی کے میدان میں اترتا ہے۔ سدھارک کی وردی ہے اس کا تیاگ، اس کی تپسیا کی تیاری، اس کا دھیریہ، اس کی ونئے سمپنتا (انکسار) اس کا شیل (نیک چلنی) اس کا درڑھ وشواس، اس کا سچا گیان، اس کی وتسلتا (پیار)، اس کی نربھیکتا (نڈرتا)، اس کی نشکانکشا (بے لوثی)، اس کی سب طرح کی سیوا کی تیاری، اس کا سوابھیمان (خودداری)، سماج کی پربھاونا کا خیال، اس کی چاروں طرح کی اپکو منتا اتیادی۔ ہم باتیں تو بہت سی گنا گئے ہیں ان سب کو الگ الگ کھول کر اس لیکھ کو بڑھانا نہیں چاہتے یہ سب گن گنانے میں ہی بہت معلوم ہوتے ہیں، پر یہ ایسے ایک دوسرے سے گتھے ہوئے ہیں کہ ان میں سے کوئی بھی آدمی کسی ایک کو بھی مضبوطی سے پکڑ لے تو سب کے سب اتنی آسانی سے کھنچے ہوئے چلے آتے ہیں جس طرح ہزاروں من سامان سے لدی ناؤ ایک معمولی رسی کے سہارے ندی کے تل پر بلا کسی پریشرم کے کھنچی چلی آتی ہے اس لئے سدھارک کو اس بڑی گنتی سے بھیبھیت نہیں ہونا چاہئے، یہ گنتی تو اور بھی بڑھ سکتی تھی ہمارا "اتیادی" یہ سوچنا بھی دے رہا ہے پر یہ کتنی بھی لمبی کیوں نہ ہو جاتی عمل کرنے کے لئے رہتی اتنی ہی سوگم جتنی یہ اب ہے جس طرح رانی مکھی انگنت انڈے دیکر انگنت مکھیاں تیار کر لیتی ہے ویسے ہی سماج سدھار کے زور کی لگن اور سدھار کا سچا گیان—یہ سب گن ایک چھن میں منشیہ میں پیدا کر دیتا ہے اور یہ گن جلدی ہی بڑے ہو کر پنکھ والے ہو جاتے ہیں اور شہد کی مکھیوں کی طرح بھنبھنا کر سماج کی سیوا کرنے لگتے ہیں۔

جس طرح معمولی تار اور بجلی سے بھرے تار میں ہماری آنکھوں کے لئے کوئی انتر نہیں ہوتا ویسے ہی سماج

क एक सज्जन में और सुधारक में देखने के लिये कोई अन्तर नहीं दिखाई देगा पर जैसे वे दो तार खासियत में एक दूसरे से बिलकुल भिन्न हैं वैसे ही यह दो व्यक्ति शील स्वभाव की अपेक्षा एक दम भिन्न होते हैं. गाँधीजी अपने को मरते दम तक वैष्णव कहते रहे. और भी दुनिया जीने से मरने तक अपने को वैष्णव कहती रही गाँधीजी और वैष्णव देखने में एक थे और वैष्णव भी यह गीत गाते हैं कि "वैष्णव जन तो तेने कहिये जो पीर पराई जाने रे" और यही गीत गाँधी जी भी गाते थे, दूसरों से गाते हुए सुनते थे पर उनके सुनने में औरों से भेद था. उनके गाने में जो लय थी वह दूसरों से मेल नहीं खाती थी. उनके हृदय में इन शब्दों का जो भाव था वह वह नहीं था जिसे आम वैष्णव या उनके अनुयायी समझे हुए हैं यदि गाँधीजी के भाव को कोई समझ लेगा तो मेरा यह दावा है कि वह बहुत जल्दी गाँधी बन जायगा परम सुधारक गीतों में से रस चूसते हैं पर छूँछ नहीं चूसते. जिस तरह गन्ना धरती में से मिठास लेता है और चीज छोड़ देता है, नीबू खटास लेता है दूसरी चीजें छोड़ देता है, नीम कड़वाहट लेती है दूसरी चीजें छोड़ देती है वैसे ही इस गीत से बदमाश बदमाशी ही खींच सकता है पर पीड़ा को दूर करने की भावना वाला रस तो भला आदमी ही चूस सकता है गान्धीजी वैष्णव होते हुए मुसलमान भी थे, ईसाई भी थे, बौद्ध, जैनी, जरथुस्ती सभी थे, पर दूसरे वैष्णव तो वैष्णव भी नहीं हैं दूसरे वैष्णव वह गीत गाते हुए कि 'वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीर पराई जाने रे" यह गीत गाते रहते हैं कि—

"वैष्णव जन तो तेने कहिये
जे लहसन प्याज न खाए रे."
'वैष्णव जन तो तेने कहिये
जे हरिजन छूकर नहाये रे."
"वैष्णव जन तो तेने कहिये
जे नित राम के मन्दिर जाये रे."
"वैष्णव जन तो तेने कहिये
जे घंटे झाँझ बजाये रे."
"वैष्णव जन तो तेने कहिये
जे वैष्णवेतर अलगाये रे"
"वैष्णव जन तो तेने कहिये
जे सागर पार न जाये रे"—इत्यादि

सुधारक ने अब समझ लिया होगा कि उसका हृदय कितना पवित्र होना चाहिये, उसके सिर पर बड़ी से बड़ी और छोटी से छोटी किसी रूढ़ि का बोझ नहीं होना चाहिये अगर वह जरा भी बोझिल हुआ तो ऊँचा कैसे उठ सकेगा? यह रूढ़ियों का बोझ ही तो है जो आदमी को दबाए रखता है. समाज सुधारक कितना ही ऊँचा क्यों न उठ जाय,

کے ایک سدھن میں اور سدھارک میں دیکھنے کے لئے کوئی انتر نہیں دکھائی دیگا پر جیسے وے دو تار خاصیت میں ایک دوسرے سے بالکل بھن ہیں ویسے ہی یہ دو ویکتی شیل سوبھاؤ کی اپیکشا ایکدم بھن ہوتے ہیں۔ گاندھی جی اپنے کو مرتے دم تک ویشنو کہتے رہے۔ اور بھی دنیا جینے سے مرنے تک اپنے کو وشنو کہتی رہی۔ گاندھی جی اور ویشنو دیکھنے میں ایک ہے اور ویشنو بھی یہ گیت گاتے ہیں کہ "وشنو جن تو تینے کہئے جے پیر پرائی جانے رے" اور یہی گیت گاندھی جی بھی گاتے ہے، دوسروں سے گاتے ہوئے سنتے ہے پر اُن کے سننے میں اوروں سے بھید تھا اُن کے گانے میں جو لے تھی وہ دوسروں سے میل نہیں کھاتی تھی اُن کے ہردئے میں اِن شبدوں کا جو بھاؤ تھا وہ وہ نہیں تھا جسے عام ویشنو یا اُن کے انویائی سمجھے ہوئے ہیں دی گاندھی جی کے بھاؤ کو کوئی سمجھ لیگا تو میرا یہ دعویٰ ہے کہ وہ بہت جلدی گاندھی بن جائیگا درم سدھارک گیتوں میں سے رس چوستے ہیں پر چھونچھ نہیں چوستے جس طرح گنا دھرتی میں سے مٹھاس لیتا ہے اور چیز چھوڑ دیتا ہے، نیبو کھٹاس لیتا ہے دوسری چیزیں چھوڑ دیتا ہے، نیم کرواہٹ لیتی ہے دوسری چیزیں چھوڑ دیتی ہے ویسے ہی اس گیت سے بدمعاش بدمعاشی ہی کھینچ سکتا ہے۔ پر پیڑا کو دور کرنے کی بھاونا والا رس تو بھلا آدمی ہی چوس سکتا ہے گاندھی جی وشنو ہوتے ہوئے مسلمان بھی تھے، عیسائی بھی تھے، بودھ، جینی، زرتشتی سبھی تھے، پر دوسرے ویشنو تو ویشنو بھی نہیں ہیں دوسرے ویشنو وہ گیت گاتے ہوئے کہ "وشنو جن تو تینے کہئے، جے پیر پرائی جانے رے" یہ گیت گاتے رہتے ہیں کہ—

"ویشنو جن تو تینے کہئے
جے لہسن پیاز نہ کھائے رے"
ویشنو جن تو تینے کہئے
جے ہریجن چھوکر نہائے رے"
وشنو جن تو تینے کہئے
جے نت رام کے مندر جائے رے۔"
ویشنو جن تو تینے کہئے
جے گھنٹے جھانجھ بجائے رے۔"
وشنو جن تو تینے کہئے
جے وشنویتر الگائے رے"
وشنو جن تو تینے کہئے
جے ساگر پار نہ جائے رے۔"—اتیادی۔

سدھارک نے اب سمجھ لیا ہوگا کہ اُس کا ہردئے کتنا پوتر ہونا چاہئے اُس کے سر پر بڑی سے بڑی اور چھوٹی سے چھوٹی کسی روڑھی کا بوجھ نہیں ہونا چاہئے۔ اگر وہ ذرا بھی بوجھل ہوا تو اُونچا کیسے اُٹھ سکیگا؟ یہ روڑھیوں کا بوجھ ہی تو ہے جو آدمی کو دبائے رکھتا ہے سماج سدھارک کتنا ہی اُونچا کیوں نہ اُٹھ جائے،

कितना ही नाम क्यों न पा जाय, हमारी नजरों में वह दो कौड़ी का भी आदमी नहीं है, अगर समाज के व्यक्तियों ने एक के ऊपर एक खड़े होकर उसको अपने सिर पर उठा लिया. हम उस सोने के कलस को दो कौड़ी का समझते हैं जो मन्दिर की चोटी पर लगा हुआ होता है क्योंकि उसका आधार होता है मन्दिर का गुम्बद, मन्दिर की दीवारें मन्दिर की बुनियादें. उसका अपना कोई आधार नहीं होता. वह चमकने वाली किसी ऐसी चीज का भी बन सकता है खोटे सोने का भी बन सकता है स्टेनलेस स्टील चाँदी से ज़ियादा चमकता है, पर चाँदी की क़द्र नहीं पा सकता समाज में यह ताक़त है कि वह अपने सिर पर उठाकर गधे को भी पुजवा सकती है' लकड़ी और पत्थर की मूर्तियो का तो पुजवा ही रही है समाज की कोरी पूजा पाया हुआ आदमी हमारी नजरों मे ऊँचा नहीं समझा जा सकता हम तो सुधारक और परम सुधारक उसको कहते हैं जो अपनी तपस्या के बल से निर्विकार हो गए हैं, जिन में ऊपर बताए हुए गुण आ गए हैं और जो इन्हीं गुणों की गैस से इतने हलके हो गए हैं कि उन्हें गैस भरे फुग्गे की तरह समाज प्रार्थना के डोरे से बाँधकर ही रखना पड़ता है अगर समाज वह छोड़ बैठे तो वह उड़ जाएं और दुनिया में घूमते फिर समाज सुधारक वही हैं जो हलके होकर समाज से ऊँचे उठ गए हैं पर किसी के कंधे पर सवार नहीं हैं, कोई उनको थामे हुए नहीं है वह अपने हलकेपन के सहारे ही समाज के सिरो पर लुढ़कते फिरते हैं लेकिन किसी पर जरा भी बोझ साबित नहीं होते. जिसके सिर पर वह जितनी देर रहते हैं उतनी देर उस आदमी का या उस कुटुम्ब का सारा तन पुलकित हुआ रहता है, आनन्द का अनुभव करता रहता है. वह यह चाहती ही नहीं है कि वह उस आनन्द से वञ्चित हो जाय सुधारक रूढ़ि मे फँसे हुओ से लड़ता नहीं है उनसे सिर फुड़व्वल नहीं करता अपने हलकेपन से प्रभावित करता है, वह किसी से घृणा नहीं करता. वह कुछ करने के लिये बहुत ही कम कहता है वह तो अपने कृत्य से उन पर असर डालता है और उनमें आपो आप ऐसी भावना पैदा कर देता है कि वह उसकी नक़ल करने लगते हैं वह उपदेश देगा—आदेश बहुत कम देगा, उसके उपदेश में आदेश की गैस भरी रहती है. तभी तो उसका उपदेश सुन कर एक दो दस नहीं, लाखों एक दम बदल जाते हैं और उसी क्षण हलका अनुभव करने लगते हैं. उन्हे बिलकुल ऐसा मालूम होने लगता है मानो वह जमीन से सूत दो सूत ऊँचे हो गए हैं और उन्हें गमनागमन में आसानी होने लगती है. वह अपने को चलता हुआ नहीं—उड़ता हुआ सा अनुभव करने लगते हैं

यही होते हैं समाज सुधारक जो समाज को इस तरह

کتنا ہی نام کیوں نہ پا جائے، ہماری نظروں میں وہ دو کوڑی کا بھی آدمی نہیں ہے، اگر سماج کے ویکتیوں نے ایک کے اوپر ایک کھڑے ہو کر اس کو اپنے سر پر اٹھا لیا۔ ہم اس سونے کے کلس کو دو کوڑی کا سمجھتے ہیں جو مندر کی چوٹی پر لگا ہوا ہوتا ہے کیونکہ اس کا ادھار ہوتا ہے مندر کا گنبد، مندر کی دیواریں، مندر کی بنیادیں۔ اس کا اپنا کوئی آدھار نہیں ہوتا۔ وہ چمکنے والی کسی ایسی چیز کا بھی بن سکتا ہے کھوٹے سونے کا بھی بن سکتا ہے اسٹینلیس اسٹیل چاندی سے زیادہ چمکتا ہے پر چاندی کی قدر نہیں پا سکتا۔ سماج میں یہ طاقت ہے کہ وہ اپنے سر پر اٹھا کر گدھے کو بھی پجوا سکتی ہے لکڑی اور پتھر کی مورتیوں کو تو پجوا ہی رہی ہے۔ سماج کی کوری پوجا پایا ہوا آدمی ہماری نظروں میں اونچا نہیں سمجھا جا سکتا۔ ہم تو سدھارک اور پرم سدھارک اُن کو کہتے ہیں جو اپنی تپسیا کے بل سے نروکار ہو گئے ہیں، جن میں اوپر بتائے ہوئے گن آگئے ہیں اور جو انہیں گنوں کی گیس سے اتنے ہلکے ہو گئے ہیں کہ انہیں گیس بھرے پھکے کی طرح سماج پرارتھنا کے دورے سے باندھکر ہی رکھنا پڑتا ہے۔ اگر سماج وہ چھوڑ بیٹھے تو وہ اڑ جائیں اور دنیا میں گھومتے پھریں سماج سدھارک وہی ہیں جو ہلکے ہو کر سماج سے اونچے اٹھ گئے ہیں پر کسی کے کندھے پر سوار نہیں ہیں، کوئی اُن کو تھامے ہوئے نہیں ہے۔ وہ اپنے ہلکے پن کے سہارے ہی سماج کے سروں پر لڑھکتے پھرتے ہیں لیکن کسی پر ذرا بھی بوجھ ثابت نہیں ہوتے۔ جس کے سر پر وہ جتنی دیر رہتے ہیں اتنی دیر اُس آدمی کا یا اُس کٹمب کا سارا تن پلکت ہوا رہتا ہے، آنند کا انوبھو کرتا رہتا ہے۔ وہ یہ چاہتا ہی نہیں ہے کہ وہ اُس آنند سے ونچت ہو جائے سدھارک روڑھی میں پھنسے ہوؤں سے لڑتا نہیں ہے۔ اُن سے سرپھٹول نہیں کرتا اپنے ہلکے پن سے پربھاوت کرتا ہے، وہ کسی سے گھرنا نہیں کرتا وہ کچھ کرنے کے لئے بہت ہی کم کہتا ہے۔ وہ تو اپنے کرتیہ سے اُن پر اثر ڈالتا ہے اور اُن میں آپو آپ ایسی بھاونا پیدا کر دیتا ہے کہ وہ اُس کی نقل کرنے لگتے ہیں۔ وہ اپدیش دے گا—ادیش بہت کم دیگا، اس کے اپدیش میں آدیش کی گیس بھری رہتی ہے۔ تبھی تو وہ اُس کا اپدیش سن کر ایک دو دس نہیں، لاکھوں ایکدم بدل جاتے ہیں اور اُسی چھن ہلکا انوبھو کرنے لگتے ہیں۔ انہیں بالکل ایسا معلوم ہونے لگتا ہے مانو وہ زمین سے سوت دو سوت اونچے ہوگئے ہیں اور انہیں گمناگمن میں آسانی ہونے لگتی ہے۔ وہ اپنے کو چلتا ہوا نہیں—اڑتا ہوا سا انوبھو کرنے لگتے ہیں۔

یہی ہوتے ہیں سماج سدھارک جو سماج کو اس طرح

का बना देते हैं. वह बना क्या देते हैं, उनकी देखा देखी समाज वैसा आपो आप बन जाता है. अगर किसी समाज सुधारक को देखकर समाज हलका अनुभव न करे तो समझना चाहिये कि समाज सुधारक में जरूर बहुत सी कमियाँ हैं समाज सुधारक खुले मैदान में जिसकी गालियाँ सुनता है अगर वह गाली देने वाला घर में जाकर या अकेले में किसी से उस समाज सुधारक की तारीफ न करे तो समझ लेना चाहिये कि वह समाज सुधारक झूठा है वह समाज सुधारक दिखावटी है दुश्मन कितना ही बुरा क्यों न हो अपने दुश्मन के गुणों की तारीफ किये बिना नहीं रह सकता यह ठीक है कि वह उसके गुण गाता नहीं फिरेगा पर गुणों के गुणगान से कैसे रुक सकता है ? एक अगरेज गाँधी को अगरेजों का दुश्मन कह सकता था पर गाधी को सत्यवादी कहने से कैसे बाज रह सकता था ? क्योंकि सत्यगुण तो उसे भी पसन्द है वह उसको खुद भी तो शीष चढ़ाता है यह ठीक है कि एक अगरेज गाँधीजी के सत्यवादिता का ढिढोरा नहीं पीटेगा. वह तो उसकी दुश्मनी का ही राना रोता फिरेगा. ठीक इसी तरह सुधारक के गुण घरो मे गाए जाने चाहियें, बाहर उसे गाली मिलती रहे इसकी परवाह नहा. सुधारक की कसौटी समाज का प्लेटफार्म नही— घर का कमरा है. उस सोने को वहाँ कसकर देखा अब आप हमारी बात समझ गए होंगे कि परम सुधारक को ऊँचा बनाने में समाज का हाथ इतना नही हाता जितने उसके भीतरी गुण

अब तक हमने जितनी बातें कही वह ऐसी नहीं कहीं जिन्हें हम तुम सब समझ लें ऊपर की बातें ऐसी हैं जिनमे से पाठकों के पल्ले भावना तो पडती है पर करने को कुछ नहीं मिलता और जो कुछ मिलता है वह साफ होते हुए भी ना-साफ है, धु धले मे है क्योंकि उस कर्तव्य के पीछे अनेक शर्तें जुड़ी हुई हैं वह शर्तें हैं—यह गुण हो, वह गुण हो, वह गुण हा, यह गुण हो उन गुणो से समाज के शत प्रतिशत आदमी एकदम वंचित हैं और हम जैसे जवान जो समाज सुधार के मैदान में कूदना चाहते हैं उन गुणो से एकदम खाली हैं. हो सकता है उनमे से एक से जियादा गुण हम में हों पर वह हमें दिखाई कहाँ देते हैं ? इस लेख के लेखक को भले हो पता हो हम से साफ खालकर हमें काई बात इस लेख में नहीं बताई गई पाठकों की यह शंका ठीक है हमें चाहिये कि हम जरूर अपने जवानों का रास्ता साफ कर दें और उनसे कबीर की बोली में बात करें—ईसा की बोली में नहीं, मूसा की बोली में नहीं, बुद्ध और महावीर की बोली में नहीं, सतों की बोली में या यूँ कहिये कि साफ दिल आदमियों की बोली में.

کا بنا دیتے ہیں۔ وہ بنا کیا دیتے ہیں، اُن کی دیکھا دیکھی سماج ویسا آپو آپ بن جاتا ہے اگر کسی سماج سدھارک کو دیکھ کر سماج ہلکا انوبھو نہ کرے تو سمجھنا چاہئے کہ سماج سدھارک میں ضرور بہت سی کمیاں ہیں۔ سماج سدھارک کھلے میدان میں جس کی گالیاں سنتا ہے اگر وہ گالی دینے والا گھر میں جاکر یا اکیلے میں کسی سے اُس سماج سدھارک کی تعریف نہ کرے تو سمجھ لینا چاہئے کہ وہ سماج سدھارک جھوٹا ہے وہ سماج سدھارک دکھاوٹی ہے دشمن کتنا ہی برا کیوں نہ ہو اپنے دشمن کے گنوں کی تعریف کئے بنا نہیں رہ سکتا یہ ٹھیک ہے کہ وہ اُس کے گن گاتا نہیں پھرے گا پر گنوں کے گن گان سے کیسے رک سکتا ہے؟ ایک انگریز گاندھی کو انگریزوں کا دشمن کہہ سکتا تھا پر گاندھی کو ستیہ وادی کہنے سے کیسے باز رہ سکتا تھا؟ کیونکہ ستیہ گن تو اُسے بھی پسند ہے وہ اسکو خود بھی تو شیش چڑھاتا ہے یہ ٹھیک ہے کہ ایک انگریز گاندھی جی کے ستیہ وادتا کا ڈھنڈورا نہیں پیٹیگا وہ تو اُس کی دشمنی کا ہی رونا روتا پھریگا ٹھیک اسی طرح سدھارک کے گن گھروں میں گائے جانے چاہئیں، باہر اُسے گالی ملتی رہے اس کی پرواہ نہیں سدھارک کی کسوٹی سماج کا پلیٹ فارم نہیں —گھر کا کمرہ ہے۔ اُس سونے کو وہاں کس کر دیکھو اب آپ ہماری بات سمجھ گئے ہونگے کہ پرم سدھارک کو اونچا بنانے میں سماج کا ہاتھ اتنا نہیں ہوتا جتنے اُس کے بھیتری گن

اب تک ہم نے جتنی باتیں کہیں وہ ایسی نہیں کہیں جنہیں ہم تم سب سمجھ لیں۔ اوپر کی باتیں ایسی ہیں جن میں سے پاٹھکوں کے پلے بھاونا تو پڑتی ہے پر کرنے کو کچھ نہیں ملتا اور جو کچھ ملتا ہے وہ صاف ہوتے ہوئے بھی نا صاف ہے، دھندلے میں ہے کیونکہ اُس کرتویہ کے پیچھے انیک شرطیں جڑی ہوئی ہیں۔ وہ شرطیں ہیں— یہ گن ہو وہ گن ہو، وہ گن ہو، یہ گن ہو ان گنوں سے سماج کے شت پرتشت آدمی ایکدم ونچت ہیں اور ہم جیسے جوان جو سماج سدھار کے میدان میں کودنا چاہتے ہیں اُن گنوں سے ایکدم خالی ہیں ہو سکتا ہے اُن میں سے ایک سے زیادہ گن ہم میں ہوں پر وہ ہمیں دکھائی کہاں دیتے ہیں؟ اس لیکھ کے لیکھک کو بھلے ہی پتہ ہو ہم سے صاف کھولکر ہمیں کوئی بات اس لیکھ میں نہیں بتائی گئی پاٹھکوں کی یہ شنکا ٹھیک ہے ہمیں چاہئے کہ ہم ضرور اپنے جوانوں کا راستہ صاف کر دیں اور اُن سے کبیر کی بولی میں بات کریں— عیسیٰ کی بولی میں نہیں، موسیٰ کی بولی میں نہیں، بدھ اور مہاویر کی بولی میں نہیں، سنتوں کی بولی میں یا یوں کہئے کہ صاف دل آدمیوں کی بولی میں۔

(9) कुछ सीधी खरी बातें

आइये खरी और सीधी बातें सुनिये:—

"लकड़ी की बना गल माल भले,
पर हाथ में लेकर जपना क्यों ?
पत्थर की बना बेशक मूरत,
पर उसके आगे नवना क्यों ?
तू एक नहीं दस नदियाँ तर,
पर यह हागा भव तरना क्यों ?
राजा थे दोनों राम किसन,
पर ईश समझ दम भरना क्यों ?

कौशल्या नन्दन राम नहीं, वह तुझ जैसे थे रामचन्द
यशुदा नन्दन भी राम नहीं, वह तुझ जैसे थे श्यामचन्द
क्या राम रहेंगे मन्दिर मे, वह तुझे मिलें कर आँख बन्द
वह तेरे भीतर बैठे हैं, वह हैं तेरे आनन्दकन्द."
"मय खुरो मसहफ़ बिसोजो, आतिश अन्दर काबा जन
हरचि ख़ाही कुन व लेकिन, मरदुम आज़ारी मकुन.'

पद्य बहुत साफ़ हैं इनकी टीका की जरूरत नहीं. फ़ारसी के पद्य का अर्थ हम आगे चलकर करेंगे उस पर अपनी राय भी जाहिर करेंगे पर उससे पहले जरा कबीर जी का यहाँ बिराजमान कर लें

माला लक्कड़, ठाकुर पत्थर, तीरथ सगरे पानी,
रामा कृष्णा मरते देखे चारों वेद कहानी

अगर दुनिया मे सच बोलना धर्म है, अहिन्सा धर्म है, चोरी न करना धर्म है, अपरिग्रह (माल जमा न करना) धर्म है, ब्रह्मचर्य धर्म है और बाक़ी के छै ब्रत जो गाँधी जी गिनवा गए हैं धर्म हैं, तो कबीर साहब पूरे धर्मात्मा थे—और, और भी अनेक सत उन्हीं जैसे धर्मात्मा हो गए हैं धर्मवादी, सम्प्रदायवादी, पंथवादी, महतवादी, बुद्धिवादी, पूँजीवादी या और कोई वादी धर्मात्मा नहीं हो सकते अलबत्ता वादी विवादी हो सकते हैं—वादी प्रतिवादी हो सकते हैं. और यह सब सुधारक बनें तो असफल ही रहेंगे असफल रहें—चिन्ता नहीं. यह तो डाकू साबित होते हैं, बिगाड़ू साबित होते हैं, फ़ुटारू साबित होते हैं, समाज के टुकड़े टुकड़े कर जाते हैं, समाज में भेद भाव फैला जाते हैं कबीर पंथ बेशक है पर कबीर का बनाया हुआ नहीं है. कबीर के नाम पर बना हुआ है बनाने को तो गाँधी बम बन सकता है, गाँधी-चाय बन सकती है, गाँधी शराब घर की बुनियाद पड़ सकती है, गाँधी क़स्साब-घर भी खुल सकता है पर क्या इससे ये सिद्ध होगा कि गाँधी जी की यह सब देन है ? सुधारक सुधार करते ही नहीं सिर्फ़ सुधरा हुआ जीवन बिताते हैं.

(9) کچھ سیدھی کھری باتیں

آئیے کھری اور سیدھی باتیں سنئیے :—

"لکڑی کی بنا گل مال بھلے،
پر ہاتھ میں لیکر جپنا کیوں ؟
پتھر کی بنا بیشک مورت،
پر اُس کے آگے نمنا کیوں ؟
تو ایک نہیں دس ندیاں تر،
پر یہ ہوگا بھو ترنا کیوں ؟
راجا تھے دونوں رام کشن،
پر ایش سمجھ دم بھرنا کیوں ؟

کوشلیا نندن رام نہیں، وہ تجھ جیسے تھے رامچندر
یشودا نندن بھی رام نہیں، وہ تجھ جیسے تھے شیامچندر
کیا رام رہینگے مندر میں، وہ تجھے ملیں کر آنکھ بند
وہ تیرے بھیتر بیٹھے ہیں، وہ ہیں تیرے آنند کند "
"مئے خور و مصحف بسوز، آتش اندر کعبہ زن
ہرچہ خواہی کن و لیکن، مردم آزاری مکن "

پدیہ بہت صاف ہیں اُن کی ٹیکا کی ضرورت نہیں۔ فارسی کے پدیہ کا ارتھ ہم آگے چلکر کرینگے اُس پر اپنی رائے بھی ظاہر کرینگے۔ پر اُس سے پہلے ذرا کبیر جی کو یہاں براجمان کر لیں۔

مالا لکڑ، ٹھاکر پتھر، تیرتھ سگرے پانی
رام کرشنا مرتے دیکھے چاروں وید کہانی۔

اگر دنیا میں سچ بولنا دھرم ہے اہنسا دھرم ہے، چوری نہ کرنا دھرم ہے، اپریگرہ (مال جمع نہ کرنا) دھرم ہے برہمچریہ دھرم ہے اور باقی کے چھ برت جو گاندھی جی گنوا گئے ہیں دھرم ہیں، تو کبیر صاحب پورے دھرماتما تھے—اور، اور بھی انیک سنت انہیں جیسے دھرماتما ہوگئے ہیں دھرم وادی، سمپردائے وادی، پنتھ وادی، سنت وادی، مہنت وادی بدھی وادی، پونجی وادی یا اور کوئی وادی دھرماتما نہیں ہوسکتے۔ البتہ وادی وِوادی ہوسکتے ہیں—وادی پرتیوادی ہوسکتے ہیں، اور یہ سب سدھارک بنیں تو اسپھل ہی رہینگے اسپھل رہیں—چنتا نہیں یہ تو ڈاکو ثابت ہوئے ہیں، بگاڑو ثابت ہوتے ہیں، پھٹارو ثابت ہوئے ہیں، سماج کے ٹکڑے ٹکڑے کرجاتے ہیں، سماج میں بھید بھاؤ پھیلا جاتے ہیں کبیر پنتھ بیشک ہے پر کبیر کا بنایا ہوا نہیں ہے۔ کبیر کے نام پر بنا ہوا ہے۔ بنانے کو تو گاندھی بم بن سکتا ہے، گاندھی چائے بن سکتی ہے، گاندھی - شراب گھر کی بنیاد پڑسکتی ہے گاندھی قصاب - گھر بھی کھل سکتا ہے پر کیا اس سے یہ سدھ ہوگا کہ گاندھی جی کی یہ سب دین ہے ؟ سدھارک سدھار کرتے ہی نہیں۔ صرف سدھرا ہوا جیون بتاتے ہیں۔

अगर मैं लकड़ी पत्थर को किसी रूप में भी नहीं पूजता, अगर मैं पानी की किसी तरह भी अंदर की सफाई का कारण नहीं मानता, अगर मैं किसी कुल या जीवित पुरुष को सब भूलों से बरी नहीं मानता, अगर मैं किसी भी ग्रंथ को किसी ऐसे का कहा नहीं मानता जो त्रिकालज्ञ था तो मैं सुधारक बनने के योग्य हूँ पर मैं इस न मानने की डौंडी नहीं पीटता फिरूँगा मेरा रहन सहन इसको खुद बता देगा. किसी के सीधे प्रश्न करने पर मैं सीधा जवाब देने में झिझकूँगा भी नहीं अगर मैं झिझकता हूँ तो सुधारक होने के योग्य नहीं अपने और किसी काम में लगूँ. जिस योग्य हूँ वह काम करूँ

ऊपर हमने फारसी के पद्य का अर्थ करने की बात कही है उसे यहाँ किये देते हैं और उसपर अपने विचार भी यहाँ खोल कर बता देते हैं वह पद्य हमारे नहीं हैं. ऐसे मौलाना कितने हैं जिसे मुसलमान पहुँचा हुआ सत समझते हैं शब्दार्थ यह है —

मय ख़ुरो = शराब पी और,
मसहफ़ बिसोज़ो = क़ुरान जला और,
आतिश अन्दर काबा ज़न = आग काबे में लगा दे,
हरचे ख़ाही कुन = जो कुछ चाहे कर,
व लेकिन मरदुमआज़ारी मकुन = लेकिन आदमियों को सताया न कर.

यहाँ शराब पीने की बात कहना इसलाम धर्म के खिलाफ़ बात कहना है आज ऐसे मुसलमान मिल सकते हैं, ऐसे मौलाना भी मिल सकते हैं, ऐसे राजाओं का इतिहास में जिक्र है जो नूरुद्दीन यानी धर्म—के—प्रकाश नाम आए हुए थे और खूब शराब उड़ाते थे, पर हज़रत मुहम्मद के समय में ऐसा एक भी मुसलमान नहीं मिल सकता था कि जिसके कपड़े पर अगर शराब की बूँद गिर जाय तो वह उसे उतार कर न फेंक दे और उसमें आग न लगा दे आज भी शराब पीने की बात सुनकर मुसलमान बिगड़ खड़े हो सकते हैं, क़ुरान जला डालने की बात इससे भी बुरी है और काबे में आग लगाने की बात और भी बढ़कर है और यह कहकर तो मौलाना ने हद कर दी कि जो जी चाहे कर यानी दुनिया का बुरे से बुरा पाप कर लेकिन आदमियों के सताने का काम न कर.

अब इस पद्य की टीका हम से सुनिये जो आदमियो को सताने का काम कर सकता है फिर चाहे वह किसी धर्म का मानने वाला क्यों न हो और कोई भी क्यों न हो वही शराब पीने, क़ुरान जलाने, काबे में आग लगाने और जो जो चाहे करने के लिये तैयार हो सकता है आदमियों के दिल दुखाने वाला आदमी, आदमियों को सताने वाला आदमी धर्मात्मा

اگر میں لکڑی پتھر کو کسی روپ میں بھی نہیں پوجتا' اگر میں پانی کو کسی طرح بھی اندر کی صفائی کا کارن نہیں مانتا' اگر میں کسی مرد یا جیونت پرش کو سب بھولوں سے بری نہیں مانتا' اگر میں کسی بھی گرنتھ کو کسی ایسے کا کہا نہیں مانتا جو ترکالگیہ تھا تو میں سدھارک بننے کے یوگیہ ہوں ۔ پر میں اس نہ ماننے کی ڈونڈی نہیں پیٹتا پھروںگا میرا رہن سہن اس کو خود بتا دیگا کسی کے سیدھے پرشن کرنے پر میں سیدھا جواب دینے میں جھجھکونگا بھی نہیں اگر میں جھجھکتا ہوں تو سدھارک ہونے کے یوگیہ نہیں اپنے اور کسی کام میں لگوں ۔ جس یوگیہ ہوں وہ کام کروں

اوپر ہم نے فارسی کے پدیہ کا ارتھ کرنے کی بات کہی ہے ۔ اسے یہاں کئے دیتے ہیں اور اس پر اپنے وچار بھی یہاں کھولکر بتادیتے ہیں وہ پدیہ ہمارے نہیں ہیں ایسے مولانا کتنے ہیں جسے مسلمان پہونچا ہوا سنت سمجھتے ہیں ۔ شبدارتھ یہ ہے —

مے خور و = شراب پی اور'
مصحف بسوز و = قرآں جلا اور'
آتش اندر کعبہ زن = آگ کعبے میں لگادے'
ہرچہ خواہی کن = جو کچھ چاہے کر'
ولیکن مردم آزاری مکن = لیکن آدمیوں کو ستایا نہ کر۔

یہاں شراب پینے کی بات کہنا اسلام دھرم کے خلاف بات کہنا ہے ۔ آج ایسے مسلمان مل سکتے ہیں' ایسے مولانا بھی مل سکتے ہیں' ایسے راجاؤں کا اتہاس میں ذکر ہے جو نورالدین یعنی دھرم - کے - پرکاش نام اے ہوئے تھے اور خوب شراب اڑاتے تھے' پر حضرت محمد کے سمے میں ایسا ایک بھی مسلمان نہیں مل سکتا تھا کہ جس کے کپڑے پر اگر شراب کی ایک بوند گرجائے تو وہ اسے اتارکر نہ پھینک دے اور اس میں آگ نہ لگا دے آج بھی شراب پینے کی بات سنکر مسلمان بگڑ کھڑے ہوسکتے ہیں قرآں جلا ڈالنے کی بات اس سے بھی بری ہے اور کعبے میں آگ لگانے کی بات اور بھی بڑھکر ہے اور یہ کہکر تو مولانا نے حد کردی کہ جو جی چاہے کر یعنی دنیا کا برا سے برا پاپ کر لیکن آدمیوں کے ستانے کا کام نہ کر

اب اس پدیہ کی ٹیکا ہم سے سنئے جو آدمیوں کے ستانے کا کام کرسکتا ہے پھر چاہے وہ کسی دھرم کا ماننے والا کیوں نہ ہو اور کوئی بھی کیوں نہ ہو وہی شراب پینے' قرآں جلانے' کعبے میں آگ لگانے اور جو جی چاہے کرنے کےلئے تیار ہوسکتا ہے آدمیوں کے دل دکھانے والا آدمی' آدمیوں کو ستانے والا آدمی دھرماتما

हो ही नहीं सकता. किसी धर्म का मानने वाला नहीं हो सकता. शराब पीकर कोई आदमी का दिल दुखाए बग़ैर कैसे रह सकता है? आदमी को सताए बग़ैर कैसे रह सकता है? जो क़ुरान जलाएगा वह सैकड़ों के दिल दुखा देगा. जो काबे में आग लगाएगा वह करोड़ों के दिल में आग लगा देगा और जो मन चाहा करेगा वह तो अपनी क़ब्र अपने आप खोद लेगा. इसलिये मौलाना यह कहकर कि आदमियों को मत सता यह कह गए कि शराब मत पी यानी "मय मख़ुर"; क़ुरान मत जला यानी "मसहफ़ मसोज़"; काबे में आग मत लगा यानी "आतिश अन्दर काबा मज़न"; जो जी चाहे मत कर यानी "हर चे ख़ाही मकुन"; और यह कह गए कि अब सता लोगों को यानी "मरदुम आज़ारी कुन" जिस का यह मतलब हुआ कि जो शराब नहीं पीता, जो क़ुरान यानी धर्म की क़द्र करता है और जो काबे का यानी पवित्रता का आदर करता है और जो मन चाहा नहीं करता वह लोगों को सता ही नहीं सकता.

थोड़े से शब्दों में हम यह कहना चाहते हैं कि सुधारक को अपने मन में यह अच्छी तरह बिठा लेना चाहिये कि किसी भी ग्रंथ में ऐसी कोई बात लिखी हुई है ही नहीं जिससे यह सिद्ध किया जा सके कि झूठ बोलना धर्म है, हिंसा करना धर्म है, चोरी करना धर्म है, (परिग्रह धन इकट्ठा करना) धर्म है या शील खो देना धर्म है. कोई बुरी बात किसी धर्म ग्रंथ में नहीं मिलेगी. धर्म ग्रंथ पद्य बद्ध होने से ऐसी भाषा में जरूर हैं जिन में से स्वार्थी लोग अपने मन के अर्थ लगाकर समाज को अधर्म के लिये तैयार कर देते हैं. कोई धर्म ग्रंथ लड़ाई की आज्ञा नहीं देता. यह आदमी की अपनी कमज़ोरी है जो इसमें से यह अर्थ निकाल लेता है. हर भाषा के अक्षरों में यह खूबी है कि ज़रा से इधर उधर करने से कुछ का कुछ अर्थ हो जाता है. एक कहावत है—"ख़ुदा बयक नुक़्ता जुदा मी शवद." यानी ख़ुदा एक बिन्दी के हेर फेर से 'जुदा' हो सकता है. जुदा शब्द का अर्थ है—अलग यानी अलग हो सकता है. फ़ारसी के अक्षर "ख़े" के ऊपर बिंदी लगती है और फ़ारसी के अक्षर "जीम" के नीचे बिंदी लगती है. यह बिंदी अगर ऊपर की नीचे लिख जाय या लग जाय तो फ़ारसी अक्षरो मे लिखा हुआ 'ख़ुदा' 'जुदा' पढ़ा जाएगा. भाषा और लिपि की इन छोटी-छोटी गुत्थियों से स्वार्थी लोग फ़ायदा उठाकर समाज को लड़वा देते हैं. सुधारक को इन सब बातों का ज्ञान होना चाहिये और इन से ऊँचा उठा होना चाहिये.

सुधारक के कर्तव्य अनगिनत हैं, उस पर एक ग्रंथ अलग लिखा जा सकता है पर हमें सुधारक को ग्रंथ-जाल में नहीं फँसाना है. ग्रंथों से ऊपर उठाना है. हमें तो यह

ہو ہی نہیں سکتا ۔ کسی دھرم کا ماننے والا نہیں ہوسکتا ۔ شراب پیکر کوئی آدمی کا دل دکھائے بغیر کیسے رہ سکتا ہے؟ آدمی کو ستائے بغیر کیسے رہ سکتا ہے؟ جو قرآن جلائیگا وہ سیکڑوں کے دل دکھا دیگا ۔ جو کعبے میں آگ لگائیگا وہ کروڑوں کے دل میں آگ لگا دیگا اور جو من چاہا کریگا وہ تو اپنی قبر اپنے آپ کھودیگا ۔ اِس لئے مولانا یہ کہکر کہ آدمیوں کو مت ستا یہ کہ گئے کہ شراب مت پی یعنی "مے مخور"؛ قرآن مت جلا یعنی مصحف "مسوز"؛ کعبے میں آگ مت لگا یعنی "آتش اندر کعبہ مزن"؛ جو جی چاہے مت کر یعنی "ہرچہ خواہی مکن"؛ اور یہ کہ گئے کہ اب ستا لوگوں کو یعنی "مردم آزاری کن" جس کا یہ مطلب ہوا کہ جو شراب نہیں پیتا؛ جو قرآن یعنی دھرم کی قدر کرتا ہے اور جو کعبے کا یعنی پوترتا کا آدر کرتا ہے اور جو من چاہا نہیں کرتا وہ لوگوں کو ستا ہی نہیں سکتا ۔

تھوڑے سے شبدوں میں ہم یہ کہنا چاہتے ہیں کہ سدھارک کو اپنے من میں یہ اچھی طرح بٹھا لینا چاہئے کہ کسی بھی گرنتھ میں ایسی کوئی بات لکھی ہوئی ہے ہی نہیں جس سے یہ سدھ کیا جاسکے کہ جھوٹ بولنا دھرم ہے، ہنسا کرنا دھرم ہے، چوری کرنا دھرم ہے، پریگرہ (دھن اِکٹھا کرنا) دھرم ہے یا شیل کھودینا دھرم ہے ۔ کوئی بری بات کسی دھرم گرنتھ میں نہیں ملیگی ۔ دھرم گرنتھ پدیہ بدھ ہونے سے ایسی بھاشا میں ضرور ہیں جن میں سے سوارتھی لوگ اپنے من کے ارتھ لگاکر سماج کو ادھرم کے لئے تیار کردیتے ہیں ۔ کوئی دھرم گرنتھ لڑائی کی آگیاں نہیں دیتا ۔ یہ آدمی کی اپنی کمزوری ہے جو اِس میں سے یہ ارتھ نکال لیتا ہے ۔ ہر بھاشا کے اکشروں میں یہ خوبی ہے کہ ذرا سے اِدھر اُدھر کرنے سے کچھ کا کچھ ارتھ ہوجاتا ہے ۔ ایک کہاوت ہے—"خدا بہ یک نقطہ جدا می شود ۔" یعنی خدا ایک بندی کے ہیر پھیر سے 'جدا' ہوجاتا ہے ۔ جدا شبد کا ارتھ ہے—'الگ' یعنی الگ ہوسکتا ہے ۔ فارسی کے اکشر "خ" کے اُوپر بندی لگتی ہے اور فارسی کے اکشر "ج" کے نیچے بندی لگتی ہے ۔ یہ بندی اگر اوپر کی نیچے لکھ جائے یا لگ جائے تو فارسی اکشروں میں لکھا ہوا 'خدا' 'جدا' پڑھا جائیگا ۔ بھاشا اور لپی کی اِن چھوٹی چھوٹی گتھیوں سے سوارتھی لوگ فایدہ اُٹھاکر سماج کو لڑوا دیتے ہیں ۔ سدھارک کو اِن سب باتوں کا گیان ہونا چاہئے اور اِن سے اُونچا اُٹھا ہونا چاہئے ۔

سدھارک کے کرتویہ انگنت ہیں، اُس پر ایک گرنتھ الگ لکھا جاسکتا ہے پر ہمیں سدھارک کو گرنتھ جال میں نہیں پھنسانا ہے ۔ گرنتھوں سے اُوپر اُٹھانا ہے ۔ ہمیں تو یہ

बताना है कि सुधारक के लिये सब ग्रंथ बेकार हैं. ग्रंथों का जानकार वह भले ही हो पर ग्रंथो को प्रमाण कभी न माने. ग्रंथों का हवाला कभी न दे ग्रथों को प्रमाण में कभी पेश न करे. प्रमाण तो वह बुद्धि को ही माने और परम प्रमाण हृदय को माने और परमोत्तम प्रमाण अन्तरात्मा को माने सुधारक जैसे ही समाज का सच्चा हितैषी बना कि उसको सब ग्रन्थों का निचोड़ ऐसे समझ में आ जायगा जैसे काला लोहा घिसने पर शीशे जैसा साफ़ बनकर दूसरे के प्रतिबिंब को दिखाने लगता है सर्वज्ञ आदमी बन सकता है या नहीं ? पर अपने काम के लिये बहुज्ञ तो बहुत आसानी से बन सकता है. चोरी करने के लिये जितना ज्ञान चाहिये शाह बने रहने के लिये उससे हज़ारों गुना कम ज्ञान की ज़रूरत है. झूठ बोलने वाले को अपने झूट छिपाने के लिये जितने झूठ तैयार करने पड़ते हैं और उनमें जितनी मेहनत और बुद्धि लगती है सच बोलने में उससे हज़ारों गुना कम बुद्धि से काम चल सकता है. यह कहावत है तो ठीक कि बुद्धि बहुत खर्च करने से बढ़ती और कम खर्च करने से घटती है पर यह हमारी बात सवा ठीक है कि बुद्धि बुरे कामों में लगकर जितनी जिया । बढ़ती है उतनी ही गदली होती जाती है वह फैलाव मे ही लम्बी चौड़ी होती है किसी मामले का हल करने में नही वह अँधेरे को बढ़ाती है जिस में फिर टटोलना ही पड़ता है और बुद्धि अच्छे कामो मे जितनी ही कम लगे उतनी ही प्रकाश करती है जियादा लगने पर जियादा प्रकाश भी कर सकती है लेकिन जरूरत से जियादा लगने पर धोखा हा जाने की सम्भावना है दियासलाई मामूली रगड़ खाकर जल सकती है, प्रकाश दे सकती है, दिया जला सकती है और हमेशा के लिय उपकार कर जा सकती है उसी दियासलाई का अगर बहुत ज़ोर से रगडा जाय तो उस दियासलाई का सिर भक स होकर एक क्षण प्रकाश देकर नीचे गिर जायगा और अपना प्रकाश बेकार बरबाद कर जायगा—या अगर दियासलाई का सिर न भी गिरा तो दूर तक हाथ जाने से प्रकाश हाकर भी हवा से बुझ जायगा और दूसरे दिये न जल सकेंगे इसलिये बुद्धि के इस्तेमाल मे इस बात का बड़ा ध्यान रखना चाहिये कि वह बुराइयो की खाद देकर न पासी गई हा सभी ता समझदार यह कह गए हैं कि साध्य के लिये साधन भी भले होने चाहियें पैसा ईमानदारी से ही कमाना चाहिये बेईमानी से नहीं सुधारक को यह ध्यान रहे कि उसे जो कुछ समाज मे करना है उसकी जल्दबाज़ी न करे अपने उसूलों से हरगिज़ न हटे समझौता कभी न करे गुरु नानक की तरह से मरदाना नाम का एक साथी बना कर ही अपनी जीवन लीला समाप्त कर दे धर्म और पंथ स्थापना में न लगे. अपनी मेहनत के फल देखने की इच्छा न रखे. अपने पुजने

بتانا ہے کہ سدھارک کے لئے سب گرنتھ بیکار ہیں گرنتھوں کا جانکار وہ بھلے ہی ہو پر گرنتھوں کو پرمان کبھی نہ مانے۔ گرنتھوں کا حوالہ بھی نہ دے۔ گرنتھوں کو پرمان میں کبھی پیش نہ کرے پرمان تو وہ بدھی کو ہی مانے اور پرم پرمان ہردے کو مانے اور پرموتم پرمان انتر آتما کو مانے سدھارک جیسے ہی سماج کا سچا ہتیشی بنا کہ اُس کو سب گرنتھوں کا نچوڑ ایسے سمجھ میں آجائیگا جیسے کالا لوہا گھسنے پر شیشہ جیسا صاف بن کر دوسرے کے پرتیبمب کو دکھانے لگتا ہے سروگیہ آدمی بن سکتا ہے یا نہیں ؟ پر اپنے کام کے لئے بہوگیہ تو بہت آسانی سے بن سکتا ہے چوری کرنے کے لیے جتنا گیان چاہئے شاہ بنے رہنے کے لیے اُس سے ہزاروں گنا کم گیان کی ضرورت ہے۔ جھوٹ بولنے والے کو اپنے جھوٹ چھپانے کے لیے جتنے جھوٹ تیار کرنے پڑتے ہیں اور اُن میں جتنی محنت اور بدھی لگتی ہے سچ بولنے میں اُس سے ہزاروں گنا کم بدھی سے کام چل سکتا ہے۔ یہ کہاوت ہے تو ٹھیک کہ بدھی بہت خرچ کرنے سے بڑھتی اور کم خرچ کرنے سے گھٹتی ہے پر یہ ہماری بات سوا ٹھیک ہے کہ بدھی برے کاموں میں لگ کر جتنی زیادہ بڑھتی ہے اُتنی ہی گدلی ہوتی جاتی ہے۔ وہ پھیلاؤ میں ہی لمبی چوڑی ہوتی ہے کسی معاملے کو حل کرنے میں نہیں وہ اندھیرے کو بڑھاتی ہے جس میں پھر ٹٹولنا ہی پڑتا ہے اور بدھی اچھے کاموں میں جتنی ہی کم لگے اُتنا ہی پرکاش کرتی ہی۔ زیادہ لگنے پر زیادہ پرکاش بھی کرسکتی ہے لیکن ضرورت سے زیادہ لگنے پر دھوکا ہوجانے کی سمبھاونا ہے۔ دیا سلائی معمولی رگڑ کھاکر جل سکتی ہے، پرکاش دے سکتی ہے، دیا جلا سکتی ہے اور ہمیشہ کے لئے اپکار کر جاسکتی ہے اُسی دیاسلائی کو اگر بہت زور سے رگڑا جائے تو اُس دیاسلائی کا سر بھک سے ہوکر ایک چھن پرکاش دے کر نیچے گرجائیگا اور اپنا پرکاش بیکار برباد کرجائیگا—یا اگر دیاسلائی کا سر نہ بھی گرا تو دور تک ہاتھ جانے سے پرکاش ہوکر بھی ہوا سے بجھ جائیگا اور دوسرے دیئے نہ جل سکیں گے۔ اس لیے بدھی کے استعمال میں اس بات کا بڑا دھیان رکھنا چاہئے کہ وہ برائیوں کی کھاد دیکر نہ پوسی گئی ہو۔ سبھی تو سمجھدار یہ کہ گئے ہیں کہ سادھیہ کے لئے سادھن بھی بھلے ہونے چاہئیں پیسہ ایمانداری سے ہی کمانا چاہیئے بے ایمانی سے نہیں سدھارک کو یہ دھیان رہے کہ اُسے جو کچھ سماج میں کرنا ہے اس کی جلدبازی نہ کرے اپنے اُصولوں سے ہرگز نہ ہٹے سمجھوتہ کبھی نہ کرے گرو نانک کی طرح سے مردانہ نام کا ایک ساتھی بناکر ہی اپنی جیون لیلا سماپت کردے دھرم اور پنتھ استھاپنا میں نہ لگے اپنی محنت کے پھل دیکھنے کی اچھا نہ رکھے۔ اپنے پجنے

की भावना को पास न फटकने दे. वह तो सदियों से मलिन हुआ मोती बना हुआ समाज सीप के पेट के अन्दर जगत सागर के एक कोने में पड़ा रहे और अगर उसे कोई निकाल के ले जाय तो गले में पड़ने के लिये तैयार रहे. अपना पेट फड़वाने के लिये भी तैयार रहे. माला के डोरे में पिरोए जाकर अपनी आज़ादी खोने को भी तैयार रहे. गुरु नानक भी याद किये ही जाते हैं और मुहम्मद साहब भी याद किये ही जाते हैं जो अपने समय में अपनी सफलता देख गए थे और गाँधी जी भी याद किये जाते हैं जो अपने समय के मालिक बन गये थे. सुधारक इस इतिहास को जानते हुए भी इतिहास के रस में ग़ोता मारने या डूबने की न सोचे. वहाँ दम घुटकर मरने के सिवा और है ही क्या ? उसके लिये तो एक ही पाठ है कि वह इस पर तैरता रहे और *बादल की तरह तैरता रहे तो कहना ही क्या है ! तब और* तभी वह देख सकेगा कि उसका सुधार क्या रंग लाता है.

کی بھاؤنا کو پاس نہ پھٹکنے دے . وہ تو صدیوں سے ملین شدہ موتی بنا ہوا سماج سیپ کے پیٹ کے اندر جگت ساگر کے ایک کونے میں پڑا رہے اور اگر اُسے کوئی نکال کے لے جائے تو گلے میں پڑنے کے لئے تیار رہے . اپنا پیٹ پھڑوانے کے لئے بھی تیار رہے . مالا کے ڈورے میں پروئے جاکر اپنی آزادی کھونے کو بھی تیار رہے . گرونانک بھی یاد کئے ہی جاتے ہیں اور محمد صاحب بھی یاد کئے ہی جاتے ہیں جو اپنے سمے میں اپنی سپھلتا دیکھ گئے تھے اور گاندھی جی بھی یاد کئے جاتے ہیں جو اپنے سمے کے مالک بن گئے تھے . سدھارک اِس اِتہاس کو جانتے ہوئے بھی اِتہاس کے رس میں غوطہ مارنے یا ڈوبنے کی نہ سوچے . وہاں دم گھٹ کر مرنے کے سوا اور ہے ہی کیا ؟ اُس کے لئے تو ایک ہی پاٹھ ہے کہ وہ اس پر تیرتا رہے اور بادل کی طرح تیرتا رہے تو کہنا ہی کیا ہے ! تب اور تبھی وہ دیکھ سکیگا کہ اُس کا سدھار کیا رنگ لاتا ہے .

स्वर्गीय मंज़र भाई !

डाक्टर अमरनाथ कपूर

स्वर्गीय मंज़र अली सोख़्ता साहब को हम सब उनके भक्त प्यार से 'मंज़र भाई' कह कर पुकारते थे. पिछले बीस बरसों से जिस किसी ने उन्हें नंगे पैर साधुओं की तरह फटी जरजर कोपीन पहने, कंधे पर एक फटी लोई रक्खे, जो उनसे कुछ ही कम बूढ़ी थी, और दूसरे कंधे पर एक झोला लटकाए, जिसमें उनकी सारी दुनियवी दौलत समा जाती थी—देखा है, तो वह यह सुनकर ज़रूर हैरत से भर जाएगा कि यह महान, तपस्वी किसी ज़माने में इलाहाबाद हाई कोर्ट का एक दिग्गज ऐडवोकेट था, कम से कम दो हज़ार रुपया महीना इसकी आमदनी थी, फ़िटिन, बंगला, ऐशो-इशरत सब कुछ इसके पास था. मगर यह महान तपस्वी अपनी आत्मा की पुकार को नज़र अन्दाज़ न कर सका और सब कुछ त्यागकर जनता जनार्दन की सेवा करने के लिये आश्रमवासी फ़क़ीर बन गया. उन्हें देखकर हम सब को महात्मा कबीर की याद आ जाती जिनके नक़्शे क़दम पर सोख़्ता साहब चल रहे थे.

سورگیہ منظر بھائی !

ڈاکٹر امرناتھ کپور

سورگیہ منظر علی سوختہ صاحب کو ہم سب بھگت پیار سے 'منظر بھائی' کہکر پکارتے تھے . پچھلے بیس برسوں سے جس کسی نے اُنھیں ننگے پیر سادھوؤں کی طرح پھٹی جر جر کوپین پہنے' کندھے پر ایک پھٹی لوئی رکھے' جو اُن سے کچھ ہی کم بوڑھی تھی اور دوسرے کندھے پر ایک جھولا لٹکائے' جس میں اُن کی ساری دنیوی دولت سماجاتی تھی—دیکھا ہے' تو وہ یہ سنکر ضرور حیرت سے بھر جائیگا کہ یہ مہان تپسوی کسی زمانے میں اِلہ آباد ہائی کورٹ کا ایک دگج ایڈوکیٹ تھا' کم سے کم دو ہزار روپیہ مہینہ اِس کی آمدنی تھی' فٹن' بنگلہ' عیش و عشرت سب کچھ اس کے پاس تھا . مگر یہ مہان تپسوی اپنی آتما کی پکار کو نظرانداز نہ کرسکا اور سب کچھ تیاگ کر جنتا جناردن کی سیوا کرنے کے لئے آشرم واسی فقیر بن گیا . اُنھیں دیکھکر ہم سب کو مہاتما کبیر کی یاد آجاتی جن کے نقش قدم پر سوختہ صاحب چل رہے تھے .

उनका जन्म एक नवाबी मुसलिम कुटुम्ब में हुआ था, लेकिन इस मुल्क की मिट्टी के ज़र्रे-ज़र्रे से उनका नाता था. हिन्दुस्तान के सब धर्मों के लिये उनके दिल में जगह थी और वे ख़ुद धर्मों से ऊपर ख़ुदा के सच्चे बन्दे थे. भारत के ऋषियों के ऊँचे आदर्श उनके जीवन में समोए हुए थे. मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि लाखों हिन्दुओं से उनकी आत्मा कहीं ज़ियादा पाक और साफ़ थी.

मैंने उन्हें मुसलमानों को समझाते हुए सुना है—जब कि ख़ुदा एक है और हम सब उसके बन्दे हैं तो अल्लाह ताला कैसे इस बात को पसन्द करेगा कि उसका एक बन्दा दूसरे बन्दे से इसलिये नफ़रत करे कि उनके इबादत के तरीक़े जुदा-जुदा हैं ? वे मुसलमानों को यह भी समझाते थे कि मज़हब जुदा हो सकता है मगर मुल्क के रीत-रिवाज और तरीक़े जुदागाना नहीं होने चाहियें. लोगों के त्योहार अलग-अलग नहीं होने चाहिये, सब को एक दूसरे की ख़ुशी और रंजो-ग़म में शामिल होना चाहिये. अगर एक इंसान मज़हब की बिना पर दूसरे इंसान से नफ़रत करता है तो अल्लाह उसकी इबादत कभी क़बूल न करेगा.

मैंने उन्हें हिन्दी कविता में लिखा हुआ वासवदत्ता का जीवन चरित एक बार पढ़कर सुनाया. जब वह जगह आई कि वासवदत्ता सब कुछ छोड़कर महात्मा बुद्ध के क़दमों पर चलने का फ़ैसला करती है तो उसे सुनकर मंज़र भाई की आँखों से टप-टप आँसू बहने लगे. भारत की तहज़ीब के साथ ऐसा था उनका गहरा प्रेम.

मैं जब से कानपुर में रहने लगा तो महीने में एक दो दफ़ा आठ मील दूर उनके आश्रम में उनसे मिलने ज़रूर जाता. महात्मा गाँधी के बाद अगर मेरे दिल में किसी के लिये बेहद आदर था तो वह मंज़र भाई के लिये. महात्मा गाँधी के अपरिग्रह के उसूल यानी दुनिया की किसी चीज़ को अपना न समझो—पर उनका गहरा यक़ीन था और वे ख़ुद उस पर अमल करते थे. वे अपने मुल्क के ग़रीब से ग़रीब देशवासी की तरह ज़िन्दगी बिताते थे. ओहदे और दुनियवी इज़्ज़त से उन्होंने बिलकुल मुँह मोड़ लिया था. वे गाँधीजी के इस उपदेश के हामी थे कि देश के सेवकों को भोग का नहीं, त्याग का जीवन बिताना चाहिये. यह देखकर उन्हें बेहद अफ़सोस होता था कि गांधीजी के पैरोकार त्याग का रास्ता भुलाकर भोग के रास्ते पर बढ़े चले जा रहे हैं. उनका कहना था कि गाँधी जी के बताए हुए त्याग ने ही दुनिया की नज़रों में हिन्दुस्तान को ऊँचा उठाया और उस रास्ते को छोड़कर हम अपनी इज़्ज़त गँवा देंगे. मंज़र भाई महात्मा गाँधी के अहिंसा के सिद्धान्त के ज़बरदस्त पैरोकार थे. अहिंसा पर उनके ख़यालातों को सुनकर हम सब हैरत में भर जाते थे. अहिंसा की ख़ूबियों को उनसे ज़ियादा अच्छी तरह कोई

اُن کا جنم ایک نوابی مسلم کٹمب میں ہوا تھا، لیکن اِس ملک کی مٹی کے ذرے ذرے سے اُن کا ناتا تھا. ہندستان کے سب دھرموں کے لئے اُن کے دل میں جگہ تھی اور وہ خود دھرموں سے اُوپر خدا کے سچے بندے تھے ۔ بھارت کے رشیوں کے اُونچے آدرش اُن کے جیون میں سموئے ہوئے تھے ۔ میں یہ دعوے کے ساتھ کہ سکتا ہوں کہ لاکھوں ہندؤں سے اُن کی آتما کہیں زیادہ پاک اور صاف تھی ۔

میں نے اُنھیں مسلمانوں کو سمجھاتے ہوئے سنا ہے جبکہ خدا ایک ہے اور ہم سب اُس کے بندے ہیں تو اللہ تعالیٰ کیسے اِس بات کو پسند کریگا کہ اُس کا ایک بندہ دوسرے بندے سے اِس لئے نفرت کرے کہ اُن کے عبادت کے طریقے جدا جدا ہیں ؟ وہ مسلمانوں کو یہ بھی سمجھاتے تھے کہ مذہب جدا ہوسکتا ہے مگر ملک کے ریت رواج اور طریقے جداگانہ نہیں ہونے چاہئیں ۔ لوگوں کے تیوہار الگ الگ نہیں ہونے چاہئیں، سب کو ایک دوسرے کی خوشی اور رنج و غم میں شامل ہونا چاہئے، اگر ایک اِنسان مذہب کی بنا پر دوسرے اِنسان سے نفرت کرتا ہے تو اللہ اُس کی عبادت کبھی قبول نہ کریگا ۔

میں نے اُنھیں ہندی کویتا میں لکھا ہوا واسودتا کا جیون چرت ایک بار پڑھکر سنایا. جب وہ جگہ آئی کہ واسودتا سب کچھ چھوڑکر مہاتما بدھ کے قدموں پر چلنے کا فیصلہ کرتی ہے تو اُسے سنکر منظر بھائی کی آنکھوں سے ٹپ ٹپ آنسو بہنے لگے ۔ بھارت کی تہذیب کے ساتھ ایسا تھا اُن کا گہرا پریم ۔

میں جب سے کانپور میں رہنے لگا تو مہینے میں ایک دو دفعہ آٹھ میل دور ان کے آشرم میں اُن سے ملنے ضرور جاتا ۔ مہاتما گاندھی کے بعد اگر میرے دل میں کسی کے لئے بےحد آدر تھا تو وہ منظر بھائی کے لئے ۔ مہاتما گاندھی کے اپریگرہ کے اصول یعنی دنیا کی کسی چیز کو اپنا نہ سمجھو- پر ان کا گہرا یقین تھا اور وہ خود اس پر عمل کرتے تھے ۔ وہ اپنے ملک کے غریب سے غریب دیش واسی کی طرح زندگی بتاتے تھے. عہدے اور دنیوی عزت سے اُنھوں نے بالکل منہ موڑ لیا تھا ۔ وہ گاندھی جی کے اِس اپدیش کے حامی تھے کہ دیش کے سیوکوں کو بھوگ کا نہیں تیاگ کا جیون بتانا چاہئے ۔ یہ دیکھکر اُنھیں بےحد افسوس ہوتا تھا کہ گاندھی جی کے پیروکار تیاگ کا راستہ بھلا کر بھوگ کے راستے پر بڑھے چلے جا رہے ہیں ۔ اُن کا کہنا تھا کہ گاندھی جی کے بتائے ہوئے تیاگ نے ہی دنیا کی نظروں میں ہندستان کو اونچا اُٹھایا اور اُس راستے کو چھوڑ کر ہم اپنی عزت گنوا دینگے ۔ منظر بھائی مہاتما گاندھی کے اہنسا کے سدھانت کے زبردست پیروکار تھے ۔ اہنسا پر اُن کے خیالاتوں کو سنکر ہم سب حیرت میں بھر جاتے تھے ۔ اہنسا کی خوبیوں کو اُن سے زیادہ اچھی طرح کوئی

दूसरा नहीं समझा सकता था. वे कहते थे कि अहिंसा न सिर्फ़ मुख्तलिफ़ जातियों, मज़हबों, फ़िरक़ों, सूबों और मुल्क के रहने वालों को मुहब्बत के धागे में बाँधेगी बल्कि दुनिया की तमाम मुसीबतें भी इसी अहिंसा से दूर होंगी. तलवार से दुनिया में शान्ति क़ायम नहीं हो सकती. ऐटम बम तैयार करने वाले ख़ुद ऐटम बम से ही मिट जाएँगे. अहिंसा से बढ़कर कोई दूसरा हथियार नहीं जिससे दुनिया की हिफ़ाज़त हो सके. हिन्दुस्तान के समझदार लोगों का यह फ़र्ज़ है कि वे अपनी ज़िन्दगी में गाँधीजी के उन उसूलों को उतारें और तब न सिर्फ़ अपने मुल्क वालों को बल्कि दुनिया वालों को भी उन उसूलों पर चलने की दावत दें. मंज़र भाई, बेशक, उन उसूलों को अपनी ज़िन्दगी में पूरी तरह उतार चुके थे.

मंज़र भाई चाहते थे कि गाँधीजी के उसूलों के प्रचार के लिये हमें मिशनरी ढंग से काम करना चाहिये, छोटी छोटी पुस्तकें छपानी चाहियें जिनमें गाँधीजी के उसूलों के मुताबिक़ ज़िन्दगी के हर पहलू पर रोशनी डाली जाय. हम उनके नासमझ भक्त और साथी उनकी उम्मीदों को कामियाब बनाने में अपनी दुनियवी कमज़ोरियों के कारण मदद न देते तो वे हंसकर कहते—कोई बात नहीं भाई ! यह ज़माना तुम्हारा है. आगे आने वाला ज़माना बेशक हमारा है. अगर मेरी ज़िन्दगी में नहीं तो मेरे मरने के बाद मेरा यह सेवा कुँज आश्रम ज़रूर एक आदर्श गाँधी ग्राम का मरकज़ बनेगा. सिवाय इस रास्ते के हिन्दुस्तान अगर दूसरी तरफ़ जायगा तो बरबाद हो जायगा.

पिछले दो तीन बरसों से मैं देख रहा था कि मंज़र भाई ने पैसों की तरफ़ से बिलकुल हाथ खींच लिया था, यहाँ तक कि वे आश्रम के लिये भी चन्दा इकट्ठा करने से इनकार करते थे. सन् 1906 से लेकर अबतक पूरे पचास बरस उन्होंने मुल्क की बिना थके सेवा की. उनका बीमार और बूढ़ा शरीर तारतार हो चला था, मगर उन्होंने उसे आख़िरी दम तक चैन न लेने दिया. वे कहा करते थे कि जिस मुल्क मे करोड़ो आदमी बे घर बार, बे सरो सामान, बे दवा और बे आराम मर जाते हैं वहाँ मैं कैसे अपने लिये यह आसाइशें इकट्ठा करूँ. बाद में यह नौबत यहाँ तक पहुँच गई कि किसी ने गर कुछ खिला दिया तो मंज़र भाई ने खा लिया वरना दो-दो तीन-तीन फ़ाक़े निकल जाते.

मौत के साल भर पहले से ही उनके जिगर ने उनका साथ देना छोड़ दिया था. बवासीर ने उन्हें चौबीसों घंटे परेशान कर रखा था. ख़ून की कमी से उनका शरीर बिलकुल पीला पड़ गया था, हाथ पैर में सूजन आ गई थी, किन्तु इस हालत में भी वे नंगे पाँव पैदल गरमी, बरसात और जाड़ा झेलकर अहिंसा और प्रेम के सिद्धान्तों का प्रचार बराबर जारी रक्खे हुए थे.

دوسرا نہیں سمجھا سکتا تھا ۔ وہ کہتے تھے کہ اہنسا نہ صرف مختلف جاتیوں، مذہبوں، فرقوں، صوبوں اور ملک کے رہنے والوں کو محبت کے دھاگے میں باندھے گی بلکہ دنیا کی تمام مصیبتیں بھی اسی اہنسا سے دور ہونگی ۔ تلوار سے دنیا میں شانتی قایم نہیں ہو سکتی ۔ ایٹم بم تیار کرنے والے خود ایٹم بم سے ہی مٹ جائینگے ۔ اہنسا سے بڑھکر کوئی دوسرا ہتھیار نہیں جس سے دنیا کی حفاظت ہو سکے ۔ ہندستان کے سمجھدار لوگوں کا یہ فرض ہے کہ وہ اپنی زندگی میں گاندھی جی کے ان اصولوں کو اتاریں اور تب نہ صرف اپنے ملک والوں کو بلکہ دنیا والوں کو بھی ان اصولوں پر چلنے کی دعوت دیں ۔ منظر بھائی، بیشک، ان اصولوں کو اپنی زندگی میں پوری طرح اتار چکے تھے ۔

منظر بھائی چاہتے تھے کہ گاندھی جی کے اصولوں کے پرچار کے لئے ہمیں مشنری ڈھنگ سے کام کرنا چاہئے، چھوٹی چھوٹی پستکیں چھپانی چاہئیں جن میں گاندھی جی کے اصولوں کے مطابق زندگی کے ہر پہلو پر روشنی ڈالی جائے ۔ ہم ان کے نا سمجھ بھگت، اور ساتھی ان کی امیدوں کو کامیاب بنانے میں اپنی دنیوی کمزوریوں کے کارن مدد نہ دیتے تو وہ ہنسکر کہتے— کوئی بات نہیں بھائی، یہ زمانہ تمہارا ہے ۔ تو آگے آنے والا زمانہ بیشک ہمارا ہے ۔ اگر میری زندگی میں نہیں تو میرے مرنے کے بعد میرا یہ سیوا کنج آشرم ضرور ایک آدرش گاندھی گرام کا مرکز بنے گا ۔ سوائے اس راستے کے ہندستان اگر دوسری طرف جائیگا تو برباد ہو جائیگا ۔

پچھلے دو تین برسوں سے میں دیکھ رہا تھا کہ منظر بھائی نے پیسوں کی طرف سے بالکل ہاتھ کھینچ لیا تھا، یہاں تک نہ وہ آشرم کے لئے بھی چندہ اکٹھا کرنے سے انکار کرتے تھے ۔ سن 1906 سے لیکر اب تک پورے پچاس برس انہوں نے ملک کی بنا تھکے سیوا کی ۔ ان کا بیمار اور بوڑھا شریر تار تار ہو چلا تھا، مگر انہوں نے اسے آخری دم تک چین نہ لینے دیا ۔ وہ کہا کرتے تھے کہ جس ملک میں کروڑوں آدمی بے گھر بار، بے سرو سامان، بے دوا اور بے آرام مر جاتے ہیں وہاں میں کیسے اپنے لئے یہ آسائشیں اکٹھا کروں ۔ بعد میں یہ نوبت یہاں تک پہنچ گئی کہ کسی نے گر کچھ کھلا دیا تو منظر بھائی نے کھا لیا ورنہ دو دو تین تین فاقے نکل جاتے ۔

موت سے سال بھر پہلے سے ہی ان کے جگر نے انکا ساتھ دینا چھوڑ دیا تھا بواسیر نے انہیں چوبیسوں گھنٹے پریشان کر رکھا تھا ۔ خون کی کمی سے ان کا شریر بالکل پیلا پڑ گیا تھا، ہاتھ پیر میں سوجن آگئی تھی، کنتو اس حالت میں بھی وہ ننگے پاؤں پیدل گرمی، برسات اور جاڑا جھیل کر اہنسا اور پریم کے سدھانتوں کا پرچار برابر جاری رکھے ہوئے تھے ۔

एक दिन मुझे अचानक पता चला कि मंजर भाई की हालत ज़ियादा ख़राब हो गई है और बीमारी के सबब वह चल फिर नहीं सकते. मैं आश्रम पहुँचा. पहुंचकर देखता हूँ कि मंजर भाई का जर्जर तन एक तख़्त पर पड़ा हुआ था, बदन की हड्डियाँ और पसलियाँ सब उभर आई थीं, बिछौने के नाम पर एक फटी हुई पुरानी दरी थी, ओढ़ने के लिए एक पुराना तारतार तूश उनकी छाती पर पड़ा हुआ था और एक फटी हुई घिसी लोई उनके पैरों पर पड़ी थी. मैंने देखा कि उनका बदन जाड़े से थरथर काँप रहा था, उनकी आँखें बन्द थीं. मैंने उन्हें धीरे से पुकारा—मन्ज़र भाई ? मुझे देखकर उन्होंने मुश्किल से दोनों हाथ उठाकर मुझे छाती से लगाना चाहा. पर इस थोड़ी सी हरकत से ही वे निढाल हो गए. मैं उनके पास उसी तख़्त पर बैठ गया. फिर मुझसे बोले ज़रा—मेरी लोई ठीक कर दो, कुछ जाड़ा सा लग रहा है. मैंने उस फटी हुई लोई से किसी तरह उनके पैरों को ढकने की कोशिश की. इस थोड़ी सी मेहनत से ही वे इतना थक गये थे कि उन्होंने आँखें मूँद लीं.

उनकी यह हालत देखकर मेरे आँसू बहने लगे. मैं सोचने लगा कि क्या सेवा का यही इनाम है ? क्या कठोर तपस्या का यही फल मिलता है ? मेरे सामने एक बहुत बड़ा मेधावी और दिग्गज विद्वान पड़ा था. अगर वह चाहता तो केन्द्रीय सरकार के मंत्रिमण्डल में उसे आसानी से जगह मिल जाती. राजपाल बनकर राज भवन की उससे शोभा बढ़ जाती. मगर यह तपस्वी तो तिल तिल पर अपने आपको बलिदान कर रहा था. मेरा मन मसोस उठा. मैं ज़ार-ज़ार रोने लगा.

उन्होंने आँखें खोलीं और मुझे रोता पाया. मुझसे कहने लगे—"मन्ज़र भाई की हालत देखकर तुम रोने लगे ? इस बदक़िस्मत देश में लाखों देशवासी मुझसे भी बदतर हालत में मर जाते हैं, क्या उनकी हालत को देख कर कभी तुमने आँसू बहाया ?"

इस इलज़ाम पर मैं ख़ामोश हो गया. मैंने आहिस्ता से उनसे कहा कि मन्ज़र भाई आप मेरे यहाँ चलें, तो बोले कि मैं तुम्हारी हालत जानता हूँ, तुम्हारे पास तो ख़ुद खाने को नहीं, मैं कैसे तुम्हारे ऊपर बोझ बन सकता हूँ ? मैंने फिर उनसे कहा, तो मंजर भाई अस्पताल में ही चलें, कुछ वहाँ दवा-दारू होगी. मेरी इस बात से जैसे उन्हें सदमा लगा. बोले—"अस्पतालों और डाक्टरी दवाओं का नाम लेकर तो तुमने मुझे बहुत दुखी कर दिया अमरनाथ ! यह जगहें तो सिर्फ़ पैसे वालों की ख़िद-मत के लिये हैं. ग़रीब वहाँ दाख़िल हो जाता है तो जान भी गँवाता है और इज़्ज़त भी खोता है. मैं भी उन्हीं

ایک دن مجھے اچانک پتہ چلا کہ منظر بھائی کی حالت زیادہ خراب ہوگئی ہے اور بیماری کے سبب وہ چل پھر نہیں سکتے۔ میں آشرم پہونچا۔ پہونچکر دیکھتا ہوں کہ منظر بھائی کا جر جر تن ایک تخت پر پڑا ہوا تھا' بدن کی ہڈیاں اور پسلیاں سب اُبھر آئی تھیں' بچھونے کے نام پر ایک پھٹی ہوئی پرانی دری تھی' اوڑھنے کے لئے ایک پرانا تار تار توش ان کی چھاتی پر پڑا ہوا تھا اور ایک پھٹی ہوئی گھسی لوئی ان کے پیروں پر پڑی تھی۔ میں نے دیکھا کہ ان کا بدن جاڑے سے تھر تھر کانپ رہا تھا' ان کی آنکھیں بند تھیں ۔ میں نے انھیں دھیرے سے پکارا— منظر بھائی ؟ مجھے دیکھکر انھوں نے مشکل سے دونوں ہاتھ اٹھاکر مجھے چھاتی سے لگانا چاہا۔ پر اِس تھوڑی سی حرکت سے ہی وہ نڈھال ہوگئے ۔ میں ان کے پاس اسی تخت پر بیٹھ گیا۔ پھر مجھسے بولے—ذرا میری لوئی ٹھیک کردو' کچھ جاڑا سا لگ رہا ہے ۔ میں نے اُس پھٹی ہوئی لوئی سے کسی طرح ان کے پیروں کو ڈھکنے کی کوشش کی ۔ اِس تھوڑی سی محنت سے ہی وہ اِتنا تھک گئے تھے کہ انھوں نے آنکھیں موند لیں ۔

ان کی یہ حالت دیکھکر میرے آنسو بہنے لگے۔ میں سوچنے لگا کہ کیا سیوا کا یہی اِنعام ہے ؟' کیا کٹھور تپسیا کا یہی پھل ملتا ہے ؟ میرے سامنے ایک بہت بڑا میدھاوی اور دگج ودوان پڑا تھا۔ اگر وہ چاہتا تو کیندریہ سرکار کے منتری منڈل میں اُسے آسانی سے جگہ مل جاتی ۔ راجپال بنکر راج بھون کی اُس سے شوبھا بڑھ جاتی ۔ مگر یہ تپسوی تو تل تل کر اپنے آپ کو بلیدان کر رہا تھا ۔ میرا من مسوس اٹھا ۔ میں زار زار رونے لگا ۔

انھوں نے آنکھیں کھولیں اور مجھے روتا پایا۔ مجھسے کہنے لگے—"منظر بھائی کی حالت دیکھکر تم رونے لگے ؟ اِس بدقسمت دیش میں لاکھوں دیش واسی مجھ سے بدتر حالت میں مرجاتے ہیں' کیا اُن کی حالت کو دیکھکر کبھی تم نے آنسو بہایا ؟"

اِس الزام پر میں خاموش ہوگیا ۔ میں نے آہستہ سے ان سے کہا کہ منظر بھائی آپ میرے یہاں چلیں' تو بولے کہ میں تمھاری حالت جانتا ہوں' تمھارے پاس تو خود کھانے کو نہیں' میں کیسے تمھارے اوپر بوجھ بن سکتا ہوں ؟ میں نے پھر ان سے کہا' تو منظر بھائی اسپتال ہی میں چلیں' کچھ وہاں دوا دارو ہوگی۔ میری اِس بات سے جیسے انھیں صدمہ لگا ۔ بولے —"اسپتالوں اور ڈاکٹری دواؤں کا نام لیکر تو تم نے مجھے بہت دکھی کردیا امرناتھ ! یہ جگہیں تو صرف پیسے والوں کی خدمت کے لئے ہیں ۔ غریب وہاں داخل ہوجاتا ہے تو جان بھی گنواتا ہے اور عزت بھی کھوتا ہے ۔ میں بھی انھیں

ग़रीबों की जमाअत का हूँ. तुमने अगर वहाँ ग़रीबों की दुर्दशा देखी होती तो यह अल्फ़ाज़ भी तुम अपनी ज़बान पर न लाते." मैंने हिम्मत करके फिर कहा—"मन्ज़र भाई ! आप की ज़िन्दगी इस ग़रीब देश की दौलत है, उसे इस तरह ख़त्म होते देखकर मुझे बहुत दुख हो रहा है." एक गहरी आह भरकर मन्ज़र भाई ने जवाब दिया—"ऐसा लगता है कि आज इस मुल्क के समाज और देश के नेताओं की ज़मीर जैसे मर सी चुकी है. गाँधी जी के उसूलों की आज यहाँ कोई क़द्र नहीं. ज़बान पर हमारे गाँधी जी का नाम, मगर काम हम सब ऐसे करते हैं जिससे उनकी आत्मा को दुख पहुँचे. जब चारों तरफ़ हिंसा और आपसी नफ़रत का ही बोलबाला हो तो ऐसी ज़िन्दगी में तो रस नहीं है. इसीलिये मुझे अब इस ज़िन्दगी में लुत्फ़ नहीं रह गया. हाँ एक बात मैं ज़रूर चाहता हूँ कि अगर मेरा यह आश्रम मज़हबे इंसानियत, मानव बिरादरी और सर्वधर्म समभाव का केन्द्र बन सके तो मुझे मरने के बाद भी बेहद तसल्ली रहेगी. मैं अब दवाओं की मदद से ज़िन्दगी का एक दिन भी बढ़ाना नहीं चाहता, और अगर अल्लाह को सचमुच मुझसे कुछ काम लेना है तो वह बग़ैर दवा के ही मुझे सेहत बख़्शेगा."

कुछ ही दिनों के बाद मंज़र भाई की हालत इतनी ज़ियादा ख़राब हो गई कि वे आश्रम में ही बेहोश हो गए. उनके कुछ भक्त बेहोशी की ही हालत में उन्हें अस्पताल ले आए. होश आने पर वे बहुत ख़फ़ा हुए. डाक्टर जवाहर लाल ने गरम दूध के साथ उन्हें एक चम्मच ओवलटीन दी. मुँह में घूँट रक्खा ही था कि चिलमची में थूक दिया. डाक्टर जवाहर लाल से उलाहना भरे स्वर में उन्होंने कहा—"डाक्टर साहब ओवलटीन में तो अन्डा होता है. मैं तो निरामिश भोजी हूँ. क्या ज़िन्दगी देने के लिये आप मेरा धर्म लेना चाहते हैं ?" डाक्टर जवाहर लाल हैरान और शरमिन्दा हो कर माफ़ी माँगने लगे.

मंज़र भाई की सेहत की ख़बर पाकर प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू ने कानपुर के डिस्ट्रिक्ट मैजिसट्रेट और सिविल सरजन को तार दिया कि मंज़र भाई का अच्छे से अच्छा इलाज हो और उनके सेहत की इत्तला रोज़ उन्हें दी जाय. मगर एक सच्चे फ़क़ीर को अस्पताल में कैसे चैन पड़ता ? वे एक दिन चुपचाप उठकर रिक्शे में बैठकर अपने आश्रम चले आए. सच्चे फ़क़ीर की रूह को सख़्त तख़्त पर ही चैन मिलता है. तीन दिन आश्रम में रहकर मंज़र भाई ने इस नाशमान और फ़ानी दुनिया से अपना ताल्लुक़ तोड़ लिया.

उसूलों की दुहाई देकर ऐश की ज़िन्दगी बिताने वालों के इस देश में उसूलों पर मरने वाला सचमुच उसूलों पर

غریبوں کی جماعت کا ہوں۔ تم نے اگر وہاں غریبوں کی دردشا دیکھی ہوتی تو یہ الفاظ بھی تم اپنی زبان پر نہ لاتے۔" میں نے ہمت کرکے پھر کہا—"منظر بھائی ! آپ کی زندگی اِس غریب دیش کی دولت ہے، اُسے اِس طرح ختم ہوتے دیکھکر مجھے بہت دکھ ہو رہا ہے۔" ایک گہری آہ بھرکر منظر بھائی نے جواب دیا—"ایسا لگتا ہے کہ آج اِس ملک کے سماج اور دیش کے نیتاؤں کی ضمیر جیسے مر سی چکی ہے۔ گاندھی جی کے اُصولوں کی آج یہاں کوئی قدر نہیں۔ زبان پر ہمارے گاندھی جی کا نام، مگر کام ہم سب ایسے کرتے ہیں جس سے اُن کی آتما کو دکھ پہونچے۔ جب چاروں طرف ہنسا اور آپسی نفرت کا ہی بول بالا ہو تو ایسی زندگی میں تو رس نہیں ہے۔ اِسی لئے مجھے اب اِس زندگی میں کوئی لطف نہیں رہ گیا۔ ہاں ایک بات میں ضرور چاہتا ہوں کہ اگر میرا یہ آشرم مذہب انسانیت، مانو برادری اور سرو دھرم سمبھاؤ کا کیندر بن سکے تو مجھے مرنے کے بعد بھی بیحد تسلی رہیگی۔ میں اب دواؤں کی مدد سے زندگی کا ایک دن بھی بڑھانا نہیں چاہتا، اور اگر اللہ کو سچ مچ مجھ سے کچھ کام لینا ہے تو وہ بغیر دوا کے ہی مجھے صحت بخشیگا۔"

کچھ ہی دنوں کے بعد منظر بھائی کی حالت اِتنی زیادہ خراب ہوگئی کہ وہ آشرم میں ہی بیہوش ہوگئے۔ اُن کے کچھ بھکت بیہوشی کی ہی حالت میں اُنہیں اسپتال لے آئے۔ ہوش آنے پر وہ بہت خفا ہوئے۔ ڈاکٹر جواہر لال نے گرم دودھ کے ساتھ اُنہیں ایک چمچ اوولٹین دی۔ منہ میں گھونٹ رکھا ہی تھا کہ چلمچی میں تھوک دیا۔ ڈاکٹر جواہر لال سے اُلاہنا بھرے سور میں اُنہوں نے کہا—"ڈاکٹر صاحب اوولٹین میں تو انڈا ہوتا ہے۔ میں تو نرامش بھوجی ہوں۔ کیا زندگی دینے کے لئے آپ میرا دھرم لینا چاہتے ہیں ؟" ڈاکٹر جواہر لال حیران اور شرمندہ ہوکر معافی مانگنے لگے۔

منظر بھائی کی صحت کی خبر پاکر پردھان منتری جواہر لال نہرو نے کانپور کے ڈسٹرکٹ میجسٹریٹ اور سول سرجن کو تار دیا کہ منظر بھائی کا اچھے سے اچھا علاج ہو اور اُن کے صحت کی اطلاع روز اُنہیں دی جائے۔ مگر ایک سچے فقیر کو اسپتال میں کیسے چین پڑتا ؟ وہ ایک دن چپ چاپ اُٹھکر رکشے میں بیٹھکر اپنے آشرم چلے آئے۔ سچے فقیر کی روح کو سخت تخت پر ہی چین ملتا ہے۔ تین دن آشرم میں رہ کر منظر بھائی نے اِس ناشمان اور فانی دنیا سے اپنا تعلق توڑ لیا۔

اُصولوں کی دوہائی دےکر عیش کی زندگی بتانے والوں کے اِس دیش میں اُصولوں پر مرنے والا سچ مچ اُصولوں پر

छोड़कर हमारे बीच से चला गया. उनके आश्रम के उजड़े हुए कारखानों की दीवारें, आश्रम के मुख्य भवन की लटकी हुई छतें, बल्लियों के सहारे रुका हुआ बराम्दा, भीतर के कमरे में अलमारियों में रक्खी धूल से भरी किताबें, छापे खाने का अस्त व्यस्त सामान और टूटी फूटी कुरसियां देखने वाले को साफ़ बता देती हैं कि उसूल पर चलने वालों का यह देश कितना मान सम्मान करता है !

मौत से कुछ दिन पहले मंजर भाई ने मित्रों से पूछा कि उन्हें जलाया जायगा या दफ़नाया जायगा. किसी ने कहा जलाना ठीक है. किसी ने कहा दफ़नाना ठीक है. एक बहन बोलीं कि हमारे देश में साधू फ़क़ीरों को कोई जलाता, नहीं वे दफ़नाए जाते हैं और उनपर समाधि बनाई जाती है. मंजर भाई ने जवाब दिया कि मुझे न तो मन से मोह है और न तन से. जैसी तुम लोगों की मर्ज़ी हो करना. मरने के बाद सैकड़ों भक्तों ने उन्हें दफ़नाना ही मुनासिब समझा. मुसलमान भक्तों ने क़ुरान ख़ानी की और फ़ातेहा पढ़ा, और सैकड़ों हिन्दू भक्तों ने राम धुन की और गीता का दूसरा अध्याय पढ़ा.

आज मंजर भाई के आश्रम में अम्बर चरखे का केन्द्र चल रहा है. लेकिन क्या ही अच्छा होता कि चरखा केन्द्र के साथ-साथ हम वहां सब धर्म, मज़हबों की एकता का केन्द्र भी खोल सकते. यही मंजर भाई की आख़िरी मर्ज़ी थी. उनकी इस आख़िरी मर्ज़ी को पूरा करना उनके साथियों और भक्तों का पाक फ़र्ज़ है.

ہم کو ہمارے بیچ سے چلا گیا. اُن کے آشرم کے اُجڑے ہوئے کارخانوں کی دیواریں' آشرم کے مکھیہ بھون کی لٹکی ہوئی چھتیں' بلیوں کے سہارے رکا ہوا برآمدہ' بھیتر کے کمرے میں الماریوں میں رکھی دھول سے بھری کتابیں' چھاپہ خانے کا استِ ویست سامان اور ٹوٹی پھوٹی کرسیاں دیکھنے والے کو صاف بتا دیتی ہیں کہ اصول پر چلنے والوں کا یہ دیش کتنا مان سمان کرتا ہے !

موت سے کچھ دن پہلے منظر بھائی نے متروں سے پوچھا کہ انہیں جلایا جائیگا یا دفنایا جائیگا. کسی نے کہا جلانا ٹھیک ہے' کسی نے کہا دفنانا ٹھیک ہے . ایک بہن بولیں کہ ہمارے دیش میں سادھو فقیروں کو کوئی جلاتا نہیں وے دفنائے جاتے ہیں اور اُن پر سمادھی بنائی جاتی ہے . منظر بھائی نے جواب دیا کہ مجھے نہ تو من سے موہ ہے اور نہ تن سے . جیسی تم لوگوں کی مرضی ہو کرنا . مرنے کے بعد سیکڑوں بھکتوں نے انہیں دفنانا ہی مناسب سمجھا. مسلمان بھکتوں نے قرآن خوانی کی اور فاتحہ پڑھا' اور سیکڑوں ہندو بھکتوں نے رام دھن کی اور گیتا کا دوسرا آدھیائے پڑھا .

آج منظر بھائی کے آشرم میں امبر چرخے کا کیندر چل رہا ہے . لیکن کیا ہی اچھا ہوتا کہ چرخہ کیندر کے ساتھ ساتھ ہم وہاں سرو دھرم' مذہبوں کی ایکتا کا کیندر بھی کھول سکتے . یہی منظر بھائی کی آخری مرضی تھی . ان کی اِس آخری مرضی کو پورا کرنا اُن کے ساتھیوں اور بھکتوں کا پاک فرض ہے .

बाबा मंजरअली की शीतल छाया में

श्री शिवमूर्ति

पहली अप्रैल सन् 1942 की बात है, मन में असमंजस का बोझ लिये मैं बाबा मंजरअली के सेवाकुंज आश्रम पहुँचा. बाबा, जैसा कि आश्रमवासी सोख्ता साहब को कह कर पुकारते थे, कहीं आस पास के गाँव में रचनात्मक काम के सिलसिले से गए हुए थे. सारा आश्रम अपने दैनिक कामों में लगा हुआ था. कहीं चरखे चल रहे थे, कहीं करघों की खट खट सुनाई दे रही थी. बढ़ई विभाग से बसूलों, रन्दों और आरे की मिली जुली आवाज़ उठ रही थी. गोशाले में गाएँ

بابا منظر علی کی شیتل چھایا میں

شری شومورتی

پہلی اپریل سن 1942 کی بات ہے' من میں اسمنجس کا بوجھ لئے میں بابا منظر علی کے سیوا کنج آشرم پہونچا . بابا' جیسا کہ آشرم واسی سوختہ صاحب کو کہکر پکارتے تھے' کہیں آس پاس کے گاؤں میں رچناتمک کام کے سلسلے سے گئے ہوئے تھے . سارا آشرم اپنے دینک کاموں میں لگا ہوا تھا . کہیں چرخے چل رہے تھے' کہیں کرگھوں کی کھٹ کھٹ سنائی دے رہی تھی . بڑھئی وبھاگ سے بسولوں' رندوں اور آرے کی ملی جلی آواز اُٹھ رہی تھی . گوشالے میں گائیں

[खिल] रही थी, तो खेती विभाग के कार्यकर्ता घास फूस को साफ़ करने में लगे हुए थे, आश्रम का कोना कोना सफ़ाई से जगमग जगमग कर रहा था. मैं जाकर सोख़्ता साहब की कुटिया के बराम्दे में बैठ गया. बसन्त का मौसम अपने चढ़ाव पर था. सामने अंगूरी लता से पके हुए अंगूरों के गुच्छे लटक रहे थे, जिन से भीनी-भीनी महक उठ रही थी. कुएँ के पास अमराई के कुंज में बैठी हुई कोयल रह-रह कर कुहू-कुहू कर उठती थी. बराम्दे के दाहिनी तरफ़ गुलाब बाड़ी थी जहाँ बहार का मौसम होने पर भी गुलाब के सौ सवा सौ पेड़ों से मदमाती ख़ुशबू उड़ रही थी. उत्तर की तरफ़ एक क़ुदरती नहर में नीला साफ़ जल भरा हुआ था. यह नहर गंगाजी से कटकर आई थी, और मानो गंगाजी ख़ुद प्यार से भरकर आश्रम के किनारे पहुँच गई थीं. सोख़्ता साहब में भीष्म जैसा त्याग और सेवा बल था और भीष्म तो गंगाजी के अपने बेटे थे, तब गंगाजी को सोख़्ता साहब से प्यार क्यों न आता.

मैं मन ही मन सोच रहा था कि गाँधी आश्रम तो मैंने छोड़ दिया अब आगे पता नहीं मेरे जीवन का क्या होगा. जनता की सेवा का जो त लेकर मैं निकला हूँ क्या वह पूरा हो सकेगा ? पता नहीं बाबा का स्वभाव कैसा है, क्या उनसे मुझे प्रेम मिल सकेगा ? आश्रमवासी तो मुझे बड़े प्यारे लगे, काफ़ी आवभगत के साथ उन्होंने मुझे भोजन कराया. मैं सोचने लगा कि अगर गुरू के हृदय से प्रेम का सागर न भरा होता तो क्या उसके शागिर्दों में इतनी मुहब्बत होती ? मैं इसी उधेड़बुन में लगा हुआ था कि मेरे पास संदेसा आया कि बाबा कार्यालय में वापस आ गए हैं और मुझे बुलाया है. मैं फ़ौरन वहाँ पहुँचा, देखा कि दस पन्द्रह मील का सफ़र करके वे लौटे हैं और सुस्ताने के लिये तख़्त पर लेटे हुए आँखें बन्द कर रखी हैं. मेरे पहुँचते ही वे उठ बैठे. उनके दर्शन पाकर मेरे मन में एक अजब सी शान्ति छा गई. उभरी हुई चौड़ी पेशानी, लम्बी पतली नाक, साँवली पुतलियों के बीच में चमकती हुई आँखें और जिनमें ऐसी तेज़ नज़र कि लगता था कि ठीक दिल के भीतर की बातें देख लेती हैं, पुख़्ता इरादे को ज़ाहिर करने वाले उनके लम्बे पतले होंठ, मोतियों के से ख़ूबसूरत दाँत, लगभग पाँच फ़ुट दस इंच का दुबला पतला छरहरा बदन, बड़े कान और क़रीब-क़रीब घुटनों को छूने वाली बाहें, बिलकुल साधू फ़क़ीरों का सा वेश—ऐसा लगता था मानो प्यार और सेवा साक्षात आकर बैठ गए हों. बग़ल में दूसरे तख़्त पर आज़मगढ़ के दुहरीघाट आश्रम के संचालक स्वामी सत्यानन्द जी भी बैठे थे. ख़ैरआफ़ियत पूछने के बाद दोनों में इस बात की चर्चा होने लगी कि रचनात्मक काम का कैसे ज़्यादा से ज़्यादा प्रचार किया जाय ? कैसे गाँधीजी के उसूलों को [हर] ख़ासो आम तक पहुँचाया जाय ? कैसे जनता में सच्ची

کھلی رہی تھیں تو کھیتی وبھاگ کے کاریہ کرتا گھاس پھوس کو صاف کرنے میں لگے ہوئے تھے، آشرم کا کونہ کونہ صفائی سے جگمگ جگمگ کر رہا تھا۔ میں جاکر سوختہ صاحب کی کٹیا کے برآمدہ میں بیٹھ گیا۔ بسنت کا موسم اپنے چڑھاؤ پر تھا۔ سامنے انگوری لتا سے پکے ہوئے انگوروں کے گچھے لٹک رہے تھے، جن سے بھینی بھینی مہک اُٹھ رہی تھی۔ کنویں کے پاس امرائی کے کنج میں بیٹھی ہوئی کویل رہ رہ کر کوہو کوہو کر اُٹھتی تھی۔ برآمدہ کے داہنی طرف گلاب باڑی تھی جہاں بہار کا موسم ہونے پر بھی گلاب کے سو سوا سو پیڑوں سے مدماتی خوشبو اُڑ رہی تھی۔ اُتر کی طرف ایک قدرتی نہر میں نیلا صاف جل بھرا ہوا تھا۔ یہ نہر گنگا جی سے کٹ کر آئی تھی، اور مانو گنگا جی خود پیار سے بھرکر آشرم کے کنارے پہونچ گئی تھیں۔ سوختہ صاحب میں بھیشم جیسا تیاگ اور سیوا بل تھا اور بھیشم تو گنگا جی کے اپنے بیٹے تھے تب گنگا جی کو سوختہ صاحب سے پیار کیوں نہ آتا۔

میں من ہی من سوچ رہا تھا کہ گاندھی آشرم تو میں نے چھوڑ دیا اب آگے پتہ نہیں میرے جیون کا کیا ہوگا۔ جنتا کی سیوا کا جو برت لیکر میں نکلا ہوں کیا وہ پورا ہوسکیگا ؟ پتہ نہیں بابا کا سوبھاؤ کیسا ہے، کیا اُن سے مجھے پریم مل سکیگا ؟ آشرم واسی تو مجھے بڑے پیارے لگے، کافی آؤبھگت کے ساتھ اُنہوں نے مجھے بھوجن کرایا۔ میں سوچنے لگا کہ اگر گرو کے ہردے میں پریم کا ساگر نہ بھرا ہوتا تو کیا اُس کے شاگردوں میں اِتنی محبت ہوتی ؟ میں اِسی اُدھیڑ بن میں لگا ہوا تھا کہ میرے پاس سندیسا آیا کہ بابا کاریالے میں واپس آگئے ہیں اور مجھے بلایا ہے۔ میں فوراً وہاں پہونچا، دیکھا کہ دس پندرہ میل کا سفر کرکے وہ لوٹے ہیں اور سستانے کے لئے تخت پر لیٹے ہوئے آنکھیں بند کر رکھی ہیں۔ میرے پہونچتے ہی وہ اُٹھ بیٹھے۔ اُن کے درشن پاکر میرے من میں ایک عجب سی شانتی چھاگئی۔ اُبھری ہوئی چوڑی پیشانی، لمبی پتلی ناک، سانولی پتلیوں کے بیچ میں چمکتی ہوئی انکھیں اور جن میں ایسی تیز نظر کہ لگتا تھا کہ ٹھیک دل کے بھیتر کی باتیں دیکھ لیتی ہیں، پختہ اِرادے کو ظاہر کرنے والے اُن کے لمبے پتلے ہونٹ، موتیوں کے سے خوبصورت دانت، لگ بھگ پانچ فٹ دس انچ کا دبلا پتلا چھریرا بدن، بڑے کان اور قریب قریب گھٹنوں کو چھونے والی بانہیں، بالکل سادھو فقیروں کا سا ویش—ایسا لگتا تھا مانو پیار اور سیوا ساکشات آکر بیٹھ گئے ہیں۔ بغل میں دوسرے تخت پر اعظم گڈھ کے دوہری گھاٹ آشرم کے سنچالک سوامی ستیا نند جی بھی بیٹھے تھے۔ خیروعافیت پوچھنے کے بعد دونوں میں اِس بات کی چرچا ہونے لگی کہ رچناتمک کام کا کیسے زیادہ سے زیادہ پرچار کیا جائے ؟ کیسے گاندھی جی کے اصولوں کو ہر خاص و عام تک پہونچایا جائے ؟ کیسے جنتا میں سچی

अहिंसा पैदा की जाय? कैसे फ़िरक़ेवाराना ज़हर को बुझाया जाय? सोख्ता साहब जब बात कर रहे थे तो ऐसा लगता था कि ज्ञान के सागर की लहरें हिलोरें ले रही हैं.

बाबा ने इतने प्यार से मुझसे बातें कीं कि घंटे भर में ही उन्होंने मुझे अपना बना लिया. मैं बेदामों उनके हाथ बिक गया. बाबा ने मुझे भरोसा दिलाया—"आज से तुम आश्रम के, और आश्रम तुम्हारा. तुम अपनी पसन्द का रचनात्मक काम करो. मैंने आश्रम के व्यवस्थापक शर्मा जी से तुम्हारे सम्बन्ध में पहले ही बात कर ली है." वह दिन था और आज का दिन है. बाबा ने अपने अमर उपदेशों से हमारे दिलों में सेवा की ऐसी पुख्ता बुनियादें डालीं कि हम कहीं रहें सेवा किये बिना चैन नहीं. उन्होंने हमें ग़रीबों के साथ एक होना सिखाया. हमारी तालीम और रहन सहन के घमंड को दूर किया. हमें जात पात के वर्गों और फ़िरक़ों के तंग दायरों से बाहर किया. हमारे मन की रूढ़ियों को उन्होंने तोड़ा और खुली हवा में साँस लेना सिखाया. उन्होंने हमें मुसीबतों का मुक़ाबला करना सिखाया और सिखाया कि चाहे दुनिया खिलाफ़ हो और अगर तुम्हारा क़दम सच्चाई पर है तो अकेले दुनिया का मुक़ाबला करो. उसके आगे सर न झुकाओ. बाबा आज हमारे बीच से चले गए मगर उनके उपदेश और उनका आदर्श जीवन हमें हमेशा हमेशा के लिये रोशनी देते रहेंगे.

1942 में अगस्त का महीना अपना उमड़ता हुआ तूफ़ान लेकर आया. सरकार अपना दमन का हथियार लेकर आश्रम के ऊपर टूट पड़ी. आश्रम ज़ब्त कर लिया गया और उसपर सरकार का पहरा बिठा दिया गया, करघे तोड़ दिये गए और चरखे सिपाहियों के ईंधन में जला दिये गए. बाबा और हम सब लोग जेलख़ाने में बन्द कर दिये गए. जेल में पहुँचकर पहली मर्तबा बाबा के साथ दिन रात एक ही बैरक में रहने का मौक़ा मिला बाबा जेल मे क्या पहुँचे कि देशभक्तों ने उन्हें अपना मुख्य आचार्य बना लिया. बड़े बड़े नेता, जिनमें से आज कई केन्द्रीय और प्रादेशिक सरकारों के मंत्री हैं या रह चुके हैं, और छोटे-छोटे गाँव के कार्यकर्ता सब उनके चरणों के पास बैठकर अहिंसा का पावन संदेश सुनते. गाँधी जी क्या चाहते हैं, उनके सिद्धान्तों को कैसे अमली जीवन में उतारा जा सकता है, कैसे रचनात्मक कामों से देश की काया पलट की जा सकती है—आदि विषयों पर उनके व्याख्यान होते, प्रश्न होते और जवाब मिलते और आख़ीर में सब को पूरी तरह इत्मीनान हो जाता.

यूँ तो बहुत से नेताओं को देखा मगर बाबा की ख़ूबी यह थी कि वे हर एक को फ़ौरन क़ुबूल कर लेते. किसी को कभी ना-एतबारी की नज़र से नहीं देखा. जो उन्हें धोका

اہنسا پیدا کی جائے؟ کیسے فرقہ وارانہ زہر کو بجھایا جائے؟ سوختہ صاحب جب بات کررہے تھے تو ایسا لگتا تھا کہ گیان کے ساگر کی لہریں ہلوریں لے رہی ہیں۔

بابا نے اپنے پیار سے مجھ سے باتیں کیں کہ گھنٹے بھر میں ہی انہوں نے مجھے اپنا بنا لیا۔ میں بے داموں ان کے ہاتھ بک گیا۔ بابا نے مجھے بھروسہ دلایا۔ "آج سے تم آشرم کے، اور آشرم تمہارا۔ تم اپنی پسند کا رچناتمک کام کرو۔ میں نے آشرم کے ویوستھاپک شرماجی سے تمہارے سمبندھ میں پہلے ہی بات کرلی ہے۔" وہ دن تھا اور آج کا دن ہے۔ بابا نے اپنے امر اپدیشوں سے ہمارے دلوں میں سیوا کی ایسی پختہ بنیادیں ڈالیں کہ ہم کہیں رہیں سیوا کئے بنا چین نہیں۔ انہوں نے ہمیں غریبوں کے ساتھ ایک ہونا سکھایا۔ ہماری تعلیم اور رہن سہن کے گھمنڈ کو دور کیا۔ ہمیں جات پات کے درجوں اور فرقوں کے تنگ دائروں سے باہر کیا۔ ہمارے من کی روڑھیوں کو انہوں نے توڑا اور کھلی ہوا میں سانس لینا سکھایا۔ انہوں نے ہمیں مصیبتوں کا مقابلہ کرنا سکھایا اور سکھایا کہ چاہے دنیا خلاف ہو اور اگر تمہارا قدم سچائی پر ہے تو اکیلے دنیا کا مقابلہ کرو، اس کے آگے سر نہ جھکاؤ۔ بابا آج ہمارے بیچ سے چلے گئے مگر ان کے اپدیش اور ان کا آدرش جیون ہمیں ہمیشہ ہمیشہ کے لئے روشنی دیتے رہیں گے۔

1942 میں اگست کا مہینہ اپنا اُمڈتا ہوا طوفان لیکر آیا۔ سرکار اپنا دمن کا ہتھیار لیکر آشرم کے اُوپر ٹوٹ پڑی۔ آشرم ضبط کرلیا گیا اور اُس پر سرکار کا پہرا بیٹھا دیا گیا، کرگھے توڑ دیئے گئے اور چرخے سپاہیوں کے ایندھن میں جلا دیئے گئے۔ بابا اور ہم سب لوگ جیلخانے میں بند کردیئے گئے۔ جیل میں پہونچکر پہلی مرتبہ بابا کے ساتھ دن رات ایک ہی بیرک میں رہنے کا موقع ملا۔ بابا جیل میں کیا پہونچے کہ دیش بھکتوں نے اُنہیں اپنا مکھیہ آچاریہ بنا لیا۔ بڑے بڑے نیتا، جن میں سے آج کئی کیندریہ اور پرادیشک سرکاروں کے منتری ہیں یا رہ چکے ہیں، اور چھوٹے چھوٹے گاؤں کے کاریہ کرتا سب اُن کے چرنوں کے پاس بیٹھکر اہنسا کا پاون سندیش سنتے۔ گاندھی جی کیا چاہتے ہیں، اُن کے سدھانتوں کو کیسے عملی جیون میں اُتارا جاسکتا ہے، کیسے رچناتمک کاموں سے دیش کی کایاپلٹ کی جاسکتی ہے — آدی وشیوں پر اُن کے ویاکھیان ہوتے، پرشن ہوتے اور جواب ملتے اور آخیر میں سب کو پوری طرح اطمینان ہوجاتا۔

یوں تو بہت سے نیتاؤں کو دیکھا مگر بابا کی خوبی یہ تھی کہ وہ ہر ایک کو فوراً قبول کرلیتے۔ کسی کو کبھی نااعتباری کی نظر سے نہیں دیکھا۔ جو اُنہیں دھوکا

[illegible] विश्वास मिलता था. कोई कितनी ही [illegible] न करके आए उनके पास सिवाय माफ़ी के [illegible] न थे. उन्होंने कभी किसी को नीचा या [illegible]. लोग उन्हें अगर किसी की तरफ़ से [illegible] और सावधान करने की कोशिश करते तो वे [illegible] के भजन की कड़ियाँ सुना देते:—

मो सम कौन कुटिल, खल, कामी,
मैं ही सब पतितन में नामी.

उनके पास आते ही ऐसी कैफ़ियत हो जाती थी जैसे लोहा पारस पत्थर के पास पहुँच जाए. बाबा का आश्रम अपने ढंग का अनोखा था. उसकी सुन्दरता, अच्छे से अच्छे काम करने वालों का जमघट, हर रचनात्मक काम को आगे बढ़ाने की ख़ाहिश और त्याग और सेवा की भावना—सब बेजोड़ थीं. उनके हृदय के ज्ञान सागर में न जाने कितनी लहरें उठती थीं, और न जाने कितने रत्न उसमें भरे पड़े थे. गहराई में डुबकी लगाने वाले कोई न कोई रत्न उसमें से निकाल लाते थे. यदि वे क़ुरान और हदीस के विद्वान थे, तो उपनिषद, गीता, रामायण, महाभारत, इंजील, तौरेत, ज़िन्द अवस्ता और बौद्ध त्रिपिटक सब पर उनका एक सा अधिकार था. यदि पूरब के ज्ञान के वे परम विद्वान थे तो पच्छिम के ज्ञान को भी उन्होंने मथ डाला था. इतिहास, फ़लसफ़ा, अध्यात्म, अर्थशास्त्र, राजनीति, साहित्य, भूगोल आदि सब विषयों के वे पूर्ण विद्वान थे. शेक्सपियर, मिलटन, बायरन और शैली, शापनहायर; थोरो; इमरसन, ऐडवर्ड कारपेन्टर, हक्सले, डारविन, रूसो, दाँते, गेटे आदि सभी विद्वानों का उन्होंने बहुत बारीकी से अध्ययन किया था. पूरबी और पच्छिमी दर्शन दोनों का मुक़ाबला करके तब उन्होंने अपनी राय क़ायम की थी. किताबों के ज्ञान को वे अपने अन्दर मथते थे और तब उसपर अपनी निजी राय क़ायम करते थे. राजनीति के उनके गहरे उसूलों की कुछ झलक हमें उनकी मशहूर किताब "गाँधीजी की आख़िरी वसीयत" में मिलती है. उसी के आधार पर वे लोक सेवक संघ क़ायम करना चाहते थे. देश में पूर्ण स्वतंत्रता क़ायम हुई, गाँधीजी का बलिदान हुआ और बापू के अस्थि विसर्जन के साथ-साथ कार्यकर्ता उनके सिद्धान्तों को भी भूल गए. सोख्ता बाबा हमें धीरज देकर कहते कि गाँधीजी गुरुदेव रवीन्द्रनाथ के गीत के मुताबिक़—अकेले चलो! अकेले चलो! के उसूल पर अमल करते रहे? हमें भी गाँधीजी के उसूल पर इसी तरह अकेले चलने के लिये कमर कस लेनी चाहिये.

आख़िरी बार जब मैं उनसे दो बरस पहले मिला था तो उन्होंने मुझसे कहा कि—"मैं चाहता हूँ किसी एक ज़िले में मैं ख़ुद भूदान यज्ञ का काम करूँ". लेकिन बाबा की यह ख़ाहिश मन की मन में ही रह गई और बाबा चल

[illegible] بھی اُن سے وشواس ملتا تھا۔ کوئی کتنی ہی بڑی غلطی کیوں نہ کرکے آئے اُن کے پاس سوائے معافی کے اور کوئی الفاظ نہ تھے۔ اُنھوں نے کبھی کسی کو نیچا یا پتت نہیں سمجھا۔ لوگ اُنھیں اگر کسی کی طرف سے ہوشیار رہنے اور ساودھان کرنے کی کوشش کرتے تو وہ سورداس کے بھجن کی کڑیاں سنا دیتے:—

مو سم کون کٹل، کھل، کامی،
میں ہی سب پتیتن میں نامی۔

اُن کے پاس جاتے ہی ایسی کیفیت ہوجاتی تھی جیسے لوہا پارس پتھر کے پاس پہونچ جائے۔ بابا کا آشرم اپنے ڈھنگ کا انوکھا تھا۔ اس کی سندرتا، اچھے سے اچھے کام کرنے والوں کا جمگھٹ، ہر رچناتمک کام کو آگے بڑھانے کی خواہش اور تیاگ اور سیوا کی بھاونا—سب بےجوڑ تھیں۔ ان کے ہردے کے گیان ساگر میں نہ جانے کتنی لہریں اُٹھتی تھیں، اور نہ جانے کتنے رتن اس میں بھرے پڑے تھے۔ گہرائی میں ڈبکی لگانے والے کوئی نہ کوئی رتن اس میں سے نکال لاتے تھے۔ یدی وے قرآن اور حدیث کے ودوان تھے، تو اپنشد، گیتا، راماین، مہابھارت، انجیل، طوریت، زندوستا اور بودھ ترپٹک سب پر ان کا ایک سا ادھیکار تھا۔ یدی پورب کے گیان کے وہ پرم ودوان تھے تو پچھم کے گیان کو بھی انہوں نے متھ ڈالا تھا۔ اِتہاس، فلسفہ، ادھیاتم، ارتھ شاستر، راج نیتی، ساہتیہ، بھوگول آدی سب وشیوں کے وہ پورے ودوان تھے۔ شیکسپیر، ملٹن، بائرن اور شیلی، شاپنہائر، تھورو، امرسن، ایڈورڈ کارپینٹر، ہکسلے، ڈارون، روسو، دانتے، گوئٹے آدی سبھی ودوانوں کا انہوں نے بہت باریکی سے ادھین کیا تھا۔ پوربی اور پچھمی درشن دونوں کا مقابلہ کرکے تب انہوں نے اپنی رائے قائم کی تھی۔ کتابوں کے گیان کو وہ اپنے اندر متھتے تھے اور تب اس پر اپنی نجی رائے قایم کرتے تھے۔ راج نیت کے ان کے گہرے اصولوں کی کچھ جھلک ہمیں ان کی مشہور کتاب "گاندھی جی کی وصیت" میں ملتی ہے۔ اسی کے آدھار پر وہ لوک سیوک سنگھ قائم کرنا چاہتے تھے۔ دیش میں پورن سوتنترتا قائم ہوئی، گاندھی جی کا بلیدان ہوا اور باپو کے استھی وسرجن کے ساتھ ساتھ کاریہ کرتا ان کے سدھانتوں کو بھی بھول گئے۔ سوختہ بابا ہمیں دھیرج دےکر کہتے کہ گاندھی جی گرودیو رویندرناتھ کے گیت کے مطابق—اکیلے چلو! اکیلے چلو! کے اُصول پر عمل کرتے رہے؟ ہمیں بھی گاندھی جی کے اُصول پر اِسی طرح اکیلے چلنے کے لئے کمر کس لینی چاہئے۔

آخری بار جب میں اُن سے دو برس پہلے ملا تھا تو اُنھوں نے مجھ سے کہا کہ—"میں چاہتا ہوں کہ کسی ایک ضلع میں میں خود بھودان یگیہ کا کام کروں۔" لیکن بابا کی یہ خواہش من کی من میں ہی رہ گئی اور بابا چل

[illegible]थे. जब उनकी याद आती है तो आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगती है. उनका सारा जीवन बलिदान का जीवन था, उनकी अहिंसा वीरों की अहिंसा थी. हिन्दू मुसलिम एकता के वे साक्षात नमूना थे. वे दया के सागर थे, न्याय की मूर्ति थे, एकता के मसीहा थे और अहिंसा तथा प्रेम के अवतार थे. बापू के इस महान शिष्य की गाथा बयान करना मेरे इमकान से बाहर है. स्वर्गीय स्वामी सत्यानन्द तो उन्हें "त्यागी बादशाह" कहा करते थे, आज त्यागी बादशाह हमें छोड़ कर चले गए. उन्हें जाना ही था, क्या कबीरदास ने नहीं कहा:—

रहना नहीं देस बिराना है !

बाबा बिराने देश को छोड़कर ईश्वर अल्लाह के देश में चले गए. हम लोग जो बाबा के भक्त हैं आज हमारे इम्तहान की बारी है. क्या हम बाबा की तरफ़ बेवफ़ा साबित होंगे ? भगवान से हमारी यही प्रार्थना है कि वह हम सब बाबा के भक्तों के दिलों में बल दे ताकि हम उनके अधूरे काम को पूरा कर सकें.

دیئے . جب اُن کی یاد آتی ہے تو آنکھوں سے آنسوؤں کی دھارا بہنے لگتی ہے. اُن کا سارا جیون بلیدان کا جیون تھا' اُن کی اہنسا ویروں کی اہنسا تھی . ہندو مسلم ایکتا کے وہ ساکشات نمونہ تھے . وہ دیا کے ساگر تھے' نیائے کی مورتی تھے' ایکتا کے مسیحا تھے اور اہنسا تتھا پریم کے اوتار تھے . باپو کے اِس مہان ششیہ کی گاتھا بیان کرنا میرے اِمکان سے باہر ہے. سورگیہ سوامی ستیانند تو اُنہیں "تیاگی بادشاہ" کہا کرتے تھے' آج تیاگی بادشاہ ہمیں چھوڑکر چلے گئے . اُنہیں جانا ہی تھا' کبیر داس نے نہیں کہا :—

رہنا نہیں دیس برانا ہے

بابا برائے دیش کو چھوڑکر ایشور اللہ کے دیش میں چلے گئے . ہم لوگ جو بابا کے بھکت ہیں آج ہمارے اِمتحان کی باری ہے . کیا ہم بابا کی طرف بےوفا ثابت ہونگے ؟ بھگوان سے ہماری یہی پرارتھنا ہے کہ وہ ہم سب بابا کے بھکتوں کے دلوں میں بل دے تاکہ ہم اُن کے ادھورے کام کو پورا کرسکیں .

मृत्यु में आतंक नहीं होता. मृत्यु तो एक खुशी से भरी हुई नींद है जिसके पीछे जागरण का आगमन होता है.

मृत्यु तो मित्र है. फ़ानी शरीर के लिये मोह कैसा ? चीनी मिट्टी के बरतनों से भी हम अधिक कमज़ोर हैं. मृत्यु का भय अपने दिलों से निकाल देना चाहिये और देह के रहते हुए उसे सेवा में घिस डालना चाहिये.

—गाँधी

مرتیو میں آتنک نہیں ہوتا . مرتیو تو ایک خوشی سے بھری ہوئی نیند ہے . جس کے پیچھے جاگرن کا آگمن ہوتا ہے .

مرتیو تو متر ہے . فانی شریر کے لئے موہ کیسا ؟ چینی مٹی کے برتنوں سے بھی ہم ادھک کمزور ہیں . مرتیو کا بھے اپنے دلوں سے نکال دینا چاہئے اور دیہہ کے رہتے ہوئے اسے سیوا میں گھس ڈالنا چاہئے .

—گاندھی .

हमारी राय — ہماری رائے

आज की दुनिया

हंगरी की घटनाएं

लगभग हर देश की जनता जितना अधिक और जितने ध्यान से दूसरे देशों की खबरें आज सुनती और पढ़ती है उतना पहले कभी नहीं सुनती या पढ़ती थी. कारण साफ़ है. पिछले दो महायुद्धों के बाद से दुनिया के सब देश एक दूसरे के बेहद निकट आ गए हैं. दुनिया आज जिन अर्थों में एक है और होती जा रही है उन अर्थों में पहले कभी एक न थी. रेडियो की आवाज़ की तरह हर देश की हर छोटी बड़ी घटना की गूँज आज दूर दूर तक सब देशों मे सुनाई देती है और सब जगह अपना असर रखती है.

इन घटनाओं पर लोगों में तरह तरह के मत भी सुनाई देते हैं. मतभेद का एक कारण यह है कि अलग अलग लोग अलग अलग बातों में अपना नफ़ा नुक़सान समझे हुये हैं. दूसरा कारण यह भी है कि किसी घटना के सब पहलुओं की पूरी जानकारी हमें नहीं मिल पाती हंगरी की हाल की घटनाओं के बारे में जो मतभेद हमारे देश मे दिखाई दिया उस का मुख्य कारण यही जानकारी की कमी है.

हंगरी की घटनाओं पर विचार करते हुए पहले हम उसूल के सवाल को लेते हैं. दुनिया मे शान्ति क़ायम रखने के लिये पहला उसूल यह है कि कोई देश किसी दूसरे देश के अन्दर के मामलों मे दख़ल न दे. हमारा मतलब ख़ासकर फ़ौजी मदाख़लत से है

किसी भी देश के अन्दर किसी भी पार्टी या दल को, चाहे वह वहां का शासक दल हो और चाहे कोई विरोधी दल हो, किसी को भी यह अधिकार नहीं होना चाहिये कि वह अपने किसी अन्दर के मामले के निबटारे के लिये किसी भी बाहर की ताक़त से मदद मांगे. इस निगाह से हंगरी की कादर सरकार का रूसी फ़ौज को अपनी मदद के लिये बुलाना या रोकना ग़लत था, चाहे कादर सरकार को देश का बहुमत हासिल रहा हो या न रहा हो.

آج کی دنیا

ہنگری کی گھٹنائیں

لگ بھگ ہر دیش کی جنتا ادھک اور جتنے دھیان سے دوسرے دیشوں کی خبریں آج سنتی اور پڑھتی ہے اتنا پہلے کبھی نہیں سنتی یا پڑھتی تھی۔ کارن صاف ہے۔ پچھلے دو مہایدھوں کے بعد سے دنیا کے سب دیش ایک دوسرے کے بیحد نکٹ آگئے ہیں۔ دنیا آج جن ارتھوں میں ایک ہے اور ہوتی جارہی ہے ان ارتھوں میں پہلے کبھی ایک نہ تھی۔ ریڈیو کی آواز کی طرح ہر دیش کی ہر چھوٹی بڑی گھٹنا کی گونج آج دور دور تک سب دیشوں میں سنائی دیتی ہے اور سب جگہ اپنا اثر رکھتی ہے۔

ان گھٹناؤں پر لوگوں میں طرح طرح کے مت بھی سنائی دیتے ہیں۔ مت بھید کا ایک کارن یہ ہے کہ الگ الگ لوگ الگ الگ باتوں میں اپنا نفع نقصان سمجھے ہوئے ہیں۔ دوسرا کارن یہ بھی ہے کہ کسی گھٹنا کے سب پہلوؤں کی پوری جانکاری ہمیں نہیں مل پاتی۔ ہنگری کی حال کی گھٹناؤں کے بارے میں جو مت بھید ہمارے دیش میں دکھائی دیا اس کا مکھیہ کارن یہی جانکاری کی کمی ہے۔

ہنگری کی گھٹناؤں پر وچار کرتے ہوئے پہلے ہم اصول کے سوال کو لیتے ہیں۔ دنیا میں شانتی قائم رکھنے کے لئے پہلا اصول یہ ہے کہ کوئی دیش کسی دوسرے دیش کے اندر کے معاملوں میں دخل نہ دے۔ ہمارا مطلب خاصکر فوجی مداخلت سے ہے۔

کسی بھی دیش کے اندر کسی بھی پارٹی یا دل کو چاہے وہ وہاں کا شاسک دل ہو اور چاہے کوئی ورودھی دل ہو، کسی کو بھی یہ ادھکار نہیں ہونا چاہئے کہ وہ اپنے کسی اندر کے معاملے کے نبٹارے کے لئے کسی بھی باہر کی طاقت سے مدد مانگے۔ اس نگاہ سے ہنگری کی کادر سرکار کا روسی فوج کو اپنی مدد کے لئے بلانا یا روکنا غلط تھا، چاہے کادر سرکار کو دیش کا بہومت حاصل [illegible] یا نہ رہا ہو۔

हमारे देश में भी अपनी सरकार के विरुद्ध जगह जगह उपद्रव हो चुके हैं और आइन्दा भी हो सकते हैं. हमें कितना बुरा लगेगा अगर हमारी सरकार इस तरह के उपद्रवों को दबाने के लिये इंगलैन्ड, चीन या किसी भी बाहर के देश से मदद मांगे. इसी तरह अगर देश के अन्दर का कोई सरकार विरोधी दल सरकार को दबाने या पलटने के लिये रूस या अमरीका या किसी बाहर के देश से फ़ौजी मदद चाहे तो उसे भी देश की जनता बरदाश्त न कर सकेगी.

दूसरा असूल ऊपर के असूल से ही यह निकलता है कि अगर किसी देश के अन्दर की कोई पार्टी अपने यहा के किसी मामले के निपटारे के लिये बाहर की किसी शक्ति से मदद चाहे भी तो बाहर की उस शक्ति को मदद देने से इनकार कर देना चाहिये. *दूसरे को गुनाह मे मदद देना* कम गुनाह नहीं है. इस निगाह से रूसी सरकार का अपनी .फ़ौज को हंगरी की किसी भी पार्टी के कहने पर हंगरी में रुकने की आज्ञा देना भी ग़लत था.

तीसरा उसूल यह है कि वह सब सन्धियां, समझौते या सुलहनामे जिनके अनुसार एक देश को दूसरे देश में अपनी .फ़ौजें रखने का या उनसे काम लेने का अधिकार मिल सकता है ग़लत और नाजायज समझे जाने चाहियें. इस निगाह से वारसा की सन्धि जिसके अनुसार रूसी सेना हंगरी में रह रही है ग़लत और नाजायज है.

'पंचशील' के जिन पाँच उसूलों को आज दुनिया धीरे धीरे विश्व शान्ति के लिये आवश्यक मानती जा रही है उन में ऊपर के तीनों उसूल आ जाते हैं, और दुनिया के सब मुल्कों की जनता का इस बात की कोशिश करनी चाहिये कि सब छोटे बड़े देश इन उसूलों पर अमल करें और इस तरह की सब सन्धिया, समझौते और सुलहनामे रद्द कर दिये जावें जो इन असूलों के खिलाफ़ जाते हैं.

अब हम असूली पहलू से हटकर हंगरी के मामले के असली और वाक़्याती पहलू पर निगाह डालते हैं.

हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि रूस और पूर्वी यूरप के कुछ देशों के बीच वारसा की सन्धि पच्छिमी यूरप की 'नाटो' सन्धि (नार्थ एटलानटिक पैक्ट) का नतीजा और उसी की उपज है. 'नाटो' गुट्ट को तरफ़ से, जिसमें मुख्य अमरीका, इंगलैन्ड और फ्रान्स हैं, खुले शब्दों में बार-बार यह धमकियां दी गईं और दी जाती रहीं कि 'नाटो' की सन्धि का एक मात्र उद्देश्य कम्युनिस्ट देशों के बढ़ने को रोकना और कम्युनिज्म के खतरे से दुनिया को बचाना है. इस उद्देश को पूरा करने के लिये पच्छिमी यूरप के लगभग सब देशों में ज़बरदस्त .फ़ौजी तैयारियां होती रही हैं और आज तक जारी हैं. पच्छिमी जरमनी को नए नए हथियारों

ہمارے دیش میں بھی اپنی سرکار کے وِرودھ جگہ جگہ اُپدرو ہوچکے ہیں اور آئندہ بھی ہوسکتے ہیں ۔ ہمیں کتنا برا لگے گا اگر ہماری سرکار اِس طرح کے اُپدرؤں کو دبانے کے لئے اِنگلینڈ، چین یا کسی بھی باہر کے دیش سے مدد مانگے ۔ اِسی طرح اگر دیش کے اندر کا کوئی سرکار ورودھی دل سرکار کو دبانے یا پلٹنے کے لیے روس یا امریکہ یا کسی باہر کے دیش سے فوجی مدد چاہے تو اُسے بھی دیش کی جنتا برداشت نہ کرسکے گی ۔

دوسرا اصول اوپر کے اُصول سے ہی یہ نکلتا ہے کہ اگر کسی دیش کے اندر کی کوئی پارٹی اپنے یہاں کے کسی معاملہ کے نپٹارے کے لئے باہر کی کسی شکتی سے مدد چاہے بھی تو باہر کی اس شکتی کو مدد دینے سے انکار کردینا چاہئے ۔ دوسرے کو گناہ میں مدد دینا کم گناہ نہیں ہے ۔ اس نگاہ سے روسی سرکار کا اپنی فوج کو ہنگری کی کسی بھی پارٹی کے کہنے پر ہنگری میں رکنے کی آگیاں دینا بھی غلط تھا ۔

تیسرا اصول یہ ہے کہ وہ سب سندھیاں، سمجھوتے یا صلحنامے جن کے انوسار ایک دیش کو دوسرے دیش میں اپنی فوجیں رکھنے یا اُن سے کام لینے کا ادھیکار مل سکتا ہے غلط اور ناجائز سمجھے جانے چاہئیں ۔ اس نگاہ سے وارسا کی سندھی جس کے انوسار روسی سینا ہنگری میں رہ رہی ہے غلط اور ناجائز ہے ۔

'پنچ شیل' کے جن پانچ اصولوں کو آج دنیا دھیرے دھیرے وشوشانتی کے لیے آوشیک مانتی جا رہی ہے اُن میں اوپر کے تینوں اصول آجاتے ہیں' اور دنیا کے سب ملکوں کی جنتا کو اس بات کی کوشش کرنی چاہئے کہ سب چھوٹے بڑے دیش ان اصولوں پر عمل کریں اور اس طرح کی سب سندھیاں' سمجھوتے اور صلحنامے رد کر دئے جاویں جو ان اصولوں کے خلاف جاتے ہیں

اب ہم اصولی پہلو سے ہٹ کر ہنگری کے معاملے کے اصلی اور واقعاتی پہلو پر نگاہ ڈالتے ہیں ۔

ہمیں یہ نہیں بھولنا چاہئے کہ روس اور پوربی یورپ کے کچھ دیشوں کے بیچ وارسا کی سندھی پچھمی یورپ کی 'ناٹو' سندھی (نارتھ - اٹلانٹک - پیکٹ) کا نتیجہ اور اُسی کی اُپج ہے ۔ 'ناٹو' گٹ کی طرف سے' جس میں مکھیہ امریکہ' انگلینڈ اور فرانس ہیں' کھلے شبدوں میں بار بار یہ دھمکیاں دی گئیں اور دی جاتی رہیں کہ 'ناٹو' کی سندھی کا ایک ماتر اُدیش کمیونسٹ دیشوں کے بڑھنے کو روکنا اور کمیونزم کے خطرے سے دنیا کو بچانا ہے ۔ اِس اُدیشیہ کو پورا کرنے کے لئے پچھمی یورپ کے لگ بھگ سب دیشوں میں زبردست فوجی تیاریاں ہوتی رہی ہیں اور آج تک جاری ہیں ۔ پچھمی جرمنی کو نئے نئے ہتھیاروں

लैस किया गया. उस ओर के लगभग सब देशों में अमरीकी .फौजी अड्डे क़ायम हुए और आज तक हैं. इन सब स्थानों पर ऐटमी और दूसरी तरह के जन हिंसक हथियारों के अम्बार लगाए गए और लगाए जा रहे हैं. इन सब तैयारियों को देखते हुए और आए दिन की इन खुली धमकियों को सुनते हुए रूस और उसके साथी देशों का हाथ पर हाथ धरे चुप बैठे रहना मनुष्य स्वभाव के विपरीत था और ग़लत भी होता. वारसा की सन्धि 'नाटो' सन्धि का क़ुदरती नतीजा थी और कम्युनिस्ट देशों के अपने बचाव के लिये थी.

पेरिस के अन्दर अपनी गुप्त बैठक में नाटो शक्तियों ने जब यह तय किया कि उन सब देशों को जो नाटो में शामिल हैं एटमी और दूसरे जनहिंसक हथियारो से लैस कर दिया जावे तो यूरोप की उस पेन कड़ाके की सर्दी मे, जनवरी के महीने में 'वर्ल्ड पीस कौंसिल' का उस ख़तरे के ख़िलाफ़ अपनी आवाज़ उठाने के लिये वियना मे अपनी ख़ास बैठक करनी पड़ी थी. हमें भी उस अवसर पर वियना जाने और उस बैठक में हिस्सा लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था. नाटो शक्तियो का वह फ़ैसला कम्यूनिस्ट देशों के लिये ही नहीं दुनिया भर की मासूम जनता के लिये एक भयकर चुनौती थी. रूस और उसके साथी देशो का इन हालतो मे चुप बैठे रह सकना असम्भव था. हमें यह भी याद रखना चाहिये कि तैयारियाँ और धमकियाँ आज भी उसी पैमाने पर जारी हैं.

साम्राजी शक्तियों का हाथ

हंगरी की उन दर्द भरी घटनाओं के शुरू कराने मे बाहर की साम्राजी शक्तियों का हाथ भी साफ़ दिखाई दे रहा था. प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू ने भी पार्लिमेन्ट के अन्दर इस बात का स्वीकार किया था कि बाहर से फ़ौजी मामान और .फ़ौजी आदमी हंगरी मे गये थे. आस्ट्रिया के उस हिस्से को जो हंगरी की सरहद से मिला हुआ है और जो इंगलैंड और अमरीका के खुले असर मे है हमने ख़ुद वहा जाकर देखा है रूस और हगरी से आनेवाली ख़बरों के अनुसार कम से कम 65 हज़ार सिपाही और काफ़ी युद्ध का सामान हगरी के बाग़ियों को उकसाने और मदद देने के लिये उस इलाक़े से हगरी में पहुँचा. यह भी एक खुली बात है कि हगरी के उपद्रवों के शुरू के दिनो मे वहाँ के एक एक कम्यूनिस्ट नेता और कार्यकर्ता को चुन चुन कर ख़तम किया गया.

इसके अलावा हंगरी में जो कुछ हुआ वह कोई अलग थलग घटना नहीं थी. हगरी के उपद्रव, पूर्वी यूराप के कुछ और देशो मे उपद्रवों की तैयारियाँ, इसराईल का मिस्र पर हमला अगरेज़ों और .फ्रांसीसियों की सूएज़ पर चढ़ाई, बग़दाद पैक्ट का आए दिन की गरमा गरम बैठकें, पाकिस्तान

سے لیس کیا گیا ۔ اس اور کے لگ بھگ سب دیشوں میں امریکی فوجی اڈے قائم ہوئے اور آج تک ہیں ۔ ان سب استھانوں پر ایٹمی اور دوسری طرح کے جن ہنسک ہتیاروں کے انبار لگائے گئے اور لگائے جا رہے ہیں ۔ ان سب تیاریوں کو دیکھتے ہوئے اور آئے دن کی ان کھلی دھمکیوں کو سنتے ہوئے روس اس کے ساتھی دیشوں کا ہاتھ پر ہاتھ دھرے چپ بیٹھے رہنا منشیہ سوابھاؤں کے وپریت تھا اور غلط بھی ہوتا ۔ وارسا کی سندھی 'ناٹو' سندھی کا قدرتی نتیجہ تھی اور کمیونسٹ دیشوں کے اپنے بچاؤ کے لئے تھی ۔

پیرس کے اندر اپنی گپت بیٹھک میں ناٹو شکتیوں نے جب یہ طے کیا کہ ان سب دیشوں کو جو ناٹو میں شامل ہیں ایٹمی اور دوسرے جن ہنسک ہتیاروں سے لیس کر دیا جاوے تو یورپ کی اس غضب کڑاکے کی سردی میں جنوری کے مہینہ میں 'ورلڈ پیس کونسل' کو اس خطرہ کے خلاف اپنی آواز اٹھانے کے لئے ویانا میں اپنی خاص بیٹھک کرنی پڑی تھی ۔ ہمیں بھی اس اوسر پر ویانا جانے اور اس بیٹھک میں حصہ لینے کا سوبھاگیہ پراپت ہوا تھا ۔ ناٹو شکتیوں کا وہ فیصلہ کمیونسٹ دیشوں کے لئے ہی نہیں دنیا بھر کی معصوم جنتا کے لئے ایک بھینکر چنوتی تھی ۔ روس اور اس کے ساتھی دیشوں کا ان حالتوں میں چپ بیٹھے رہ سکنا اسمبھو تھا ۔ ہمیں یہ بھی یاد رکھنا چاہئے کہ یہ تیاریاں اور دھمکیاں آج بھی اسی پیمانے پر جاری ہیں ۔

سامراجی شکتیوں کا ہاتھ

ہنگری کی ان درد بھری گھٹناؤں کے شروع کرانے میں باہر کی سامراجی شکتیوں کا ہاتھ بھی صاف دکھائی دے رہا تھا ۔ پردھان منتری جواہر لال نہرو نے بھی پارلیمنٹ کے اندر اس بات کو سویکار کیا تھا کہ باہر سے فوجی سامان اور فوجی آدمی ہنگری میں گئے تھے ۔ آسٹریا کے اس حصہ کو جو ہنگری کی سرحد سے ملا ہوا ہے اور جو انگلینڈ اور امریکہ کے کھلے اثر میں ہے ہم نے خود وہاں جاکر دیکھا ہے ۔ روس اور ہنگری سے آنیوالی خبروں کے انوسار کم سے کم 65 ہزار سپاہی اور کافی یدھ کا سامان ہنگری کے باغیوں کو اکسانے اور مدد دینے کے لئے اس علاقہ سے ہنگری میں پہونچا ۔ یہ بھی ایک کھلی بات ہے کہ ہنگری کے اپدرؤں کے شروع کے دنوں میں وہاں کے ایک ایک کمیونسٹ نیتا اور کاریہ کرتا چن چن کر ختم کیا گیا ۔

اس کے علاوہ ہنگری میں جو کچھ ہوا وہ کوئی الگ تھلگ گھٹنا نہیں تھی ۔ ہنگری کے اپدرو' پوربی یورپ کے کچھ اور دیشوں میں اپدرؤں کی تیاریاں' اسرائیل کا مصر پر حملہ' انگریزوں اور فرانسیسیوں کی سویز پر چڑھائی' بغداد پیکٹ کی آئے دن کی گرما گرم بیٹھکیں' پاکستان

से अल्लामा मशरिक़ी के अधीन दस लाख स्वयं सेवकों के भारत में प्रवेश करने की धमकी और कुछ सरहदी क़ौमों की कश्मीर पर हमला करने की तैयारी की ख़बर, ये सब इधर से उधर तक एक ही सिलसिले की कड़ियाँ और एक पूरी गहरी साज़िश के हिस्से हैं

साफ़ ग़रज़ यह थी कि हंगरी और पूर्वी यूरप के दूसरे कम्युनिस्ट देशों में उपद्रव खड़े करके रूस को उधर फंसा दिया जावे, कम्युनिज़्म और कम्युनिस्ट शक्तियों को दुनिया की निगाहों में नीचे गिराया जावे, इसराईल और मिस्र को भिड़ा कर सुएज़ नहर पर अंगरेज़ों और फ़्रांसीसियों की विजय को पक्का कर दिया जावे, बग़दाद पैक्ट के ज़रिये पच्छिम एशिया की मुसलिम हुकूमतों में फूट डाल दी जाय, कश्मीर पर हमला करा दिया जावे और मिस्र और काश्मीर में दो नए 'कोरिया' पैदा करके इंगलैंड और अमरीका के साम्राजी मनसूबों को सफल होने का मौक़ा दिया जावे. आज तक की ख़बरें बता रही हैं कि यह नापाक साज़िश अभी भी ख़तम नहीं हुई है.

इंगलैंड, फ़्रांस या अमरीका के किसी भी नीतिज्ञ के इस कहने पर कि सुएज़ पर हमला बिना डलेस साहब की सलाह के कर दिया गया था, विश्वास कर लेना अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीति से नावाक़फ़ीयत ज़ाहिर करना है.

ख़ुश क़िस्मती से दुनिया की जनता अब जागती और अपनी शक्ति को पहचानती जा रही है दुनिया के अधिकतर देशों के राजनीतिज्ञों और शासकों की अन्तर-आत्मा भी धीरे-धीरे साफ़ ऊपर को उठ रही है. दुनिया यह समझती जा रही है कि सब का भला एक चीज़ है और केवल कुछ देशों के थोड़े से लोगों का आर्थिक या व्यापारिक लाभ दूसरी चीज़ है, और सब के भले ही में हर एक का वास्तविक भला है.

सुएज़ और हंगरी की तुलना

कोशिश की गई थी कि हंगरी के और सुएज़ के मामलों को मिलाकर दुनिया के जनमत को गड़बड़ा दिया जावे पर दुनिया ने साफ़ देख लिया कि हंगरी और सुएज़ की घटनाओं में कितना अन्तर था. हंगरी में रूसी सेना दोनों देशों के एक बाज़ाब्ता आपसी समझौते के अनुसार हाल के उपद्रवों से कहीं पहले से मौजूद थी. सुएज़ में कोई इस तरह का समझौता या पहले से कोई इस तरह की सेना नहीं थी. हंगरी में उपद्रव शुरू हो जाने के बाद रूसी सेना उस समय की हंगरी सरकार के कहने पर देश छोड़ने के लिये तैयार हो गई और छोड़कर चलने तक लगी हमें याद रखना चाहिये कि हंगरी की राजधानी बूडापेस्ट को छोड़कर जाती हुई रूसी सेना पर पीछे से हमला किया गया था इसी बीच बूडापेस्ट में नागी सरकार की जगह कादर सरकार सामने आई. उसने आते ही रूसी सेना को वारसा की सन्धि

سے علامہ مشرقی کے آدھین دس لاکھ سویم سیوکوں کے بھارت میں پرویش کرنے کی دھمکی اور کچھ سرحدی قوموں کی کشمیر پر حملہ کرنے کی تیاری کی خبر، یہ سب ادھر سے ادھر تک ایک ہی سلسلہ کی کڑیاں او ایک پوری گہری سازش کے حصے ہیں

صاف غرض یہ تھی کہ ہنگری اور پوربی یورپ کے دوسرے کمیونسٹ دیشوں میں اپدرو کھڑے کرکے روس کو ادھر پھنسا دیا جاوے، کمیونزم اور کمیونسٹ شکتیوں کو دنیا کی نگاہوں میں نیچے گرایا جاوے، اسرائیل اور مصر کو بھڑا کر سویز نہر پر انگریزوں اور فرانسیسیوں کی وجے کو پکا کردیا جاوے، بغداد پیکٹ کے ذریعے پچھم ایشیا کی مسلم حکومتوں میں پھوٹ ڈال دی جاوے، کشمیر پر حملہ کرادیا جاوے اور مصر اور کشمیر میں دو نئے 'کوریا' پیدا کرکے انگلینڈ اور امریکہ کے سامراجی منصوبوں کو سپھل ہونے کا موقع دیا جاوے. آج تک کی خبریں بتا رہی ہیں کہ یہ ناپاک سازش ابھی بھی ختم نہیں ہوئی ہے.

انگلینڈ، فرانس یا امریکہ کے کسی بھی نیتگیہ کے اس کہنے پر کہ سویز پر حملہ بنا ڈلس صاحب کی صلاح کے کردیا گیا تھا، وشواس کرلینا انترراشٹریہ کوٹ نیتی سے ناواقفیت ظاہر کرنا ہے.

خوش قسمتی سے دنیا کی جنتا اب جاگتی اور اپنی شکتی کو پہچانتی جارہی ہے. دنیا کے ادھکتر دیشوں کے راج نیتگیوں اور شاسکوں کی انتر آتما بھی دھیرے دھیرے صاف اوپر کو اٹھ رہی ہے. دنیا یہ سمجھتی جارہی ہے کہ سب کا بھلا ایک چیز ہے اور کیول کچھ دیشوں کے تھوڑے سے لوگوں کا آرتھک یا ویاپارک لابھ دوسری چیز ہے، اور سب کے بھلے ہی میں ہر ایک کا واستوک بھلا ہے.

سویز اور ہنگری کی تلنا

کوشش کی گئی تھی کہ ہنگری کے او سویز کے معاملوں کو ملاکر دنیا کے جن مت کو گڑبڑا دیا جاوے. پر دنیا نے صاف دیکھ لیا کہ ہنگری اور سویز کی گھٹناؤں میں کتنا انتر تھا. ہنگری میں روسی سینا دونوں دیشوں کے ایک باضابطہ آپسی سمجھوتے کے انوسار حال کے اپدروں سے کہیں پہلے سے موجود تھی. سویز میں کوئی اس طرح کا سمجھوتا یا پہلے سے کوئی اس طرح کی سینا نہیں تھی. ہنگری میں اپدرو شروع ہوجانے کے بعد روسی سینا اُس سمے کی ہنگری سرکار کے کہنے پر دیش چھوڑنے کے لئے تیار ہوگئی اور چھوڑ کر چلنے تک لگی. ہمیں یاد رکھنا چاہئے کہ ہنگری کی راجدھانی بوڈاپسٹ کو چھوڑ کر جاتی ہوئی روسی سینا پر پیچھے سے حملہ کیا گیا تھا. اسی بیچ بوڈاپسٹ میں ناگی سرکار کی جگہ کادر سرکار سامنے آئی. اُس نے آتے ہی روسی سینا کو وارسا کی سندھی

को ... दिखाकर उनसे अपनी मदद के लिये बुलाने की कामना थी. रूसी सेना रुक गई इसके विरुद्ध सुएज़ में न कोई वारसा जैसी सन्धि थी, न किसी मिस्री ने अंगरेज़ों या फ्रांसीसियों को बुलाया था और न मिस्र के किसी एक आदमी ने भी अंगरेज़ों या फ्रांसीसियों से वहां टिकने की कामना की मिस्र में कोई एक बच्चा भी अंगरेज़ी या फ्रांसीसी फौज की दुहाई देनेवाला न था दुनिया ने साफ़ देख लिया कि सुएज़ पर अंगरेज़ों और फ्रांसीसियों का हमला एक खुला अन्याय और अन्तर्राष्ट्रीय अपराध है हंगरी का मामला बिलकुल दूसरी तरह का था इन दोनों को मिलाने की कोशिश केवल दुनिया की आँखों में धूल झोंकने की कोशिश थी

हाल ही में मिस्र के अख़बारों में साफ़ निकल चुका है कि अमरीकी विदेश मंत्री डलेस के गुरगे आज भी अपने डालरों और चालों के बल पर मिस्र में देशघातक पैदा करने और नासिर सरकार को उलटने की कोशिशों में लगे हुए हैं. हम मिस्री क़ौम को दिल से बधाई देते हैं कि अभी तक विदेशी थैलिया या विदेशी कूटनीति मिस्र में देशघातक पैदा नहीं कर पाई.

आइसन हावर की तजवीज़ और साम्राजी जाल

हंगरी और सुएज़ के मामलों को मिलाने में जब सफलता मिलती दिखाई न दी तो मिली भगत ने काम दिया अमरीका ने यू० एन० ओ० के सामने अंगरेज़ों और फ्रांसीसियों के हमले को 'हमला' कहकर वाहवाही हासिल करली जो काम उस रुख़ से आसानी से न हो सका उसे अब आइसन हावर साहब की पच्छिम एशिया की "ख़ाली जगह को अमरीकी फौजों से भरने" की नई तजवीज़ से पूरा करने की कोशिश की जा रही है इस फौजी तजवीज़ के साथ साथ और फौज के आगे आगे होशियार कूट-नीतिज्ञों का एक दल पच्छिमी एशिया के देशों मे थैलिया लिये पहुँच गया है और ज़ोरों के साथ यह कोशिश की जा रही है कि उन देशों में अमरीका के कुछ हमदर्द देशघातक पैदा करके अमरीकी फौज के वहा जाने और "ख़ाली जगह को भरने" के लिये रास्ता साफ़ कर लिया जावे एक इराक़ को छोड़कर बाक़ी सब अरब मुल्कों ने आइसन हावर की इस चाल को अच्छी तरह समझ लिया है और एक आवाज़ से उसकी निन्दा की है रूस, चीन और भारत इसे बुरा और दुनिया की शान्ति के लिये ख़तरनाक एलान कर ही चुके हैं.

हम मान चुके हैं कि रूसी फौज का हंगरी में रहना या किसी भी दूसरे देश में रहना दूसरे देशों के अन्दर के मामलों में दख़ल देना है पर हमे एक पल के लिये भी यह नहीं भूलना चाहिये कि पच्छमी जरमनी के अन्दर सशस्त्र अमरीकी फौजों का रहना, कैनेडा में और पच्छिम यूरप के

کی چال چلاکر اُس سے اپنی مدد کے لئے رکنے کی پرارتھنا کی۔ روسی سینا رکنا گئی۔ اس کے ورودھ سویز میں نہ کوئی وارسا جیسی سندھی تھی، نہ کسی مصری نے انگریزوں یا فرانسیسیوں کو بلایا تھا اور نہ مصر کے کسی ایک آدمی نے بھی انگریزوں یا فرانسیسیوں سے وہاں ٹکنے کی پرارتھنا کی۔ مصر میں کوئی ایک بچہ بھی انگریزی یا فرانسیسی فوج کی دوہائی دینے والا نہ تھا۔ دنیا نے صاف دیکھ لیا کہ سویز پر انگریزوں اور فرانسیسیوں کا حملہ ایک کھلا انیائے اور انترراشٹریہ اپرادھ ہے۔ ہنگری کا معاملہ بالکل دوسری طرح کا تھا۔ ان دونوں کو ملانے کی کوشش کیول دنیا کی آنکھوں میں دھول جھونکنے کی کوشش تھی۔

حال ہی میں مصر کے اخباروں میں صاف نکل چکا ہے کہ امریکی ودیش منتری ڈلیس کے گرگے آج بھی اپنے ڈالروں اور چالوں کے بل پر مصر میں دیش گھاتک پیدا کرنے اور ناصر سرکار کو اُلٹنے کی کوششوں میں لگے ہوئے ہیں۔ ہم مصری قوم کو دل سے بدھائی دیتے ہیں کہ ابھی تک ودیشی تھیلیاں یا ودیشی کوٹنیتی مصر میں دیش گھاتک پیدا نہیں کرپائی۔

آئیسن ہاور کی تجویز اور سامراجی جال

ہنگری اور سویز کے معاملوں کو ملانے میں جب سپھلتا ملتی دکھائی نہ دی تو ملی بھگت نے کام دیا امریکہ نے یو این او کے سامنے انگریزوں اور فرانسیسیوں کے حملہ کو 'حملہ' کہکر واہ واہی حاصل کرلی۔ جو کام اُس رخ سے آسانی سے نہ ہوسکا اُسے اب آئیسن ہاور صاحب کی پچھم ایشیا کی "خالی جگہ امریکی فوجوں سے بھرنے" کی نئی تجویز سے پورا کرنے کی کوشش کی جارہی ہے اس فوجی تجویز کے ساتھ ساتھ اور فوج کے آگے آگے ہوشیار کوٹ نیتگوں کا ایک دل پچھم ایشیا کے دیشوں میں تھیلیاں لئے پہونچ گیا ہے اور زوروں کے ساتھ یہ کوشش کی جارہی ہے کہ اُن دیشوں میں امریکہ کے کچھ ہمدرد دیش گھاتک پیدا کرکے امریکی فوج کے وہاں جانے اور "خالی جگہ کو بھرنے" کے لئے راستہ صاف کرلیا جاوے۔ ایک عراق کو چھوڑکر باقی سب عرب ملکوں نے آئیسن ہاور کی اس چال کو اچھی طرح سمجھ لیا ہے اور ایک آواز سے اُس کی نندا کی ہے۔ روس، چین اور بھارت اسے برا اور دنیا کی شانتی کے لئے خطرناک اعلان کر ہی چکے ہیں۔

ہم مان چکے ہیں کہ روسی فوج کا ہنگری میں رہنا یا کسی بھی دوسرے دیش میں رہنا دوسرے دیشوں کے اندر کے معاملوں میں دخل دینا ہے۔ پر ہمیں ایک پل کے لئے بھی یہ نہیں بھولنا چاہئے کہ پچھمی جرمنی کے اندر سشستر امریکی فوجوں کا رہنا، کینیڈا میں اور پچھم یورپ کے

पश्चिमी एशिया के देशों में ज़बरदस्त अमरीकी फ़ौजी अड्डों का होना और हर समय युद्ध के लिये तैयार रहना, एलजीरिया, साइप्रस, अदन और यमन में विदेशी फ़ौजों की मौजूदगी और मदाख़लत, बग़दाद पैक्ट, आइसन हावर की नई तजवीज़, हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तान को अमरीकी फ़ौजी सहायता, दक्खिन पूर्वी एशिया में सीटो का षड़यंत्र, दक्खिन वीतनाम, लाओ और कम्बोडिया में अमरीकी साज़िशें, ताईवान में च्यांग काई शेक की मदद के लिये या उसे क़ाबू में रखने के लिये अमरीकी जल, थल और हवाई सेनाएं, कोरिया में देश घातक सिंगमैन री को लगातार बढ़ावा, दूसरे महायुद्ध के इतने बरसों बाद तक भी छोटे से जापान में सात सौ अमरीकी फ़ौजी अड्डों की मौजूदगी, और इन सब के साथ साथ चीनी क्रान्ति के सफल होने के आठ बरस बाद तक भी नए चीन की सरकार को जायज़ सरकार मानने से इनकार,—ये सब चीज़ें आधी से अधिक दुनिया के देशों के अन्दर के मामलों में गहरी और ख़तरनाक मदाख़लत है. रूस या चीन केवल अपनी सलामती के ख़याल से भी इन हालतों में चुप नहीं बैठ सकते, न उन्हें बैठना चाहिये. ऐसे अवसरों पर दुनिया को एक बड़ी बुराई से बचाने के लिये किसी छोटी बुराई का सहारा लेना पड़ जाता है. हमें विश्वास है कि ऐन उस नाज़ुक मौक़े के ऊपर रूसी सेना का किसी भ्रम में पड़कर हंगरी को ख़ाली कर देना आस्ट्रिया के रास्ते पच्छिमी यूरप की साम्राजी फ़ौजों के लिये पूर्वी यूरप के देशों में घुसने के लिये रास्ता साफ़ कर देना होता. यदि ऐसा हो जाता तो जो उपद्रव हंगरी में हुए या कराए गए वही पूर्वी यूरप के दूसरे देशों में भी होते, सुएज़ के हमले का रंग बदल जाता, बग़दाद पैक्ट में जान पड़ जाती, पच्छिम एशिया के मुसलिम देशों में फूट ज़ोरों के साथ फूलती फलती, और सुएज़ और काश्मीर दोनों अबतक दो नए कोरिया बन गये होते.

हमें यह भी याद रखना चाहिये कि आइसन हावर, डलेस और दूसरे अमरीकी नेता अंगरेज़ों और फ़्रांसीसियों के सुएज़ पर हमले को ग़लत स्वीकार करते हुए भी बार-बार यह कहते रहे कि असल ग़लती मिस्र ही की थी जिसने इंगलैंड और फ़्रांस को अपने ग़लत रवैये से मिस्र पर हमला करने के लिये मजबूर कर दिया.

ख़तरा अभी तक मिटा नहीं है. अमरीका, इंगलैंड और उनके साथियों की कोशिशें अभी वैसी ही जारी हैं. हमारा मतलब, इन देशों की सरकारों से है, जनता से नहीं. इसमें कोई सन्देह नहीं कि रूसी सेना ने हंगरी को छोड़ देने के बजाय वहां के उपद्रवों को मज़बूती के साथ दबाकर एक बार दुनिया की शान्ति को बचा लिया और कम से कम एक समय के लिये दुनिया को नए महा युद्ध के ख़तरों से बचा लिया. ऐसे मौक़े पर रूस का अपनी सेनाओं को हंगरी

آدھی دنیا کے دیشوں میں زبردست امریکی فوجی اڈوں کا ہونا اور ہر سمے یدھ کے لئے تیار رہنا، الجیریا، سائپرس، عدن اور یمن میں ودیشی فوجوں کی موجودگی اور مداخلت، بغداد پیکٹ، آئیسن ہاور کی نئی تجویز، ہمارے پڑوسی دیش پاکستان کو امریکی فوجی سہایتا، دکھن پوربی ایشیا میں سیٹو کا شڑینتر، دکھن ویت نام، لاؤ اور کمبوڈیا میں امریکی سازشیں، تائیوان میں چیانگ کائی شیک کی مدد کے لئے یا اسے قابو میں رکھنے کے لئے امریکی جل، تھل اور ہوائی سینائیں، کوریا میں دیش گھاتک سنگ مین ری کو لگاتار بڑھاوا، دوسرے مہایدھ کے اتنے برسوں بعد تک بھی چھوٹے سے جاپان میں سات سو امریکی فوجی اڈوں کی موجودگی، اور ان سب کے ساتھ ساتھ چینی کرانتی کے سپھل ہونے کے آٹھ برس بعد تک بھی نئے چین کی سرکار کو جائز سرکار ماننے سے انکار،—یہ سب چیزیں آدھی سے ادھک دنیا کے دیشوں کے اندر کے معاملوں میں گہری اور خطرناک مداخلت ہیں۔ روس یا چین کیول اپنی سلامتی کے خیال سے بھی ان حالتوں میں چپ نہیں بیٹھ سکتے، نہ انہیں بیٹھنا چاہئے۔ ایسے اوسروں پر دنیا کو ایک بڑی برائی سے بچانے کے لئے کسی چھوٹی برائی کا سہارا لینا پڑ جاتا ہے۔ ہمیں وشواس ہے کہ عین اس نازک موقعہ کے اوپر روسی سینا کا کسی بھرم میں پڑ کر ہنگری کو خالی کر دینا آسٹریا کے راستے پچھمی یورپ کی سامراجی فوجوں کے لئے پوربی یورپ کے دیشوں میں گھسنے کے لئے راستہ صاف کر دینا ہوتا۔ یدی ایسا ہو جاتا تو جو اپدرو ہنگری میں ہوئے یا کرائے گئے وہی پوربی یورپ کے دوسرے دیشوں میں بھی ہوتے، سویز کے حملہ کا رنگ بدل جاتا، بغداد پیکٹ میں جان پڑ جاتی، پچھم ایشیا کے مسلم دیشوں میں پھوٹ زوروں کے ساتھ پھولتی پھلتی، اور سویز اور کشمیر دونوں اب تک دو نئے کوریا بن گئے ہوتے۔

ہمیں یہ بھی یاد رکھنا چاہئے کہ آئیسن ہاور، ڈلس اور دوسرے امریکی نیتا انگریزوں اور فرانسیسیوں کے سویز پر حملے کو غلط سویکار کرتے ہوئے بھی بار بار یہ کہتے رہے کہ اصلی غلطی مصر ہی کی تھی جس نے انگلینڈ اور فرانس کو اپنے غلط رویہ سے مصر پر حملہ کرنے کے لئے مجبور کر دیا۔

خطرہ ابھی تک مٹا نہیں ہے۔ امریکہ، انگلینڈ اور ان کے ساتھیوں کی کوششیں ابھی ویسی ہی جاری ہیں۔ ہمارا مطلب ان دیشوں کی سرکاروں سے ہے، جنتا سے نہیں۔ اس میں کوئی سندیہ نہیں کہ روسی سینا نے ہنگری کو چھوڑ دینے کے بجائے وہاں کے اپدروں کو مضبوطی کے ساتھ دبا کر ایک بار دنیا کی شانتی کو بچا لیا اور کم سے کم ایک سمے کے لئے دنیا کو نئے مہایدھ کے خطروں سے بچا لیا۔ ایسے موقع پر روس کا اپنی سیناؤں کو ہنگری

से हुआ होता न केवल पच्छिमी यूरप के साथ बल्कि सारी दुनिया और विश्व शान्ति के साथ विश्वासघात करना होता.

दुनिया के नीतिज्ञों में इस समय दो ही सब से जियादा साफ़गो हैं, जिन की बातों में और चाहे कुछ भी हो बनावट कभी नहीं होती,—एक रूसी नेता ख़ुश्चेव और दूसरा अमरीकी नीतिज्ञ डलेस. हंगरी के बारे में ख़ुश्चेव ने साफ़ कहा था कि जब तक अमरीका पच्छिमी जरमनी और पच्छिमी यूरप से अपनी .फ़ौजों को नहीं हटाता तब तक रूसी .फ़ौजें पूर्वी यूरप से नहीं हटेंगी. आज अमरीका इस बात का वादा करे कि अमरीकी .फ़ौजें इतने समय के अन्दर पच्छिमी यूरप से हटा ली जावेंगी तो हमें विश्वास है कि उस से पहले रूसी फ़ौजें पूर्वी यूरप को ख़ाली कर देंगी. रूसी नेता यह भी साफ़-साफ़ कह चुके हैं कि 'नाटो' की सन्धि को रद्द कर दिया जावे तो रूस आज वारसा की सन्धि को रद्द कर देने के लिये तैयार हैं. रूसी नेताओं के इस आग्रह को हम बिलकुल ठीक और आजकल के हालात में विश्व शान्ति के लिये ज़रूरी समझते हैं.

सुएज़ और प्राचीन मिस्री सभ्यता

हमारे कुछ देशवासी सुएज़ के मामले में भी अभी तक कई तरह की ग़लत फ़हमियों के शिकार हैं. पहली बात यह कि मेडीटरेनियन सी (भू मध्य सागर) और रेड सी (लाल समन्दर) को नहर के ज़रिये जोड़ने का विचार .फ़्रांसीसियों या यूरप निवासियों की सूझ नहीं है. ईसा से कम से कम अठारह सौ बरस पहले इस तरह की एक नहर मिस्र के उस समय के सम्राट सेसोस्त्री की बनवाई हुई मौजूद थी जिससे उस समय के बड़े से बड़े जहाज़ इस समन्दर से उस समन्दर में आते जाते थे. इस तरह की नहर को चालू रखने के लिये लाखों मज़दूरों की उस समय भी ज़रूरत पड़ती थी और आज भी पड़ रही है. हज़ारों बरस के अन्दर नहर में बार-बार मिट्टी आती गई और बार-बार उसे फिर से खुदवाने और साफ़ कराने की ज़रूरत पड़ती रही. इस तरह की कोशिशें भी बराबर होती रहीं. इन में दो सब से बड़ी कोशिशें एक ईरानी सम्राट दारा के समय में हुई और दूसरी अरब ख़लीफ़ा उमर के समय में. सम्राट दारा की खुदवाई हुई नहर और ख़लीफ़ा उमर की खुदवाई हुई नहर दोनों अपने अपने समय में सदियों काम देती रहीं. आख़िर अरबों की शक्ति घटने के साथ-साथ ख़लीफ़ा उमर की खुदवाई हुई नहर भी मिट्टी और रेत से पट कर बेकाम हो गई. यूरपीय इतिहास लेखक स्वीकार करते हैं कि जो नहर सुएज़ सन् 1861 में .फ़्रांसीसियों ने खुदवानी शुरू की वह अधिकतर ख़लीफ़ा उमर की खुदवाई हुई नहर ही की दाग़बेल पर खोदी गई. या यूँ कहना चाहिये कि .फ़्रांसीसियों ने बजाय

هوا هوتا، نه کیول پچھمی یورپ کے ساتھ بلکه ساری دنیا اور وشوشانتی کے ساتھ وشواس گھات کرنا هوتا .

دنیا کے نیتگیوں میں اِس سمے دو هی سب سے زیاده صاف گو هیں، جن کی باتوں میں اور چاهے کچھ بھی هو بناوٹ کبھی نهیں هوتی'— ایک روسی نیتا کھروشچیو اور دوسرا امریکی نیتگیه ڈلیس . هنگری کے بارے میں کھروشچیو نے صاف کہا تھا که جب تک امریکه پچھمی جرمنی اور پچھمی یورپ سے اپنی فوجوں کو نهیں هٹاتا تب تک روسی فوجیں پوربی یورپ سے نهیں هٹینگی . آج امریکه اِس بات کا وعده کرے کی امریکی فوجیں اِتنے سمے کے اندر پچھمی یورپ سے هٹالی جاوینگی تو همیں وشواس هے که اُس سے پهلے روسی فوجیں پوربی یورپ کو خالی کردینگی . روسی نیتا یه بھی صاف صاف کہ چکے هیں که 'ناٹو' کی سندھی کو رد کردیا جاوے تو روس آج وارسا کی سندھی کو رد کردینے کے لئے تیار هے . روسی نیتاؤں کے اِس آگره کو هم بالکل ٹھیک اور آجکل کے حالات میں وشوشانتی کے لئے ضروری سمجھتے هیں .

سویز اور پراچین مصری سبھیتا

همارے کچھ دیش واسی سویز کے معاملے میں بھی ابھی تک کئی طرح کی غلط فهمیوں کے شکار هیں . پهلی بات یه که میڈیٹیرینین سی (بھومدھیه ساگر) اور ریڈ سی (لال سمندر) کو نهر کے ذریعه جوڑنے کا وچار فرانسیسیوں یا یورپ نواسیوں کی سوجھ نهیں هے . عیسیٰ سے کم سے کم اٹھاره سو برس پهلے اِس طرح کی ایک نهر مصر کے اُس سمے کے سمراٹ سیسوستری کی بنوائی هوئی موجود تھی جس سے اُس سمے کے بڑے سے بڑے جهاز اِس سمندر سے اُس سمندر میں آتے جاتے تھے . اِس طرح کی نهر کو چالو رکھنے کے لئے لاکھوں مزدوروں کی اُس سمے بھی ضرورت پڑتی تھی اور آج بھی پڑ رهی هے . هزاروں برس کے اندر نهر میں بار بار مٹی آتی گئی اور بار بار اُسے پھر سے کھدوانے اور صاف کرانے کی ضرورت پڑتی رهی . اِس طرح کی کوششیں بھی برابر هوتی رهیں . اِن میں دو سب سے بڑی کوششیں ایک اِیرانی سمراٹ دارا کے سمے میں هوئی اور دوسری عرب کے خلیفه عمر کے سمے میں . سمراٹ دارا کی کھدوائی هوئی نهر اور خلیفه عمر کی کھدوائی هوئی نهر دونوں اپنے اپنے سمے میں صدیوں کام دیتی رهیں . آخر عربوں کی شکتی گھٹنے کے ساتھ ساتھ خلیفه عمر کی کھدوائی هوئی نهر بھی مٹی اور ریت سے پٹ کر بےکام هوگئی . یورپیه اِتهاس لیکھک سویکار کرتے هیں که جو نهر سویز سن 1861 میں فرانسیسیوں نے کھدوانی شروع کی وه ادھک تر خلیفه عمر کی کھدوائی هوئی نهر هی کی داغ بیل پر کھودی گئی . یا یوں کہنا چاهئے که فرانسیسیوں نے بجائے

नई नहर के खोदने के अधिकतर खलीफ़ा उमर के समय की सरवे से ही काम लिया और उस पुरानी खुदी नहर से रेत और मिट्टी निकाल कर उसे साफ किया यह सच है कि यह नब्बे साल की बनी हुई नहर जगह जगह पहले से अधिक चौड़ी है.

आज दो पौने दो सौ बरस से खासकर जिस दिन से यूरप में भाप की ताक़त से कारखाने चलने शुरू हुए कला और विज्ञान में पच्छिम ने बहुत उन्नति की है हम सबको पच्छिम की इस उन्नति पर ख़ुशी है, और इन पौने दो सौ बरस के अन्दर पच्छिम ने दुनिया का जो कुछ दिया है उस के लिये दुनिया हमेशा उनकी एहसानमन्द रहेगी पर मिस्र और सुएज़ नहर की बात करते हुए इतिहास के जानकार इस बात को भूल नहीं सकते कि सभ्यता यानी तहज़ीब की निगाह से मिस्र दुनिया की सबसे पुरानी क़ौमों में से है. आज से कम से कम सात हज़ार बरस पहले मिस्र सभ्यता के शिखर पर पहुँचा हुआ था उस समय वह दुनिया का सबसे सभ्य और सबसे उन्नत देश माना जाता था

सात हज़ार बरस पहले प्राचीन मिस्र के इंजीनियरों और कारीगरों ने वह अद्भुत विशाल मीनारें तामीर किये थे जो मिस्र के 'पिरेमिड्स' कहलाते हैं, जो आज तक दुनिया के चमत्कारों में गिने जाते है और जिनकी कला इस समय भी दुनिया के बड़े से बड़े इंजीनियरों को चकित करती रहती है. मिस्र के उस समय के बने हुए सुन्दर सूती और रेशमी कपड़े आज तक उन हज़ारों बरस की पुरानी क़बरों में ज्यूँ के त्यूँ रक्खे हुए मिलते हैं इतिहास गवाह है कि उस ज़माने में मिस्र के राजाओं और रईसों के घरों का सब इस्तेमाली सामान यहाँ तक कि पलंग, कुर्सियाँ और दीवान ठोस सोने के होते थे यह वह समय था जबकि यूरप के किसी हिस्से में भी जंगल के जानवरों और वहाँ के रहने वाले मनुष्यों में किसी तरह का फ़र्क़ नहीं किया जा सकता था

मिस्रियों ही ने सबसे पहले यूरप पहुँचकर वहाँ के आदमियों को आदमी बनाया, उन्हें कपड़ा पहनना सिखाया, उन्हें लिखना पढ़ना सिखाया, उन्हें काग़ज़ और स्याही का इस्तेमाल सिखाया काग़ज़ बनाना यूरप वालों ने मिस्र ही से सीखा आज तक यूरप के अच्छे से अच्छे गोल कमरों में इस्तेमाल की चीज़ें जैसे कुर्सी, मेज़, सोफ़ा, दीवान, पलंग या अलमारी ऐसी कम मिलेंगी जिन से अधिक सुन्दर वैसी ही चीज़ें मिस्र की पुरानी क़बरों और अजायबघरों में न मिलती हों. यूरप की महिलाओं के बदन पर शायद ही कोई ज़ेवर ऐसा होगा जो पुराने मिस्री ज़ेवरों की नक़ल न हो.

इमारतें बनाने की कला में पुराने मिस्री दुनिया में सब से बढ़े हुए थे सारंगी और सितार जैसे तार के बाजों का

نئی نہر کھودنے کے ادھکتر خلیفہ عمر کے سمے کی سروے سے ہی کام لیا اور اُس پرانی کھدی نہر سے ریت اور مٹی نکال کر اُسے صاف کیا یہ سچ ہے کہ یہ نوے سال کی بنی ہوئی نہر جگہ جگہ پہلے سے ادھک چوڑی ہے۔

آج دو پونے دو سو برس سے خاصکر جس دن سے یورپ میں بھاپ کی طاقت سے کارخانے چلنے شروع ہوئے کلا اور وگیان میں پچھم نے بہت اُنتی کی ہے۔ ہم سب کو پچھم کی اس اُنتی پر خوشی ہے، اور ان پونے دو سو برس کے اندر پچھم نے دنیا کو جو کچھ دیا ہے اُس کے لئے دنیا ہمیشہ اُن کی احسان‌مند رہےگی پر مصر اور سوئز کی بات کرتے ہوئے اتہاس کے جانکار اس بات کو بھول نہیں سکتے کہ سبھیتا یعنی تہذیب کی نگاہ سے مصر دنیا کی سب سے پرانی قوموں میں سے ہے۔ آج سے کم سے کم سات ہزار برس پہلے مصر سبھیتا کے شکھر پر پہونچا ہوا تھا۔ اُس سمے وہ دنیا کا سب سے سبھیہ اور سب سے اُنت دیش مانا جاتا تھا

سات ہزار برس پہلے پراچین مصر کے انجینیروں اور کاریگروں نے وہ ادبھت وشال مینارے تعمیر کئے تھے جو مصر کے 'پرمڈس' کہلاتے ہیں جو آج تک دنیا کے چمتکاروں میں گنے جاتے ہیں اور جن کی کلا اس سمے بھی دنیا کے بڑے سے بڑے انجینیروں کو چکت کرتی رہتی ہے مصر کے اُس سمے کے بنے ہوئے سندر سوتی اور ریشمی کپڑے آج تک اُن ہزاروں برس کی پرانی قبروں میں جوں کے توں رکھے ہوئے ملتے ہیں۔ اتہاس گواہ ہے کہ اُس زمانے میں مصر کے راجاؤں اور رئیسوں کے گھروں کا سب استعمالی سامان یہاں تک کہ پلنگ کرسیاں اور دیوان ٹھوس سونے کے ہوتے تھے یہ وہ سمے تھا جبکہ یورپ کے کسی حصے میں بھی جنگل کے جانوروں اور وہاں کے رہنے والے منشیوں میں کسی طرح کا فرق نہیں کیا جاسکتا تھا

مصریوں ہی نے سب سے پہلے یورپ پہونچکر وہاں کے آدمیوں کو آدمی بنایا، اُنہیں کپڑا پہننا سکھایا، اُنہیں لکھنا پڑھنا سکھایا، اُنہیں کاغذ اور سیاہی کا استعمال سکھایا۔ کاغذ بنانا یورپ والوں نے مصر ہی سے سیکھا آج تک یورپ کے اچھے سے اچھے گول کمروں میں استعمال کی چیزیں جیسے کرسی، میز، سوفہ، دیوان، پلنگ یا الماری ایسی کم ملینگی جن سے ادھک سندر ویسی ہی چیزیں مصر کی پرانی قبروں اور عجائب گھروں میں نہ ملتی ہوں یورپ کی مہیلاؤں کے بدن پر شاید ہی کوئی زیور ایسا ہوگا جو پرانے مصری زیوروں کی نقل نہ ہو۔

عمارتیں بنانے کی کلا میں پرانے مصری دنیا میں سب سے بڑھے ہوئے تھے۔ سارنگی اور ستار جیسے تار باجوں کا

इस्तेमाल दुनिया ने मिस्र ही से सीखा. फूलों और दूसरी चीज़ों से इत्र खींचने की कला भी मिस्र ही से शुरू हुई.

मिस्री सभ्यता अनेक युगों में से निकली पहले जब कि यूरप में आजकल की डाक्टरी विद्या ने अभी जन्म भी नहीं लिया था और वहां अधिकतर रोगियों,का इलाज केवल झाड़ फूंक और गन्डे तावीज़ो से किया जाता था, मिस्र के और खासकर सिकन्दरिया क अस्पतालों में कई कई घंटे कामयाबी के साथ दिमागों तक के आपरेशन होते थे. जिस समय की हम यह बात कर रहे हैं वह मिस्री सभ्यता और यूनानी सभ्यता के सगम का समय था.

यूरप पर अरबों की हुकूमत

हज़ारों बरस के बाद प्राचीन मिस्र के ख़ात्मे का समय आया. अरबो ने मिस्र को फतह किया. आजकल के मिस्री अधिकतर अरब नसल के हैं. अरबी ही अब उनकी बोली है. वह अभिमान के साथ अपने को अरब कहते हैं. पच्छिम एशिया के अरब मुल्कों के साथ अपना नाता जोड़ते हैं और अरब एकता के क़ायल हैं. हम उनकी इस भावना की सराहना करते हैं. दुनिया के अमन और शान्ति में यह भावना इस समय बहुत बड़ी मददगार है.

हर देश और हर क़ौम का अपना अपना ज़माना होता है आठवीं सदी ईस्वी से चौदहवीं सदी तक लगभग सात सौ बरस दुनिया मे अरबो का बोलबाला रहा. लगभग सात सौ बरस तक ही आधे यूरप पर अरबों की हुकूमत थी. स्पेन की उस समय की अरब यूनीवर्सिटी, कुछ सदी पहले की मिस्र की सिकन्दरिया यूनीवर्सिटी की तरह, दुनिया की सब से बड़ी यूनीवर्सिटी मानी जाती थी. उस समय वही विद्या और विज्ञान की दुनिया मे सबसे बड़ी केन्द्र थी स्पेन की उस ज़माने की अरब इमारतो के खडहर आज भी हमे उन दिनो की अरब सभ्यता की याद दिलाते रहते हैं. अरबो ने ही यूरप को 1, 2, 3 आदि वह अङ्क लिखना सिखाया जिन्हे आज तक यूरप वाले 'अरबिक न्युमरल्स' कहते हैं. अरबो ने ही यूरप मे वैद्यक और विज्ञान की बुनियाद डाली. ईमान्दार इतिहासकार उन्हे अभी तक यूरप म विज्ञान यानी साइन्स के जन्मदाता मानते है ईसा को गियारहवीं और बारहवीं सदी मे स्वयं इ गलैड के अन्दर कोई आदमी पढ़ा लिखा और सभ्य (educated & cultured) नहीं माना जाता था जब तक वह अरबी न जानता हो अरबी उन दिनो यूरप भर की कलचरी भाषा थी सख्त ज़रूरत इस बात की है कि एशिया और अफरीक़ा अपने उत्थान के साथ साथ दुनिया की मानव सभ्यता के इतिहास को फिर से ठीक ठीक लिखकर अपने और दुनिया के सामने रखें.

आज अरब एक पिछड़ी हुई क़ौम समझे जाते हैं और इस अमरीकी क़ौम के मुखिया को, जिसको पैदा हुए अभी तीन सौ बरस भी नहीं बीते, यह हिम्मत है कि वह अरबों

استعمال دنیا نے مصر ہی سے سیکھا . پھولوں اور دوسری چیزوں سے عطر کھینچنے کی کلا بھی مصر ہی سے شروع ہوئی

مصری سبھیتا انیک یگوں میں سے نکلی دو ہزار برس پہلے جبکہ یورپ میں آجکل کی ڈاکٹری ودیا نے ابھی جنم بھی نہیں لیا تھا اور وہاں ادھکتر روگیوں کا علاج کیول جھاڑ پھونک اور گندے تعویزوں سے کیا جاتا تھا، مصر کے اور خاصکر سکندریا کے اسپتالوں میں کئی کئی گھنٹے کامیابی کے ساتھ دماغوں تک کے آپریشن ہوتے تھے . جس سمے کی ہم یہ بات کر رہے ہیں وہ مصری سبھیتا اور یونانی سبھیتا کے سنگم کا سمے تھا .

یورپ پر عربوں کی حکومت

ہزاروں برس کے بعد پراچین مصر کے خاتمہ کا سمے آیا . عربوں نے مصر کو فتح کیا . آجکل کے مصری ادھکتر عرب نسل کے ہیں . عربی ہی اب انکی بولی ہے . وہ ابھیمان کے ساتھ اپنے کو عرب کہتے ہیں. پچھم ایشیا کے عرب ملکوں کے ساتھ اپنا ناتا جوڑتے ہیں او عرب ایکتا کے قائل ہیں . ہم ان کی اس بھاونا کی سراہنا کرتے ہیں دنیا کے امن اور شانتی میں یہ بھاونا اس سمے بہت بڑی مددگار ہے

ہر دیش اور ہر قوم کا اپنا اپنا زمانہ ہوتا ہے . آٹھویں صدی عیسوی سے چودھویں صدی تک لگ بھگ سات سو برس دنیا میں عربوں کا بول بالا رہا . لگ بھگ سات سو برس تک ہی آدھے یورپ پر عربوں کی حکومت تھی . اسپین کی اس سمے کی عرب یونیورسٹی، کچھ صدی پہلے کی مصر کی سکندریہ یونیورسٹی کی طرح، دنیا کی سب سے بڑی یونیورسٹی مانی جاتی تھی اس سمے وہی ودیا اور وگیان کا دنیا میں سب سے بڑا کیندر تھا . اسپین کی اس زمانہ کی عرب عمارتوں کے کھنڈہر آج بھی ہمیں ان دنوں کی عرب سبھیتا کی یاد دلاتے رہتے ہیں . عربوں نے ہی یورپ کو 1-2-3 آدی وہ انک لکھنا سکھایا جنہیں آج تک یورپ والے 'عربک نیومرلس' کہتے ہیں . عربوں نے ہی یورپ میں ویدک اور وگیان کی بنیاد ڈالی . ایماندار اتہاسکار انہیں ابھی یورپ میں وگیان یعنی سائنس کے جنم داتا مانتے ہیں . عیسوی کی گیارہویں اور بارہویں صدی میں سوئم انگلینڈ کے اندر کوئی آدمی پڑھا لکھا اور سبھیہ (educated and cultured) نہیں مانا جاتا تھا جب تک وہ عربی نہ جانتا ہو. عربی ان دنوں یورپ بھر کی کلچری بھاشا تھی . سخت ضرورت اس بات کی ہے کہ ایشیا اور افریقہ اپنے اتھان کے ساتھ ساتھ دنیا کی مانو سبھیتا کے اتہاس کو پھر سے ٹھیک ٹھیک لکھکر اپنے اور دنیا کے سامنے رکھیں

آج عرب ایک پچھڑی ہوئی قوم سمجھے جاتے ہیں اور اس امریکی قوم کے مکھیا کو، جس کو پیدا ہوئے ابھی تین سو برس بھی نہیں بیتے، یہ ہمت ہے کہ وہ عربوں

की शक्तिहीनता का बहाना लेकर अरब मुल्कों के अन्दर "इस ख़िला को भरने के लिये अमरीकी फ़ौज भेजने की तजवीज़" दुनिया के सामने रक्खें। पर अमरीकी प्रेसिडेन्ट धोखे में है.

सुएज़ और मिस्री मज़दूरों का ख़ून

सुएज़ नहर के मामले में हम फ़्राँसीसियो के एहसानमन्द ज़रूर हैं. पर हम यह भी नहीं भूल सकते कि प्रेसीडेन्ट नासिर के एक बयान के अनुसार और इतिहास के खुले पन्नों के अनुसार सुएज़ की तैयारी म एक लाख बीस हज़ार मिस्री मज़दूरों की जाने गई थीं बाक़ी मिस्र की तरह सुएज़ नहर भी मिस्र के अन्दर है मिस्रियों की है, मिस्रियों ने अपने ख़ून से उसकी ईंटों का जोड़ा है, और वह हमेशा मिस्रियों ही की रहेगी.

प्रेसीडेन्ट नासिर

कुछ लोगों का यह भी ख़याल है कि फ़्रासीसी सुएज़ कम्पनी को ख़तम करने में और सुएज़ नहर को क़ौमियाने में प्रेसीडेन्ट नासिर ने जल्दबाज़ी की उनका कहना है कि बारह बरस के अन्दर वह कम्पनी ख़ुद ही ख़तम होने वाली थी प्रेसीडेन्ट नासिर ने जल्दबाज़ी करके ख़ाह मख़ाह अपने लिये, अपने देश के लिये और दुनिया के लिये एक मुसीबत मोल लेली.

इस तरह का एतराज़ करने वाले शायद पूरी घटनाओं से वाक़िफ़ नहीं हैं. जो विदेशी उस कम्पनी से फ़ायदा उठा रहे थे वह इस बात से नावाक़िफ़ नहीं थे कि कम्पनी बारह बरस में ख़तम होने वाली है और बारह बरस बाद वह सोने के अंडे देने वाली चिड़िया मिस्री सरकार के हाथो में चली जा सकती है. वह इसकी पूरी पेशबन्दियो मे लगे हुए थे जिस तरह की साज़िशो ने ईरान का तख़ता पलट दिया और ईरानी जनता के प्यारे नेता मुसद्दिक़ को जेल म डालकर उसपर मुक़दमा चलवा दिया, उसी तरह की साज़िश एशिया के दूसरे देशों में भी होती रही हैं और अब भी जगह जगह जारी हैं. मिस्र में यही विदेशी कम्पनी इस तरह की साज़िशों का अड्डा बनी हुई थी. नहर के दोनों तरफ की ज़मीन उनके हाथों में थी सब नाज़ुक से नाज़ुक स्थान उनके क़ब्ज़े में थे सारे मिस्र तक उनकी पहुँच थी. बारह बरस ख़तम होने से पहले यह साज़िशें क्या कुछ नहीं कर सकती थीं कौन कह सकता है ? हम इस नाज़ुक मामले में अधिक नहीं पड़ना चाहते. हम केवल इतना कह देना चाहते हैं कि प्रेसीडेन्ट नासिर ने उस विदेशी कम्पनी को ख़तम करने और सुएज़ नहर को क़ौमियाने में एक दिन की भी जल्दी नहीं की. ऐसे मामलों में देरी अधिक ख़तरनाक हो सकती थी. प्रेसीडेन्ट नासिर ने अपने जायज़ क़ौमी और

کی شکتی ہینتا کا بہانہ لیکر عرب ملکوں کے اندر "اُس خلا کو بھرنے کے لئے امریکی فوج بھیجنے کی تجویز" دنیا کے سامنے رکھیں ۔ پر امریکی پریسیڈنٹ دھوکے میں ہے ۔

سویز اور مصری مزدوروں کا خون

سویز نہر کے معاملے میں ہم فرانسیسیوں کے احسان‌مند ضرور ہیں ۔ پر ہم یہ بھی نہیں بھول سکتے کہ پریسیڈنٹ ناصر کے ایک بیان کے انوسار اور اتہاس کے کھلے پنوں کے انوسار سویز نہر کی تیاری میں ایک لاکھ بیس ہزار مصری مزدوروں کی جانیں گئی تھیں ۔ باقی مصر کی طرح سویز نہر بھی مصر کے اندر ہے، مصریوں کی ہے، مصریوں نے اپنے خون سے اس کی اینٹوں کو جوڑا ہے اور وہ ہمیشہ مصریوں ہی کی رہیگی ۔

پریسیڈنٹ ناصر

کچھ لوگوں کا یہ بھی خیال ہے کہ فرانسیسی سویز کمپنی کو ختم کرنے میں اور سویز نہر کو قومیانے میں پریسیڈنٹ ناصر نے جلدبازی کی ۔ اُن کا کہنا ہے کہ بارہ برس کے اندر وہ کمپنی خود ہی ختم ہونے والی تھی ۔ پریسیڈنٹ ناصر نے جلدبازی کرکے خواہ‌مخواہ اپنے لئے، اپنے دیش کے لئے اور دنیا کے لئے ایک مصیبت مول لے لی ۔

اس طرح کا اعتراض کرنے والے شاید پوری گھٹناؤں سے واقف نہیں ہیں ۔ جو ودیشی اُس کمپنی سے فائدہ اٹھا رہے تھے وہ اس بات سے ناواقف نہیں تھے کہ کمپنی بارہ برس میں ختم ہونے والی ہے اور بارہ برس بعد وہ سونے کے انڈے دینے والی چڑیا مصری سرکار کے ہاتھوں میں چلی جا سکتی ہے ۔ وہ اس کی پوری پیش‌بندیوں میں لگے ہوئے تھے ۔ جس طرح کی سازشوں نے ایران کا تختہ پلٹ دیا اور ایرانی جنتا کے پیارے نیتا مصدق کو جیل میں ڈالکر اُس پر مقدمہ چلوا دیا اُسی طرح کی سازشیں ایشیا کے دوسرے دیشوں میں بھی ہوتی رہی ہیں اور اب بھی جگہ جگہ جاری ہیں ۔ مصر میں یہی ودیشی کمپنی اس طرح کی سازشوں کا اڈا بنی ہوئی تھی ۔ نہر کے دونوں طرف کی زمین اُن کے ہاتھوں میں تھی ۔ سب نازک سے نازک استھان اُن کے قبضے میں تھے ۔ سارے مصر تک اُن کی پہونچ تھی ۔ بارہ برس ختم ہونے سے پہلے یہ سازشیں کیا کچھ نہیں کر سکتی تھیں کون کہہ سکتا ہے ؟ ہم اس نازک معاملہ میں ادھک نہیں پڑنا چاہتے ۔ ہم کیول اتنا کہہ دینا چاہتے ہیں کہ پریسیڈنٹ ناصر نے اُس ودیشی کمپنی کو ختم کرنے اور سویز نہر کو قومیانے میں ایک دن کی بھی جلدی نہیں کی ۔ ایسے معاملے میں دیری ادھک خطرناک ہو سکتی تھی ۔ پریسیڈنٹ ناصر نے اپنے جائز قومی اور

क़ानूनी हक़ को इस्तेमाल करके अपने देश को फूट और बरबादी से बचा लिया, और शायद दुनिया के अमन को बचा लिया

अरब आज़ाद हैं और आज़ाद रहेंगे किसी बाहर की ताक़त को अब उनकी इस आज़ादी मे बट्टा लगाने की इजाज़त नहीं दी जा सकती.

भविष्य के लिये गारंटी

साथ ही जैसा हम कह चुके हैं आज तक की ख़बरें बता रही हैं कि दुनिया की शान्ति और आज़ादी के लिये ख़तरा अभी गया नहीं है. हम मानव एकता और सब की आज़ादी के मानने वाले हैं एशिया की सब क़ौमें मानव एकता और सब की आज़ादी की मानने वाली हैं इस मामले में हम पूरब और पच्छिम मे भी फ़रक़ करना नहीं चाहते हमें विश्वास है कि आम जनता किसी भी देश की लड़ना नहीं चाहती लेकिन अमरीका, इंगलैंड और कुछ पच्छिमी देशों के वह पूँजीपती गिरोह जो वहां की सरकारों को चलाते और जो दूसरे देशों की धन शक्ति और जन शक्ति को चूस कर ही अपने अप्राकृतिक वैभव को क़ायम रख सकते हैं, एशिया और अफ़रीक़ा के देशों की इस आज़ादी की बाढ़ को बरदाश्त नहीं कर सकते उनके नापाक और शरारत भरे मनसूबे नए नए रूप लेते रहते हैं स्वेज़ पर अंगरेज़ों और फ़्रांसीसियों का हमला और पच्छिमी एशिया में ख़ाली जगहों को भरने की आइसन हावर की तजवीज़" इन्हीं मनसूबों के दो रूप हैं यही खेल भारत और पाकिस्तान को लड़ा कर काशमीर मे खेला जा रहा है इस के विपरीत यह भी साफ़ है कि रूस, चीन और दूसरे कम्युनिस्ट देश अपने नए ढंग से अपने अपने देशों को आगे ले जाने के लिये अमन चाहते हैं वह जंग से बचना चाहते हैं अमरीका और इंगलैंड जैसी साम्राजी ताक़तें अपने छोटे से स्वार्थ में अन्धी होकर दुनिया को नए युद्ध की तरफ़ ढकेल देना चाहती हैं बार बार और तरह तरह से वह इसी धुन में हैं एशिया और अफ़रीक़ा शान्ति चाहते हैं शान्ति में ही हम सब की और दुनिया की बचत है इसलिये हम सब को सोच समझकर, हिम्मत के साथ मिलकर खड़ा होना चाहिये

इस निगाह से एशिया, यूरप और अफ़रीक़ा के शान्ति प्रेमी देशों के नेताओं का बार बार एक दूसरे के यहां जाना और एक दूसरे से मिलना बहुत ही शुभ लक्षण है. अभी हाल में नई दिल्ली के अन्दर भारत के प्रधान मन्त्री चीन के प्रधान मन्त्री और रूस के रक्षा मन्त्री का मिलना इस बात की सबसे बड़ी गारन्टी हो सकती है कि विश्व शान्ति के विरोधियों के मनसूबे पूरे न हो सकेंगे, बशर्ते कि हम इस दोस्ती से पूरा पूरा फ़ायदा उठावें हमें विश्वास है कि दुनिया का भविष्य इसी ओर जा रहा है

26-1-57. —सुन्दरलाल

قانونی حق کو استعمال کرکے اپنے دیش کو پھوٹ اور بربادی سے بچا لیا، اور شاید دنیا کے امن کو بچا لیا

عرب آزاد ہیں اور آزاد رہینگے ۔ کسی باہر کی طاقت کو اب اُن کی اس آزادی میں بٹہ لگانے کی اجازت نہیں دی جاسکتی ۔

بھوشیہ کے لئے گارنٹی

ساتھ ہی جیسا ہم کہہ چکے ہیں آج تک کی خبریں بتا رہی ہیں کہ دنیا کی شانتی اور آزادی کے لئے خطرہ ابھی گیا نہیں ہے ۔ ہم مانو ایکتا اور سب کی آزادی کے ماننے والے ہیں ایشیا کی سب قومیں مانو ایکتا اور سب کی آزادی کی ماننے والی ہیں ۔ اس معاملہ میں ہم پورب اور پچھم میں بھی فرق کرنا نہیں چاہتے ۔ ہمیں وشواس ہے کہ عام جنتا کسی بھی دیش کی لڑنا نہیں چاہتی لیکن امریکہ، انگلینڈ اور کچھ پچھمی دیشوں کے وہ پونجی پتی گروہ جو وہاں کی سرکاروں کو چلاتے ہیں اور جو دوسرے دیشوں کی دھن شکتی اور جن شکتی کو چوس کر ہی اپنے اپراکرتک ویبھو کو قائم رکھ سکتے ہیں، ایشیا اور افریقہ کے دیشوں کی اس آزادی کی باڑھ کو برداشت نہیں کرسکتے اُن کے ناپاک اور شرارت بھرے منصوبے نئے نئے روپ لیتے رہتے ہیں سویز پر انگریزوں اور فرانسیسیوں کا حملہ اور پچھم ایشیا میں خالی جگہوں کو بھرنے کی آئیسن ہاور کی تجویز انہیں منصوبوں کے دو روپ ہیں ۔ یہی کھیل بھارت اور پاکستان کو لڑا کر کشمیر میں کھیلا جارہا ہے ۔ اس کے ویپریت یہ بھی صاف ہے کہ روس، چین اور دوسرے کمیونسٹ دیش اپنے نئے ڈھنگ سے اپنے اپنے دیشوں کو آگے لے جانے کے لئے امن چاہتے ہیں وہ جنگ سے بچنا چاہتے ہیں امریکہ اور انگلینڈ جیسی سامراجی طاقتیں اپنے چھوٹے سے سوارتھ میں اندھی ہوکر دنیا کو نئے یدھ کی طرف ڈھکیل دینا چاہتی ہیں ۔ بار بار اور طرح طرح سے وہ اسی دھن میں ہیں ۔ ایشیا اور افریقہ شانتی چاہتے ہیں شانتی میں ہی ہم سب کی اور دنیا کی بچت ہے ۔ اس لئے ہم سب کو سوچ سمجھکر ہمت کے ساتھ ملکر کھڑا ہونا چاہئے

اس نگاہ سے ایشیا، یورپ اور افریقہ کے شانتی پریمی دیشوں کے نیتاؤں کا بار بار ایک دوسرے کے یہاں جانا اور ایک دوسرے سے ملنا بہت ہی شبھ لکشن ہے ابھی حال میں نئی دلی کے اندر بھارت کے پردھان منتری چین کے پردھان منتری اور روس کے رکشا منتری کا ملنا اس بات کی سب سے بڑی گارنٹی ہوسکتا ہے کہ وشو شانتی کے ورودھیوں کے منصوبے پورے نہیں ہوسکیں گے، بشرطیکہ ہم اس دوستی سے پورا پورا فائدہ اٹھاویں ۔ ہمیں وشواس ہے کہ دنیا کا بھوشیہ اسی اور جارہا ہے ۔

—سندر لال ۔ 26 1. '57

चीन में प्राणायाम यानी साँस के ज़रिये रोगों का इलाज

प्राणायाम का मतलब है साँस को रोकना और क़ाबू में करना. मुसलमान सूफ़ी इसे 'हब्से दम' कहते हैं. प्राणायाम तरह तरह से की जाती है. हिन्दुस्तान में इसका रिवाज पुराने समय से चला आ रहा है. तन्दुरुस्ती के लिये ख़ासकर फेफड़ों की सफ़ाई और मज़बूती के लिये यह बहुत ही अच्छी चीज़ है. हिन्दू योगी और मुसलमान सूफ़ी इसे अपने नफ़्स पर क़ाबू पाने के लिये भी काम मे लाते रहे हैं. चीन में भी इसका रिवाज पुराने समय से चला आ रहा है. नई चीनी सरकार इसे बहुत बढ़ावा दे रही है, और आज चीन मे इस के ज़रिये अनेक बीमारियों का इलाज हो रहा है. सितम्बर सन् 1956 के "चाईना पिक्टोरियल" में चीनी इलाज के इस तरीक़े पर श्री ल्युकुएल-चेन (Liu Kuel-Chen) का एक बड़ा सुन्दर लेख निकला है जिसमें उन्होने इस तरीक़े के बारे मे ख़ुद अपना तजरबा दुनिया के सामने रखा है. श्री ल्युकुएल-चेन यूरोपियन ढग के डाक्टर है और आजकल चीन के पेताइहो सैनेटोरियम (Peitaiho Sanatorium) के वाइस डाइरेक्टर हैं. वह लिखते हैं:—

"जब मैंने पहले पहल यह सुना कि साँस के ज़रिये भी रोगो का इलाज किया जा सकता है तो यह बात मेरे दिमाग़ में न उतर सकी. मैं यह नहीं समझ सकता था कि कोई गहरी बीमारी बिना दवाओं या इंजकशनो के कैसे जा सकती है. पर हुआ ठीक यही. मुझे ख़ुद अंतड़ियो में फोड़ा (Gastric ulcer) हुआ, फिर न्युरसथीनिया हो गया और होते होते तपेदिक़ हो गया. मैं आठ बरस बीमार रहा, और आख़िर जब अच्छा हुआ तो इसी साँस के तरीक़े से अच्छा हुआ."

"सन् 1948 के बसन्त की बात है, मैं उन दिनों चीन के होपे प्रान्त के दक्खिन मे काम करता था. वह इलाक़ा उस समय तक आज़ाद हो चुका था. मेरी तन्दुरुस्ती बहुत ख़राब थी. मेरी उमर सत्ताईस साल की थी और वज़न केवल एक मन एक सेर था. मैं इतना कमज़ोर हो गया था कि चल फिर तक न सकता था. मैंने एक दूसरे के बाद कई डाक्टरो का इलाज किया, कुछ पुराने ढग के चीनी वैद्यों का भी इलाज किया. पर किसी से कुछ फ़ायदा न हुआ. बीमारी बढ़ती ही चली गई. आख़िर मैंने सोचा कि मैं होपे प्रान्त के वेशीन ज़िले मे अपने गाँव में जाकर रहने लगूँ. ख़याल था कि शायद गाँव में पूरी तरह आराम करने से कुछ लाभ हो. मैं गाँव में जाके रहने लगा.

"गाँव में एक दिन ल्युतु-चाव नाम का एक बुड्ढा किसान मुझे मिला. उसने मुझसे कहा कि प्राणायाम के ज़रिये वह

چین میں پرانایام یعنی سانس کے ذریعہ لوگوں کا علاج

پرانایام کا مطلب ہے سانس کو روکنا اور قابو میں کرنا۔ مسلمان صوفی اِسے "حبس دم" کہتے ہیں۔ پرانایام طرح طرح سے کی جاتی ہے۔ ہندستان میں اِس کا رواج پرانے سمے سے چلا آرہا ہے۔ تندرستی کے لئے خاصکر پھیپھڑوں کی صفائی اور مضبوطی کے لئے یہ بہت ہی اچھی چیز ہے۔ ہندو یوگی اور مسلمان صوفی اِسے اپنے نفس پر قابو پانے کے لئے بھی کام میں لاتے رہے ہیں۔ چین میں بھی اِس کا رواج پرانے سمے سے چلا آرہا ہے۔ نئی چینی سرکار اِسے بہت بڑھاوا دے رہی ہے، اور آج چین میں اِس کے ذریعہ انیک بیماریوں کا علاج ہو رہا ہے۔ ستمبر سن 1956 کے "چائنا پکٹوریل" میں چینی علاج کے اِس طریقے پر شری لیوکوئیل - چین (Liu Kuel-Chen) کا ایک بڑا سندر لیکھ نکلا ہے جس میں اُنہوں نے اِس طریقے کے بارے میں خود اپنا تجربہ دُنیا کے سامنے رکھا ہے۔ شری لیوکوئیل - چین یوروپین ڈھنگ کے ڈاکٹر ہیں اور آجکل چین کے پیتائی ہو سینے ٹوریم (Peitaiho Sanatorium) کے وائس ڈائرکٹر ہیں۔ وہ لکھتے ہیں:—

"جب میں نے پہلے پہل یہ سنا کہ سانس کے ذریعہ بھی روگوں کا علاج کیا جاسکتا ہے تو یہ بات میرے دماغ میں نہ اُتر سکی۔ میں یہ نہیں سمجھ سکتا تھا کہ کوئی گہری بیماری بنا دواؤں یا اِنجکشنوں کے کیسے جاسکتی ہے۔ پر ہوا ٹھیک یہی۔ مجھے خود انتڑیوں میں پھوڑا (Gastric Ulcer) ہوا، پھر نیورستھینیا ہوگیا اور ہوتے ہوتے تپہ دق ہوگیا۔ میں آٹھ برس بیمار رہا، اور آخر جب اچھا ہوا تو اِسی سانس کے طریقے سے اچھا ہوا۔

"سن 1948 کے بسنت کی بات ہے، میں اُن دنوں چین کے ہوپے پرانت کے دکھن میں کام کرتا تھا۔ وہ علاقہ اُس سمے تک آزاد ہوچکا تھا۔ میری تندرستی بہت خراب تھی۔ میری عمر ستائیس سال کی تھی اور وزن کیول ایک من ایک سیر تھا۔ میں اتنا کمزور ہوگیا تھا کہ چل پھر تک نہ سکتا تھا۔ میں نے ایک دوسرے کے بعد کئی ڈاکٹروں کا علاج کیا۔ کچھ پرانے ڈھنگ کے چینی ویدیوں کا بھی علاج کیا۔ پر کسی سے کچھ فائدہ نہ ہوا۔ بیماری بڑھتی ہی چلی گئی۔ آخر میں نے سوچا کہ میں ہوپے پرانت کے ویشن ضلع میں اپنے گاؤں میں جاکر رہنے لگوں۔ خیال تھا کہ شاید گاؤں میں پوری طرح آرام کرنے سے کچھ لابھ ہو۔ میں گاؤں میں جاکے رہنے لگا۔

"گاؤں میں ایک دن لیو تو - چاؤ نام کا ایک بڈھا کسان مجھے ملا۔ اُس نے مجھ سے کہا کہ پرانایام کے ذریعہ وہ

मुझे अच्छा कर देगा. उसने बताया कि इलाज का यह एक पुराना तरीक़ा है जो उस ज़माने से चला आ रहा है जब मिंग राज कुल के लोग चीन पर शासन करते थे. नान कूंग ज़िले के हाओ के वू नाम के एक आदमी ने इसे चीन में शुरू किया था. उस बुड्ढे किसान ने मुझे सलाह दी कि मैं एक छोटी सी कोठरी में चुप चाप पड़ा रहूँ और दिन में कई बार ख़ास ख़ास समयों पर बैठकर या लेटकर, कभी एक तरह से और कभी दूसरी तरह से, लम्बे साँस लूँ. साँस लेने का ढंग उसने मुझे सिखा दिया और कहा कि इस तरह प्राणायाम करते समय और सब तरह के विचार अपने दिमाग़ से निकाल कर बाहर कर देना चाहिये.

"उस बूढ़े किसान ल्यु के कहने के अनुसार और उस की देख रेख में मैं ठीक एक सौ दिन तक ऐसा ही करता रहा. एक सौ दिन के बाद मैं यह देखकर चकित रह गया कि मेरा अंतड़ियों का फोड़ा (Gastric ulcer) और तपेदिक़ (Tuberculosis) बिलकुल चले गए और न्युरसथीनियां में भी मुझे पहले से साफ़ .फायदा दिखाई देने लगा.

"जब मैंने फिर जाकर काम करना शुरू कर दिया तो मेरे दोस्त और साथी मुझे फिर से तन्दुरुस्त देखकर हैरान रह गए. उन्हें यह विश्वास न होता था कि इतने दिनों का और इस तरह का बीमार इतनी जल्दी अच्छा हो सकता है. थोड़े दिनों में यह ख़बर स्थानीय सरकार तक पहुँची. सरकार ने मुझे इसी काम के लिये नियुक्त कर दिया कि मैं उसी बूढ़े किसान ल्यु के पास जाकर उस से इलाज का यह तरीक़ा पूरी तरह सीख लूँ.

"मैंने जाकर प्राणायाम के वह सब तरीक़े उस से सीख लिये. होपे प्रान्त के दक्खिनी और पूर्वी इलाक़ों में हमने इस तरीक़े से रोगियों का इलाज करना शुरू किया. इस इलाज में हम रोगियों के खान पान और व्यायाम की तरफ़ ख़ास ध्यान देते थे. उनकी मदद से हम हर रोगी का बाक़ायदा इम्तहान करते थे, बीमारी का पता लगाते थे और रोगी का ब्योरेवार रजिस्टर रखते थे. आजतक अंतड़ियों के फोड़ों (Gastric & Duodenal ulcers) के 115 मरीज़ों का हम इस तरीक़े के इलाज कर चुके हैं, जिन में से 103 बिलकुल अच्छे हो गए. मिसाल के तौर पर वे चे-चे नाम का एक मरीज़ हमारे पास आया. बीस बरस से उसकी अंतड़ियों में फोड़ा (Duodenal ulcer) था. उसके पेट और कमर में सख़्त दर्द रहता था जिस से वह तड़पता रहता था. हमने दो महीने से कुछ ऊपर उस से प्राणायाम कराया. इस अरसे के अन्दर उसके रोग की सब अलामतें जाती रहीं, यहां तक कि उसका वज़न भी बारह सेर बढ़ गया. कई तरह की पुरानी (chronic) बीमारियों

مجھے اچھا کردے گا. اُس نے بتایا کہ علاج کا یہ ایک پرانا طریقہ ھے جو اُس زمانے سے چلا آرھا ھے جب منگ راج کل کے لوگ چین پر شاسن کرتے تھے. نان کنگ ضلع کے ھاؤ کے وو نام کے ایک آدمی نے اِسے چین میں شروع کیا تھا. اُس بڈھے کسان نے مجھے صلاح دی کہ میں ایک چھوٹی سی کوٹھری میں چپ چاپ پڑا رھوں اور دن میں کئی بار خاص خاص سمیوں پر بیٹھکر یا لیٹ کر، کبھی ایک طرح سے اور کبھی دوسری طرح سے، لمبے سانس لوں. سانس لینے کا ڈھنگ اُس نے مجھے سکھا دیا اور کہا کہ اِس طرح پرانایام کرتے سمے اور سب طرح کے وچار اپنے دماغ سے نکال کر باھر کردینے چاھئیں.

"اُس بوڑھے کسان لیو کے کہنے کے انوسار اور اُس کی دیکھ ریکھ میں میں ٹھیک ایک سو دن تک ایسا ھی کرتا رھا. ایک سو دن کے بعد میں یہ دیکھکر چکت رہ گیا کہ میرا آنتڑیوں کا پھوڑا (Gastric Ulcer) اور تپ دق (Tuberculosis) بالکل چلے گئے اور نیورستھینیا میں بھی مجھے پہلے سے صاف فائدہ دکھائی دینے لگا.

"جب میں نے پھر جاکر کام کرنا شروع کردیا تو میرے دوست اور ساتھی مجھے پھر سے تندرست دیکھکر حیران رہ گئے. اُنھیں یہ وشواس نہ ھوتا تھا کہ کوئی اِتنے دنوں کا اور اِس طرح کا بیمار اِتنی جلدی اچھا ھوسکتا ھے. تھوڑے دنوں میں یہ خبر استھانیہ سرکار تک پہونچی. سرکار نے مجھے اِسی کام کے لئے نیکت کردیا کہ میں اُسی بوڑھے کسان لیو کے پاس جاکر اُس سے علاج کا یہ طریقہ پوری طرح سیکھ لوں.

"میں نے جاکر پرانایام کے وہ سب طریقے اُس سے سیکھ لئے. ھوپے پرانت کے دکھنی اور پوربی علاقوں میں ھم نے اِس طریقے سے روگیوں کا علاج کرنا شروع کیا. اِس علاج میں ھم روگیوں کے کھان پان اور ویایام کی طرف خاص دھیان دیتے تھے. کئی پچھمی شکشا پائے ھوئے چینی ڈاکٹر ھمیں مل گئے. اُن کی مدد سے ھم ھر روگی کا باضابطہ امتحان کرتے تھے، بیماری کا پتہ لگاتے تھے. اور ھر روگی کا بیوریوار رجسٹر رکھتے تھے. آج تک آنتڑیوں کے پھوڑوں (Gastric and Duodenal Ulcers) کے 115 مریضوں کا ھم اِس طریقے سے علاج کرچکے ھیں، جن میں سے 103 بالکل اچھے ھوگئے. مثال کے طور پر وے - چے نام کا ایک مریض ھمارے پاس آیا. بیس برس سے اُس کی آنتڑیوں میں پھوڑا (Duodenal Ulcer) تھا. اُس کے پیٹ اور کمر میں سخت درد رھتا تھا جس سے وہ تڑپتا رھتا تھا. ھم نے دو مہینے سے کچھ اوپر اُس سے پرانایام کرائی. اِس عرصے کے اندر اس کے روگ کی سب علامتیں جاتی رھیں، یہاں تک کہ اُس کا وزن بھی بارہ سیر بڑھ گیا. کئی طرح کی پرانی (chronic) بیماریوں

के इलाज में जैसे पुरानी बदहज़मी, दबा हुआ तपेदिक़ (Inactive Tuberculosis), .खून का दबाव (Low or High Blood Pressure, आम कमज़ोरी और न्युरस्थीनिया, इन सब बीमारियों में प्राणायाम से बहुत ही अच्छे नतीजे निकले और रोग बिलकुल जाता रहा.

"अभी हम पूरी तरह यह नहीं बता सकते कि साँस लेने के इन तरीक़ों से किस किस बीमारी पर कैसे कैसे असर पड़ता है और क्यों पड़ता है, हमें जितना तजरबा अब तक हुआ है उस से हम यह जानते हैं कि इस इलाज से एक तरफ़ तो दिमाग़ (Ceribrum) को ठंडक और आराम मिलता है और दूसरी तरफ़ पेट के अन्दर की चीज़ें मेदा, जिगर, अंतड़िया वग़ैरह (Viscera), अधिक तेज़ी से और अधिक अच्छी तरह काम करने लगते हैं. इस इलाज से वह सब .फ़ायदा भी होता है जो सुला देने से होता है और वह .फ़ायदा भी होता है जो दवाओ वग़ैरह से होता है रोगी एक शान्त वातावरण में, आँखें आधी बन्द किये हुए, शान्ति के साथ बैठ जाता है या लेट जाता है. वह धीरे-धीरे और एक .खास ढङ्ग से नाक से साँस लेता है इससे उसके दिमाग की नसों को आराम पहुँचता है और सारे शरीर की नसें ठीक काम करने लगती हैं गहरी और लम्बी साँस लेने से भोजन के पचने और हज़म होने में बड़ी मदद मिलती है इससे रोगी जलदी अच्छा होता है और शरीर के सब अङ्ग ठीक-ठीक काम करने लगते हैं.

"इस पुराने इलाज के तरीके का प्रचार करने के लिये और उसे फैलाने के लिये हमने तीन ट्रेनिंग क्लासें खोल दी हैं इन क्लासों मे 130 से ऊपर होशियार डाक्टर इस नए तरीक़ों को सीख रहे हैं इन मे बहुत से पच्छिमी शिक्षा पाए हुए डाक्टर हैं और कुछ प्राचीन चीनी तरीक़ के वैद्य हैं. आजकल होपे प्रान्त ताँग शान नगर मे एक नया सैनेटोरियम बन रहा है जिस मे केवल प्राणायाम यानी साँस के तरीक़े से ही सब रोगों का इलाज किया जावेगा"

हमारे देश मे भी प्राणायाम का तरीक़ा हज़ारो बरस का पुराना तरीक़ा है और उसकी बहुत सी किसमे हैं. दक्षिण के स्वामी कुवलयानन्द जैसे कुछ विद्वान जो पच्छिम के विज्ञान से भी अच्छी तरह परिचित हैं, इन तरीक़ों से अनेक रोगों का इलाज भी करते हैं हमने इस तरह के इलाज से अनेक ऐसे रोगियों को अच्छे होते देखा है जिन का रोग दूसरे तरीक़ों से क़ाबू मे नहीं आता था. पेट, सर, और फेफड़ों की बीमारियों में .खास तौर पर हमने प्राणायाम के चमत्कार को देखा है. पर हमें दुख है कि हमारी केन्द्रीय सरकार की स्वास्थ्य मन्त्री और उनका अमला इलाज के मामले में पच्छिमी तरीक़ों के अनुचित प्रेम में

کے علاج میں جیسے پرانی بدہضمی، دبا ہوا تپ دق (Inactive Tuberculosis) خون کا دباؤ (Low or High Blood Pressure) عام کمزوری اور نیورستھینیا، ان سب بیماریوں میں پرانایام سے بہت ہی اچھے نتیجے نکلے اور روگ بالکل جاتا رہا۔

"ابھی ہم پوری طرح نہ نہیں بتا سکتے کہ سانس لینے کے ان طریقوں سے کس کس بیماری پر کیسے کیسے اثر پڑتا ہے اور کیوں پڑتا ہے۔ ہمیں جتنا تجربہ اب تک ہوا ہے اُس سے ہم یہ جانتے ہیں کہ اس علاج سے ایک طرف تو دماغ (Ceribrum) کو ٹھنڈک اور آرام ملتا ہے اور دوسری طرف پیٹ کے اندر کی چیزیں معدہ، جگر، انتڑیاں وغیرہ (Viscera) ادھک تیزی سے اور ادھک اچھی طرح کام کرنے لگتی ہیں۔ اس علاج سے وہ سب فائدہ بھی ہوتا ہے جو سلا دینے سے ہوتا ہے اور وہ فائدہ بھی ہوتا ہے جو دواؤں وغیرہ سے ہوتا ہے روگی ایک شانت واتاورن میں، آنکھیں آدھی بند کئے ہوئے، شانتی کے ساتھ بیٹھ جاتا ہے یا لیٹ جاتا ہے۔ وہ دھیرے دھیرے اور ایک خاص ڈھنگ سے ناک سے سانس لیتا ہے۔ اس سے اُس کے دماغ کی نسوں کو آرام پہونچتا ہے اور سارے شریر کی نسیں پھر سے ٹھیک کام کرنے لگتی ہیں۔ گہری اور لمبی سانس لینے سے بھوجن کے پچنے اور ہضم ہونے میں بڑی مدد ملتی ہے۔ اِس سے روگی جلدی اچھا ہوتا ہے اور شریر کے سب انگ ٹھیک ٹھیک کام کرنے لگتے ہیں۔

"اس پرانے علاج کے طریقے کا پرچار کرنے کے لئے اور اُسے پھیلانے کے لئے ہم نے تین ٹریننگ کلاسیں کھول دی ہیں۔ ان کلاسوں میں 130 سے اوپر ہوشیار ڈاکٹر اس نئے طریقے کو سیکھ رہے ہیں۔ ان میں بہت سے پچھمی شکشا پائے ہوئے ڈاکٹر ہیں اور کچھ پراچین چینی طریقے کے وید ہیں۔ آجکل ہوپے پرانت کے تانگ شان نگر میں ایک نیا سینے ٹوریم بن رہا ہے جس میں کیول پرانایام یعنی سانس کے طریقے سے ہی سب روگوں کا علاج کیا جاوےگا۔"

ہمارے دیش میں بھی پرانایام کا طریقہ ہزاروں برس کا پرانا طریقہ ہے اور اُس کی بہت سی قسمیں ہیں۔ دکھن کے سوامی کوولیانند جیسے کچھ ودوان جو پچھم کے وگیان سے بھی اچھی طرح پریچت ہیں، ان طریقوں سے انیک روگوں کا علاج بھی کرتے ہیں۔ ہم نے اس طرح کے علاج سے انیک ایسے روگیوں کو اچھے ہوتے دیکھا ہے جن کا روگ دوسرے طریقوں سے قابو میں نہیں آتا تھا۔ پیٹ، سر، اور پھیپھڑوں کی بیماریوں میں خاص طور پر ہم نے پرانایام کے چمتکار کو دیکھا ہے۔ پر ہمیں دکھ ہے کہ ہماری کیندریہ سرکار کے سواستھ منتری اور اُن کا عملہ علاج کے معاملے میں پچھمی طریقوں کے انوچت پریم

[illegible]

...इतने डूबे हुए हैं कि उन्हें इन अपने तरीकों में कोई भलाई दिखाई ही नहीं देती. इन मामलों में यदि हमारी सरकार नए चीन से कुछ सबक ले सके तो देश का करोड़ों रुपया मंहगे पश्चिमी इलाज में नष्ट होने से बच सकता है और लाखों देशवासियों का स्वास्थ्य आज कल से कहीं अच्छा रह सकता है.

31. 1. 57. सुन्दरलाल

[illegible]

میں اتنے ڈوبے ہوئے ہیں کہ انہیں ان اپنے طریقوں میں کوئی بھلائی دکھائی ہی نہیں دیتی ۔ ان معاملوں میں یدی ہماری سرکار نئے چین سے کچھ سبق لے سکے تو دیش کا کروڑوں روپیہ مہنگے پچھمی علاج میں نشٹ ہونے سے بچ سکتا ہے اور لاکھوں دیش واسیوں کا سواستھیہ آجکل سے کہیں اچھا رہ سکتا ہے ۔

—سندر لال ۔ 31 . 1 . '57

सांस्कृतिक साहित्य

سانسکرتک ساہتیہ

हजरत मोहम्मद और इसलाम

लेखक—पण्डित सुन्दरलाल, मूल्य—तीन रुपया

इसलाम के पैगम्बर के सम्बन्ध में भारतीय भाषाओं में इस से सुन्दर कोई दूसरी पुस्तक नहीं

हजरत ईसा और ईसाई धर्म

लेखक—पण्डित सुन्दरलाल, मूल्य—डेढ़ रुपया

महात्मा जरथुस्त्र और ईरानी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पाँडे, कीमत—दो रुपया

यहूदी धर्म और सामी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पाँडे, कीमत—दो रुपया

प्राचीन मिस्र की सभ्यता और संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पाँडे, कीमत—दो रुपया

सुमेर बाबुल और असुरिया की प्राचीन संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पाँडे, कीमत—दो रुपया

प्राचीन यूनानी सभ्यता और संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पाँडे, कीमत—दो रुपया

गंगा से गोमती तक

(प्रगतिशील कहानी संग्रह)

लेखक—श्री मुजीब रिजवी, कीमत—दो रुपया

आग और आँसू

(भावपूर्ण सामाजिक कहानियाँ)

लेखक—डाक्टर अख्तर हुसैन रायपुरी, कीमत—डेढ़ रुपया

कुरान और धार्मिक मतभेद

लेखक—मौलाना अबुलकलाम आजाद, कीमत—डेढ़ रुपया

झंकार

(प्रगतिशील कविताओं का संग्रह)

लेखक—रघुपति सहाय फिराक़, क़ीमत—तीन रुपया

حضرت محمد اور اسلام

لیکھک—پنڈت سندر لال، مولیہ—تین روپیہ

اسلام کے پیغمبر کے سمبندھ میں بھارتیہ بھاشاؤں میں اس سے سندر کوئی دوسری پستک نہیں

حضرت عیسیٰ اور عیسائی دھرم

لیکھک—پنڈت سندر لال، مولیہ—ڈیڑھ روپیہ

مہاتما زرتشت اور ایرانی سنسکرتی

لیکھک—وشومبھر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

یہودی دھرم اور سامی سنسکرتی

لیکھک—وشومبھر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

پراچین مصر کی سبھیتا اور سنسکرتی

لیکھک—وشومبھر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

سمیر، بابل اور اسوریا کی پراچین سنسکرتی

لیکھک—وشومبھر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

پراچین یونانی سبھیتا اور سنسکرتی

لیکھک—وشومبھر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

گنگا سے گومتی تک

(پرگتی شیل کہانی سنگرہ)

لیکھک—شری مجیب رضوی، قیمت—دو روپیہ

آگ اور آنسو

(بھاؤپورن سماجک کہانیاں)

لیکھک—ڈاکٹر اختر حسین رائے پوری، قیمت—ڈیڑھ روپیہ

قرآن اور دھارمک مت بھید

لیکھک—مولانا ابوالکلام آزاد، قیمت—ڈیڑھ روپیہ

جھنکار

(پرگتی شیل کویتاؤں کا سنگرہ)

لیکھک—رگھوپتی سہائے فراق، قیمت—تین روپیہ

मिलने का पता ملنے کا پتہ

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद 145 مٹھی گنج، الہ آباد

हिन्दी घर

कलचर पर हर तरह की किताबें मिलने का एक बड़ा केन्द्र—पाठक हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी की अपनी मन-पसन्द किताबों के लिये हमें लिखें।

हमारी नई किताबें

महात्मा गान्धी की वसीयत

(हिन्दी और उर्दू में)
लेखक—गान्धीवाद के माने जाने
विद्वान : स्व० श्री मंजर अली सोख्ता
सफ़े 225, क़ीमत दो रुपया

— o —

गान्धी बाबा

(बच्चों के लिये बहुत दिलचस्प किताब)
लेखिका—क़ुदसिया ज़ैदी
भूमिका—पण्डित जवाहरलाल नेहरू
मोटा काग़ज़, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तसवीरें
दाम दो रुपया

— : o : —

पंडित सुन्दरलाल जी की लिखी किताबें

गीता और क़ुरान

275 सफ़े, दाम ढाई रुपया

हिन्दू मुसलिम एकता

100 सफ़े, दाम बारह आने

महात्मा गान्धी के बलिदान से सबक़

क़ीमत बारह आने

पंजाब हमें क्या सिखाता है

क़ीमत चार आने

बंगाल और उससे सबक़

क़ीमत दो आने

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी

145 मुट्ठीगंज इलाहाबाद

هندی گھر

کلچر پر ھر طرح کی کتابیں ملنے کا ایک بڑا کیندر—پاٹھک هندی اُردو، انگریزی کی من پسند کتابوں کے لئے همیں لکھیں۔

هماری نئی کتابیں

مهاتما گاندھی کی وصیت

(هندی اور اُردو میں)
لیکھک—گاندھی واد کے مانے جانے
ودوان: سو گیہ شری منظر علی سوختہ
صفحے 225، قیمت دو روپیہ

—:o.—

گاندھی بابا

(بچوں کے لئے بہت دلچسپ کتاب)
لیکھکا—قدسیہ زیدی
بھومکا—پنڈت جواھر لال نہرو
موٹا کاغذ، موٹا ٹائپ، بہت سی رنگین تصویریں
دام دو روپیہ

—.o.—

پنڈت سندرلال جی کی لکھی کتابیں

گیتا اور قران

275 صفحے، دام ڈھائی روپیہ

هندو مسلم ایکتا

100 صفحے دام بارہ آنے

مهاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

قیمت بارہ آنے

پنجاب همیں کیا سکھاتا هے

قیمت چار آنے

بنگال اور اُس سے سبق

قیمت دو آنے۔

هندستانی کلچر سوسائٹی

145، مٹھی گنج الہ آباد

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Mutthiganj, Allahabad.

نیا ہند

इस नम्बर के ख़ास लेख **اِس نمبر کے خاص لیکھ**

देश किधर
—पंडित सुन्दरलाल

دیش کدھر
—پنڈت سندرلال

अरब देश
—डाक्टर सैयद महमूद

عرب دیش
—ڈاکٹر سید محمود

नीले पंख (कविता)
—श्री 'सलाम मछलीशहरी

نیلے پنکھ (کویتا)
—شری سلام مچھلی شہری

इसके अलावा
देस बिदेस के मसलों पर हमारी राय में ज़रूरी सम्पादकी नोट

اسکے علاوہ
دیس بدیس کے مسئلوں پر ہماری رائے میں ضروری سمپادکی نوٹ

...नी कल्चर सोसाइटी, इलाहाबाद
ہندستانی کلچر سوسائٹی الہ آباد

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-
Foreign Rs. 10/-
Single Copy As. /10/- only

Can be had from—

Manager, NAYA HIND

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.

नया हिन्द نیا ہند

जिल्द 23 جلد नम्बर 3 نمبر

मार्च 1957 مارچ

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद 145، مٹھی گنج، الہ آباد

मार्च 1957 مارچ

अलग अलग मतों का मेल

डाक्टर भगवान दास

अलग अलग लोग अलग अलग तरह से सोचते हैं. अकसर इनकी अलग अलग राएं एक दूसरे के खिलाफ़ भी मालूम होती हैं पर जो उसूल हमने पिछले लेखों में बयान किये हैं उन्हें सामने रखकर देखा जावे तो इन सब तरह तरह के विचारों में भी एकता और मेल दिखाई दे सकता है. अपनी अपनी राय की बाबत लोग अकसर कहते हैं कि—'केवल यह राय ही ठीक है.' जरूरत इस बात की है कि इनके 'केवल ही' की जगह हम 'भी' लगादें. कहना चाहिये—'यह राय भी ठीक है.' और फिर हमें यह समझाने की कोशिश करनी चाहिये कि कौन सी राय किन अर्थों में, किन हालतों में और किन सीमाओं के अन्दर ठीक है.

मिसाल के तौर पर एक ईश्वर की पूजा और अनेक देवी देवताओं की पूजा इन दो बातों ही को लीजिये. ईश्वर तो एक ही है और वही सब का ईश्वर अल्लाह है. पर इस दुनिया जहान में अनगिनत तरह की हस्तियाँ हैं. उनके अनन्त छोटे बड़े दरजे हैं, कुछ इन्सान से नीचे और कुछ इन्सान से भी ऊपर. इन्ही दर्जों के जरिये रूह यानी आत्मा का अनन्त विकास (इरतक़ा) चलता रहता है. इसका क़ुदरती नतीजा यह है कि जो रूहें, बहुत ऊँचे दर्जे की और बड़ी शक्तिशाली हैं, वह अलग अलग दुनियाओं या अलग अलग सौर जगतों (निज़ामे शम्सियों) के लिये अलग अलग देवताओं का काम दे सकती हैं. यानी अलग अलग ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सरस्वती, लक्ष्मी और गौरी हो सकती हैं, इनमें भी ऊँचे नीचे दर्जे हो सकते हैं. हिन्दु पुराणों मे इन दर्जों की चर्चा है. ऐसे ही दूसरे धर्मों मे भी फ़रिश्तों, मलायक, एनजिल, आर्च एनजिल, इलोहिम, इलाहा वग़ैरह की चर्चा आती है. मामूली छोटी और मातहत रूहों के लिये वह पूजा की चीज़ भी हो सकते हैं. जो लोग यह समझते हैं कि इस दुनिया को किसी ख़ालिक़ या सृष्टा ने इस तरह बनाया है जिस तर हकुम्हार मट्टी के बरतन बनाता है. उनका विचार भी इस तरह एक हद तक ठीक हो सकता है. यही दुनिया के आम लोगों का विचार है.

इसके अलावा चूँकि "मैं" और "ग़ैर-मैं" को, यानी रूह और मादे को, हम एक दूसरे से अलग नहीं कर सकते, इसलिये मोटे तौर पर यह भी कहा जा सकता है कि बिलकुल बेजान मादा नाम की कोई चीज़ है ही नहीं. हम कह सकते हैं कि "यह सारा विशाल विश्व एक इकाई है, प्रकृति यानी क़ुदरत इसका शरीर है और ईश्वर अल्लाह

الگ الگ متوں کا میل

ڈاکٹر بھگوان داس

الگ الگ لوگ الگ الگ طرح سے سوچتے ہیں ۔ اکثر اُن کی الگ الگ رائیں ایک دوسرے کے خلاف بھی معلوم ہوتی ہیں ۔ پر جو اصول ہم نے پچھلے لیکھوں میں بیان کئے ہیں اُنہیں سامنے رکھ کر دیکھا جاوے تو اِن سب طرح طرح کے وچاروں میں بھی ایکتا اور میل دکھائی دے سکتا ہے۔ اپنی اپنی رائے کی بابت لوگ اکثر کہتے ہیں کہ—'کیول یہ رائے ہی ٹھیک ہے ۔' ضرورت اِس بات کی ہے کہ اِن کے 'کیول ہی' کی جگہ ہم 'بھی' لگادیں ۔ کہنا چاہئے - 'یہ رائے بھی ٹھیک ہے ۔' اور پھر ہمیں یہ سمجھانے کی کوشش کرنی چاہئے کہ کون سی رائے کن ارتھوں میں، کن حالتوں میں اور کن سیماؤں کے اندر ٹھیک ہے ۔

مثال کے طور پر ایک ایشور کی پوجا اور انیک دیوی دیوتاؤں کی پوجا اِن دو باتوں ہی کو لیجئے۔ ایشور تو ایک ہی ہے اور وہی سب کا ایشور اللہ ہے ۔ پر اِس دنیا جہان میں انگنت طرح کی ہستیاں ہیں ۔ اُن کے اننت چھوٹے بڑے درجے ہیں، کچھ انسان سے نیچے اور کچھ انسان سے بھی اُوپر ۔ اِنہیں درجوں کے ذریعہ روح یعنی آتما کا اننت وکاس (ارتقا) چلتا رہتا ہے ۔ اِس کا قدرتی نتیجہ یہ ہے کہ جو روحیں بہت اُونچے درجے کی اور بڑی شکتی‌شالی ہیں وہ الگ الگ دیوتاؤں یا الگ الگ سور جگتوں (نظام شمسیوں) کے لئے الگ الگ دیوتاؤں کا کام دے سکتی ہیں ۔ یعنی الگ الگ برھما، وشنو، شو، سرسوتی، لکشمی اور گوری ہوسکتی ہیں، اِن میں بھی اُونچے نیچے درجے ہوسکتے ہیں ۔ ہندو پرانوں میں اِن درجوں کی چرچا ہے ۔ ایسے ہی دوسرے دھرموں میں بھی فرشتوں، ملایک، انجل، آرچ انجل، اِلوہم، اِلاھا وغیرہ کی چرچا آتی ہے ۔ معمولی چھوٹی اور ماتحت روحوں کے لئے وہ پوجا کی چیز بھی ہوسکتے ہیں ۔ جو لوگ یہ سمجھتے ہیں کہ اِس دنیا کو کسی خالق یا سرشٹا نے اِس طرح بنایا ہے جس طرح کمہار مٹی کے برتن بناتا ہے اُن کا وچار بھی اِس طرح ایک حد تک ٹھیک ہوسکتا ہے ۔ یہی دنیا کے عام لوگوں کا وچار ہے ۔

اِس کے علاوہ چونکہ "میں" اور "غیر میں" کو، یعنی روح اور مادے کو، ہم ایک دوسرے سے الگ نہیں کرسکتے، اِس لئے موٹے طور پر یہ بھی کہا جاسکتا ہے کہ بالکل بےجان مادہ نام کی کوئی چیز ہے ہی نہیں۔ ہم کہہ سکتے ہیں کہ "یہ سارا وشال وشو ایک اِکائی ہے، پرکرتی یعنی قدرت اِس کا شریر ہے اور ایشور اللہ

इसकी आत्मा है." इन अर्थों में यह सिद्धान्त भी ठीक हो जाता है कि यह सारा विश्व ही ईश्वर है, हर चीज़ ईश्वर है. इसी को अंगरेज़ी में 'पैंथीइज्म' कहते हैं.

साइन्स जिस तरह इस सारे विश्व का पैदा होना मानती है उसके भी कई रूप हैं एक रूप यह है कि हर चीज़ हर समय बदलती रहती है. दूसरा रूप यह है कि हर चीज़ का विकास होता रहता है और हर समय उसकी नए सिरे से रचना होती रहती है. इसी तरह के और विचार भी हैं जैसे यह कि—'सूरज या आसमान के नीचे कोई चीज़ नई नहीं है.' 'यह दुनिया नित्य नई है, यह कभी पुरानी नहीं होती,' 'कोई चीज़ दोबारा नहीं होती.' ऐसे ही दुनिया के अकस्मात् यानी इत्तफ़ाक़िया बन जाने का सिद्धान्त, और भाग्य यानी क़िस्मत का सिद्धान्त वग़ैरह-वग़ैरह. वह अद्वैत यानी वहदतुलवजूद जो किसी दूसरी चीज़ के वजूद को ही नहीं मानता. और जिसका हमने पहले के लेखों में ज़िक्र किया है, इन सब तरह तरह के अलग अलग विचारों को मिलाकर चलता है. आत्मा ही इस दुनिया को चलाता है इसमे रूह ही रूह है और माद्दा ही माद्दा है दोनों सिद्धान्त आकर मिल गए. इन्हीं दोनो अलग अलग सिद्धान्तो को अंगरेज़ी में 'वाइटलइज्म' और 'मीकैनिज्म' कहते हैं इन्हीं को 'हार्मिज्म' और 'बिहेवियरइज्म' भी कहते हैं.

दुनिया मे जितने तरह तरह के सिद्धान्त हैं उनमें से हर एक के दो सिरे होते हैं. हर नदी के दो किनारे होते हैं हर सवाल के दो पहलू होते है हर घटना और हर काम के दो रुख होते हैं हर पहलू या रुख केवल आधी सचाई होता है. पूरी सचाई सब पहलुओं को मिलाकर बनती है. इसलाम मे कहा गया है—"ख़ैरुलउमूर औसतहा" यानी सब कामों की भलाई या सचाई औसत यानी बीच ही मे होती है. जैन धर्म मे इसी को 'अनेकान्तवाद' या 'स्याद्-वाद' कहते हैं. थोड़ा सा सोचने से हमे पता चल सकता है कि दुनिया मे जितने वाद या सम्प्रदाय है सब दो दो के जोड़ो मे चलते हैं. यह सब सिद्धान्त शुरू की दुई यानी रूह और माद्दा, आत्म वाद और प्रकृति-वाद के ही अलग अलग रूप हैं. हर सिद्धान्त एक ख़ास पहलू पर ज़ोर दे देता है और उसे बढ़ा चढ़ाकर दुनिया के सामने रख देता है. इसी लिये दुनिया के विचारक, लेखक, उपदेशक, मुल्ला, पादरी, आचार्य और विद्वान सदा आपस मे लड़ते झगड़ते रहते हैं बेचारी जनता हैरान होकर उनकी तरफ़ देखती है, और यह नहीं समझ पाती कि क्या मानना चाहिये, क्या करना चाहिये और किसके पीछे चलना चाहिये.

फिर भी हम सब परस्पर विरोधी मतों को एक दूसरे के साथ मिला सकते हैं और इन सब बहसों और खींचातानी को कम कर सकते हैं. यदि हम "आत्मा" और

اِس کی آتما ہے." ان ارتھوں میں یہ سدھانت بھی ٹھیک ہوجاتا ہے کہ یہ سارا وشو ہی ایشور ہے' ہر چیز ایشور ہے. اسی کو انگریزی میں 'پینتھی‌اِزم' کہتے ہیں.

سائنس جس طرح اِس سارے وشو کا پیدا ہونا مانتی ہے اُس کے بھی کئی روپ ہیں . ایک روپ یہ ہے کہ—ہر چیز ہر سمے بدلتی رہتی ہے . دوسرا روپ یہ ہے کہ ہر چیز کا وکاس ہوتا رہتا ہے اور ہر سمے اُس کی نئے سرے سے رچنا ہوتی رہتی ہے . اِسی طرح کے اور وچار بھی ہیں' جیسے یہ کہ—'سورج یا آسمان کے نیچے کوئی چیز نہیں ہے' 'یہ دنیا نتیہ نئی ہے' یہ کبھی پرانی نہیں ہوتی' کوئی چیز دوبارہ نہیں ہوتی .' ایسے ہی دنیا کے اکسمات یعنی اِتفاقیہ بن جانے کا سدھانت' اور بھاگیہ یعنی قسمت کا سدھانت' وغیرہ وغیرہ . وہ ادوَیت یعنی وحدت‌الوجود جو کسی دوسری چیز کے وجود کو ہی نہیں مانتا' اور جس کا ہم نے پہلے کے لیکھوں میں ذکر کیا ہے' اِن سب طرح طرح کے الگ الگ وچاروں کو ملاکر چلتا ہے . آتما ہی اِس دنیا کو چلاتا ہے . اِس میں روح ہی روح ہے اور مادہ ہی مادہ ہے یہ دونوں سدھانت آکر مل گئے . اِنہیں دونوں الگ الگ سدھانتوں کو انگریزی میں 'وائیٹلزم' اور 'میکینزم' کہتے ہیں . اِنہیں کو 'ہارمزم' اور 'بیہیویرازم' بھی کہتے ہیں .

دنیا میں جتنے طرح طرح کے سدھانت ہیں اُن میں سے ہر ایک کے دو سرے ہوتے ہیں. ہر ندی کے دو کنارے ہوتے ہیں ہر سوال کے دو پہلو ہوتے ہیں . ہر گھٹنا اور ہر کام کے دو رخ ہوتے ہیں . ہر پہلو یا رخ کیول آدھی سچائی ہوتا ہے . پوری سچائی سب پہلوؤں کو ملاکر بنتی ہے . اسلام میں کہا گیا ہے—"خیرالامور اوسطہا" یعنی سب کاموں کی بھلائی یا سچائی اوسط یعنی بیچ ہی میں ہوتی ہے . جین دھرم میں اسی کو 'انیکانت‌واد' یا 'سیاد واد' کہتے ہیں . تھوڑا سا سوچنے سے ہمیں پتہ چل سکتا ہے کہ دنیا میں جتنے واد یا سمپردائے ہیں سب دو دو کے جوڑوں میں چلتے ہیں . یہ سب سدھانت شروع کی دوئی یعنی روح اور مادہ' آتم‌واد اور پرکرتی‌واد کے ہی الگ الگ روپ ہیں . ہر سدھانت ایک خاص پہلو پر زور دے دیتا ہے اور اُسے بڑھا چڑھاکر دنیا کے سامنے رکھ دیتا ہے . اِسی لئے دنیا کے وچارک' لیکھک' اُپدیشک' ملا' پادری' آچاریہ اور ودوان سدا آپس میں لڑتے جھگڑتے رہتے ہیں بیچاری جنتا حیران ہوکر اُن کی طرف دیکھتی ہے' اور یہ نہیں سمجھ پاتی کہ کیا ماننا چاہئے' کیا کرنا چاہئے اور کس کے پیچھے چلنا چاہئے .

پھر بھی ہم اِن سب پرسپر ورودھی متوں کو ایک دوسرے کے ساتھ ملا سکتے ہیں اور اِن سب بحثوں اور کھینچاتانی کو کم کرسکتے ہیں . یدی ہم "آتما" اور

"ग़ैर आत्मा" को मिला सकते हैं तो हम सब छोटे छोटे विरोधों को आसानी से शान्त कर सकते हैं.

आत्मा और शरीर यानी रूह और जिस्म में जो सम्बन्ध है उसकी बाबत जितने सिद्धान्त हमारे सामने आते हैं वह सब अर्ध सत्य यानी आधी सचाइयाँ हैं.

एक और मिसाल लीजिये मेरे सामने एक काग़ज़ का टुकड़ा है. उसके ऊपर कुछ काले काले निशान बने हैं अब सोचिये उन काले निशानों और मेरे मनके अन्दर के विचारों में क्या सम्बन्ध हो सकता है. फिर भी उन काले निशानों से दूसरों के दिमाग़ों में मेरे विचार पहुँच जाते हैं इन काले निशानों और मेरे विचारों में कोई मेल नज़र नहीं आता. पर क्या सच मुच इनमें कोइ मेल नहीं है? क्या सच मुच दिमाग़ी चीज़ें और माद्दी चीज़ें बिलकुल एक दूसरे से अलग हैं? नहीं हरगिज़ नहीं. हमारे विचार, हमारे भाव, हमारे इरादे सब हमेशा सीधे यानी सीधे बाहर की माद्दी दुनिया से सम्बन्ध रखते हैं. "मैं' कभी "ग़ैर-मैं" से जुदा नहीं हो सकता. "मैं" सदा 'ग़ैर-मैं" की मदद से ही सोचता और अनुभव करता है. उसी से "ग़ैर-मैं' के तरह तरह के रूप बनते हैं सारी प्रकृति ख़याल ही तो है. ख़याल से बाहर और कुछ है ही नहीं मेरा ख़याल सैकड़ों भाषाओं में लिखा जा सकता है, सैकड़ों वाक्यों में प्रगट किया जा सकता है हर लेख और हर आवाज़ के पीछे कोई न कोई ख़याल है दोनों मे अटूट नाता है. यही नाता हमारे शरीर के एक एक अङ्ग और एक एक हिस्से में काम कर रहा है. अगर हम इतना समझलें कि 'मैं" और ग़ैर-मैं" चेतन और जड़, रूह और माद्दा सदा साथ साथ चलते हैं, तो हमारी सारी कठिनाई जाती रहे. यह कोई दो चीज़ें हैं ही नहीं एक ही भावना, (जज़्बा), ध्यान (मराक़बा), धारणा (याद) या कल्पना (तसव्वुर) है जो यह सब चला रहा है मैं ही हूँ जो अनेक रूपो में अपने कोज़ाहिर कर रहा हूँ. सच यह है कि इनकी अनेकता भी एक धोखा है मेरे अन्दर लिखाई, आवाज़ और ख़याल मिलकर एक हो जाते हैं इनके सिवा मेरे मैं' के ज़हूर का कोई और साधन ही नहीं. आजकल का विज्ञान भी बड़ी खोज के बाद इन्हीं नतीजों पर पहुँचता है. असली पढ़ने वाला हर लेख से हर चीज़ पढ़ सकता है क्योंकि वही उन सब लेखों की जान है, ठीक जिस तरह एक तेज़ बच्चा अपने गुड्डे या खिलौने के अन्दर से तरह तरह की कहानिया निकालता और सुनता रहता है वह गुड्डा उसी के हाथ का बना हुआ तो है.

तरह तरह के रूप जब एक दूसरे से मिलते हैं तो आत्मा के अन्दर प्रेम की एक लहर दौड़ती है, और तरह तरह के रूप जब एक दूसरे से टकराते हैं तो यही लहर प्यार या नफ़रत की लहर हो जाती है हमारे सपने हमारी

"غیر آتما" کو ملا سکتے ہیں تو ہم سب چھوٹے چھوٹے ورودھوں کو آسانی سے شانت کرسکتے ہیں۔

آتما اور شریر یعنی روح اور جسم میں جو سمبندھ ہے اُس کی بابت جتنے سدھانت ہمارے سامنے آتے ہیں وہ سب اردھ ستیہ یعنی آدھی سچائیاں ہیں۔

ایک اور مثال لیجئے میرے سامنے ایک کاغذ کا ٹکڑا ہے اُس کے اوپر کچھ کالے کالے نشان بنے ہیں جنہیں لکھائی کہتے ہیں۔ میرے من کے اندر کچھ وچار ہیں اب سوچئے اُن کالے نشانوں اور میرے من کے اندر کے وچاروں میں کیا سمبندھ ہوسکتا ہے پھر بھی اُن کالے نشانوں سے دوسروں کے دماغوں میں میرے وچار پہونچ جاتے ہیں اِن کالے نشانوں اور میرے وچاروں میں کوئی میل نظر نہیں آتا ہے پر کیا سچ مچ اِن میں کوئی میل نہیں ہے؟ کیا سچ مچ دماغی چیزیں اور مادی چیزیں بالکل ایک دوسرے سے الگ ہیں؟ نہیں، ہرگز نہیں۔ ہمارے وچار، ہمارے بھاؤ، ہمارے ارادے سب ہمیشہ سیدھے یا سیدھے باہر کی مادی دنیا سے سمبندھ رکھتے ہیں۔ "میں" کبھی "غیر میں" سے جدا نہیں ہوسکتا "میں" سدا "غیر - میں" کی مدد سے ہی سوچتا اور انوبھو کرتا ہے اُسی سے "غیر - میں" کے طرح طرح کے روپ بنتے ہیں۔ ساری پرکرتی خیال ہی تو ہے خیال سے باہر او کچھ ہے ہی نہیں۔ میرا خیال سینکڑوں بھاشاؤں میں لکھا جاسکتا ہے، سیکڑوں واکیوں میں پرگٹ کیا جاسکتا ہے۔ ہر لیکھ اور ہر آواز کے پیچھے کوئی نہ کوئی خیال ہے دونوں میں اٹوٹ ناتا ہے۔ یہی ناتا ہمارے شریر کے ایک ایک انگ اور ایک ایک حصے میں کام کررہا ہے اگر ہم اتنا سمجھ لیں کہ "میں" اور "غیر - میں" چیتن اور جڑ، روح اور مادہ سدا ساتھ ساتھ چلتے ہیں، تو ہماری ساری کٹھنائی جاتی رہے۔ یہ کوئی دو چیزیں ہیں ہی نہیں ایک ہی بھاؤنا (جذبہ)، دھیان، دھارنا (یاد) یا کلپنا (تصور) ہے جو یہ سب چلا رہا ہے میں ہی ہوں جو انیک روپوں میں اپنے کو ظاہر کررہا ہوں۔ سچ یہ ہے کہ اِن کی انیکتا بھی ایک دھوکا ہے میرے اندر لکھائی، آواز اور خیال ملکر ایک ہوجاتے ہیں اِن کے سوا میرے "میں" کے ظہور کا کوئی اور سادھن ہی نہیں آجکل کا وگیان بھی بڑی کھوج کے بعد انہیں نتیجوں پر پہونچتا ہے اصلی پڑھنے والا ہر لیکھ سے ہر چیز پڑھ سکتا ہے کیونکہ وہی اُن سب لیکھوں کی جان ہے ٹھیک جس طرح ایک تیز بچہ اپنے گڈے یا کھلونے کے اندر طرح طرح کی کہانیاں نکالتا اور سنتا رہتا ہے۔ وہ گڈا اُسی کے ہاتھ کا بنا ہوا تو ہے۔

طرح طرح کے روپ جب ایک دوسرے سے ملتے ہیں تو آتما کے اندر پریم کی ایک لہر دوڑتی ہے، اور طرح طرح کے روپ جب ایک دوسرے سے ٹکراتے ہیں تو یہی لہر گھرنا یا نفرت کی لہر ہوجاتی ہے

इच्छाओं और भावनाओं के अक्स होते हैं. हमारे विचार और हमारा सारा विज्ञान हम में से ही निकलता है. एक ही लेखक अलग अलग नाटक लिखकर, अलग अलग रूपों को जन्म देता है. अनगिनत लेखक मिलकर अपनी रचनाओं में प्रेम और घृणा को अनगिनत रूप देते रहते हैं जिसे हम इतिहास कहते हैं वह भी एक ही बड़ा नाटक है जो अलग अलग रूपों में हमारे सामने आता रहता है. एक ही 'परम-आत्मा' यानी 'रूहेकुल' इस सारे संसार को चला रही है और अपने अन्दर लिये हुए है.

भारत की सॉंख्य फ़िलासफ़ी कहती है कि हर आत्मा केवल एक दर्शक है जो अपने शरीर को और चारो तरफ़ की दुनिया को देखता है, और दुनिया के रूप लगातार बदलते रहते हैं. वेदान्त फ़िलासफ़ी इससे आगे बढ़कर कहती है कि सब अलग अलग आत्माएं भी एक ही 'परम आत्मा" यानी 'रूहेकुल' के अन्दर हैं और जो कुछ हम देख रहे हैं यह सब भी उसी के अन्दर है

अद्वैत फ़िलासफ़ी (यानी वहदतुलवजूद) जिसमे "मैं" और "ग़ैर-मैं" दोनों मिलकर एक हो जाते हैं बाक़ी सब छोटे-छोटे फ़रक़ों को भी ख़त्म कर देती है परम-आत्मा, अल्लाह अकबर, विश्व आत्मा, या रूहेकुल के अन्दर सब देवता और सब दानव यानी ग़ैर-देवता आकर समा जाते हैं. प्रेम और घृणा दोनों मेरे दिल के अन्दर की लहरें हैं मेरा चेहरा तन भी सकता है और मुस्करा भी सकता है एक दूसरी मिसाल लीजिये. कुछ लोग कहते हैं कि स्वर्ग और नरक, जन्नत और दोज़ख़ हमेशा के लिये हैं दूसरे लोग कहते हैं ऐसा नहीं है असल में स्वर्ग और नरक दोनो का वजूद उसी रूहेकुल के अन्दर है, इसलिये उनका हमेशा के लिये रहना ठीक ही है पर कोई अलग आत्मा लगातार हमेशा के लिये स्वर्ग में या नरक में नही रह सकती जवानी और बुढ़ापा दोनो साथ-साथ और हमेशा के लिये हैं हर जानदार दोनो में से निकलता है, पर एक साथ नहीं, एक दूसरे के बाद, और कोई जानदार हमेशा के लिये एक हालत मे नही रह सकता 'ग़ैर-मैं" की हक़ीक़त ही यह है उसका रूप हमेशा बदलता रहता है यह 'रैलेटिविटी" का क़ानून है हर विचार और हर भाव एक समय के लिये होता है ख़ुशियां आगे बढ़कर फीकी पड़ जाती हैं मुसीबतें मुसीबतें नहीं रहतीं. आदत पड़ते ही उनका डंक निकल जाता है सुख या दुख अगर बहुत देर तक रह जाय तो या तो आदमी को ख़तम कर देता है और या फिर आदमी का वह हिस्सा ही नहीं रह जाता. हर शहर में बाग़ भी होते हैं और जेलख़ाने भी लेकिन उनमें जाने वाले सदा बदलते रहते हैं उनमें रहने वालों की भी हालतें बदलती रहती हैं. सब रूहों, सब आत्माओं को सुख और दुख, पाप और पुण्य

ہمارے سپنے ہماری ہی اچھاؤں اور بھاوناؤں کے عکس ہوتے ہیں۔ ہمارے وچار اور ہمارا سارا وگیان ہم میں سے ہی نکلتا ہے۔ ایک ہی لیکھک الگ الگ ناٹک لکھکر، الگ الگ روپوں کو جنم دیتا ہے۔ انگنت لیکھک ملکر اپنی رچناؤں میں پریم اور گھرنا کو انگنت روپ دیتے رہتے ہیں جسے ہم اتہاس کہتے ہیں وہ بھی ایک ہی بڑا ناٹک ہے جو الگ الگ روپوں میں ہمارے سامنے آتا رہتا ہے ایک ہی 'پرم - آتما' یعنی 'روح کل' اس سارے سنسار کو چلا رہی ہے اور اپنے اندر لئے ہوئے ہے

بھارت کی سانکھیہ فلسفی کہتی ہے کہ ہر آتما کیول ایک درشک ہے جو اپنے شریر کو اور چاروں طرف کی دنیا کو دیکھتا ہے، اور دنیا کے روپ لگاتار بدلتے رہتے ہیں۔ ویدانت فلسفی اس سے آگے بڑھکر کہتی ہے کہ سب الگ الگ آتمائیں بھی ایک ہی "پرم - آتما" یعنی "روح کل" کے اندر ہیں اور یہ جو کچھ ہم دیکھ رہے ہیں وہ سب بھی اسی کے اندر ہے

ادوئت فلسفی (وحدت الوجود) جس میں "میں" اور "غیر - میں" دونوں ملکر ایک ہوجاتے ہیں باقی سب چھوٹے چھوٹے فرقوں کو بھی ختم کردیتی ہے پرم - آتما، اللہ اکبر وشو - آتما، یا روح کل کے اندر سب دیوتا اور سب دانو یعنی غیر - دیوتا آکر سما جاتے ہیں۔ پریم اور گھرنا دونوں میرے دل کے اندر کی لہریں ہیں میرا چہرہ تن بھی سکتا ہے اور مسکرا بھی سکتا ہے۔ ایک دوسری مثال لیجئے۔ کچھ لوگ کہتے ہیں کہ سورگ اور نرک، جنت اور دوزخ ہمیشہ کے لئے ہیں دوسرے لوگ کہتے ہیں ایسا نہیں ہے اصل میں سورگ اور نرک دونوں کا وجود اسی روح کل کے اندر ہے اس لئے اُن کا ہمیشہ کے لئے رہنا ٹھیک ہی ہے۔ پر کوئی الگ آتما لگاتار ہمیشہ کے لئے سورگ میں یا نرک میں نہیں رہ سکتی جوانی اور بڑھاپا دونوں ساتھ ساتھ اور ہمیشہ کے لئے ہیں۔ ہر جاندار دونوں میں سے نکلتا ہے، پر ایک ساتھ نہیں، ایک دوسرے کے بعد اور کوئی جاندار ہمیشہ کے لئے ایک حالت میں نہیں رہ سکتا۔ "غیر - میں" کی حقیقت ہی یہ ہے اس کا روپ ہمیشہ بدلتا رہتا ہے یہ 'ریلیٹیویٹی" کا قانون ہے ہر وچار اور ہر بھاؤ ایک سمے کے لئے ہوتا ہے خوشیاں آگے بڑھکر پھیکی پڑجاتی ہیں مصیبتیں مصیبتیں نہیں رہتیں عادت پڑتے ہی اُن کا ڈنک نکل جاتا ہے۔ سکھ یا دکھ اگر بہت دیر تک رہ جائے تو یا تو آدمی کو ختم کردیتا ہے اور یا پھر آدمی کا وہ حصہ نہیں رہ جاتا۔ ہر شہر میں باغ بھی ہوتے ہیں اور جیل خانے بھی۔ لیکن اُن میں جانے والے سدا بدلتے رہتے ہیں اُن میں رہنے والوں کی بھی حالتیں بدلتی رہتی ہیں سب روحوں، سب آتماؤں کو سکھ اور دکھ، پاپ اور پن،

जन्नत और दोज़ख के सब तजरबों में से निकलना पड़ता है, क्योंकि सब रूहें एक ही वजूद, एक ही रूहेकुल में हैं. तजरबे अनगिनत होते हैं और दुनिया के सब तजरबे हमेशा के लिये 'परम-आत्मा' या 'रूहेकुल' में एक साथ मौजूद हैं. संस्कृत बोली में 'आत्मा' का अर्थ है 'खाने वाला', यानी सब को खाजाने वाला. यह आत्मा अनगिनत आत्माओं के ज़रिये, यानी अपने ही अनगिनत रूपों में, अलग अलग देश, काल और गति, मकान, ज़मान और हरकत से निकलता हुआ, जिन रूपों में इन सब सुखों, दुखों, पापों, पुण्यों, स्वर्गों और नरकों का तजरबा करता रहता है वह सब भी अनगिनत और अनन्त हैं.

جنت اور دوزخ کے تجربوں میں سے نکلنا پڑتا ہے' کیونکہ سب ایک ہی وجود' ایک ہی روح کل میں ہیں ۔ تجربے اگنت روحیں ہوتے ہیں اور دنیا کے سب تجربے ہمیشہ کے لئے 'پرم آتما' یا 'روح کل' میں ایک ساتھ موجود ہیں ۔ سنسکرت بولی میں 'آتما' کا ارتھ ہے 'کھانے والا' یعنی سب کو کھاجانے والا ۔ یہ آتما اگنت آتماؤں کے ذریعہ' یعنی اپنے ہی اگنت روپوں میں' الگ الگ دیش' کال اور گتی' مکان' زمان اور حرکت سے نکلتا ہوا جن روپوں میں ان سب سکھوں' دکھوں' پاپوں' پنیوں' سورگوں اور نرکوں کا تجربہ کرتا رہتا ہے وہ سب ہی اگنت اور اننت ہیں ۔

मुहम्मद साहब की कुछ हदीसें

डाक्टर मिरज़ा अब्दुल फ़ज़्ल

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"जिन लोगों के पास अपनी अपनी अलग अलग धार्मिक किताबें हैं, न उनकी हर बात मानों और न उन्हें झूठा कहो. तुम उनसे केवल यह कहो कि, "हम अल्लाह को मानते हैं, अल्लाह ने जो ज्ञान हमें दिया है उसे मानते हैं, और जो ज्ञान अल्लाह ने इब्राहीम, इसमाईल, इसहाक़ याक़ूब को और क़ौमों को, और मूसा को और ईसा को दिया और जो दूसरे पैग़म्बरों को दिया उस सब को हम मानते हैं. हम उनमें से किसी में कोई फ़रक़ नहीं करते, और हम अल्लाह के सामने सर झुकाते हैं."

—अबू हुरैरा, बुख़ारी.

ठीक यही विचार इन्हीं शब्दों में क़ुरान के दूसरे सूरे में आया है.

अबू ज़र से रिवायत है कि मुहम्मद साहब ने अबू ज़र से कहा :—"तुम जहां कहीं हो अल्लाह से डरो, अगर कोई बुरा काम कर बैठो तो उसके बाद फ़ौरन कोई नेक काम करो. वह नेक काम तुम्हारे बुरे काम को धो देगा. लोगों से जब मिलो तो नेकी और नेक नियती से मिलो."

—अबू ज़र, तिरमिज़ी.

अबू ज़र से रिवायत है कि पैग़म्बर ने अबू ज़र से कहा:—"ऐ अबू ज़र ! तुम इसलिये नेक नहीं कहे जा सकते कि तुम्हारा रंग लाल है या काला है, असल नेकी तुम्हारी इसमे है कि तुम बुराई से बचे रहो."

—अबू ज़र, अहमद.

मुहम्मद साहब ने कहा कि:—"सच मुच अल्लाह तुम्हारी शक्लों को नहीं देखता, न तुम्हारे जिस्मों को देखता है, वह तुम्हारे दिलों के अन्दर को देखता है और तुम्हारे नेक कामों को देखता है." इसके बाद मुहम्मद साहब ने अपनी छाती की तरफ़ इशारा करके कहा,—"नेकी इसके अन्दर रहती है." यह बात उन्होने तीन बार दुहराई.

—अबू हुरैरह, बुख़ारी: मुसलिम: अबू दाऊद: तिरमिज़ी: मालिक.

محمد صاحب کی کچھ حدیثیں

ڈاکٹر مرزا ابوالفضل

محمد صاحب نے کہا کہ :—"جن لوگوں کے پاس اپنی اپنی الگ الگ دھارمک کتابیں ہیں نہ اُن کی ہر بات مانو اور نہ اُنہیں جھوٹا کہو ۔ تم اُن سے کیول یہ کہو کہ "ہم اللہ کو مانتے ہیں، اللہ نے جو گیان ہمیں دیا ہے اُسے مانتے ہیں، اور جو گیان اللہ نے ابراہیم، اسمائیل، اسحاق، یعقوب کو اور قوموں کو، اور موسیٰ کو اور عیسیٰ کو دیا اور جو دوسرے پیغمبروں کو دیا اُس سب کو ہم مانتے ہیں ۔ ہم اُن میں سے کسی میں کوئی فرق نہیں کرتے، اور ہم اللہ کے سامنے سر جھکاتے ہیں ۔"

—ابوہریرہ، بخاری ۔

ٹھیک یہی وچار انہیں شبدوں میں قرآن کے دوسرے سورہ میں آیا ہے ۔

ابوذر سے روایت ہے کہ محمد صاحب نے ابوذر سے کہا :—"تم جہاں کہیں ہو اللہ سے ڈرو، اگر کوئی برا کام کر بیٹھو تو اُس کے بعد فوراً کوئی نیک کام کرو ۔ وہ نیک کام تمہارے برے کام کو دھودیگا ۔ لوگوں سے جب ملو تو نیکی اور نیک‌نیتی سے ملو ۔"

—ابوذر، ترمذی ۔

ابوذر سے روایت ہے کہ پیغمبر نے ابوذر سے کہا :—"اے ابوذر! تم اِس لئے نیک نہیں کہے جا سکتے کہ تمہارا رنگ لال ہے یا کالا ہے، اصل نیکی تمہاری اِس میں ہے کہ تم برائی سے بچے رہو۔"

—ابوذر، احمد ۔

محمد صاحب نے کہا کہ :—"سچ مچ اللہ تمہاری شکلوں کو نہیں دیکھتا، نہ تمہارے جسموں کو دیکھتا ہے، وہ تمہارے دلوں کے اندر کو دیکھتا ہے اور تمہارے نیک کاموں کو دیکھتا ہے۔" اِس کے بعد محمد صاحب نے اپنی چھاتی کی طرف اشارہ کرکے کہا،—"نیکی اِس کے اندر رہتی ہے ۔" یہ بات اُنہوں نے تین بار دہرائی ۔

—ابوہریرہ، بخاری : مسلم : ابوداؤد : ترمذی : مالک ۔

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"सारी धरती मेरे लिये दुआ करने और नमाज़ पढ़ने की जगह है, और सब जगह एक बराबर पाक है; इसलिये मेरे आदमियों में से कोई जहां कहीं भी हो नमाज़ का वक़्त आ जावे तो वहीं पर नमाज़ पढ़ सकता है"

—जाबिर, नसाई, अबूज़र, बुख़ारी : मुसलिम.

मुहम्मद साहब ने कहा कि .—'अपने घरों में नमाज़ें पढ़ो, लेकिन घरों में क़बरें मत बनाओ."

—इब्ने उमर, बुख़ारी: मुसलिम.

मुहम्मद साहब ने आयशा से कहा :—"ऐ आयशा ! अपने दरवाज़े से कभी किसी ग़रीब को ख़ाली हाथ न जाने दो, उसे कुछ न कुछ ज़रूर दो चाहे एक खजूर ही दो. ऐ आयशा ! ग़रीबों से प्यार करो, उन्हें अपने पास बुलाओ, तो क़यामत के दिन अल्लाह तुम्हें अपने पास बुलाएगा."

—अनस, तिरमिज़ी

मुहम्मद साहब ने कहा :—"जो कोई ज़रूरतमन्दों, मुहताजों और ग़रीबों की ज़रूरत पूरी करने की कोशिश करता है वह अल्लाह की राह मे जेहाद करता है, वह उस आदमी की तरह है जो नमाज़ के लिये खड़ा हो जाता है और फिर न बैठता है और न लेटता है, और जो लगातार रोज़ा रखता है और उसे कभी नहीं तोड़ता."

—अबू हुरैरा, बुख़ारी: मुसलिम.

मुहम्मद साहब ने कहा कि—"वह आदमी ग़रीब नहीं है जो एक दो निवाले रोटी के या कुछ छुहारे माँगता फिरता है, ग़रीब आदमी वह है जिसे आज़ादी से काम करने और कमाने का कोई साधन नहीं मिलता, और जिसे लोग पहचानते भी नहीं कि उसे ख़ैरात दें, और जो कहीं खड़े होकर लोगों से भीख नहीं माँगता."

—अबू हुरैरह, बुख़ारी मुसलिम. अबू दाऊद: नसाई: मालिक.

मुहम्मद साहब ने जब मुआज़ को यमन का गवर्नर बना कर भेजा तो उस से कहा कि:—"वहां के उन लोगों के पास जब तुम जाओ जिनकी अलग अलग धार्मिक

محمد صاحب نے کہا کہ :—"ساری دھرتی میرے لئے دعا کرنے اور نماز پڑھنے کی جگہ ہے' اور سب جگہ ایک برابر پاک ہے : اِس لئے میرے آدمیوں میں سے کوئی جہاں کہیں بھی ہو وہ نماز کا وقت آجاوے تو وہیں پر نماز پڑھ سکتا ہے ."

—جابر' نسائی' ابوذر' بخاری : مسلم .

محمد صاحب نے کہا کہ :—"اپنے گھروں میں نمازیں پڑھو' لیکن گھروں میں قبریں مت بناؤ ."

—ابن عمر' بخاری : مسلم .

محمد صاحب نے عائشہ سے کہا :—"اے عائشہ ! اپنے دروازہ سے کبھی کسی غریب کو خالی ہاتھ نہ جانے دو' اُسے کچھ نہ کچھ ضرور دو چاہے ایک کھجور ہی دو . اے عائشہ ! غریبوں سے پیار کرو' اُنہیں اپنے پاس بلاؤ' تو قیامت کے دن اللہ تمہیں اپنے پاس بلائیگا ."

—انس' ترمذی .

محمد صاحب نے کہا .—"جو کوئی ضرورتمندوں' محتاجوں اور غریبوں کی ضرورت پوری کرنے کی کوشش کرتا ہے وہ اللہ کی راہ میں جہاد کرتا ہے' وہ اُس آدمی کی طرح ہے جو نماز کے لئے کھڑا ہوجاتا ہے اور پھر نہ بیٹھتا ہے اور نہ لیٹتا ہے' اور جو لگاتار روزہ رکھتا ہے اور اُسے کبھی نہیں توڑتا ."

—ابوہریرہ' بخاری . مسلم .

محمد صاحب نے کہا کہ —"وہ آدمی غریب نہیں ہے جو ایک دو نوالے روٹی کے یا کچھ چھوہارے مانگتا پھرتا ہے' غریب آدمی وہ ہے جسے آزادی سے کام کرنے اور کمانے کا کوئی سادھن نہیں ملتا' اور جسے لوگ پہچانتے بھی نہیں کہ اُسے خیرات دیں' اور جو کہیں کھڑے ہوکر لوگوں سے بھیک بھی نہیں مانگتا ."

—ابوہریرہ' بخاری : مسلم . ابوداؤد : نسائی : مالک .

محمد صاحب نے جب معاذ کو یمن کا گورنر بناکر بھیجا تو اُس سے کہا کہ :—"وہاں کے اُن لوگوں کے پاس جب تم جاؤ جن کی اپنی الگ الگ دھارمک

किताबें हैं तो पहली बात उनसे यही कहना कि अल्लाह की बन्दगी करो, और जब वह अल्लाह को जान जाएं तो उनसे कहना कि अल्लाह ने यह हुक्म दिया है कि वह ज़कात दें, यह ज़कात उनमें से उन लोगों से ली जायगी जो अमीर हैं और उन्हीं में से उन लोगों में तक़सीम की जायगी जो ग़रीब हैं, और जब वह अल्लाह के इस हुक्म को मानलें तब उनसे ज़कात लेना, और मज़लूमों की बद्दुआ से डरते रहना, क्योंकि सचमुच मज़लूमों और अल्लाह के बीच कोई पर्दा नहीं है.''

—इब्ने अब्बास, बुख़ारी: मुसलिमः अबू दाऊदः तिरमिज़ी: नसाई.

मुहम्मद साहब ने कहा कि:—''सबसे बुरी दावतें शादी की वह दावतें हैं जिनमें अमीरों को बुलाया जाता है और ग़रीबों को छोड़ दिया जाता है.''

—आरज, बुख़ारीः मुसलिमः अबूदाऊदः मालिक.

मुहम्मद साहब ने कहा कि:—''अल्लाह को याद करना ही नमाज़ पढ़ना है.''

—नूमान बिन बशीर, तिरमिज़ीः अबूदाऊदः नसाई इब्ने माजह: अहमद.

मुहम्मद साहब ने कहा कि:—''अल्लाह किसी की दुआ क़बूल नहीं करता जब तक उस दुआ के साथ पाकी न हो, और न अल्लाह ख़यानत के रुपये मे से कभी सदक़ा मन्ज़ूर करता है.''

—इब्ने उमर, मुसलिम: तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा कि:—''क्या मैं तुम्हें एक ऐसा काम बताऊँ जिससे तुम दरजों ऊपर उठ जाओ, जिस से तुम अल्लाह की नज़रों मे पाक क़रार दिये जाओ, जो धन और सोना दान देने से भी अच्छा है और इससे भी कहीं अच्छा है कि तुम लड़ाई मे अपने दुश्मनों का सामना करो और उनकी गरदनें काटो ?—वह काम है अल्लाह को याद करना.''

—अबू दरदा, तिरमिज़ी: मालिक.

کتابیں ہیں تو پہلی بات اُن سے یہی کہنا کہ اللہ کی بندگی کرو' اور جب وہ اللہ کو جان جاویں تو اُن سے کہنا کہ اللہ نے یہ حکم دیا ہے کہ وہ زکات دیں' یہ زکات اُن میں سے اُن لوگوں سے لیجائیگی جو امیر ہیں اور اُنہیں میں سے اُن لوگوں میں تقسیم کی جائیگی جو غریب ہیں' اور جب وہ اللہ کے اِس حکم کو مان لیں تب اُن سے زکات لینا' اور مظلوموں کی بددعا سے ڈرتے رہنا' کیونکہ سچ مچ مظلوموں اور اللہ کے بیچ کوئی پردہ نہیں ہے۔"

—ابن عباس' بخاری : مسلم : ابوداؤد : ترمذی : نسائی ۔

محمد صاحب نے کہا کہ :—"سب سے بری دعوتیں شادی کی وہ دعوتیں ہیں جس میں امیروں کو بلایا جاتا ہے اور غریبوں کو چھوڑ دیا جاتا ہے۔"

—اعرج' بخاری : مسلم : ابوداؤد : مالک ۔

محمد صاحب نے کہا کہ :—"اللہ کو یاد کرنا ہی نماز پڑھنا ہے۔"

—نعمان بن بشیر' ترمذی : ابوداؤد : نسائی : ابن ماجہ : احمد۔

محمد صاحب نے کہا کہ :—"اللہ کسی کی دعا قبول نہیں کرتا جب تک اُس دعا کے ساتھ پاکی نہ ہو' اور نہ اللہ خیانت کے روپئے میں سے کبھی صدقہ منظور کرتا ہے"

—ابن عمر' مسلم : ترمذی ۔

محمد صاحب نے کہا کہ :—"کیا میں تمہیں ایک ایسا کام بتاؤں جس سے تم درجوں اوپر اُٹھ جاؤ' جس سے تم اللہ کی نظروں میں پاک قرار دیئے جاؤ' جو دھن اور سونا دان دینے سے بھی اچھا ہے اور اِس سے بھی کہیں اچھا ہے کہ تم لڑائی میں اپنے دشمنوں کا سامنا کرو اور اُن کی گردنیں کاٹو ؟—وہ کام ہے اللہ کو یاد کرنا۔"

—ابودرداء' ترمذی : مالک ۔

अबू हुरैरा कहता है कि:—"एबीसीनिया का ईसाई बादशाह नेगस जिस दिन मरा उस दिन पैग़म्बर ने लोगों के सामने उसकी मौत का एलान किया, और लोगों को साथ लेकर नमाज़ की जगह जाकर, सब को क़तारों में खड़ा करके, नेगस के लिये जनाज़े की नमाज़ पढ़ी."

—अबू हुरैरह, बुख़ारी: मुसलिम.

नेगस मरते दिन तक बुत परस्त ईसाई था, लेकिन उसने इसलाम के शुरू के ज़माने में मुसीबतज़दह मुसलमानों को अपने यहां पनाह दी थी और वह अपनी नेकी और इन्साफ़ के लिये मशहूर था.

नमाज़ की चर्चा करते हुए मुहम्मद साहब ने कहा कि,—"सचमुच अगर आदमी सो रहा हो और अगर सोने की वजह से अपने फ़र्ज़ को अदा न कर सके तो उस पर कोई इल्ज़ाम नहीं है. इल्ज़ाम तभी आता है जब वह जाग रहा हो; इसलिये अगर तुम में से कोई नमाज़ पढ़ना भूल जाय तो जब कभी याद आवे तब नमाज़ पढ़ले."

—अबू क़तादह, अबू दाऊद.

अनुवादक—मुजीब रिज़वी

ابوھریرہ کہتا ھے کہ :—"ایبی سینیا کا عیسائی بادشاہ نیگس جس دن مرا اُس دن پیغمبر نے لوگوں کے سامنے اُس کی موت کا اعلان کیا اور لوگوں کو ساتھ لیکر نماز کی جگہ جاکر سب کو قطاروں میں کھڑا کرکے نیگس کے لئے جنازہ کی نماز پڑھی."

—ابوھریرہ' بخاری : مسلم.

نیگس مرتے دن تک بت پرست عیسائی تھا' لیکن اُس نے اِسلام کے شروع کے زمانے میں مصیبت زدہ مسلمانوں کو اپنے یہاں پناہ دی تھی اور وہ اپنی نیکی اور انصاف کے لئے مشہور تھا.

نماز کی چرچا کرتے ہوئے محمد صاحب نے کہا کہ :—"سچ مچ اگر آدمی سو رہا ھو اور سونے کی وجہ سے اپنے فرض کو پورا نہ کرسکے تو اُس پر کوئی الزام نہیں ھے. الزام تب ھی آتا ھے جب وہ جاگ رہا ھو. اِس لئے اگر تم میں سے کوئی نماز پڑھنا بھول جائے تو جب کبھی یاد آئے تب نماز پڑھ لے."

—ابوقتادہ' ابوداؤد.

—انوادک—مجیب رضوی.

देश किधर

पंडित सुन्दरलाल

चुनाव और जनता.

आज देश भर में चुनाव की गरमा गरमी है. हर जगह लाखों के दिलों में यह सवाल उठ रहा है कि वोट किसे दिया जाय. इसी सवाल के साथ एक दूसरे सवाल का भी सम्बन्ध है, वह यह कि देश किधर जा रहा है. अधिकतर जनता कांग्रेस सरकार से अनगिनत बातों में असन्तुष्ट रहते हुए भी अभी तक कांग्रेस को वोट देना ही अपने लिये हितकर समझती है. बात भी बहुत दर्जे तक ठीक ही है. जनता को एकाएकी किसी दूसरे दल पर उतना विश्वास नहीं होता. कांग्रेस सरकार के और ख़ासकर जवाहर लाल जी के कारनामों में जनता को कई बातें अच्छी और उपयोगी भी

دیش کدھر

پنڈت سندرلال

چناؤ اور جنتا.

آج دیش بھر میں چناؤ کی گرما گرمی ھے. ھر جگہ لاکھوں کے دلوں میں یہ سوال اُٹھ رہا ھے کہ ووٹ کسے دیا جائے. اِسی سوال کے ساتھ ایک دوسرے سوال کا بھی سمبندھ ھے' وہ یہ ھے کہ دیش کدھر جا رہا ھے. ادھک تر جنتا کانگریس سرکار سے ان گنت باتوں میں اسنتشٹ رہتے ھوئے بھی ابھی تک کانگریس کو ووٹ دینا ھی اپنے لئے ھتکر سمجھتی ھے. بات بھی بہت درجے تک ٹھیک ھی ھے. جنتا کو ایکا ایکی کسی دوسرے دل پر اُتنا وشواس نہیں ھوتا. کانگریس سرکار کے اور خاصکر جواھر لال جی کے کارناموں میں جنتا کو کئی باتیں اچھی اور اُپیوگی بھی

मालूम होती हैं. जिन लोगों ने अपनी ज़िन्दगियाँ देश को आज़ाद करने की कोशिशों में खपा दीं उनसे अगर कुछ बातों में देश को धोखा हुआ है तो फिर उन्हीं के कुछ हुकूमत से बाहर के साथियों या दूसरे नए लोगों पर जल्दी से भरोसा कैसे हो सकता है ? आइन्दा के लिये जो प्रोग्राम अलग अलग दलों ने जनता के सामने रखे हैं उनमें भी आम जनता को बहुत अधिक फ़रक़ दिखाई नहीं देता. जनता के दिल में यह भी नहीं बैठता कि इन प्रोग्रामों से उसके आजकल के दुख कैसे दूर हो सकेंगे. अधिकांश जनता बहुत सँभल-सँभल कर क़दम रखना चाहती है और हम कह चुके कि शायद यही इस समय ठीक भी है

कांग्रेस और जनता.

दूसरी तरफ़ यह भी ठीक है कि जनता आम तौर पर इस समय की कांग्रेस सरकार से ख़ुश नहीं है. राजकाजी वोट कांग्रेस को भले ही मिल जावें 'नैतिक' यानी इख़लाक़ी मैदान में कांग्रेस इन दस साल के अन्दर बेहद नीचे गिरी है इस निगाह से सन् 1947 की कांग्रेस और सन 1957 की कांग्रेस में आकाश पाताल का अन्तर है. खादी की पोशाक और गाँधी टोपी आज लग भग सारे देश में नफ़रत की निगाह से देखी जाती हैं. 'जो रक्षक थे वही भक्षक हो गए' जैसे वाक्य देश भर मे आम लोगों की ज़बान पर चढ़े हुए हैं कारन साफ़ है. पढ़े लिखो और बेपढ़ों दोनों में बेकारी तेज़ी के साथ बढ़ती जा रही है कभी-कभी कोई-कोई कांग्रेसी नेता कह देते हैं कि उन्हें निकम्मे ग्रेजुएटों की ज़रूरत नहीं है, उन्हें ज़रूरत है कुशल इंजीनियरों और होशियार कारीगरों की। पर हालत यह है कि इंजीनियरिंग कालिजों के सैकड़ों अच्छे से अच्छे डिगरी याफ़्ता रोज़ एक दफ़्तर से दूसरे दफ़्तर मे धक्के खाते रहते हैं, कहीं काम नहीं मिलता और फिर इन बेचारे निकम्मे ग्रेजुएटों को पैदा करने और काम देने की ज़िम्मेदारी किसपर है ? होशियार कारीगर तो लाखों ही देश भर में भूखे मर रहे हैं. हमारी अच्छी से अच्छी और पुरानी से पुरानी दस्तकारियाँ मिटती चली जा रही हैं शहर बेकारों से भरते चले जा रहे हैं. मज़दूरों में बेचैनी राजरोग की तरह टिकाऊ हो गई है यही हालत छोटी तनख़्वाहों के सरकारी और ग़ैर सरकारी मुलाज़िमों की है. रिशवत इन दस साल के अन्दर शायद कई गुना बढ़ गई है. पुलिस से जितनी मदद और हिफ़ाज़त लोगों को अंगरेज़ी राज में मिल सकती थी उतनी भी अब नहीं मिल पाती आए दिन के मामूली व्यापार में बेईमानी और मिलावट का बाज़ार चारों तरफ़ गरम है. सच यह है कि इन दस साल में सब से बड़ा पतन हमारे कैरेक्टर का हुआ है. टैक्स बढ़ते जा रहे हैं. आम तौर पर चीज़ों के

معلوم ہوتی ہیں ۔ جن لوگوں نے اپنی زندگیاں دیش کو آزاد کرنے کی کوششوں میں کھپا دیں اُن سے اگر کچھ باتوں میں دیش کو دھوکا ہوا ہے تو پھر اُنہیں کے کچھ حکومت سے باہر کے ساتھیوں یا دوسرے نئے لوگوں پر جلدی سے بھروسہ کیسے ہو سکتا ہے ؟ آئندہ کے لئے جو پروگرام الگ الگ دلوں نے جنتا کے سامنے رکھے ہیں اُن میں بھی عام جنتا کو بہت ادھک فرق دکھائی نہیں دیتا ۔ جنتا کے دل میں یہ بھی نہیں بیٹھتا کہ ان پروگراموں سے اُس کے آجکل کے دکھ کیسے دور ہوسکیں گے ۔ ادھیکانش جنتا بہت سنبھل سنبھل کر قدم رکھنا چاہتی ہے اور ہم کہہ چکے کہ شاید یہی اس سمے ٹھیک بھی ہے ۔

کانگریس اور جنتا ۔

دوسرے طرف یہ بھی ٹھیک ہے کہ جنتا عام طور پر اس سمئے کی کانگریس سرکار سے خوش نہیں ہے ۔ راج کاجی ووٹ کانگریس کو بھلے ہی مل جاویں 'نیتک' یعنی اخلاقی میدان میں کانگریس اِن دس سال کے اندر بیحد نیچے گری ہے ۔ اِس نگاہ سے سن 1947 کی کانگریس اور سن 1957ع کی کانگریس میں آکاش پاتال کا انتر ہے ۔ کھادی کی پوشاک اور گاندھی ٹوپی آج لگ بھگ سارے دیش میں نفرت کی نگاہ سے دیکھی جاتی ہیں ۔ 'جو رکشک تھے وہی بھکشک ہو گئے' جیسے واکیہ دیش بھر میں عام لوگوں کی زبان پر چڑھے ہوئے ہیں ۔ کارن صاف ہیں ۔ پڑھے لکھوں اور بے پڑھوں دونوں میں بیکاری تیزی کے ساتھ بڑھتی جا رہی ہے کبھی کبھی کوئی کوئی کانگریسی نیتا کہہ دیتے ہیں کہ اُنہیں نکمے گریجوئیٹوں کی ضرورت نہیں ہے' اُنہیں ضرورت ہے کشل انجینیروں اور ہوشیار کاریگروں کی ! پر حالت یہ ہے کہ انجینیرنگ کالجوں کے سیکڑوں اچھے سے اچھے ڈگری یافتہ روز ایک دفتر سے دوسرے دفتر میں دھکے کھاتے رہتے ہیں' کہیں کام نہیں ملتا' اور پھر ان بیچارے 'نکمے گریجوئیٹوں' کو پیدا کرنے اور کام دینے کی ذمہ واری کس پر ہے ؟ ہوشیار کاریگر تو لاکھوں ہی دیش بھر میں بھوکے مر رہے ہیں ۔ ہماری اچھی سے اچھی اور پرانی سے پرانی دستکاریاں مٹتی چلی جا رہی ہیں' گاؤں اُجڑتے جا رہے ہیں ۔ شہر بیکاروں سے بھرتے چلے جا رہے ہیں مزدوروں میں بیچینی راج روگ کی طرح ٹکاؤ ہو گئی ہے یہی حالت چھوٹی تنخواہوں کے سرکاری اور غیر سرکاری ملازموں کی ہے ۔ رشوت ان دس سال کے اندر شاید کئی گنا بڑھ گئی ہے ۔ پولیس سے جتنی مدد اور حفاظت لوگوں کو انگریزی راج میں مل سکتی تھی اتنی بھی اب نہیں مل پاتی ۔ آئے دن کے معمولی بیوپار میں بے ایمانی اور ملاوٹ کا بازار چاروں طرف گرم ہے ۔ سچ یہ ہے کہ اِن دس سال میں سب سے بڑا پتن ہمارے کیرکٹر کا ہوا ہے ۔ ٹیکس بڑھتے جا رہے ہیں ۔ عام طور پر چیزوں کے

भाव बेतहाशा ऊपर को जा रहे हैं. सरकारी दफ़्तरों, कचहरियों और अस्पतालों, यहाँ तक कि स्कूलों और कालिजों का हाल भी पहले से कहीं बदतर है. लाल फ़ीता हर जगह बेहद लम्बा हो गया है. दफ़्तरों में से मिसलों का पता न चलना और मिसलों में से बयानों या काग़ज़ों का गुम हो जाना आए दिन सुनने में आता रहता है. क़ुदरती तौर पर चोरियाँ और डाके भी बेहद बढ़ रहे हैं. ख़ुद राजधानियों के अन्दर जिस तरह के डाके आज सुनने में आ रहे हैं अंगरेज़ी ज़माने में उतने नहीं आते थे.

हम इस तरह की बातों को लिखते हुए सुख अनुभव नहीं कर रहे हैं, न हम मिसालें देना चाहते हैं. पर केवल एक छोटी सी, पर एक निगाह से बहुत बड़ी, मिसाल हम यहाँ देते हैं. दफ़्तरों में लाल फ़ीते का इस्तेमाल और जनता के हित की तरफ़ से बेपरवाही इस हद को पहुँची हुई है कि अनेक ही मिसालें इस की मिल सकती हैं कि जो लोग तीस-तीस साल वफ़ादारी के साथ सरकारी नौकरी करके पेन्शन के हक़दार हो गए उन्हें काम छोड़े चार, चार, पाँच-पाँच साल बीत चुके और पेन्शन का एक पैसा नहीं मिला. लाल फ़ीता उनकी मिसलों का एक दफ़्तर से दूसरे दफ़्तर घुमाता रहता है. कोई शायद यह नहीं सोचता कि इस तरह के अभागे कैसे और कहाँ से अपना और अपने बच्चों का पेट पालते होंगे.

पिछले दिनों दिल्ली में हमने एक अनोखी और पते की बात सुनी. एक नए भरती हुए सरकारी अफ़सर ने हम से कहा कि कोई मिसल उनके पास आई. उन्होंने काम पूरा कर दिया. इस पर उनके ऊपर के अफ़सर ने उन्हें बुलाकर समझाया कि—"आप अभी नए हैं, सरकारी काम का यह तरीक़ा नहीं है, आइन्दा जब कभी कोई मिसल आपके पास आवे उसमें कोई न कोई एतराज़ निकाल कर नोट लगाकर मिसल आगे चलती कर दिया कीजिए, जहाँ तक हो सके काम के पूरा करने यानी आख़िरी हुक्म की ज़िम्मेवारी अपने ऊपर न लीजिये, दफ़्तर में काम का यही ठीक तरीक़ा है." हमें इसके ख़ुद भी कई ज़ाती तजरबे हैं, पर हम उनमें न पड़ेंगे.

कांग्रेस और गाँधीजी.

कांग्रेस मिनिस्टरों या धारा सभाओं के कांग्रेसी मेम्बरों का आदर जनता के दिलों में आम तौर पर पहले ही नहीं के बराबर था. इस बार जिस तरह के लोगों को टिकट दिये गए हैं उससे यह आदर और भी कम हो जाना क़ुदरती है. यहाँ हम थोड़े से नेक, मेहनती और ईमानदार लोगों की बात नहीं कर रहे हैं. हम एक आम बात कर रहे हैं. हमें इस समय सन् 1947-48 का गाँधीजी का इस बात पर ज़ोर देना बार-बार याद आ रहा

بھاؤ بے تحاشا اوپر کو جا رہے ہیں ۔ سرکاری دفتروں، کچہریوں اور اسپتالوں، یہاں تک کہ اسکولوں اور کالجوں کا حال بھی پہلے سے کہیں بدتر ہے ۔ لال فیتا ہر جگہ بیحد لمبا ہو گیا ہے ۔ دفتروں میں سے مسلوں کا پتہ نہ چلنا اور مسلوں میں سے بیانوں یا کاغذوں کا گم ہو جانا آئے دن سننے میں آتا رہتا ہے ۔ قدرتی طور پر چوریاں اور ڈاکے بھی بیحد بڑھ رہے ہیں ۔ خود راجدھانیوں کے اندر جس طرح کے ڈاکے آج سننے میں آرہے ہیں انگریزی زمانے میں اتنے نہیں آتے تھے ۔

ہم اِس طرح کی باتوں کو لکھتے ہوئے سکھ انوبھو نہیں کر رہے ہیں، نہ ہم مثالیں دینا چاہتے ہیں ۔ کیول ایک چھوٹی سی، پر ایک نگاہ سے بہت بڑی، مثال ہم یہاں دیتے ہیں دفتروں میں لال فیتے کا اِستعمال اور جنتا کے ہت کی طرف سے بےپرواہی اِس حد کو پہنچی ہوئی ہے کہ اتنی ہی مثالیں اِس کی مل سکتی ہیں کہ جو لوگ تیس تیس سال وفاداری کے ساتھ سرکاری نوکری کر کے پنشن کے حقدار ہو گئے انہیں کام چھوڑے چار چار اور پانچ پانچ سال بیت چکے اور پنشن کا ایک پیسہ نہیں ملا ۔ لال فیتہ ان کی مسلوں کو ایک دفتر سے دوسرے دفتر گھماتا رہتا ہے ۔ کوئی شاید یہ نہیں سوچتا کہ اِس طرح کے ابھاگے کیسے اور کہاں سے اپنا اور اپنے بچوں کا پیٹ پالتے ہونگے ۔

پچھلے دنوں دلی میں ہم نے ایک انوکھی اور پتے کی بات سنی ۔ ایک نئے بھرتی ہوئے سرکاری افسر نے ہم سے کہا کہ کوئی مسل اُن کے پاس آئی ۔ اُنھوں نے کام پورا کر دیا ۔ اِس پر اُن کے اُوپر کے افسر نے اُنھیں بلاکر سمجھایا کہ—"آپ ابھی نئے ہیں، سرکاری کام کا یہ طریقہ نہیں ہے، آئندہ جب کبھی کوئی مسل آپ کے پاس آوے اُس میں کوئی نہ کوئی اعتراض نکال کر نوٹ لگاکر مسل آگے چلتی کر دیا کیجئے، جہاں تک ہوسکے کام کے پورا کرنے یعنی آخری حکم کی ذمہ واری اپنے اُوپر نہ لیجئے، دفتر میں کام کا یہی ٹھیک طریقہ ہے ۔" ہمیں اِس کے خود بھی کئی ذاتی تجربے ہیں، پر ہم اُن میں نہ پڑینگے ۔

کانگریس اور گاندھی جی ۔

کانگریس منسٹروں یا دھارا سبھاؤں کے کانگریسی ممبروں کا آدر جنتا کے دلوں میں عام طور پر پہلے ہی نہیں کے برابر تھا ۔ اِس بار جس طرح کے لوگوں کو ٹکٹ دیئے گئے ہیں اُس سے یہ آدر اور بھی کم ہو جانا قدرتی ہے ۔ یہاں ہم تھوڑے سے نیک، محنتی اور ایماندار لوگوں کی بات نہیں کر رہے ہیں ۔ ہم ایک عام بات کر رہے ہیں ۔ ہمیں اِس سمے 1947-48 کا گاندھی جی کا اِس بات پر زور دینا بار بار یاد آرہا

है कि—"कांग्रेस संस्था को तोड़ दिया जावे, नहीं तो राज सत्ता हाथ में आने के साथ-साथ कांग्रेस की उपयोगिता और उसका मान दिन दिन घटेंगे, बढ़े गे नहीं" यह हालत अगले पाँच साल में और अधिक बदतर ही होगी, बेहतर होने की अभी कोई सूरत नहीं जनता के दुख कम नहीं होंगे.

असलीयत यह है कि सारी कागरेस एक आदमी की हिम्मत, सूझ और सच्चाई के सहारे चल रही है कागरेस का शरीर बादी से फूला हुआ शरीर है, या एक ऐसे माटे दरख्त के तने की तरह है जिसे अन्दर से दीमक ने खोखला कर रखा है कम या अधिक यही हालत आखीर में अगरेजो की थी एक जबरदस्त हवा का झोका और इस दरख्त की जड़ें ऊपर और टहनिया नीचे दिखाई देंगी उस समय देश की क्या हालत होगी और देशवासियों का किन मुसीबतो में से निकलना पड़ेगा इसका अन्दाजा लगा सकना इस समय कठिन है

बात यह है कि कागरेस के और देश के करता धरता जवाहर लालजी अन्तरराष्ट्रीय नीति के तैराक हैं यही उनका विशेष मैदान था और है अन्तर राष्ट्रीय नीति में हम बड़े दर्जे तक सफल रहे और देश का मान भी बढ़ा पर जहाँ तक देश के अन्दर के शासन का सम्बन्ध है और खासकर जहाँ तक रोजगारी, माली, आर्थिक और इन्तजामी मामलो का सम्बन्ध है हम बिलकुल नाकाम रहे और उन्हीं गलत रास्तों पर हम आँख बन्द करके आगे का बढ़े चले जा रहे हैं

पहली पंचवर्ष योजना

इस की एक बड़ी मिसाल हमारी पचवर्षी योजनाएँ हैं हमारी पहली यानी सन 1951-56 की पचवर्षी योजना पर कुल 2,356 करोड़ रुपये खर्च हुए हैं दूसरी यानी सन 19 6 61 की पंचवर्षी योजना पर कुल खर्च का अन्दाजा 4,800 करोड़ है यानी पहली योजना के दुगने से अधिक यह आकड़े हम कुछ महीने पहले की सरकारी रिपोर्टो से दे रहे हैं

पहली पचवर्षी योजना से देश को क्या लाभ हुआ इसे यदि हम जानना चाहे तो मामूली गाँव या गलियो में जाकर नहीं जान सकते, आम जनता की झोंपड़ियो या मजदूरों की खोलियों में जाकर भी नहीं जान सकते, इसके लिये हमें छपी हुई सरकारी रिपोर्टों या बेजान सरकारी कागजों या कहीं-कहीं कुछ नए-नए ढंग की विशाल इमारतों या कुछ पूँजी पतियो की तिजोरियो, या कुछ थोड़े से ऐसे गाँव में जाकर समझना होगा जिनकी हालत वास्तव मे क्रीम पावडर मले लिपस्टिक लगाए बीमार लड़कियों से बेहतर नहीं है

هے کہ—"کانگریس سنستھا کو توڑ دیا جاوے' نہیں تو راج ستا هاتھ میں آنے کے ساتھ ساتھ کانگریس کی اُپیوگتا اور اُس کا مان دن دن گھٹینگے' بڑھینگے نہیں ." یہ حالت اگلے پانچ سال میں اور اَدھک بدتر هی هوگی' بہتر هونے کی ابھی کوئی صورت نہیں . جنتا کے دکھ کم نہیں هونگے .

اصلیت یہ هے کہ ساری کانگریس ایک آدمی کی همت' سوجھ اور سچائی کے سہارے چل رهی هے کانگریس کا شریر بادی سے پھولا هوا شریر هے' یا ایک ایسے موٹے درخت کے تنے کی طرح هے جسے اندر سے دیمک نے کھوکھلا کر رکھا هے . کم یا ادھک یہی حالت آخیر میں انگریزوں کی تھی . ایک زبردست هوا کا جھونکا اور اس درخت کی جڑیں اُوپر اور ٹہنیاں نیچے دکھائی دینگی . اُس سمئے دیش کی کیا حالت هوگی اور دیش واسیوں کو کن مصیبتوں میں سے نکلنا پڑیگا اس کا اندازہ لگا سکنا اس سمئے کٹھن هے

بات یہ هے کہ کانگریس کے اور دیش کے کرتا دھرتا جواهر لال جی انترراشٹریہ نیتی کے تیراک هیں . یہی اُن کا وشیش میدان تھا اور هے انترراشٹریہ نیتی میں هم بڑے درجے تک سپھل رهے اور دیش کا مان بھی بڑھا . پر جہاں تک دیش کے اندر کے شاسن کا سمبندھ هے اور خاصکر جہاں تک روزگاری' مالی' آرتھک اور انتظامی معاملوں کا سمبندھ هے هم بالکل ناکام رهے اور اُنہیں غلط راستوں پر هم آنکھ بند کر کے آگے کو بڑھے چلے جا رهے هیں .

پہلی پنچ ورشی یوجنا .

اس کی ایک بڑی مثال هماری پنچ ورشی یوجنائیں هیں هماری پہلی یعنی 1951 56 کی پنچ ورشی یوجنا پر کل 2 356 کرور روپیہ خرچ هوئے هیں دوسری یعنی سن 1956 61 کی پنچ ورشی یوجنا پر کل خرچ کا اندازہ 4,800 کروڑ روپیہ هے یعنی پہلی یوجنا کے دگنے سے ادھک . یہ آنکڑے هم کچھ مہینے پہلے کی سرکاری رپورٹوں سے دے رهے هیں

پہلی پانچ ورشی یوجنا سے دیش کو کیا لابھ هوا اسے یدی هم جاننا چاهیں تو معمولی گاؤں یا گلیوں میں جاکر نہیں جان سکتے' عام جنتا کی جھونپڑیوں یا مزدوروں کی کھولیوں میں جاکر بھی نہیں جان سکتے' اس کے لئے همیں چھپی هوئی سرکاری رپورٹوں یا بےجان سرکاری کاغذوں یا کہیں کہیں کچھ نئے نئے ڈھنگ کی وشال عمارتوں' یا کچھ پونجی پتیوں کی تجوریوں' یا کچھ تھوڑے سے ایسے گاؤں میں جاکر سمجھنا هوگا جن کی حالت واستو میں کریم پاؤڈر ملے' لپسٹک لگائے بیمار لڑکیوں سے بہتر نہیں هے.

हमें मालूम हुआ है कि कहीं-कहीं तो यह चमक दमक ऐन मौके पर किसी सरकारी दर्शक या बाहर के मेहमान को दिखाने के लिये पैदा कर ली जाती है और फिर मौक़ा निकल जाने पर वही पुरानी सूरत !

दूसरी पंचवर्षी योजना.

इस दूसरी पंचवर्षी योजना की रक़म इस तरह पूरी की जायगी: जो टैक्स इस समय देशवासियों पर लगे हुए हैं उनसे इस अरसे में बचत 350 करोड़ रुपया होगी. इसके अलावा नए टैक्स लगाकर इन पाँच बरस में 450 करोड़ रुपया जनता से और वसूल किया जावेगा. इस अरसे में सरकार खुले बाज़ार में प्रामिसरी नोटों के .ज़रिये 700 करोड़ रुपया क़र्ज़ लेगी. डाकख़ानों वग़ैरह में लोगों की छोटी मोटी बचत लग भग 500 करोड़ रुपये इसी काम में लगेगी. रेलवे की बचत से 150 करोड़ रुपये इस काम के लिये लिये जावेंगे. प्राविडेन्ट फन्ड और .ज़मानतों वग़ैरह का रुपया 250 करोड़ इसमें लगा दिया जावेगा. विदेश से 800 करोड़ रुपये की मदद की आशा की जा रही है. बताया जाता है कि 1, 200 करोड़ रुपये की कमी रहेगी, जिसे शायद काग़ज़ के टुकड़े छाप-छाप कर पूरा किया जावेगा. यह सब मिलाकर भी कुल 4, 400 करोड़ रुपया होता है. 400 करोड़ रुपये की कमी अभी और रहेगी. यह कमी अभी यूँही छोड़ दी गई है, बाद में देखा जायगा कि यह कैसे पूरी की जाय.

यह आँकड़े कुछ महीने पहले के हैं. इस बीच आँकड़ों में जो उलट फेर सोचा जा रहा है वह हालत को और अधिक दर्दनाक बनाने वाला ही हो सकता है, सँभालने वाला नह .

अब रहा इस ख़र्चे से देश के दुख दूर होने का सवाल. हमारे अनेक शासक यह मानने ही को तैयार नहीं थे और कुछ अब भी नहीं मानते कि देश में लोग बेकार और भूखे या आधा पेट सोने वाले भी हैं. जब चारों तरफ़ शोर मचा तो बेकारों के आंकड़े तैयार कराए गए. हिसाब लगाया गया कि लग भग पौने दो करोड़ आदमी इस देश में इस समय बेकार है. .ज़ाहिर है कि यह आँकड़े सरकारी तौर पर तैयार किये हुए आँकड़े हैं. जिन बुनकरों और दूसरे हाथ के कारीगरों का काम आज़ादी के इन दस बरस के अन्दर धीरे-धीरे ठप होता चला गया और ठप होता चला जा रहा है उन्हें मिलाकर तादाद इससे कहीं अधिक है. पर इन पौने दो करोड़ के बारे में भी सरकार की तरफ़ से यह कहा जा रहा है कि अगले पाँच बरस के अन्दर यानी अब से लेकर सन 1961 तक में सरकार उम्मीद करती है कि वह इन में से 80 लाख .और आदमियों को काम दे सकेगी. बाक़ी अगर सरकार की यह आशा पूरी भी हो गई तो भी

ھمیں معلوم ھوا ھے کہ کہیں کہیں تو یہ چمک دمک عین موقعہ پر کسی سرکاری درشک یا باھر کے مہمان کو دکھا نے کے لئے پیدا کرلی جاتی ھے اور پھر موقعہ نکل جانے پر وھی پرانی صورت !

دوسری پنچ ورشی یوجنا.

اِس دوسری پنچ ورشی یوجنا کی رقم اِس طرح پوری کی جائیگی : جو ٹیکس اِس سمئے دیش واسیوں پر لگے ھوئے ھیں ان سے اِس عرصہ میں بچت 350 کروڑ روپیہ ھوگی . اِس کے علاوہ نئے ٹیکس لگا کر اِن پانچ برس میں 450 کروڑ روپیہ جنتا سے اور وصول کیا جاویگا . اِس عرصہ میں سرکار کھلے بازار میں پرامیسری نوٹوں کےذریعہ 700 کروڑ روپیہ قرض لیگی . ڈاکخانوں وغیرہ میں لوگوں کی چھوٹی موٹی بچت لگ بھگ 500 کروڑ روپیہ اِسی کام میں لگے گی . ریلوے کی بچت سے 150 کروڑ روپیہ اِس کام کے لئے لئے جاوینگے . پروویڈنٹ فنڈ اور ضمانتوں وغیرہ کا روپیہ 250 کروڑ اِس میں لگا دیا جاویگا . ودیش سے 800 کروڑ روپیہ کی مدد کی آشا کی جا رھی ھے . بتایا جاتا ھے کہ 1,200 کروڑ روپیہ کی کمی رھے گی جسے شاید کاغذ کے ٹکڑے چھاپ چھاپ کر پورا کیا جاویگا . یہ سب ملاکر بھی کل 4, 400 کروڑ روپیہ ھوتا ھے . 400 کروڑ روپیہ کی کمی ابھی اور رھے گی . یہ کمی ابھی یونہی چھوڑ دی گئی ھے، بعد میں دیکھا جایگا کہ یہ کیسے پوری کی جائے .

یہ آنکڑے کچھ مہینے پہلے کے ھیں . اِس بیچ آنکڑوں میں جو اُلٹ پھیر سوچا جا رھا ھے وہ حالت کو اور ادھک دردناک بنانے والا ھوسکتا ھے، سنبھالنے والا نہیں .

اب رھا اِس خرچ سے دیش کے دکھ دور ھونے کا سوال . ھمارے انیک شاسک یہ ماننے کو ھی تیار نہیں تھے اور کچھ اب بھی نہیں مانتے کہ دیش میں لوگ بیکار اور بھوکے یا آدھا پیٹ سونے والے بھی ھیں . جب چاروں طرف شور مچا تو بیکاروں کے آنکڑے تیار کرائے گئے . حساب لگایا گیا کہ لگ بھگ پونے دو کروڑ آدمی اِس دیش میں اِس سمئے بیکار ھیں . ظاھر ھے کہ یہ آنکڑے سرکاری طور پر تیار کئے ھوئے آنکڑے ھیں . جن بنکروں اور دوسرے ھاتھ کے کاریگروں کا کام آزادی کے اِن دس برس کے اندر دھیرے دھیرے ٹھپ ھوتا چلا گیا اور ٹھپ ھوتا چلا جا رھا ھے اُنھیں ملاکر تعداد اِس سے کہیں ادھک ھے . پر اِن پونے دو کروڑ کے بارے میں بھی سرکار کی طرف سے یہ کہا جا رھا ھے کہ اگلے پانچ برس کے اندر یعنی اب سے لیکر سن 1961 تک میں سرکار اُمید کرتی ھے کہ وہ اِن میں سے 80 لاکھ اور آدمیوں کو کام دے سکے گی . یعنی اگر سرکار کی یہ آشا پوری بھی ھوگئی تو بھی

सरकार ही के अनुसार पाँच साल के बाद भी कम से कम इतने ही आदमी तो और बेकार रहेंगे ही असली बेकारों और अर्ध बेकारो की तादाद इससे कई गुना समझनी चाहिये.

हम इस योजना के खर्च की तफसील-में आना बेकार समझते हैं. हम मानते हैं कि हमारी पहली पंचवर्षी योजना से कुल मिलाकर मुल्क की दौलत कुछ बढ़ी है और अगली योजना में भी बढ़ेगी पर वह बढ़ी है और बढ़ेगी उन मुट्ठी भर पूँजीपतियों की तिजोरियों में जा दूसरे पिछड़े हुए या दबसट में आए हुए मुल्कों की मन्डियों में अपने कारखानों का माल बेचकर वहां से रुपया खींचकर खुश हैं या कुछ बढ़ी है श्री राजागापालाचारी के शब्दों में थोड़े से बड़े बड़े ठेकेदारों के यहा या इस काम से सम्बन्ध रखने वाले कुछ सरकारी लागा क यहा इस बढ़ौती का करोड़ों ग़रीबों के साथ कोई सम्बन्ध नहीं इस बढ़ौती की चाट अधिक बढ़िया मशीनो और 'रैशनलाईजेशन" के द्वारा ग़रीबों की ग़रीबी का और अधिक चमका दती है और जगह जगह बेकारी को भी और बढ़ा रही है

सच यह है कि हमारी यह सारी आर्थिक योजना उन लोगों के दिमाग़ों की उपज है जा अपनी उमर के उन दिनों में जब आदमी पर हर नई चीज का सब से अधिक असर पड़ना है पूँजीवादी इगलैंड के अर्थशास्त्र की पुरानी किताबो और दक़ियानूसी पूँजीवादी आर्थिक उसूलों पर पले हुए हैं उन्हें न महात्मा गाधी के आर्थिक सिद्धान्तों पर विश्वास है और न कम्युनिज्म के आर्थिक उसूलों पर उनकी आँखें साम्राज वाद का नफ़रत से देखते हुए भी अमरीकी और अगरेज़ी अर्थ व्यवस्था से चकाचौंध हैं वह भारत का दूसरा इंगलिस्तान बना देने के लिये बेचैन हैं अच्छी से अच्छी नियत रखते हुए और देश का भला चाहते हुए भी वह इस ग़रीब देश के लिय काई हितकर आर्थिक याजना तैयार नही कर सकते.

एक और छाटी सी बात यहा याद रखने के क़ाबिल है हमारी आजकल की बड़ी से बड़ी याजनाओं में से अधिकतर अगरज़ो के समय की और अंगरेज़ो ही की बनाई हुई हैं. अंगरेज़ उस समय उनके ज़रिये हिन्दुस्तान म अपने बड़े से बड़े कारखाने खालकर सस्ती हिन्दुस्तानी मज़दूरी से फ़ायदा उठाकर इस देश का धन देर तक चूसते रहने की तरकीबें सोच रहे थे वह अभी इस देश मे गाधी जी के आन्दोलन के कारण अपने पैर उखड़े उखड़े महसूस करते थे इसीलिये यह याजनाएँ अभी सुरक्षित अलमारियो मे रखी हुई थीं. उनमें मदद देने वाले हिन्दुस्तानी अफ़सर और इनजीनियर मौजूद थे. उन्हीं की मदद से हम इन याजनाओ को अलमारियों में से निकालकर उनके द्वारा देश को उन्नति के पथ पर आगे बढ़ाने की कोशिशें कर रहे हैं.

سرکار جی کے انوسار پانچ سال کے بعد بھی کم سے کم اتنے ہی آدمی تو اور بیکار رہینگے ہی. اصلی بیکاروں اور اردھ بیکاروں کی تعداد اس سے کئی گنا سمجھنی چاہئیے.

ہم اس یوجنا کے خرچ کی تفصیل میں جانا بیکار سمجھتے ہیں. ہم مانتے ہیں کہ ہماری پہلی پنچ ورشی یوجنا سے کل ملا کر ملک کی دولت کچھ بڑھی ہے اور اگلی یوجنا میں بھی بڑھیگی. پر وہ بڑھی ہے اور بڑھے گی اُن مٹھی بھر پونجی پتیوں کی تجوریوں میں جو دوسرے پچھڑے ہوئے یا دبست میں آئے ہوئے ملکوں کی منڈیوں میں اپنے کارخانوں کا مال بیچکر وہاں سے روپیہ کھینچکر خوش ہیں یا کچھ بڑھی ہے شری راجا گوپالاچاری کے شبدوں میں تھوڑے سے بڑے بڑے ٹھیکیداروں کے یہاں یا اس کام سے سمبندھ رکھنے والے کچھ سرکاری لوگوں کے یہاں. اس بڑھوتی کا کروڑوں غریبوں کے ساتھ کوئی سمبندھ نہیں. اس بڑھوتی کی چاٹ ادھک بڑھیا مشینوں اور "ریشنلائزیشن' کے دوارا غریبوں کی غریبی کو اور ادھک چمکا دیتی ہے اور جگہ جگہ بیکاری کو بھی اور بڑھا رہی ہے

سچ یہ ہے کہ ہماری یہ ساری آرتھک یوجنا اُن لوگوں کے دماغوں کی اُپج ہے جو اپنی عمر کے اُن دنوں میں جب آدمی پر ہر نئی چیز کا سب سے ادھک اثر پڑتا ہے پونجی وادی انگلینڈ کے ارتھ شاستر کی پرانی کتابوں اور دقیانوسی پونجی وادی آرتھک اصولوں پر پلے ہوئے ہیں. انہیں نہ مہاتما گاندھی کے آرتھک سدھانتوں پر وشواس ہے اور نہ کمیونزم کے آرتھک اصولوں پر. اُن کی آنکھیں سامراج واد کو نفرت سے دیکھتے ہوئے بھی امریکی اور انگریزی ارتھ ویوستھا سے چکاچوندھ ہیں وہ بھارت کو دوسرا انگلستان بنا دینے کے لیے بےچین ہیں. اچھی سے اچھی نیت رکھتے ہوئے اور دیش کا بھلا چاہتے ہوئے بھی وہ اِس غریب دیش کے لیے کوئی ہتکر آرتھک یوجنا تیار نہیں کر سکتے

ایک او چھوٹی سی بات یہاں یاد رکھنے کے قابل ہے ہماری آجکل کی بڑی سے بڑی یوجناؤں میں سے ادھکتر انگریزوں کے سمے کی اور انگریزوں ہی کی بنائی ہوئی ہیں انگریز اُس سمے اُن کے ذریعہ ہندوستان میں اپنے بڑے سے بڑے کارخانے کھولکر سستی ہندستانی مزدوری سے فائدہ اُٹھا کر اس دیش کا دھن دیر تک چوستے رہنے کی ترکیبیں سوچ رہے تھے وہ ابھی اس دیش میں گاندھی جی کے آندولن کے کارن اپنے پیر اُکھڑے اُکھڑے محسوس کرتے تھے. اسی لئے یہ یوجنائیں ابھی سرکشت الماریوں میں رکھی ہوئی تھیں. اُن میں مدد دینے والے ہندستانی افسر اور انجینیر موجود تھے اُنہیں کی مدد سے ہم ان یوجناؤں کو الماریوں میں سے نکالکر اُن کے دوارا دیش کو اُنتی کے پتھ پر آگے بڑھانے کی کوششیں کر رہے ہیں.

दूसरे देशों का क़र्ज़ा.

ज़ाहिर है इस तरह की योजनाएं बिना दूसरे पूँजीपति देशों से भीख या क़र्ज़ा मांगे नहीं चल सकतीं, क्योंकि अपने यहां के ग़रीब लोगों को नए टैक्सों या तरकीबों द्वारा चूसने की एक हद है. दूसरे देशों से भीख या क़र्ज़ा मांगने की इस फ़र्ज़ी ज़रूरत ने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में भी हमारे लिये नई गुत्थियां पैदा कर दी हैं. अमरीकी राजनीतिज्ञों की अमन पसन्दी की हमें तारीफ़ें करनी पड़ती हैं. उनके सामने बैठकर हमें रूसी राजनीतिज्ञों के शराब पीने आदि के मज़ाक़ उड़ाने पड़ते हैं. श्री राजगोपालाचारी ने बिलकुल सच कहा है कि हंगरी पर अपनी नीति का ख़मियाज़ा हमें काश्मीर में उठाना पड़ा. हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि हम कितना ही बचने की कोशिश करें विदेशी पूँजी और विदेशी राजनीति को हम एक दूसरे से अलग नहीं कर सकते और जिस तरह की योजनाओं में हम पड़े हुए हैं उनके अमलदरामद के साथ साथ देशी पूँजीपतियों और विदेशी पूँजीपतियों में साज़ बाज़ के मौक़े बढ़ते चले जाएंगे और इस तरह की साज़ बाज़ इन हालतों में क़ुदरती है.

हमारी यह योजनाएं न रूस और चीन की तरह अमन की योजनाएं हैं और न अमरीका की तरह जंग की, न यह गाँधीवादी योजनाएँ हैं और न साम्यवादी. यह हैं दूसरों की नक़ल में शुद्ध पूँजीवादी योजनाएं, जिनका कम से कम ख़तरनाक नतीजा यह हो सकता है कि वह एक ऐसे भारी भरकम क़िले की तरह जो कमज़ोर बुनियादों पर खड़ा कर दिया गया हो किसी भी समय धड़धड़ा कर गिरें और सिवाय मलबे और मुसीबत के और कुछ न छोड़ जाएँ.

हमारे शासक.

हमारा यह विचार भी पक्का होता जा रहा है कि देश के शासन की बाग जब तक अंगरेज़ी ज़माने के अंगरेज़ी कालिजों के पढ़े हुए लोगों के हाथों से निकलकर सचमुच हाथ से मज़दूरी किये हुए तजरबेकार, नेक और समझदार लोगों के हाथों में नहीं आवेगी तब तक देश की जनता का सच्चा भला नहीं हो सकता. रूस और चीन में कोई और भलाई हो या न हो वहां का शासन उन लोगों के हाथों में है जो कल तक अपने उन्हीं हाथों से मज़दूरी करते रहे हैं. जो दो सबसे बड़े रूसी नेता हमारे देश में आये थे उन दोनों की उठती जवानियां कारख़ानों और खदानों के अन्दर कुदाल और फावड़ा चलाने में बीती हैं. तब ही वह अपने देश की आम जनता के दुखों को समझ सके और दूर कर सके. हमारी सरकार के सलाहकारों में अभी तक वह लोग भरे हुए हैं जो अंगरेज़ी ज़माने में उस ज़माने के देश भक्तों के ख़िलाफ़ अंगरेज़ सरकार के सलाहकार थे.

دوسرے دیشوں کا قرضہ .

ظاہر ہے اِس طرح کی یوجنائیں بنا دوسرے پونجی پتی دیشوں سے بھیک یا قرضہ مانگے نہیں چل سکتیں' کیونکہ اپنے یہاں کے غریب لوگوں کو نئے ٹیکسوں یا ترکیبوں دوارا چوسنے کی ایک حد ہے . دوسرے دیشوں سے بھیک یا قرضہ مانگنے کی اِس فرضی ضرورت نے انتر راشٹریہ راج نیتی میں بھی ہمارے لئے نئی گتھیاں پیدا کردی ہیں . امریکی راج نیتکوں کی امن پسندی کی ہمیں تعریفیں کرنی پڑتی ہیں . اُن کے سامنے بیٹھکر ہمیں روسی راج نیتکوں کے شراب پینے آدی کے مزاق اُڑانے پڑتے ہیں . شری راجا گوپالچاری نے بالکل سچ اکہا ہے کہ ہنگری پر اپنی نیتی کا خمیازہ ہمیں کشمیر میں اُٹھانا پڑا . ہمیں یہ بھی دھیان میں رکھنا چاہئے کہ ہم کتنا ہی بچنے کی کوشش کریں ودیشی پونجی اور ودیش راج نیتی کو ہم ایک، دوسرے سے الگ نہیں کر سکتے اور جس طرح کی یوجنائوں میں ہم پڑے ہوئے ہیں اُن کے عمل درآمد کے ساتھ ساتھ دیشی پونجی پتیوں اور ودیشی پونجی پتیوں میں ساز باز کے موقع بڑھتے چلے جائینگے اور اِس طرح کی ساز باز اِن حالتوں میں قدرتی ہے .

ہماری یہ یوجنائیں نہ روس اور چین کی طرح امن کی یوجنائیں ہیں اور نہ امریکہ کی طرح جنگ کی' نہ یہ گاندھی وادی یوجنائیں ہیں اور نہ سامیہ وادی . یہ ہیں دوسروں کی نقل میں شدھ پونجی وادی یوجنائیں جن کا کم سے کم خطرناک نتیجہ یہ ہو سکتا ہے کہ وہ ایک ایسے بھاری بھر کم قلعہ کی طرح جو کمزور بنیادوں پر کھڑا کر دیا گیا ہو کسی بھی سمئے دھڑ دھڑا کر گریں اور سوائے ملبہ اور مصیبت کے اور کچھ نہ چھوڑ جائیں .

ہمارے شاسک .

ہمارا یہ وچار بھی پکا ہوتا جا رہا ہے کہ دیش کے شاسن کی باگ جب تک انگریزی زمانے کے انگریزی کالجوں کے پڑھے ہوئے لوگوں کے ہاتھوں سے نکل کر سچ مچ ہاتھ سے مزدوری کئے ہوئے تجربہ کار' نیک اور سمجھدار لوگوں کے ہاتھوں میں نہیں آویگی تب تک دیش کی جنتا کا سچا بھلا نہیں ہو سکتا . روس اور چین میں کوئی اور بھلائی ہو یا نہ ہو وہاں کا شاسن اُن لوگوں کے ہاتھوں میں ہے جو کل تک اپنے اُنہیں ہاتھوں سے مزدوری کرتے رہے ہیں . جو دو سب سے بڑے روسی نیتا ہمارے دیش میں آئے تھے اُن دونوں کی اُٹھتی جوانیاں کارخانوں اور کھدانوں کے اندر کدال اور پھاوڑا چلانے میں بیتی ہیں . تب ہی وہ اپنے دیش کی عام جنتا کے دکھوں کو سمجھ سکے اور دور کر سکے . ہماری سرکار کے صلاح کاروں میں ابھی تک وہ لوگ بھرے ہوئے ہیں جو انگریزی زمانے میں اُس زمانے کے دیش بھکتوں کے خلاف انگریز سرکار کے صلاح کار تھے .

हमें इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि इस तरह की योजनाएँ करोड़ों ग़रीब कारीगरों के हाथ के धन्धों को और भी ख़त्म कर देंगी, दूसरे और ख़ासकर साम्राजवादी देशों का क़र्ज़ा इस देश पर लाद देंगी, और आम जनता की ग़रीबी, बेकारी, बेरोज़गारी और आए दिन की तकलीफ़ो को घटाने के बजाय और अधिक बढ़ा देंगी

क्या होना चाहिये.

अब सवाल यह रह जाता है कि आख़िर होना क्या चाहिये ? इस समय के शासको और नेताओं के बीच मे हमारी आवाज़ नक़्क़ारख़ाने में तूती की आवाज़ हो सकती है. पर हम मजबूर हैं इन दस बरस के अन्दर अपने देश का और बाहर के देशों को अच्छी तरह देखने के बाद हमारा विश्वास महात्मा गाधी और उनके सिद्धान्तों में दिन दिन मज़बूत होता जा रहा है. हमें अपने लाखों गाँवो को उजाड़ना नहीं है, उन्हें फिर से बसाना है. गाँव की आबादी को शहरों में ला-ला कर हमें गाव वालों और शहर वालों दोनों को चरित्र भ्रष्ट नहीं करना है इसके लिये गाव के और हाथ के धन्धों और बड़े कल कारख़ानो के बीच हमे एक समतोल यानी तवाज़ुन पैदा करना है इस तरह के समतोल की बात सरकार भी करती है और दूसरी पचवर्षी योजना में इसकी गुनजायश भी रखी गई है. पर सरकार का समतोल वह समताल नहीं है जो गाधी ज़ी चाहते थे या जो देश की बेकारी को दूर कर सकता है और देश के लिये हितकर हो सकता है सरकार का समताल वह समतोल है जा हाथ के लगभग सब धन्धो का धीरे धीरे बदल कर उन्हें अन्त में बड़े बड़े पूंजीपति कारख़ानो का रूप दे देना चाहता है हमारे आजकल के शासक हाथ के धन्धों को अधिक से अधिक कुछ दिनो के लिये एक मजबूरी की बुराई मानते हैं इसके ख़िलाफ़ हमें विश्वास है कि जैसा गाधी जी कहा करते थे अगर हमे सब छोटे बड़ देशा की आज़ादी और उनके स्वावलम्बन की रक्षा करनी है और एक देश द्वारा दूसरे देश के राजनैतिक या आर्थिक शाषण का हमेशा के लिये ख़तम करना है तो हमे घरेलू उद्याग धन्धों और बड़े बड़े कल कारख़ानो दानो मे इस तरह का समतोल पैदा करना होगा कि दोनो साथ साथ ज़िंदा रह सकें हमें दोनों के लिये अलग अलग मैदान तय कर देने होंगे. गाधीजी के अनुसार वह समतोल यह है खाने और कपड़े का अधिकतर सामान हाथ के ही धन्धो से ही तैयार हो, बाक़ी अधिकतर चीज़ें जैसे काग़ज़ छपाई, रेल और हवाईजहाज़ के पुर्ज़े, मोटरें, साइन्सी औज़ार, ज़रूरत के अनुसार बिजली, सीने की मशीनें, उस तरह के साधन जो हमें चाँद और मंगल तारे तक उड़ाकर ले जावें, यह और सैकड़ों इसी तरह की चीज़ तैयार करना बड़े बड़े कल कारख़ाने के लिये रहे.

ہمیں اس میں کچھ بھی سندیہہ نہیں کہ اس طرح کی یوجنائیں کروڑوں غریب کاریگروں کے ہاتھ کے دھندوں کو اور بھی ختم کر دینگی، دوسرے اور خاصکر سامراج‌وادی دیشوں کا قرضہ اس دیش پر لاد دینگی، اور عام جنتا کی غریبی، بیکاری، بے روزگاری اور آئے دن کی تکلیفوں کو گھٹانے کے بجائے اور ادھک بڑھا دینگی ۔

کیا ہونا چاہئے ۔

اب سوال یہ رہ جاتا ہے کہ آخر ہونا کیا چاہئے ؟ اس سمے کے شاسکوں اور نیتاؤں کے بیچ میں ہماری آواز نقارخانہ میں طوطی کی آواز ہو سکتی ہے پر ہم مجبور ہیں ان دس برس کے اندر اپنے دیش کو اور باہر کے دیشوں کو اچھی طرح دیکھنے کے بعد ہمارا وشواس مہاتما گاندھی او ان کے سدھانتوں میں دن دن مضبوط ہوتا جا رہا ہے ۔ ہمیں اپنے لاکھوں گاؤں کو اجاڑنا نہیں ہے، انہیں پھر سے بسانا ہے ۔ گاؤں کی آبادی کو شہروں میں لا لا کر ہمیں گاؤں والوں اور شہر والوں دونوں کو چرتر بھرشٹ نہیں کرنا ہے اس کے لئے گاؤں کے اور ہاتھ کے دھندوں اور بڑے کل کارخانوں کے بیچ ہمیں ایک سمتول یعنی توازن پیدا کرنا ہے اس طرح کے سمتول کی بات سرکار بھی کرتی ہے اور دوسری پنچ ورشی یوجنا میں اس کی گنجائش بھی رکھی گئی ہے ۔ پر سرکار کا سمتول وہ سمتول نہیں ہے جو گاندھی جی چاہتے تھے یا جو دیش کی بیکاری کو دور کر سکتا ہے اور دیش کے لئے ہتکر ہو سکتا ہے سرکار کا سمتول وہ سمتول ہے جو ہاتھ کے لگ بھگ سب دھندوں کو دھیرے دھیرے بدل کر انہیں انت میں بڑے بڑے پونجی پتی کارخانوں کا روپ دے دینا چاہتا ہے ہمارے آجکل کے شاسک ہاتھ کے دھندوں کو ادھک سے ادھک کچھ دنوں کے لئے ایک مجبوری کی برائی مانتے ہیں اس کے خلاف ہمیں وشواس ہے کہ جیسا گاندھی جی کہا کرتے تھے اگر ہمیں سب چھوٹے بڑے دیشوں کی آزادی اور ان کے سواولمبن کی رکشا کرنی ہے اور ایک دیش دوارا دوسرے دیش کے راجنیتک یا آرتھک شوشن کو ہمیشہ کے لئے ختم کرنا ہے تو ہمیں گھریلو ادیوگ دھندوں اور بڑے بڑے کل کارخانوں دونوں میں اس طرح کا سمتول پیدا کرنا ہوگا کہ دونوں ساتھ ساتھ زندہ رہ سکیں ۔ ہمیں دونوں کے لئے الگ الگ میدان طے کر دینے ہونگے ۔ گاندھی جی کے انوسار وہ سمتول یہ ہے ۔ کھانے اور کپڑے کا ادھک تر سامان ہاتھ کے ہی دھندوں سے تیار ہو، باقی ادھک تر چیزیں جیسے کاغذ، چھپائی ریل اور ہوائی جہاز کے پرزے، موٹریں، سائنسی اوزار، ضرورت کے انوسار بجلی، سینے کی مشینیں، اس طرح کے سادھن جو ہمیں چاند اور منگل تارے تک اڑا کر لے جاویں، یہ اور سیکڑوں اسی طرح کی چیزیں تیار کرنا بڑے بڑے کل کارخانوں کے لئے رہے ۔

साइन्स के लिये मैदान

साइन्स के लिये भी इसमें तरक़्क़ी का काफी मैदान है. साइन्स की तरक़्क़ी के लिये यह जरूरी नहीं है कि हम अपना गेहूँ मिलों से पिसाकर और अपना चावल क़िलों में कुटवाकर उसकी पोषक शक्ति को भी नष्ट करें, उसके स्वाद को भी बिगाड़ें और करोड़ों को बेरोजगार कर दें इसी तरह साइन्स की तरक़्क़ी के लिये यह जरूरी नहीं है कि हम मिलों में कपड़ा तैयार करके थोड़े से पूँजीपतियों की तिजोरियां भर दें और लाखों बुनकरों को सड़को पर भूखा मरने के लिये छोड़ दें. साइन्स की तरक़्क़ी के लिये जरूरी नहीं है कि हम शक्कर की मिलें खोल खोलकर लाखों ग़रीब किसानों को मिल मालिकों और उनके एजेन्टों के रहम करम पर छोड़ दें, गांव गांव के कोल्हुओं और खेंची के धन्धे को नष्ट कर दें, गाँव वालों का शक्ति वर्धक आहार गुड़ उनसे छीन लें और खुद अपने खाने के मीठे को जहरीला बना लें. साइन्स के लिये यह भी जरूरी नहीं है कि हम बनसपति घी के कारखाने खोल खोल कर उसे ठीक घी का रग देकर लाखो आदमियों को बेईमानी करना और बेईमानी से पैसे कमाना सिखा दें और शुद्ध घी के खाने वालो को घी का मिलना असम्भव कर दें हमारी यह साफ राय है कि कपड़े और बनस्पति घी की मिले कम से कम 99% बन्द हो जानी चाहियें. इससे बेरोजगारी के मिटने और देश के स्वास्थ्य के सुधरने दोनो मे मदद मिलेगी. एक फ़ीसदी की गुनजायश किसी खास जरूरत की चीजों के लिये काफ़ी है.

इन बातों में हमें जरा अपने दिलों को टटोल कर देखना चाहिये. जिस तरह दूसरे अन्ध विश्वास होते हैं उसी तरह साइन्स के भी अन्ध विश्वास हैं जो दूसरे अन्ध विश्वासो से अधिक खतरनाक हो सकते हैं जब हम "लेबर सेविंग" यानी मजदूरी बचाने की बात करते हैं तो हमारे दिलों में मजदूरों की भलाई इतनी नही होती जितना कम मजदूरी देकर अधिक पैसा कमाने की चिंता. जिस देश मे मजदूरो की कमी हो वहा इसका कुछ अर्थ हो सकता है, पर जहाँ मजदूरों की बहुतायत हो वहा इस तरह की तजवीजें आम जनता के साथ दग़ा करना है. इस तरह के समतोल में जिसका हमने ऊपर जिकर किया है ऐटम शक्ति या हाइड्रोजिन शक्ति या उससे भी बढ़कर किसी शक्ति के उपयोग के लिये काफ़ी गुंजायश है.

"नैशनलाईज़ेशन" और "सोशलाईज़ेशन"

हमारे आज कल के शासक जिसे नैशनलाईज़ेशन यानी क़ौमियाना या सोशलाईज़ेशन यानी समाजियाना कहते हैं वह भी बड़े धोखे की चीज है. नैशनलाईज़ेशन से

سائنس کے لئے میدان۔

سائنس کے لئے بھی اِس میں ترقی کا کافی میدان ہے۔ سائنس کی ترقی کے لئے یہ ضروری نہیں ہے کہ ہم اپنا گیہوں ملوں سے پسا کر اور اپنا چاول ملوں میں کٹوا کر اُس کی پوشک شکتی کو بھی نشٹ کریں، اُس کے سواد کو بھی بگاڑیں اور کروڑوں کو بے روزگار بھی کر دیں۔ اسی طرح سائنس کی ترقی کے لئے یہ ضروری نہیں ہے کہ ہم ملوں میں کپڑا تیار کر کے تھوڑے سے پونجی پتیوں کی تجوریاں بھر دیں اور لاکھوں بنکروں کو سڑکوں پر بھوکا مرنے کے لئے چھوڑ دیں۔ سائنس کی ترقی کے لئے یہ ضروری نہیں ہے کہ ہم شکر کی ملیں کھول کھول کر لاکھوں غریب کسانوں کو مل مالکوں اور اُن کے ایجنٹوں کے رحم کرم پر چھوڑ دیں، گاؤں گاؤں کے کولھوؤں اور کھینچی کے دھندے کو نشٹ کر دیں، گاؤں والوں کا شکتی وردھک آہار گڑ اُن سے چھین لیں اور خود اپنے کھانے کے میٹھے کو زہریلا بنا لیں۔ سائنس کے لئے یہ بھی ضروری نہیں ہے کہ ہم بناسپتی گھی کے کارخانے کھول کھولکر اُسے ٹھیک گھی کا رنگ دے کر لاکھوں آدمیوں کو بے ایمانی کرنا اور بے ایمانی سے پیسے کمانا سکھا دیں اور شدھ گھی کے کھانے والوں کو گھی کا ملنا اسمبھو کر دیں ہماری یہ صاف رائے ہے کہ کپڑے، شکر اور بنسپتی کی ملیں کم سے کم ننانوے فیصدی بند ہو جانی چاہئیں اِس سے بے روزگاری کے مٹنے اور دیش کے سواستھ کے سدھرنے دونوں میں مدد ملیگی۔ ایک فیصدی کی گنجائش کسی خاص ضرورت کی چیزوں کے لئے کافی ہے۔

اِن باتوں میں ہمیں ذرا اپنے دلوں کو ٹٹولکر دیکھنا چاہئے۔ جس طرح دوسرے اندھوشواس ہوتے ہیں اُسی طرح سائنس کے بھی اندھ وشواس ہوتے ہیں جو دوسرے اندھ وشواسوں سے ادھک خطرناک ہو سکتے ہیں۔ جب ہم "لیبر سیونگ" یعنی مزدوری بچانے کی بات کرتے ہیں تو ہمارے دلوں میں مزدوروں کی بھلائی اتنی نہیں ہوتی جتنا کم مزدوری دیکر ادھک پیسہ کمانے کی چنتا۔ جس دیش میں مزدوروں کی کمی ہو وہاں اس کا کچھ ارتھ ہو سکتا ہے، پر جہاں مزدوروں کی بہتایت ہو وہاں اِس طرح کی تجویزیں عام جنتا کے ساتھ دغا کرنا ہے اِس طرح کے سنتول میں جس کا ہم نے اوپر ذکر کیا ہے ایٹم شکتی یا ہائیڈروجن شکتی یا اُس سے بھی بڑھکر کسی شکتی کے لئے بھی کافی گنجائش ہے۔

"نیشنلائزیشن" اور "سوشلائزیشن"۔

ہمارے آجکل کے شاسک جیسے نیشنلائزیشن یعنی قومیانا یا سوشلائزیشن یعنی سماجیانا کہتے ہیں وہ بھی بڑے دھوکے کی چیز ہے۔ نیشنلائزیشن سے

इनका मतलब अधिक से अधिक यह है कि जो धन्धा या व्यापार कुछ लोग निजी तौर पर करते थे वह सरकार अपने नौकरों के जरिये से करने लगे और मुनाफ़ा जो कुछ हो वह कुछ पूँजीपतियों को या दूसरे लोगों को निजी तौर पर मिलने के बजाय सरकार को मिलने लगे. अब तक इस तरह के जितने तजरबे हुए हैं उनसे यह नहीं कहा जा सकता कि जनता के आराम और आसानी में बढ़ोती हुई है सोशलाईजेशन से भी अभी तक इनका यही मतलब है इसीलिये रूसी नेता ख़ुरूशेव ने बम्बई में साफ़ कहा था कि हम आपको आप की सोशलाईजेशन की तजवीज़ों पर बधाई देते हैं, हम आपकी सफलता चाहते हैं, पर आपका सोशलाईजेशन हमारा सोशलाईजेशन नहीं है.

रूस और चीन के तजरबे

दूसरी तरफ़ रूस और चीन के इस तरह के तजरबे जिनमें जितने लोग किसी ज़मीन पर या किसी कारख़ाने में काम करते हैं वही उसके मालिक समझे जाते हैं, वही, बिना सरकारी मदाख़लत के उसका प्रबन्ध करते हैं और वही उसके मुनाफ़े के हक़दार होते हैं, कहीं ज़्यादा समझ की और जनता के फ़ायदे की चीज़ है रूस और चीन के तजरबों से हमें इस बारे में बहुत कुछ सीखना है जहां तक ज़मीन और खेती का सवाल है आचार्य विनोबा भावे की ग्रामदान यानी गाँव की सारी ज़मीन को सारे गाँव की मिलकीयत मानकर चलने की योजना भी बहुत ध्यान से समझने की चीज़ है हम पहले भी कई बार कह चुके हैं कि कम्युनिस्ट व्यवस्था और गाँधीवादी व्यवस्था इन दोनों को समझकर और एक दर्जे तक मिलाकर चलने में ही हमें इस देश का सच्चा भला दिखाई देता है

हम इस रास्ते चलें तो हमे बाहर से एक पैसा भी क़र्ज़ लेने या भीख माँगने की ज़रूरत नहीं है. चीन की हालत हम से बहुत मिलती है पिछले सात बरस में नए चीन ने अपनी तरक़्क़ी के लिये किसी से एक पैसा क़र्ज़ नहीं लिया रूस के साथ नए चीन का जो तीन हज़ार मिलियन डालर लगभग पन्द्रह अरब रुपये के माल के तबादले का समझौता हुआ था वह भी एक शुद्ध व्यापारी समझौता था, यानी यह कि इतने का फ़लां फ़लां माल पाँच बरस के अन्दर रूस चीन को देगा और उतने ही का फ़लां फ़लां माल दस बरस के अन्दर चीन रूस को देगा और इस व्यापार में रूस की जो पूँजी कुछ दिनों के लिये रुकेगी उस पर माल ही के रूप में चीन एक रुपया सैकड़ा सालाना सूद रूस को देगा. रूस को अपनी तरक़्क़ी के लिये किसी पूँजीपति देश के सामने हाथ नहीं पसारना पड़ा हमारे इन क़र्ज़ों के आगे के नतीजों और ख़तरों को सोचकर कभी कभी दिल घबराने लगता है.

اُن کا مطلب آدھک سے آدھک یہ ہے کہ جو دھندا یا بیاپار کچھ لوگ نجی طور پر کرتے تھے وہ سرکار اپنے نوکروں کے ذریعہ سے کرانے لگے اور منافع جو کچھ ہو وہ کچھ پونجی پتیوں کو یا دوسرے لوگوں کو نجی طور پر ملنے کے بجائے سرکار کو ملنے لگے اب تک اس طرح کے جتنے تجربے ہوئے ہیں اُن سے یہ نہیں کہا جاسکتا کہ جنتا کے آرام اور آسانی میں بڑھوتی ہوئی ہے۔ سوشلائیزیشن سے بھی ابھی تک اسکا یہی مطلب ہے۔ اسی لئے روسی نیتا خروشچیو نے بمبئی میں صاف کہا تھا کہ ہم آپ کو آپکی سوشلائیزیشن کی تجویزوں پر بدھائی دیتے ہیں، ہم آپ کی سپھلتا چاہتے ہیں، پر آپ کا سوشلائیزیشن ہمارا سوشلائیزیشن نہیں ہے۔

روس اور چین کے تجربے۔

دوسری طرف روس اور چین کے اس طرح کے تجربے جن میں جتنے لوگ کسی زمین پر یا کسی کارخانے میں کام کرتے ہیں وہی اُس کے مالک سمجھے جاتے ہیں، وہی بنا سرکاری مداخلت کے، اُس کا پربندھ کرتے ہیں اور وہی اُس کے منافع کے حقدار ہوتے ہیں، کہیں زیادہ سمجھ کی اور جنتا کے فائدہ کی چیز ہے روس اور چین کے تجربوں سے ہمیں اس بارے میں بہت کچھ سیکھنا ہے جہاں تک زمین اور کھیتی کا سوال ہے آچاریہ ونوبا بھاوے کی گرام دان یعنی گاؤں کی ساری زمین کو سارے گاؤں کی ملکیت مان کر چلنے کی یوجنا بھی بہت دھیان سے سمجھنے کی چیز ہے ہم پہلے بھی کئی بار کہہ چکے ہیں کہ کمیونسٹ ویوستھا اور گاندھی وادی ویوستھا ان دونوں کو سمجھکر اور ایک درجہ تک ملاکر چلنے میں ہی ہمیں اِس دیش کا سچا بھلا دکھائی دیتا ہے

ہم اس راستے چلیں تو ہمیں باہر سے ایک پیسہ بھی قرض لینے یا بھیک مانگنے کی کوئی ضرورت نہیں ہے چین کی حالت ہم سے بہت ملتی ہے پچھلے سات برس میں نئے چین اپنی ترقی کے لئے کسی سے ایک پیسہ قرض نہیں لیا۔ روس کے ساتھ نئے چین کا جو 3000 ملین ڈالر یعنی لگ بھگ 15 ارب روپئے کے مال کے تبادلے کا سمجھوتا ہوا تھا وہ بھی ایک شدھ بیاپاری سمجھوتا تھا، یعنی یہ کہ اتنے کا فلاں فلاں مال پانچ برس کے اندر روس چین کو دیگا اور اُتنے ہی کا فلاں فلاں مال دس برس کے اندر چین روس کو دیگا، اور اس بیاپار میں روس کی جو پونجی کچھ دنوں کے لئے رکے گی اُس پر مال ہی کے روپ میں چین ایک روپیہ سیکڑہ سالانہ سود روس کو دیگا۔ روس کو اپنی ترقی کے لئے کسی پونجی پتی دیش کے سامنے ہاتھ نہیں پسارنا پڑا۔ ہمارے ان قرضوں کے آگے کے نتیجوں اور خطروں کو سوچکر کبھی کبھی دل گھبرانے لگتا ہے۔

इस तरह के प्रोग्राम को कामयाब बनाने के लिये यह भी जरूरी है कि हमारे हकूमत चलाने वाले और क़ानून बनाने वाले सब लोगों का चरित्र ऊँचा और रहन-सहन ग़रीबों के रहन-सहन की तरह सादा और तपस्या का हो. इस बारे में भी इस समय हमारे अन्दर जबरदस्त सुधार की जरूरत है.

सारांश

सारांश यह कि अगर हम थोड़ी देर के लिये चीन और रूस को अपने ख़याल से अलग भी कर दें तो हमारी आज-कल की योजनाएं हमें बरबादी और दिवालियेपन की ओर ले जाने वाली हैं और देश की आम जनता का भला मोटे तौर पर महात्मा गांधी के बताए हुए रास्ते को समझने और उसी पर चलने में है.

اِس طرح کے پروگرام کو کامیاب بنانے کے لئے یہ بھی ضروری ہے کہ ہمارے حکومت چلانے والے اور قانون بنانے والے سب لوگوں کا چرتر اُونچا اور رہن سہن غریبوں کے رہن سہن کی طرح سادہ اور تپسیا کا ہو۔ اس بارے میں بھی اِس سمے ہمارے اندر زبردست سدھار کی ضرورت ہے۔

سارانش۔

سارانش یہ کہ اگر ہم تھوڑی دیر کے لئے چین اور روس کو اپنے خیال سے الگ بھی کردیں تو ہماری آجکل کی یوجنائیں ہمیں بربادی اور دوالیہ پن کی اَور لیجانے والی ہیں اور دیش کی عام جنتا کا بھلا موٹے طور پر مہاتما گاندھی کے بتائے ہوئے راستے کو سمجھنے اور اُسی پر چلنے میں ہے۔

अरब देश

डाक्टर सैयद महमूद

कई हजार बरस पहले के उस जमाने,से लेकर जब कि मिस्र की सभ्यता चोटी पर थी और वह देश दुनिया के सब से ताक़तवर और सबसे सभ्य देशों में गिना जाता था आज तक पच्छिम एशिया के देशों ने दुनिया की राजनीति में कभी इतना जबरदस्त हिस्सा नहीं लिया जितना कि वह आज ले रहे हैं. फिर भी इस सारे इलाक़े की हमेशा एक ख़ास अहमियत रही है. कारण यह है कि यह इलाक़ा पूरब और पच्छिम के संगम का इलाक़ा है. तीन बड़े बड़े महाद्वीप एशिया, अफ़रीक़ा और यूरप यहाँ आकर मिलते हैं. तीनो की जिन्दगी और तीनो की कलचर यहाँ एक दूसरे से टकराती और हिलोरे लेती हैं.

दुनिया के अधिकतर बड़े-बड़े मजहब भी यहीं पैदा हुए हैं. ईरान के पारसी मजहब के बानी हजरत जरथुस्त्र यहीं पैदा हुए. यहूदी धर्म के बानी हजरत मूसा और ईसाई धर्म के बानी हजरत ईसा दोनों फ़िलस्तीन में पैदा हुए. अरब में हजरत मुहम्मद पैदा हुए. इसी इलाक़े में इन सब बड़ी-बड़ी पाक हस्तियों ने अपनी जिन्दगियाँ बिताई और लोगों को ठीक जिन्दगी बसर करने का उपदेश दिया.

عرب دیش

ڈاکٹر سید محمود

کئی ہزار برس پہلے کے اُس زمانے سے لیکر جب کہ مصر کی سبھیتا چوٹی پر تھی اور وہ دیش دنیا کے سب سے طاقتور اور سب سے سبھیہ دیشوں میں گنا جاتا تھا آج تک پچھم ایشیا کے دیشوں نے دنیا کی راج نیتی میں کبھی اتنا زبردست حصہ نہیں لیا جتنا کہ وہ آج لے رہے ہیں۔ پھر بھی اس سارے علاقے کی ہمیشہ ایک خاص اہمیت رہی ہے۔ کارن یہ ہے کہ یہ علاقہ پورب اور پچھم کے سنگم کا علاقہ ہے۔ تین بڑے بڑے مہادیپ ایشیا، افریقہ اور یورپ یہاں آکر ملتے ہیں۔ تینوں کی زندگی اور تینوں کی کلچر یہاں ایک دوسرے سے ٹکراتی اور ہلورے لیتی ہے۔

دنیا کے ادھک تر بڑے بڑے مذہب بھی یہیں پیدا ہوئے ہیں۔ ایران کے پارسی مذہب کے بانی حضرت زرتھسترا یہیں پیدا ہوئے۔ یہودی دھرم کے بانی حضرت موسیٰ اور عیسائی دھرم کے بانی حضرت عیسیٰ دونوں فلسطین میں پیدا ہوئے۔ عرب میں حضرت محمد پیدا ہوئے۔ اِسی علاقہ میں ان سب بڑی بڑی پاک ہستیوں نے اپنی زندگیاں بتائیں اور لوگوں کو ٹھیک زندگی بسر کرنے کا اُپدیش دیا۔

आज इस सारे इलाक़े का खास धर्म इसलाम है. लेकिन यह ख़याल ग़लत है कि अरब मुल्क सब मुसलमान मुल्क हैं. मुसलमानों की तादाद वहाँ ज़ियादह है. पर ईसाइयों की तादाद भी अरबों में बहुत काफ़ी और बाअसर है. बहुत से अरब यहूदी मज़हब के भी मानने वाले हैं. सब अरब देशों के लोग चाहे वह किसी भी मज़हब के मानने वाले हों इस तरह की मिली जुली ज़िन्दगी बसर करते हैं कि उनके एक क़ौम होने में किसी को शक नहीं हो सकता वह सब अपने को अरब कहते हैं. एक अरब क़ौम, अरब राष्ट्र या अरब नेशन का ख़याल उनमें दिन-दिन मज़बूत होता जा रहा है.

मैं सन 1954 में पच्छिम एशिया के इन देशो मे गया था. उस वक्त एक मिली जुली अरब क़ौम का ख़याल उनमे फैलता और बढ़ता जा रहा था. इन सब देशो को मिलाकर एक 'अरब लीग' बन जाने का भी उनपर बहुत अच्छा असर पड़ा. यह उनके दिलो की क़ुदरती माँग थी. इसका यह मतलब नहीं कि अलग अलग अरब देशो मे रहन-सहन के तरीक़ो मे फ़रक़ नहीं है. न हर बात मे सब के ख़यालात एक से हैं. पर इन फ़रक़ों के होते हुए भी एक मिली-जुली अरब क़ौम का ख़याल उनके दिलो पर जादू का असर रखता है.

जब मैं दोबारा उन देशो मे गया तो मेरे दिल में यह बात जम गई कि यह मिली जुली अरब क़ौम बहुत जल्दी दुनिया की राजनीति में भारी हिस्सा लेगी. मिस्र और शाम यानी सीरिया में मैंने ख़ूब मेल जोल देखा. इन दोनो देशो की विदेशी नीति और फ़ौजी पालिसी भी एक होती चली जा रही है. इन दोनो देशो और सऊदी अरब, लबनान और हाल मे जोर्दान में भी मेल और एक दूसरे के साथ मिलकर चलने की उमंग बढ़ती जा रही है. इराक़ के साथ कुछ बातो में फ़रक़ अब भी है. लेकिन इराक़ और बाक़ी अरब देशो मे भी मेल दिन-दिन बढ़ रहा है.

मेरे दिल पर सब से ज़्यादा असर इस बात का है कि अरबों मे अपनी ताक़त पर भरोसा बहुत ज़बरदस्त है और वह अपने क़ौमी मक़सद और इरादो को जायज़ और सच्चा मानते हैं. यह सब देश हाल ही मे यूरोपियन क़ौमो की ग़ुलामी से आज़ाद हुए हैं. आज़ाद होते ही इन मे नई जान पैदा हो गई. वे अपनी आर्थिक, सामाजिक और माली हालत को सुधारने और तरक़्क़ी देने में लग गए. वे अब अपने को इस क़ाबिल बना लेना चाहते हैं कि दुनिया की राजनीति में सचाई, इन्साफ़, अमन और सबकी आज़ादी के लिये दूसरों के साथ मिलकर खड़े हो सकें. वह अपने ग़ुलामी के दिनों की मुसीबतो को भूले नही हैं. इसीलिये वह और भी ज़्यादा सब की आज़ादी के तरफ़दार हैं.

آج اِس سارے علاقے کا خاص دھرم اِسلام ہے ۔ لیکن یہ خیال غلط ہے کہ عرب ملک سب مسلمان ملک ہیں ۔ مسلمانوں کی تعداد وہاں زیادہ ہے ۔ پر عیسائیوں کی تعداد بھی عربوں میں بہت کافی اور بااثر ہے ۔ بہت سے عرب یہودی مذہب کے بھی ماننے والے ہیں ۔ سب عرب دیشوں کے لوگ چاہے وہ کسی بھی مذہب کے ماننے والے ہوں اِس طرح کی ملی جلی زندگی بسر کرتے ہیں کہ اُن کے ایک قوم ہونے میں کسی کو شک نہیں ہو سکتا ۔ وہ سب اپنے کو عرب کہتے ہیں ۔ ایک عرب قوم، عرب راشٹر یا عرب نیشن کا خیال اُن میں دن دن مضبوط ہوتا جا رہا ہے ۔

میں سن 1954ع میں پچھم ایشیا کے اِن دیشوں میں گیا تھا ۔ اُس وقت ایک ملی جلی عرب قوم کا خیال اُن میں پھیلتا اور بڑھتا جا رہا تھا ۔ ان سب دیشوں کو ملاکر ایک عرب لیگ' بن جانے کا بھی اُن پر بہت اچھا اثر پڑا ۔ یہ اُن کے دلوں کی قدرتی مانگ تھی ۔ اِس کا یہ مطلب نہیں کہ الگ الگ عرب دیشوں میں رہن سہن کے طریقوں میں فرق نہیں ہے ۔ نہ ہر بات میں سب کے خیالات ایک سے ہیں ۔ پر ان فرقوں کے ہوتے ہوئے بھی ایک ملی جلی عرب قوم کا خیال اُن کے دلوں پر جادو کا اثر رکھتا ہے

جب میں دوبارہ اُن دیشوں میں گیا تو میرے دل میں یہ بات جم گئی کہ یہ ملی جلی عرب قوم بہت جلدی دنیا کی راج نیتی میں بھاری حصہ لے گی ۔ مصر اور شام یعنی سیریا میں میں نے خوب میل جول دیکھا ۔ ان دونوں دیشوں کی ودیشی نیتی اور فوجی پالیسی بھی ایک ہوتی چلی جا رہی ہے ۔ اِن دونوں دیشوں اور سعودی عرب' لبنان اور حال میں جوردان میں بھی میل اور ایک دوسرے کے ساتھ مل کر چلنے کی اُمنگ بڑھتی جا رہی ہے ۔ عراق کے ساتھ کچھ باتوں میں فرق اب بھی ہے ۔ لیکن عراق اور باقی عرب دیشوں میں بھی میل دن دن بڑھ رہا ہے ۔

میرے دل پر سب سے زیادہ اثر اس بات کا ہے کہ عربوں میں اپنی طاقت پر بھروسہ بہت زبردست ہے اور وہ اپنے قومی مقصد اور ارادوں کو جائز اور سچا مانتے ہیں یہ سب دیش حال ہی میں یورپین قوموں کی غلامی سے آزاد ہوئے ہیں ۔ آزاد ہوتے ہی اِن میں نئی جان پیدا ہو گئی ۔ وے اپنی آرتھک'' ساماجک اور مالی حالت کو سدھارنے اور ترقی دینے میں لگ گئے ۔ وے اب اپنے کو اِس قابل بنا لینا چاہتے ہیں کہ دنیا کی راج نیتی میں سچائی' اِنصاف' امن اور سب کی آزادی کے لئے دوسروں کے ساتھ ملکر کھڑے ہو سکیں ۔ وہ اپنے غلامی کے دنوں کی مصیبتوں کو بھولے نہیں ہیں ۔ اِسی لئے وہ اور بھی زیادہ سب کی آزادی کے طرفدار ہیں ۔

मिट्टी का तेल इस सारे इलाक़े की सब से बड़ी दौलत है. दुनिया भर में जितना तेल पैदा होता है उसका दो-तिहाई केवल इस इलाक़े में होता है. इसीलिये कुछ दूसरे बड़े देश इस इलाक़े को लालच भरी निगाहों से देखते हैं. सन 1955 में केवल एक साल के अन्दर अमरीका और इंगलिस्तान की तेल की कम्पनियों ने लगभग दो अरब डालर या दस अरब रुपया नक़द इस इलाक़े से तेल ही की बदौलत मुनाफ़े का कमाया. अरब देशो के पास पैसे की कमी नहीं है. सब से बड़ी बात यह है कि अरब लोग इस बात को पूरी तरह महसूस कर रहे हैं कि उन्हें एशिया और अफ़रीक़ा के दूसरे देशो के साथ मिलकर खड़ा होना चाहिये. वह इस बात की अहमीयत को .खूब समझते हैं. बानदुंग कानफ़रेन्स का उनपर बड़ा असर हुआ है. दुनिया के अमन और दुनिया की तरक़्क़ी की कोशिशो में किसी से पीछे नहीं रहना चाहते.

मैं सीरिया, लबनान, मिस्र, और सूडान सब जगह गया. इन सब देशो के लोग हद दर्जे के मेहमानवाज़ और उदार तबियत के हैं. ख़ास कर हिन्दुस्तानियों के साथ उनकी मुहब्बत क़दम-क़दम पर ज़ाहिर होती है. हिन्दुस्तानियों को वह बिलकुल अपने भाइयो की तरह समझते हैं. साफ़ मालूम होता है कि यह मेल दिलों का मेल है.

शाम यानी सीरिया एक बड़ा सरसब्ज़ और शादाब मुल्क है. यहाँ के लोग शायद दुनिया के सबसे .ख़ूबसूरत लोग हैं. उनकी कलचर बड़ी ऊँची कलचर है. सनअत और हिरफ़त यानी उद्योग धन्धे उनमे .खूब तरक़्क़ी करते जा रहे हैं. बड़े बड़े इलाक़े जो पहले जगल पड़े हुए थे अब तेज़ी के साथ आबाद होते जा रहे हैं और हर जगह लहलहाते खेत और बड़े बड़े बाग़ दिखाई देते हैं.

शाम के प्रेसीडेन्ट शौकरी अल क़ुवतली का अपने देश में बहुत बड़ा असर है. उन्होने अपने मुल्क की आज़ादी की लड़ाई में बहुत बड़ा हिस्सा लिया था वहाँ के दूसरे बड़े नेता खालिद अल आज़म हैं, जो बड़े होशियार राजनीतिज्ञ हैं. नाज़िम क़ुदसी वहा के स्पीकर हैं, जिनकी आम वाक़फ़ीयत का मेरे दिल पर बड़ा असर हुआ. मारूफ़ दुआबी वहां के एक बहुत बड़े विचारक हैं, जिनकी बाबत मेरा ख़याल है कि अपने देश की आइन्दा की तरक़्क़ी मे वह बहुत बड़ा हिस्सा लेंगे.

लबनान की .ख़ूबसूरती की दुनिया के सब यात्री तारीफ़ करते हैं और बिलकुल ठीक करते हैं. वहा की आबो हवा बहुत अच्छी है. वहा के लोग .ख़ूबसूरत और मेहनती हैं. यह देश मैडीटरेनियन समन्दर के किनारे है इसलिये यूरप के साथ तिजारत की वहा हमेशा बड़ी-बड़ी मन्डियां रही हैं. इसीलिये यहां यूरप की कलचर और

مٹی کا تیل اِس سارے علاقے کی سب سے بڑی دولت ھے ۔ دنیا بھر میں جتنا تیل پیدا ھوتا ھے اُس کا دوتہائی کیول اِس علاقہ میں ھوتا ھے ۔ اِسی لئے کچھ دوسرے بڑے دیش اس علاقہ کو لالچ بھری نگاہوں سے دیکھتے ھیں ۔ سن 1955 میں کیول ایک سال کے اندر امریکہ اور انگلستان کی تیل کی کمپنیوں نے لگ بھگ دو ارب ڈالر یا دس ارب روپیہ نقد اِس علاقہ سے تیل ھی کی بدولت منافعہ کا کمایا ۔ عرب دیشوں کے پاس پیسے کی کمی نہیں ھے ۔ سب سے بڑی بات یہ ھے کہ عرب لوگ اِس بات کو پوری طرح محسوس کر رھے ھیں کہ اُنھیں ایشیا اور امریکہ کے دوسرے دیشوں کے ساتھ مل کر کھڑا ھونا چاھئے ۔ وہ اِس بات کی اھمیت کو خوب سمجھتے ھیں ۔ بانڈنگ کانفرنس کا اُن پر بڑا اثر ھوا ھے ۔ دنیا کے امن اور دنیا کی ترقی کی کوششوں میں وے کسی سے پیچھے نہیں رھنا چاھتے ۔

میں سیریا، لبنان، مصر اور سوڈان سب جگہ گیا ۔ ان سب دیشوں کے لوگ حد درجہ کے مہمان‌نواز اور اُدار طبیعت کے ھیں ۔ خاص کر ھندستانیوں کے ساتھ اُن کی محبت قدم قدم پر ظاھر ھوتی ھے ۔ ھندستانیوں کو وہ بالکل اپنے بھائیوں کی طرح سمجھتے ھیں ۔ صاف معلوم ھوتا ھے کہ یہ میل دلوں کا میل ھے ۔

شام یعنی سیریا ایک بڑا سرسبز اور شاداب ملک ھے ۔ یہاں کے لوگ شاید دنیا کے سب سے خوبصورت لوگ ھیں ۔ اُن کی کلچر بڑی اُونچی کلچر ھے ۔ صنعت اور حرفت یعنی اُدیوگ دھندھے بھی اُن میں خوب ترقی کرتے جا رھے ھیں ۔ بڑے بڑے علاقے جو پہلے جنگل پڑے ھوئے تھے اب تیزی کے ساتھ آباد ھوتے جا رھے ھیں اور ھر جگہ لہلہاتے کھیت اور بڑے بڑے باغ دکھائی دیتے ھیں ۔

شام کے پریسیڈنٹ شوکری القوتلی کا اپنے دیش میں بہت بڑا اثر ھے ۔ اُنھوں نے اپنے ملک کی آزادی کی لڑائی میں بہت بڑا حصہ لیا تھا ۔ وھاں کے دوسرے بڑے نیتا خالدالاعظم ھیں، جو بڑے ھوشیار راجنیتگیہ ھیں ۔ ناظم قدسی وھاں کے اسپیکر ھیں جن کی عام واقفیت کا میرے دل پر بڑا اثر ھوا ۔ معروف دوابی وھاں کے ایک بہت بڑے وچارک ھیں جن کی بابت میرا خیال ھے کہ اپنے دیش کی آئندہ کی ترقی میں وہ بہت بڑا حصہ لینگے ۔

لبنان کی خوبصورتی کی دنیا کے سب یاتری تعریف کرتے ھیں اور بالکل ٹھیک کرتے ھیں ۔ وھاں کی آب‌وھوا بہت اچھی ھے ۔ وھاں کے لوگ خوبصورت اور محنتی ھیں ۔ یہ دیش میڈیٹرینین سمندر کے کنارے ھے ۔ اِس لئے یورپ کے ساتھ تجارت کی یہاں ھمیشہ بڑی بڑی منڈیاں رھی ھیں ۔ اِسی لئے یہاں یورپ کی کلچر اور

एशिया की कलचर दोनों का खासा संगम दिखाई देता है. वहां के लोगों ने यूरप वालों से बहुत-सी अच्छी बातें सीखीं हैं. लबनान में ईसाइयों की तादाद बहुत है. ईसाई और मुसलमान वहां क़रीब-क़रीब बराबर हैं. लेकिन सब अपने को अरब कहते हैं. सब के दिलों में एक ही अरब जज़्बा काम करता है, इस मिली जुली अरब क़ौमीयत के जज़्बे के सामने मज़हब का फ़र्क़ उन पर ज़रा-सा भी असर नहीं करता.

लबनान के प्रेसीडेन्ट कामिल शामून बड़े तजरबेकार राजनीतिज्ञ हैं और वहां के बड़े वज़ीर अब्दुल्ला याफ़ी बहुत ही नेक और बुर्दबार इन्सान हैं जिनकी रहनुमाई में वह देश ख़ासी तरक़्क़ी कर रहा है.

अरब मुल्कों में सब से ज़्यादा तरक़्क़ी याफ़्ता देश मिस्र है. वहाँ की सभ्यता बहुत पुरानी और ऊँची सभ्यता है. पुराने मिस्री पिरेमिड्स और वहाँ की दूसरी हैरतअंगेज़ इमारतों को आज तक दुनिया भर के लोग देखने जाते हैं और सब दिल खोलकर उनकी तारीफ़ें करते हैं. अरबों के सब मामलों में सब से ज़्यादा असर मिस्र का है. मिस्र की राय पर ही अकसर फ़ैसला होता है. मिस्र के आजकल के नेता नेक, सच्चे और जागरूक हैं. जनता को उन पर पूरा भरोसा है और जनता उन पर फ़ख़्र करती है.

दुनिया के नेताओं में प्रेसीडेन्ट नासिर का दर्जा बहुत ऊँचा है. उनसे मिलते ही आदमी के दिल पर उनकी सादगी और बहादुरी दोनो का गहरा असर पड़ता है. लोग उन्हें बहुत ज़्यादा प्यार करते हैं. दूसरे मुल्को के अरब भी उनकी बड़ी क़द्र करते हैं. प्रेसीडेन्ट नासिर के विदेश मंत्री फ़ौज़ी भी बहुत क़ाबिल इन्सान हैं. अन्तर राष्ट्रीय राजनीति के वह माहिर हैं.

मिस्र के दक्खिन मे सूडान का देश है. यह देश हाल ही में अंगरेज़ो के क़ब्ज़े से आज़ाद हुआ है. यहाँ की खिली हुई धूप एक ख़ास चीज़ है. यहाँ के लोग भी काफ़ी मेहनती और मुस्तक़िल मिज़ाज हैं. उन्होंने ग़ैरों की ग़ुलामी में काफ़ी तकलीफ़ें उठाई हैं. उन्हे अभी बहुत कुछ करना है और वह धीरज के साथ अपने मुल्क को आगे बढ़ाने की कोशिशो मे लगे हुए हैं. मालूम होता है वह दिन जल्दी ही आने वाला है जब सूडान दुनिया के बढ़े चढ़े देशो मे दिखाई देगा. वहां के नेता बड़े समझदार और बुर्दबार हैं. एक आज़ाद मुल्क की हैसियत से सूडान अभी एक नया मुल्क है, लेकिन इस में कोई शक नही कि वह तेज़ी से आगे बढ़ रहा है.

सब अरब देशो के लोग हिन्दुस्तान से, हिन्दुस्तान के लोगों से और हिन्दुस्तान के प्रधान मंत्री से बड़ी मुहब्बत रखते हैं. इनमें से बहुत से देशो को हिन्दुस्तान की आज़ादी की लड़ाई से बहुत कुछ प्रोत्साहन मिला है. हिन्दुस्तान को देखकर उनकी हिम्मतें बढ़ी हैं.

ایشیا کی کلچر دونوں کا خاصہ سنگم دکھائی دیتا ھے ۔ یہاں کے لوگوں نے بہت سی اچھی باتیں سیکھی ھیں ۔ لبنان میں عیسائیوں کی تعداد بہت ھے ۔ عیسائی اور مسلمان وہاں قریب قریب برابر ھیں ۔ لیکن اپنے کو عرب کہتے ھیں ۔ سب کے دلوں میں ایک جذبہ کام کرتا ھے ۔ اِس ملی جلی عرب قومیت کے جذبے کے سامنے مذھب کا فرق اُن پر ذرا سا بھی اثر نہیں کرتا ۔

لبنان کے پریسیڈنٹ کامل شامون بڑے تجربہ کار راج نیتگیہ ھیں اور وہاں کے بڑے وزیر عبداللہ یافی بہت ھی نیک اور بردبار اِنسان ھیں جن کی رھنمائی میں وہ دیش خاص ترقی کر رھا ھے ۔

عرب ملکوں میں سب سے زیادہ ترقی یافتہ دیش مصر ھے ۔ وھاں کی سبھیتا بہت پرانی اور اُونچی سبھیتا ھے ۔ پرانے مصری پریمڈس اور وھاں کی دوسری حیرت انگیز عمارتوں کو آج تک دنیا بھر کے لوگ دیکھنے جاتے ھیں اور سب دل کھول کر اُن کی تعریفیں کرتے ھیں ۔ عربوں کے سب معاملوں میں سب سے زیادہ اثر مصر کا ھے ۔ مصر کی رائے پر ھی اکثر فیصلہ ھوتا ھے ۔ مصر کے آجکل کے نیتا نیک، سچے اور جاگروک ھیں ۔ جنتا کو اُن پر پورا بھروسہ ھے اور جنتا اُن پر فخر کرتی ھے ۔

دنیا کے نیتاؤں میں پریسیڈنٹ ناصر کا درجہ بہت اُونچا ھے ۔ اُن سے ملتے ھی آدمی کے دل پر اُن کی سادگی اور بہادری دونوں کا گہرا اثر پڑتا ھے ۔ لوگ اُنھیں بہت زیادہ پیار کرتے ھیں ۔ دوسرے ملکوں کے عرب بھی اُن کی بڑی قدر کرتے ھیں ۔ پریسیڈنٹ ناصر کے ودیش منتری فوضی بھی بہت ھی قابل اِنسان ھیں ۔ انتر راشٹریہ راج نیتی کے وہ ماھر ھیں ۔

مصر کے دکھن میں سوڈان کا دیش ھے ۔ یہ دیش حال ھی میں انگریزوں کے قبضہ سے آزاد ھوا ھے ۔ یہاں کی کھلی ھوئی دھوپ ایک خاص چیز ھے ۔ یہاں کے لوگ بھی کافی محنتی اور مستقل مزاج ھیں ۔ اُنھوں نے غیروں کی غلامی میں کافی تکلیفیں اُٹھائی ھیں ۔ اُنھیں ابھی بہت کچھ کرنا ھے ۔ اور وہ دھیرج کے ساتھ اپنے ملک کو آگے بڑھانے کی کوششوں میں لگے ھوئے ھیں ۔ معلوم ھوتا ھے وہ دن جلدی ھی آنے والا ھے جب سوڈان دنیا کے بڑھے چڑھے دیشوں میں دکھائی دے گا ۔ وھاں کے نیتا بڑے سمجھدار اور بردبار ھیں ۔ ایک آزاد ملک کی حیثیت سے سوڈان ابھی ایک نیا ملک ھے، لیکن اس میں کوئی شک نہیں کہ وہ تیزی سے آگے بڑھ رھا ھے ۔

سب عرب دیشوں کے لوگ ھندستان سے، ھندستان کے لوگوں سے اور ھندستان کے پردھان منتری سے بڑی محبت رکھتے ھیں ۔ اِن میں سے بہت سے دیشوں کو ھندستان کی آزادی کی لڑائی سے بہت کچھ پروساھن ملا ھے ۔ ھندستان کو دیکھ کر اُن کی ھمتیں بڑھی ھیں ۔

हम सब हाल ही में आज़ाद क़ौमों की पंगत में शामिल हुए हैं. हाल ही में हम अपनी क़िस्मतों के मालिक हुए हैं. हम सब एक सी मुसीबतों में से निकले हैं. एक दूसरे से हमदर्दी और मुहब्बत इस समय हमारी सब से बड़ी पूँजी है. हम मिलकर चल रहे हैं और मिलकर ही चलेंगे, क्योंकि मिलकर चलने में ही हमारा सब का और दुनिया का भला है.

ہم سب حال ہی میں آزاد قوموں کی پنگت میں شامل ہوئے ہیں ۔ حال ہی میں ہم اپنی قسمتوں کے مالک ہوئے ہیں ۔ ہم سب ایک سی مصیبتوں میں سے نکلے ہیں ۔ ایک دوسرے سے ہمدردی اور محبت اِس سمئے ہماری سب سے بڑی پونجی ہے ۔ ہم مل کر چل رہے ہیں اور مل کر ہی چلیں گے، کیونکہ مل کر چلنے میں ہی ہمارا سب کا اور دنیا کا بھلا ہے ۔

एक सच्ची चीनी कहानी

यू-लिन

[चीन में यह एक पुराना रिवाज है कि शादी के मौक़े पर ख़ास-ख़ास मेहमान कोई कहानी सुनाते हैं. इनमें अकसर कहानियाँ आप बीती और शिक्षाप्रद होती हैं. इसी तरह की एक सच्ची कहानी जो वह हाल में एक शादी के अवसर पर सुनाई गई हम नीचे दे रहे हैं:—एडीटर]

❀ ❀ ❀

मेरी शादी सन 1945 में हुई थी. चीन पर जापानियों का हमला हो चुका था, जापानियों, और उसके बाद कोमिन-तॉंग दोनों के ख़िलाफ़ जंग देश भर में ज़ोरों से जारी थी. जिस लड़की से मेरी शादी हुई वह मुझसे छै बरस छोटी थी. उसमें देश भक्ति और देश सेवा के भाव ख़ूब थे उसके विचार क्रान्तिकारी थे.

शादी के बाद मेरी बीवी डाक्टरी पढ़ने के लिये बेथ्यून मेडिकल कालिज में दाख़िल हो गई. कालिज में वह रुई का फ़ौजी कोट और कपड़े के जूते पहनती थी. इस पोशाक में वह शहरी लड़की नहीं दिखाई देती थी, बल्कि एक अनुभवी सिपाही सी लगती थी. मैं एक संस्था में काम करता था और वहीं रहता था. मेरी संस्था के और मेरी बीवी के कालिज के बीच एक ख़ासा ऊँचा पहाड़ था. मेरी बीवी हर सनीचर की शाम इस पहाड़ को पैदल पार करके मेरे यहाँ आ जाती थी. सनीचर और इतवार हम साथ रहते थे और हर सोमवार वह फिर कालिज चली जाती थी.

ایک سچی چینی کہانی

یو-لن

[چین میں یہ ایک پرانا رواج ہے کہ شادی کے موقعہ پر خاص خاص مہمان کوئی کہانی سناتے ہیں ۔ اِن میں اکثر کہانیاں آپ بیتی اور شکشا پرد ہوتی ہیں ۔ اِسی طرح کی ایک سچی کہانی جو وہاں حال میں ایک شادی کے اوسر پر سنائی گئی ہم نیچے دے رہے ہیں—ایڈیٹر]

❀ ❀ ❀

میری شادی سن 1945 میں ہوئی تھی چین پر جاپانیوں کا حملہ ہوچکا تھا ۔ جاپانیوں، اور اُس کے بعد کومنتانگ دونوں کے خلاف جنگ دیش بھر میں زوروں سے جاری تھی ۔ جس لڑکی سے میری شادی ہوئی وہ مجھ سے چھ برس چھوٹی تھی ۔ اُس میں دیش بھکتی اور دیش سیوا کے بھاؤ خوب تھے ۔ اُس کے وچار کرانتی کاری تھے ۔

شادی کے بعد میری بیوی ڈاکٹری پڑھنے کے لئے بیتھون میڈیکل کالج میں داخل ہو گئی ۔ کالج میں وہ روئی کا فوجی کوٹ اور کپڑے کے جوتے پہنتی تھی ۔ اِس پوشاک میں وہ شہری لڑکی نہیں دکھائی دیتی تھی، بلکہ ایک انوبھوی سپاہی سی لگتی تھی ۔ میں ایک سنستھا میں کام کرتا تھا اور وہیں رہتا تھا ۔ میری سنستھا کے اور میری بیوی کے کالج کے بیچ ایک خاصہ اُونچا پہاڑ تھا ۔ میری بیوی ہر سنیچر کی شام اِس پہاڑ کو پیدل پار کر کے میرے یہاں آجاتی تھی ۔ سنیچر اور اِتوار ہم ساتھ رہتے تھے اور ہر سوموار وہ پھر کالج چلی جاتی تھی ۔

थोड़े दिनों बाद च्यांग काई शेक ने उस इलाक़े पर हमला कर दिया. मेरी संस्था को वहाँ से उठकर कुछ दूर पूरब में चला जाना पड़ा. इस तरह मेरे रहने की जगह और मेरी बीबी के कालिज में फ़ासला बहुत बढ़ गया. दो ही उपाय थे. या तो यह कि मेरी बीबी पढ़ना छोड़ दे और मेरे साथ आकर रहने लगे और या यह कि कुछ दिनों हम एक दूसरे से अलग रहें. मैंने इस बारे में अपनी बीबी से सलाह तक नहीं की. मेरी उमर भी उससे अधिक थी और मुझे दुनिया का तजरबा भी जियादह था. उधर मेरी बीबी के कुछ दिनों में बच्चा भी होने वाला था. मैंने खुद ही फ़ैसला कर दिया कि वह पढ़ाई छोड़कर मेरे साथ रहने लगे. इस तरह उसका डाक्टर बनना हमेशा को रुक गया; वह मेरे साथ आकर रहने लगी.

एक दिन मैं और मेरी हामला बीबी अपना सामान लेकर पुरानी जगह से उस नई जगह जा रहे थे जहाँ हमारी संस्था चली गई थी. और लोग भी हमारे साथ थे. हामला औरतों के लिये सवारी का इन्तज़ाम था. और सब पैदल जा रहे थे. मेरी बीबी सवारी में न बैठी. उसने हम सब के साथ पैदल चलना ही पसन्द किया. पहाड़ों और नदियों को तय करने में हमें कई दिन लग गए. रास्ते के क़ुदरती नज़ारे हमें बड़े पसन्द आए. एक जगह हमें एक रेलवे लाइन पार करनी पड़ी, जिस पर शत्रु का क़बज़ा हो चुका था. हमने लाइन पार करने के लिये एक ऐसी रात चुनी जब .खूब अंधेरा था और बारिश हो रही थी. दूसरी तरफ़ के अपने साथियों से हमने नाता जोड़ लिया था. अंधेरे में हम लाइन पार कर रहे थे, शकलें भी साफ़-साफ़ न दिखाई देती थीं. इतने में मैंने किसी के पाँव फिसलने की आवाज़ सुनी. मैं उधर गया. देखा कि मेरी बीबी का ही पाँव फिसला था. वह मेरा सहारा लेकर उठ गई और धीरे से मेरे कान में कहने लगी—"वाह ! क्या .खूब मज़ा आया !"

मैं हमेशा अपनी बीबी को कायर समझता था. इस लिये उसके इन शब्दों को सुनकर मुझे कुछ अचरज हुआ; पर बारिश इतने ज़ोर की थी कि रुकना असम्भव था. मैंने जवाब में कुछ न कहा. हम आगे बढ़ कर एक गाँव में पहुँचे. बीबी को एक जगह छोड़कर मैं यह देखने के लिये चला गया कि हमारे और सब साथियों को रात को ठहरने की जगह मिल जावे. जब मैं वापिस आया तो देखा कि मेरी बीबी को एक किसान ने अपनी झोपड़ी में जगह दे दी है.

चीनी घरों में चारपाई की जगह अकसर ईंटों के छोटे-छोटे चबूतरे से होते हैं जिन पर लोग सोते हैं.

मेरी बीबी ईंटों के एक छोटे से चबूतरे पर रज़ाई ओढ़े बैठी थी. किसान की बूढ़ी माँ गरम-गरम सोंठ का काढ़ा तैयार करके उसे बड़े प्यार से पिला रही थी. मुझे यह

تھوڑے دن بعد چیانگ کائی شیک نے اُس علاقہ پر حملہ کر دیا ۔ میری سنستھا کو وہاں سے اُٹھ کر کچھ دور پورب میں چلا جانا پڑا ۔ اِس طرح میرے رہنے کی جگہ اور میری بیوی کے کالج میں فاصلہ بہت بڑھ گیا ۔ اب دو ہی اُپایہ تھے' یا تو یہ کہ میری بیوی پڑھنا چھوڑ دے اور میرے ساتھ آکر رہنے لگے اور یا یہ کہ کچھ دنوں ہم ایک دوسرے سے الگ رہیں ۔ میں نے اِس بارے میں اپنی بیوی سے صلاح تک نہیں کی ۔ میری عمر بھی اُس سے ادھک تھی اور مجھے دنیا کا تجربہ بھی زیادہ تھا ۔ اُدھر میری بیوی کے کچھ دنوں میں بچہ ہونے والا تھا. میں نے خود ہی فیصلہ کر دیا کہ وہ پڑھائی چھوڑ کر میرے ساتھ رہنے لگے ۔ اِس طرح اُس کا ڈاکٹر بننا ہمیشہ کو رک گیا ۔ وہ میرے ساتھ آکر رہنے لگی ۔

ایک دن میں اور میری حاملہ بیوی اپنا سامان لیکر پرانی جگہ سے اُس نئی جگہ جا رہے تھے جہاں ہماری سنستھا چلی گئی تھی ۔ اور لوگ بھی ہمارے ساتھ تھے ۔ حاملہ عورتوں کے لئے سواری کا انتظام تھا. اور سب پیدل جا رہے تھے ۔ میری بیوی سواری میں نہ بیٹھی ۔ اُس نے ہم سب کے ساتھ پیدل چلنا ہی پسند کیا پہاڑوں اور ندیوں کو طے کرنے میں ہمیں کئی دن لگ گئے ۔ راستے کے قدرتی نظارے ہمیں بڑے پسند آئے ۔ ایک جگہ ہمیں ایک ریلوے لائن پار کرنا پڑی جس پر شترو کا قبضہ ہو چکا تھا ۔ ہم نے لائن پار کرنے کے لئے ایک ایسی رات چنی جب خوب اندھیرا تھا اور بارش ہو رہی تھی ۔ دوسری طرف کے اپنے ساتھیوں سے ہم نے ناتا جوڑ لیا تھا ۔ اندھیرے میں ہم لائن پار کر رہے تھے' شکلیں بھی صاف صاف نہ دکھائی دیتی تھیں ۔ اِتنے میں میں نے کسی کے پاؤں پھسلنے کی آواز سنی ۔ میں اُدھر گیا ۔ دیکھا کہ میری بیوی کا ہی پاؤں پھسلا تھا ۔ وہ میرا سہارا لیکر اُٹھ گئی اور دھیرے سے میرے کان میں کہنے لگی—"واہ ! کیا خوب مزہ آیا !"

میں ہمیشہ اپنی بیوی کو کایر سمجھتا تھا ۔ اِس لئے اُس کے ان شبدوں کو سن کر مجھے کچھ اچرج ہوا ۔ پر بارش اِتنے زور کی تھی کہ رکنا اسمبھو تھا ۔ میں نے جواب میں کچھ نہ کہا ۔ ہم آگے بڑھکر ایک گاؤں میں پہنچے ۔ بیوی کو ایک جگہ چھوڑ کر میں یہ دیکھنے کے لئے چلا گیا کہ ہمارے اور سب ساتھیوں کو رات کو ٹھہرنے کی جگہ مل جاوے ۔ جب میں واپس آیا تو دیکھا کہ میری بیوی کو ایک کسان نے اپنی جھونپڑی میں جگہ دے دی ہے ۔

چینی گھروں میں چارپائی کی جگہ اکثر اینٹوں کے چھوٹے چھوٹے چبوترے سے ہوتے ہیں جن پر لوگ سوتے ہیں ۔

میری بیوی اینٹوں کے ایک چھوٹے سے چبوترے پر رضائی اوڑھے بیٹھی تھی ۔ کسان کی بوڑھی ماں گرم گرم سونٹھ کا کاڑھا تیار کر کے اُسے بڑے پیار سے پلا رہی تھی ۔ مجھے یہ

देखकर .खुशी हुई कि मेरी बीवी को अच्छे प्रेमी जजमान मिल गए. मुझे यह यक़ीन फिर भी न हुआ कि मेरी बीवी अपना इन्तज़ाम .खुद कर सकती है.

अगले दिन सड़क पर चलते हुए मैंने अपनी बीवी से पूछा :—"उस दिन रात को तुमने जब यह कहा था कि बड़ा मज़ा आया तो वह क्या बात थी ?" उसने हंसते हुए जवाब दिया :—"रात का समय था, हम अंधेरे में गिरते पड़ते चले जा रहे थे. मुझे बिलकुल ऐसा लगा कि जैसे हम सब किसी क्रान्तिकारी फ़ौज के सिपाही हों."

मैंने कुछ चकित होकर कहा :—"तुए भी अजीब आदमी हो ! मैं रात भर इस चिन्ता में रहा कि न जाने तुम्हारे कहाँ चोट लगी होगी, और तुम क्रान्तिकारी सेना में भरती होने के ख़ाब देख रही थीं !"

उसने जवाब दिया :—"तुम से किसने कहा था चिन्ता करने को ? इस में चिन्ता की क्या बात थी ?"

मैं अवाक रह गया. पर यह ख़्याल मेरे दिल में बना रहा कि मेरी बीवी छोटी उमर की और नातजरबेकार है और ख़ुद अपनी रक्षा नहीं कर सकती.

हम अपनी नई जगह पर पहुँच गए. वहाँ पहुँचने के तुरन्त बाद ही सरकार ने मुझे लड़ाई पर भेज दिया. मेरी बीवी घर में अकेली रह गई. जब मैं लौटकर आया तो मेरी बीवी के लड़का हो चुका था. हमारा वह पहला बच्चा था. मेरी बीवी उसकी देख रेख में लगी रहती थी. इधर चीन में 'भूमि सुधार' यानी सारी खेती की ज़मीन के फिर से बटवारे का आन्दोलन शुरू हो चुका था. उसमें लाखों काम करने वालों की ज़रूरत थी. मैं उस काम के लिये चला गया. कभी-कभी बीच में घर आकर बीवी बच्चे से मिलता रहा.

एक बार मैं इसी तरह घर आया तो यह देखकर हैरान रह गया कि घर में कोई नहीं है. एक पड़ोसी से मालूम हुआ कि गाँव में कहीं पर ग़रीब बेज़मीन किसानों की सभा हो रही है और मेरी बीवी वहीं गई हुई है. मैंने सोचा—क्या मेरी बीवी इसी तरह बच्चे की ख़बरगीरी करती है ! यह सोचकर मैं बीवी की तलाश में निकल पड़ा.

भूमि सुधार हमारे इस गाँव में भी शुरू हो गया था. मैंने जाकर देखा कि किसानों की एक सभा हो रही है, मेरी बीवी उसी में बैठी हुई है और एक कापी में सारी कार्रवाई के नोट लेती जा रही है. एक बूढ़ी औरत मेरे बच्चे को सँभाले हुए है,

मुझे देखते ही मेरी बीवी .खुश होकर हँसी, पर अपनी जगह से न उठी. सभा समाप्त होने तक मुझे इन्तज़ार करना पड़ा.

वहाँ से चलते हुए मैंने बच्चे को गोद में ले लिया और बीवी से पूछा :—"क्या तुम इस तरह के काम भी कर सकती हो ?"

دیکھ کر خوشی ہوئی کہ میری بیوی کو اچھے پریمی ججمان مل گئے ۔ مجھے یہ یقین پھر بھی نہ ہوا کہ میری بیوی اپنا انتظام خود کر سکتی ہے ۔

اگلے دن سڑک پر چلتے ہوئے میں نے اپنی بیوی سے پوچھا:—"اُس دن رات کو تم نے جب یہ کہا تھا کہ بڑا مزا آیا تو وہ کیا بات تھی ؟" اُس نے ہنستے ہوئے جواب دیا:—"رات کا سمے تھا، ہم اندھیرے میں گرتے پڑتے چلے جا رہے تھے ۔ مجھے بالکل ایسا لگا کہ جیسے ہم سب کسی کرانتی کاری فوج کے سپاہی ہوں ۔"

میں نے کچھ چکت ہو کر کہا:—"تم بھی عجیب آدمی ہو! میں رات بھر اِس چنتا میں رہا کہ نہ جانے تمہارے کہاں چوٹ لگی ہو گی، اور تم کرانتی کاری سینا میں بھرتی ہونے کے خواب دیکھ رہی تھیں !"

اُس نے جواب دیا:—"تم سے کس نے کہا تھا چنتا کرنے کو ؟ اِس میں چنتا کی کیا بات تھی ؟"

میں اواک رہ گیا ۔ پر یہ خیال میرے دل میں بنا رہا کہ میری بیوی چھوٹی عمر کی اور نا تجربہ‌کار ہے اور خود اپنی رکشا نہیں کر سکتی ۔

ہم اپنی نئی جگہ پر پہنچ گئے ۔ وہاں پہنچنے کے ترنت بعد ہی سرکار نے مجھے لڑائی پر بھیج دیا ۔ میری بیوی گھر میں اکیلی رہ گئی ۔ جب میں لوٹ کر آیا تو میری بیوی کے لڑکا ہو چکا تھا ۔ ہمارا وہ پہلا بچہ تھا ۔ میری بیوی اُس کی دیکھ ریکھ میں لگی رہتی تھی ۔ اِدھر چین میں 'بھومی سدھار' یعنی ساری کھیتی کی زمین کے پھر سے بٹوارے کا آندولن شروع ہو چکا تھا ۔ اُس میں لاکھوں کام کرنے والوں کی ضرورت تھی ۔ میں اُس کام کے لئے چلا گیا ۔ کبھی کبھی بیچ میں گھر آکر بیوی بچے سے ملتا رہا ۔

ایک بار میں اِسی طرح گھر آیا تو یہ دیکھ کر حیران رہ گیا کہ گھر میں کوئی نہیں ہے ۔ ایک پڑوسی سے معلوم ہوا کہ گاؤں میں کہیں پر غریب بے زمین کسانوں کی سبھا ہو رہی ہے اور میری بیوی وہیں گئی ہوئی ہے ۔ میں نے سوچا—کیا میری بیوی اِسی طرح بچے کی خبرگیری کرتی ہے ! یہ سوچ‌کر میں بیوی کی تلاش میں نکل پڑا ۔

بھومی سدھار ہمارے اِس گاؤں میں بھی شروع ہو گیا تھا ۔ میں نے جاکر دیکھا کہ کسانوں کی ایک سبھا ہو رہی ہے، میری بیوی اُسی میں بیٹھی ہوئی ہے اور ایک کاپی میں ساری کارروائی کے نوٹ لیتی جا رہی ہے ۔ ایک بوڑھی عورت میرے بچے کو سنبھالے ہوئے ہے ۔

مجھے دیکھتے ہی میری بیوی خوش ہو کر ہنسی، پر جگہ سے نہ اُٹھی ۔ سبھا سماپت ہونے تک مجھے انتظار کرنا پڑا ۔

وہاں سے چلتے ہوئے میں نے بچے کو گود لے لیا اور بیوی سے پوچھا:—"کیا تم اِس طرح کے کام بھی کر سکتی ہو ؟"

उसने जवाब दिया:—"क्या तुमने अभी मुझे करते हुए नहीं देखा?" उसकी आँखें उत्साह से नाच रही थीं.

मैंने फिर पूछा:—"क्या बच्चा दूसरे के पास रोता नहीं?" मेरे इस पूछने में एक घबराहट थी. बीवी ने उस घबराहट की तरफ़ बिलकुल ध्यान नहीं दिया और उदासीनता के साथ मुझसे कहा कि बच्चा बहुत ही भला है, और फिर भूमि सुधार की बाबत मुझ से तरह तरह की बातें पूछने लगी.

उसकी बातों का जवाब देने के बजाय मैंने उससे फिर पूछा—"क्या तुम इस काम में पड़ना चाहती हो?"

मेरे सवाल से अब साफ़ झलकता था कि मैं अपनी बीवी के उस काम में पड़ने को पसन्द नहीं करता. मेरी बीवी ने सीधे मेरी आंखों की तरफ़ देखकर कहा:—"बेशक! क्या तुम इसे ठीक नहीं समझते? मुझे सिवा बच्चे की देख रेख के और काम ही क्या है? तुम घर पर रहते नहीं. सब लोग भूमि सुधार में दिलचस्पी ले रहे हैं और हिस्सा ले रहे हैं. जब ढोल और घन्टे बजते हैं और सब लोग नारे लगाते हैं तो मैं घर में भला कैसे बैठ सकती हूँ? क्या मैं ग़लत कह रही हूँ?"

बिना सोचे मेरे मुँह से निकल गया:—"नहीं, ग़लत क्यों कह रही हो. भूमि सुधार तो बहुत अच्छा काम है और सब को चाहिये कि उसमें जितना हिस्सा ले सकें लें."

पर मुझे ऐसा लगा कि मेरी बात कुछ ऊपरी-ऊपरी थी. मैं ख़ुद पूरी तरह भूमि सुधार के काम में लगा हुआ था. तीन ज़िलों का संगठन मेरे सुपुर्द था. ग़रीब किसानों के साथ मेरे दिल में हमदर्दी थी. मैं उन्हीं के साथ रहता और काम करता था. मैंने अपनी सारी शक्ति इसी में लगा रखी थी कि हर बेज़मीन किसान को ज़मीन मिल जावे, जिसे वह अपनी मिलकीयत कह सके. पर जब मेरे सामने यह सवाल आया कि मेरी बीवी इस काम में हिस्सा ले या न ले तो मेरा ख़याल दूसरा हो गया. मुझे ऐसा लगने लगा कि मेरी बीवी का काम केवल यही है कि बच्चे को खिलाए पिलाए और उसकी रखवाली करे.

घर पहुँचकर मेरी बीवी ने फिर वही सवाल उठाया. मैंने साफ़-साफ़ उसे मना तो नहीं किया पर तरह तरह के एतराज़ करने शुरू कर दिये, जैसे यह कि बच्चे की पूरी ख़बरगीरी कैसे हो सकेगी? बच्चा बीमार पड़ गया तो क्या होगा? वग़ैरह वग़ैरह. इन सब एतराज़ों के पीछे मेरे दिल का चोर यही था कि मेरी बीवी कहीं बाहर जाकर काम करे यह मुझे बरदाश्त नहीं था. मेरे दिल में यह बात बैठी हुई थी कि बीवी की रक्षा और ख़बरगीरी करना मेरा ही काम है.

اُس نے جواب دیا:—"کیا تم نے ابھی مجھے کرتے ہوئے نہیں دیکھا؟" اُس کی آنکھیں اُتساہ سے ناچ رہی تھیں.

میں نے پھر پوچھا: "کیا بچہ دوسرے کے پاس روتا نہیں؟" میرے اِس پوچھنے میں ایک گھبراہٹ تھی. بیوی نے اُس گھبراہٹ کی طرف بالکل دھیان نہیں دیا اور اُداسینتا کے ساتھ مجھ سے کہا کہ بچہ بہت ہی بھلا ہے، اور پھر بھومی سدھار کی بابت مجھ سے طرح طرح کی باتیں پوچھنے لگی.

اُس کی باتوں کا جواب دینے کے بجائے میں نے اُس سے پھر پوچھا:—"کیا تم اِس کام میں پڑنا چاہتی ہو؟"

میرے سوال سے اب صاف جھلکتا تھا کہ میں اپنی بیوی کے اُس کام میں پڑنے کو پسند نہیں کرتا. میری بیوی نے سیدھے میری آنکھوں کی طرف دیکھ کر کہا:—"بے شک! کیا تم اِسے ٹھیک نہیں سمجھتے؟ مجھے سوائے بچے کی دیکھ ریکھ کے اور کام ہی کیا ہے؟ تم گھر پر رہتے نہیں. سب لوگ بھومی سدھار میں دلچسپی لے رہے ہیں اور حصہ لے رہے ہیں. جب ڈھول اور گھنٹے بجتے ہیں اور سب لوگ نعرے لگاتے ہیں تو میں گھر میں بھلا کیسے بیٹھ سکتی ہوں؟ کیا میں غلط کہہ رہی ہوں؟"

بنا سوچے میرے منہ سے نکل گیا:—"نہیں، غلط کیوں کہہ رہی ہو. بھومی سدھار تو بہت اچھا کام ہے اور سب کو چاہئے کہ اُس میں جتنا حصہ لے سکیں لیں."

پر مجھے ایسا لگا کہ میری بات کچھ اُوپری اُوپری تھی. میں خود پوری طرح بھومی سدھار کے کام میں لگا ہوا تھا. تین ضلعوں کا سنگٹھن میرے سپرد تھا. غریب کسانوں کے ساتھ میرے دل میں ہمدردی تھی. میں اُنہیں کے ساتھ رہتا اور کام کرتا تھا. میں نے اپنی ساری شکتی اِسی میں لگا رکھی تھی کہ ہر بے زمین کسان کو زمین مل جاوے، جسے وہ اپنی ملکیت کہہ سکے. پر جب میرے سامنے یہ سوال آیا کہ میری بیوی اِس کام میں حصہ لے یا نہ لے تو میرا خیال دوسرا ہو گیا. مجھے ایسا لگنے لگا کہ میری بیوی کا کام کیول یہی ہے کہ بچے کو کھلائے پلائے اور اُس کی رکھوالی کرے.

گھر پہنچ کر میری بیوی نے پھر وہی سوال اُٹھایا. میں نے صاف صاف اُسے منع تو نہیں کیا پر طرح طرح کے اعتراض کرنے شروع کر دیئے، جیسے یہ کہ بچے کی پوری خبر گیری کیسے ہو سکے گی؟ بچہ بیمار پڑ گیا تو کیا ہوگا؟ وغیرہ وغیرہ. اِن سب اعتراضوں کے پیچھے میرے دل کا چور یہی تھا کہ میری بیوی کہیں باہر جاکر کام کرے یہ مجھے برداشت نہیں تھا. میرے دل میں یہ بات بیٹھی ہوئی تھی کہ بیوی کی رکشا اور خبرگیری کرنا میرا ہی کام ہے.

आख़िरकार मेरी बीवी को उस तरह के काम करने का ख़याल छोड़ देना पड़ा. देश की आज़ादी की लड़ाई भी ख़त्म हो गई, आन्दोलन भी ख़त्म हो गया, वह फिर कहीं न गई. और मैं हमेशा जगह-जगह जाता रहा, काम करता रहा, जब चाहता था घर आता था और अपनी बीवी बच्चे के साथ रहकर .ख़ुश होता था. मैं इसी में .ख़ुश था कि मेरी बीवी घर को कितनी अच्छी तरह संभाले हुए है.

देश आज़ाद हो गया. हम लोग वह गाँव छोड़कर शहर में आ बसे. मुझे एक और ज़िम्मेदारी का काम सौंप दिया गया और मैं अपने नए काम में पूरी तरह लग गया.

कई बरस बीत गए. एक दिन शाम को मुझे घर जाने में कुछ देर हो गई. मैं दफ़्तर ही में काम करता रह गया. मेरी बीवी मुझे देखने के लिये मेरे दफ़्तर में आई. मैंने सर उठाकर उसकी तरफ़ देखा. वह पास की कुर्सी पर बैठ गई. मैं फिर अपना काम करने लगा. थोड़ी देर में वह चुपके से उठकर दरवाज़े की तरफ़ बढ़ी.

मैंने कहा:—"ज़रा ठहरो, कुछ मिनटों में ही मेरा काम ख़त्म हो जायगा." उसने बिना मेरी तरफ़ मुड़े जवाब दिया :—"कोई बात नहीं, तुम अपना काम करते रहो."

उसकी आवाज़ में एक निराशा झलक रही थी. इसे देखकर मैं चौंक पड़ा और उठकर उसके पास गया. वह दरवाज़े के पास खड़ी थी और उदास मालूम होती थी. मैंने उसे तसल्ली देना चाहा. पर मेरे मुँह से केवल यही शब्द निकल सके—"मैं सचमुच बहुत व्यस्त हूँ. मुझे अफ़सोस है तुम समझ नहीं रही हो कि यह काम देश का काम है."

उसने एक ठंडी सांस ली. मैं और कुछ न कह सका. मेरे दिल में फिर भी यही ख़याल आ रहा था कि काश! मेरी बीवी राजनीति की बातें समझ सकती और उनकी क़द्र कर सकती!

मेरी बीवी इसके बाद फिर कभी मेरे दफ़्तर नहीं आई. कभी-कभी जब मैं घर देर में पहुँचता तो मुझे पता चलता कि वह बच्चे को लेकर पड़ौस में किसी के यहाँ चली गई है. हम दोनों में जब कभी बात होती तो ग्रहस्थी के कुछ मामलों पर होती या बच्चे की बाबत होती या हम दोनों मिलकर बच्चे को प्यार करते. कोई और विषय हमारी बातों के लिये था ही नहीं.

धीरे-धीरे मुझे यह महसूस होने लगा कि मेरी बीवी कुछ उदास रहती है. मैंने तय किया कि बीवी के साथ ज़्यादा वक़्त ख़र्च किया करूँ. हर इतवार को मैं उसे बाज़ार ले जाता और हम तरह तरह की ऐसी-ऐसी चीज़ें ख़रीदते जो हमारे लिये ग़ैरज़रूरी थीं.

एक दिन मेरी बीवी ने मुझसे कहा कि :—"मैं सितार सीखना चाहती हूँ."

آخرکار میری بیوی کو اُس طرح کے کام کرنے کا خیال چھوڑ دینا پڑا۔ دیش کی آزادی کی لڑائی بھی ختم ہو گئی، آندولن بھی ختم گیا، وہ پھر کہیں نہ گئی۔ اور میں ہمیشہ جگہ جگہ جاتا رہا، کام کرتا رہا، جب چاہتا تھا گھر آتا تھا اور اپنی بیوی بچے کے ساتھ رہ کر خوش ہوتا تھا۔ میں اِسی میں خوش تھا کہ میری بیوی گھر کو کتنی اچھی طرح سنبھالے ہوئے ہے۔

دیش آزاد ہو گیا۔ ہم لوگ وہ گاؤں چھوڑ کر شہر میں آ بسے۔ مجھے ایک اور ذمہ داری کا کام سونپ دیا گیا اور میں اپنے نئے کام میں پوری طرح لگ گیا۔

کئی برس بیت گئے۔ ایک دن شام کو مجھے گھر جانے میں کچھ دیر ہو گئی۔ میں دفتر ہی میں کام کرتا رہ گیا۔ میری بیوی مجھے دیکھنے کے لئے دفتر میں آئی۔ میں نے سر اُٹھا کر اُس کی طرف دیکھا۔ وہ پاس کی کرسی پر بیٹھ گئی۔ میں پھر اپنا کام کرنے لگا۔ تھوڑی دیر میں وہ چپکے سے اُٹھ کر دروازے کی طرف بڑھی۔

میں نے کہا:—"ذرا ٹھہرو، کچھ منٹوں میں ہی میرا کام ختم ہو جائیگا"۔ اُس نے بنا میری طرف مڑے جواب دیا:—"کوئی بات نہیں۔ تم اپنا کام کرتے رہو۔"

اُس کی آواز میں ایک نراشا جھلک رہی تھی۔ اسے دیکھ کر میں چونک پڑا اور اُٹھ کر اُس کے پاس گیا۔ وہ دروازے کے پاس کھڑی تھی اور اُداس معلوم ہوتی تھی۔ میں نے اُسے تسلی دینا چاہا۔ پر میرے منہ سے کیول یہی شبد نکل سکے:—"میں سچ مچ بہت ویست ہوں۔ مجھے افسوس ہے تم سمجھ نہیں رہی ہو کہ یہ کام دیش کا کام ہے۔"

اُس نے ایک ٹھنڈی سانس لی۔ میں اور کچھ نہ کہہ سکا۔ میرے دل میں پھر بھی یہی خیال آرہا تھا کہ کاش! میری بیوی راجنیتی کی باتیں سمجھ سکتی اور اُن کی قدر کر سکتی!

میری بیوی اِس کے بعد پھر کبھی میرے دفتر نہیں آئی۔ کبھی کبھی جب میں گھر دیر میں پہنچتا تو مجھے پتا چلتا کہ وہ بچے کو لیکر پڑوس میں کسی کے یہاں چلی گئی ہے۔ ہم دونوں میں جب کبھی بات ہوتی تو گرہستی کے کچھ معاملوں پر ہوتی یا بچے کی بابت ہوتی یا ہم دونوں مل کر بچے کو پیار کرتے۔ کوئی اور وشے ہماری باتوں کے لئے تھا ہی نہیں۔

دھیرے دھیرے مجھے یہ محسوس ہونے لگا کہ میری بیوی کچھ اُداس رہتی ہے۔ میں نے طے کیا کہ بیوی کے ساتھ زیادہ وقت خرچ کیا کروں۔ ہر اتوار کو میں اُسے بازار لے جاتا اور ہم طرح طرح کی ایسی ایسی چیزیں خریدتے جو ہمارے لئے غیر ضروری تھیں۔

ایک دن میری بیوی نے مجھ سے کہا کہ:—"میں ستار سیکھنا چاہتی ہوں۔"

हमारे दफ़्तर में एक आदमी काम करता था जिसे गाना बजाना आता था. बात आने पर उसने मुझ से कहा :—"मैं तुम्हारी बीवी को सितार बजाना सिखा दूँगा." मैंने सोचा—क्या हर्ज है, इससे मेरी बीवी की तबीयत लगी रहेगी. मैंने अपनी बीवी को सितार लाकर दे दिया और उसने मेरे दफ़्तर के उस आदमी से सीखना शुरू कर दिया.

सन् 1952 में देश के रहे सहे भ्रष्टाचार, फ़ज़ूल ख़र्ची और अफ़सरशाही के ख़िलाफ़ एक नया आन्दोलन शुरू हुआ. वह आन्दोलन 'सान फ़ान' आन्दोलन कहलाता था.

अब एक घटना घटी जिससे मुझे अपना असली चेहरा साफ़ शीशे में दिखाई दे गया.

मेरे दफ़्तर के साथियों ने मुझसे आकर कहा कि मुझ में बहुत अफ़सरीयत आ गई है. उन्होंने मुझसे यह भी शिकायत की कि—"तुम अपनी बीवी की मदद नहीं करते."

यह सुनकर मुझे एक धक्का सा लगा. मैं अभी तक यही समझे हुए था कि मैं उन सब से ज़्यादा मेहनत से काम करता हूँ. मैं यह भी समझता था कि मुझे घर का इन्तज़ाम भी बहुत अच्छा करना आता है. नए आन्दोलन के अनुसार .खुद अपने अन्दर निगाह डालने और अपने दोषों को देखने में भी दफ़्तर में मैं ही सब से आगे-आगे था. इसमें मेरा इतना समय लग जाता था कि अपनी बीवी की तरफ़ मैं पहले से भी कम ध्यान देने लगा था.

दफ़्तर के अन्दर सबसे पहला मुजरिम हमने उस आदमी को पकड़ा जो मेरी बीवी को सितार सिखाने आया करता था. उसने दफ़्तर के कुछ रुपये ग़बन कर लिये थे. उसके इस जुर्म को सब को बताने के लिये उसके कारटून बनाकर दीवार पर चिपकाए गए.

एक दिन शाम को कम्युनिस्ट पार्टी का सेक्रेटरी मुझसे दफ़्तर में मिलने आया. उसका चेहरा कुछ उड़ा-उड़ा था. उसने आकर मुझसे कहा :—"लोगों में तरह-तरह की बातें उड़ रही हैं. कुछ लोग कहते हैं कि जिस आदमी ने रुपया ग़बन किया है उसने उसमें से कुछ रुपया तुम्हारी बीवी को खिलाने पिलाने में ख़र्च किया है."

यह सुनकर मेरे दिल पर बड़ी गहरी चोट लगी. अब तक मैं सोचा करता था कि मैं अपनी बीवी की तरफ़ काफ़ी ध्यान नहीं दे रहा हूँ. मैं इस बारे में अपने को क़सूरवार समझता था. पर अब मुझे उससे एक दम नफ़रत हो गई. मैं देर तक उसी कमरे में बैठा सोचता रहा और अन्दर ही अन्दर कुढ़ता रहा. यहां तक कि अंधेरा हो गया. सब लोग अपने-अपने घर चले गए. मुझे रह रहकर ग़ुस्सा आ रहा था. सोच रहा था अब क्या करना चाहिये—क्या बीवी को तलाक़ दे दूँ ? और इस ग्रहस्थी को तोड़कर ख़तम कर दूँ ?

همارے دفتر میں ایک آدمی کام کرتا تھا جسے گانا بجانا آتا تھا . بات آنے پر اُس نے مجھ سے کہا—"میں تمہاری بیوی کو ستار بجانا سکھا دونگا ." میں نے سوچا—کیا هرج هے' اِس سے میری بیوی کی طبیعت لگی رهے گی . میں نے اپنی بیوی کو ستار لاکر دے دیا اور اُس نے میرے دفتر کے اُس آدمی سے سیکھنا شروع کر دیا .

سن 1952ع میں دیش کے رهے سهے بھرشٹاچار' فضول خرچی اور افسرشاهی کے خلاف ایک نیا آندولن شروع هوا . وہ آندولن 'سان فان' آندولن کہلاتا تھا .

اب ایک گھٹنا گھٹی جس سے مجھے اپنا اصلی چہرہ صاف شیشے میں دکھائی دے گیا .

میرے دفتر کے ساتھیوں نے مجھ سے آکر کہا کہ مجھ میں بہت افسریت آگئی هے . اُنھوں نے مجھ سے یہ بھی شکایت کی کہ—"تم اپنی بیوی کی مدد نہیں کرتے ."

یہ سن کر مجھے ایک دھکا سا لگا . میں ابھی تک یہی سمجھے ہوئے تھا کہ میں اُن سب سے زیادہ محنت سے کام کرتا هوں. میں یہ بھی سمجھتا تھا کہ مجھے گھر کا انتظام بھی بہت اچھا کرنا آتا هے . نئے آندولن کے انوسار خود اپنے اندر نگاہ ڈالنے اور اپنے دوشوں کو دیکھنے میں بھی دفتر میں میں هی سب سے آگے آگے تھا . اِس میں میرا اِتنا سمئے لگ جاتا تھا کہ اپنی بیوی کی طرف میں پہلے سے بھی کم دھیان دینے لگا تھا .

دفتر کے اندر سب سے پہلا مجرم هم نے اُس آدمی کو پکڑا جو میری بیوی کو ستار سکھانے آیا کرتا تھا . اُس نے دفتر کے کچھ روپئے غبن کر لئے تھے . اُس کے اِس جرم کو سب کو بتانے کے لئے اُس کے کارٹون بنا کر دیوار پر چپکائے گئے .

ایک دن شام کو کمیونسٹ پارٹی کا سیکریٹری مجھ سے دفتر میں ملنے آیا . اُس کا چہرہ کچھ اُڑا اُڑا تھا . اُس نے آکر مجھ سے کہا—"لوگوں میں طرح طرح کی باتیں اُڑ رهی هیں . کچھ لوگ کہتے هیں کہ جس آدمی نے روپیہ غبن کیا هے اُس نے اُس میں سے کچھ روپیہ تمہاری بیوی کو کھلانے پلانے میں خرچ کیا هے ."

یہ سن کر میرے دل پر بڑی گہری چوٹ لگی. اب تک میں سوچا کرتا تھا کہ میں اپنی بیوی کی طرف کافی دھیان نہیں دے رہا هوں . میں اِس بارے میں اپنے کو قصوروار سمجھتا تھا . پر اب مجھے اُس سے ایکدم نفرت هو گئی . میں دیر تک اُسی کمرے میں بیٹھا سوچتا رہا اور اندر هی اندر کڑھتا رہا . یہاں تک کہ اندھیرا هو گیا . سب لوگ اپنے اپنے گھر چلے گئے . مجھے رہ رہ کر غصہ آرہا تھا . سوچ رہا تھا اب کیا کرنا چاهئے—کیا دوں . اور اِس گرهستھی کو توڑ کر ختم

मैं घबराया हुआ सा घर पहुँचा. मेरी बीवी सोने के कमरे में अंगीठी के पास बैठी हुई थी. कमरे में धुंधली सी रोशनी थी. उस रोशनी में मैंने देखा कि मेरी बीवी बच्चे को छाती से चिपटाए हुए है, उसकी ठोढ़ी बच्चे के बालों से लगी हुई है और उसकी आँखों से टप-टप आँसू गिर रहे हैं.

यकायक मुझे अपनी बीवी पर दया आ गई. लोग उसे खुले बदनाम कर रहे थे और उसे इस बात का डर था कि उसका वह घर जिसके लिये उसने अपनी सारी जिन्दगी क़ुरबान कर दी थी और डाक्टरी पढ़ना और भूमि सुधार में देश का काम करना तक सब छोड़ दिया था, वह उसका घर अब उससे छुट सकता है.

मैं कुछ देर तक चुप खड़ा रहा. फिर मैंने धीरे से कहा:—"बच्चा मुझे दे दो, तुम जाओ और अपने को शान्त करो." बच्चा मुझे देकर बग़ैर कुछ कहे वह एक काठ की पुतली की तरह ग़ुसलख़ाने की तरफ़ गई. उसने मुँह धोया. फिर आकर बैठ गई. बच्चा फिर उसने अपनी गोद में ले लिया.

मैंने पूछा:—"आख़िर यह सब हुआ कैसे ?"

उसने जवाब दिया:—"पहले बच्चे की बात करो. हमें बच्चे को पालना ही है. अगर तुम राज़ी हो तो बच्चे को तुम ले लो."

उसके मुँह से यह शब्द बड़ी मुश्किल से निकल रहे थे. उसकी आँखें आँसुओं से लबालब थीं.

मैं सोचने लगा कि मैंने पहले कभी बच्चे की तरफ़ इतना ध्यान क्यों नहीं दिया ? मेरी बीवी वही है जो हाम्ला होने की हालत में बिना शिकायत किये पहाड़ों पर से पैदल चलकर आती थी. जंग के ख़तरों के दिनों में और भूमि सुधार आन्दोलन की गरमा-गरमी में उसने सब कुछ छोड़कर अपने बच्चे को पालकर बड़ा किया. मुझे आज से पहले अपने बेटे के भविष्य का ख़्याल क्यों नहीं आया ? आज मुझे उस बच्चे का ख़्याल आया जबकि उस मासूम बच्चे से उसकी मां या उसका बाप दोनों में से एक के छिन जाने का डर है ?

मैंने कहा:— 'ठहरो और ज़रा सोचो !"

मुझे नहीं मालूम यह शब्द मैंने अपने से कहे या अपनी बीवी से कहे. फिर मैं सोचने लगा कि क्या ठहरने से मामला हल हो जायगा ? मेरा सारा बदन काँपने लगा. मुझे याद है मैं उस समय यह देखकर हैरान था कि मेरी बीवी, जो मुझसे कहीं ज़्यादा दुखी थी, मुझसे ज़्यादा शान्त मालूम होती थी.

इतने में बच्चा जाग पड़ा और रोने लगा. मेरी बीवी उसे लेकर बिस्तर पर चली गई. मैं तनहा और बेमददगार

میں گھبرایا ہوا سا گھر پہنچا ۔ میری بیوی سونے کے کمرہ میں انگیٹھی کے پاس بیٹھی ہوئی تھی ۔ کمرہ میں دھندلی سی روشنی تھی ۔ اُس روشنی میں میں نے دیکھا کہ میری بیوی بچہ کو چھاتی سے چپٹائے ہوئے ہے' اُس کی ٹھوڑی بچہ کے بالوں سے لگی ہوئی ہے اور اُس کی آنکھوں سے ٹپ ٹپ آنسو گر رہے ہیں ۔

یکایک مجھے اپنی بیوی پر دیا آگئی ۔ لوگ اُسے کھلے بدنام کر رہے تھے ۔ اور اُسے اِس بات کا ڈر تھا کہ اُس کا وہ گھر جس کے لئے اُس نے اپنی ساری زندگی قربان کر دی تھی اور ڈاکٹری پڑھنا اور بھومی سدھار میں دیش کا کام کرنا تک سب چھوڑ دیا تھا' وہ اُس کا گھر اب اُس سے چھٹ سکتا ہے ۔

میں کچھ دیر تک چپ کھڑا رہا ۔ پھر میں نے دھیرے سے کہا:—"بچہ مجھے دے دو' تم جاؤ اور اپنے کو شانت کرو ۔"
بچہ مجھے دے کر بغیر کچھ کہے وہ ایک کاٹھ کی پتلی کی طرح غسل خانہ کی طرف گئی ۔ اُس نے منھ دھویا ۔ پھر آکر بیٹھ گئی ۔ بچہ پھر اُس نے اپنی گود میں لے لیا ۔

میں نے پوچھا:—"آخر یہ سب ہوا کیسے ؟"

اُس نے جواب دیا:—"پہلے بچہ کی بات کرو ۔ ہمیں بچہ کو پالنا ہی ہے ۔ اگر تم راضی ہو تو بچہ کو تم لے لو ۔"

اُس کے منھ سے یہ شبد بڑی مشکل سے نکل رہے تھے ۔ اُس کی آنکھیں آنسوؤں سے لبالب تھیں ۔

میں سوچنے لگا کہ میں نے پہلے کبھی بچہ کی طرف اِتنا دھیان کیوں نہیں دیا ؟ میری بیوی وہی ہے جو حاملہ ہونے کی حالت میں بنا شکایت کئے پہاڑوں پر سے پیدل چلکر آتی تھی ۔ جنگ کے خطروں کے دنوں میں اور بھومی سدھار آندولن کی گرما گرمی میں اُس نے سب کچھ چھوڑ کر اپنے بچہ کو پال کر بڑا کیا ۔ مجھے آج سے پہلے اپنے بیٹے کے بھوشیہ کا خیال کیوں نہیں آیا ؟ آج مجھے اُس بچہ کا خیال آیا جب کہ اُس معصوم بچہ سے اُس کی ماں یا اُس کا باپ دونوں میں سے ایک کے چھن جانے کا ڈر ہے ؟

میں نے کہا:—"ٹھہرو اور ذرا سوچو !"

مجھے نہیں معلوم یہ شبد میں نے اپنے سے کہے یا اپنی بیوی سے کہے ۔ پھر میں سوچنے لگا کہ کیا ٹھہرنے سے معاملہ حل ہو جائیگا ؟ میرا سارا بدن کانپنے لگا ۔ مجھے یاد ہے میں اُس سمے یہ دیکھ کر حیران تھا کہ میری بیوی' جو مجھ سے کہیں زیادہ دکھی تھی' مجھ سے زیادہ شانت معلوم ہوتی تھی ۔

اِتنے میں بچہ جاگ پڑا اور رونے لگا ۔ میری بیوی اُسے لیکر بستر پر چلی گئی ۔ میں تنہا اور بےمددگار

सा महसूस करने लगा. अपने पढ़ने के छोटे से कमरे की तरफ़ जाकर मैं कमरे में टहलने लगा. बच्चे ने रोना बन्द कर दिया था. मैंने देखा कि खिड़की के शीशों पर बरफ़ के गाले जमते जा रहे हैं. वक़्त काटे नहीं कट रहा था.

मैंने एक किताब निकाल ली. पर किताब पर ध्यान दे सकना उस समय नामुमकिन था. हमारी दोनों की सारी ज़िन्दगी की घटनाएं मेरी आँखों के सामने से फिर गईं—मेरी शादी के वह दिन……हर सनीचर की शाम को मेरी बीवी का पहाड़ पर से पैदल मेडिकल कालिज से घर आना… वह बारिश की रात, जब वह अपनी पढ़ाई छोड़ चुकी थी. हम दुश्मन से घिरी हुई रेल की पटरी को पार कर रहे थे. वह फिसल पड़ी थी. उसने उठकर हंसकर कहा था—"कैसा मज़ा आया!" ……वह भूमि सुधार आन्दोलन में काम करने के लिये कितनी उत्सुक थी….अब वह उसके सब सपने, सब आशाएं मिट्टी में मिल चुकी थीं. इस सब के लिये कौन ज़िम्मेदार था ? किसका क़सूर था ? शायद उसी की कमज़ोरी थी कि वह अपने इरादे पर डटी न रह सकी —लेकिन उसने तो अपने जीवन को किसी अधिक ऊँचे आदर्श तक पहुंचाने की कोशिश की थी—मैंने उसके साथ बजाय बराबर का सा बरताव करने के, बजाय आदमी के साथ आदमी का सा बरताव करने के, उसे अपनी मिलकियत समझ लिया था—मैं उसे अपने साथ बाँधकर रखना चाहता था ! मुझे यह सूझता ही न था कि वह क्या-क्या काम कर सकती है और उसे क्या करना चाहिये. मैंने अपने को यह भुलावा दे रखा था कि मैं अपनी बीवी की 'रक्षा कर रहा हूँ." वास्तव में मैं उसकी ज़िन्दगी को बरबाद कर रहा था—अब मुझे यह सब साफ़-साफ़ दिखाई देने लगा.

मैं फिर सोने के कमरे में गया. वह ज्यों की त्यों अंगीठी के पास बैठी हुई थी. मैंने सोए हुए बच्चे की साँस की आवाज़ सुनी. मैंने अपनी बीवी से कहा—"आओ, कुछ बातें कर लें."

शुरू-शुरू में बात करते हुए हमें बड़ा दुखः महसूस हो रहा था. इससे पहले मैंने कभी पूरी बराबरी के साथ उससे बातें नहीं की थीं. हम दोनों बात करते-करते बारबार रुक जाते थे. दोनों के लिए अपने दिल के भावों को क़ाबू में कर सकना असम्भव हो रहा था. न बोलते बनता था और न चुप रहते बनता था. पर हम बात करते रहे. एक बात से दूसरी बात. थोड़ी देर में हमें ऐसा लगा कि हमारे दोनों के कन्धों से एक बहुत बड़ा बोझ उतर गया. हम अपनी मुसीबत की तह तक पहुंच गए. मेरे दिल के सब शक दूर हो गए. इन शकों के लिये मैंने अपने को धिक्कारा. अब हम यह सोचने लगे कि मेरी बीवी को दिल बहलाने

سا محسوس کرنے لگا ۔ اپنے پڑھنے کے چھوٹے سے کمرے کی طرف جا کر میں ٹہلنے لگا ۔ بچے نے رونا بند کر دیا تھا ۔ میں نے دیکھا کہ کھڑکی کے شیشوں پر برف کے گالے جمتے جا رہے ہیں ۔ وقت کاٹے نہیں کٹ رہا تھا ۔

میں نے ایک کتاب نکال لی ۔ پر کتاب پر دھیان دے سکنا اُس سمے ناممکن تھا ۔ ہماری دونوں کی ساری زندگی کی گھٹنائیں میری آنکھوں کے سامنے سے پھر گئیں—میری شادی کے وہ دن……ہر سنیچر کی شام کو میری بیوی کا پہاڑ پر سے پیدل میڈیکل کالج سے گھر آنا……وہ بارش کی رات، جب وہ اپنی پڑھائی چھوڑ چکی تھی ۔ ہم دشمن سے گھری ہوئی ریل کی پٹری کو پار کر رہے تھے—وہ پھسل پڑی تھی ۔ اُس نے اُٹھ کر ہنسکر کہا تھا—"کیسا مزہ آیا!"……وہ بھومی سدھار آندولن میں کام کرنے کے لئے کتنی اتسک تھی……اب وہ اُس کے سب سپنے، سب آشائیں مٹی میں مل چکی تھیں ۔ اِس سب کے لئے کون ذمہ دار تھا ؟ کس کا قصور تھا ؟ شاید اُسی کی کمزوری تھی کہ وہ اپنے اِرادہ پر ڈٹی نہ رہ سکی—لیکن اُس نے تو اپنے جیون کو کسی ادھک اونچے آدرش تک پہنچانے کی کوشش کی تھی—میں نے اُس کے ساتھ بجائے برابر کا سا برتاؤ کرنے کے، بجائے آدمی کے ساتھ آدمی کا سا برتاؤ کرنے کے، اُس نے اپنی ملکیت سمجھ لیا تھا—میں اُسے اپنے ساتھ باندھکر رکھنا چاہتا تھا ! مجھے یہ سوجھتا ہی نہ تھا کہ وہ کیا کیا کام کر سکتی ہے اور اُسے کیا کرنا چاہئے ۔ میں نے اپنے کو یہ بھلاوا دے رکھا تھا کہ میں اپنی بیوی کی "رکشا کر رہا ہوں ۔" واستو میں میں اُس کی زندگی کو برباد کر رہا تھا—اب مجھے یہ سب صاف صاف دکھائی دینے لگا ۔

میں پھر سونے کے کمرے میں گیا ۔ وہ جیوں کی تیوں انگیٹھی کے پاس بیٹھی ہوئی تھی ۔ میں نے سوئے ہوئے بچے کے سانس کی آواز سنی ۔ میں نے اپنی بیوی سے کہا—"آؤ، کچھ باتیں کرلیں ۔"

شروع شروع میں بات کرتے ہوئے ہمیں بڑا دکھ محسوس ہو رہا تھا ۔ اِس سے پہلے میں نے کبھی پوری برابری کے ساتھ اُس سے باتیں نہیں کی تھیں ۔ ہم دونوں بات کرتے کرتے بار بار رک جاتے تھے ۔ دونوں کے لئے اپنے دل کے بھاؤں کو قابو میں کر سکنا اسمبھو ہو رہا تھا ۔ نہ بولتے بنتا تھا اور نہ چپ رہتے بنتا تھا ۔ پر ہم بات کرتے رہے ۔ ایک بات سے دوسری بات ۔ تھوڑی دیر میں ہمیں ایسا لگا کہ ہمارے دونوں کے کندھوں سے ایک بہت بڑا بوجھ اُتر گیا ۔ ہم اپنی مصیبت کی تہ تک پہنچ گئے ۔ میرے دل سے سب شک دور ہو گئے ۔ اِن شکوں کے لئے میں نے اپنے کو دھتکارا ۔ اب ہم یہ سوچنے لگے کہ میری بیوی کو دل بہلانے

के लिये कुछ काम जरूर करना चाहिये. आखिर वह भी आदमी है. उसके भी दिल है. हम सोचने लगे कि उसे क्या काम करना चाहिये, और जब वह काम करेगी तो बच्चे का क्या इन्तजाम होगा.

मेरी बीबी का चेहरा पुरानी लड़कपन की मासूमियत के साथ चमक उठा. हम अब इतने खुश हुए और इतना सुख महसूस करने लगे जितना शादी से लेकर अब तक हमने कभी महसूस नहीं किया था. थोड़े ही दिनों में मेरी बीबी एक पास के कारखाने की मजदूरों की ट्रेड यूनियन में काम करने लगी. वह अब पहले से भी ज्यादा खुश और जोशीली दिखाई देने लगी.

अब भी कभी-कभी हमारे सामने मुश्किलें आ जाती हैं पर हम आपस में बात करके उन्हें हल कर लेते हैं. एक दूसरे के साथ मिलकर काम करने का मैदान हमारे लिए बहुत बढ़ गया है. एक दूसरे का आदर भी बढ़ गया है. हमारा बेटा स्कूल जाता है. इतवार को हम सब मिलकर छुट्टी मनाते हैं. हम सब अपना अपना काम भी करते रहते हैं और साथ ही हमारा घरेलू जीवन भी अब पहले से कहीं अधिक प्रेम भरा जीवन हो गया है.

("चाइना रीकन्सट्रक्ट", दिसम्बर सन् 1956, से)

کے لئے کچھ کام ضرور کرنا چاہئے. آخر وہ بھی آدمی ہے. اس کے بھی دل ہے. ہم سوچنے لگے کہ اسے کیا کام کرنا چاہئے. اور جب وہ کام کریگی تو بچے کا کیا انتظام ہوگا.

میری بیوی کا چہرہ پرانی لڑکپن کی معصومیت کے ساتھ چمک اٹھا. ہم اب اتنے خوش ہوئے اور اتنا سکھ محسوس کرنے لگے جتنا شادی سے لیکر اب تک ہم نے کبھی محسوس نہیں کیا تھا. تھوڑے ہی دنوں میں میری بیوی ایک پاس کے کارخانہ کے مزدوروں کی ٹریڈ یونین میں کام کرنے لگی. وہ اب پہلے سے بھی زیادہ خوش اور جوشیلی دکھائی دینے لگی.

اب بھی کبھی کبھی ہمارے سامنے مشکلیں آجاتی ہیں، پر ہم آپس میں بات کر کے انہیں حل کر لیتے ہیں. ایک دوسرے کے ساتھ ملکر کام کرنے کا میدان ہمارے لئے بہت بڑھ گیا ہے. ایک دوسرے کا آدر بھی بڑھ گیا ہے. ہمارا بیٹا اسکول جاتا ہے. اتوار کو ہم سب ملکر چھٹی مناتے ہیں. ہم سب اپنا اپنا کام کرتے رہتے ہیں اور ساتھ ہی ہمارا گھریلو جیون بھی اب پہلے سے کہیں ادھک پریم بھرا جیون ہو گیا ہے.

("چائنا ریکنسٹرکٹ" دسمبر سن 1956ء سے)

नीले पंख

श्री सलाम मछलीशहरी

फ़ाख्ता !

मेरी नसरीन की प्यारी सखी,
तू इसी तरह फिर आज आ ही गई,
दांत में शाखे ज़ैतों दबाये हुये,
एक खुशबू सी हर सू उड़ाये हुये,
यह खमोशी मुहब्बत का इक़रार है,
इन मुंडेरों से तुझको बड़ा प्यार है.
सेहन में इक घरौंदा बना ले ज़रा,
ठहर, तेरी सहेली भी आ ले ज़रा,
तब तेरी इस खमोशी का मतलब सुनूँ,
तेरी आँखों के गुलशन की कलियाँ चुनूँ,

نیلے پنکھ

شری سلام مچھلی شہری

فاختہ !

میری نسرین کی پیاری سکھی،
تو اسی طرح پھر آج آ ہی گئی،
دانت میں شاخ زیتوں دبائے ہوئے،
ایک خوشبو سی ہر سو اڑائے ہوئے،
یہ خموشی محبت کا اقرار ہے،
ان منڈیروں سے تجھکو بڑا پیار ہے.
صحن میں اک گھروندا بنالے ذرا،
ٹھہر، تیری سہیلی بھی آلے ذرا،
تب تیری اس خموشی کا مطلب سنوں،
تیری آنکھوں کے گلشن کی کلیاں چنوں،

इतनी जल्दी भी क्या है मेरी फ़ाख़्ता,
आज काहे को इतनी परेशान है ?
बार बार आज यह इज़्म परवाज़ क्यों ?
ठहर कुछ देर आराम कर ले ज़रा,
पास ही छत पे छिटका हुआ धान है,
घर में भी यह तकल्लुफ़ का अन्दाज़ क्यों ?

चाहता हूँ कि उड़ने के पहले तुझे,
मेरी नन्ही सहेली लगा ले गले.
अपने लहजे में दे दे दुआयें ज़रा,
कर तो ले तुझ से यह इल्तजायें ज़रा,
मेरी गुड़िया की शादी है, आओगी न ?
फ़ाख़्ता तुम भी इक गीत गाओगी न ?

चाहता हूँ कि उड़ने से पहले तुझे,
मेरे घर के यह दीवारो दर देख लें,
अपनी क़ुव्वत से ग़ाफ़िल निगाहें मेरी,
तेरे यह मुख़्तसिर बालोपर देख लें,
चाहता हूँ कि उड़ने से पहले तुझे,
अपने आँगन की यह निसतरन सौंप दूँ.
यह जो कच्ची मुंडेरों पे रक़्सन्दा है,
सुबह की यह सुहानी किरन सौंप दूँ,
लेकिन अब क्या करूँ तू तो उड़ने लगी !

ख़ैर उड़ और इस तरह उड़ फ़ाख़्ता,
जैसे गुलशन में चलती हो ठंडी हवा,
जैसे बालाओं की सुरमई साड़ियाँ,
जैसे सावन की कोमल मनोहर घटा;
जैसे घनश्याम की बाँसुरी की सदा,

तुझ को चारों दिशाओं में उड़ते हुये,
आतशीं रास्तों से गुज़रना भी है.
और इन रास्तों से गुज़रते हुये,
अपने आदर्श का पास करना भी है.
तेरा आदर्श सारे जहाँ की ख़ुशी,
तेरी परवाज़ की जान है आशती,
तेरे इस मुख़्तसिर बालो पर की क़सम,
ज़हर भागीं बगोले उड़ाते हुये,
जाने कितने हवाई जहाज़ आयेंगे,
तेरे रस्ते में आतिशफ़िशाँ की तरह,
क़हक़हे तुझ पे पैहम लगाते हुये,
एटमों के शयातेने राज आयेंगे.

पर्बतों से गुज़र,
सागरों से गुज़र,
राह में नित नये,

اِتنی جلدی بھی کیا ہے میری فاختہ،
آج کاہے کو اِتنی پریشاں ہے ؟
بار بار آج یہ عزمِ پرواز کیوں ؟
ٹھہر کچھ دیر آرام کر لے ذرا،
پاس ہی چھت پہ چھٹکا ہوا دھان ہے،
گھر میں بھی یہ تکلف کا انداز کیوں ؟

چاہتا ہوں کہ اُڑنے سے پہلے تجھے،
میری ننھی سہیلی لگا لے گلے،
اپنے لہجے میں دیدے دعائیں ذرا،
کر تو لے تجھ سے وہ اِلتجائیں ذرا،
میری گڑیا کی شادی ہے، آؤگی نہ ؟
فاختہ تم بھی اِک گیت گاؤگی نہ ؟

چاہتا ہوں کہ اُڑنے سے پہلے تجھے،
میرے گھر کے یہ دیوار و در دیکھ لیں،
اپنی قوت سے غافل نگاہیں میری،
تیرے یہ مختصر بال و پر دیکھ لیں،
چاہتا ہوں کہ اُڑنے سے پہلے تجھے،
اپنے آنگن کی یہ نسترن سونپ دوں۔
یہ جو کچی منڈیروں پہ رقصندہ ہے،
صبح کی یہ سہانی کرن سونپ دوں،
لیکن اب کیا کروں تو تو اُڑنے لگی!

خیر اُڑ اور اِس طرح اُڑ فاختہ،
جیسے گلشن میں چلتی ہو ٹھنڈی ہوا،
جیسے بالاؤں کی سرمئی ساڑیاں،
جیسے ساون کی کومل منوہر گھٹا،
جیسے گھنشیام کی بانسری کی صدا،

تجھ کو چاروں دشاؤں میں اُڑتے ہوئے،
آتشیں راستوں سے گزرنا بھی ہے۔
اور اِن راستوں سے گزرتے ہوئے،
اپنے آدرش کا پاس کرنا بھی ہے،
تیرا آدرش سارے جہاں کی خوشی،
تیری پرواز کی جان ہے آشتی،
تیرے اِس مختصر بال و پر کی قسم،
زہر آگیں بگولے اُڑاتے ہوئے،
جانے کتنے ہوائی جہاز آئیں گے،
تیرے رستے میں آتش فشاں کی طرح،
قہقہے تجھ پہ پیہم لگاتے ہوئے،
ایٹموں کے شیاطین راز آئینگے۔

پربتوں سے گذر،
ساگروں سے گذر،
راہ میں نت نئے،

मंज़रों से गुज़र,
ऊँचे महलों के हँसकर नये मोड़ से,
ग़मगीन शाहराहों से होते हुये,
तंग गलियों में सूने घरों से गुज़र···
और उन्हें इक नई रोशनी बख़्श दे,
धान के .ख़ुश्क खेतों से होते हुये,
बालियों को नई ताज़गी बख़्श दे,
कामगारों की अफ़सुर्दा आँखों को भी,
ज़िन्दगी की नई दिलकशी बख़्श दे,
हुस्नकारों के साज़े तख़ैयुल को भी,
फ़स्ले गुल की नई नरमी बख़्श दे,
अहदे हाज़िर के मायूस इन्सान को,
तो ग़रज़ इक नई ज़िन्दगी बख़्श दे.

जा मेरी फ़ाख़्ता, तायरे बेज़रर,
तेरे सारे मक़ासद बड़े पाक हैं,
तेरी परवाज़ धरती की आवाज़ है,
जानता हूँ कि यह सख़्त तूफ़ान है,
आँधियों की यह योरश ख़तरनाक है,
तेरी ताक़त पे लेकिन मुझे नाज़ है.

आँधियाँ उठ रही हैं तो उठ्ठा करें,
तू बहारे चमन की हवा बन के जा,
तेरे रस्ते में आतिशफ़िशाँ हैं तो क्या ?
तू समनबार, दिलकश घटा बन के जा,
गोलियों और बमों की गरज है तो क्या ?
तू यूँ ही नग़्मये कैफ़ज़ां, बन के जा,
राह में नफ़रतों का धुआँ है तो क्या ?
तू मुहब्बत भरी इक दुआ बन के जा,
अलविदा, अलविदा ए मेरी फ़ाख़्ता.

मेरी नसीरन की मासूम प्यारी सखी,
हर तरफ़ अपना पैग़ाम पहुँचा के जा,
तेरी परवाज़ क्यों और किस के लिये ?
अहदे हाज़िर के ज़ालिम ख़ुदाओं को भी,
अपनी मासूम आँखों से बतला के जा.

जब तलक तू न फिर लौटकर आयेगी,
यह घरौंदा न हरगिज़ बना पायेगी,
मेरी नसीरन का उजड़ा नगर क्या बने,
तेज़ आँधी में मिट्टी का घर क्या बने,
उस गुड़िया की शादी में आयेगी न ?
फ़ाख़्ता तू भी इक गीत गायेगी न ?

منظروں سے گذر،
اُونچے محلوں پہ ہنس کر نئے موڑ سے،
غمگین شاہراہوں سے ہوتے ہوئے،
تنگ گلیوں میں سونے گھروں سے گذر . .
اور اُنھیں اک نئی روشنی بخش دے،
دھان کے خشک کھیتوں سے ہوتے ہوئے،
بالیوں کو نئی تازگی بخش دے،
کامگاروں کی افسردہ آنکھوں کو بھی،
زندگی کی نئی دلکشی بخش دے،
حسن‌کاروں کے ساز تخیل کو بھی،
فصل گل کی نئی نرمی بخش دے،
عہد حاضر کے مایوس انسان کو،
تو غرض اک نئی زندگی بخش دے ۔

جا میری فاختہ، طایر بےضرر،
تیرے سارے مقاصد بڑے پاک ہیں،
تیری پرواز دھرتی کی آواز ہے،
جانتا ہوں کہ یہ سخت طوفان ہے،
آندھیوں کی یہ یورش خطرناک ہے،
تیری طاقت پہ لیکن مجھے ناز ہے،

آندھیاں اُٹھ رہی ہیں تو اُٹھا کریں،
تو بہار چمن کی ہوا بن کے جا،
تیرے رستے میں آتش‌فشاں ہیں تو کیا ؟
تو سمن بار، دلکش گھٹا بن کے جا،
گولیوں اور بموں کی گرج ہے تو کیا ؟
تو یونہی نغمۂ کیف جاں، بن کے جا،
راہ میں نفرتوں کا دھواں ہے تو کیا ؟
تو محبت بھری اک دعا بن کے جا،
الوداع، الوداع اے میری فاختہ .

میری نسرین کی معصوم پیاری سکھی،
ہر طرف اپنا پیغام پہونچا کے جا،
تیری پرواز کیوں اور کس کے لئے ؟
عہد حاضر کے ظالم خداؤں کو بھی،
اپنی معصوم آنکھوں سے بتلا کے جا .

جب تلک تو نہ پھر لوٹ کر آئیگی،
یہ گھروندا نہ ہرگز بنا پائیگی،
میری نسرین کا اُجڑا نگر کیا بنے،
تیز آندھی میں مٹی کا گھر کیا بنے،
اُس گڑیا کی شادی میں آئیگی نہ ؟
فاختہ تو بھی اک گیت گائیگی نہ ؟

चीन में सब तरह के विचारों का स्वागत

प्रोफ़ेसर च्यांग चिह-चिंग, पेकिंग विश्वविद्यालय

आजकल चीन के किसी भी अखबार या पत्रिका को उठा लीजिये उसमें साहित्य, कला और विज्ञान (साइन्स) तीनों पर तरह तरह के विचार मिलेंगे जो एक दूसरे से टकराते रहते हैं.

मिसाल के तौर पर, दसवीं सदी ईसवी में लीयू नाम का एक चीनी सम्राट हुआ था. लीयू को नाच गाने और अय्याशी का शौक़ था. इस ऐशपरस्ती में ही उसने अपनी सल्तनत खो दी और अन्त में क़ैद भी कर लिया गया. ली यू बहुत अच्छा कवि भी था. उसने 'प्रेम', 'ऐश' और 'दरबारी जीवन' पर बहुत सी कविताएं लिखी हैं. क़ैद के दिनों में उसने अपनी जन्म-भूमि की याद में 'देश प्रेम' पर भी अनेक कविताएँ लिखीं. शब्दों की रंगीनी, नाज़ुक ख़याली, भाषा और कला की दृष्टि से ली यू की कविताएं ऊँचे दरजे की समझी जाती हैं और पसन्द की जाती हैं. नए चीन में यह सवाल पैदा हुआ कि ली यू की कविताओं का मूल्य अब क्या है ? इस पर लोगों ने दो तरह के विचार प्रकट किये. कुछ लोगों का कहना है कि आज की चीनी जनता के लिए ली यू की कविताएं बिल्कुल निकम्मी हैं. उनका ख़याल है कि उस ज़माने के एक अय्याश सम्राट और आजके चीनी मज़दूरों में क्या सम्बन्ध हो सकता है ? ली यू की 'देश भक्ति' की कविताओं की बाबत भी इस तरह के लोगों की राय है कि उनमें एक गद्दी से उतारे हुए स्वार्थी सम्राट ने केवल अपना रोना रोया है.

दूसरी तरफ़ बहुत से चीनी कलाकार और विद्वान अब इसके विरुद्ध राय प्रकट कर रहे हैं. उनका कहना है कि ली यू की कविताओं की सुन्दरता, उनके लालित्य और उनकी भावपूर्णता से कोई इनकार नहीं कर सकता. ली यू की 'देश प्रेम' की कविताओं ने पिछले हज़ार बरस के अन्दर लाखों चीनियों में देश प्रेम के भाव जगाए हैं. इन लोगों का कहना है कि 'प्रेम' के ऊपर भी ली यू की कविताएं बहुत ऊँचे दरजे की हैं. वे कहते हैं कि कोई भी पुरानी तरह का सम्राट या पूँजीपति या जागीरदार, चाहे कितना ही बुरा क्यों न रहा हो, हम यह नहीं कह सकते कि उसे किसी से सच्चा प्रेम था ही नहीं, और प्रेम के विषय पर उसके उद्गार ऊँचे दरजे के नहीं हो सकते. तीन साल पहले तक चीन में बहुत कम लोग ऐसे थे जो ली यू की कविताओं के बारे में खुले इस तरह के अच्छे विचार प्रकट कर सकते थे. आज इस तरह के विचार वालों की तादाद बढ़ती जा रही

چین میں سب طرح کے وچاروں کا سواگت

پروفیسر چیانگ چہ چنگ، پیکنگ وشودیالیہ

آجکل چین کے کسی بھی اخبار یا پتریکا کو اُٹھا لیجئے اُس میں ساہتیہ، کلا اور وگیان (سائنس) تینوں پر طرح طرح کے وچار ملینگے جو ایک دوسرے سے ٹکراتے رہتے ہیں ۔

مثال کے طور پر، دسویں صدی عیسوی میں لی یو نام کا ایک چینی سمراٹ ہوا تھا ۔ لی‌یو کو ناچ گانے اور عیاشی کا شوق تھا ۔ اِس عیش‌پرستی میں ہی اُس نے اپنی سلطنت کھودی اور انت میں قید بھی کر لیا گیا ۔ لی‌یو بہت اچھا کوی بھی تھا ۔ اُس نے 'پریم' 'عیش' اور 'درباری جیون' پر بہت سی کویتائیں لکھی ہیں ۔ قید کے دنوں میں اُس نے اپنی جنم‌بھومی کی یاد میں 'دیش پریم' پر بھی انیک کویتائیں لکھیں ۔ شبدوں کی رنگینی، نازک خیالی، بھاشا اور کلا کی درشٹی سے لی‌یو کی کویتائیں اُونچے درجہ کی سمجھی جاتی ہیں اور پسند کی جاتی ہیں ۔ نئے چین میں یہ سوال پیدا ہوا کہ لی‌یو کی کویتاؤں کا مولیہ اب کیا ہے ؟ اِس پر لوگوں نے دو طرح کے وچار پرگٹ کئے ۔ کچھ لوگوں کا کہنا ہے کہ آج کی چینی جنتا کے لئے لی‌یو کی کویتائیں بالکل نکمی ہیں ۔ اُن کا خیال ہے کہ اُس زمانے کے ایک عیاش سمراٹ اور آج کے چینی مزدوروں میں کیا سمبندھ ہو سکتا ہے ؟ لی‌یو کی 'دیش بھکتی' کی کویتاؤں کی بابت بھی اِس طرح کے لوگوں کی رائے ہے کہ اُن میں ایک گدی سے اُتارے ہوئے سوارتھی سمراٹ نے کیول اپنا رونا رویا ہے ۔

دوسری طرف بہت سے چینی کلاکار اور ودوان اب اِس کے وِرودھ رائے پرگٹ کر رہے ہیں ۔ اُن کا کہنا ہے کہ لی‌یو کی کویتاؤں کی سندرتا، اُن کے لالتیہ اور اُن کی بھاؤ پورنتا سے کوئی اِنکار نہیں کر سکتا ۔ لی‌یو کی 'دیش پریم' کی کویتاؤں نے پچھلے ہزار برس کے اندر لاکھوں چینیوں میں دیش پریم کے بھاؤ جگائے ہیں ۔ اِن لوگوں کا کہنا ہے کہ 'پریم' کے اُوپر بھی لی‌یو کی کویتائیں بہت اُونچے درجہ کی ہیں ۔ وہ کہتے ہیں کہ کوئی بھی پرانی طرح کا سمراٹ یا پونجی‌پتی یا جاگیردار، چاہے کتنا ہی برا کیوں نہ رہا ہو، ہم یہ نہیں کہہ سکتے کہ اُسے کسی سے سچا پریم تھا ہی نہیں، اور پریم کے وشے پر اُس کے اُدگار اُونچے درجہ کے نہیں ہو سکتے ۔ تین سال پہلے تک چین میں بہت کم لوگ ایسے تھے جو لی‌یو کی کویتاؤں کے بارے میں کھلے اِس طرح کے اچھے وچار پرگٹ کر سکتے تھے ۔ آج اِس طرح کے وچار والوں کی تعداد بڑھتی جا رہی

है. आज के कलावन्त कला को कलाकार के निजी चरित्र और उस समय की राजकाजी परिस्थिति दोनों से अलग करके देखने लगे हैं.

इस सम्बन्ध में दो मोटे सवाल हमारे सामने आते हैं. पहला यह कि समाजवाद और मार्क्सवाद को मानने वालों का रुख़ प्राचीन चीनी साहित्य की तरफ़ क्या होना चाहिए? दूसरा यह कि किसी भी लेखक के राजकाजी विचारों या आदर्शों का उसकी कला के साथ क्या सम्बन्ध माना जाना चाहिए?

दूसरी मिसाल चीनी चित्रकला की दी जा सकती है. चीनी चित्रकला का एक पुराना ढंग चला आता था. सन् 1953 में चीन के एक बहुत बड़े कवि आई चिंग ने उस पुरानी चित्रकला पर चीन के एक मशहूर अख़बार 'वेन यी पाओ' (साहित्य कला पत्रिका) में एक मरसिया लिख डाला. आई चिंग ने कहा कि पुरानी चित्रकारी पुराने पूँजीवादी और सामन्तवादी ज़माने की उपज है, वह अपने एक ही ढंग पर चलती है. आज की हमारी आवश्यकताओं से उसका कोई सम्बन्ध नहीं. सन् 1953 में भी 'वेन यी पाओ' के कुछ पाठक ऐसे थे जो आई चिंग के इस विचार से सहमत नहीं थे. पर 'वेन यी पाओ' के सम्पादक ने उनके लेख छापने से इनकार कर दिया. नतीजा यह हुआ कि चीनी चित्रकला का वह पुराना ढंग ही मिटने लगा. उस पुराने ढंग को 'को हुआ' कहते थे जिसका अर्थ है 'राष्ट्रीय चित्रकला'. 'को हुआ' चित्रकारों के चित्र बिकने बन्द हो गए.

इन चार बरसों के अन्दर हवा फिर बदली. आज बहुत से लोग 'को हुआ' चित्रों की तारीफ़ और उनकी क़द्र करते हैं. कला की दृष्टि से वह उसमें गुण देखते हैं और दूसरों को बताते हैं. वे अब उसे एक पिछड़ी हुई चीज़ नहीं मानते. वे उसे अपनी राष्ट्रीय धरोहर मानते हैं और कहते हैं कि राष्ट्र को उसकी क़द्र करनी चाहिए. हाल में एक नई संस्था खुली है जिसमें उस पुरानी चित्रकला की तालीम दी जाती है. बहुत से पुराने चित्र वहां दर्शकों के लिए सजे हुए रखे हैं. उस तरह के पुराने चित्रों का मूल्य भी चीन में अब बढ़ता जा रहा है.

एक तीसरी मिसाल लीजिये. प्राचीन चीन के लोग भूतप्रेत में विश्वास रखते थे. भूत उतारने के लिए उनमें एक ख़ास तरह का नाच चल पड़ा था जिसे "नो-वु" कहते थे. धीरे-धीरे नाच का वह ढंग कला की निगाह से बहुत उन्नति कर गया. इसी तरह चीन के पुराने ताओ धर्म में पूजा पाठ के साथ कुछ गाना बजाना होता [illegible] बजाना भी धीरे धीरे कला की निगाह से बहुत [illegible] गया. नए चीन के शुरू के ज़माने में बहुत से लोग यह समझते थे कि उस पुराने नाच और उस पुराने गाने बजाने

ہے . آج کے کلاونت کلا کو کلاکار کے نجی چرتر اور اُس سمے کی راج‌کاجی پرستھتی دونوں سے الگ کر کے دیکھنے لگے ہیں .

اِس سمبندھ میں دو موٹے سوال ہمارے سامنے آتے ہیں . پہلا یہ کہ سماج‌واد اور مارکس‌واد کو ماننے‌والوں کا رخ پراچین چینی ساہتیہ کی طرف کیا ہونا چاہئے ؟ دوسرا یہ کہ کسی بھی لیکھک کے راج‌کاجی وچاروں یا آدرشوں کا اُس کی کلا کے ساتھ کیا سمبندھ مانا جانا چاہئے ؟

دوسری مثال چینی چترکلا کی دی جا سکتی ہے . چینی چترکلا کا ایک پرانا ڈھنگ چلا آتا تھا . سن 1953 میں چین کے ایک بہت بڑے کوی آئی چنگ نے اُس پرانی چترکلا پر چین کے ایک مشہور اخبار 'وین یی پاؤ' (ساہتیہ کلاپتریکا) میں ایک مرثیہ لکھ ڈالا . آئی چنگ نے کہا کہ پرانی چترکاری پرانے پونجی‌وادی اور سامنت‌وادی زمانے کی اُپج ہے' وہ اپنے ایک ہی ڈھنگ پر چلتی ہے . آج کی ہماری آوشیکتاؤں سے اُس کا کوئی سمبندھ نہیں . سن 1953 میں بھی 'وین یی پاؤ' کے کچھ پاٹھک ایسے تھے جو آئی‌چنگ کے اِس وچار سے سہمت نہیں تھے . 'پر وین یی پاؤ' کے سمپادک نے اُن کے لیکھ چھاپنے سے اِنکار کر دیا . نتیجہ یہ ہوا کہ چینی چترکلا کا وہ پرانا ڈھنگ ہی مٹنے لگا . اُس پرانے ڈھنگ کو 'کوھوا' کہتے تھے جس کا ارتھ ہے 'راشٹریہ چترکلا' . 'کو ھوا' چترکاروں کے چتر بکنے بند ہو گئے .

اِن چار برس کے اندر ہوا پھر بدلی . آج بہت سے لوگ 'کوھوا' چتروں کی تعریف اور اُن کی قدر کرتے ہیں . کلا کی درشٹی سے وہ اُس میں گن دیکھتے ہیں اور دوسروں کو بتاتے ہیں . وے اب اُسے ایک پچھڑی‌ہوئی چیز نہیں مانتے . وے اُسے اپنی راشٹریہ دھروہر مانتے ہیں اور کہتے ہیں کہ راشٹر کو اُس کی قدر کرنی چاہئے . حال میں ایک نئی سنستھا کھلی ہے جس میں اُس پرانی چترکلا کی تعلیم دی جاتی ہے . بہت سے پرانے چتر وہاں درشکوں کے لئے سجے ہوئے رکھے ہیں . اُس طرح کے پرانے چتروں کا مولیہ بھی چین میں اب بڑھتا جا رہا ہے .

ایک تیسری مثال لیجئے . پراچین چین کے لوگ بھوت پریت میں وشواس رکھتے تھے . بھوت اُتارنے کے لئے اُن میں ایک خاص طرح کا ناچ چل پڑا تھا جسے "نووو" کہتے تھے . دھیرے دھیرے ناچ کا وہ ڈھنگ کلا کی نگاہ سے بہت اُنتی کر گیا . اِسی طرح چین کے پرانے تاؤ دھرم میں پوجا پاٹھ کے ساتھ کچھ گانا بجانا ہوتا تھا . وہ گانا بجانا بھی دھیرے دھیرے کلا کی نگاہ سے بہت ترقی کر گیا . نئے چین کے شروع کے زمانے میں بہت سے لوگ یہ سمجھتے تھے کہ اُس پرانے ناچ اور اُس پرانے گانے بجانے

में सिवाय अन्धविश्वासों के धरा ही क्या है ? उनकी राय थी कि "उन्नतिशील" यानी "तरक़्क़ी पसन्द" लोगों को उन पुराने अन्धविश्वासों के साथ-साथ उस तरह के नाच और गाने बजाने को भी नफ़रत की निगाह से देखना चाहिए. पर अब यह विचार भी बदल रहे हैं. 'नो वु' नाच और पुराने ताओ संगीत को लोग अब प्रेम से सीखने लगे हैं. अब चीनी कलावन्तों का ख़याल है कि इन कलाओं के अन्दर हमारी हज़ार बरस की कला की उन्नति छिपी हुई है. चीन के पुराने सामाजिक जीवन पर भी इनसे गहरी रोशनी पड़ती है. बहुत से लोगों का ख़याल है कि हमें अब भूत उतारने से कोई सम्बन्ध नहीं, लेकिन हमें अपनी पुरानी कलाओं को कला की निगाह से और उनके ऐतिहासिक मूल्य की निगाह से ज़िन्दा रखना चाहिए, उनकी क़द्र करनी चाहिए, और उन्हें चमकाना और तरक़्क़ी देना चाहिए.

विज्ञान यानी साइन्स में भी जो कट्टरता और तंग नज़री मार्क्सवाद के शुरू के दिनों में हम में पैदा हो गई थी वह अब टुकड़े टुकड़े होती जा रही है. अब हम आज़ादी के साथ विचारों का लेन देन करने लगे हैं, और सब तरह के विचारों को अपने यहाँ आने और फलने फूलने का खुला मौक़ा देना चाहते हैं.

मिसाल के तौर पर एक सवाल यह है कि जानवरों और पौधों में जो कोई नई बातें क़लम लगा कर या आबो-हवा से या किसी और ढंग से पैदा कर दी जावें वे उन जानवरों की या पौधों की अगली नसलों में क़ायम रहती हैं या नहीं ? ज़ाहिर है कि इस सवाल का खेती बाड़ी के साथ और पशुओं की नसल के साथ गहरा सम्बन्ध है. मार्क्सवाद के शुरू के दिनों में हमारे विद्वानों ने इस सवाल पर एक राय को "मार्क्सवादी" मान लिया और दूसरी को "सामन्तवादी" या दक़ियानूसी कह कर छोड़ दिया. अब हम समझते जा रहे हैं कि हमारा ऐसा करना बहुत ग़लत था. इसमें हमारा अपना ही नुक़सान था. हमारा हित इसमें है और सचाई भी इसी में है कि हमें दोनों तरह के विचारों में लोगों को खोज और परख का पूरा मौक़ा देना चाहिये और दोनों से जो लाभ उठाया जा सके उठाना चाहिए. ऐसी बातों में न कोई सिद्धान्त "मार्क्सवादी" होता है और न कोई "सामन्तवादी". साइन्स साइन्स है.

नए चीन के इतिहासकारों में अब इन बातों पर ख़ूब बहसें हो रही हैं और तरह तरह के विचार प्रकट किये जा रहे हैं कि चीनी समाज प्राचीन समय से लेकर अब तक किस तरह बढ़ा ? चीनी क़ौम का कहां से और कैसे निकास हुआ ? ग़ुलामी की प्रथा हमारे यहाँ कब ख़त्म हुई ? सामन्तवादी ढाँचा हमारे यहाँ कब शुरू हुआ ? पूँजीवाद हमारे यहाँ वास्तव में कब और कैसे शुरू हुआ ? चीनी

میں سوائے اندھوشواسوں کے دھرا ہی کیا ہے ؟ اُن کی رائے تھی کہ "اُنتی‌شیل" یعنی "ترقی پسند" لوگوں کو اُن پرانے اندھوشواسوں کے ساتھ ساتھ اُس طرح کے ناچ اور گانے بجانے کو بھی نفرت کی نگاہ سے دیکھنا چاہئے۔ پر اب یہ وچار بھی بدل رہے ہیں۔ "نووو" ناچ اور پرانے تاؤ سنگیت کو لوگ اب پریم سے سیکھنے لگے ہیں۔ اب چینی کلاونتوں کا خیال ہے کہ اِن کلاؤں کے اندر ہماری ہزار برس کی کلا کی اُنتی چھپی ہوئی ہے۔ چین کے پرانے سماجک جیون پر بھی اِن سے گہری روشنی پڑتی ہے۔ بہت سے لوگوں کا خیال ہے کہ ہمیں اب بھوت اُتارنے سے کوئی سمبندھ نہیں، لیکن ہمیں اپنی پرانی کلاؤں کو کلا کی نگاہ سے اور اُن کے اتہاسک مولیہ کی نگاہ سے زندہ رکھنا چاہئے، اُن کی قدر کرنی چاہئے اور اُنہیں چمکانا اور ترقی دینا چاہئے۔

وگیان یعنی سائنس میں بھی جو کٹّرتا اور تنگ نظری مارکس‌واد کے شروع کے دنوں میں ہم میں پیدا ہو گئی تھی وہ اب ٹکڑے ٹکڑے ہوتی جا رہی ہے۔ اب ہم آزادی کے ساتھ وچاروں کا لین دین کرنے لگے ہیں، اور سب طرح کے وچاروں کو اپنے یہاں آنے اور پھلنے پھولنے کا کھلا موقعہ دینا چاہتے ہیں۔

مثال کے طور پر ایک سوال یہ ہے کہ جانوروں اور پودھوں میں جو کوئی نئی باتیں قلم لگاکر یا آب‌وہوا سے یا کسی اور ڈھنگ سے پیدا کردی جاویں وے اُن جانوروں کی یا پودوں کی اگلی نسلوں میں قائم رہتی ہیں یا نہیں ؟ ظاہر ہے کہ اِس سوال کا کھیتی باڑی کے ساتھ اور پشوؤں کی نسل کے ساتھ گہرا سمبندھ ہے۔ مارکس‌واد کے شروع کے دنوں میں ہمارے ودوانوں نے اِس سوال پر ایک رائے کو "مارکس‌وادی" مان لیا اور دوسری کو "سامنت‌وادی" یا دقیانوسی کہکر چھوڑ دیا۔ اب ہم سمجھتے جا رہے ہیں کہ ہمارا ایسا کرنا بہت غلط تھا۔ اِس میں ہمارا اپنا ہی نقصان تھا۔ ہمارا ہت اِس میں ہے اور سچائی بھی اِسی میں ہے کہ ہمیں دونوں طرح کے وچاروں میں لوگوں کو کھوج اور پرکھ کا پورا موقع دینا چاہئے اور دونوں سے جو لابھ اُٹھایا جا سکے اُٹھانا چاہئے۔ اِیسی باتوں میں نہ کوئی سدھانت "مارکس‌وادی" ہوتا ہے اور نہ کوئی "سامنت‌وادی"۔ سائنس سائنس ہے۔

نئے چین کے اِتہاس‌کاروں میں اب اِن باتوں پر خوب بحثیں ہو رہی ہیں اور طرح طرح کے وچار پرکٹ کئے جا رہے ہیں کہ چینی سماج پراچین سمئے سے لیکر اب تک کس طرح بڑھا ؟ چینی قوم کا کہاں سے اور کیسے نکاس ہوا ؟ غلامی کی پرتھا ہمارے یہاں کب ختم ہوئی ؟ سامنت‌وادی ڈھانچا ہمارے یہاں کب شروع ہوا ؟ پونجی‌واد ہمارے یہاں واستو میں کب اور کیسے شروع ہوا ؟ چینی

इतिहास को अलग अलग युगों में बाँटने का ठीक ढंग क्या हो सकता है ? वग़ैरह वग़ैरह.

चीन की कम्युनिस्ट पार्टी पहले अपनी पार्टी का इतिहास अपने ढङ्ग से लिखवा कर प्रकाशित करना चाहती थी. अब उसने ऐलान कर दिया है कि वह .खुद अपने इतिहास पर कोई "प्रामाणिक" पुस्तक नहीं निकालेगी, वह केवल सारी सामग्री जो उसके पास है देश के सामने रख देगी, उस सामग्री से इतिहास तैयार करना और इतिहास लिखना कम्युनिस्ट और ग़ैर-कम्युनिस्ट दोनों तरह के इतिहासकारों का काम है.

इस तरह के आज़ाद विचारों की तरफ़ झुकाव चीनी क्रान्तिकारियों में पिछले बीस बरस से बराबर रहा है. सन् 1949 में आज़ादी के बाद हमारे देश में बहुत से नए लोग मार्क्सवाद की किताबें पढ़ने लगे. नए नए विचार केन्द्र, पढ़ाई केन्द्र और कुतुबख़ाने .खुल गए. इनमें कुछ लोग देश के हालात को देखकर और समझ कर .खुद सोचने विचारने के बजाय मार्क्सवादी किताबों से फ़िक़रे नक़ल करते थे. नतीजा यह हुआ कि लोगों में फिर एक तरह की कट्टरता पैदा हो गई. मार्क्सवाद भी एक कट्टरवाद समझा जाने लगा और सच्ची घटनाओं की जगह दूसरों के फ़िक़रे नक़ल किये जाने लगे. इससे हमारी अपनी सोचने की ताक़त नष्ट होने लगी और हम ज्ञान का भी ठीक उपयोग न कर सके.

फिर एक बार कम्युनिस्ट पार्टी ने ही .खुद अपनी इस बीमारी का इलाज किया.

पिछली जनवरी में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सेन्ट्रल कमेटी के सामने चाऊ एन-लाई ने बताया कि साइन्स और तकनीक में चीन किस तरह आगे बढ़ सकता है. उन्होंने कहा कि इसके लिए हमें विचारने, विचार प्रकट करने, और उन विचारों के अनुसार काम करने की पूरी आज़ादी लोगों को देनी चाहिए, उस आज़ादी के रास्ते से सब रुकावटें हटा लेनी चाहिएँ, ताकि देश का हर विचारक देश के ज्ञान की उन्नति में भरपूर हिस्सा ले सके.

दो मई सन 1956 को चेयरमैन माओ त्से-तुंग ने देश के नाम यह संदेश भेजा :—"सब तरह के फूलों को देश में साथ साथ खिलने दो, तरह तरह की और एक दूसरे के ख़िलाफ़ विचारधाराओं को आज़ादी से फैलने और एक दूसरे से टकराने दो."

26 मई को कम्युनिस्ट पार्टी की सेन्ट्रल कमेटी के एक और ख़ास मेम्बर लू तिंग-यी ने चीन के बहुत से बड़े-बड़े विचारकों के सामने इस उसूल को और साफ़ कर दिया. पेकिंग में चीन के सैकड़ों विद्वान और साइन्सदां जमा हो कर देश में साइन्स की उन्नति के लिए 12 साल का प्रोग्राम बना रहे थे. उनमें प्राकृतिक विज्ञान के विद्वान भी थे और समाज विज्ञान के विद्वान भी थे. लू तिंग-यी ने उन सबसे

اتہاس کو الگ الگ یگوں میں بانٹنے کا ٹھیک ڈھنگ کیا ہو سکتا ہے ؟ وغیرہ وغیرہ .

چین کی کمیونسٹ پارٹی پہلے اپنی پارٹی کا اتہاس اپنے ڈھنگ سے لکھوا کر پرکاشت کرنا چاہتی تھی . اب اُس نے اعلان کر دیا ہے کہ وہ خود اپنے اتہاس پرکوئی "پرامانک" پستک نہیں نکالے گی' وہ کیول ساری سامگری جو اُس کے پاس ہے دیش کے سامنے رکھ دیگی' اُس سامگری سے اِتہاس تیار کرنا اور اِتہاس لکھنا کمیونسٹ اور غیر کمیونسٹ دونوں طرح کے اِتہاس‌کاروں کا کام ہے .

اِس طرح کے آزاد وچاروں کی طرف جھکاؤ چینی کرانتی کاریوں میں پچھلے بیس برس سے برابر رہا ہے . سن 1949 میں آزادی کے بعد ہمارے دیش میں بہت سے نئے لوگ مارکس‌واد کی کتابیں پڑھنے لگے . نئے نئے وچار کیندر' پڑھائی کیندر اور کتب‌خانے کھل گئے . اِن میں کچھ لوگ دیش کے حالات کو دیکھکر اور سمجھ کر خود سوچنے وچارنے کے بجائے مارکس‌وادی کتابوں سے فقرے نقل کرتے تھے . نتیجہ یہ ہوا کہ لوگوں میں پھر ایک طرح کی کٹرتا پیدا ہوگئی . مارکس‌واد بھی ایک کٹرواد سمجھا جانے لگا اور سچی گھٹناؤں کی جگہ دوسروں کے فقرے نقل کئے جانے لگے . اِس سے ہماری اپنی سوچنے کی طاقت نشٹ ہونے لگی اور ہم گیان کا بھی ٹھیک اُپیوگ نہ کر سکے .

پھر ایک بار کمیونسٹ پارٹی نے ہی خود اپنی اِس بیماری کا علاج کیا .

پچھلی جنوری میں چینی کمیونسٹ پارٹی کی سنٹرل کمیٹی کے سامنے چاؤ این-لائی نے بتایا کہ سائنس اور تکنیک میں چین کس طرح آگے بڑھ سکتا ہے . اُنہوں نے کہا کہ اِس کے لئے ہمیں وچارنے' وچار پرگٹ کرنے اور اُن وچاروں کے انوسار کام کرنے کی پوری آزادی لوگوں کو دینی چاہئے' اُس آزادی کے راستے سے سب رکاوٹیں ہٹا لینی چاہئیں' تاکہ دیش کا ہر وچارک دیش کے گیان کی اُنتی میں بھرپور حصہ لے سکے .

2 مئی سن 1956 کو چیرمین ماؤ تسے . تنگ نے دیش کے نام یہ سندیش بھیجا:—"سب طرح کے پھولوں کو دیش میں ساتھ ساتھ کھلنے دو' طرح طرح کی اور ایک دوسرے کے خلاف وچاردھاراؤں کو آزادی سے پھیلنے اور ایک دوسرے سے ٹکرانے دو ."

26 مئی کو کمیونسٹ پارٹی کی سنٹرل کمیٹی کے ایک اور خاص ممبر لوتنگ یی نے چین کے بہت سے بڑے بڑے وچارکوں کے سامنے اِس اُصول کو اور صاف کر دیا . پیکنگ میں چین کے سیکڑوں ودوان اور سائنس‌داں جمع ہو کر دیش میں سائنس کی اُنتی کے لئے 12 سال کا پروگرام بنا رہے تھے . اُن میں پراکرتک وگیان کے ودوان بھی تھے اور سماج وگیان کے ودوان بھی تھے . لوتنگ یی نے اُن سب سے

कहा कि:—"मार्क्सवाद और लेनिनवाद को पढ़िये, पर साथ ही चीन की खास हालतों में उन्हें लागू कैसे किया जाय यह भी सोचिये......जो 'आदर्शवादी' या आत्मवादी लोग मार्क्सवाद और लेनिनवाद के खिलाफ़ हैं वे भी खुलकर अपने विचार प्रकट करें. उन्हें पूरा हक़ है कि जो चाहें कहें. हमारा रास्ता आज़ाद और खुली बहस का रास्ता है. यह लड़ाई विचारों या सिद्धान्तों की लड़ाई है. हमें दूसरे विचारों की चुनौती से डरना नहीं चाहिये...हम यदि सामन्तवादियों के आदर्शवाद का मुक़ाबला कर सकते हैं तो खुली बहस में ही कर सकते हैं."

लू तिंग-यी ने यह भी कहा कि :—"सोवियत यूनियन और दूसरे समाजवादी देशों के तजरबों से फ़ायदा उठाने के साथ साथ हमें दुनिया के हर देश के विद्वानों और विद्या संस्थाओं से मेलजोल बढ़ाना चाहिए, हमें पूंजीवादी दुनिया की प्राचीन किताबों और उनकी आजकल की पुस्तकों और उनके लेखों को भी पढ़ना चाहिए, आदर्शवाद के सिद्धान्तों और इस तरह की सब चीज़ों का हमें अध्ययन करना चाहिए." लू तिंग-यी ने चीनी विद्वानों को याद दिलाया कि:—"चीन का यह पुराना उसूल है कि तरह तरह कि विचारधाराओं को एक दूसरे से मिलने और टकराने दिया जाय." उन्होंने कहा कि :—"आज से दो हज़ार बरस पहले चीनी विचार इसी उसूल के ऊपर फैले और फले-फूले. यह वह ज़माना था जब चीन ने कनफ़्यूशियस, लाओत्ज़े और मैन्शियस जैसे बड़े-बड़े फ़लसफ़ी और बेशुमार बड़े-बड़े महाकवि, स्मृतिकार, (फ़क़ीह) इतिहासकार, गणितज्ञ, ज्योतिषी और वीर योद्धा पैदा किये थे. उसी उदार और सुनहरी उसूल पर हमें अब चलना चाहिए."

लू तिंग-यी ने यह भी कहा कि :—"हमारी हाल की कुछ बहसें केवल काग़ज़ी लड़ाइयाँ होकर रह गई थीं. अब चीनी विद्वान आगे बढ़ रहे हैं. वे एक मज़बूत समाजवादी देश तामीर करना चाहते हैं जिसमें तरह तरह के उद्योग खूब तरक़्क़ी कर सकें. इस काम में हम सिद्धान्त यानी उसूल और व्यवहार यानी अमल के मेल पर जितना अधिक ज़ोर देंगे उतना ही अच्छा है, नहीं तो कोरे सिद्धान्त तालाब के रुके हुए पानी की तरह सड़ कर रह जायेंगे."

लू तिंग-यी ने नए चीन के विद्वानों से कहा कि:—"शुरू में हम लोग कल कारखानों की छोटी-छोटी तकनीकी बातों पर अधिक ध्यान देते थे और जीवन के बुनियादी उसूलों पर कम; अब हमें चाहिए कि हम बुनियादी उसूलों पर अधिक ध्यान दें, ताकि जो नित्य नई समस्याएं हमारे सामने आती रहती हैं उन्हें हम हल कर सकें."

लू तिंग-यी की यह बात कोई नई बात नहीं है. चेयरमैन माओ त्से-तुंग ने सन् 1942 में येनान में साहित्य और

کہا کہ:—"مارکس واد اور لینن واد کو پڑھئے، پر ساتھ ہی چین کی خاص حالتوں میں اُنہیں لاگو کیسے کیا جائے یہ بھی سوچئے...... جو 'آدرش وادی' یا آتم وادی لوگ مارکس واد اور لینن واد کے خلاف ہیں وے بھی کھل کر اپنے وچار پرکٹ کریں۔ اُنہیں پورا حق ہے کہ جو چاہیں کہیں۔ ہمارا راستہ آزاد اور کھلی بحث کا راستہ ہے۔ یہ لڑائی وچاروں یا سدھانتوں کی لڑائی ہے۔ ہمیں دوسرے وچاروں کی چنوتی سے ڈرنا نہیں چاہئے......ہم یدی سامنت وادیوں کے آدرش واد کا مقابلہ کر سکتے ہیں تو کھلی بحث میں ہی کر سکتے ہیں۔"

لو تنگ یی نے یہ بھی کہا کہ:—"سوویت یونین اور دوسرے سماج وادی دیشوں کے تجربوں سے فائدہ اُٹھانے کے ساتھ ساتھ ہمیں دنیا کے ہر دیش کے ودوانوں اور ودیا سنستھاؤں سے میل جول بڑھانا چاہئے، ہمیں پونجی وادی دنیا کی پراچین کتابوں اور اُن کی آجکل کی پستکوں اور اُن کے لیکھوں کو بھی پڑھنا چاہئے، آدرش واد کے سدھانتوں اور اِس طرح کی سب چیزوں کا ہمیں ادھین کرنا چاہئے۔" لو تنگ یی نے چینی ودوانوں کو یاد دلایا کہ:—"چین کا یہ پرانا اصول ہے کہ طرح طرح کے وچار دھاراؤں کو ایک دوسرے سے ملنے اور ٹکرانے دیا جائے۔" اُنہوں نے کہا کہ:—"آج سے دو ہزار برس پہلے چینی وچار اِسی اُصول کے اُوپر پھیلے اور پھلے پھولے۔ یہ وہ زمانہ تھا جب چین نے کنفیوشیس، لاؤتزے اور مین شیس جیسے بڑے بڑے فلسفی اور بےشمار بڑے بڑے مہاکوی، اِسمرتی کار (فقیہہ)، اِتہاس کار، گنیتگیہ، جوتشی اور ویر یودھا پیدا کئے تھے۔ اسی اُدار اور سنہری اُصول پر ہمیں اب چلنا چاہیئے۔"

لو تنگ یی نے یہ بھی کہا کہ:—"ہماری حال کی کچھ بحثیں کیول کاغذی لڑائیاں ہو کر رہ گئی تھیں۔ اب چینی ودوان آگے بڑھ رہے ہیں۔ وے ایک مضبوط سماج وادی دیش تعمیر کرنا چاہتے ہیں جس میں طرح طرح کے اُدیوگ خوب ترقی کر سکیں۔ اِس کام میں ہم سدھانت یعنی اُصول اور ویوہار یعنی عمل کے میل پر جتنا ادھک زور دینگے اُتنا ہی اچھا ہے، نہیں تو کورے سدھانت تالاب کے رکے ہوئے پانی کی طرح سڑ کر رہ جائینگے۔"

لو تنگ یی نے نئے چین کے ودوانوں سے کہا کہ:—"شروع میں ہم لوگ کل کارخانوں کی چھوٹی چھوٹی تکنیکی باتوں پر ادھک دھیان دیتے تھے اور جیون کے بنیادی اُصولوں پر کم؛ اب ہمیں چاہئے کہ ہم بنیادی اُصولوں پر ادھک دھیان دیں تاکہ جو نت نئی سمسیائیں ہمارے سامنے آتی رہتی ہیں اُنہیں ہم حل کر سکیں۔"

لو تنگ یی کی یہ بات کوئی نئی بات نہیں ہے۔ چیرمین ماؤ تسے تنگ نے سن 1942 میں ینان میں ساہتیہ اور

कला पर बोलते हुए कहा था :—"हमारे इस बाग़ में सब तरह के फूलों को खिलने दिया जाय." चीनी ड्रामे की मिसाल भी इस बारे में खासी अच्छी है. नए चीन ने नए ड्रामों के साथ साथ पुराने ढंग के ड्रामों को भी खूब बढ़ावा दिया. उनके खेलने वालों को हर तरह की सुविधाएँ दीं. नतीजा यह हुआ कि आज पुराने ढंग के चीनी ड्रामे न केवल चीन में बल्कि दुनिया के बहुत से देशों में खेले जाते हैं और लाखों आदमी उन्हें देखकर खुश होते हैं.

"तरह तरह की विचारधाराओं को साथ साथ चलने दो"—यह बात केवल प्राकृतिक विज्ञान और समाज विज्ञान के लिए ही नहीं है. नए चीन के विधान में हर आदमी को बोलने की, लिखने की, प्रकाशित करने की और चाहे जिस धर्म को मानने की, या न मानने की पूरी आज़ादी है. बात यही है कि मार्क्सवाद, लेनिनवाद और सब तरह के विचारों को अपनी अपनी जगह पर फलने फूलने दिया जावे.

पिछले साल जब चीन के बहुत से विद्वान एक जगह जमा हुए तो इस तरह के कई सवालों पर उनमें बहसें हुईं. कुछ लोगों ने कहा कि अगर हम मार्क्सवाद के खिलाफ़ विचारों के प्रचार का दरवाज़ा खोल देंगे तो देश की जनता बड़े चक्कर में पड़ जायगी. अब तक मार्क्सवाद के सिद्धान्तों से देश की जनता को बहुत फ़ायदा हुआ है. इसीलिए जनता इन सिद्धान्तों की तारीफ़ करती है और उनका आदर करती है. मार्क्सवाद और लेनिनवाद के सहारे ही हमने अपनी आज़ादी की लड़ाई जीती है, उन्हीं के सहारे हम अपने देश में एक समाजवादी व्यवस्था खड़ी कर रहे हैं. इसमें हमें बड़ी सफलता मिली है, इसलिए अगर हम मार्क्सवाद के खिलाफ़ तरह तरह के विचारों को देश में फैलने देंगे तो देश ने अपनी उन्नति के लिए जो रास्ता तय किया है उसमें रुकावटें पड़ जायँगी.

पर दूसरे लोगों ने इसके खिलाफ़ राय दी. पेकिंग यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर चेंग शीन ने हाल में "पीपुल्स डेली" नाम के अखबार में एक लेख लिखा. प्रोफ़ेसर चेंग शीन जर्मन फ़िलासफ़र कैण्ट के मानने वाले हैं. उन्होंने अपने लेख में लिखा है कि :—"हम जो आदर्शवाद या आत्मवाद और उस तरह के विचारों को प्रतिक्रियावादी या दक़ियानूसी कहने लगते हैं यह बड़ी भूल है." प्रोफ़ेसर चेंग ने लिखा है कि किसी भी आदमी के राजनैतिक विचार और उसकी फ़िलासफ़ी यानी उसका जीवन दर्शन दो अलग-अलग चीज़ें हैं. उन्होंने लिखा कि :—"हाल के दिनों में चीन ने कई तरह के मैदानों में जो कामयाबी हासिल की है उससे चीन की ज़मीन भी बदल गई है और लोगों के दिल भी बहुत बदल गए हैं......आज हम

کلا پر بولتے ہوئے کہا تھا—"ہمارے اِس باغ میں سب طرح کے پھولوں کو کھلنے دیا جائے." چینی ڈرامے کی مثال بھی اِس بارے میں خاصی اچھی ہے. نئے چین نے نئے ڈراموں کے ساتھ ساتھ پرانے ڈھنگ کے ڈراموں کو بھی خوب بڑھاوا دیا. اُن کے کھیلنے والوں کو ہر طرح کی سویدھائیں دیں. نتیجہ یہ ہوا کہ آج پرانے ڈھنگ کے چینی ڈرامے نہ کیول چین میں بلکہ دنیا کے بہت سے دیشوں میں کھیلے جاتے ہیں اور لاکھوں آدمی انہیں دیکھ کر خوش ہوتے ہیں.

"طرح طرح کی وچاردھاراؤں کو ساتھ ساتھ چلنے دو"—یہ بات کیول پراکرتک وگیان اور سماج وگیان کے لئے ہی نہیں ہے. نئے چین کے ودھان میں ہر آدمی کو بولنے کی' لکھنے کی' پرکاشت کرنے کی' اور چاہے جس دھرم کو ماننے کی' یا نہ ماننے کی پوری آزادی ہے. بات یہی ہے کہ مارکس واد' لینن واد اور سب طرح کے وچاروں کو اپنی اپنی جگہ پر پھلنے پھولنے دیا جاوے.

پچھلے سال جب چین کے بہت سے ودوان ایک جگہ جمع ہوئے تو اِس طرح کے کئی سوالوں پر اُن میں بحثیں ہوئیں. کچھ لوگوں نے کہا کہ اگر ہم مارکس واد کے خلاف وچاروں کے پرچار کا دروازہ کھول دینگے تو دیش کی جنتا بڑے چکر میں پڑ جائیگی اب تک مارکس واد کے سدھانتوں سے دیش کی جنتا کو بہت فائدہ ہوا ہے. اِسی لئے جنتا اِن سدھانتوں کی تعریف کرتی ہے. مارکس واد اور لینن واد کے سہارے ہی ہم نے اپنی آزادی کی لڑائی جیتی ہے' انہیں کے سہارے ہم اپنے دیش میں ایک سماج وادی ویوستھا کھڑی کر رہے ہیں. اِس میں ہمیں بڑی سپھلتا ملی ہے' اِس لئے اگر ہم مارکس واد کے خلاف طرح طرح کے وچاروں کو دیش میں پھیلنے دینگے تو دیش نے اپنی اُنتی کے لئے جو راستہ طے کیا ہے اُس میں رکاوٹیں پڑ جائینگی.

پر دوسرے لوگوں نے اِس کے خلاف رائے دی. پیکنگ یونیورسٹی کے پروفیسر چینگ شین نے حال میں "پیپلس ڈیلی" نام کے اخبار میں ایک لیکھ لکھا. پروفیسر چینگ شین جرمن فلسفر کینٹ کے ماننے والے ہیں. اُنہوں نے اپنے لیکھ میں لکھا ہے کہ:—"ہم جو آدرش واد یا آتم واد اور اُس طرح کے وچاروں کو پرتی کریاوادی یا دقیانوسی کہنے لگتے ہیں یہ بڑی بھول ہے." پروفیسر چینگ نے لکھا ہے کہ کسی بھی آدمی کے راجنیتک وچار اور اُس کی فلسفی یعنی اُس کا جیون درشن دو الگ الگ چیزیں ہیں. اُنہوں نے لکھا کہ:—"حال کے دنوں میں چین نے کئی طرح کے میدانوں میں جو کامیابی حاصل کی ہے اُس سے چین کی زمین بھی بدل گئی ہے اور لوگوں کے دل بھی بہت بدل گئے ہیں......آج ہم

अपने को बिलकुल जवान महसूस कर रहे हैं. हममें काफ़ी शक्ति है. हम अपनी ज़िम्मेदारी को महसूस करते हैं. चीन एक आदर्शवादी देश रहा है. आदर्शवाद हमारे अन्दर गहरा छिपा हुआ है. राजनैतिक जोश भी हमारे अन्दर है और आदर्शवाद भी है, यह दोनों दो चट्टानों की तरह हैं जो आमने सामने, एक साथ, हमारे अन्दर मौजूद हैं, या दो नदियों की तरह हैं जो एक ही जगह से निकल कर दो अलग अलग दिशाओं में बहने लगती हैं."

क़ुदरती तौर पर हर आदमी यह कोशिश करता है कि अपने आदर्शों, विचारों और अमल में जहाँ तक हो सके मेल क़ायम रखे. नए चीन में यह खुली आज़ादी न होती तो प्रोफ़ेसर चेंग जैसे आदमी को अपने दिल की बात कहने का मौक़ा कैसे मिलता ?

पर अब भी कुछ पढ़े लिखे आदमी हमारे देश में ऐसे हैं जो सिवाय मार्क्सवाद या लेनिनवाद की थोड़ी सी किताबों के और कुछ नहीं पढ़ते. इस तरह के लोग साइंस पर भी केवल वही किताबें पढ़ते हैं जो सोवियत रूस में छपती हैं. इनकी तंग नज़री की एक बड़ी अच्छी मिसाल यह है :—चीन में वूहान का इलाक़ा गरमियों में बहुत गरम रहता है. इस तरह के लोगों ने वूहान में भी उसी तरह के मकान तैयार किये जिस तरह के सोवियत रूस में बनते हैं जहाँ हद दर्जे की सर्दी के कारण मकानों के बनाने में सबसे बड़ी समस्या यही होती है कि बाहर की सर्दी को अन्दर न आने दिया जाय और अन्दर की गरमी को बाहर न निकलने दिया जावे. तोतों की तरह दूसरों की नक़ल करने वाले यह लोग उन सब लोगों को जो रूसी साइंसदानों के ख़िलाफ़ राय रखते थे "आदर्शवादी" कह कर उनका मज़ाक़ उड़ाते थे. मिसाल के तौर पर सोवियत रूस में एक साइंसदां हुआ है जिसका नाम था लाइसैनको. जब तक लाइसैनको के विचारों की रूस में इज़्ज़त होती रही तब तक इस तरह के लोग लाइसैनको के विरोधियों को "आदर्शवादी" कह कर उनका मज़ाक़ उड़ाते रहे, और जब रूस में कुछ लोग लाइसैनको के विचारों को ग़लत बताने लगे तो 'इन लोगों ने उन सब लोगों को गालियाँ देना शुरू कर दिया जो कुछ बातों में लाइसैनको को ठीक मानते थे.

लू तिंग-यी ने कहा है :—"साइंसी मामलों में जब लोग आज़ादी से सोच नहीं सकते या यूं कहना चाहिए कि जब उनमें से सोचने का माद्दा जाता रहता है तब वे कट्टरपन्थी हो जाते हैं. इस तरह के लोग बजाय ख़ुद मेहनत करने के दूसरों के फ़िक़रे सुना-सुना कर ही हमें धोखे में रखना चाहते हैं."

आजकल चीन में हर तरह की साइंसी और दूसरी खोजों के लिए पूरी-पूरी सुविधाएं दी जाती हैं. दुनिया

اپنے کو بالکل جوان محسوس کر رہے ہیں ۔ ہم میں کافی شکتی ہے. ہم اپنی ذمہ‌داری کو محسوس کرتے ہیں، چین ایک آدرش وادی دیش رہا ہے ۔ آدرش‌واد ہمارے اندر گہرا چھپا ہوا ہے ۔ راج نیتک جوش بھی ہمارے اندر ہے' اور آدرش‌واد بھی ہے ۔ یہ دونوں دو چٹانوں کی طرح ہیں جو آمنے سامنے' ایک ساتھ ہمارے اندر موجود ہیں' یا دو ندیوں کی طرح ہیں جو ایک ہی جگہ سے نکل کر دو الگ الگ دشاؤں میں بہنے لگتی ہیں ۔"

قدرتی طور پر ہر آدمی یہ کوشش کرتا ہے کہ اپنے آدرشوں' وچاروں اور عمل میں جہاں تک ہو سکے میل قائم رکھے ۔ نئے چین میں یہ کھلی آزادی نہ ہوتی تو پروفیسر چینگ جیسے آدمی کو اپنے دل کی بات کہنے کا موقعہ کیسے ملتا ؟

پر اب بھی کچھ پڑھے لکھے آدمی ہمارے دیش میں ایسے ہیں جو سوائے مارکس واد یا لینن واد کی تھوڑی سی کتابوں کے اور کچھ نہیں پڑھتے ۔ اِس طرح کے لوگ سائنس پر بھی کیول وہی کتابیں پڑھتے ہیں جو سوویت روس میں چھپتی ہیں، اِن کی تنگ نظری کی ایک بڑی اچھی مثال یہ ہے :—چین میں ووہان کا علاقہ گرمیوں میں بہت گرم رہتا ہے ۔ اِس طرح کے لوگوں نے ووہان میں بھی اُسی طرح کے مکان تیار کئے جس طرح کے سوویت روس میں بنتے ہیں جہاں حد درجہ کی سردی کے کارن مکانوں کے بنانے میں سب سے بڑی سمسیا یہی ہوتی ہے کہ باہر کی سردی کو اندر نہ آنے دیا جائے اور اندر کی گرمی کو باہر نہ نکلنے دیا جاوے ۔ طوطوں کی طرح دوسروں کی نقل کرنے والے یہ لوگ اُن سب لوگوں کو جو روسی سائنس دانوں کے خلاف رائے رکھتے تھے "آدرش وادی" کہکر اُن کا مذاق اُڑاتے تھے ۔ مثال کے طور پر سوویت روس میں ایک سائنس‌داں ہوا ہے جس کا نام تھا لائی سین کو ۔ جب تک لائی سین کو کے وچاروں کی روس میں عزت ہوتی رہی تب تک اس طرح کے لوگ لائی سین کو کے وِرودھیوں کو "آدرش وادی" کہکر اُن کا مذاق اُڑاتے رہے' اور جب روس میں کچھ لوگ لائی سین کو کے وچاروں کو غلط بتانے لگے تو اِن لوگوں نے اُن سب لوگوں کو گالیاں دینا شروع کر دیا جو کچھ باتوں میں لائی سین کو کو ٹھیک مانتے تھے ۔

لوٹنگ یی نے کہا ہے :—"سائنسی معاملوں میں جب لوگ آزادی سے سوچ نہیں سکتے یا یوں کہنا چاہئے کہ جب اُن میں سے سوچنے کا مادہ جاتا رہتا ہے تب وے کٹر پنتھی ہو جاتے ہیں ۔ اِس طرح کے لوگ بجائے خود محنت کرنے کے دوسروں کے فقرے سنا سنا کر ہی ہمیں دھوکے میں رکھنا چاہتے ہیں ۔"

آجکل چین میں ہر طرح کی سائنسی اور دوسری کھوجوں کے لئے پوری پوری سویدھائیں دی جاتی ہیں ۔ دنیا

भर के देशों से साइंसी किताबें और पत्रिकाएं चीन में आती हैं और चीनी भाषा में उनके तरजुमे होते हैं. प्रकाशकों और सम्पादकों को इस बात के लिए बढ़ावा दिया जाता है और जोश दिलाया जाता है कि वे हर तरह के विचार जनता के सामने रखें.

एक सवाल हमारे सामने यह आया कि यूनिवर्सिटियों में हम एक दूसरे के खिलाफ़ सिद्धान्त पढ़ावें या न पढ़ावें. कुछ लोगों का ख़्याल था कि अध्यापक लोग विद्यार्थियों के सामने एक दूसरे के खिलाफ़ सिद्धान्त न रखें, ख़ास कर मार्क्सवाद के खिलाफ़ सिद्धान्त नौजवानों के सामने पेश न किये जावें.

पर अब हम इसके खिलाफ़ फ़ैसला कर चुके हैं. कैण्ट, हीगल और बर्टरैण्ड रसल, तीनों कार्लमार्क्स के भौतिकवाद यानी मैटीरियलिज्म के खिलाफ़ हैं. लेकिन इन तीनों की किताबें आजकल हमारी सब बड़ी-बड़ी यूनिवर्सिटियों में पढ़ाई जाती हैं. प्राचीन यूनानी फ़लसफ़े के ऊपर और आजकल के आदर्शवादी या आत्मवादी फ़लसफ़ों के ऊपर भी हम अपने विद्यार्थियों के लिए कोर्स तैयार कर रहे हैं. चीन के ला कालिजों में रोमन क़ानून पढ़ाया जायगा और पूंजीवादी देशों के क़ानूनी सिद्धान्त भी विद्यार्थियों को बताए जायंगे ताकि वह सब का मुक़ाबला करके अपनी राय बना सकें. इसके मानी यह नहीं हैं कि हम इस तरह के सब विचारों या उसूलों को ठीक मानते हैं. पर इसके यह मानी जरूर हैं कि हम इन सब को अच्छी तरह पढ़ना और पढ़ाना चाहते हैं, उन पर खुली बहसें चाहते हैं और इनमें हमें जो कुछ अच्छी बातें मिलें उन्हें अपनाना चाहते हैं. इससे हमारे विचार ज्यादा उदार होंगे और हमारा ज्ञान बढ़ेगा.

यूनिवर्सिटियों के अन्दर हम विद्यार्थियों के पढ़ाई के घण्टे कम कर रहे हैं, ताकि विद्यार्थियों को आज़ाद तरीक़े से जो किताबें वह चाहें पढ़ने और सोचने का काफ़ी मौक़ा मिल सके. जो लोग मार्क्सवादी हैं उन्हें विश्वास है कि इस तरह दरवाज़े खुले रखने में जो विचार सच्चे होंगे वे ही क़ायम रहेंगे और अधिक मज़बूत, अधिक मालामाल और अधिक उपयोगी साबित हो सकेंगे.

(चाइना रीकन्स्ट्रक्ट, जनवरी 1957 से)

بھر کے دیشوں سے سائنسی کتابیں اور پترکائیں چین میں آتی ہیں اور چینی بھاشا میں اُن کے ترجمے ہوتے ہیں ۔ پرکاشکوں اور سمپادکوں کو اِس بات کے لئے بڑھاوا دیا جاتا ہے اور جوش دلایا جاتا ہے کہ وے ہر طرح کے وچار جنتا کے سامنے رکھیں ۔

ایک سوال ہمارے سامنے یہ آیا کہ یونیورسٹیوں میں ہم ایک دوسرے کے خلاف سدھانت پڑھاویں یا نہ پڑھاویں ۔ کچھ لوگوں کا خیال تھا کہ ادھیاپک لوگ ودیارتھیوں کے سامنے ایک دوسرے کے خلاف سدھانت نہ رکھیں، خاصکر مارکس واد کے خلاف سدھانت نوجوانوں کے سامنے پیش نہ کئے جاویں ۔

پر اب ہم اِس کے خلاف فیصلہ کر چکے ہیں ۔ کینٹ، ہیگل اور برٹرنڈ رسل، تینوں کارل مارکس کے بھوتک واد یعنی میٹیریل ازم کے خلاف ہیں ۔ لیکن اِن تینوں کی کتابیں آجکل ہماری سب بڑی بڑی یونیورسٹیوں میں پڑھائی جاتی ہیں ۔ پراچین یونانی فلسفے کے اوپر اور آجکل کے آدرش وادی یا آتم وادی فلسفوں کے اوپر بھی ہم اپنے ودیارتھیوں کے لئے کورس تیار کر رہے ہیں. چین کے لا کالجوں میں رومن قانون پڑھایا جائیگا اور پونجی وادی دیشوں کے قانونی سدھانت بھی ودیارتھیوں کو بتائے جائینگے تاکہ وہ سب کا مقابلہ کر کے اپنی رائے بنا سکیں. اسکے معنی یہ نہیں ہیں کہ ہم اس طرح کے سب وچاروں یا اصولوں کو ٹھیک مانتے ہیں ۔ پر اس کے یہ معنی ضرور ہیں کہ ہم ان سب کو اچھی طرح پڑھنا اور پڑھانا چاہتے ہیں ۔ اُن پر کھلی بحثیں چاہتے ہیں اور ان میں ہمیں جو کچھ اچھی باتیں ملیں اُنہیں اپنانا چاہتے ہیں ۔ اس سے ہمارے وچار زیادہ اُدار ہونگے اور ہمارا گیان بڑھیگا ۔

یونیورسٹیوں کے اندر ہم ودیارتھیوں کے پڑھائی کے گھنٹے کم کر رہے ہیں، تا کہ ودیارتھیوں کو آزاد طریقے سے جو کتابیں وہ چاہیں پڑھنے اور سوچنے کا کافی موقع مل سکے ۔ جو لوگ مارکس وادی ہیں اُنہیں وشواس ہے کہ اس طرح دروازے کھلے رکھنے میں جو وچار سچے ہونگے وہ ہی قائم رہینگے اور ادھک مضبوط، ادھک مالا مال اور ادھک اُپیوگی ثابت ہو سکیں گے ۔

(چائنا ری کنس ٹرکٹ، جنوری 1957 سے)

हमारी राय

ہماری رائے

नए चीन में रोमन लिपि

चीन में हिन्दुस्तान की तरह बहुत से सूबे और उनकी अलग अलग बोलियाँ हैं. पर लिपि सब बोलियों की हजारों बरस से एक ही चली आ रही है. केवल पच्छिम के कुछ हिस्से में अरबी लिपि भी काम में आती है.

पुरानी चीनी लिपि में हमारी तरह हरफ़ या अक्षर नहीं हैं. हर चीज़ और हर काम के लिये एक शब्द है और हर शब्द के लिये एक निशान है जो उस चीज़ या काम की तस्वीर की तरह है. नतीजा यह है कि जो लोग चीनी भाषा में मामूली अख़बार या कहानी भी पढ़ना चाहते हैं उन्हें कम से कम साढ़े तीन हज़ार निशान सीखने पड़ते हैं. जो लोग ऊँची या यूनीवर्सिटी की तालीम पाते हैं उन्हें इस तरह के लगभग छै हज़ार निशान याद रखने पड़ते हैं. और जो प्राचीन चीनी साहित्य भी पढ़ना चाहें उन्हें कम से कम दस हज़ार निशान याद करने पड़ते हैं. इस तरह पुरानी चीनी लिपि शायद दुनिया की सब से मुश्किल लिपि है.

अलग अलग सूबों की बोलियाँ अलग अलग और एक होने की वजह से एक ही निशान को एक सूबे वाले एक तरह पढ़ते हैं और दूसरे सूबे वाले दूसरी तरह. मतलब दोनों का एक ही होता है. जैसे एक ही निशान को एक "पानी" पढ़ेगा, और दूसरा "जल", मतलब दोनों का एक है.

इस गोरख-धन्धे की वजह से चीन में पढ़ना लिखना आम लोगों के लिये कभी भी आसान नहीं रहा. विद्या पर सदा केवल थोड़े से लोगों का इजारा रहा.

नई चीनी सरकार को देश में और सुधारों के साथ लिपि सुधार भी करना पड़ा, क्योंकि उनका आदर्श अब विद्या और ज्ञान को घर-घर पहुँचा देना और विद्या और ज्ञान के मैदान में चीन का दुनिया के बड़े से बड़े देशों के साथ नाता जोड़ देना है.

नए चीन ने अब प्राचीन चीनी लिपि की जगह अंगरेज़ी के छब्बीस अक्षरों को जिन्हें रोमन या लातीनी अक्षर भी कहते हैं सब चीनी भाषाओं के लिये अपना लिया है. इस

نئے چین میں رومن لپی

چین میں ہندستان کی طرح بہت سے صوبے اور اُن کی الگ الگ بولیاں ہیں ۔ پر لپی سب بولیوں کی ہزاروں برس سے ایک ہی چلی آرہی ہے۔ کیول پچھم کے کچھ حصے میں عربی لپی بھی کام میں آتی ہے ۔

پرانی چینی لپی میں ہماری طرح حرف یا اکشر نہیں ہیں ۔ ہر چیز اور ہر کام کے لئے ایک شبد ہے اور ہر شبد کے لئے ایک نشان ہے جو اُس چیز یا کام کی تصویر کی طرح ہے ۔ نتیجہ یہ ہے کہ جو لوگ چینی بھاشا میں معمولی اخبار یا کہانی بھی پڑھنا چاہتے ہیں اُنہیں کم سے کم ساڑھے تین ہزار نشان سیکھنے پڑتے ہیں ۔ جو لوگ اونچی یا یونیورسٹی کی تعلیم پاتے ہیں اُنہیں اِس طرح کے لگ بھگ چھ ہزار نشان یاد رکھنے پڑتے ہیں ۔ اور جو پراچین چینی ساہتیہ بھی پڑھنا چاہیں اُنہیں کم سے کم دس ہزار نشان یاد کرنے پڑتے ہیں ۔ اِس طرح پرانی چینی لپی شاید دنیا کی سب سے مشکل لپی ہے ۔

الگ الگ صوبوں کی بولیاں الگ الگ اور ایک ہونے کی وجہ سے ایک ہی نشان کو ایک صوبے والے ایک طرح پڑھتے ہیں اور دوسرے صوبے والے دوسری طرح ۔ مطلب دونوں کا ایک ہی ہوتا ہے ۔ جیسے ایک ہی نشان کو ایک "پانی" پڑھیگا اور دوسرا "جل" ۔ مطلب دونوں کا ایک ہے ۔

اِس گورکھ دھندے کی وجہ سے چین میں پڑھنا لکھنا عام لوگوں کے لئے کبھی بھی آسان نہیں رہا ۔ ودیا پر سدا کیول تھوڑے سے لوگوں کا اجارہ رہا ۔

نئی چینی سرکار کو دیش میں اور سدھاروں کے ساتھ لپی سدھار بھی کرنا پڑا، کیونکہ اُن کا آدرش اب ودیا اور گیان کو گھر گھر پہنچا دینا اور ودیا اور گیان کے میدان میں چین کا دنیا کے بڑے سے بڑے دیشوں کے ساتھ ناتا جوڑ دینا ہے ۔

نئے چین نے اب پراچین چینی لپی کی جگہ انگریزی کے چھبیس اکشروں کو جنہیں رومن یا لاطینی اکشر بھی کہتے ہیں سب چینی بھاشاؤں کے لئے اپنا لیا ہے ۔ اِس

साल यानी सन् 1957 ईसवी से चीन के प्राइमरी स्कूलों के पाँच करोड़ बच्चे अपनी भाषा के लिये इस नई लिपि को सीखना और काम में लाना शुरू कर देंगे.

कुछ दिनों तक यानी जब तक सब पुराना साहित्य इस नई लिपि में न आ जावे ऊपर की क्लासों में दोनों लिपियां साथ साथ सिखाई जाती रहेंगी. अन्त में थोड़े दिनों के बाद नई रोमन लिपि ही सारे चीन की एक अकेली लिपि रह जायगी.

लिपि सुधार के साथ साथ नए चीन में भाषा सुधार का काम भी शुरू हो गया है. अलग-अलग सूबाई भाषा को क़ायम रखते हुए वह राजधानी पेकिंग और उसके आस-पास की बोल चाल की भाषा को सारे देश में सब को सिखा देना और जारी कर देना चाहते हैं इस से धीरे धीरे चीन की एक क़ौमी ज़बान और एक क़ौमी लिपि दोनों तैयार हो जावेंगी

चीनी विद्वानों का कहना है कि इस नए सुधार से उन्हें नीचे लिखे फ़ायदे होंगे —

(1) विद्या को गाँव गाँव और घर-घर पहुँचाने में मदद मिलेगी.

(2) जो बच्चे कई साल में मामूली लिखना पढ़ना सीख पाते थे वह अब उतना ही लिखना पढ़ना कुछ हफ़्तों में सीख लेंगे

(3) छपाई के काम में बेहद आसानी हो जायगी.

(4) आजकल के चीनी टाइपराइटर की उलझनें सब दूर हो जावेंगी.

(5) दुनिया भर से तारों का आना जाना समझना आसान हो जायगा.

(6) अख़बारों, डिक्शनरियों वग़ैरा की बहुत बड़ी मुसीबत हल हो जायगी

(7) दुनिया के साठ से ऊपर देशों के साथ, जिन में यूरप, अमरीका और दक्खिन पूरबी एशिया के अधिकतर देश शामिल हैं और जो रोमन लिपि इस्तेमाल करते हैं चीन को अपना नाता जोड़ने में बड़ी आसानी होगी.

(8) साइन्स, हिसाब वग़ैरह के फ़ारमूलों में दुनिया भर में जो रोमन अक्षर काम में आते हैं उनकी वजह से साइंस की तरक़्क़ी में दुनिया के साथ-साथ चलना चीन के लिये सरल हो जायगा.

(9) चीनी लोग अब ज़्यादा आसानी से दुनिया की दूसरी ज़बानें सीख सकेंगे और दुनिया के दूसरे लोग ज़्यादा आसानी से चीनी भाषा सीख सकेंगे.

(10) दुनिया को एक करने और दुनिया भर में अमन क़ायम करने में इस से बहुत मदद मिलेगी.

سال یعنی سن 1957ع کے چین کے پرائمری اسکولوں کے پانچ کروڑ بچے اپنی بھاشا کے لئے اس نئی لپی کو سیکھنا اور کام میں لانا شروع کر دینگے

کچھ دنوں تک یعنی جب تک سب پرانا ساہتیہ اس نئی لپی میں نہ آجاوے اوپر کی کلاسوں میں دونوں لپیاں ساتھ ساتھ سکھائی جاتی رہینگی انت میں تھوڑے دنوں کے بعد نئی رومن لپی ہی سارے چین کی ایک اکیلی لپی رہ جاویگی ۔

لپی سدھار کے ساتھ ساتھ نئے چین میں بھاشا سدھا کا کام بھی شروع ہو گیا ہے الگ الگ صوبائی بھاشا کو قائم رکھتے ہوے وہ راجدھانی پیکنگ اور اس کے آس پاس کی بول چال کی بھاشا کو سارے دیش میں سب کو سکھا دینا اور جاری کر دینا چاہتے ہیں اس سے دھیرے دھیرے چین کی ایک قومی زبان اور ایک قومی لپی دونوں تیار ہوجاوینگی ۔

چینی ودوانوں کا کہنا ہے کہ اس نئے سدھار سے انھیں نیچے لکھے فائدے ہونگے —

(1) ودیا کو گاؤں گاؤں اور گھر گھر پہنچانے میں مدد ملے گی ۔

(2) جو بچے کئی سال میں معمولی لکھنا پڑھنا سیکھ پاتے تھے وہ اب اتنا ہی لکھنا پڑھنا کچھ ہفتوں میں سیکھ لینگے ۔

(3) چھپائی کے کام میں بیحد آسانی ہو جاویگی ۔

(4) آجکل کے چینی ٹائپ رائیٹر کی الجھنیں سب دور ہو جاوینگی

(5) دنیا بھر سے تاروں کا آنا جانا سمجھنا آسان ہو جاویگا

(6) اخباروں، ڈکشنریوں وغیرہ کی بہت بڑی مصیبت حل ہو جاویگی

(7) دنیا کے ساٹھ سے اوپر دیشوں کے ساتھ جن میں یورپ، امریکہ اور دکھن پوربی ایشیا کے ادھک تر دیش شامل ہیں اور جو رومن لپی استعمال کرتے ہیں چین کو اپنا ناتا جوڑنے میں بڑی آسانی ہوگی ۔

(8) سائنس، حساب وغیرہ کے فارمولوں میں دنیا بھر میں جو رومن اکشر کام میں آتے ہیں ان کی وجہ سے سائنس کی ترقی میں دنیا کے ساتھ ساتھ چلنا چین کے لئے سرل ہو جاویگا

(9) چینی لوگ اب زیادہ آسانی سے دنیا کی دوسری زبانیں سیکھ سکینگے اور دنیا کے دوسرے لوگ زیادہ آسانی سے چینی بھاشا سیکھ سکینگے ۔

(10) دنیا کو ایک کرنے اور دنیا بھر میں امن قائم کرنے میں اس سے بہت مدد ملیگی ۔

नई चीनी सरकार ने इस नए सुधार पर अपना आखिरी फ़ैसला देने से पहले पूरे एक साल तक जनता को इस पर विचार करने और बहस करने का मौक़ा दिया. इस बहस के अन्दर दस हज़ार से ऊपर माहिरों, अध्यापकों और विद्वानों ने हिस्सा लिया. तरह तरह के सुझाव देश के सामने आए. आख़ीर में जो कमेटी इस काम के लिये बैठाई गई उसने ज़बरदस्त बहुमत से रोमन लिपि के हक़ में फ़ैसला दिया.

सबसे पहले सन् 1604 ईसवी में इटली के एक ईसाई पादरी माति योरिशी ने चीनी भाषा को रोमन लिपि में लिखने की कोशिश की थी. सन् 1890 ई० के बाद से कुछ चीनी विद्वानों ने इस तरफ़ ध्यान देना शुरू किया. कुछ विद्वानों ने प्राचीन चीनी लिपि में भी तरह तरह के सुधार और आसानियां सुझाईं. बहुत दिनों तक अधिकतर चीनी विद्वान इसी राय के रहे कि प्राचीन चीनी लिपि को ही सुधार लिया जावे और आसान कर लिया जावे. पर इस सब से छपाई, टाइपराइटर, तारों वग़ैरा की कठिनाइयाँ दूर न हो सकीं.

आहिस्ता आहिस्ता चीन के देश भक्तों ने दो बातें महसूस कीं. एक यह कि साहित्य की भाषा और आम बोल चाल की भाषा में उनके यहाँ बहुत अन्तर था जिसकी वजह से आम लोगों के लिये पढ़ना लिखना सीखना आसान नथा. दूसरे यह कि बिना लिपि को पूरी तरह बदले देश की जनता विद्या और साइंस में दूसरे देशों की जनता का मुक़ाबला नहीं कर सकती थी. देश भर में जगह जगह भाषा सुधार और लिपि सुधार संस्थाएँ क़ायम हो गईं. आहिस्ता आहिस्ता सबका रुख़ एक ही तरफ़ को गया. अव्वल यह कि बोल चाल की भाषा को ही किताबों और साहित्य के काम में लाया जावे, पुरानी पंडिताऊ भाषा को जिसमें चीन के अधिकतर प्राचीन ग्रंथ लिखे हुए हैं ख़तम किया जावे, और दूसरे यह कि आवाज़ों के आधार पर नई आसान रोमन लिपि को देश भर में अपनाया जावे. इसी के अनुसार नई चीनी सरकार ने सन् 1946 ईसवी में अपना फ़ैसला सुना दिया.

चीनी विद्वानों का यह भी ख़याल है कि नई रोमन लिपि को अपनाने से उन्हें भाषा के आसान करने मे और भाषा के आसान करने से नई लिपि को फैलाने में मदद मिलेगी.

इस निगाह से सन् 1957 का साल चीन की क़ौमी ज़िन्दगी में एक बहुत बड़े इन्क़लाब का साल है. देश भर में रेडियो, थियेटर, सिनेमा, स्कूल, कालिज सब इस काम में सरकार को मदद दे रहे हैं.

चीनी सरकार का कहना है कि अभी इस रास्ते मे मुश्किलें काफ़ी हैं पर उसे विश्वास है कि लगन और

نئی چینی سرکار نے اِس نئے سدھار پر اپنا آخری فیصلہ دینے سے پہلے پورے ایک سال تک جنتا کو اِس پر وچار کرنے اور بحث کرنے کا موقعہ دیا ۔ اِس بحث کے اندر دس ہزار سے اوپر ماہروں، ادھیاپکوں اور ودوانوں نے حصہ لیا ۔ طرح طرح کے سجھاؤ دیش کے سامنے آئے ۔ آخیر میں جو کمیٹی اِس کام کے لئے بیٹھائی گئی اُس نے زبردست بہومت سے رومن لپی کے حق میں فیصلہ دیا ۔

سب سے پہلے سن 1604ع میں اِٹلی کے ایک عیسائی پادری ماتی یورشی نے چینی بھاشا کو رومن لپی میں لکھنے کی کوشش کی تھی ۔ سن 1890ع کے بعد سے کچھ چینی ودوانوں نے اِس طرف دھیان دینا شروع کیا ۔ کچھ ودوانوں نے پراچین چینی لپی میں بھی طرح طرح کے سدھار اور آسانیاں سجھائیں ۔ بہت دنوں تک ادھک‌تر چینی ودوان اِسی رائے کے رہے کہ پراچین چینی لپی کو ہی سدھار لیا جاوے اور آسان کر لیا جاوے ۔ پر اِس سب سے چھپائی، ٹائپ‌رائیٹر، تاروں وغیرہ کی کٹھنائیاں دور نہ ہوسکیں ۔

آہستہ آہستہ چین کے دیش بھکتوں نے دو باتیں محسوس کیں ۔ ایک یہ کہ ساہتیہ کی بھاشا اور عام بول چال کی بھاشا میں اُن کے یہاں بہت انتر تھا جس کی وجہہ سے عام لوگوں کے لئے پڑھنا لکھنا سیکھنا آسان نہ تھا ۔ دوسرے یہ کہ بنا لپی کو پوری طرح بدلے دیش کی جنتا ودیا اور سائنس میں دوسرے دیشوں کی جنتا کا مقابلہ نہیں کر سکتی تھی ۔ دیش بھر میں جگہ جگہ بھاشا سدھار اور لپی سدھار سنستھائیں قائم ہو گئیں ۔ آہستہ آہستہ سب کا رخ ایک ہی طرف کو گیا ۔ اول یہ کہ بول چال کی بھاشا کو ہی کتابوں اور ساہتیہ کے کام میں لایا جاوے، پرانی پنڈتاؤ بھاشا کو جس میں چین کے ادھک‌تر پراچین گرنتھ لکھے ہوئے ہیں ختم کیا جاوے، اور دوسرے یہ کہ آوازوں کے آدھار پر نئی آسان رومن لپی کو دیش بھر میں اپنایا جاوے ۔ اِسی کے انوسار نئی چینی سرکار نے سن 1946ع میں اپنا فیصلہ سنا دیا ۔

چینی ودوانوں کا یہ بھی خیال ہے کہ نئی رومن لپی کو اپنانے سے اُنھیں بھاشا کے آسان کرنے میں اور بھاشا کے آسان کرنے سے نئی لپی کو پھیلانے میں مدد ملیگی ۔

اِس نگاہ سے سن 1957 کا سال چین کی قومی زندگی میں ایک بہت بڑے انقلاب کا سال ہے ۔ دیش بھر میں ریڈیو، تھیٹر، سنیما، اِسکول، کالج سب اِس کام میں سرکار کو مدد دے رہے ہیں ۔

چینی سرکار کا کہنا ہے کہ ابھی اِس راستے میں مشکلیں کافی ہیں پر اُسے وشواس ہے کہ لگن اور

धीरज के साथ कुछ बरसों के अन्दर इन सब मुश्किलों को हल कर लिया जावेगा.

चीनी विद्वानों ने अपने सारे प्राचीन साहित्य को नई लिपि में लिखना शुरू कर दिया है ताकि चीन की प्राचीन संस्कृति क़ायम भी रहे, ज़्यादा आसानी से दुनिया भर में फैल सके और एक मिली जुली 'वर्ल्ड कलचर' यानी मानव संस्कृति के रूप लेने में मदद दे सके.

हम चीनी सरकार और चीनी जनता को इस अहम और क़ीमती सुधार के लिये दिल से बधाई देते हैं. दुनिया की पुरानी क़ौमें बिना इस तरह के कायाकल्प के न अधिक देर तक ज़िन्दा रह सकती हैं और न अपने लिये या किसी के लिये बरकत हो सकती हैं.

12. 3. 57. —सुन्दरलाल

دھیرج کے ساتھ کچھ برسوں کے اندر ان سب مشکلوں کو حل کر لیا جاویگا .

چینی ودوانوں نے اپنے سارے پراچین ساہتیہ کو نئی لپی میں لکھنا شروع کر دیا ہے تاکہ چین کی سنسکرتی قائم بھی رہے، زیادہ آسانی سے دنیا بھر میں پھیل سکے اور ایک ملی جلی 'ورلڈ کلچر' یعنی مانو سنسکرتی کے روپ لینے میں مدد دے سکے .

ہم چینی سرکار اور چینی جنتا کو اس اہم اور قیمتی سدھار کے لئے دل سے بدھائی دیتے ہیں . دنیا کی پرانی قومیں بنا اس طرح کے کایا کلپ کے نہ ادھک دیر تک زندہ رہ سکتی ہیں اور نہ اپنے لئے یا کسی کے لئے برکت ہو سکتی ہیں .

—سندرلال 12. 3. 57

हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताब — ہمارے یہاں ملنے والی کچھ اور کتابیں

नोट:—यह किताबें सिर्फ हिन्दी में हैं. — نوٹ:— یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں ۔

नाम किताब	लेखक	दाम			لیکھک	نام کتاب
1. शेर-ओ-शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0	شری ایودھیا پرساد گوئلیہ	1. شعر و شاعری
2. शेर-ओ-सुखन	"	8	0	0	"	2. شعر و سخن
3. गहरे पानी पैठ	"	2	8	0	"	3. گہرے پانی پیٹھ
4. हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0	شری بنارسی داس چترویدی	4. ہمارے آرادھیہ
5 संस्मरण	"	3	0	0	"	5. سنسمرن
6. दो हजार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0	شری جگدیش چندر جین	6. دو ہزار ورش پرانی کہانیاں
7 ज्ञान गंगा	श्री नारायण प्रसाद जैन	6	0	0	شری نارائن پرساد جین	7. گیان گنگا
8 पथ चिह्न	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0	شری شانتی پریہ دویدی	8. پتھ چنہ
9 पंथ प्रदीप	शान्ति एम ए.	2	0	0	شانتی ایم اے	9 پنتھ پردیپ
10. आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	2	0	0	شری کنہیالال مشر پربھاکر	10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول
11. मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम ए		0	0	شری ویریندر کمار جین ایم ۔ اے	11. مکتی دوت
12 मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بچن	12. ملن یامنی
13. रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ڈاکٹر رام کمار ورما	13. رجت رشمی
14 मेरे बापू	श्री तन्मय बुखारिया	2	8	0	شری تنمے بکھاریا	14. میرے باپو
15. विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0	پنڈت سندر لال' بھگوان داس کیلا	15. وشو سنگھ کی اور
16. भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला		0	0	شری بھگوان داس کیلا'	16 بھارتیہ ارتھ شاستر
17 भारतीय शासन	"	3	0	0	"	17. بھارتیہ شاسن
18 नागरिक शास्त्र	"	2	4	0	"	18. ناگرک شاستر
19 साम्राज्य और उनका पतन	"	2	8	0	"	19. سامراج اور ان کا پتن
20. भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन	"	1	4	0	"	20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن
21 सर्वोदय अर्थ व्यवस्था	"	1	8	0	"	21. سروودے ارتھ ویوستھا
22 हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0	شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے	22 ہماری آدم جاتیاں
23 अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम ए एल एल बी श्री गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, श्री भगवानदास केला	2	0	0	شری دیا شنکر دوبے ایم اے ایل ایل بی گجادھر پرساد' امبشٹ' بھگوان داس کیلا	23. ارتھ شاستر شبداولی
24. नागरिक शिक्षा	श्री भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	شری بھگوان داس دیا شنکر دوبے	24. ناگرک شکشا
25. राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	دیا شنکر دوبے	25. راشٹر منڈل شاسن
26 जवानी	महात्मा भगवानदीन	3	0	0	مہاتما بھگوان دین	26. جوانی
27. मारने की हिम्मत !	"	1	0	0	"	27. مارنے کی ہمت !
28. सलोना सच		0	8	0	"	28 سلونا سچ
29. मेरे साथी	"	1	0	0	"	29. میرے ساتھی

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3

ملنے کا پتہ—
مینیجر 'نیا ہند'
145، مٹھی گنج' الٰہ آباد 3

نیا ہند

इस नम्बर के ख़ास लेख	**اِس نمبر کے خاص لیکھ**
त्रिमूर्ति और एक ईश्वर	تریمورتی اور ایک ایشور
—डाक्टर भगवानदास	—ڈاکٹر بھگوان داس
मुहम्मद साहब का ईसाइयों के साथ व्यवहार	محمد صاحب کا عیسائیوں کے ساتھ ویوھار
—पण्डित सुन्दरलाल	—پنڈت سندرلال
अधिकारों की सेना	ادھیکاروں کی سینا
--भाई अब्दुल हलीम अनसारी	—بھائی عبدالحلیم انصاری
सन 1857 की जङ्गे आज़ादी	سن 1857 کی جنگ آزادی
—विश्वम्भरनाथ पांडे	—وشمبھر ناتھ پانڈے
नया पैसा	نیا پیسہ
—पन्डित सुन्दरलाल	—پنڈت سندرلال
इस चुनाव में कौन हारा-भूमिहीन	اِس چناؤں میں کون ہارا بھومی ہین
—सुरेश रामभाई	--سوریش رام بھائی

नी कल्चर सोसाइटी, इलाहाबाद دستانی کلچر سوسائٹی الٰہ آباد

1957

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

समाचार पत्र विषयक क़ानून के अन्तर्गत प्रकाशन

का

विज्ञप्ति

1.	प्रकाशन	...	नया हिन्द.
2.	प्रकाशन स्थान	...	145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.
3.	प्रकाशन अवधि	...	मासिक
4.	मुद्रक	...	सुरेश रामभाई
	राष्ट्रीयता	...	भारतीय
	पता	...	145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.
5.	प्रकाशक	...	उपर्युक्त.
	राष्ट्रीयता	...	वही.
	पता	...	वही.
6.	सम्पादक	...	विश्वम्भरनाथ पांडे.
	राष्ट्रीयता	...	भारतीय.
	पता	...	142, आज़ाद स्क्वायर, इलाहाबाद.
7.	स्वामित्व	...	हिन्दुस्तानी कल्चर सोसायटी, 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

मैं, सुरेश रामभाई घोषित करता हूँ कि ऊपर लिखे तथ्य मेरी पूरी जानकारी तथा विश्वास के आधार पर सत्य हैं.

हस्ताक्षर सुरेश रामभाई.

नया हिन्द نیا ہند

जिल्द 23 جلد   नम्बर 4-5 نمبر

اپریل ۵۷ء کا پرچہ بھی اسی میں ہے

मई 1957 مئی

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद   145 مٹھی گنج، الہ آباد

मई 1957 مئی

अप्रैल अङ्क सम्मिलित

त्रिमूर्ति और एक ईश्वर

यानी

तसलीस और तौहीद

डाक्टर भगवान् दास

कुछ मजहब एक तरह की त्रिमूर्ति यानी तसलीस में विश्वास करते हैं. दूसरे कुछ मजहब ईश्वर के एक होने यानी तौहीद पर ज़ोर देते हैं. अपनी अपनी बात में दोनो एक दरजे तक ठीक हैं. पर दूसरे की बात काटने में दोनों एक दरजे तक ग़लत हैं. ग़लती यह है कि हम सब अपनी अपनी बात कहने में 'यह भी ठीक है' की जगह 'यह ही ठीक है' कहते हैं.

जिस तरह जल्दी की लिखाई में हम शार्टहैन्ड से काम लेते हैं उसी तरह बहुत सी गम्भीर बातों को समझाने के लिये हम निशानियों की भाषा का उपयोग करते हैं. संस्कृत साहित्य में इसकी एक बहुत अच्छी मिसाल अ-उ-म् यह तीन अक्षर हैं. इन तीनों को मिलाकर संस्कृत का प्रसिद्ध शब्द ओम् बनता है, जिसकी आवाज़ शहद की मक्खियों की आवाज़ से मिलती है. सृष्टि के शुरू मे जो आवाज़ पैदा हुई थी, जिसमें बाद मे धीरे धीरे सब जानदारों और बेजान चीज़ों की तरह तरह की आवाज़ें और गाने के सातों स्वर और उनके तरह तरह के रूप बने, उस शुरू की आवाज़ से मिलती जुलती यदि कोई आवाज़ आदमी के गले से निकल सकती है तो वह यही 'ओम्' है. पुरानी किताबों में लिखा है कि अव्यक्त यानी लाज़माँ और लामकाँ को व्यक्त करने यानी जहूर में लाने के लिये सब से पहले इसी तरह की आवाज़ आकाश मे हुई थी. यही उस रूहेकुल का सबसे पहला जहूर था. इनजील में लिखा है कि सृष्टि के शुरू में "शब्द ईश्वर के साथ था और शब्द ही ईश्वर था." शायद इसका भी यही मतलब रहा हो.

इस तरह यह 'ओम्' सबसे पुरानी त्रिमूर्ति यानी तसलीस है. इसमें तीन अक्षर हैं अ, उ, और म्. 'अ' का अर्थ है आत्मा यानी आपा, 'उ' का अर्थ है ग़ैर-आत्मा यानी ग़ैर-आपा, 'म्' का अर्थ है इन दोनों का सम्बन्ध. यह तीनों तीन भी हैं और तीनों एक भी हैं. मनु-स्मृति के अन्दर इसे इन शब्दों में बयान किया गया है:—

"शुरू के इन तीन अक्षरों के ब्रह्म से उस त्रिमूर्ति का पता चलता है जो एक में तीन और तीन में एक है. उसी त्रिमूर्ति से बाद के वह सब तीन तीन के जोड़े बने हैं जिनकी गिनती अनन्त है और जिनसे मिलकर यह विश्व (आलम)

تریمورتی اور ایک ایشور

یعنی

تثلیث اور توحید

ڈاکٹر بھگوان داس

کچھ مذہب ایک طرح کی تریمورتی یعنی تثلیث میں وشواس کرتے ہیں۔ دوسرے کچھ مذہب ایشور کے ایک ہونے یعنی توحید پر زور دیتے ہیں۔ اپنی اپنی بات میں دونوں ایک درجہ تک ٹھیک ہیں۔ پر دوسرے کی بات کاٹنے میں دونوں ایک درجہ تک غلط ہیں۔ غلطی یہ ہے کہ ہم سب اپنی اپنی بات کہنے میں 'یہ بھی ٹھیک ہے' کی جگہ 'یہ ہی ٹھیک ہے' کہتے ہیں۔

جس طرح جلدی کی لکھائی میں ہم شارٹ ہینڈ سے کام لیتے ہیں اُسی طرح بہت سی گمبھیر باتوں کو سمجھانے کے لئے ہم نشانیوں کی بھاشا کا اُپیوگ کرتے ہیں۔ سنسکرت ساہتیہ میں اِس کی ایک بہت اچھی مثال آ- اُو- م یہ تین اکشر ہیں۔ اِن تینوں کو ملاکر سنسکرت کا پرسدھ شبد اُوم بنتا ہے' جس کی آواز شہد کی مکھیوں کی آواز سے ملتی ہے۔ سرشٹی کے شروع میں جو آواز پیدا ہوئی تھی' جس میں بعد میں دھیرے دھیرے سب جانداروں اور بےجان چیزوں کی طرح طرح کی آوازیں اور گانے کے ساتوں سر اور اُن کے طرح طرح کے روپ بنے' اُس شروع کی آواز سے ملتی جلتی یدی کوئی آواز آدمی کے گلے سے نکل سکتی ہے تو وہ یہی 'اُوم' ہے۔ پرانی کتابوں میں لکھا ہے کہ اویکت یعنی لازماں اور لامکاں کو ویکت کرنے یعنی ظہور میں لانے کے لئے سب سے پہلے اِسی طرح کی آواز آکاش میں ہوئی تھی۔ یہی اُس روح کل کا سب سے پہلا ظہور تھا۔ اِنجیل میں لکھا ہے کہ سرشٹی کے شروع میں "شبد ایشور کے ساتھ تھا اور شبد ہی ایشور تھا۔" شاید اس کا بھی یہی مطلب رہا ہو۔

اس طرح یہ 'اُوم' سب سے پرانی تریمورتی یعنی تثلیث ہے۔ اِس میں تین اکشر ہیں آ' اُو' اور م۔ 'آ' کا ارتھ ہے آتما۔ یعنی آپا' 'اُو' کا ارتھ ہے غیرآتما یعنی غیر۔ آپا' 'م' کا ارتھ ہے اِن دونوں کا سمبندھ۔ یہ تینوں تین بھی ہیں اور تینوں ایک بھی ہیں۔ منوسمرتی کے اندر اِسے اِن شبدوں میں بیان کیا گیا ہے:—

"شروع کے ان تین اکشروں کے برہمہ سے اُس تریمورتی کا پتہ چلتا ہے جو ایک میں تین اور تین میں ایک ہے۔ اُسی تریمورتی سے بعد کے وہ سب تین تین کے جوڑے بنے ہیں جن کی گنتی اننت ہے اور جن سے مل کر یہ وشو (عالم)

बना है. यही तीन वेदों की बुनियाद हैं. यह एक बहुत बड़ा राज़ यानी रहस्य है. यह त्रिवेद अनगिनत त्रिमूर्तियों का सर चश्मा है. यह वह वेद नहीं जिन्हें आम तौर पर लोग वेद कहते हैं. यह वह वेद यानी ज्ञान है जिसे यदि आदमी जान जावे तो असली वेद को जान जावे यानी असली ज्ञान यानी मारफ़त हासिल करले " (11-25)

यह सारा संसार चक्र ऐसी त्रिमूर्तियों का बना हुआ है जिनमें दो एक दूसरे के मुक़ाबले के दो सिरे होते हैं और तीसरा उन्हें जोड़ने वाला होता है मैंने अपनी पुस्तकों The Science of Peace, और Pranav-vad (The Science of the Sacred Word) मे इसे तफ़सील के साथ बयान किया है

यह सारा संसार दो दो के जोड़ो से बना है क़ुरान में लिखा है *'व मिनकुल्ले शैयिन ख़लक़ना ज़ौजैन"* (51-49) यानी "हमने हर चीज दो दो के जोड़ो में बनाई है " अब अगर हम इन दोनों के सम्बन्ध का भी निगाह मे रखें तो हम कह सकते हैं कि यह सारी दुनिया त्रिमूर्तियो की बनी हुई है इस सम्बन्ध या नाते मे हाँ और नहीं अपनाना और इनकार करना, मेल और जुदाई, खिंचाव और फिकाव सब शामिल हैं.

अनेक में एक यानी कसरत मे वहदत से ही तमसील यानी मुशाबहत का उसूल पैदा होता है. कारण और कार्य यानी इल्लत और मालूल के ज़रिये इस अनेकता मे सिलसिले का पता लगाना ही विज्ञान यानी साइंस है और अनेकता मे एकता यानी कसरत में वहदत को देख सकना साइन्स की हद है, इसी को प्रज्ञान कहते हैं. यही सच्चा फ़लसफ़ा यानी दर्शन है. यह ज्ञान तब होता है जब सृष्टि का पूरा चक्कर यानी उतार और चढ़ाव दोनों निगाह के सामने आजावे. यही सइन्स की तकमील है यही असल ज्ञान यानी मारफ़त है

मैं और गैर-मैं इन दोनों की टक्कर से दुई पैदा होती है. इसी से पच्छिमी साइंस मे पोलैरिटी और रैलेटिविटी के उसूल बने इसी से सब खिंचाव और फिकाव, अमल और रद्दे अमल, उन्नति और अवनति, उरूज और ज़वाल, यक रंगी और बहु रंगी बनाव और बिगाड़, सर्ग और प्रलय ख़िलक़त और क़यामत ज़हूर मे आते हैं

एक और अनेक, यानी वहदत और कसरत मे जो रिश्ता है वह खुद एक तीसरी चीज बन जाता है. इसी से विश्व यानी आलम और उसकी सारी रचना पर त्रिमूर्ति यानी तसलीस की मुहर लग जाती है. इस तरह की सैकड़ो त्रिमूर्तियाँ गिनाई जा सकती हैं. यह सब त्रिमूर्तियां क़दम क़दम पर एक से दूसरी पैदा होती रहती हैं. इन सब की जड़ उसी शुरू की त्रिमूर्ति मे है जो हक़ीक़त मे हमेशा के लिये अखण्ड वहदत है वही वह सिफर या शून्य है जिसमे गिनत नहीं होती.

بنا ہے. یہی تین ویدوں کی بنیاد ہے. یہ ایک بہت بڑا راز یعنی رہسیہ ہے. یہ تری وید انگنت تریمورتیوں کا سرچشمہ ہے. یہ وہ وید نہیں جنہیں عام طور پر لوگ وید کہتے ہیں. یہ وہ وید یعنی گیان ہے جسے یدی آدمی جان جاوے تو اصلی وید کو جان جاوے یعنی اصلی گیان یعنی معرفت حاصل کر لے. (11--265)

یہ سارا سنسار چکر ایسی تریمورتیوں کا بنا ہوا ہے جن میں دو ایک دوسرے کے مقابلے کے دو سرے ہوتے ہیں اور تیسرا انہیں جوڑنے والا ہوتا ہے. میں نے اپنی پستکوں Pranav-vad ,' The Science of peace (The science of the sacred word) میں اسے تفصیل کے ساتھ بیان کیا ہے.

یہ سارا سنسار دو دو کے جوڑوں سے بنا ہے. قرآن میں لکھا ہے "ومن کل شی ین خلقنا زوجین" (51-49) یعنی "ہم نے ہر چیز دو دو کے جوڑوں میں بنائی ہے." اب اگر ہم ان دونوں کے سمبندھ کو بھی نگاہ میں رکھیں تو ہم کہہ سکتے ہیں کہ یہ ساری دنیا تریمورتیوں کی بنی ہوئی ہے. اس سمبندھ یا ناتے میں ہاں اور نہیں، اپنانا اور انکار کرنا، میل اور جدائی، کھنچاؤ اور پھکاؤ سب شامل ہیں

انیک میں ایک یعنی کثرت میں وحدت سے ہی تمثیل یعنی مشابہت کا اصول پیدا ہوتا ہے. کارن اور کاریہ یعنی علت او معلول کے ذریعہ اس انیکتا میں سلسلے کا پتہ لگانا ہی وگیان یعنی سائنس ہے. اور انیکتا میں ایکتا یعنی کثرت میں وحدت کو دیکھ سکنا سائنس کی حد ہے. اسی کو پرگیان کہتے ہیں. یہی سچا فلسفہ یعنی درشن ہے. یہ گیان تب ہوتا ہے جب سرشٹی کا پورا چکر یعنی اتار اور چڑھاؤ دونوں نگاہ کے سامنے آجاوے. یہی سائنس کی تکمیل ہے. یہی اصل گیان یعنی معرفت ہے.

میں اور غیر میں ان دونوں کی ٹکر سے دوئی پیدا ہوتی ہے. اسی سے پچھمی سائنس میں پولیریٹی اور ریلیٹیویٹی کے اصول بنے. اسی سے سب کھنچاؤ اور پھکاؤ، عمل و رد عمل، انتی اور اونتی، عروج اور زوال، یک رنگی اور بہو رنگی، بناؤ اور بگاڑ، سرگ اور پرلے، خلقت اور قیامت ظہور میں آتے ہیں.

ایک اور انیک، یعنی وحدت اور کثرت میں جو رشتہ ہے وہ خود ایک دوسری چیز بن جاتا ہے. اسی سے وشو یعنی عالم اور اس کی ساری رچنا پر تریمورتی یعنی تثلیث کی مہر لگ جاتی ہے. اس طرح کی سیکڑوں تریمورتیاں گنائی جا سکتی ہیں. یہ سب تریمورتیاں قدم قدم پر ایک سے دوسری پیدا ہوتی رہتی ہیں. ان سب کی جڑ اسی شروع کی تریمورتی میں ہے جو حقیقت میں ہمیشہ کے لئے اکھنڈ وحدت ہے. وہی وہ صفر یا شونیہ ہے جس میں گنتی نہیں ہوتی.

ईसाइयों में एक फ़िरक़ा 'एथेनीशियन' कहलाता है. उनके एक ग्रंथ में लिखा है:—"हम त्रिमूर्ति के रूप मे एक ईश्वर की पूजा करते हैं, और उस एकता में त्रिमूर्ति की: बाप, बेटा और पवित्र आत्मा,— हरेक अपन से मौजूद, हरेक अक़्ल से बालातर और अनादि, वह अक़्ल से बालातर और अनादि तीन नहीं हैं एक ही है. तीन सर्व शक्तिमान ईश्वर नहीं हैं. सर्व शक्तिमान ईश्वर कवल एक ही है, बाप बटा और पवित्र आत्मा तीनों ईश्वर हैं, लेकिन यह तीन तीन ईश्वर नहीं हैं, ईश्वर एक ही है"

असल वजूद अचिन्त्य' अतर्क्य और अनिर्वचनीय' यानी ख़याल से बालातर, दलील से बालातर और बयान से बालातर है. सच यह है कि जितना वजूद हमारे सामने है और जिसे हम पूरी तरह देखते भालते हैं वह सब वास्तव मे हमारे लिये अचिंत्य' अतर्क्य' और अनिर्वचनीय है. क्या हम किसी भी रूप, रस, गन्ध, स्पर्श या आवाज को, किसी भी बू, जायक़े, शक्ल या किसी भी चीज़ को अपनी इन्द्रिय (हवास) से अलग करके समझ सकते हैं? जो नाम हमने इनके रख रखे है वह केवल हमारे फ़रज़ी इशारे हैं यानी आवाज़ें हैं जिनका हमने कुछ मतलब फ़र्ज़ कर रखा है.

सब अलग अलग साइंसो के अन्दर इस तरह की अनगिनत त्रिमूर्तियां भरी हुई हैं ये सब एक दूसरे मे बंधी हुई हैं "ईश्वरीय क़ानून यह है कि सब चीज़ें एक दूसरे के वजूद में मिल जाती हैं." यही ईश्वरीय कानून हमारे उस महा वाक्य के अन्दर है— 'मैं यह नहीं हूँ."

"मैं" के स्वभाव के अन्दर यह शामिल है कि उसके अपने को समझने के लिये उसके मुकाबले मे अनगिनत "ग़ैर-मैं" हो. यह अनगिनत-पन और ग़ैर-पन, कसरत और दुई, दानो फ़रज़ी हैं. फिर भी "दुनिया के वजूद के लिये इन सब की ज़रूरत है" चूँकि 'मैं' का स्वभाव यह चाहता है कि हर 'मैं" के मुक़ाबले मे काई ग़ैर-मैं हो, उसके हर रूप का कोई जोड़ा हो, इसलिये क़ुदरत की इस बेतरतीबी के अन्दर भी हमें एक तरतीब, एक क़ायदा, एक क़ानून, एक नियम सबको बाँधे हुये और चलाते हुये साफ़ दिखाई दता है.

"मैं' "ग़ैर-मैं" को 'यह' भी कहा जाता है हर 'मैं" का अपना "मैं"होता है और, और सब उसके लिये "ग़ैर-मैं" यानी "यह" होता है. "मैं" और "यह" में आम तौर पर नाता यह होता है कि "मैं" "यह" को अपनाने से इनकार करता है. "मैं यह नहीं हूँ" कभी-कभी यह इनकार साफ़ विरोध, मुख़ालफ़त या तरदीद की शकल ले लेता है. इसके भी बहुत से दर्जे हैं. मिसाल के तौर पर—मैं काला नहीं हूँ (या है) ,मैं सफ़ेद हूँ, 'मैं सफ़ेद नहीं हूँ (या है), मैं काला हूँ, 'मैं मादा नहीं हूँ, मैं नर हूँ, मैं नर नहीं हूँ, मैं मादा हूँ; 'मैं प्यार नहीं करता, मैं नफ़रत करता हूँ. मैं आग नहीं हूँ. मैं पानी हूँ, 'मैं पानी नहीं हूँ, मैं आग हूँ, वग़ैरा वग़ैरा.

عیسائیوں میں ایک فرقہ 'ایتھینیشین' کہلاتا ہے. اُن کے ایک گرنتھ میں لکھا ہے:—"ہم تریمورتی کے روپ میں ایک ایشور کی پوجا کرتے ہیں، اور اُس ایکتا میں تریمورتی کی: باپ' بیٹا اور پوتر آتما'—ہر ایک اپنے سے موجود' ہر ایک عقل سے بالاتر اور انادی' وہ عقل سے بالاتر اور انادی تین نہیں ہیں ایک ہی ہے. تین سروشکتی مان ایشور نہیں ہیں. سروشکتی مان ایشور کیول ایک ہی ہے. باپ بیٹا اور پوتر آتما تینوں ایشور ہیں' لیکن یہ تین تین ایشور نہیں ہیں' ایشور ایک ہی ہے"

اصل وجود اَچنتیہ' اترکیہ اور انروچنیہ' یعنی خیال سے بالاتر' دلیل سے بالاتر اور بیان سے بالاتر ہے. سچ یہ ہے کہ جتنا وجود ہمارے سامنے ہے اور جسے ہم پوری طرح دیکھتے بھالتے ہیں وہ سب واستو میں ہمارے لئے اچنتیہ' اترک اور انروچنیہ ہے. کیا ہم کسی بھی روپ' رس' گندھ' اسپرش یا آواز کو' کسی بھی بو' ذائقہ' شکل یا کسی بھی چیز کو اپنی اندریوں (حواس) سے الگ کر کے سمجھ سکتے ہیں ؟ کیا ہم ان میں سے کسی کو بیان کر سکتے ہیں ؟ جو نام ہم نے ان کے رکھ رکھے ہیں وہ کیول ہمارے فرضی اشارے ہیں یعنی آوازیں ہیں جن کا ہم نے کچھ مطلب فرض کر رکھا ہے

سب الگ الگ سائنسوں کے اندر اس طرح کی انگنت تریمورتیاں بھری ہوئی ہیں. یہ سب ایک دوسرے میں بندھی ہوئی ہیں. "ایشوریہ قانون یہ ہے کہ سب چیزیں ایک دوسرے کے وجود میں مل جاتی ہیں." یہی ایشوریہ قانون ہمارے اُس مہاواکیہ کے اندر ہے—"میں یہ نہیں ہوں."

"میں" کے سوبھاؤ کے اندر یہ شامل ہے کہ اُس کے اپنے کو سمجھنے کے لئے اُس کے مقابلے میں انگنت "غیر-میں" ہوں. یہ انگنت پن اور غیر-پن' کثرت او دوئی' دونوں فرضی ہیں. پھر بھی "دنیا کے وجود کے لئے ان سب کی ضرورت ہے." چونکہ "میں" کا سوبھاؤ یہ چاہتا ہے کہ ہر 'میں' کے مقابلہ میں کوئی غیر-میں ہو' اُس کے ہر روپ کا کوئی جوڑا ہو' اس لئے قدرت کی اس بےترتیبی کے اندر بھی ہمیں ایک ترتیب' ایک قاعدہ' ایک قانون' ایک نیم سب کو باندھے ہوئے اور چلاتے ہوئے صاف دکھائی دیتا ہے.

"میں" "غیر-میں" کو 'یہ" بھی کہا جاتا ہے. ہر 'میں' کا اپنا 'میں' ہوتا ہے اور اور سب اُس کے لئے "غیر میں' یعنی "یہ" ہوتا ہے "میں' اور "یہ" میں عام طور پر ناتا یہ ہوتا ہے کہ "میں" "یہ" کو اپنانے سے انکار کرتا ہے. "میں یہ نہیں ہوں." کبھی کبھی یہ انکار صاف ورودھ' مخالفت یا تردید کی شکل لے لیتا ہے. اس کے بھی بہت سے درجے ہیں. مثال کے طور پر—'میں کالا نہیں ہوں (یا ہے)' میں سفید ہوں' میں سفید نہیں ہوں (یا ہے)' میں کالا ہوں' 'میں مادہ نہیں ہوں' میں نر ہوں' 'میں نر نہیں ہوں میں مادہ' ہوں 'میں پیار نہیں کرتا' میں نفرت کرتا ہوں' میں نفرت نہیں کرتا' میں پیار کرتا ہوں؛' میں آگ نہیں ہوں' میں پانی ہوں' میں پانی نہیں ہوں' میں اگ ہوں" وغیرہ وغیرہ.

इस तरह के वाक्य बेअन्त हैं. 'मैं चूहा हूं; बिल्ली हूं; कुत्ता हूं; शिकारी हूं; प्लेग की मक्खी या प्लेग का चूहा हूं.' यूं चक्कर भी पूरा होजाता है.

इन मिसालों को पढ़कर पढ़ने वाले को अजीब सा लगता होगा। यह एक बेमानी, बेतुकी और मज़ाक़ की चीज़ मालूम होती होगी लेकिन यह सारा संसार चक्र इसी तरह की बेतुकी, एक दूसरे को काटने वाली, दुख भरी और मज़ाक़ भरी चीज़ों और इसी तरह के अनमेल जोड़ो से भरा हुआ है. इस संसार में छोटे कीड़े भी हैं और बड़े कीड़े भी हैं जो उन छोटे कीड़ों को खा जाते हैं. बड़े-बड़े दरिन्दे हैं और उन से भी बड़े-बड़े जानदार हैं जो उन दरिन्दों को निगल जाते हैं, चालाक मुजरिम भी हैं और उनसे भी ज़ियादा चालाक जासूस भी हैं, बड़े-बड़े मज़बूत क़िले भी हैं और उनसे ज़ियादा मज़बूत बारूद और गोले हैं जो ऐसे सब क़िलों को चूर चूर कर देते हैं. हवा में तेज़ी से बम लेजाने वाले जहाज़ भी हैं और उनकी रोक थाम करने वाले उनसे ज़ियादा ज़बरदस्त साधन भी हैं दुनिया के सब दिमाग़ी काम करने वालो के मिलकर काम करने के लिये बड़ी बड़ी अन्तरराष्ट्रीय कमेटियां भी बनी हुई हैं और हर विचारक या प्रोफ़ेसर की राय भी दूसरे की राय से बिलकुल मुख़्तलिफ़ है. एक तरफ़ दुनिया के सब धर्मों को मिलाने के लिये सभाएँ और थियासोफ़ीकल सोसाइटी जैसी संस्थाएँ हैं जो दुनिया के सब आदमियों में भाईचारा क़ायम करना चाहती हैं और दूसरी तरफ़ हर मुल्क या राष्ट्र के लोग दूसरे राष्ट्र वालों के ख़िलाफ़ 'नफ़रत के भजन' भी गाते रहते हैं. कोई रूहानियत आत्मवाद का मानने वाला है तो कोई माटीवादी या अनात्मवादी है. कोई फ़ासिस्ट या नाज़ी है, तो कोई सोशलिस्ट या कम्युनिस्ट एक महायुद्ध मे दुनिया भर के राष्ट्र खिंच आते हैं और फिर उन्ही राष्ट्रों को मिलाने के लिये एक लीग आफ नेशंस बनती है. उसके बाद अपने अपने हथियारों को बढ़ाने के लिये पहले से भी अधिक तेज़ी के साथ घुड़दौड़ होने लगती है, होश और समझ पागलपन को क़ाबू मे करते हैं और फिर पागलपन समझ पर हावी हो जाता है बड़े बड़े साम्राज्य और बड़ी बड़ी सभ्यताएँ सर उठाती हैं और फिर गिर कर जंगलीपन और अंधेरे युगो (डार्क एजेज़) मे तब्दील होजाती हैं और फिर धीरे धीरे नई सभ्यताएँ बनना शुरू होती हैं. पूरे पूरे महाद्वीप डूबते रहते हैं और उभरते रहते हैं. धरती पर बड़े बड़े भौंचाल और प्राकृतिक आपत्तियाँ आती रहती हैं. इस धरती से बाहर बड़े बड़े तारे, सैयारे, चांद और सूरज पैदा होते रहते हैं, मिटते रहते हैं और फिर पैदा होते रहते हैं. इसका कोई अन्त नहीं. हर जगह अनगिनत जोड़े दिखाई देते हैं जो एक दूसरे को काटते भी हैं, नाश भी करते हैं. और एक दूसरे की कमी को भी पूरा करते हैं. छोटे से छोटे और बड़े से बड़े दायरों में एक दूसरे से टक्कर भी

اِس طرح کے واکیہ بے انت ہیں۔ 'میں چوہا ہوں' بلی ہوں' کتا ہوں شکاری ہوں' پلیگ کی مکھی یا پلیگ کا چوہا ہوں۔' یوں چکر بھی پورا ہوجاتا ہے۔

اِن سب مثالوں کو پڑھکر پڑھنے والے کو عجیب سا لگتا ہوگا۔ یہ ایک بےمعنی' بے تکی اور مذاق کی چیز معلوم ہوتی ہو گی۔ لیکن یہ سارا سنسار چکر اِسی طرح کی بے تکی' ایک دوسرے کو کاٹنے والی' دکھ بھری اور مذاق بھری چیزوں اور اسی طرح کے اَن میل جوڑوں سے بھرا ہوا ہے۔ اس سنسار میں چھوٹے کیڑے بھی ہیں اور بڑے کیڑے بھی ہیں جو اُن چھوٹے کیڑوں کو کھا جاتے ہیں۔ بڑے بڑے درندے ہیں اور اُن سے بھی بڑے بڑے جاندار ہیں جو اُن درندوں کو نگل جاتے ہیں' چالاک مجرم بھی ہیں اور اُن سے زیادہ چالاک جاسوس بھی ہیں' بڑے بڑے مضبوط قلعے بھی ہیں اور اُن سے زیادہ مضبوط بارود اور گولے ہیں جو ایسے سب قلعوں کو چور چور کر دیتے ہیں۔ ہوا میں تیزی سے بم لے جانے والے جہاز بھی ہیں اور اُن کی روک تھام کرنے والے اُن سے زیادہ زبردست سادھن بھی ہیں۔ دنیا کے سب دماغی کام کرنے والوں کے مل کر کام کرنے کے لئے بڑی بڑی انتر راشٹریہ کمیٹیاں بھی بنی ہوئی ہیں اور ہر وچارک یا پروفیسر کی رائے بھی دوسرے کی رائے سے بالکل مختلف ہے ایک طرف دنیا کے سب دھرموں کو ملانے کے لئے سبھائیں اور تھیوسوفیکل سوسائٹی جیسی سنستھائیں ہیں جو دنیا کے سب آدمیوں میں بھائی چارا قائم کرنا چاہتی ہیں اور دوسرے طرف ہر ملک یا راشٹر کے لوگ دوسرے راشٹر والوں کے خلاف 'نفرت کے بھجن' بھی گاتے رہتے ہیں۔ کوئی روحانیت یا آتمواد کا ماننے والا ہے تو کوئی ماٹی وادی یا اناتم وادی ہے۔ کوئی فاسسٹ یا نازی ہے' تو کوئی سوشلسٹ یا کمیونسٹ۔ ایک مہایدھ میں دنیا بھر کے راشٹر کھنچ آتے ہیں اور پھر اُنہیں راشٹروں کو ملانے کے لئے ایک لیگ آف نیشنس بنتی ہے۔ اُس کے بعد اپنے اپنے ہتھیاروں کو بڑھانے کے لئے پہلے سے بھی ادھک تیزی کے ساتھ گھڑ دوڑ ہونے لگتی ہے ہوش اور سمجھ پاگل پن کو قابو میں کرتے ہیں اور پھر پاگل پن سمجھ پر حاوی ہوتا ہے۔ بڑے بڑے سامراجیہ اور بڑی بڑی سبھیتائیں سر اُٹھاتی ہیں اور پھر گر کر جنگلی پن اور اندھیرے یگوں (ڈارک ایجز) میں تبدیل ہو جاتی ہیں' اور پھر دھیرے دھیرے نئی سبھیتائیں بننا شروع ہوتی ہیں۔ پورے پورے مہادیپ ڈوبتے رہتے ہیں اور اُبھرتے رہتے ہیں۔ دھرتی پر بڑے بڑے بھونچال اور پراکرتک آپتیاں آتی رہتی ہیں۔ اس دھرتی سے باہر بڑے بڑے تارے' سیارے' چاند اور سورج پیدا ہوتے رہتے ہیں' مٹتے رہتے ہیں اور پھر پیدا ہوتے رہتے ہیں۔ اِس کا کوئی انت نہیں۔ ہر جگہ انگنت جوڑے دکھائی دیتے ہیں جو ایک دوسرے کو کاٹتے بھی ہیں' ناش بھی کرتے ہیں' اور ایک دوسرے کی کمی کو بھی پورا کرتے ہیں۔ چھوٹے سے چھوٹے اور بڑے سے بڑے دائروں میں ایک دوسرے سے ٹکر بھی

लेते रहते हैं. यह सब मजाक और दुख की चीजें हैं, सब बेतुकी हैं, फरेब हैं, माया हैं. माया का अर्थ ही यह है—जो है भी और नहीं भी !

सारी बुराई की जड़ हमारे अन्दर की 'इच्छा' यानी ख़्वाहिश है, यह नासमझी की चीज़ है, यह बुद्धि के खिलाफ़ है. यह हमारा एक वहम है जो हमें सबसे अधिक नुक़सान पहुँचाता है. यही अविद्या यानी जहालत है, तमस् यानी अंधकार है, अज्ञान है, मोह है, लोभ है और ग़लती है. यह ही हमें परेशान करती है और हमारे अन्दर की तरतीब, हमारे सकून और शान्ति का नाश करती है. इसके खिलाफ़ विद्या, सत्य, ज्ञान यानी जानकारी, प्रकाश यानी रोशनी और ठीक अक़ल, विवेक यानी ठीक-ठीक समझ, ठीक-ठीक निगाह हमारे अन्दर तरतीब, सकून और शान्ति को क़ायम करती है. 'इच्छा' एक विकार यानी बुराई है. यह इच्छा अगर दोस्ती और प्रेम की तरफ़ जाती है तो रचनात्मक यानी तामीरी होती है और अगर दुश्मनी और नफ़रत की तरफ़ जाती है तो बिगाड़ने वाली और नाशकर होती है. पर दोनों सूरत मे इच्छा अन्धी होती हैं. इसके खिलाफ़ समझ और विवेक आँखों का काम देती हैं. उन के जरिये हम चीजों को ठीक-ठीक देख सकते है. विवेक हमे राह दिखाता है, हमें सब चीजों की ठीक-ठीक क़द्रो क़ीमत सिखाता है, हमारे अन्दर समतोल यानी तवाज़ुन पैदा करता है, और हमारे जीवन को ठीक-ठीक चलाता है.

इस तरह के सब विचार जैसे—मैं यह हूँ, या यह हूँ, मैं ज़र्रा हूँ, मैं छोटी घास हूँ या बड़ का दरख़्त हूँ, छोटा जानवर हूँ या विशाल दरिन्दा हूँ, साँप हूँ या राजहंस हूँ, चूहा हूँ या हाथी हूँ, बन्दर हूँ या आदमी हूँ, मैं नमक पसन्द करता हूँ, मैं मीठा पसन्द करता हूँ, मुझे कविता का शौक़ है या चित्रकारी का शौक़ है या इतिहास का शौक़ है या मशीनों का शौक़ है, या सैर सपाटे का शौक़ है—इस तरह के सब विचार वहम् ग़लत और हमारे अन्दर के समतोल को बिगाड़ने वाले हैं. नहीं, मैं केवल यह या यह नहीं हूँ. मुझे सब चीजें पसन्द हैं, बारी-बारी मुझे सब परस्पर विरोधी चीजें पसन्द आती हैं, कोई चीज़ मुझे सदा पसन्द नहीं आती. यह वह सचाई है जो आत्मा के तवाज़ुन को, उसके समतोल को फिर से अपनी जगह पर क़ायम करती है और हमें ख़ुद अपने आपे का ज्ञान कराती है.

इस तरह बराबर चक्कर काटता हुआ, व्यक्त और महदूद अव्यक्त और ला महदूद में लौटकर मिलता रहता है. यही चक्कर न्याय यानी मनतक़ और गणित यानी हिसाब की सारी बुनियाद है.

दुनिया में जितने इल्म जितनी साइंसें हैं उन सबकी

لیتے رہتے ہیں . یہ سب مزاق اور دکھ کی چیزیں ہیں، سب بے تکی ہیں، فریب ہیں . مایا ہیں، مایا کا ارتھ ہی یہ ہے— جو ہے بھی اور نہیں بھی !

ساری برائی کی جڑ ہمارے اندر کی 'اچھا' یعنی خواہش ہے، یہ ناسمجھی کی چیز ہے، یہ بدھی کے خلاف ہے . یہ ہمارا ایک وہم ہے جو ہمیں سب سے ادھک نقصان پہنچاتا ہے . یہی اودیا یعنی جہالت ہے، تمس یعنی اندھکار ہے، اگیان ہے، موہ ہے، لوبھ ہے اور غلطی ہے . یہ ہی ہمیں پریشان کرتی ہے اور ہمارے اندر کی ترتیب، ہمارے سکون اور شانتی کا ناش کرتی ہے . اِس کے خلاف ودیا، ستیہ، گیان یعنی جانکاری، پرکاش یعنی روشنی اور ٹھیک ٹھیک عقل، وویک یعنی ٹھیک ٹھیک سمجھ، ٹھیک ٹھیک نگاہ ہمارے اندر ترتیب، سکون اور شانتی کو قائم کرتی ہیں . 'اچھا' ایک وکار یعنی برائی ہے . یہ اچھا اگر دوستی اور پریم کی طرف جاتی ہے تو رچناتمک یعنی تعمیری ہوتی ہے اور اگر دشمنی اور نفرت کی طرف جاتی ہے تو بگاڑنے والی اور ناشکر ہوتی ہے. پر دونوں صورت میں اچھا اندھی ہوتی ہے . اِس کے خلاف سمجھ اور وویک آنکھوں کا کام دیتے ہیں . اُن کے ذریعہ ہم چیزوں کو ٹھیک ٹھیک دیکھ سکتے ہیں . وویک ہمیں راہ دکھاتا ہے، ہمیں سب چیزوں کی ٹھیک ٹھیک قدر و قیمت سکھاتا ہے، ہمارے اندر سمتول یعنی توازن پیدا کرتا ہے اور ہمارے جیون کو ٹھیک ٹھیک چلاتا ہے .

اِس طرح کے سب وچار جیسے—میں یہ ہوں، یا یہ ہوں میں ذرہ ہوں، میں چھوٹی گھاس ہوں یا بڑ کا درخت ہوں، چھوٹا جانور ہوں یا وشال درندہ ہوں، سانپ ہوں یا راج ہنس ہوں، چوہا ہوں یا ہاتھی ہوں، بندر ہوں یا آدمی ہوں، میں نمک پسند کرتا ہوں، میں میٹھا پسند کرتا ہوں، مجھے کویتا کا شوق ہے یا چترکاری کا شوق ہے یا اِتہاس کا شوق ہے یا سائنس کا شوق ہے یا مشینوں کا شوق ہے، یا سیر سپاٹے کا شوق ہے—اِس طرح کے سب وچار وہم، غلط اور ہمارے اندر کے سمتول کو بگاڑنے والے ہیں . نہیں، میں کیول یہ یا یہ نہیں ہوں . مجھے سب چیزیں پسند ہیں، باری باری مجھے سب پرسپر وِرودھی چیزیں پسند آتی ہیں، کوئی چیز مجھے سدا پسند نہیں آتی . یہ وہ سچائی ہے جو آتما کے توازن کو، اُس کے سمتول کو پھر سے اپنی جگہ پر قائم کرتی ہے اور ہمیں خود اپنے آپے کا گیان کراتی ہے .

اِس طرح برابر چکر کاٹتا ہوا ویکت اور محدود، اویکت اور لامحدود میں لوٹ کر ملتا رہتا ہے . یہی چکر نیائے یعنی منطق اور گنت یعنی حساب کی ساری بنیاد ہے .

دنیا میں جتنے علم، جتنی سائنسیں ہیں اُن سب کی

बुनियादी कल्पनाएँ शुद्ध मानसिक या दार्शनिक हैं इन सबकी जड़ें उसी शुरू की त्रिमूर्ति में हैं,—पुरुष-प्रकृति और शक्ति—पुरुष यानी आत्मा, प्रकृति यानी क़ुदरत यानी जड़ माद्दा, और शक्ति इन दोनों के बीच का नाता हर साइंस के अन्दर जिन्हें हम बुनियादी सचाइयाँ कहते हैं. वह सब इस निगाह से फ़रज़ी हैं जिन्हें हम क़ुदरत के अटल क़ानून समझते हैं वह सब नेति' यानी नफ़ी हैं. प्रकृति का दूसरा नाम माया है, 'या' का अर्थ है 'वह' और 'मा का अर्थ है 'नहीं माया वह जो है और है भी नहीं हर 'या' फ़रज़ी है 'मा' सच है आत्मा वह है जो सब तजरबों का 'अत्ति यानी खा जाता है और फिर 'मा' यानी उनसे इनकार कर देता है

आत्मा शब्द संस्कृत 'अद् से बना है जिसके मानी 'खाना' है संस्कृत अद् और अङ्गरेज़ी (eat) दोनों एक ही शब्द हैं 'आत्मा' शब्द की व्याख्या संस्कृत में यों की जाती है—अत्ति, सततम् अत्ति, अत्येति माइति निवेधति इस तरह आत्मा का अर्थ है—वह जो सबको खाय, सब जगह चक्कर लगाए सबका पार कर जाय, सबको अपने से नापे, सबको विचार का रूप दे और फिर सबको ख़तम कर दे

संस्कृत का एक और मक़ूला है — सर्वम् एतत् त्रिवृत् यानी यह सब दुनिया तीन तीन के जोड़ों में है.

हज़रत ईसा से लगभग तीन हज़ार बरस पहले चीन में फ़ू-ही नाम का एक बहुत बड़ा फ़लसफ़ी हुआ है उसने तीन-तीन के और छै छै के बहुत से इस तरह के जोड़े लिखे हैं, जिनका अर्थ काफ़ी सोच विचार से किया जा सकता है ईसा से चार पाँच सौ बरस पहले चीन में कनफ़्युशियस नाम के मशहूर महात्मा उन तीन तीन और छै छै के जोड़ों की इतनी क़दर करते थे कि उन्होंने इनमें से बहुत सों की व्याख्या की और अन्त में यहाँ तक कहा कि अगर मैं पचास बरस और जी सकता तो यह पचास बरस का पूरा समय फ़ू ही के इन्हीं तीन तीन के जोड़ों की व्याख्या करने में लगा देता लगभग उसी ज़माने में यूनान में पाइथेगोरस (फ़ीसागोरस) नाम का एक मशहूर दार्शनिक और गणितज्ञ हुआ जो गिनती की संख्याओं का ही असल वजूद मानता था विद्वानों की राय है कि पाइथेगोरस और कनफ़्युशियस के विचारों में ग़ज़ब की समानता है

ठीक उसी ज़माने में इस देश में महात्मा बुद्ध दुनिया के लोगों के सच्चे कल्याण के लिये कोशिश कर रहे थे मालूम होता है उन दिनों दुनिया भर में रूहानी साइंस का वैसा ही बोलबाला था जैसा इन दिनों भौतिक यानी माद्दी साइंस का.

इस तरह के सब तीन-तीन के जोड़े उन्हीं तीन हिस्सों में तक़सीम किये जा सकते हैं (1) "मैं" यानी आत्मा

بنیادی کلپنائیں شدھ مانسک یا دارشنک ہیں ۔ ان سب کی جڑیں اسی شروع کی تریمورتی میں ہیں—پروش' پرکرتی اور شکتی'—پروش یعنی آتما' پرکرتی یعنی قدرت یعنی جڑ مادہ' اور شکتی ان دونوں کے بیچ کا ناتا ۔ ہر سائنس کے اندر جنہیں ہم بنیادی سچائیاں کہتے ہیں وہ سب اس نگاہ سے فرضی ہیں ۔ جنہیں ہم قدرت کے اٹل قانون سمجھتے ہیں وہ سب 'نیتی' یعنی نفی ہیں پرکرتی کا دوسرا نام مایا ہے' 'یا' کا ارتھ ہے 'وہ' اور 'ما' کا ارتھ ہے 'نہیں' مایا وہ جو ہے اور ہے بھی نہیں ۔ ہر 'یا' فرضی ہے 'ما' سچ ہے آتما وہ ہے جو سب تجربوں کو 'اتی' یعنی کھا جاتا ہے اور پھر 'ما' یعنی ان سے انکار کر دیتا ہے

آتما شبد سنسکرت 'اد' سے بنا ہے جس کے معنی 'کھانا' ہے سنسکرت اد اور انگریزی ایٹ' (eat) دونوں ایک ہی شبد ہیں آتما شبد کی ویاکھیا سنسکرت میں یوں کی جاتی ہے—'اتی' ستتم اتی اتییتی' ما اتی نسیدھتی' اس طرح آتما کا ارتھ ہے—وہ جو سب کو کھا جائے' سب جگہ چکر لگائے سب کو پار کر جائے' سب کو اپنے سے ناپے' سب کو وچار کا روپ دے اور پھر سب کو ختم کر دے

سنسکرت کا ایک اور مقولہ ہے — سروم ایتت تریورت یعنی یہ سب دنیا تین تین کے جوڑوں میں ہے

حضرت عیسیٰ سے لگ بھگ تین ہزار برس پہلے چین میں فوہی نام کا ایک بڑا فلسفی ہوا ہے اس نے تین تین کے اور چھ چھ کے بہت سے اس طرح کے جوڑے لکھے ہیں جن کا ارتھ کافی سوچ وچار سے کیا جا سکتا ہے عیسیٰ سے چار پانچ سو برس پہلے چین میں کنفیوشس نام کے مشہور مہاتما ان تین تین اور چھ چھ کے جوڑوں کی اتنی قدر کرتے تھے کہ انہوں نے ان میں سے بہت سوں کی ویاکھیا کی اور انت میں یہاں تک کہا کہ اگر میں پچاس برس اور جی سکتا تو یہ پچاس برس کا پورا سمے فوہی کے انہیں تین تین کے جوڑوں کی ویاکھیا کرنے میں لگا دیتا لگ بھگ اسی زمانے میں یونان میں پائیتھاگورس (فیثاغورث) نام کا ایک مشہور دارشنک اور گنیتگیہ ہوا ہے جو گنتی کی سنکھیاؤں کو ہی اصل وجود مانتا تھا ودوانوں کی رائے ہے کہ پائیتھاگورس اور کنفیوشس کے وچاروں میں غضب کی سمانتا ہے

ٹھیک اسی زمانے میں اس دیش میں مہاتما بدھ دنیا کے لوگوں کے سچے کلیان کے لئے کوشش کر رہے تھے معلوم ہوتا ہے ان دنوں دنیا بھر میں روحانی سائنس کا ویسا ہی بول بالا تھا جیسا ان دنوں بھوتک یعنی مادی سائنس کا

اس طرح کے سب تین تین کے جوڑے انہیں تین حصوں میں تقسیم کئے جا سکتے ہیں :(1) "میں" یعنی آتما'

पुरुष, रूह या आपा जो असल वजूद है. (2) "पौर-मैं" यानी अन-आत्मा, मूल प्रकृति, माद्दा जिसका वजूद ही धोखा यानी, फ़रेब है. और (3) इन दोनों का नाता, शक्ति, दैवी प्रकृति, ताक़त, यह लामहदूद दिखाई देते हुए भी महदूद है, और पहले दोनों को जोड़े हुए है इन तीनों की जानकारी के नाम हैं—अध्यात्म विद्या, अधिभूत विद्या और अधिदैव विद्या, यानी फ़लसफ़ा, माद्दी साइंस और इन दोनों का सम्बन्ध.

ज़ाहिर है लामहदूद की साइंस में जो साइंस भी है और फ़लसफ़ा भी है और सब आजाता है, जबकि इस महदूद वजूद की साइंसों में और यहाँ के फ़लसफ़े में ला महदूद की साइन्स या उसका फ़लसफ़ा नहीं आता.

सारी फ़िलासफ़ी दो हिस्सों में बट सकती है. एक वह जिसका सम्बन्ध उस वजूद से है जिसमें कभी कोई तबदीली नहीं होती, और दूसरे वह जिसका सम्बन्ध उन चीज़ों से है जो बराबर बदलती रहती हैं, दुनिया की सब सभ्यताएँ और उनकी अच्छाई बुराई इसी दूसरी श्रेणी मे आती हैं इसकी चर्चा मैंने अपनी पुस्तक 'एन्शियन्ट सोल्युशन्स आफ़ माडर्न प्राबलेम्स" मे की है.

پروش' روح یا آپا جو اصل وجود ہے. (2) "پرمیں" یعنی انآتما' مول پرکرتی' مادہ جس کا وجود ہی دھوکا یعنی فریب ہے . اور (3) ان دونوں کا ناتا' شکتی' دیوی پرکرتی' طاقت یہ لامحدود دکھائی دیتے ہوئے بھی محدود ہے اور پہلے دونوں کو جوڑے ہوئے ہے ان تینوں کی جانکاری کے نام ہیں—ادھیاتم ودیا' آدھی بھوت ودیا اور آدھی دیو ودیا' یعنی فلسفہ' مادی سائنس اور ان دونوں کا سمبندھ .

ظاہر ہے لامحدود کی سائنس میں جو سائنس بھی ہے اور فلسفہ بھی ہے اور سب آجاتا ہے' جبکہ اس محدود کی سائنسوں میں اور یہاں کے فلسفہ میں لامحدود کی سائنس یا اس کا فلسفہ نہیں آتا

ساری فلسفی دو حصوں میں بٹ سکتی ہے . ایک وہ جس کا سمبندھ اس وجود سے ہے جس میں کبھی کوئی تبدیلی نہیں ہوتی' اور دوسرے وہ جس کا سمبندھ ان چیزوں سے ہے جو برابر بدلتی رہتی ہیں . دنیا کی سب سبھیتائیں اور ان کی اچھائی اور برائی اسی دوسری شرینی میں آتی ہیں . اس کی چرچا میں نے اپنی پستک "اینشینٹ سولوشنس آف ماڈرن پرابلمس" میں کی ہے

मुहम्मद साहब का ईसाइयों के साथ व्यवहार

[सिनाई पहाड़ के ईसाइयों के नाम खास तौर पर और दुनिया के ईसाइयों के नाम आम तौर पर मुहम्मद साहब के एक अहदनामे का ज़िक्र तारीख़ में आता है. पंडित सुन्दर लाल ने भी अपनी पुस्तक "हज़रत मुहम्मद और इसलाम' में इस अहदनामे की चर्चा की है. सिनाई पहाड़ आजकल मिस्र के राज मे है. उसे 'तूर' या 'कोहतूर' भी कहते हैं. मुहम्मद साहब के इस अहदनामे के मुताबिक़ सिनाई पहाड़ के ईसाई पादरियो और उनके गिरजों को इस सदी तक अनेक रियायतें मिली हुई थीं. उनकी ज़मीनों और जागीरों से किसी तरह का लगान या टैक्स नहीं लिया जाता था. उनके माल पर चुन्गी नहीं लगती थी, वग़ैरा. हाल में मिस्री सरकार ने अंग्रेज़ों को देश से निकालने के साथ-साथ यह सब रियायतें ख़त्म कर दीं इस पर सिनाई पहाड़ के बड़े पादरी ने प्रार्थना-पत्र के ज़रिये मिस्री सरकार से दरख़ास्त की कि उनके यह अधिकार जो साढ़े तेरह सौ बरस से चले आ रहे हैं बहाल रखे जावें. प्रार्थना-पत्र में मुहम्मद साहब के इस पुराने अहदनामे का हवाला दिया गया है और लिखा है कि अहदनामे की असल अरबी कापी सिनाई के गिरजे में अभी तक सुरक्षित है. असल अहदनामे का पूरा अंग्रेज़ी तरजुमा लाहौर के अंग्रेज़ी अख़बार "दि लाइट" में छपा है. यह अहदनामा बहुत बड़े ऐतिहासिक महत्व की चीज़ है. इसलिये "दि लाइट" से हिन्दुस्तानी मे अनुवाद करके हम उसे नीचे दे रहे हैं. हमे यह भी याद रखना चाहिये कि सिनाई पहाड़ के सब ईसाई उन दिनो बुत-परस्त थे, उनके गिरजे ईसा, मरियम और ईसाई सन्तों के बुतों से भरे रहते थे, और वही सूरत अब तक है उनके पादरियों में मुल्की और ग़ैर मुल्की दोनो शामिल हैं—सम्पादक.]

❋ ❋ ❋

अहदनामा

"सारी दुनिया के ईसाइयों के नाम ऐलान. उन सबको) अमान. उनकी जान और माल की हिफ़ाज़त. इस अहद (प्रतिज्ञा का ऐलान मैं अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ कर रहा हूँ.

"ईसाई लोग जहाँ भी रह रहे हैं अल्लाह की मरज़ी से रह रहे हैं. अल्लाह की मरज़ी के ख़िलाफ़ कुछ नहीं हो सकता. अगर वे ईसाई हैं तो इसीलिये क्योंकि अल्लाह की यही मरज़ी है. अल्लाह ही ने हमारे दिलों में उनके लिये जगह बनाई है.

محمد صاحب کا عیسائیوں کے ساتھ ویوہار

[سنائی پہاڑ کے عیسائیوں کے نام خاص طور پر اور دنیا کے عیسائیوں کے نام عام طور پر محمد صاحب کے ایک عہدنامہ کا ذکر تاریخ میں آتا ہے ۔ پنڈت سندر لال نے بھی اپنی پستک "حضرت محمد اور اسلام" میں اس عہدنامہ کی چرچا کی ہے ۔ سنائی پہاڑ آجکل مصر کے راج میں ہے ۔ اسے 'طور' یا 'کوہ طور' بھی کہتے ہیں ۔ محمد صاحب کے اس عہدنامہ کے مطابق سنائی پہاڑ کے عیسائی پادریوں اور اُن کے گرجوں کو اس صدی تک انیک رعایتیں ملی ہوئی تھیں ۔ اُن کی زمینوں اور جاگیروں سے کسی طرح کا لگان یا ٹیکس نہیں لیا جاتا تھا ۔ اُن کے مال پر چنگی نہیں لگتی تھی، وغیرہ ۔ حال میں مصری سرکار نے انگریزوں کو دیش سے نکالنے کے ساتھ ساتھ یہ سب رعایتیں ختم کر دیں ۔ اس پر سنائی پہاڑ کے بڑے پادری نے ایک پرارتھنا پتر کے ذریعہ مصری سرکار سے درخواست کی کہ اُن کے یہ ادھیکار جو ساڑھے تیرہ سو برس سے چلے آرہے ہیں بحال رکھے جاویں ۔ پرارتھنا پتر میں محمد صاحب کے اس پرانے عہدنامہ کا حوالہ دیا گیا ہے اور لکھا ہے کہ عہدنامہ کی اصلی عربی کاپی سنائی کے گرجے میں ابھی تک سرکشت ہے ۔ اصل عہدنامہ کا پورا انگریزی ترجمہ لاہور کے انگریزی اخبار "دی لائٹ" میں چھپا ہے ۔ یہ عہدنامہ بہت بڑے اتہاسک مہتو کی چیز ہے ۔ اس لئے "دی لائٹ" سے ہندستانی میں انواد کر کے ہم اسے نیچے دے رہے ہیں ۔ ہمیں یہ بھی یاد رکھنا چاہئے کہ سنائی پہاڑ کے سب عیسائی اُن دنوں بت پرست تھے، اُن کے گرجے عیسیٰ، مریم اور عیسائی سنتوں کے بتوں سے بھرے رہتے تھے اور وہی صورت اب تک ہے ۔ اُن کے پادریوں میں ملکی اور غیر ملکی دونوں شامل ہیں —سمپادک ۔]

❋ ❋ ❋

عہدنامہ

"ساری دنیا کے عیسائیوں کے نام اعلان ۔ اُن سب کو امان ۔ اُن کی جان اور مال کی حفاظت ۔ اس عہد (پرتگیا) کا اعلان میں اللہ کے حکم کے مطابق کر رہا ہوں ۔

"عیسائی لوگ جہاں بھی رہ رہے ہیں اللہ کی مرضی سے رہ رہے ہیں ۔ اللہ کی مرضی کے خلاف کچھ نہیں ہو سکتا ۔ اگر وے عیسائی ہیں تو اسی لئے کیونکہ اللہ کی یہی مرضی ہے ۔ اللہ ہی نے ہمارے دلوں میں اُن کے لئے جگہ بنائی ہے ۔

"इस ऐलान में मैंने बताया है कि अल्लाह अपने दीन के मानने वाले हाकिमों को उसके हुक्म के मुताबिक़ अमल करने की किस तरह हिदायत करता है.

"ऊँचे से ऊँचे हाकिमों को चाहिये कि उन सब लोगों की हिफ़ाज़त करें जिन्होंने ईसाई मज़हब और उसके उसूल अपना रखे हैं, चाहे वह इस ज़मीन के दक्खिन से लेकर उत्तर तक, यहाँ या दूर दूर के मुल्कों में, कहीं भी रहते हों, चाहे उन्होंने अरब रहन-सहन अख़तियार कर लिया हो या पच्छिमी रहन सहन क़ायम रखा हो, और चाहे उन्हें कोई जानता हो या न जानता हो. जो लोग भी उनके ऊपर बतौर हाकिम मुक़र्रर किये जावें उन हाकिमों का फ़र्ज़ है कि उनके साथ इज़्ज़त का व्यवहार करें

"जिस किसी को जनता की सेवा सपुर्द की जावे उसका फ़र्ज़ है कि इस ऐलान के अमल दरामद में पूरी-पूरी मदद दे.

"इस अहदनामे के ख़िलाफ़ अमल करना अल्लाह की नाफ़रमानी करना होगा. इस पर ध्यान न देना गुनाह होगा यह अहद अल्लाह के सामने किया जा रहा है इसलिये इस पर बिलकुल सचाई से अमल होना चाहिये अल्लाह की दी हुई हिदायत का न मानना क़यामत के दिन अल्लाह की लानत का शिकार बनना है फिर जो शख़्स इसके ख़िलाफ़ अमल करे वह चाहे मुसलमान बादशाह हो और चाहे एक मामूली ग़रीब आदमी हो

'यह अहदनामा उन सब लोगों की तरफ़ से है जो मेरे दीन पर चलते हैं और जिनके लिये मैं ज़िम्मेदार हूँ. मेरे बताए उसूलों पर चलते हुए और दीन के सब फ़र्ज़ों को अदा करते हुए सब मोमिनों और सब मुसलिमों का फ़र्ज़ है कि इस अहद को पूरा करें जिसका अल्लाह ने सब मख़लूक़ से वादा किया है

'अपने आदमियों, अपने सवारों, अपने हथियारों अपनी ताक़त और अपने साथ के सब मुसलमानों की मदद से, दूर और नज़दीक हर जगह, मैं उन लोगों की ज़मीनों, उनके गिरजाघरों, उनकी पाक किताबों और उन पादरियों के मकानों सबकी हिफ़ाज़त करूँगा

"ईसाई लोग चाहे पहाड़ों में रहते हों और चाहे दरिया के किनारे, चाहे उन्होंने पहाड़ों की चट्टानों को खोदकर अपने मकान बना लिये हों और चाहे वे आम जगह में रहते हों या चाहे मठ के अन्दर रहते हों, वे चाहे सफ़र में हों या किसी आबादी में, हर हालत में मैं उनकी उसी तरह हिफ़ाज़त करूँगा जिस तरह मैं अपनी हिफ़ाज़त करता हूँ, या जिस तरह मैं मुसलमानों या अपने लोगों की हिफ़ाज़त करता हूँ. इनसाफ़ के साथ मैं सबको अमन और मदद दूँगा.

"اس اعلان میں میں نے بتایا ھے کہ اللہ اپنے دین کے ماننے والے حاکموں کو اُس کے حکم کے مطابق عمل کرنے کی کس طرح ھدایت کرتا ھے

"اونچے سے اونچے حاکموں کو چاھئے کہ اُن سب لوگوں کی حفاظت کریں جنھوں نے عیسائی مذھب اور اُس کے اُصول اپنا رکھے ھیں، چاھے وہ اس زمین کے دکھن سے لیکر اتر تک، یہاں یا دور دور کے ملکوں میں، کہیں بھی رھتے ھوں، چاھے اُنھوں نے عرب رھن سہن اختیار کر لیا ھو یا پچھمی رھن سہن قائم رکھا ھو، اور چاھے اُنھیں کوئی جانتا ھو یا نہ جانتا ھو جو لوگ بھی اُن کے اوپر بطور حاکم مقرر کئے جاویں اُن حاکموں کا فرض ھے کہ اُن کے ساتھ عزت کا ویوھار کریں

'جس کسی کو جنتا کی سیوا سپرد کی جاوے اُس کا فرض ھے کہ اس اعلان کے عمل درآمد میں پوری پوری مدد دے

'اس عہد نامہ کے خلاف عمل کرنا اللہ کی نافرمانی کرنا ھوگا. اس پر دھیان نہ دینا گناہ ھوگا. یہ عہد اللہ کے سامنے کیا جا رھا ھے اس لئے اس پر بالکل سچائی سے عمل ھونا چاھئے. اللہ کی دی ھوئی ھدایت کو نہ ماننا قیامت کے دن اللہ کی لعنت کا شکار بننا ھے، جو شخص اس کے خلاف عمل کرے وہ چاھے مسلمان بادشاہ ھو اور چاھے ایک معمولی غریب آدمی ھو

"یہ عہدنامہ اُن سب لوگوں کی طرف سے ھے جو میرے دین پر چلتے ھیں اور جن کے لئے میں ذمہ وار ھوں میرے بتائے اُصولوں پر چلتے ھوئے اور دین کے سب فرضوں کو ادا کرتے ھوئے سب مومنوں اور سب مسلموں کا فرض ھے کہ اس عہد کو پورا کریں جس کا اللہ نے سب مخلوق سے وعدہ کیا ھے

'اپنے آدمیوں، اپنے سواروں، اپنے ھتھیاروں، اپنی طاقت اور اپنے ساتھ کے سب مسلمانوں کی مدد سے، دور اور نزدیک ھر جگہ میں اُن لوگوں کی زمینوں، اُن کے گرجا گھروں، اُن کی پاک کتابوں اور اُن کے پادریوں کے مکانوں سب کی حفاظت کرونگا.

"عیسائی لوگ چاھے پہاڑوں میں رھتے ھوں اور چاھے دریا کے کنارے، چاھے اُنھوں نے پہاڑوں کی چٹانوں کو کھود کر اپنے مکان بنا لئے ھوں اور چاھے وے عام جگہ میں رھتے ھوں، یا چاھے مٹھ کے اندر رھتے ھوں، وے چاھے سفر میں ھوں یا کسی آبادی میں، ھر حالت میں میں اُن کی اُسی طرح حفاظت کرونگا جس طرح میں اپنی حفاظت کرتا ھوں، یا جس طرح میں مسلمانوں یا اپنے لوگوں کی حفاظت کرتا ھوں. انصاف کے ساتھ میں سب کو امن اور مدد دونگا.

"किसी वक्त और किसी जगह भी जब कभी उनको कोई खतरा होगा मैं उसका मुक़ाबला करूंगा.

"मेरा फ़र्ज़ है कि बिना उनके जाने उनकी हिफ़ाज़त करूं ऐसा करने में मैं अपने अहद को पूरा करने और अपनी आन को निबाहने की मिसाल क़ायम करूंगा क्योंकि मैं अपनी और आने वाले मुसलमानों की जानों को इस मामले में ज़ामिन ठहराता हूँ मेरा यह अहद टूटना नहीं चाहिये. कोई बुराई उन पर आने से पहले मुझ पर और मेरे मज़हब के लोगों पर आनी चाहिये

"जब कोई ईसाई बिशप अपने ओहदे का फ़र्ज़ अदा कर रहा हो, या जब कोई पादरी गिरजा मे हो या कोई ईसाई अपने मज़हब की रसमें अदा कर रहा हो, या उनका कोई आबिद अपनी कोठरी में हो, या कोई राहिब (तपस्वी) अपने तप में मशग़ूल हो, कोई शख्स उनकी तौहीन न करे किसी ईसाई गिरजे के पत्थर को या वहाँ की किसी चीज़ को किसी मसजिद या किसी मुसलमान के घर की तामीर के लिये कोई उसकी जगह से न हटावे

'जो कोई इसके खिलाफ़ अमल करेगा वह 'अल्लाह के अहद' का तोड़ेगा, वह हमारी इस तहरीर के खिलाफ़ जायगा और वह हममे से अपने को अलग कर लेगा

'ईसाइयों की हिफ़ाज़त के लिये लड़ना हमारा फ़र्ज़ है लेकिन उस लड़ाई मे हिस्सा लेने के लिये ईसाइयो का मजबूर नहीं किया जा सकता कोई ईसाइयो को इस बात के लिये भी मजबूर न करे कि वे मुसलमानो का ऐसी लड़ाई के लिये हथियार वग़ैरा दें यह मामला बिलकुल ईसाइयो की मरज़ी पर है और उन्हीं पर छोड़ देना चाहिये

'ईसाई क़ौम पर किसी तरह का ज़ुल्म नहीं होना चाहिये, न उन्हें इसलाम क़बूल करने पर मजबूर करना चाहिये और न किसी का ज़बरदस्ती उनसे कोई बात मनवाने की कोशिश करनी चाहिये

'अगर कोई ईसाई किसी मुसलमान से मदद की दरख़ास्त करे ता मुसलमान को उसकी मदद करना चाहिये नरमी और हमदर्दी से उसके साथ सलूक करना चाहिये और अपनी नेक सलाह से उसे ख़तरे से बचाना चाहिये

"मैं इस बात का ज़ामिन हूँ कि ईसाइयों को हर क़िस्म की आफ़त से बचाया जावेगा

"अगर ईसाइयों का अपने गिरजाघरो या घण्टाघरों को फिर से तामीर करने की ज़रूरत हो तो मुसलमानो का फ़र्ज़ है कि मेरे इस अहद का पास रखते हुए उनके इरादों या उनके मज़हब में किसी तरह की रुकावट न डाले

"इस अहदनामे से अपने को अलग समझने या इसके असर को कम करने का किसी मुसलमान को हक़ नहीं है ईसाइयों को भी अपनी शर्तें पूरी करनी चाहियें ताकि इस अहदनामे का उसूल क़ायम रहे.

"کسی وقت اور کسی جگہ بھی جب کبھی اُن کو کوئی خطرہ ہوگا میں اُس کا مقابلہ کرونگا۔

"میرا فرض ہے کہ بنا اُن کے جانے اُن کی حفاظت کروں۔ ایسا کرنے میں میں اپنے عہد کو پورا کرنے اور اپنی آن کو نباہنے کی مثال قائم کرونگا کیونکہ میں اپنی اور آنے والے مسلمانوں کی جانوں کو اِس معاملے میں ضامن ٹھہراتا ہوں۔ میرا یہ عہد ٹوٹنا نہیں چاہئے۔ کوئی برائی اُن پر آنے سے پہلے مجھ پر اور میرے مذہب کے لوگوں پر آنی چاہئے

"جب کوئی عیسائی بشپ اپنے عہدے کا فرض ادا کر رہا ہو یا جب کوئی پادری گرجا میں ہو' یا کوئی عیسائی اپنے مذہب کی رسمیں ادا کر رہا ہو' یا اُن کا کوئی عابد اپنی کوٹھری میں ہو' یا کوئی راہب (تپسوی) اپنے تپ میں مشغول ہو' کوئی شخص اُن کی توہین نہ کرے کسی عیسائی گرجا کے پتھر کو یا وہاں کی کسی چیز کو کسی مسجد یا کسی مسلمان کے گھر کی تعمیر کے لئے کوئی اُس کی جگہ سے نہ ہٹاوے۔

"جو کوئی اس کے خلاف عمل کریگا وہ 'اللہ کے عہد' کو توڑیگا' وہ ہماری اس تحریر کے خلاف جائیگا اور وہ ہم میں سے اپنے کو الگ کر لیگا

"عیسائیوں کی حفاظت کے لئے لڑنا ہمارا فرض ہے' لیکن اُس لڑائی میں حصہ لینے کے لئے عیسائیوں کو مجبور نہیں کیا جا سکتا۔ کوئی عیسائیوں کو اس بات کے لئے بھی مجبور نہ کرے کہ وہ مسلمانوں کو ایسی لڑائی کے لئے ہتھیار وغیرہ دیں یہ معاملہ بالکل عیسائیوں کی مرضی پر ہے اور اُنہیں پر چھوڑ دینا چاہئے۔

"عیسائی قوم پر کسی طرح کا ظلم نہیں ہونا چاہئے' نہ اُنہیں اسلام قبول کرنے پر مجبور کرنا چاہئے اور نہ کسی کو زبردستی اُن سے کوئی بات منوانے کی کوشش کرنی چاہئے۔

"اگر کوئی عیسائی کسی مسلمان سے مدد کی درخواست کرے تو مسلمان کو اُس کی مدد کرنی چاہئے' نرمی اور ہمدردی سے اُس کے ساتھ سلوک کرنا چاہئے اور اپنی نیک صلاح سے اُسے خطرے سے بچانا چاہئے

"میں اس بات کا ضامن ہوں کہ عیسائیوں کو ہر قسم کی آفت سے بچایا جاویگا

'اگر عیسائیوں کو اپنے گرجا گھروں یا گھنٹہ گھروں کو پھر سے تعمیر کرنے کی ضرورت ہو تو مسلمانوں کا فرض ہے کہ میرے اس عہد کا پاس رکھتے ہوئے اُن کے ارادوں یا اُن کے مذہب میں کسی طرح کی رکاوٹ نہ ڈالیں۔

'اِس عہدنامہ سے اپنے کو الگ سمجھنے یا اس کے اثر کو کم کرنے کا کسی مسلمان کو حق نہیں ہے عیسائیوں کو بھی اپنی شرطیں پوری کرنی چاہئیں تاکہ اس عہدنامہ کا اصول قائم رہے۔

"अगर कोई शख्स खुले या छिपे मुसलमानों के खिलाफ जंग की तजवीज करे तो किसी ईसाई को उस शख्स की मदद नहीं करनी चाहिये. ईसाइयों को चाहिये कि मुसलमानों के किसी दुश्मन को अपने घरों में पनाह न दें और न किसी को मुसलमानों से लड़ने के लिये जंग का सामान जैसे घोड़े, धन या आदमी दें

"हर ईसाई का यह अपनी तरफ से फर्ज है कि वह मुस्लिम मुसाफिरों या जंग से बचकर आए हुए मुसलिम पनाहगुजीनों को पनाह दे, और उनकी हिफाजत करे हर ईसाई को चाहिये कि मुसलमानों पर जो जिम्मेदारियाँ हैं उनमें जरूरत पड़ने पर थोड़ी देर के लिये हाथ बटावे

"अगर वह लोग इन शरतों से बगैर हटे इन पर अमल करते रहेंगे तो वे हिफाजत और अमन से रह सकते हैं और शान्ति के साथ अपने मजहब पर चल सकते हैं.

'मैंने यह अहदनामा ईसाई पादरियों के हाथ में दे दिया है ताकि उन्हें मेरी तरफ से अमन आमान का भरोसा हो जावे और मैं ऊपर के उसूलों के मुताबिक क़यामत के दिन तक और दुनिया के खातमे तक हर जगह अपने आप को इसके अमल दरामद के लिये जिम्मेदार ठहराता हूँ.

"मैं यह अहदनामा तीस दीनदार गवाहों के दस्तखत के साथ जारी करता हूँ

"दस्तखत —अबूबक्र, उमर इब्नउलखत्ताब, उसमान, अली इब्न अबूतालिब, अबूजर, अबू दरदा, अबू हुरैरा, अब्दुल्ला इब्न मसूद, अब्दुल्ला इब्न अब्बास, अब्बास अल मुहैरी, साद इब्न मुआज, तलहा इब्न अब्दुल्ला, फजल इब्न उमर, बशीर इब्न क़ैस, जैद इब्न क़ालिब, सैद इब्न उबादह, अब्दुल्ला इब्न मरियम, मारूस इब्न हसन मरियम बिन्त इबराहीम, अमामा इब्न मारिर, सहेल इब्न उमर, अब्दुल अजीम इब्न हसन, अब्दुल्ला इब्न अब्दुल अहद, उसमान इब्न तुमैल, ऐद इब्न मंसूर, मुअज्जम इब्न मूसा, हसन इब्न साबित, अबू हैफ़ह, हाशिम इब्न अब्दुल्लाह, अबुलक़ादिर.

"पैग़म्बर की मुहर और उनके दसखत के साथ.

"तारीख तीन मुहर्रम सन् दो हिजरी"

बक़लम अली इब्न अबीतालिब.

"اگر کوئی شخص کھلے یا چھپے مسلمانوں کے خلاف جنگ کی تجویز کرے تو کسی عیسائی کو اُس شخص کی مدد نہیں کرنی چاہئے عیسائیوں کو چاہئے کہ مسلمانوں کے کسی دشمن کو اپنے گھروں میں پناہ نہ دیں اور نہ کسی کو مسلمانوں سے لڑنے کے لئے جنگ کا سامان جیسے گھوڑے، دھن یا آدمی دیں ۔

"ہر عیسائی کا یہ اپنی طرف سے فرض ہے کہ وہ مسلم مسافروں یا جنگ سے بچ کر آئے ہوئے مسلم پناہ گزینوں کو پناہ دے اور اُن کی حفاظت کرے ۔ ہر عیسائی کو چاہئے کہ مسلمانوں پر جو ذمہ داریاں ہیں اُن میں ضرورت پڑنے پر تھوڑی دیر کے لئے ہاتھ بٹائے ۔

"اگر وہ لوگ ان شرطوں سے بغیر ہٹے ان پر عمل کرتے رہیں گے، تو وہ حفاظت اور امن سے رہ سکتے ہیں اور شانتی کے ساتھ اپنے مذہب پر چل سکتے ہیں

"میں نے یہ عہدنامہ عیسائی پادریوں کے ہاتھ میں دے دیا ہے تاکہ اُنھیں میری طرف سے امن امان کا بھروسہ ہو جائے اور میں اُوپر کے اُصولوں کے مطابق قیامت کے دن تک اور دنیا کے خاتمہ تک ہر جگہ اپنے آپ کو اس کے عمل درآمد کے لئے ذمہ دار ٹھہراتا ہوں ۔

"میں یہ عہدنامہ تیس دیندار گواہوں کے دستخط کے ساتھ جاری کرتا ہوں

"دستخط —ابوبکر، عمر ابن خطاب، عثمان علی ابن ابو طالب، ابوذر، ابودردہ، ابو ہریرہ، عبداللہ ابن مسعود، عبداللہ ابن عباس عباس الوھیری، سعد ابن معاذ، طلحہ ابن عبداللہ، فضل ابن عمر، بشیر ابن قیس، زید ابن قالب، سعد ابن عبادہ، عبداللہ ابن مریم، معروس ابن حسن، مریم بنت ابراھیم، عمامہ ابن مارر، سہیل ابن عمر، عبدالعظیم ابن حسن، عبداللہ بن عبد الاحد، عثمان ابن تمیل، عید ابن منصور معظم ابن موسیٰ، حسن ابن ثابت، ابو حیفہ، ہاشم ابن عبداللہ ابوالقادر

'پیغمبر کی مہر اور اُن کے دستخط کے ساتھ ۔

"تاریخ تین محرم سن دو ہجری"

بقلم علی ابن ابی طالب ۔

मुहम्मद साहब की कुछ हदीसें

डाक्टर मिरज़ा अबुल फ़ज़ल

मैंने पैग़म्बर को यह कहते सुना कि—"अगर खाना सामने आ जाए तो उस वक़्त नमाज़ की इजाज़त नहीं है, और न उस वक़्त नमाज़ की इजाज़त है जब आदमी को पाख़ाना या पेशाब की हाजत हो."

—अब्दुल्ला बिन मुहम्मद बिन अबूबक्र ने आयशा से सुना, मुसलिमः अबूदाऊद.

मुहम्मद साहब ने कहा कि:—"अगर तुम में से किसी को नमाज़ पढ़ते वक़्त नींद आने लगे, तो उसे चाहिये कि जाकर सो जाय ताकि उसकी नींद पूरी हो जाय."

—आयशा, बुख़ारी: मुसलिमः अबूदाऊद: तिरमिज़ी: नसाईः मालिक.

मेरे बाप कहते थे कि रसूले ख़ुदा ने उन्हें दीन की तालीम दी और उस सिलसिले में उन्हें पाँच वक़्त नमाज़ पढ़ना बताया. इस पर मेरे बाप ने रसूल से कहा—'इन वक़्तों में मुझे बहुत देर देर तक काम रहता है, इसलिये मुझे कोई ऐसी बात करने के लिये बताइये जिसे मैं कर लूँ तो मेरा सब फ़र्ज़ पूरा हो जाय." रसूल ने जवाब दिया,—"दो वक़्त नमाज़ पढ़ लिया करो." मेरा बाप इसे ठीक तरह नहीं समझा, उसने फिर पूछा—"कौन से दो वक़्त?" रसूल ने जवाब दिया—'एक सूरज निकलने से पहले और एक सूरज डूबने से पहले."

—अब्दुल्ला बिन फ़ज़ालेह, अबूदाऊद.

'मैंने रसूल को चित लेटे हुए नमाज़ पढ़ते देखा."

—आयशा, नसाई.

"रसूले ख़ुदा ज़ैनब की लड़की यानी अपनी नवासी उमामह को गोद में लिये लिये नमाज़ पढ़ लेते थे."

—अबू क़तादह, बुख़ारी: मुसलिम: अबूदाऊद: नसाई: मालिक.

محمد صاحب کی کچھ حدیثیں

ڈاکٹر مرزا ابوالفضل

میں نے پیغمبر کو یہ کہتے سنا کہ—"اگر کھانا سامنے آجائے تو اس وقت نماز کی اجازت نہیں ہے، اور نہ اس وقت نماز کی اجازت ہے جب آدمی کو پاخانہ یا پیشاب کی حاجت ہو."

—عبداللہ بن محمد بن ابوبکر نے عائشہ سے سنا، مسلم: ابوداؤد.

محمد صاحب نے کہا کہ:—"اگر تم میں سے کسی کو نماز پڑھتے وقت نیند آنے لگے، تو اسے چاہئے کہ جاکر سو جائے تاکہ اس کی نیند پوری ہو جائے."

عائشہ، بخاری: مسلم: ابوداؤد: ترمذی: نسائی: مالک.

میرے باپ کہتے تھے کہ رسول خدا نے انہیں دین کی تعلیم دی اور اس سلسلہ میں انہیں پانچ وقت نماز پڑھنا بتایا. اس پر میرے باپ نے رسول سے کہا:—"ان وقتوں میں مجھے بہت دیر دیر تک کام رہتا ہے، اس لئے مجھے کوئی ایسی بات کرنے کے لئے بتائیے جسے میں کرلوں تو میرا سب فرض پورا ہو جائے." رسول نے جواب دیا:—"دو وقت نماز پڑھ لیا کرو." میرا باپ اسے ٹھیک طرح نہیں سمجھا، اس نے پھر پوچھا:—"کون سے دو وقت؟" رسول نے جواب دیا—"ایک سورج نکلنے سے پہلے اور ایک سورج ڈوبنے سے پہلے."

—عبداللہ بن فضالہ، ابوداؤد.

"میں نے رسول کو چت لیٹے ہوئے نماز پڑھتے دیکھا."

—عائشہ، نسائی.

"رسول خدا زینب کی لڑکی یعنی اپنی نواسی امامہ کو گود میں لئے لئے نماز پڑھ لیتے تھے."

—ابوقتادہ، بخاری: مسلم: ابوداؤد: نسائی: مالک.

मुहम्मद साहब की कुछ हदीसें

"रसूले ख़ुदा हमारे घर हम लोगों से मिलने आए. हमारे यहाँ एक कुतिया थी और एक गधी थी. रसूल ने हमारे यहाँ अस्र की नमाज़ पढ़ी. उस वक़्त कुतिया और गधी दोनों ठीक उनके सामने बैठी थीं"

—फ़ज़्ल बिन अब्बास, अबूदाऊद: नसाई.

—

मुहम्मद साहब इन लफ़्ज़ों मे दुआ माँगा करते थे :— "ऐ अल्लाह ! मेरे दिल को पाक कर, उसमें किसी तरह का छल कपट न रहे, मेरे आमाल (कामो) को पाक कर, उन में किसी तरह की बनावट न रहे, मेरी ज़बान को पाक कर, वह कभी झूठ न बोले, और मेरी आँखों को पाक कर, वह किसी को धोखा न दें, सचमुच तू धोखा देने वाली आँखो को जानता है और लागो के दिलो के अन्दर जा कुछ छिपा हाता है उस सबको भी तू जानता है."

—उम्मी माबद, बेहक़ी

मुहम्मद साहब जब नमाज़ के लिये खड़े हाते थे तो कहा करते थे —"मैं एक हनीफ़ (सत्य के खाजी) की तरह अल्लाह के सामने खड़ा होता हूँ जिसने ज़मीन और आसमानो को बनाया है. मैं उन लोगों मे से नहीं हूँ जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे को शरीक करते हैं सचमुच मेरी नमाज़, मेरी इबादत, मेरी ज़िन्दगी और मेरी मौत सब अल्लाह के लिये हैं वह सारी दुनिया का मालिक है उसका काई साझी नहीं मैं उसके हुक्म का बन्दा हूँ मैं उन लोगो मे से हूँ जो अल्लाह के सामने सर झुकाते हैं. ऐ अल्लाह तू हमारा बादशाह है तेरे सिवा काई दूसरा अल्लाह नहीं है. तू मेरा मालिक है और मैं तेरा बन्दा हूँ मैंने अपनी ही रूह के साथ ज़ुल्म किया है और मैं अपने गुनाह का इक़बाल करता हूँ. तू मेरे सब गुनाह माफ़ कर दे सचमुच तेरे सिवा काइ दूसरा गुनाहो का माफ़ नहीं कर सकता. मुझे हिदायत कर कि मैं सब से अच्छे चलन वाला होऊँ तेरे सिवा काई दूसरा मुझसे बुराई को दूर नहीं कर सकता मैं यहाँ तेरी सेवा के लिये हूँ. सारी भलाई तेरे हाथो मे है तुझमे कोई बुराई नही निकाली जा सकती. मैं तेरे पास से ही आया हूँ और तेरे पास ही मुझे लौटकर जाना है. तू ही शान वाला है, और तुझ मे ही सब बड़ाई है. मैं तुझसे माफ़ी माँगता हूँ और तेरी तरफ़ मुड़ता हूँ"

मुहम्मद साहब जब नमाज़ में झुकते तो कहते .— "ऐ अल्लाह ! मैं तेरे सामने झुकता हूँ, मैं तुझ पर ईमान रखता हूँ और तेरे सामने सर झुकाता हूँ. मेरा सुनना और मेरा देखना, मेरा गूदा और मेरी हड्डी और मेरे पट्ठे सब तेरे सामने झुके हुए हैं."

محمد صاحب کی کچھ حدیثیں

"رسول خدا ہمارے گھر ہم لوگوں سے ملنے آئے۔ ہمارے یہاں ایک کتیا تھی اور ایک گدھی تھی۔ رسول نے ہمارے یہاں عصر کی نماز پڑھی۔ اس وقت کتیا اور گدھی دونوں ٹھیک اُن کے سامنے بیٹھی تھیں۔"

— فضل بن عباس، ابوداؤد، نسائی۔

محمد صاحب ان لفظوں میں دعا مانگا کرتے تھے:— "اے اللہ! میرے دل کو پاک کر، اس میں کسی طرح کا چھل کپٹ نہ رہے۔ میرے اعمال (کاموں) کو پاک کر، اُن میں کسی طرح کی بناوٹ نہ رہے۔ میری زبان کو پاک کر، وہ کبھی جھوٹ نہ بولے، اور میری آنکھوں کو پاک کر، وہ کسی کو دھوکا نہ دیں، سچ مچ تو دھوکا دینے والی آنکھوں کو جانتا ہے اور لوگوں کے دلوں کے اندر جو کچھ چھپا ہوتا ہے اُس سب کو بھی تو جانتا ہے۔"

امی معبد، بیہقی۔

محمد صاحب جب نماز کے لئے کھڑے ہوتے تھے تو کہا کرتے تھے— "میں ایک حنیف (سچائی کے کھوجی) کی طرح اللہ کے سامنے کھڑا ہوتا ہوں جس نے زمین اور آسمانوں کو بنایا ہے۔ میں اُن لوگوں میں سے نہیں ہوں جو اللہ کے ساتھ کسی دوسرے کو شریک کرتے ہیں۔ سچ مچ میری نماز میری عبادت، میری زندگی اور میری موت سب اللہ کے لئے ہیں۔ وہ ساری دنیا کا مالک ہے اُس کا کوئی ساجھی نہیں۔ میں اُس کے حکم کا بندہ ہوں میں اُن لوگوں میں سے ہوں جو اللہ کے سامنے سر جھکاتے ہیں۔ اے اللہ! تو ہمارا بادشاہ ہے تیرے سوا کوئی دوسرا اللہ نہیں ہے۔ تو میرا مالک ہے اور میں تیرا بندہ ہوں میں نے اپنی ہی روح کے ساتھ ظلم کیا ہے اور میں اپنے گناہ کا اقبال کرتا ہوں تو میرے سب گناہ معاف کر دے۔ سچ مچ تیرے سوا کوئی دوسرا گناہوں کو معاف نہیں کر سکتا۔ مجھے ہدایت کر کہ میں سب سے اچھے چلن والا ہوؤں۔ تیرے سوا کوئی دوسرا اس طرح کی نیکی کی ہدایت نہیں کر سکتا۔ تیرے سوا کوئی دوسرا مجھ سے برائی کو دور نہیں کر سکتا۔ میں یہاں تیری سیوا کے لئے ہوں ساری بھلائی تیرے ہاتھوں میں ہے تجھ میں کوئی برائی نہیں نکالی جا سکتی۔ میں تیرے پاس سے ہی آیا ہوں اور تیرے پاس ہی مجھے لوٹ کر جانا ہے تو ہی شان والا ہے، اور تجھ میں ہی سب بڑائی ہے۔ میں تجھ سے معافی مانگتا ہوں اور تیری طرف مڑتا ہوں"

محمد صاحب جب نماز میں جھکتے تو کہتے:— "اے اللہ! میں تیرے سامنے جھکتا ہوں، میں تجھ پر ایمان رکھتا ہوں، اور تیرے سامنے سر جھکاتا ہوں میرا سننا اور میرا دیکھنا، میرا گودا اور میری ہڈی اور میرے پٹھے سب تیرے سامنے جھکے ہوئے ہیں۔"

फिर जब वह सर उठाते तो कहते :—"ऐ अल्लाह! ऐ हमारे मालिक! सब आसमान और ज़मीन और जो कुछ इन दोनों के बीच में है और जो कुछ इसके बाद तू बनावे सब तेरी हम्द (स्तुति) से भर जावें."

जब वह सजदे में जाते तो कहा करते :—"ऐ अल्लाह! मैं तेरी इबादत करता हूँ, मैं तुझ पर ईमान रखता हूँ मैं तेरे सामने सर झुकाता हूँ, मेरा चेहरा अल्लाह की इबादत करता है जिसने उस चेहरे को बनाया और उसे शक्ल दी और उसमें सुनने और देखने के लिये कान और आँख बनाए. शान है उस अल्लाह की जो सब से अच्छा बनाने वाला है!"

मुहम्मद साहब अपनी नमाज़ को इन लफ्ज़ों के साथ ख़तम किया करते थे :—"ऐ अल्लाह! मेरे वह सब गुनाह माफ़ कर दे जो मैं अब तक कर चुका हूँ और वह भी जो आइन्दा कर बैठूँ और वह जो मैंने छिपाए हों और वह भी जो मैंने खुलकर किये हों और जो कुछ मैंने ज़ियादती की हो, और जो कुछ मेरे अन्दर तू मुझ से ज़्यादा जानता हो. तू ही अव्वल है, तू ही आख़िर है, तेरे सिवा कोई दूसरा अल्लाह नहीं!"

—अली, मुसलिम.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"एक दूसरे को तुहफ़े (उपहार) भेजा करो, क्योंकि सचमुच तुहफ़ों से दिलों का बुग़ज़ निकल जाता है, किसी पड़ोसी को यह नहीं चाहिये कि वह अपने किसी पड़ोसी के तुहफ़े को हिक़ारत की निगाह से देखे, चाहे वह कितनी ही छोटी चीज़ क्यों न हो."

—अबु हुरैरह, तिरमिज़ी

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"जो कोई अकड़ कर चलता है वह जन्नत में नहीं जा सकता, और न कोई अपनी बड़ाई हाँकने वाला जन्नत में जा सकता है"

—हारिसा बिन वहब, अबूदाऊद: बेहक़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा :—'जो कोई नाम हासिल करने के लिये बढ़िया कपड़े पहनता है अल्लाह उसे ज़िल्लत के कपड़े पहनाएगा."

—इब्ने उमर, अबूदाऊद.

پھر جب وہ سر اُٹھاتے تو کہتے:—"اے اللہ! اے ہمارے مالک! سب آسمان اور زمین اور جو کچھ اِن دونوں کے بیچ میں ہے اور جو کچھ اِس کے بعد تو بناوے سب تیری حمد (استوتی) سے بھر جاویں."

جب وہ سجدے میں جاتے تو کہا کرتے:—"اے اللہ! میں تیری عبادت کرتا ہوں، میں تجھ پر ایمان رکھتا ہوں، میں تیرے سامنے سر جھکاتا ہوں، میرا چہرا اللہ کی عبادت کرتا ہے جس نے اُس چہرے کو بنایا اور اسے شکل دی اور اُس میں سننے اور دیکھنے کے لئے کان اور آنکھ بنائے۔ شان ہے اُس اللہ کی جو سب سے اچھا بنانے والا ہے!"

محمد صاحب اپنی نماز کو ان لفظوں کے ساتھ ختم کیا کرتے تھے:—"اے اللہ! میرے وہ سب گناہ معاف کر دے جو میں اب تک کر چکا ہوں اور وہ بھی جو آئندہ کر بیٹھوں، اور وہ جو میں نے چھپائے ہوں اور وہ بھی جو میں نے کھل کر کئے ہوں اور جو کچھ میں نے زیادتی کی ہو، اور جو کچھ میرے اندر تو مجھ سے زیادہ جانتا ہو۔ تو ہی اول ہے، تو ہی آخر ہے، تیرے سوا کوئی دوسرا اللہ نہیں!"

—علی، مسلم.

محمد صاحب نے کہا:—"ایک دوسرے کو تحفے (اپہار) بھیجا کرو، کیونکہ سچ مچ تحفوں سے دلوں کا بغض نکل جاتا ہے، کسی پڑوسی کو یہ نہیں چاہئے کہ وہ اپنے کسی پڑوسی کے تحفے کو حقارت کی نگاہ سے دیکھے، چاہے وہ کتنی ہی چھوٹی چیز کیوں نہ ہو."

—ابو ہریرہ، ترمذی

محمد صاحب نے کہا کہ:—"جو کوئی اکڑ کر چلتا ہے وہ جنت میں نہیں جا سکتا، اور نہ کوئی اپنی بڑائی ہانکنے والا جنت میں جا سکتا ہے."

—حارثہ بن وہب، ابو داؤد: بیہقی.

محمد صاحب نے کہا:—"جو کوئی نام حاصل کرنے کے لئے بڑھیا کپڑے پہنتا ہے اللہ اُسے ذلت کے کپڑے پہنائیگا"

—ابن عمر، ابوداؤد.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"क़यामत के दिन अल्लाह उस आदमी की तरफ़ नहीं देखेगा जो घमंड के साथ लम्बी लम्बी पोशाकें पहनता है."

—इब्ने उमर, बुख़ारी: मुसलिमः तिरमिज़ीः नसाईः मालिक.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"अल्लाह ने मुझ पर यह वही की है कि—'इनकिसार (नम्रता) से चलो, ताकि कोई अपने को दूसरे से ऊँचा न समझे और न किसी दूसरे के सामने घमंड करे."

—अयाज़ बिन हिमार, अबूदाऊद.

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"जब मेरी उम्मत के लोग घमंड के साथ चलने लगेंगे, और शहज़ादे—फ़ारस और रोम के बच्चे—उनकी ख़िदमत करेंगे, तब अल्लाह उनके बुरे आदमियों को उनके ऊपर हाकिम बना देगा."

—इब्ने उमर, तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"जिस किसी के दिल में एक ज़र्रा भर भी ग़रूर है वह जन्नत में नहीं जा सकता." इस पर एक आदमी ने पूछा:—"लेकिन अगर कोई आदमी अच्छे कपड़े और अच्छे जूते पहनना चाहे तो ?' पैग़म्बर ने जवाब दिया :—"अल्लाह सुन्दर है और सुन्दरता को पसन्द करता है, सचाई से इनकार करना और दूसरों को अपने से छोटा समझना ग़रूर है."

—इब्ने मसऊद, मुसलिमः अबूदाऊदः तिरमिज़ी.

—अनुवादक : मुजीब रिज़वी

محمد صاحب نے کہا:—"قیامت کے دن اللہ اُس آدمی کی طرف نہیں دیکھے گا جو گھمنڈ کے ساتھ لمبی لمبی پوشاکیں پہنتا ہے."

—اِبن عمر' بخاری: مسلم: ترمذی: نسائی: مالک.

محمد صاحب نے کہا:—"اللہ نے مجھ پر یہ وحی کی ہے کہ—'اِنکسار (نمرتا) سے چلو' تاکہ کوئی اپنے کو دوسرے سے اُونچا نہ سمجھے اور نہ کسی دوسرے کے سامنے گھمنڈ کرے."

—عیاض بن حمار' ابوداؤد.

محمد صاحب نے کہا کہ:—جب میری امت کے لوگ گھمنڈ کے ساتھ چلنے لگینگے' اور شہزادے—فارس اور روم کے بچے—اُن کی خدمت کرینگے' تب اللہ اُن کے برے آدمیوں کو اُن کے اُوپر حاکم بنادے گا."

—ابن عمر' ترمذی

محمد صاحب نے کہا کہ:—"جس کسی کے دل میں ایک ذرہ بھر بھی غرور ہے وہ جنت میں نہیں جا سکتا." اس پر ایک آدمی نے پوچھا:—"لیکن اگر کوئی آدمی اچھے کپڑے اور اچھے جوتے پہننا چاہے تو ؟' پیغمبر نے جواب دیا:—"اللہ سندر ہے اور سندرتا کو پسند کرتا ہے. سچائی سے انکار کرنا اور دوسروں کو اپنے سے چھوٹا سمجھنا غرور ہے."

—اِبن مسعود' مسلم: ابوداؤد: ترمذی.

—انوادک : مجیب رضوی

वक़्त का मतालबा (माँग)—
समय का सम्राट होता है

भाई अब्दुल हलीम अन्सारी, आर्टिस्ट, भोपाल

यह दुनिया मार काट का रंगीन और प्राचीन संगठन है तारीख़ गवाह है कि दुनिया का चप्पा चप्पा इनसानी ख़ून मे लुथड़ा हुआ है, जो इस बात का खुला सबूत है कि ख़ूबसूरत कायनात (सृष्टि) का बिशाल पाट ख़ास ख़ास वक़्तों में ख़ूनी सागर का रूप लेता रहा है जिस पर इन्सानी ख़ून की लहरें इन्तक़ामी (बदले के) जज़्बों के साथ इधर उधर दौड़ती रही हैं जो इशारे हैं उनकी तारीख़ी घटनाओं की तरफ़ और इस बात की तरफ़ कम. आज़ादी की आमद के साथ-साथ इन्सानो में निफ़ाक़ और फ़िसाद कितना उभरता रहा है और स्वार्थ कितना आगे बढ़ता रहा है समाजी विचार समय की माँगा के साथ अपना अपना काम करते रहे हैं और बदलते हालात के साथ वक़्त की राजनीति को लिये हुए अपना रंग और रूप बदलते रहे हैं, भेस और भाव बदलते रहे हैं

इस लम्बी दुनिया की लम्बी तारीख़ पर ख़ूनी दास्तानो (कहानियो) का भारी रेकार्ड जमा है, जो जानकारों के ज्ञान में और इतिहासकारों की नज़र मे है वही ख़ूब जानते और समझते हैं कि इनके अन्दर क्या क्या भेद भाव जमा हैं, कितनी ख़ूनी दास्तानें छुपी हैं, कितनी साज़िशें दफ़न हैं और कितनी बग़ावतें बेकफ़न हैं.

हर ख़ूनी दास्तान अपने विशेष निशान में वक़्त के इनक़लाब का तारीख़ी बयान है उस बयान मे भूतकाल के रंगीन चित्रों का अक्स है उस अक्स मे बेशक अत्याचार और जागृति की साथ-साथ झलक है. अगर इनसान ग़ौर करे और समझे तो इन अक्सो और चित्रों के साथ ही साथ क़ुदरत का मशा भी लगभग काम कर रहा है जो अपने अक्स में उसके लक्ष का पता देता है, और तरह तरह के रूपों और रंगो में ज़ाहिर होता है अगर ज़ालिम के लिये बग़ावत और सज़ा के डरावने रूप हैं तो मज़लूम के लिये त्याग और हमदर्दी के सुन्दर किरदार हैं.

जनता का हक़ हड़प करने और ज़ुल्म उस पर अधिक करने से एक नया आन्दोलन जन्म लेता है इसी का नाम है इनक़लाब ! जो आंधी की तरह उठता और आग की तरह फैलता है. जो तूफ़ान की तरह आता, बिजली की तरह कड़कता, चमकता और लपकता है. इसकी लपक में ग़ज़ब की तड़प और चमक होती है. यह चमक उसके स्वभाव और त्याग पर प्रकाश डालती है और उसके वह

وقت کا مطالبہ (مانگ)—
سمئے کا سمراٹ ہوتا ہے

بھائی عبدالحلیم انصاری، آرٹسٹ، بھوپال

یہ دنیا مار کاٹ کا رنگین اور پراچین سنگٹھن ہے . تاریخ گواہ ہے کہ دنیا کا چپہ چپہ انسانی خون میں لتھڑا ہوا ہے، جو اس بات کا کھلا ثبوت ہے کہ خوبصورت کائنات (سرشٹی) کا وشال پاٹ خاص خاص وقتوں میں خونی ساگر کا روپ لیتا رہا ہے جس پر انسانی خون کی لہریں انتقامی (بدلے کے) جذبوں کے ساتھ ادھر ادھر دوڑتی رہی ہیں جو اشارے ہیں اُن تاریخی گھٹناؤں کی طرف اور اس بات کی طرف کم آزادی کی آمد کے ساتھ ساتھ انسانوں میں نفاق اور فساد کتنا ابھرتا رہا ہے اور سوارتھ کتنا آگے بڑھتا رہا ہے سماجی وچار سمئے کی مانگوں کے ساتھ اپنا اپنا کام کرتے رہے ہیں اور بدلتے حالات کے ساتھ وقت کی راجنیتی کو لئے ہوئے اپنا رنگ اور روپ بدلتے رہے ہیں، بھیس اور بھاؤ بدلتے رہے ہیں

اس لمبی دنیا کی لمبی تاریخ پر خونی داستانوں (کہانیوں) کا بھاری ریکارڈ جمع ہے، جو جانکاروں کے گیان میں اور اتہاس کاروں کی نظر میں ہے وہی خوب جانتے اور سمجھتے ہیں کہ ان کے اندر کیا کیا بھید بھاؤ جمع ہیں، کتنی خونی داستانیں چھپی ہیں، کتنی سازشیں دفن ہیں اور کتنی بغاوتیں بے کفن ہیں۔

ہر خونی داستان اپنے وشیش نشان میں وقت کے انقلاب کا تاریخی بیان ہے اُس بیان میں بھوت کال کے رنگین چتروں کا عکس ہے اُس عکس میں بےشک اتیاچار اور جاگرتی کی ساتھ ساتھ جھلک ہے اگر انسان غور کرے اور سمجھے تو ان عکسوں اور چتروں کے ساتھ ہی ساتھ قدرت کا منشا بھی لگ بھگ کام کر رہا ہے جو اپنے عکس میں اُس کے لکھش کا پتہ دیتا ہے اور طرح طرح کے روپوں اور رنگوں میں ظاہر ہوتا ہے . اگر ظالم کے لئے بغاوت اور سزا کے ڈراونے روپ ہیں تو مظلوم کے لئے تیاگ اور ہمدردی کے سندر کردار ہیں .

جنتا کا حق ہڑپ کرنے اور ظلم اُس پر ادھک کرنے سے ایک نیا آندولن جنم لیتا ہے اس کا نام ہے انقلاب ! جو آندھی کی طرح اُٹھتا اور آگ کی طرح پھیلتا ہے—جو طوفان کی طرح آتا، بجلی کی طرح کڑکتا چمکتا اور لپکتا ہے اس کی لپک میں غضب کی تڑپ اور چمک ہوتی ہے . یہ چمک اُس کے سبھاؤ اور تیاگ پر پرکاش ڈالتی ہے اور اُس کے وہ

हुए उसके सिद्धान्त और साधन का समर्थन करते हैं इसी कारण उसको जनता की एकता प्राप्त होती है, और इसी विषय में उसका बहुमत उसका स्वागत करता है. किसी अच्छे मक़सद के लिये एक मरकज़ पर सब का मिलाप और इत्तहाद एकता की जीत का कारण होता है. एकता की जीत बेदारी की निशानी होती है—ताक़त का आसरा होता है.

यह बात मानी हुई है कि क़ुदरत ने हमेशा वक़्त की आवाज़ यानी जनता की आवाज़ का साथ दिया है. इसी को कहते हैं ख़ुदाई नक़्क़ारा—यही वजह है कि जब जनता का बहाव शोर मचाता और दनदनाता आगे बढ़ता चला आता है तो उसके खौफ़ और दहशत से हकूमत तक अपनी चौकड़ी भूल जाती है. क़ानून खिसयाना होकर अपने होश हवास खो देता है. ताक़त बेताक़त होकर उसके सामने गिर पड़ती है शान अपनी शान खोकर उसकी माँग पूरी करती है. उसकी यकजाई ताक़त और ताक़तवर बहावट के रेले से बड़ी बड़ी ताक़तें अपनी जगह से खिसकने लगती हैं भारी भारी चट्टानें तड़कने लग जाती हैं महान से महान इनसानों के लम्बे लम्बे दावे गलत पड़ जाते हैं और ऊँचे ऊँचे हलफ झूटे हो जाते हैं घमड का सर ऊँचा होते हुए भी उसके सन्मुख झुक जाता है. इसलिये यह मानना पड़ेगा कि वक्त की माँग ज़बरदस्त ताक़त है और वक्त का मतालबा किसी ताक़त की परवाह नहीं करता वक्त का मतालबा क्योंकि वक़्त का बादशाह होता है, समय का सम्राट होता है, इसलिये उसका फैसला अटल होता है और एक वक्त आता है—अवश्य आता है—कि उसका झंडा बुलन्द होता है ऐसा ही झंडा—निशान होता है इनसानियत का और ऐसा ही निशान तरजुमान होता है बहुमत का.

کی اُس کے سدھانت اور سادھن کا سمرتھن کرتے ہیں۔ اِسی کارن اُس کو جنتا کی ایکتا پراپت ہوتی ہے' اور اسی وشے میں اُس کا بہومت اُس کا سواگت کرتا ہے۔ کسی اچھے مقصد کے لئے ایک مرکز پر سب کا ملاپ اور اتحاد ایکتا کی جیت کا کارن ہوتا ہے ایکتا کی جیت بیداری کی نشانی ہوتی ہے۔ طاقت کا آسرا ہوتا ہے۔

یہ بات مانی ہوئی ہے کہ قدرت نے ہمیشہ وقت کی آواز یعنی جنتا کی آواز کا ساتھ دیا ہے۔ اسی کو کہتے ہیں خدائی نقارہ — یہی وجہ ہے کہ جب جنتا کا بہاؤ شور مچاتا اور دندناتا آگے بڑھتا چلا آتا ہے تو اُس کے خوف اور دہشت سے حکومت تک اپنی چوکڑی بھول جاتی ہے۔ قانون کھسیانا ہو کر اپنے ہوش حواس کھو دیتا ہے طاقت بے طاقت ہو کر اُس کے سامنے گر پڑتی ہے شان اپنی شان کھو کر اُس کی مانگ پوری کرتی ہے اُس کی یکجائی طاقت اور طاقتور بہاوٹ کے ریلے سے بڑی بڑی طاقتیں اپنی جگہ سے کھسکنے لگتی ہیں۔ بھاری بھاری چٹانیں ترکنے لگ جاتی ہیں۔ مہان سے مہان انسانوں کے لمبے لمبے دعوے غلط پڑ جاتے ہیں اور اونچے اونچے حلف جھوٹے ہو جاتے ہیں گھمنڈ کا سر اونچا ہوتے ہوئے بھی اُس کے سنمکھ جھک جاتا ہے۔ اسی لئے یہ ماننا پڑے گا کہ وقت کی مانگ زبردست طاقت ہے اور وقت کا مطالبہ کسی طاقت کی پرواہ نہیں کرتا وقت کا مطالبہ کیونکہ وقت کا بادشاہ ہوتا ہے' سمے کا سمراٹ ہوتا ہے' اس لئے اُس کا فیصلہ اٹل ہوتا ہے اور ایک وقت آتا ہے — اوشیہ آتا ہے کہ — اُس کا جھنڈا بلند ہوتا ہے ایسا ہی جھنڈا — نشان ہوتا ہے انسانیت کا اور ایسا ہی نشان ترجمان ہوتا ہے بہومت کا

अधिकारों की सेना

भाई अब्दुल हलीम अन्सारी, आर्टिस्ट भोपाल

धन दौलत, शासन हकूमत, विद्या विज्ञान, विमान उड़ान, मशीन आलात—फ़िल्म फ़ोन और ब्राडकास्ट ! इतने साधन और विभाग जिस किसी को प्राप्त हों—यानी इतनी सारी शक्तियाँ और ऊपर से ज़बरदस्तियाँ,—धन मन, गन, और लाठी चार्ज, जिस शासन में शामिल हो वह क्या नहीं कर सकता ?

जनता जिसकी, नेता जिसके
वोटर जिसके, वरकर जिसके
चुनाव जिसके, सियासत उसकी,
बहुमत जिसकी रियासत उसकी,
मंत्री उसके, सन्तरी उसके
समय उसका, आज्ञा उसकी
अवाम की राय उसकी,
शासन के पाए उसके,
राजनीति उसकी और उसकी मानवता.
राजनीति की तरकीब उसकी,
मानवता की तक़रीब उसकी,
भाषण उसके उपदेशक उसके
शिक्षक उसके मुख दीपक उसके
हिन्दू उसके मुसलिम उसके—और
क़ौमी सारे संगम उसके.

अहिंसा का प्रचार उसका
हिंसा की तलवार उसकी
खून की धार उसकी
क़ौम का बलिदान उसका
आत्मा की पुकार उसकी
सत्य का सन्देश उसका
अमन का पैग़ाम उसका
पुलिस उसकी चालान उसके
अदालत उसकी विधान उसके
निर्णय उसके न्याय उसके
धूप उसकी साए उसके.

सेना उसकी सालार उसके
बम उसके बमबार उसके
जहाज़ उसके परवाज़ उसकी
यानी कि हवाबाज़ उसके

ادھیکاروں کی سینا

بھائی عبدالحلیم انصاری آرٹسٹ بھوپال

دھن دولت، شاسن حکومت، ودیا وگیان، ومان اُڑان، مشین آلات—فلم فون اور براڈکاسٹ ! اِتنے سادھن اور وبھاگ جس کسی کو پراپت ہوں—یعنی اِتنی ساری شکتیاں اور اُوپر سے زبردستیاں،—دھن، من، گن اور لاٹھی چارج، جس شاسن میں شامل ہوں وہ کیا نہیں کر سکتا ؟

جنتا جس کی، نیتا جس کے
ووٹر جس کے، ورکر جس کے
چناؤ جس کے، سیاست اُس کی،
بہومت جس کی ریاست اُس کی،
منتری اُس کے، سنتری اُس کے
سمے اُس کا، آگیاں اُس کی
عوام کی رائے اُس کی،
شاسن کے پائے اُس کے،
راجنیت اُس کی اور اُس کی مانوتا !
راجنیت کی ترکیب اُس کی،
مانوتا کی تقریب اُس کی،
بھاشن اُس کے اُپدیشک اُس کے
شکشک اُس کے مکھ دیپک اُس کے
ہندو اُس کے مسلم اُس کے—اور
قومی سارے سنگم اُس کے.

اَہنسا کا پرچار اُس کا
ہنسا کی تلوار اُس کی
خون کی دھار اُس کی
قوم کا بلیدان اُس کا
آتما کی پکار اُس کی
ستیہ کا سندیش اُس کا
امن کا پیغام اس کا
پولس اس کی چالان اس کے
عدالت اس کی ودھان اس کے
نرنے اس کے نیائے اس کے
دھوپ اس کی سائے اس کے

سینا اس کی سالار اس کے
بم اس کے بمبار اس کے
جہاز اس کے پرواز اس کی
یعنی کہ ہواباز اس کے

सिक्के उसके सिले उसके
सुन्दर जितने सपने उसके.

परचा उसका समाचार उसका
सम्पादक उसके प्रचारक उसके
पब्लिसिटी उसकी प्रॉपेगेन्डा उसका
झन्डी उसकी झन्डा उसका
युद्ध विश्व का और अमन इसका
अमन का ऊँचा पल्ला इसका.

मुख़बिर इसके जासूस इसके
चीन इसके रूस इसके
राजदूत इसके चापलूस इसके
सख इसके नाक़ूस इसके
संघ इसके सम्प्रदाय इसके

बिजली उसकी लहरें उसकी
लहरों के भीतर राज उसके
बिजली के अन्दर आग उसकी
पानी के ऊपर भाप उसकी

हर चीज़ पर उसका कब्ज़ा और अधिकार—
हर चीज़ का वह मालिक और मुख़तार,
सच तो रहा बेचारा अलग
झूठ पर भी उसका पूरा पूरा बस

इतने अधिकारों की सेना उसके पास होते हुए यह कहना ग़लत नहीं कि वह कुदरत के क़ानून बदल सकता है,—और प्रकृति की मान्यताओं को दूसरा रूप दे सकता है उसने अपनी शक्ति और अधिकार का एक इसी प्रकार का अनुभव भी कर दिखाया है—बैल को मन्त्री बनाया है और दो लम्बे लम्बे कानवालों का आगे बढ़ने का हौसला दिया है, गोया विकास का पास दिया है इस तरह विकास और समानता की सभा में इनका इनसानों से मुक़ाबला और बराबरी का हक़ देकर जमहूरियत की शान और सम्मान को क़ायम रखने की कोशिश की है जिसमें कहीं कहीं इस बिरादरी के मेम्बरों को सफलता भी प्राप्त हुई है—अपनी इस मानी ताक़त और अधिकार के बल पर वह हक़ के ख़िलाफ़ भी लड़ सकता है—

झूठ का विकास भी कर सकता है,
तूफ़ानों को रोक सकता है, सैलाबों का मुँह फेर सकता है.

पहाड़ों में शिगाफ़ डाल सकता है. आकाशों के परदे चाक कर सकता है.

سکے اس کے حصے اس کے
سادر جاگتے سپنے اس کے

پرچہ اس کا سماچار اس کا
سمپادک اس کے پرچارک اس کے
پبلسٹی اس کی پروپیگنڈا اس کا
جھنڈی اس کی جھنڈا اس کا
یدھ وشو کا اور امن اس کا
امن کا اونچا پلہ اس کا

مخبر اس کے جاسوس اس کے
چین اس کے روس اس کے
راج دوت اس کے چاپلوس اس کے
سنکھ اس کے ناقوس اس کے
سنگھ اس کے سمپردائے اس کے

بجلی اس کی لہریں اس کی
لہروں کے بھیتر راز اس کے
بجلی کے اندر آگ اس کی
پانی کے اوپر بھاپ اس کی

ہر چیز اس کا قبضہ اور ادھیکار—
ہر چیز کا وہ مالک اور مختار،
سچ تو رہا بیچارا الگ
جھوٹ پر بھی اس کا پورا پورا بس ۔

اتنے ادھیکاروں کی سبھا اس کے پاس ہوتے ہوئے یہ کہنا غلط نہیں کہ وہ قدرت کے قانون بدل سکتا ہے—اور پرکرتی کی مانیتاؤں کو دوسرا روپ دے سکتا ہے اس نے اپنی شکتی اور ادھیکار کا ایک اسی پرکار کا انوبھو بھی کر دکھایا ہے—بیل کو منتری بنایا ہے اور دو لمبے لمبے کان والوں کو آگے بڑھنے کا حوصلہ دیا ہے، گویا وکاس کا پرس دیا ہے اس طرح وکاس اور سمانتا کی سبھا میں ان کو انسانوں سے مقابلہ اور برابری کا حق دے کر جمہوریت کی شان اور سمان کو قائم رکھنے کی کوشش کی ہے جس میں کہیں کہیں اس برادری کے ممبروں کو سپھلتا بھی پراپت ہوئی ہے—اپنی اسی مانی طاقت اور ادھیکار کے بل پر وہ حق کے خلاف بھی لڑ سکتا ہے—

جھوٹ کا وکاس بھی کر سکتا ہے—
طوفانوں کو روک سکتا ہے سیلابوں کا منہ پھیر سکتا ہے ۔

پہاڑوں میں شگاف ڈال سکتا ہے ۔ آکاشوں کے پردے چاک کر سکتا ہے ۔

हवाओं की दौड़ती लहरों को मोड़ सकता और बिजली की चमकती शक्ति को तोड़ सकता है.

सूरज की किरनों को क़ैद कर सकता है यानी उसकी बरक़ी ताक़त को ज़ेर कर सकता है.

हवा के कन्धों पर अपने राज़ उड़ा सकता है—
फ़ज़ा के परदों के छुपे भेद चुरा सकता है.

आकाश पर फ़ौजें चढ़ा सकता है. पानी पर घोड़े दौड़ा सकता है.

अम्बर से तारे तोड़ सकता है. समुद्र से मोती रोल सकता है.

जो इतना कुछ कर सकता हो और इतने साधन रखता हो उसकी ताक़त का क्या ठिकाना ?

परन्तु क्या वह घर का प्रबन्ध नहीं कर सकता ? क्या शासन का नियम नही चला सकता ?

अगर वह चाहे तो हाय हाय के घरौंदे से दुखी जनता को निकाल कर ख़ुशहाली की दुनिया में पहुँचा सकता है—और शान्ति का शीतल छाया मे

अगर वह चाहे तो घरों को शान्ति पूर्ण बना सकता है और जीवन की अन्धेरियों को उजालियों म बदल सकता है. वह अमन का नाम बुलन्द करके वर्तमान को जीत सकता है. वर्तमान को जीत कर भविष्य पर भी क़ाबू पा सकता है और अपनी विजयकारी का डंका बजाकर, अपनी कुशलकारी का सिक्का जमाकर अपना काम और नाम तारीख़ के पन्नों पर सदा के लिये छाप सकता है क्योंकि वह हर बात और हर काम में आज़ाद और मुख़्तार है. इसलिये न वह पराए न्याय का मुहताज और न पराई राय का पाबन्द !

दूसरों के सामने न उसे हाथ पसारने की ज़रूरत और न झोली फैलाने की हाजत वह अपनी रोज़ी आप और अपनी दौलत ख़ुद पैदा कर सकता है उसकी धरती उसकी माया है—और माया उसकी शक्ति है.

वह किसी के दान एहसान के बल पर राज नहीं करता और किसी के धन दौलत पर नाज़ नहीं करता. वह क़ौम का नामलेवा होकर राज की लाज नहीं खोता. वह अगर चाहे तो ईमानदारी को निभाकर राष्ट्र का आदर्श ऊँचा उठा सकता है, देश का नाम चमका सकता है और आकाश तक उसका विकास लेजा सकता है.

अधिकारी या कर्मचारी बनकर काम करना आसान नही है. बड़ी ज़िम्मेदारी की चीज़ है. सच यह है कि सच्चाई और ज़िम्मेदारी के साथ ख़िदमत अनजाम देना हर एक का काम नहीं आज की स्वार्थी और अधिक मतलबी दुनिया में यह चीज़ बहुत दूर की होकर रह गई है . इसी कारण सचाई और ईमानदारी अपना पवित्र दामन समेट कर एक तरफ़ "गोशागीर" हो गई है.

ہواؤں کی دوڑتی لہروں کو موڑ سکتا اور بجلی کی چمکتی شکتی کو توڑ سکتا ہے .

سورج کی کرنوں کو قید کر سکتا ہے یعنی اس کی برقی طاقت کو زیر کر سکتا ہے .

ہوا کے کندھوں پر اپنے راز اڑا سکتا ہے—فضا کے پردوں کے چھپے بھید چرا سکتا ہے .

آکاش پر فوجیں چڑھا سکتا ہے پانی پر گھوڑے دوڑا سکتا ہے .

امبر سے تارے توڑ سکتا ہے . سمندر سے موتی رول سکتا ہے .

جو اتنا کچھ کر سکتا ہو اور اپنے سادھن رکھتا ہو اس کی طاقت کا کیا ٹھکانا ؟

پرنتو کیا وہ گھر کا پربندھ نہیں کر سکتا ؟ کیا شاسن کا نیم نہیں چلا سکتا ؟

اگر وہ چاہے تو ہائے ہائے کے گھروندے سے دکھی جنتا کو نکالکر خوشحالی کی دنیا میں پہنچا سکتا ہے—او شانتی کی شیتل چھایا میں

اگر وہ چاہے تو گھروں کو شانتی پورن بنا سکتا ہے اور جیون کی اندھیریوں کو اجالیوں میں بدل سکتا ہے. وہ امن کا نام بلند کر کے ورتمان کو جیت سکتا ہے ورتمان کو جیت کر بھوشیہ پر بھی قابو پا سکتا ہے . اور اپنی وجے کاری کا ڈنکا بجا کر اپنی کشل کاری کا سکہ جما کر اپنا کام اور نام تاریخ کے پنوں پر سدا کے لئے چھاپ سکتا ہے . کیونکہ وہ ہر بات اور ہر کام میں آزاد اور مختار ہے . اسلئے نہ وہ پرائے نیائے کا محتاج اور نہ پرائی رائے کا پابند !

دوسروں کے سامنے نہ اسے ہاتھ پسارنے کی ضرورت اور نہ جھولی پھیلانے کی حاجت . وہ اپنی روزی آپ او اپنی دولت خود پیدا کر سکتا ہے . اس کی دھرتی اس کی مایا ہے—اور مایا اس کی شکتی ہے .

وہ کسی کے دان احسان کے بل پر راج نہیں کرتا اور کسی کے دھن دولت پر ناز نہیں کرتا وہ قوم کا نام لیوا ہو کر راج کی لاج نہیں کھوتا . وہ اگر چاہے تو ایمانداری کو نبھا کر راشٹر کا آدرش اونچا اٹھا سکتا ہے' دیش کا نام چمکا سکتا ہے اور آکاش تک اس کا وکاس لیجا سکتا ہے

ادھیکاری یا کرمچاری بن کر کام کرنا آسان نہیں ہے بڑی ذمہ داری کی چیز ہے . سچ یہ ہے کہ سچائی اور ذمہ داری کے ساتھ خدمت انجام دینا ہر ایک کا کام نہیں . آج کی سوارتھی اور ادھک مطلبی دنیا میں یہ چیز بہت دور کی ہو کر رہ گئی ہے . اسی کارن سچائی اور ایمانداری اپنا پوتر دامن سمیٹ کر ایک طرف ''گوشہ گیر'' ہو گئی ہے

जो इनसान अपने ही लोभ में लगा रहता है वह दूसरों की खिदमत और अपने कर्तव्य से दूर हो जाता है. फिर कोई सम्बन्ध नहीं रहता उसका जनता से और न मानवता से.

खिदमत के लिये ज़रूरत है क़ाबलीयत की. लेकिन क़ाबलीयत से अधिक ज़रूरत है इनसानियत की, बेलौसी की, सचाई की, योग्यता की,—बिना इन गुणों के सेवा और इनसानियत का फ़र्ज़ पूरा नहीं होता और इन्हीं के न होने के कारण और इनसानी हमदरदी का एहसास खो देने के सबब देश भर में दिन दूनी अबतरी फैली हुई है घर घर परेशानी है नगर नगर हाहाकार है यह इस बात का प्रमाण है कि बड़े बड़े कार्यकर्ताओं में से कुछ के पास अगर क़ाबलीयत की डिगरियाँ हैं ता योग्यता नहीं—सेवा के दावे और प्रचार अगर हैं ता सभ्यता नहीं.

ऐसे लागो पर विश्वास ही क्या जो झूठ बोल कर फरेब खेलकर, चाले चलकर, बातें बनाकर अवाम का हक़ हड़प करें और ऊपर से घमन्ड की बातें करे, ऐंठ अकड़ की चालें लें कितना हलका और ओछा है उनका यह चरित्र और किरदार—यह तमाम बाते कैरक्टर की कमज़ोरी की निशानियां हैं. ख़ुद तो वह कारे हैं मगर बातों म कितने शेख़ी खारे हैं शेख़ी कभी किसी मनुष्य का ऊँचा नहीं उठाती, नज़र से गिरा देती है और फिर मौक़ा नही देती उसका ऊपर उठने का

सेवा का मूल लक्ष्य यह होना चाहिये कि जनता की भूख प्यास की तड़प दूर हो और वह आनन्द से रहे आनन्द के मानी यह कि हर मन में ख़ुशी हो और हर घर में अमन हो.

इसी का मतलब हुआ क़ाबलियत, सलाहियत, योग्यता—वरना कुछ नहीं—सच तो यह है जो होना चाहिये वह हुआ भी नहीं और जितना करना चाहिये किया भी नहीं—जिस तरफ़ नज़र डालो हर चीज़ अपनी जगह पर है मुसीबत और परेशानी अपनी जगह, फ़ाक़ा फ़ाके की जगह, बेकारी बेकारी की जगह, लंगोटी लंगोटी की जगह, ग़रीब चिथड़ो मे, शरीफ़ को यह भी नसाब नहीं, अधिकतर इसलिये उसको सामने न लाना ही बेहतर

प्रेम और त्याग का प्रेमी कठिन से कठिन मंज़िल हँसते-हँसते तय करता है

सेवा और प्रेम का मतवाला काँटो की राहो पर चलकर ही आनन्द पाता है

ख़िदमत और हिम्मत का वीर हर कष्ट से टक्कर ले सकता है हर ताक़त से मुक़ाबिला कर सकता है. हर मुसीबत का इलाज कर सकता है. लेकिन इतने अधिकार और साधन होते हुये उसके अन्दर यदि काम की योग्यता न हो, तमीज़ न हो, सलीक़ा न हो ता फिर उसका क्या इलाज? सिवाय इसके कि ऐसी डिगरियों और बुद्धियो पर अधिक से अधिक अफ़सोस किया जाय.

جو انسان اپنے ہی لوبھ میں لگا رہتا ہے وہ دوسروں کی خدمت اور اپنے کرتویہ سے دور ہو جاتا ہے۔ پھر کوئی سمبندھ نہیں رہتا اُس کا جنتا سے اور نہ مانوتا سے۔

خدمت کے لئے ضرورت ہے قابلیت کی لیکن قابلیت سے ادھک ضرورت ہے انسانیت کی، بے لوثی کی، سچائی کی، یوگتا کی،— بنا ان گنوں کے سیوا اور انسانیت کا فرض پورا نہیں ہوتا اور انہیں کے نہ ہونے کے کارن اور انسانی ہمدردی کا احساس کھو دینے کے سبب دیش بھر میں دن دونی ابتری پھیلی ہوئی ہے گھر گھر پریشانی ہے نگر نگر ہاہاکار ہے یہ اس بات کا پرمان ہے کہ بڑے بڑے کاریہ کرتاؤں میں سے کچھ کے پاس اگر قابلیت کی ڈگریاں ہیں تو یوگتا نہیں—سیوا کے دعوے اور پرچار اگر ہیں تو سبھیتا نہیں

ایسے لوگوں پر وشواس ہی کیا جو جھوٹ بول کر، فریب کھیل کر، چالیں چلکر، باتیں بنا کر عوام کا حق ہڑپ کریں اور اوپر سے گھمنڈ کی باتیں کریں، اینٹھ اکڑ کی چالیں چلیں۔ کتنا ہلکا اور اوچھا ہے اُن کا یہ چرتر اور کردار—یہ تمام باتیں کیرکٹر کی کمزوری کی نشانیاں ہیں—خود تو وہ کھوٹے ہیں مگر باتوں میں کتنے شیخی خورے ہیں شیخی کبھی کسی منشیہ کو اونچا نہیں اٹھاتی، نظر سے گرا دیتی ہے اور پھر موقع نہیں دیتی اس کو اوپر اٹھنے کا

سیوا کا مول لکشیہ یہ ہونا چاہئے کہ جنتا کی بھوک پیاس کی تڑپ دور ہو اور وہ آنند سے رہے۔ آنند کے معنی یہ کہ ہر من میں خوشی ہو اور ہر گھر میں امن ہو۔

اسی کا مطلب ہوا قابلیت، صلاحیت، یوگتا—ورنہ کچھ نہیں—سچ تو یہ ہے جو ہونا چاہئے وہ ہوا بھی نہیں اور جتنا کرنا چاہئے کیا بھی نہیں—جس طرف نظر ڈالو ہر چیز اپنی جگہ پر ہے—مصیبت اور پریشانی اپنی جگہ، فاقہ فاقے کی جگہ، بیکاری بیکاری کی جگہ لنگوٹی لنگوٹی کی جگہ غریب چیتھڑوں میں، شریف کو یہ بھی نصیب نہیں، ادھکتر اس لئے اُس کو سامنے نہ لانا ہی بہتر

پریم اور تیاگ کا پریمی کٹھن سے کٹھن منزل ہنستے ہنستے طے کرتا ہے۔

سیوا اور پریم کا متوالا کانٹوں کی راہوں پر چل کر ہی آنند پاتا ہے۔

خدمت اور ہمت کا ویر ہر کشٹ سے ٹکر لے سکتا ہے ہر طاقت سے مقابلہ کر سکتا ہے ہر مصیبت کا علاج کر سکتا ہے۔ لیکن اتنے ادھیکار اور سادھن ہوتے ہوئے اُس کے اندر یدی کام کی یوگتا نہ ہو، تمیز نہ ہو، سلیقہ نہ ہو پھر اس کا کیا علاج؟ سوائے اس کے کہ ایسی ڈگریوں اور بدھیوں پر ادھک سے ادھک افسوس کیا جاوے۔

सन् 1867 का क़ौमी तराना

हम हैं इसके मालिक, हिन्दुस्तान हमारा,
पाक वतन है क़ौम का, जन्नत से भी प्यारा!
ये है हमारी मिल्कीयत, हिन्दुस्तान हमारा,
इसकी रूहानियत से, रौशन है जग सारा.
कितना क़दीम, कितना नईम, सब दुनिया से प्यारा,
करती है ज़रख़ेज़ जिसे, गंगो-जमन की धारा.
ऊपर बर्फ़ीला पर्वत, पहरेदार हमारा,
नीचे साहिल पर बजता, सागर का नक़्क़ारा.
इसकी खानें उगल रहीं, सोना, हीरा, पारा,
इसकी शानो शौकत का, दुनिया मे जयकारा.
आया फ़िरंगी दूर से, ऐसा मन्तर मारा,
लूटा दोनो हाथ से, प्यारा वतन हमारा.
आज शहीदों ने है तुमको, अहले वतन ललकारा,
तोड़ो ग़ुलामी की जंजीरें बरसाओ अङ्गारा.
हिन्दू, मुसलमाँ, सिख हमारा भाई भाई प्यारा,
ये है आज़ादी का झन्डा, इसे सलाम हमारा.

❀ ❀ ❀

[सन् 1857 में क़ौमी झन्डे की सलामी पर जगह जगह यह गीत गाया जाता था. असली गीत सन् 57 की क्रान्ति के ख़ास अख़बार 'पयामे आज़ादी' मे छपा था. 'पयामे आज़ादी' की यह कापी ब्रिटिश म्यूज़ियम, लन्दन, में महफ़ूज़ है.]

سن 1837 کا قومی ترانہ

ہم ہیں اِسکے مالک، ہندستان ہمارا،
پاک وطن ہے قوم کا، جنت سے بھی پیارا!
یہ ہے ہماری ملکیت، ہندستان ہمارا،
اِسکی روحانیت سے، روشن ہے جگ سارا.
کتنا قدیم، کتنا نعیم، سب دنیا سے نیارا،
کرتی ہے زرخیز جسے، گنگ و جمن کی دھارا.
اوپر برفیلا پربت، پہریدار ہمارا،
نیچے ساحل پر بجتا، ساگر کا نقارا.
اِسکی کھانیں اُگل رہیں، سونا، ہیرا، پارا،
اِسکی شان و شوکت کا، دنیا میں جے کارا.
آیا فرنگی دور سے، ایسا منتر مارا،
لوٹا دونوں ہاتھ سے، پیارا وطن ہمارا.
آج شہیدوں نے ہے تمکو، اہل وطن للکارا،
توڑو غلامی کی زنجیریں، برساؤ انگارا.
ہندو، مسلماں، سکھ ہمارا بھائی بھائی پیارا،
یہ ہے آزادی کا جھنڈا، اِسے سلام ہمارا.

❀ ❀ ❀

[سن 1857 میں قومی جھنڈے کی سلامی پر جگہ جگہ یہ گیت گایا جاتا تھا. اصلی گیت سن 57 کی کرانتی کے خاص اخبار 'پیام آزادی' میں چھپا تھا. 'پیام آزادی' کی یہ کاپی برٹش میوزیم، لندن' میں محفوظ ہے.]

सन् 1857 की जंगे आज़ादी

विश्वम्भर नाथ पांडे

तवारीख़ के मशहूर भारतीय विद्वान डाक्टर आर. सी. मजुमदार ने जब से यह समाचार सुना है कि भारत सरकार और जनता दोनों—सन् 1857 के स्वाधीनता संग्राम की शताब्दी को जंगे आज़ादी के रूप में मनाने का आयोजन कर रहे हैं, फ़िक्र से निहायत बेचेन हो उठे हैं. उन्होंने सरकार और जनता दोनों को चेतावनी दी है कि (1) 1857 नाख़ुश सिपाहियों की बग़ावत थी, (2) 1857 में आज़ादी की लड़ाई जैसा कोई सवाल नहीं था, (3) 1857 स्वार्थी सामन्तों का एक ग़दर था, (4) 1857 में जन क्रान्ति जैसा कोई ख़याल नहीं था, (5) शहनशाह बहादुरशाह में किसी तरह की कोई देशभक्ति नहीं थी, उनका अपने आप को हवाले कर देना साफ़ तौर से अपने सामन्ती साथियों के साथ दग़ाबाज़ी थी, (6) झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई को देशभक्त कहना मुनासिब न होगा, वे सिर्फ़ अपने गोद लिये लड़के को जायज़ हक़दार क़रार देने और झाँसी राज को वापस लेने के लिये शामिल हुईं और (7) पेशवा नाना धुन्धुपन्त अपनी आठ लाख की पैन्शन के लिये बलवाइयों का सहारा लेकर वक़्त परस्तों की शकल में सामने आये, वग़ैरा, वग़ैरा.

डाक्टर मुजमदार इतिहास के माने जाने विद्वानों में से एक हैं. इसलिए यह ज़रूरी है कि हम उनकी चेतावनी पर गम्भीरता से ग़ौर करें. डाक्टर मुजमदार एक क़दम और आगे जाकर ग़दर की तहरीक के जायज़ होने को ललकारते हैं. उनके मुताबिक़ ईस्ट इन्डिया कम्पनी की सरकार बाज़ाब्ता क़ानूनी सरकार थी इसलिये इसके सिपाहियों की बग़ावत उन्हें बाग़ी ही का ख़िताब देगी—देशभक्त का नहीं.

कम्पनी राज की बाज़ाब्ता हकूमत ?

आइये सब से पहले हम कम्पनी राज की बाज़ाब्ता हकूमत पर ही ग़ौर करें. ईस्ट इंडिया कम्पनी के साथ दिल्ली के किसी भी शहन्शाह का एक भी ऐसा सुलहनामा नहीं हुआ जिसमें दिल्ली के किसी शहनशाह ने अपने को कभी ईस्ट इंडिया कम्पनी की प्रजा कहलाने या कभी अंग्रेज़ों को अपना हाकिम माना हो.

इसके ख़िलाफ़ मुग़ल शहनशाह के फ़रमानों के ज़रिये ही अंग्रेज़ कम्पनी को अपनी तिजारती कोठियाँ बनाने के लिये कलकत्ता, मद्रास, सूरत वग़ैरा में जागीरें मिलीं थीं. इन जागीरों के लिये अंग्रेज़ कम्पनी दिल्ली दरबार को बराबर ख़िराज देती थी. गवर्नर जनरल से लेकर छोटे से छोटा अंग्रेज़ तक जब मुग़ल शहनशाह के दरबार में जाता

سن 1857 کی جنگ آزادی

وشومبھر ناتھ پانڈے

تواریخ کے مشہور بھارتیہ ودوان ڈاکٹر مجمدار نے جب سے یہ سماچار سنا ہے کہ بھارت سرکار اور جنتا دونوں—سن 1857 کے سوادھینتا سنگرام کی شتابدی کو جنگ آزادی کے روپ میں منانے کا آیوجن کر رہے ہیں، فکر سے نہایت بے چین ہو اٹھے ہیں. انہوں نے سرکار اور جنتا دونوں کو چیتاونی دی ہے کہ (1) 1857 ناخوش سپاہیوں کی بغاوت تھی، (2) 1857 میں آزادی کی لڑائی جیسا کوئی سوال نہیں تھا، (3) 1857 سوارتھی سامنتوں کا ایک غدر تھا، (4) 1857 میں جن کرانتی جیسا کوئی خیال نہیں تھا، ( ) شہنشاہ بہادرشاہ میں کسی طرح کی کوئی دیش بھکتی نہیں تھی، ان کا اپنے آپ کو حوالے کر دینا صاف طور سے اپنے سامنتی ساتھیوں کے ساتھ دغابازی تھی، (6) جھانسی کی رانی لکشمی بائی کو دیش بھکت کہنا مناسب نہ ہوگا، وے صرف اپنے گود لئے لڑکے کو جائز حقدار قرار دینے اور جھانسی راج کو واپس لینے کے لئے شامل ہوئیں اور (7) پیشوا نانا دھندھوپنت اپنی آٹھ لاکھ کی پنشن کے لئے بلوائیوں کا سہارا لے کر وقت پرستوں کی شکل میں سامنے آئے، وغیرہ وغیرہ.

ڈاکٹر مجمدار اتہاس کے مانے جانے ودوانوں میں سے ایک ہیں. اس لئے یہ ضروری ہے کہ ہم انکی چیتاونی پر گمبھیرتا سے غور کریں. ڈاکٹر مجمدار ایک قدم اور آگے جا کر غدر کی تحریک کے جائز ہونے کو للکارتے ہیں. انکے مطابق ایسٹ انڈیا کمپنی کی سرکار باضابطہ قانونی سرکار تھی اس لئے اس کے سپاہیوں کی بغاوت انہیں باغی ہی کا خطاب دے گی—دیش بھکت کا نہیں.

کمپنی راج کی باضابطہ حکومت ؟

آئیے سب سے پہلے ہم کمپنی راج کی باضابطہ حکومت پر ہی غور کریں. ایسٹ انڈیا کمپنی کے ساتھ دلی کے کسی بھی شہنشاہ کا ایک بھی ایسا صلح نامہ نہیں ہوا جس میں دلی کے کسی شہنشاہ نے اپنے کو کبھی ایسٹ انڈیا کمپنی کی پرجا کہلانے یا کبھی انگریزوں کو اپنا حاکم مانا ہو.

اس کے خلاف مغل شہنشاہ کے فرمانوں کے ذریعہ انگریز کمپنی کو اپنی تجارتی کوٹھیاں بنانے کے لئے کلکتہ، مدراس، سورت وغیرہ میں جاگیریں ملیں تھیں. ان جاگیروں کے لئے انگریز کمپنی دلی دربار کو برابر خراج دیتی تھی. گورنر جنرل سے لیکر چھوٹے سے چھوٹا انگریز تک جب مغل شہنشاہ کے دربار میں جاتا

था तो बाक़ी दरबारियों की तरह आदाब बजा लाता था. शहनशाह को नजर पेश करता था और अपनी मनसबदारी के दर्जे में अदब के साथ खड़ा रहता था ईस्ट इंडिया कम्पनी के गवर्नर जनरलों की मनसबदारी हैसियत में बेशक तरक्क़ी हुई. क्लाइव अगर पाँच हजारी मनसबदारी का ओहदा रखता था, तो बेंटिंक और उसके बाद के गवर्नर जनरल, शहनशाह फर्रुख़सियर के जमाने में यक़ीनी तौर पर दस हजारी मनसबदारी के दर्जे मे शुमार किये जाते थे. कम्पनी के हर गवर्नर जनरल की मोहर में "दिल्ली के बादशाह का फ़िदवियेे ख़ास" (यानी दिल्ली शहनशाह का ख़ास दरबारी) यह शब्द खुदे रहते थे.

गवर्नर जनरल शहनशाह की फ़रमाँबरदार रिआया

शहनशाह शाहआलम ने सब से पहले सन 1765 में क्लाइव का बगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी के हक़ दिये उसके बाद तरह तरह की साजिशो और ख़ानेजंगियो के जरिये अंग्रेजों ने दिल्ली के शहनशाह के दरबार में अपनी ताक़त को बढ़ाना शुरू किया. हालाँकि भारत मे रहने वाले कुल अंग्रेज अपने को दिल्ली शहन्शाह की प्रजा कहा करते थे पर वे शहनशाह को अपनी मुट्ठी मे रखना चाहते थे

शहनशाह शाहआलम ने इन परदेसियो की गुस्ताख़ी से आजिज आकर माधोजी सींधिया से मदद चाही माधा-जी ने दिल्ली जाकर फिर से अंग्रेजो की ताक़त को घटाकर दिल्ली के शहनशाह की असली हकूमत क़ायम की. राज-धानी और आस पास की फौजी मुहाफिजत का भार मरहटा फौजियो के सिपुर्द किया गया

शाहनशाह शाहआलम ने इस मौक़े पर माधाजी की तारीफ़ में एक फारसी नज्म लिखी जिसका मतलब है कि—माधोजी सींधिया मुझे मेरे बेटे के मानिन्द प्यारा है साम्राज की तकलीफें और सितम जल्दी से दूर करता है. विदेशी फ़िदवियों को वह बस में रखता है और मरकजी हकूमत की शान बढ़ाता है. नज्म के पहले दो मिसरे यह हैं--

माधो जी सींधिया फरजन्दे जिगर बन्दए मन
हस्त मसरूफ तलाफ़ीये सितमगारिये मा

इसी घटना से पानीपत के तीसरे महायुद्ध की बुनियाद पड़ती है. अंग्रेजो और मरहठो का मुक़ाबिला आख़िर हद तक पहुँचता है. ग्वालियर में अँग्रेज अपनी साजिशो का जाल बिछाते हैं. सन 1804 में मरहठो को दिल्ली छोड़ने पर मजबूर होना पड़ता है

अंग्रेज फिर दिल्ली के शहनशाह के ख़ास दोस्त बनते हैं, अपने को शहनशाह की "वफादार और फ़रमाबरदार रियाया" कहते है, मालिक की इन्तहाई वफादारी की क़सम खाते हैं और शाहनशाह को हर साल बारह लाख रुपये ख़िराज देने का अहद करते हैं.

تھا تو باقی درباریوں کی طرح آداب بجا لاتا تھا، شہنشاہ کو نذر پیش کرتا تھا اور اپنی منصبداری کے درجے میں ادب کے ساتھ کھڑا رہتا تھا ایسٹ انڈیا کمپنی کے گورنر جنرلوں کی منصبداری حیثیت میں بیشک ترقی ہوئی کلائیو اگر پانچ ہزاری منصبداری کا عہدہ رکھتا تھا، تو بینٹنک اور اس کے بعد کے گورنر جنرل، شہنشاہ فرخ سیئر کے زمانے میں یقینی طور پر، دس ہزاری منصبداری کے درجے میں شمار کئے جاتے تھے۔ کمپنی کے ہر گورنر جنرل کی مہر میں "دلی کے بادشاہ کا فدویئہ خاص" ('یعنی دلی شہنشاہ کا خاص درباری') یہ شبد کھدے رہتے تھے۔

گورنر جنرل شہنشاہ کی فرمانبردار رعایا

شہنشاہ شاہ عالم نے سب سے پہلے سن 1765 میں کلائیو کو بنگال، بہار اور اڑیسہ کی دیوانی کے حق دئیے اس کے بعد طرح طرح کی سازشوں اور خانہ جنگیوں کے ذریعہ انگریزوں نے دلی کے شہنشاہ کے دربار میں اپنی طاقت کو بڑھانا شروع کیا۔ حالانکہ بھارت میں رہنے والے کل انگریز اپنے کو دلی شہنشاہ کی پرجا کہا کرتے تھے پر وے شہنشاہ کو اپنی مٹھی میں رکھنا چاہتے تھے

شہنشاہ شاہ عالم نے ان پردیسیوں کی گستاخی سے عاجز آکر مادھو جی سندھیا سے مدد چاہی۔ مادھو جی نے دلی جا کر پھر سے انگریزوں کی طاقت کو گھٹا کر دلی کے شہنشاہ کی اصلی حکومت قائم کی راجدھانی اور آس پاس کی فوجی محافظت کا بھار مرہٹا فوجیوں کے سپرد کیا گیا

شہنشاہ شاہ عالم نے اس موقع پر مادھو جی کی تعریف میں ایک فارسی نظم لکھی جس کا مطلب ہے کہ—مادھو جی سندھیا مجھے میرے بیٹے کے مانند پیارا ہے۔ سامراج کی تکلیف اور ستم جلدی سے دور کرتا ہے۔ ودیشی فدویوں کو وہ بس میں رکھتا ہے اور مرکزی حکومت کی شان بڑھاتا ہے نظم کے پہلے دو مصرے یہ ہیں —

مادھو جی سندھیا فرزند جگر بندۂ من
ہست مصروف تلافئی ستمگارئی ما۔

اسی گھٹنا سے پانی پت کے تیسرے مہایدھ کی بنیاد پڑتی ہے انگریزوں اور مرہٹوں کا مقابلہ آخر حد تک پہونچتا ہے۔ گوالیر میں انگریز اپنی سازشوں کا جال بچھاتے ہیں۔ سن 1804 میں مرہٹوں کو دلی چھوڑنے پر مجبور ہونا پڑتا ہے۔

انگریز پھر دلی کے شہنشاہ کے خاص دوست بنتے ہیں، اپنے کو شہنشاہ کی 'وفادار اور فرمانبردار رعایا' کہتے ہیں، مالک کی انتہائی وفاداری کی قسم کھاتے ہیں اور شہنشاہ کو ہر سال بارہ لاکھ روپئے خراج دینے کا عہد کرتے ہیں۔

सन् 1805 में लार्ड वैल्जली ने शहन्शाह शाहआलम के सामने सुझाव पेश किया कि 'अगर शहन्शाह दिल्ली के बजाय मुंगेर को अपनी राजधानी बनाएँ तो शहन्शाह का 'फ़िदविये खास' (यानी गवर्नर) "जनरल शहन्शाह के चैन व आराम का खास बन्दोबस्त कर सकता है."

इस तजवीज़ का जवाब देते हुए शहन्शाह ने *लिखा*— "शहन्शाह के लिये क्या मुनासिब और ठीक है इसको शहन्शाह अच्छी तरह जानता है तुम्हारी इस नामुनासिब तजवीज को मैं नफरत के साथ रद्द करता हूँ तुम अहद कर चुके हो कि जिस वक्त, जहाँ भी और जो भी हुक्म मैं दूँ, उस पर तुम वफ़ादारी के साथ अमल करोगे. लार्ड वैलजली ने फ़ौरन अपनी तजवीज वापस लेली. सन् 1806में शहनशाह शाहआलम चल बसे.

लार्ड लेक का इक़रारनामा

शाहआलम के बाद अकबरशाह दोयम दिल्ली के तख्त पर बैठा. पहले सर फ्रेडरिक स्टेन और उसके बाद सर चार्ल्स मेटकाफ़ दिल्ली के रैजीडैंट मुकर्रर हुए. दोनो अँग्रेज रैज़ीडैन्ट दो हज़ारी मनसबदार की तरह शहन्शाह के सामने रस्मी तौर से 'तसलीम, ताज़ीम, कोरनिश और मुजरा" किया करते थे और शाही खान्दान के हर शख्स की मुनासिब इज्ज़त करते थे, जब तक दरबार में रहते थे सदा खड़े रहते थे धीरे धीरे अंग्रेज कम्पनी की तरफ से खिराज की रकम अदा करने मे ढिलाई होने लगी अकबर शाह ने उन्हें ताकीद की. बाद में राजा राममोहन राय को इंगलिस्तान की मलका से सीधे बात करने को भेजा.

इसके बाद दिल्ली के आखिरी शहन्शाह बहादुरशाह की हुकूमत आई बहादुरशाह ने अँग्रेज "फ़िदविये खास' से लार्ड लेक के इक़रारनामे की शर्त के मुताबिक़ खिराज की रकम तलब की. इस बीच दिल्ली के आस पास के इलाके पर कम्पनी का पंजा कसने लगा. शहन्शाह दिल्ली उस इकरारनामे के मुताबिक कम्पनी के खज़ानों का मालिक समझा जाता था. उसी इकरारनामे में अँग्रेजी फौज के सिपाही शहन्शाह दिल्ली की वफ़ादारी की कसम उठाते थे और उन्हें शहन्शाह के नाम पर तन्ख्वाह मिलती थी.

हर ईद, नौरोज और शहन्शाह की सालगिरह के दिन गवर्नर जनरल और अंग्रेज कमांडर-इन-चीफ दोनो शहन्शाह के दरबार में हाज़िर होकर या रैजिडेन्ट की मार्फ़त शहन्शाह के सामने नज़रें पेश किया करते थे सन 1837 में बहादुरशाह की तख्तनशीनी के वक्त भी नज़रें पेश की गई और उस वक्त तक बराबर चलती रहीं जब तक लार्ड एलिनबरो ने गवर्नर जनरली का बोझ नहीं सम्भाला.

سن 1805 میں لارڈ ولزلی نے شہنشاہ شاہ عالم کے سامنے تجویز پیش کیا کہ "اگر شہنشاہ دلی کے بجائے مونگیر کو اپنی راجدھانی بنائیں تو شہنشاہ کا 'فدویہ خاص' (یعنی گورنر جنرل) شہنشاہ کے چین و آرام کا خاص بندوبست کر سکتا ہے."

اس تجویز کا جواب دیتے ہوئے شہنشاہ نے لکھا— "شہنشاہ کے لئے کیا مناسب اور ٹھیک ہے اس کو شہنشاہ اچھی طرح جانتا ہے. تمہاری اس نامناسب تجویز کو میں نفرت کے ساتھ رد کرتا ہوں تم عہد کر چکے ہو کہ جس وقت' جہاں بھی اور جو بھی حکم میں دوں اس پر تم وفاداری کے ساتھ عمل کرو گے." لارڈ ولزلی نے فوراً اپنی تجویز واپس لے لی. سن 1806 میں شہنشاہ شاہ عالم چل بسے.

لارڈ لیک کا اقرار نامہ

شاہ عالم کے بعد اکبر شاہ دوئم دلی کے تخت پر بیٹھا. پہلے سر فریڈرک اسٹین اور اس کے بعد سر چارلس مٹکاف دلی کے ریزیڈنٹ مقرر ہوئے. دونوں انگریز ریزیڈنٹ دوہزاری منصبدار کی طرح شہنشاہ کے سامنے رسمی طور سے 'تسلیم' تعظیم' کورنش اور مجرا' کیا کرتے تھے اور شاہی خاندان کے ہر شخص کی مناسب عزت کرتے تھے جب تک دربار میں رہتے تھے سدا کھڑے رہتے تھے. دھیرے دھیرے انگریز کمپنی کی طرف سے خراج کی رقم ادا کرنے میں ڈھلائی ہونے لگی. اکبرشاہ نے انہیں تاکید کی. بعد میں راجہ رام موہن رائے کو انگلستان کی ملکہ سے سیدھے بات کرنے کو بھیجا

اس کے بعد دلی کے آخری شہنشاہ بہادر شاہ کی حکومت آئی. بہادر شاہ نے انگریز 'فدویہ خاص' سے لارڈ لیک کے اقرار نامہ کی شرط کے مطابق خراج کی رقم طلب کی. اس بیچ دلی کے آس پاس کے علاقے پر کمپنی کا پنجہ کسنے لگا. شہنشاہ دلی اس اقرار نامے کے مطابق کمپنی کے خزانوں کا مالک سمجھا جاتا تھا. اسی اقرار نامہ کے مطابق انگریزی فوج کے سپاہی شہنشاہ دلی کی وفاداری کی قسم اٹھاتے تھے اور انہیں شہنشاہ کے نام پر تنخواہ ملتی تھی.

ہر عید' نوروز اور شہنشاہ کی سالگرہ کے دن گورنر جنرل اور انگریز کمانڈر ان-چیف دونوں شہنشاہ کے دربار میں حاضر ہو کر یا ریزیڈنٹ کی معرفت شہنشاہ کے سامنے نذریں پیش کیا کرتے تھے. سن 1837 میں بہادر شاہ کی تخت نشینی کے وقت بھی نذریں پیش کی گئیں اور اس وقت تک برابر چلتی رہیں جب تک لارڈ ایلنبرو نے گورنر جنرلی کا بوجھ نہیں سنبھالا

अँग्रेजों की साज़िश

सन 1856 में गवर्नर जनरल ने रैज़ीडैन्ट को अपने एक ख़ुफ़िया ख़राते मे ख़बर दी —

'शहन्शाह की शान और दबदबे की बहुत सी अलामतें कम हो चुकी हैं अब ऐसा मालूम होता है कि शहन्शाह बहादुरशाह के मरने के बाद क़लम के एक डोबे में बादशाही को ख़तम कर देना कुछ मुश्किल न होगा शहन्शाह का ख़िराज और नज़रें हम धीरे धीरे बन्द कर रहे हैं बादशाह के नाम से जो कम्पनी का सिक्का ढाला जाता था वह भी हमने बन्द कर दिया गवर्नर जनरल की मोहर में जो 'बादशाह के फ़िद्वियेे ख़ास' लफ्ज़ रहते थे, वे भी हमने इस बार निकाल दिये अब सिर्फ़ मुग़ल शहन्शाह की शहन्शाहियत का ख़िताब रह गया है जिसे बहादुरशाह की मौत के बाद ख़तम करना हमारे लिये इतना मुश्किल न होगा

शहन्शाह बहादुरशाह और उसके वफ़ादार सूबेदार, जिनमें पेशवा, अवध, मध्यभारत वग़ैरा के हुक्मराँ शामिल थे, साज़िश का पता लगते ही ग़ुस्से से भर गये. वे दग़ाबाज़ी और ग़द्दारी के लिये अँग्रेजों को मुनासिब सज़ा देने की तजवीज बनाने लगे '

इन्क़लाब की मुनासिबत

सन् 1857 के जङ्गे आज़ादी के दिनों तक शहन्शाह बहादुरशाह क़ानूनी और सियासी नज़रिये से भारत का ख़ुदमुख़्तार शहन्शाह था अंग्रेज़ों ने उसके साथ वफ़ादारी का सुलहनामा किया था शहन्शाह का ख़िराज और नज़राना देना क़ुबूल किया था शहन्शाह के दरबार में अँग्रेज़ों की वही हैसियत थी जो भारत के दूसरे जागीरदारों की थी सिर्फ़ फ़र्क इतना था कि अंग्रेज़ गवर्नर जनरल एक ऐसा गुस्ताख़ और चालाक मनसबदार था जो दिल्ली के शहन्शाह के नाम पर रियाया से टैक्स वसूल करके बीच में ख़ुद बेईमानी से हड़प जाता था धीरे-धीरे यह गुस्ताख़ मनसबदार बग़ावत पर आमादा हो गया उसने 'फ़िद्वियेे ख़ास" लिखना छोड़ दिया, उसने नामुनासिब तौर से अपने सिक्कों से बादशाह का नाम निकाल दिया और बादशाह की रिआया, भारत की जनता का हर तरह से नोचने खसोटने लगा.

यह सच है कि बादशाह कमज़ोर हो गया था और दिल्ली दरबार का दबदबा ढीला पड़ गया था और भारत की जनता विदेशी ज़ालिमों से अपने को बचाने में नाक़ाबिल थी पर उससे उसका जायज़ हकूमत और भारत के सरताज की उसकी क़ानूनी हैसियत कैसे बदल सकती थी ?

क़ानूनी नज़रिये से कम्पनी की फ़ौजें मनसबदार गवर्नर जनरल की नहीं बल्कि शहन्शाह की फ़ौजें थीं. पेशवा नाना धुन्धपन्त, रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हज़रत महल, राजा सतारा

انگریزوں کی سازش

سن 1856 میں گورنر جنرل نے ریزیڈنٹ کو اپنے ایک خفیہ خریطے میں خبر دی:—

شہنشاہ کی شان اور دبدبہ کی بہت سی علامتیں کم ہو چکیں ہیں ۔ اب ایسا معلوم ہوتا ہے کہ شہنشاہ بہادرشاہ کے مرنے کے بعد قلم کے ایک ڈوبے میں بادشاہی کو ختم کر دینا کچھ مشکل نہ ہوگا شہنشاہ کا خراج اور نذریں ہم دھیرے دھیرے بند کر رہے ہیں بادشاہ کے نام سے جو کمپنی کا سکہ ڈھالا جاتا تھا وہ بھی ہم نے بند کر دیا گورنر جنرل کی مہر میں جو بادشاہ کے فدوی خاص لفظ رہتے تھے' وے بھی ہم نے اس بار نکال دئیے ۔ اب صرف مغل شہنشاہ کی شہنشاہیت کا خطاب رہ گیا ہے جسے بہادر شاہ کی موت کے بعد ختم کرنا ہمارے لئے اتنا مشکل نہ ہوگا "

شہنشاہ بہادر شاہ اور اس کے وفادار صوبیدار' جن میں پیشوا' اودھ' مدھیہ بھارت وغیرہ کے حکمراں شامل تھے' اس سازش کا پتہ لگتے ہی غصے سے بھر گئے وے اس دغابازی اور غداری کے لئے انگریزوں کو مناسب سزا دینے کی تدبیر بنانے لگے ۔

انقلاب کی مناسبت

سن 1857 کے جنگ آزادی کے دنوں تک شہنشاہ بہادر شاہ قانونی اور سیاسی نظریہ سے بھارت کا خودمختار شہنشاہ تھا ۔ انگریزوں نے اس کے ساتھ وفاداری کا صلح نامہ کیا تھا شہنشاہ کو خراج اور نذرانہ دینا قبول کیا تھا ۔ شہنشاہ کے دربار میں انگریزوں کی وہی حیثیت تھی جو بھارت کے دوسرے جاگیرداروں کی تھی صرف فرق اتنا تھا کہ انگریز گورنر جنرل ایک ایسا گستاخ اور چالاک منصبدار تھا جو دلی کے شہنشاہ کے نام پر رعایا سے ٹیکس وصول کر کے بیچ میں خود بے ایمانی سے ہڑپ جاتا تھا دھیرے دھیرے یہ گستاخ منصبدار بغاوت پر آمادہ ہو گیا اس نے اپنے کو "فدوی خاص" لکھنا چھوڑ دیا اس نے نامناسب طور سے اپنے سکوں سے بادشاہ کا نام نکال دیا اور بادشاہ کی رعایا بھارت کی جنتا کو ہر طرح سے نوچنے کھسوٹنے لگا ۔

یہ سچ ہے کہ بادشاہ کمزور ہو گیا تھا اور دلی دربار کا دبدبہ ڈھیلا پڑ گیا تھا اور بھارت کی جنتا ودیشی ظالموں سے اپنے کو بچانے میں نااہل تھی پر اس سے اس کی جائز حکومت' اور بھارت کے سرتاج کی اس کی قانونی حیثیت کیسے بدل سکتی تھی ؟

قانونی نظریہ سے کمپنی کی فوجیں منصبدار گورنر جنرل کی نہیں بلکہ شہنشاہ کی فوجیں تھیں پیشوا نانا دھندھو پنت' رانی لکشمی بائی' بیگم حضرت محل' راجہ ستارا

बाबू कुंवरसिंह वग़ैरा का शहन्शाह के नाम पर सदा सलामी देना एक सही, क़ानूनी और जायज़ चीज़ थी क्योंकि 1857 तक किसी सुलहनामे के ज़रिये या अंग्रेज़ों के किसी भी ऐलान के ज़रिये शहन्शाह दिल्ली की क़ानूनी शहन्शाहियत खतम नहीं हुई थी.

बहादुरशाह का नये सिरे से भारत का शहन्शाह बनाने की बात नहीं थी, वह तो बना बनाया असल शहन्शाह था ही. इसके खिलाफ अंग्रेज़ बाग़ी और .ग़बन के मुजरिम थे और इसके लिये उन्हें सज़ा देने का जो भी कारवाई की गई वह इन्साफ और क़ानून के रू से ठीक नहीं थी.

सन 1857 में शहन्शाह बहादुरशाह ने कम्पनी को मनसबदारी और दीवानी से बरखास्त कर दिया उसका इसे इन्साफ की रू से हक़ था. पूरे भारत की फौजों ने शाही खज़ाना ला लाकर सीधा बहादुरशाह के क़दमों पर रखना शुरू किया कम्पनी की .फौजो ने बरखास्त मनसबदार की जगह सीधी शहन्शाह का वफादारी का क़सम ली अंग्रेजों ने दिल्ली के शहन्शाह के वफादारों, और सूबेदारों की रियासतें नामुनासिब ढङ्ग से हड़प ली थीं उनका यह नाजायज़ हरकत बिल्कुल ग़ैर क़ानूनी थी शहन्शाह का पूरा हक़ था कि अपने उन जागीरदारों की—झाँसी की रानी, सतारा के राजा, पेशवा नाना साहब धुन्धपन्त, लखनऊ के नवाब बिरजिस कदर और बाबू कुँवरसिंह वग़ैरा की फिर तक़ुर्री का ऐलान करे उसका उस पूरा हक़ था. उसके इस क़ानूनी हक़ से कौन इन्कार कर सकता है ?

सिख राजाओं के नाम संदेश

आज़ादी की उस जंग में सिख राजाओं ने बाग़ी अंग्रेज़ों का साथ दिया. बहादुरशाह ने उन्हें अपनी तरफ वफादार रहने का फरमान देकर ताजुद्दीन का भेजा ताजुद्दीन ने उनसे मिलकर शहन्शाह को नीचे लिखा खत लिखा —

'पंजाब के सिख राजा सुस्त और बुज़दिल हैं. वह फिरंगियों के हाथों के खिलौने बने हुए हैं मैंने उनसे बातें कीं उनके सामने अपना कलेजा पानी कर दिया. मैंने उन्हें समझाया कि मुल्क की आज़ादी से वे क्यों दग़ाबाज़ी करते हैं ? क्या वे 'अपनी हकूमत' में इससे अच्छे न रहेंगे ? उन्होंने जवाब दिया— दे खये हम सब मौक़े के मुन्तज़िर हैं. ज्यों ही हमें शहन्शाह का हुक्म मिलेगा हम एक दिन के अन्दर उन 'बाग़ी' फिरंगियों को कुचल डालेंगे.' कहने को तो यह राजा ऐसा कहते हैं मगर मेरा अन्दाज़ा है कि हम उन पर बिल्कुल यक़ीन नहीं कर सकते."

उस वक्त के छपे हुए हालात को देखते हुए बहादुरशाह पर स्वार्थ या ग़द्दारी का इल्ज़ाम लगाना सच्चाई के खिलाफ होगा. जैपुर, जोधपुर, बीकानेर, अलवर, ग्वालियर वग़ैरा

بابو کنور سنگھ وغیرہ کا شہنشاہ کے نام پر سدا سلامی دینا ایک صحیح، قانونی اور جائز چیز تھی کیونکہ 1857 تک کسی صلح نامے کے ذریعہ یا انگریزوں کے کسی بھی اعلان کے ذریعہ شہنشاہ دلی کی قانونی شہنشاہیت ختم نہیں ہوئی تھی۔

بہادر شاہ کو نئے سرے سے بھارت کا شہنشاہ بنانے کی بات نہیں تھی وہ تو بنا بنایا اصل شہنشاہ تھا ہی اس کے خلاف انگریز باغی اور غبن کے مجرم تھے اور اس کے لئے انہیں سزا دینے کی جو بھی کارروائی کی گئی وہ انصاف اور قانون کے رو سے ٹھیک نہیں تھی۔

سن 1857 میں شہنشاہ بہادر شاہ نے کمپنی کو منصبداری اور دیوانی سے برخاست کر دیا۔ اس کا اسے انصاف کی رو سے حق تھا پورے بھارت کی فوجوں نے شاہی خزانہ لا لا کر سیدھا بہادر شاہ کے قدموں پر رکھنا شروع کیا کمپنی کی فوجوں نے برخاست منصبدار کی جگہ سیدھی شہنشاہ کی وفاداری کی قسم لی۔ انگریزوں نے دلی کے شہنشاہ کے وفاداروں اور صوبیداروں کی ریاستیں نامناسب ڈھنگ سے ہڑپ لی تھیں ان کی یہ ناجائز حرکت بالکل غیر قانونی تھی۔ شہنشاہ کو پورا حق تھا کہ اپنے ان جاگیرداروں کی—جھانسی کی رانی، ستارا کے راجہ پیشوا نانا صاحب دھندھو پنت لکھنؤ کے نواب برجیس قدر اور بابو کنور سنگھ وغیرہ کی پھر تقرری کا اعلان کریں اس کا اسے پورا حق تھا۔ اس کے اس قانونی حق سے کون انکار کر سکتا ہے ؟

سکھ راجاؤں کے نام سندیش

آزادی کی اس جنگ میں سکھ راجاؤں نے باغی انگریزوں کا ساتھ دیا۔ بہادر شاہ نے انہیں اپنی طرف وفادار رہنے کا فرمان دے کر تاج الدین کو بھیجا۔ تاج الدین نے ان سے مل کر شہنشاہ کو نیچے لکھا خط لکھا —

"پنجاب کے سکھ راجہ سست اور بزدل ہیں۔ وہ فرنگیوں کے ہاتھ کے کھلونے بنے ہوئے ہیں میں نے ان سے باتیں کیں ان کے سامنے اپنا کلیجہ پانی کر دیا میں نے انہیں سمجھایا کہ ملک کی آزادی سے وہ کیوں دغابازی کرتے ہیں ؟ کیا وہ 'اپنی حکومت' میں اس سے اچھے نہ رہیں گے ؟ انہوں نے جواب دیا— دیکھئے ہم سب موقع کے منتظر ہیں۔ جوں ہی ہمیں شہنشاہ کا حکم ملے گا ہم ایک دن کے اندر ان 'باغی' فرنگیوں کو کچل ڈالیں گے۔ کہنے کو یہ راجہ ایسا کہتے ہیں مگر میرا اندازہ ہے کہ ہم ان پر بالکل یقین نہیں کر سکتے۔"

اس وقت کے چھپے ہوئے حالات کو دیکھتے ہوئے بہادر شاہ پر سوارتھ یا غداری کا الزام لگانا سچائی کے خلاف ہوگا۔ جے پور، جودھپور، بیکانیر، الور، گوالیار وغیرہ

राजाओं के नाम 'बहादुरशाह .खत के उसके बेदारव .ख्याल पर पूरी रोशनी डालते हैं. इस .खत को सर मेटकाफ़ ने अपनी किताब 'नेटिव नरेटिव' के सफ़ा 226 पर दर्ज किया है. शहन्शाह के शब्द हैं :—

"मेरी यह दिली तमन्ना है कि जिस ज़रिये और जिस क़ीमत पर भी हो फिरंगियों को हिन्दुस्तान से बाहर कर दिया जाये. मेरी यह ज़बरदस्त ख़्वाहिश है कि तमाम हिन्दुस्तान को फ़िरंगियों से आज़ाद कराया जाये. लेकिन इस मक़सद को हासिल करने के लिये जो इन्क़लाबी जंग शुरू करदी गई है वह उस वक़्त तक कामियाब नहीं हो सकती जिस वक़्त तक कोई ऐसा शख़्स, जो इस तमाम तहरीक के बोझ को अपने ऊपर उठा सके, जो क़ौम की मुख़्तलिफ़ ताक़तों को एक धागे में पिरोकर अपने को तमाम क़ौम का नुमाइन्दा कह सके, मैदान में आकर इस अज़ीम उश्शान कोशिश की बाग डोर अपने हाथों में न लेले. अपने पाक वतन से फ़िरंगियों को निकाल देने के बाद मुग़ल .खान्दान के ज़ाती फ़ायदे के लिये हिन्दुस्तान पर हकूमत करने की मेरी ज़रा भी .ख्वाहिश नहीं है. अगर मेरे सब सरदार दुश्मन को निकालने की ग़रज़ से अपनी तलवार खींचने के लिये तैयार हों तो मैं इसके लिये राज़ी हूँ कि हिन्दुस्तान पर हकूमत करने के अपने ख़ान्दान के तमाम शाही अख़्तियारात और पुश्तैनी हक़ूक़ अपने सरदारों की एक ऐसी कौंसल के हाथ में सौंप दूँ, जो इस काम के लिये चुनी जाये. मैंने बीस बरस तक हिन्दुस्तान की शहन्शाहियत की और अब कोई ज़ाती .ख्वाहिश मेरे दिल में बाक़ी नहीं रही."

ख़िराज की आख़िरी क़िस्त

जङ्गे आज़ादी के इस महान नेता के ये कितने शानदार शब्द हैं. दिल्ली के ज़वाल के बाद जब कप्तान हडसन ने बहादुरशाह के जवान बेटों और पोतों के सर काटकर एक तश्त में ढक कर शहन्शाह के सामने लाल क़िले में पेश किये तो यह कहकर पेश किये थे :—

"जहाँपनाह ! मनसबदार कम्पनी की तरफ़ से यह आप का ख़िराज और नज़र है, जो बरसों से बन्द थी." इसके बाद लाल क़िले में एक फ़ौजी अदालत के सामने शहन्शाह बहादुरशाह पर मुक़दमा चला. शहन्शाह ने उसमें किसी तरह का हिस्सा लेने से इन्कार कर दिया.

सन 18 8 में छपी 'नरेटिव आफ़ दी इन्डियन रिवोल्ट' नामी किताब के लिखने वाले ने साफ़ लिखा है कि अपने मुक़दमे में बहादुरशाह ने बयान देने से इन्कार कर दिया. उस मुक़दमे के सिलसिले में बहादुरशाह का बयान जैसा कहा गया है बिल्कुल फ़र्ज़ी है और ग़द्दार मिरज़ा इलाही बख़्श का लिखा हुआ है. कैसा अजीब बात थी कि शहन्शाह के

کے راجاؤں کے نام بہادر شاہ کے خط اُس کے بے غرض خیال پر پوری روشنی ڈالتے ہیں ۔ اس خط کو سر مٹکاف نے اپنی کتاب 'نیٹو نریٹو' کے صفحہ 226 پر درج کیا ہے ۔ شہنشاہ کے شبد ہیں:—

"میری یہ دلی تمنا ہے کہ جس ذریعہ اور جس قیمت پر بھی ہو فرنگیوں کو ہندستان سے باہر کر دیا جائے ۔ میری یہ زبردست خواہش ہے کہ تمام ہندستان کو فرنگیوں سے آزاد کرایا جائے ۔ لیکن اِس مقصد کو حاصل کرنے کے لئے جو انقلابی جنگ شروع کر دی گئی وہ اِس وقت تک کامیاب نہیں ہو سکتی جس وقت تک کوئی ایسا شخص، جو اس تمام تحریک کے بوجھ کو اپنے اُوپر اُٹھا سکے، جو قوم کی مختلف طاقتوں کو ایک دھاگے میں پرو کر اپنے کو تمام قوم کا نمائندہ کہہ سکے، میدان میں آ کر اِس عظیم الشان کوشش کی باگ ڈور اپنے ہاتھوں میں نہ لے لے ۔ اپنے پاک وطن سے فرنگیوں کو نکال دینے کے بعد مغل خاندان کے ذاتی فائدے کے لئے ہندستان پر حکومت کرنے کی میری ذرا بھی خواہش نہیں ہے ۔ اگر آپ میرے سب سردار دشمن کو نکالنے کی غرض سے اپنی تلوار کھینچنے کے لئے تیار ہوں تو میں اِس کے لئے راضی ہوں کہ ہندستان پر حکومت کرنے کے اپنے خاندان کے تمام شاہی اختیارات اور پشتینی حقوق اپنے سرداروں کی ایک ایسی کونسل کے ہاتھ میں سونپ دوں، جو اِس کام کے لئے چنی جائے ۔ میں نے بیس برس تک ہندستان کی شہنشاہیت کی اور اب کوئی ذاتی خواہش میرے دل میں باقی نہیں رہی ۔"

خراج کی آخری قسط

جنگ آزادی کے اِس مہان نیتا کے کتنے شاندار شبد ہیں ۔ دلی کے زوال کے بعد جب کپتان ہڈسن نے بہادر شاہ کے جوان بیٹوں اور پوتوں کے سر کاٹ کر ایک طشت میں ڈھک کر شہنشاہ کے سامنے لال قلعے میں پیش کئے تو یہ کہہ کر پیش کئے تھے:—

"جہاں پناہ ! منصبدار کمپنی کی طرف سے یہ آپکا خراج اور نذر ہے، جو برسوں سے بند تھی ۔" اِس کے بعد لال قلعے میں ایک فوجی عدالت کے سامنے شہنشاہ بہادرشاہ پر مقدمہ چلا ۔ شہنشاہ نے اِس میں کسی طرح کا حصہ لینے سے انکار کر دیا ۔

سن 1858 میں چھپی 'نریٹو آف دی انڈین ریوولٹ' نامی کتاب کے لکھنے والے نے صاف لکھا ہے کہ اپنے مقدمے میں بہادر شاہ نے بیان دینے سے اِنکار کر دیا ۔ اُس مقدمے کے سلسلے میں بہادر شاہ کا بیان جیسا کہا گیا ہے بالکل فرضی ہے اور غدار مرزا الٰہی بخش کا لکھا ہوا ہے ۔ کیسی عجیب بات تھی کہ شہنشاہ کے

'फ़िदवियें ख़ास' ख़ुद शहन्शाह पर मुक़द्दमा चलाएँ, ऐसे फ़िदवी जो इस देश के नहीं थे, शहन्शाह की प्रजा नहीं थे, जो विदेशी थे और आजकल के अन्तर्राष्ट्रीय (बयनुलअक़वामी) क़ानून के मुताबिक़ जिन्हें इस देश में साज़िश करने के लिये कड़ी से कड़ी सज़ा मिलनी चाहिये थी.

अपने त्याग व्रत की ख़्वाहिश को ज़ाहिर करते हुए महारानी लक्ष्मीबाई ने कहा था कि :—

"अपने महान देश को विदेशियों के पंजे से छुटकारा दिलाने के लिये दसियों फाँसी क़ुर्बान हैं. मैं अपने लिये नहीं, अपने बेटे के लिए नहीं, फांसी के लिए नहीं, पूरे हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिए इस पाक इन्क़लाबी जंग में शामिल हुई हूँ." (सर जान के—कानफ़ीडेन्शल रैकार्ड्स से, जिल्द 3, सफ़ा 241)

यह है सन् 1857 के इन्क़लाब का दीबाचा, उस वक़्त के इन्क़लाबी नेताओं की क़ुर्बानी की ख़्वाहिश, जिसने लाखों देश के वफ़ादारों का अपना सब कुछ क़ुर्बान करने के लिए हौसला बढ़ाया. उत्तर प्रदेश की जनता ने उस इन्क़लाब को कामयाब बनाने के लिए जो बड़ी से बड़ी क़ुर्बानी की उसकी चर्चा एक दूसरा मज़मून है.

सिपाहियों की बग़ावत या अवामी इन्क़लाब

पुरानी पीढ़ी के भारतीय तारीख़दानों ने अपनी किताबों में सन् 1857 के जंगे आज़ादी को सिपाहियों की बग़ावत का नाम दिया है. ख़ास ज़रियों की बुनियाद पर इन तवारीख़दानों ने यह नतीजा निकाला है कि—"इस तरह की झूठी अफ़वाहें फैल गईं कि नये कारतूसों में गाय और सूअर की चरबी का इस्तेमाल किया गया है. इस ख़बर से सिपाही जोश में आ गये और सारा उत्तर भारत ग़दर का अखाड़ा बन गया. इस असलियत की छानबीन के लिये पार्लीमेंट ने एक कमेटी मुक़र्रर की जो इस नतीजे पर पहुँची कि यह ख़बर बिल्कुल झूठी थी." (सन् 1910 से 1920 तक के महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री, सेन, जोशी, घोष की हाई स्कूल दर्जों के लिए टैक्स्ट बुकें). तारीख़ के तुल्बा को यह बताने की बराबर कोशिश की गई कि सिपाहियों का यह जोश ख़्याली था और उनकी इस जोशीली हालत का बरख़ास्त शुदा जागीरदारों ने ग़लत इस्तेमाल किया. (मूरलैन्ड का इतिहास)

मज़हबी ख़्यालों की तौहीन

कप्तान टी. मैकन ने 22 मार्च सन 1832 को पार्लीमेंट की सिलैक्ट कमेटी के सामने अपनी गवाही देते हुए कहा था :—

'فدویٔ خاص' خود شہنشاہ پر مقدمہ چلائیں' ایسے فدوی جو اِس دیش کے نہیں تھے' شہنشاہ کی پرجا نہیں تھے' جو ویدیشی تھے اور آجکل کے انتراشٹریہ (بین الاقوامی) قانون کے مطابق جنہیں اِس دیش میں سازش کرنے کے لئے کڑی سے کڑی سزا ملنی چاہئے تھی ۔

اپنے تیاگ برت کی خواہش کو ظاہر کرتے ہوئے مہارانی لکشمی بائی نے کہا تھا کہ:—

''اپنے مہان دیش کو ویدیشیوں کے پنجے سے چھٹکارا دلانے کے لئے دسیوں پھانسی قربان ہیں ۔ میں اپنے لئے نہیں' اپنے بیٹے کے لئے نہیں' پھانسی کے لئے نہیں' پورے ہندستان کی آزادی کے لئے اِس پاک اِنقلابی جنگ میں شامل ہوئی ہوں ۔'' (سرجان کے—کانفیڈینشل ریکارڈس سے' جلد تین' صفحہ 241) ۔

یہ ہے سن 1857 کے انقلاب کا دیباچہ' اس وقت کے انقلابی نیتاؤں کی قربانی کی خواہش جس نے لاکھوں دیش کے وفاداروں کو اپنا سب کچھ قربان کرنے کے لئے حوصلہ بڑھایا ۔ اتر پردیش کی جنتا نے اُس انقلاب کو کامیاب بنانے کے لئے جو بڑی سے بڑی قربانی کی اِس کی چرچا ایک دوسرا مضمون ہے ۔

سپاہیوں کی بغاوت یا عوامی انقلاب

پرانی پیڑھی کے بھارتیہ تاریخ دانوں نے اپنی کتابوں میں سن 1857 کے جنگ آزادی کو سپاہیوں کی بغاوت کا نام دیا ہے ۔ خاص ذریعوں کی بنیاد پر اِن تواریخ دانوں نے یہ نتیجہ نکالا ہے کہ ۔ ''اِس طرح کی جھوٹی افواہیں پھیل گئیں کہ نئے کارتوسوں میں گائے اور سور کی چربی کا استعمال کیا گیا ہے ۔ اِس خبر سے سپاہی جوش میں آگئے اور سارا اتر بھارت غدر کا اکھاڑا بن گیا ۔ اِس اصلیت کی چھان بین کے لئے پارلیمنٹ نے ایک کمیٹی مقرر کی جو اِس نتیجہ پر پہنچی کہ یہ خبر بالکل جھوٹی تھی ۔'' (سن 1910 سے 1920 تک کے مہامہوپادھیائے ہرپرشاد شاستری' سین' جوشی' گھوش کی ہائی اسکول درجوں کے لئے' ٹیکسٹ بکیں) تاریخ کے طلبا کو یہ بتانے کی برابر کوشش کی گئی کہ سپاہیوں کا یہ جوش خیالی تھا اور ان کی اِس جوشیلی حالت کا برخاست شدہ جاگیرداروں نے غلط استعمال کیا ۔ (مورلینڈ کا اِتہاس) ۔

مذہبی خیالوں کی توہین

کپتان ٹی-میکن نے 22 مارچ سن 1832 کو پارلیمنٹ کی سلیکٹ کمیٹی کے سامنے اپنی گواہی دیتے ہوئے کہا تھا:—

"हमारे .फौजी अफसर हिन्दुस्तानी .फौज के हिन्दू और मुसलमान .फौजियों के मजहबी ख्याल की जितनी तौहीन कर रहे हैं उससे ऐसा होना नामुमकिन नहीं जान पड़ता कि कम्पनी की फोजों के भारती सिपाही किसी भी वक्त बग़ावत का झँडा ऊँचा कर दें. अंग्रेज .फौजी अफसर खुले तरीक़े पर ईसाई मजहब के फैलाने वाले बन गये हैं. मैंने अपने कानों से एक अफसर को यह कहते सुना—तुम लोग राम और मोहम्मद के ज़रिये अपने गुनाहों की माफ़ी की उम्मीद करते हो. लेकिन इस वक्त मोहम्मद दोज़ख में हैं और राम नरक मे. अगर तुम लोग राम और मोहम्मद के उसूलों पर यक़ीन करते रहोगे तो तुम सब लोग भी नरक और दोजख मे जाओगे !"

बंगाल की पैदल फौज के एक अंग्रेज कमांडर ने अपनी सरकारी रिपोर्ट मे लिखा है कि—"मैं लगातार 28 बरस से हिन्दुस्तानी .फौजियों को ईसाई बनाने की नीति पर अमल करता रहा हूँ. गैर ईसाइयों की रूहों को शैतान से बचाना मेरे .फौजी .फर्ज़ का एक हिस्सा रहा है."

"काज़ेज़ आफ दी इन्डियन रिवाल्ट" का लिखने वाला 18 अगस्त सन् 1857 की छपी हुई अपनी किताब मे लिखता है:—

सन् 1857 से बहुत पहले भारतीय .फौज के अँग्रेज़ कर्नल भारतीय .फौजियों को ईसाई बनाने के बहुत मुश्किल काम मे लगे हुए पाए गये. उनके ईसाई बनाने की कोशिश इतनी .ज्यादह तकलीफ़देह और गिरी हुई होती गयी कि भारतीय फौजियों में अफ़सोस की लहर फैल गई. हिन्दू सिपाहियों से वे कहते कि अपने तेतीस करोड़ बदशक्ल देवी देवताओं को छोड़कर उनकी जगह एक सच्चे परमात्मा की, उसके बेटे ईसा के नाम की पूजा करो. इसका नतीजा यह हुआ कि भरतीय .फौजियों मे दिन बदिन बेचैनी की आग भड़कने लगी."

जंगे आज़ादी के असबाब

मद्रास सुप्रीम कोर्ट के जज सर मैलकम लुईन ने इस बात को बहुत ही मज़ाक़िया बताया कि 1857 की उथल-पुथल का सबब चरबी के कारतूस थे. सन 1857 के मुमकिन वजूह की .फ़ेहरिस्त बनाते हुए सर मैलकम कहते हैं —

"चरबी के कारतूसों को ग़दर की असलियत का सबब बताना बिल्कुल बच्चों की सी बात है. भारतीय .फौजी भारतीय जनता का एक हिस्सा हैं. आज भारतीय जनता क्यों हमारे खिलाफ तलवार खींचकर खड़ी हो गई है ? इसलिए कि हमने उन्हें ज़ात से गिरा दिया है. उनके वारिसी क़ायदों को हमने रद्द कर दिया है. उनके शादी के उसूलों को हमने बदल दिया है. उनके धर्म के पाक रिवाजों की हमने मुखालिफत

"ہمارے فوجی افسر ہندستانی فوج کے ہندو اور مسلمان فوجیوں کے مذہبی خیال کی جتنی توہین کر رہے ہیں اس سے ایسا ہونا ناممکن نہیں جان پڑتا کہ کمپنی کی فوجوں کے بھارتیہ سپاہی کسی بھی وقت بغاوت کا جھنڈا اونچا کر دیں۔ انگریز فوجی افسر کھلے طریقہ پر عیسائی مذہب کے پھیلانے والے بن گئے ہیں۔ میں نے اپنے کانوں سے ایک افسر کو یہ کہتے سنا—تم لوگ رام اور محمد کے ذریعہ اپنے گناہوں کی معافی کی امید کرتے ہو۔ لیکن اس وقت محمد دوزخ میں ہے اور رام نرک میں۔ اگر تم لوگ رام اور محمد کے اصولوں پر یقین کرتے رہو گے تو تم سب لوگ بھی نرک اور دوزخ میں جاؤ گے !"

بنگال کی پیدل فوج کے ایک انگریز کمانڈر نے اپنی سرکاری رپورٹ میں لکھا ہے کہ—"میں لگاتار 28 برس سے ہندستانی فوجیوں کو عیسائی بنانے کی نیتی پر عمل کرتا رہا ہوں۔ غیر عیسائیوں کی روحوں کو شیطان سے بچانا میرے فوجی فرض کا ایک حصہ رہا ہے۔"

"کازز آف دی انڈین ریوولٹ" کا لکھنے والا 18 اگست سن 1857 کی چھپی ہوئی اپنی کتاب میں لکھتا ہے :—

"سن 1857 سے بہت پہلے بھارتیہ فوج کے انگریز کرنل بھارتیہ فوجیوں کو عیسائی بنانے کے بہت مشکل کام میں لگے ہوئے پائے گئے۔ ان کے عیسائی بنانے کی کوشش اتنی زیادہ تکلیف دہ اور گری ہوئی ہوتی گئی کہ بھارتیہ فوجیوں میں افسوس کی لہر پھیل گئی۔ ہندو سپاہیوں سے وہ کہتے کہ اپنے تینتیس کروڑ بدشکل دیوی دیوتاؤں کو چھوڑ کر ان کی جگہ ایک سچے پرماتما کی، اس کے بیٹے عیسی کے نام کی پوجا کرو۔ اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ بھارتی فوجیوں میں دن بدن بےچینی کی آگ بھڑکنے لگی"

جنگ آزادی کے اسباب

مدراس سپریم کورٹ کے جج سرمیلکم لوئن نے اس بات کو بہت ہی مزاحیہ بتایا کہ 1857 کی اتھل-پتھل کا سبب چربی کے کارتوس تھے۔ سن 1857 کے ممکن وجوہات کی فہرست بناتے ہوئے سرمیلکم کہتے ہیں :—

"چربی کے کارتوسوں کو غدر کی اصلیت کا سبب بتانا بالکل بچوں کی سی بات ہے۔ بھارتیہ فوجی بھارتیہ جنتا کا ایک حصہ ہیں۔ آج بھارتیہ جنتا ہمارے خلاف تلوار کھینچ کر کیوں کھڑی ہو گئی ہے ؟ اس لئے کہ ہم نے انہیں ذات سے گرا دیا ہے۔ ان کے وارثی قواعدوں کو ہم نے رد کر دیا ہے۔ ان کے شادی کے اصولوں کو ہم نے بدل دیا ہے۔ ان کے دھرم کے پاک رواجوں کی ہم نے مخالفت

की है. उनके मन्दिरों की जायदादें हमने जब्त करली हैं. अपने सरकारी बयानों में हमने उन्हें लामजहब और काफ़िर कहकर उनकी तौहीन की है. उनके राजाओं और नवाबों के राज हमने छीन लिये हैं. उनके अमीरों और रईसों की जायदादें हमने जब्त करली हैं. अपनी लूट खसोट में हमने देश को बरबाद कर दिया है. सन् 1757 से लेकर 18 7 तक हमारी खराब चाल के सबब हिंदुस्तान में अकाल का वह सिलसिला जारी हुआ जिसमें 1, 22 00,000 आदमी मौत के शिकार हो गये. न सिर्फ बरखास्त राजा, न सिर्फ बरखास्त जागीरदार और अमीर न सिर्फ फौज के सिपाही बल्कि आम जनता, किसान और मजदूर सभी हमारे खिलाफ खड़े हो गये असलियत से जानकार कोई भी समझदार आदमी खुशी से मन्जूर करेगा कि सन् 1857 का भारती इन्क़लाब सही मानी में जनता का इन्क़लाब था ."

1857 की जंगे आजादी की अजीमुश्शान कोशिश

लन्डन टाइम्स का खास नुमाइन्दा सर विलियम हारवड रसल, जो सन् 57 की जंगे आजादी के वक्त भारत मे मौजूद था, अपनी किताब 'माइ डायरी इन इन्डिया' (1858-59) के सफ़ा 161 पर लिखता है :—

"वह एक ऐसी जंग थी जिसमें लोग अपने धर्म के नाम पर, अपनी जात के नाम पर, बदले के नाम पर, अपनी उम्मीदों को पूरा करने के लिये उठे थे. इस जंग में पूरी हुकूमत ने अपने ऊपर से विदेशी जुए को फेंककर उसकी जगह देसी राजाओं की पूरी हुकूमत और देसी मजहबों का पूरा हक़ फिर से क़ायम करने का अहद कर लिया था."

इन्क़लाब के व्यापक सगठन के बारे मे सर जॉन के ने अपनी किताब 'इन्डियन म्यूटिनी', भाग 1, सफ़ा 24 पर लिखा है :—

"महीनों से नहीं, सालों से यह लोग पूरे देश मे इन्क़लाब का ताना बाना बुन रहे थे. एक दरबार से दूसरे दरबार तक, एक नगर से दूसरे नगर तक, भारतीय महाद्वीप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक नाना साहब के इन्क़लाबी एलची इन्क़लाब का सन्देश लेकर घूम रहे थे. इन सन्देशों के जरिये अलग अलग जातों, अलग अलग धर्मों, राजाओं, सरदारों, जनता और फौजियों सबको आजादी की जंगे अजीम में शामिल होने की दावत दी गई थी."

अब रहा गाय और सुअर के चरबी के कारतूस का सवाल. कम्पनी की फौजों के सिपहसालार लार्ड राबर्ट्स ने अपनी किताब, 'फ़ार्टी ईअर्स इन इन्डिया'' सफ़ा 43 पर लिखा है :—

کی ہے ۔ ان کے مندروں کی جائیدادیں ہم نے ضبط کر لی ہیں ۔ اپنے سرکاری بیانوں میں ہم نے انہیں لامذہب اور کافر کہہ کر انکی توہین کی ہے ۔ ان کے راجاؤں اور نوابوں کے راج ہم نے چھین لئے ہیں' ان کے امیروں اور رئیسوں کی جائیدادیں ہم نے ضبط کر لی ہیں ۔ اپنی لوٹ کھسوٹ میں ہم نے دیش کو برباد کر دیا ہے ۔ سن 1757 سے لیکر 1857 تک ہماری خراب چال کے سبب ہندوستان میں اکال کا وہ سلسلہ جاری ہوا جس میں 1, 22,00,000 آدمی موت کے شکار ہو گئے ۔ نہ صرف برخاست راجہ' نہ صرف برخاست جاگیردار اور امیر' نہ صرف فوج کے سپاہی بلکہ عام جنتا' کسان اور مزدور سبھی ہمارے خلاف کھڑے ہو گئے ۔ اصلیت سے جانکار کوئی بھی سمجھدار آدمی خوشی سے منظور کریگا کہ سن 1857 کا بھارتیہ انقلاب صحیح معنی میں جنتا انقلاب تھا"

1857 کی جنگ آزادی کی عظیم الشان کوشش

لندن ٹائمس کا خاص نمائندہ سر ولیم ہاورڈ رسل' جو سن 57 کی جنگ آزادی کے وقت بھارت میں موجود تھا اپنی کتاب 'مائی ڈائری اِن انڈیا' (1858-59) کے صفحہ 164 پر لکھتا ہے:—

"وہ ایک ایسی جنگ تھی جس میں لوگ اپنے دھرم کے نام پر' اپنی ذات کے نام پر' بدلہ کے نام پر' اپنی امیدوں کو پورا کرنے کے لئے اٹھے تھے ۔ اس جنگ میں پوری حکومت نے اپنے اوپر سے ودیشی جوئے کو پھینک کر اسکی جگہ دیسی راجاؤں کی پوری حکومت اور دیسی مذہبوں کا پورا حق پھر سے قائم کرنیکا عہد کر لیا تھا۔"

انقلاب کے ویاپک سنگٹھن کے بارے میں سر جان کے نے اپنی کتاب انڈین میوٹنی' بھاگ 1' صفحہ 24 پر لکھا ہے:—

"مہینوں سے نہیں' سالوں سے یہ لوگ پورے دیش میں انقلاب کا تانا بانا بن رہے تھے ۔ ایک دربار سے دوسرے دربار تک' ایک نگر سے دوسرے نگر تک' بھارتیہ مہادویپ کے ایک سرے سے دوسرے سرے تک نانا صاحب کے انقلابی ایلچی انقلاب کا سندیش لے کر گھوم رہے تھے ۔ ان سندیشوں کے ذریعہ الگ الگ ذاتوں' الگ الگ دھرموں' راجاؤں' سرداروں' جنتا اور فوجیوں سبکو آزادی کی جنگ عظیم میں شامل ہونے کی دعوت دی گئی تھی ۔"

اب رہا گائے اور سور کے چربی کے کارتوس کا سوال ۔ کمپنی کی فوجوں کے سپہ سالار لارڈ رابرٹس نے' اپنی کتاب "فارٹی ایئرس اِن انڈیا" صفحہ 431 پر لکھا ہے :—

"भारत सरकार की तरफ से मिस्टर फारेस्ट ने जो जाँच की है इससे साबित है कि कारतूसों के तैयार करने में जिस चिकने मसाले का इस्तेमाल किया जाता था उसे गाय और सूअर की चरबी मिलाकर बनाया जाता था."

मशहूर मवर्रिख विलियम लैकी अपनी किताब 'मैप आफ लाइफ' के सफा 104 पर लिखता है:—

"यह एक शर्मनाक और इन्तहाई सच्चाई है कि जिस बात का सिपाहियों को शक था, वह बात बिल्कुल सच्ची थी. हिन्दुस्तान की जनता की इन्क़लाबी ख़्वाहिशों पर इन गाय और सूअर की चरबी के कारतूसों ने आग पर घी डालने का काम किया."

जस्टिन मैकार्थी लिखता है:—

"चरबी के कारतूसों का झगड़ा सिर्फ़ एक इस तरह की चिनगारी थी जो अचानक अवामी इन्क़लाब के फूटने वाले मसाले पर आ पड़ी. सन 1857 की जंग एक कुल मुल्की-मज़हबी जंग थी." (हिस्ट्री आफ़ अवर ओन टाइम्स).

अवामी इन्क़लाब का हैरतनाक़ संगठन

इस अवामी इन्क़लाब के ताज्जुबखेज़ कामयाब संगठन के बारे में सर जार्ज जैकब अपनी किताब 'वैस्टर्न इन्डिया' में लिखता है:— "सन 1857 के ग़दर की एक अवामी इन्क़लाब के रूप में ही योजना बनाई गई. एक गाँव से दूसरे गाँव में इन्क़लाब के हरकारे पाकीज़गी के निशान 'कमल' और माली तरक़्क़ी के निशान 'चपाती' लेकर जाते थे. गाँव वाले कमल और चपाती लेकर अवामी इन्क़लाब को कामयाब बनाने की क़सम लेते थे. फिर कमल और चपाती अगले गाँव में भेज दी जाती थी. प्रचारक फ़ौजी छावनियों में जाते थे और फ़ौजी यक़ीन दिलाते थे कि देश को छुटकारा दिलाने के इस अवामी इन्क़लाब से वे कैसे अलग रह सकते हैं. जिस होशियारी के साथ इन्क़लाब के इस संगठन के मुख़्तलिफ़ गिरोह एक दूसरे के साथ काम करते थे, एक गिरोह का दूसरे गिरोह के साथ ताल्लुक़ रखने वाले लोगों का किसी को पता न चलता था. यह लोग एक दूसरे के साथ हैरतनाक वफ़ादारी बरतते थे. यह बिना दूर तक फैले हुए अवामी इन्क़लाब के होना किसी तरह से मुमकिन नहीं था."

अवध के अन्दर इस अवामी इन्क़लाब के फैलाव को बयान करते हुए सर जार्ज .फारेस्ट अपनी किताब 'स्टेट पेपर्स' की जिल्द 2, सफा 37 पर लिखता है:—

"दस दिन के अन्दर अवध से अंग्रेज़ी राज .ख़्वाब की तरह मिट गया. उसका कोई निशान तक बाक़ी न रहा. .फ़ौज ने हमारे ख़िलाफ़ बग़ावत की, किसानों ने हमारे

"بھارت سرکار کی طرف سے مسٹر فاریسٹ نے جو جانچ کی ہے اس سے ثابت ہوتا ہے کہ کارتوسوں کے تیار کرنے میں جس چکنے مصالحے کا استعمال کیا جاتا تھا اسے گائے اور سور کی چربی ملا کر بنایا جاتا تھا."

مشہور مورخ ولیم لیکی اپنی کتاب 'میپ آف لائف' کے صفحہ 104 پر لکھتا ہے:—

"یہ ایک شرمناک اور انتہائی سچائی ہے کہ جس بات کا سپاہیوں کو شک تھا، وہ بات بالکل سچی تھی. ہندستان کی جنتا کی انقلابی خواہشوں پر ان گائے اور سور کی چربی کے کارتوسوں نے آگ پر گھی ڈالنے کا کام کیا."

جسٹن میکارتھی لکھتا ہے:—

"چربی کے کارتوسوں کا جھگڑا صرف ایک اس طرح کی چنگاری تھی جو اچانک عوامی انقلاب کے پھوٹنے والے مصالحے پر آپڑی. سن 1857 کی جنگ ایک کل ملکی مذہبی جنگ تھی." (ہسٹری آف اور اون ٹائمس).

عوامی انقلاب کا حیرت ناک سنگٹھن

اِس عوامی انقلاب کے تعجب خیز کامیاب سنگٹھن کے بارے میں سر جارج جیکب اپنی کتاب 'ویسٹرن انڈیا' میں لکھتا ہے:— "سن 1857 کے غدر کی ایک عوامی اِنقلاب کے روپ میں ہی یوجنا بنائی گئی. ایک گاؤں سے دوسرے گاؤں میں انقلاب کے ہرکارے پاکیزگی کے نشان 'کمل' اور مالی ترقی کے نشان 'چپاتی' لے کر جاتے تھے. گاؤں والے کمل اور چپاتی لے کر عوامی انقلاب کو کامیاب بنانے کی قسم لیتے تھے. پھر کمل اور چپاتی اگلے گاؤں میں بھیج دی جاتی تھی. پرچارک فوجی چھاؤنیوں میں جاتے تھے اور فوجی یقین دلاتے تھے کہ دیش کو چھٹکارا دلانے کے اِس عوامی انقلاب سے وہ کیسے الگ رہ سکتے ہیں. جس ہوشیاری کے ساتھ انقلاب کے اِس سنگٹھن کے مختلف گروہ ایک دوسرے کے ساتھ کام کرتے تھے، ایک گروہ کا دوسرے گروہ کے ساتھ تعلق رکھنے والے لوگوں کا کسی کو پتہ نہ چلتا تھا. یہ لوگ ایک دوسرے کے ساتھ حیرت ناک وفاداری برتتے تھے. یہ بنا دور تک پھیلے ہوئے عوامی انقلاب کے ہونا کسی طرح سے ممکن نہیں تھا."

اودھ کے اندر اِس عوامی انقلاب کے پھیلاؤ کو بیان کرتے ہوئے سر جارج فاریسٹ اپنی کتاب 'اسٹیٹ پیپرس' کی جلد 2' صفحہ 37 پر لکھتا ہے:—

"دس دن کے اندر اودھ سے انگریزی راج خواب کی طرح مٹ گیا. اِس کا کوئی نشان تک باقی نہ رہا. فوج نے ہمارے خلاف بغاوت کی' کسانوں نے ہمارے

ख़िलाफ़ बग़ावत की, अमीरों ने हमारे ख़िलाफ़ बग़ावत की और जनता ने हमारे ख़िलाफ़ बग़ावत की. जनता ने ग़ुलामी की .ज़ंजीरें तोड़कर फेंक दीं लेकिन न किसी ने बदला लिया और न किसी ने ग़ैर इन्साफ़ किया. अवध की जनता ने भागते हुए अंग्रेज़ों के साथ .ज़ाहिर मेहरबानी का सलूक किया."

आज़ादी का ऐलान

सन 1857 में क्रान्ति के .ख़ास अख़बार 'पयामे आज़ादी' में आज़ादी का जो ऐलान शाया हुआ था, उसके अल्फ़ाज़ हैं:—

हिन्दुस्तान के हिन्दुओ और मुसलमानो उठो ! भाइयो उठो ! ईश्वर ने इन्सान को जितनी बरकतें अता की हैं उनमें सबसे .क़ीमती 'बरकत आज़ादी की है. वह .ज़ालिम नाकस जिसने धोखा देकर हमसे यह बरकत छीन ली है क्या हमेशा के लिये हमको इससे महरूम रख सकेगा ? क्या ख़ुदा की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ इस तरह का काम हमेशा जारी रह सकता है ? नहीं, कभी नहीं. फ़िरंगियों ने इतने .ज़ुल्म किये हैं कि उनके गुनाहों का प्याला भर चुका है. ईश्वर अब नहीं चाहता कि हिन्दुस्तान की जनता .ख़ामोश रहे क्योंकि उसने हिन्दुओं और मुसलमानों के दिलों में अंग्रेज़ों को अपने मुल्क से बाहर निकालने की .ख़्वाहिश पैदा करदी है. ईश्वर की दया से और फ़ौजियों की बहादुरी से जल्द ही विदेशियों को इतनी कामिल शिकस्त मिलेगी कि हमारे इस मुल्क में उनका नामो निशान भी नहीं रह जायेगा. हमारी आज़ादी की इस .फ़ौज मे छोटे-बड़े का कोई भेद-भाव न होगा."

'पयामे आज़ादी' के बाद के आगे के मज़मून के यह जुमले हैं:—

हिन्द के बाशिन्दो ! अरसे से जिसका इन्तज़ार था आज़ादी की वह पाक घड़ी आ पहुँची है. हिंदुस्तान के निवासी अब तक धोखे में आते रहे और अपनी ही तलवार से अपनी गर्दन काटते रहे. अब हमें मुल्क .फ़रोशी के पाप की तलाफ़ी करनी चाहिये. विदेशी अब भी अपनी पुरानी चाल से काम लेंगे. वे मुसलमानों को हिंदुओं के ख़िलाफ़ उभारने की कोशिश करेंगे. लेकिन भाइयो उनके जाल और .फ़रेबों में न फँसना. आइये ! हिंदुस्तान का एक-एक शख़्स इस अवामी इन्क़लाब के झन्डे के नीचे आये. जो कोई आदमी इस .क़ौमी जङ्ग की मुख़ालिफ़त करेगा वह .ख़ुद अपने सर पर कुल्हाड़ी मारेगा और .ख़ुदकुशी का मुजरिम बनेगा."

خلاف بغاوت کی' امیروں نے ہمارے خلاف بغاوت کی اور جنتا نے ہمارے خلاف بغاوت کی۔ جنتا نے غلامی کی زنجیریں توڑ کر پھینک دیں لیکن نہ کسی نے بدلہ لیا اور نہ کسی نے غیرانصاف کیا۔ اودھ کی جنتا نے بھاگتے ہوئے انگریزوں کے ساتھ ظاہر مہربانی کا سلوک کیا۔"

آزادی کا اعلان

سن 1857 میں کرانتی کے خاص اخبار 'پیام آزادی' میں آزادی کا جو اعلان شائع ہوا تھا' اُس کے الفاظ ہیں:—

ہندستان کے ہندوؤں اور مسلمانو اٹھو ! بھائیو اٹھو! ایشور نے انسان کو جتنی برکتیں عطا کی ہیں اُن میں سب سے قیمتی برکت آزادی کی ہے۔ وہ ظالم ناکس جس نے دھوکا دے کر ہم سے یہ برکت چھین لی ہے کیا ہمیشہ کے لئے ہم کو اِس سے محروم رکھ سکے گا ؟ کیا خدا کی مرضی کے خلاف اِس طرح کا کام ہمیشہ جاری رہ سکتا ہے ؟ نہیں' کبھی نہیں۔ فرنگیوں نے اتنے ظلم کئے ہیں کہ ان کے گناہوں کا پیالہ بھر چکا ہے۔ ایشور اب نہیں چاہتا کہ ہندستان کی جنتا خاموش رہے کیونکہ اِس نے ہندوؤں اور مسلمانوں کے دلوں میں انگریزوں کو اپنے ملک سے باہر نکالنے کی خواہش پیدا کر دی ہے۔ ایشور کی دیا سے اور فوجیوں کی بہادری سے جلد ہی ودیشیوں کو اتنی کامل شکست ملے گی کہ ہمارے اِس ملک میں ان کا نام و نشان بھی نہیں رہ جائیگا۔ ہماری آزادی کی اِس فوج میں چھوٹے بڑے کا کوئی بھید بھاؤ نہ ہوگا۔"

'پیام آزادی' کے مضمون کے بعد کے آگے کے یہ جملے ہیں :—

"ہند کے باشندو ! عرصہ سے جس کا انتظار تھا آزادی کی وہ پاک گھڑی آپہونچی ہے۔ ہندوستان کے نواسی اب تک دھوکے میں آتے ہے اور اپنی ہی تلوار سے اپنی گردن کاٹتے رہے۔ اب ہمیں ملک فروشی کے پاپ کی تلافی کرنی چاہیے۔ ودیشی اب بھی اپنی پرانی چال سے کام لیں گے۔ وے مسلمانوں کو ہندوؤں کے خلاف ابھارنے کی کوشش کرینگے۔ لیکن بھائیو ان کے جال اور فریبوں میں نہ پھنسنا۔ آئیے ! ہندوستان کا ایک ایک شخص اِس عوامی انقلاب کے جھنڈے کے نیچے آئے۔ جو کوئی آدمی اِس قومی جنگ کی مخالفت کریگا وہ خود اپنے سر پر کلہاڑی مارے گا اور خودکشی کا مجرم بنیگا۔"

फ़ौजी बग़ावत अवामी इन्क़लाब का हिस्सा

किसी भी मुसल्लह इन्क़लाब में, फौजी सदा पहला मोरचा सँभालते हैं सन 1921 की सिविल नाफरमानी इन्क़लाब में भी गाँधीजी ने, फौजियों को सिविल नाफरमानी के आन्दोलन में शामिल होने की अपील की थी, फिर भला 1857 के मुसल्लह अवामी इन्क़लाब मे सिपाहियों से क्यों न शामिल होने की अपील की जाती ? सन 1857 जनता की बेचैनी का साल था, बरसों से अवामी इन्क़लाब के लिये जमीन तैयार की जा रही थी मुनासिब मौक़े पर ,फौजियो ने आगे बढ़कर हिस्सा लिया, रही इन्क़लाबी जागीरदारो के हाथों में इनक़लाब की बागडोर रहने के बारे मे, तो वह जमाना ऐसा था जब तख़्ता ताज और अवामी नेतागिरी दोनों साथ-साथ चलते थे.

यह है वह अस्लियत जिसके बुनियाद पर हम यह यक़ीनी तौर से कह सकते हैं कि सन 1857 की उथल पुथल एक अजीमुश्शान अवामी इन्क़लाब था और .फौजियो की बग़ावत थी—उसका एक ज़रूरी और अटूट हिस्सा.

فوجی بغاوت عوامی انقلاب کا حصہ

کسی بھی مسلح انقلاب میں فوجی سدا پہلا مورچہ سنبھالتے ھیں . سن 1921 کی سول نافرمانی انقلاب میں بھی گاندھی جی نے فوجیوں کو سول نافرمانی کے آندولن میں شامل ھونیکی اپیل کی تھی' پھر بھلا 1857 کے مسلح عوامی انقلاب میں سپاھیوں سے کیوں نہ شامل ھونیکی اپیل کی جاتی ؟ سن 1857 جنتا کی بےچینی کا سال تھا برسوں سے عوامی انقلاب کے لئے زمین تیار کی جا رھی تھی . مناسب موقع پر فوجیوں نے آگے بڑھ کر حصہ لیا رھی انقلابی جاگیرداروں کے ھاتھوں میں انقلاب کی باگ دور رھنے کے بارے میں' تو وہ زمانہ ایسا تھا جب تخت و تاج اور عوامی نیتا گیری دونوں ساتھ-ساتھ چلتے تھے .

یہ ھے اصلیت جس کی بنیاد پر ھم یہ یقینی طور سے کہہ سکتے ھیں کہ سن 1857 کی اتھل-پتھل ایک عظیم‌الشان عوامی انقلاب تھا اور فوجیوں کی بغاوت تھی—اس کا ایک ضروری اور اٹوٹ حصہ .

हमारी राय / ہماری رائے

नया पैसा

पंचतंत्र में एक कहानी आती है —

किसी गाँव में चार ब्राह्मण रहते थे चारों आपस मे बड़े दोस्त थे. उनमें से तीन तरह तरह की विद्याएँ पढ़े हुए थे. उनके सिर उन विद्याओं से इतने भरे हुए थे कि उन सिरों में मामूली समझ के लिये ज़रा-सी गुंजायश नहीं रह गई थी. चौथा ब्राह्मण पढ़ा लिखा नहीं थ. पर उसका सिर मामूली समझ से भरा हुआ था

एक दिन उन तीन ब्राह्मणों ने सोचा कि—"हमारी बराबर विद्याएँ जानने वाला दुनिया मे कोई नहीं है लेकिन इस गाँव में पड़े पड़े हमारी विद्याए निकम्मी जा रही हैं अपनी विद्या को निकम्मा जाने देना भी पाप है इसलिये चलो, कहीं परदेस चलें जहाँ हमारा विद्याएं काम आ सकें और उनके लिये हमे राजाओ और धनवानो से धन भी मिल सके"

वे तीनों निकल पड़े. उन्होंने अपने चौथे मित्र को भी, जिसका सिर विद्याओ से खाली और मामूली समझ से भरा था, साथ ले लिया. उसके विद्याहीन होने पर उन्हे तरस आता था, फिर भी कुछ सलाह करके उन्होने उसे साथ ले जाना ही ठीक समझा.

चलते चलते चारों एक जंगल मे पहुँचे. वहाँ एक जगह एक मरे शेर की हड्डियाँ बिखरी पड़ी थीं उन तीन ब्राह्मणों में से एक ने कहा —"यह बहुत अच्छा मौक़ा है हमारे लिये अपनी विद्या का आज़माने का। यह किसी बनपशु की हड्डियाँ हैं. आओ इन्हें जमा करके हम इनमें जान फूँक दें, तो हमें पता चल जाएगा कि यह किस जानवर की हड्डियाँ हैं."

दूसरे ने कहा :—"बहुत ख़ूब। सचमुच बड़ा अच्छा मौक़ा है. अपनी विद्याओं के परखने का इससे अच्छा अवसर और क्या हो सकता है ?"

तीसरे ने भी जोश में आकर हाँ में हाँ मिला दी.

पहले पण्डित ने हड्डियों के सारे ढाँचे को जमा किया दूसरे ने उसपर खाल मढ़ दी और उसमें गोश्त और ख़ून

نیا پیسہ

پنچ تنتر میں ایک کہانی آتی ہے —

کسی گاؤں میں چار براہمن رہتے تھے چاروں آپس میں بڑے دوست تھے۔ اُن میں سے تین طرح طرح کی ودیائیں پڑھے ہوئے تھے۔ اُن کے سر اُن ودیاؤں سے اتنے بھرے ہوئے تھے کہ اُن سروں میں معمولی سمجھ کے لئے ذرا سی گنجائش نہیں رہ گئی تھی۔ چوتھا براہمن پڑھا لکھا نہیں تھا پر اس کا سر معمولی سمجھ سے بھرا ہوا تھا

ایک دن اُن تین براہمنوں نے سوچا کہ —"ہماری برابر ودیائیں جاننے والا دنیا میں کوئی نہیں ہے لیکن اس گاؤں میں پڑے پڑے ہماری ودیائیں نکمی جا رہی ہیں اپنی ودیا کو نکمہ جانے دینا بھی پاپ ہے اس لئے چلو، کہیں پردیس چلیں جہاں ہماری ودیائیں کام آسکیں اور اُن کے لئے ہمیں راجاؤں اور دھنوانوں سے دھن بھی مل سکے۔"

وے تینوں نکل پڑے انہوں نے اپنے چوتھے متر کو بھی، جس کا سر ودیاؤں سے خالی اور معمولی سمجھ سے بھرا تھا، ساتھ لے لیا اُس کے ودیاہین ہونے پر اُنھیں ترس آتا تھا، پھر بھی کچھ صلاح کر کے اُنہوں نے اسے ساتھ لے جانا ہی ٹھیک سمجھا

چلتے چلتے چاروں ایک جنگل میں پہنچے وہاں ایک جگہ ایک مرے شیر کی ہڈیاں بکھری پڑی تھیں اُن تین براہمنوں میں سے ایک نے کہا —"یہ بہت اچھا موقع ہے ہمارے لئے اپنی ودیا کو آزمانے کا ۔ یہ کسی بن پشو کی ہڈیاں ہیں۔ آؤ انہیں جمع کر کے ہم ان میں جان پھونک دیں، تو ہمیں پتہ چل جائیگا کہ یہ کس جانور کی ہڈیاں ہیں۔"

دوسرے نے کہا —"بہت خوب! سچ مچ بڑا اچھا موقعہ ہے۔ اپنی ودیاؤں کے پرکھنے کا اس سے اچھا اوسر اور کیا ہو سکتا ہے ؟"

تیسرے نے بھی جوش میں آکر ہاں میں ہاں ملادی

پہلے پنڈت نے ہڈیوں کے سارے ڈھانچے کو جمع کیا دوسرے نے اُس پر کھال منڈھ دی اور اُس میں گوشت اور خون

भर दिया तीसरे ने कहा —"मित्रो ! अब देखो, मैं इसमें जान फूँकता हूँ।'

चौथा ब्राह्मण, जिसका सिर मामूली समझ से भरा हुआ था, चिल्ला पड़ा —'मित्रो ! यह क्या कर रहे हो ? तुम में विद्या है, अक्ल नदारद ! क्या तुम्हें दिखाई नहीं देता कि यह शेर है ? तुम इसमें जान फूँकने जा रहे हो ! इसमे जान पड़ी कि इसने तुम्हें खाया. फिर बच जाओ तो मेरा नाम बदल देना !"

उन तीनो ब्राह्मणो ने जवाब दिया —"कैसा मूर्ख है ! हमने कितनी मेहनत से यह विद्याएं सीखी हैं इन्हें काम में नही लाएँगे तो सीखने से क्या फायदा था !

उस तीसरे ब्राह्मण ने कहा —"मेरे दोनो मित्र अपनी विद्या दिखा चुके, अब मेरा धर्म अपनी विद्या दिखाना है"

इसपर चौथे ने फिर कहा —'मित्रो ! मैं तुम्हें फिर चेतावनी देता हूँ अगर तुम इस शेर मे जान फूँक दोगे तो उसके बाद तुम लोग अपने अपने इष्ट देवो का नाम भी नही ले पाओगे कि यह शेर तुम सब को खतम कर देगा ! कितनी मामूली समझ की बात है ! इतना तो तुम समझ ही सकते हो !'

उन्होने जवाब दिया —'चुप, मियाँ बुद्धिमान ! हम लोग अपनी अपनी विद्याओ के विशेषज्ञ हैं, मामूली समझ से हम क्या मतलब ? हम अपना काम करना है

चौथे ने फिर कहा —'पर तुम्हारे दिमागो मे सरसो के दाने के बराबर भी मामूली समझ नहीं दिखाई देती यह तुम सब की बरबादी की निशानी है तुम जो चाहे करो पहले मुझे किसी दरख्त पर चढ़ जाने दो"

यह कहकर वह एक ऊँचे दरख्त पर चढ़ गया और उन तीनो का कारनामा दूर से देखता रहा

शेर में जान पड़ी उसके दिल मे धड़कन शुरू हो गई उसने अपनी अयाल हिलाई उसकी चमकती आखे उन तीनो विद्वानों पर पड़ी वह तीनो काप गए पल भर के अन्दर शेर ने उन तीनो को खतम कर दिया जब शेर भोजन कर चुका और चला गया तो उस चौथे ब्राह्मण ने दरख्त पर से उतर कर अपने गाँव की राह ली उसे अब पहले से भी अधिक इस बात का विश्वास हो गया कि दस मन विद्याओ से एक तोला मामूली समझ ज्यादा अच्छी चीज है

इस देश के सिक्को को आने पाई की जगह दशमल मे बदलने की योजना सबसे पहले अंगरेजी सरकार को अपने हितमे सूझी थी सन 1871 ई० मे इसका एक क़ानूनभी पास हो गया था. पर किसी कारण उसपर अमल न हो सका सन् 1936 ई० में अंगरेज सरकार ने फिर इसकी एक कोशिश की, पर वह भी नाकाम रही. आखिर सन् 19 5मे कांग्रेस सरकार ने इसका क़ानून पास कर दिया और अप्रैल सन् 1957 से लागू हो गया सरकार के जिन सलाहकारो ने

بھر دیا . تیسرے نے کہا —"مترو ! اب دیکھو، میں اس میں جان پھونکتا ہوں !'

چوتھا براہمن، جس کا سر معمولی سمجھ سے بھرا ہوا تھا، چلا اٹھا —"مترو ! یہ کیا کر رہے ہو ؟ تم میں ودیا ہے، عقل ندارد ! کیا تمہیں دکھائی نہیں دیتا کہ یہ شیر ہے ؟ تم اس میں جان پھونکنے جا رہے ہو ! اس میں جان پڑی کہ اس نے تمہیں کھایا . پھر بچ جاؤ تو میرا نام بدل دینا !

اُن تینوں براہمنوں نے جواب دیا —"کیسا مورکھ ہے ! ہم نے کتنی محنت سے یہ ودیائیں سیکھی ہیں انھیں کام میں نہیں لائیں گے تو سیکھنے سے کیا فائدہ تھا !

اس تیسرے براہمن نے کہا —"میرے دونوں متر اپنی ودیا دکھا چکے اب میرا دھرم اپنی ودیا دکھانا ہے !'

اس پر چوتھے نے پھر کہا —'مترو ! میں تمہیں پھر چیتاونی دیتا ہوں اگر تم اس شیر میں جان پھونک دوگے تو اس کے بعد تم لوگ اپنے اپنے اشٹ دیوؤں کا نام بھی نہیں لے پاؤگے کہ یہ شیر تم سب کو ختم کر دیگا ! کتنی معمولی سمجھ کی بات ہے ! اتنا تو تم سمجھ ہی سکتے ہو !'

انھوں نے جواب دیا —'چپ میاں بدھیمان ! ہم لوگ اپنی اپنی ودیاؤں کے وشیشگیہ ہیں معمولی سمجھ سے ہمیں کیا مطلب ؟ ہمیں اپنا کام کرنا ہے'

چوتھے نے پھر کہا —"پر تمہارے دماغوں میں سرسوں کے دانے کے برابر بھی معمولی سمجھ نہیں دکھائی دیتی یہ تم سب کی بربادی کی نشانی ہے تم جو چاہے کرو پہلے مجھے کسی درخت پر چڑھ جانے دو ."

یہ کہکر وہ ایک اونچے درخت پر چڑھ گیا اور اُن تینوں کا کارنامہ دور سے دیکھتا رہا

شیر میں جان پڑی . اُس کے دل میں دھڑکن شروع ہو گئی اُس نے اپنی ایال ہلائی اُس کی چمکتی آنکھیں اُن تینوں ودوانوں پر پڑیں وہ تینوں کانپ گئے . پل بھر کے اندر شیر نے اُن تینوں کو ختم کر دیا . جب شیر بھوجن کر چکا اور چلا گیا تو اس چوتھے براہمن نے درخت پر سے اُتر کر اپنے گاؤں کی راہ لی اسے اب پہلے سے بھی ادھک اس بات کا وشواس ہو گیا کہ دس من ودیاؤں سے ایک تولہ معمولی سمجھ زیادہ اچھی چیز ہے

اس دیش کے سکوں کو آنے پائی کی جگہ دشمل میں بدلنے کی یوجنا سب سے پہلے انگریزی سرکار کو اپنے ہت میں سوجھی تھی سن 1871ع میں اس کا ایک قانون بھی پاس ہو گیا تھا پر کسی کارن اس پر عمل نہ ہو سکا سن 1936ع میں انگریز سرکار نے پھر اس کی ایک کوشش کی، پر وہ بھی ناکام رہی . آخر سن 1955 میں کانگرس سرکار نے اس کا قانون پاس کر دیا اور اپریل سن 1957 سے وہ لاگو ہو گیا . سرکار کے جن صلاحکاروں نے

पुरानी अलमारियों में से निकाल कर इस योजना को सरकार के सामने रखा' उनकी नियत और देशभक्ति में किसी को कोई सन्देह नहीं हो सकता. उपमाएँ या मिसालें भी हर अंग में नहीं मिला करतीं. फिर भी ऐसा मालूम होता है कि हमारी सरकार के जो बड़े-बड़े विशेषज्ञ यानी अपनी अपनी विद्याओं के माहिर "सलाहकार" हैं उनमे से कुछ अवश्य कम से कम कुछ अंशो में पंचतंत्र के उन तीन ब्राह्मणों से मिलने जुलते हैं.

सरकार की तरफ से समझाया जा चुका है और चौथी क्लास तक पढ़ा हुआ लड़का भी इस बात को समझ गया है कि नए पैसे के जारी करने से बड़े-बड़े फ़ायदे हैं. हिसाब लगाने मे इससे बड़ी आसानी हो जायगी. आने, पाई, और सोलह और बारह से गुणा और भाग देने की सब झंझटें जाती रहीं जहाँ दस बीस क्लर्कों की जरूरत पड़ती थी वहाँ अब शायद दो चार से काम चल जायगा. बड़े-बड़े पूँजीपति व्यापारघरों और सरकारी दफ्तरों का खासी बचत होगी. बेकारी की समस्या और अधिक जटिल भले ही हो जाय। कागजों और रजिस्टरों का खर्च भी कम हो जायगा. बैंकों का काम कितना आसान हो जायगा. हिसाब की जाँच पड़ताल करने में भी आसानी हो जायगी. विदेशी बैंकों, विदेशी व्यापारियों और विदेशी सरकारों से लेन देन में बड़ी सहूलियतें हो जाएगी. इस तरह के और बहुत से फ़ायदे हैं. इन सब से बढ़कर इस सुधार से भारत पुराने अंधेरे दक़ियानूसी जमाने से निकल कर नई तरक़्क़ी और साइंसी जमाने की रोशनी मे पहुँच जाएगा!

यह सब ठीक. पर शायद किसी को यह न सूझा कि जिस देश में अभी अनपढ़ों की गिनती बयासी फ़ीसदी से ऊपर है और जिसमे करोड़ों लोग सौ तक गिनना भी नहीं जानते, वहाँ इस परिवर्त्तन का आम जनता के लिये क्या नतीजा होगा.

नए पैसो मे पुराने सिक्को की जो कीमतें तय की गई हैं उन्होंने तो गजब ही कर दिया. हम यह लाइनें कुछ दर्द के साथ लिख रहे हैं. कारीगरों और दूकानदारों ने चारों तरफ़ सैकड़ों चीजों के दाम बढ़ा दिये. हमे .खुद राजधानी के अन्दर अनेक जरूरी चीजें सवाये या ड्योढ़े दामों मे मिल रही हैं. दूकानदार बेचारों का इसमे कोई क़सूर नहीं. वह क्या करें? बहुत से दूकानदारों ने तो कई-कई दिन घाटा उठाकर, मजबूर होकर तीसरे और चौथे दिन अपनी चीजों के दाम बढ़ाए हैं. पुराने छोटे सिक्कों और नये पैसों के अदल बदल का गोरखधन्दा ऐसा है कि अभी एक दिन हम एक दूकान पर एक छोटी सी चीज खरीदने गए. चीज के दाम पुराने सिक्कों में तय थे हमने नए पैसों में दाम देना चाहा. दूकान पर बैठा लड़का इनकार कैसे करता बेचारा

پرانی الماریوں میں سے نکال کر اس یوجنا کو سرکار کے سامنے رکھا اُن کی نیت اور دیش بھکتی میں کسی کو کوئی سندیہہ نہیں ہو سکتا . اُپمائیں یا مثالیں بھی ہر انگ میں نہیں ملا کرتیں . پھر بھی ایسا معلوم ہوتا ہے کہ ہماری سرکار کے جو بڑے بڑے وشیشگیہ یعنی اپنی اپنی ودیاؤں کے ماہر "صلاح کار" ہیں اُن میں سے کچھ اوشیہ کم سے کم کچھ انشوں میں پنچ تنتر کے اُن تین براہمنوں سے ملتے جلتے ہیں .

سرکار کی طرف سے سمجھایا جا چکا ہے اور چوتھی کلاس تک پڑھا ہوا لڑکا بھی اس بات کو سمجھ گیا ہے کہ نئے پیسے کے جاری کرنے سے بڑے بڑے فائدے ہیں . حساب لگانے میں اس سے بڑی آسانی ہو جائیگی . آنے ' پائی ' اور سولہ اور بارہ سے گنا اور بھاگ دینے کی سب جھنجھٹیں جاتی رہیں جہاں دس بیس کلرکوں کی ضرورت پڑتی تھی وہاں اب شاید دو چار سے کام چل جائیگا . بڑے بڑے پونجی پتی بیوپار گھروں اور سرکاری دفتروں کو خاصی بچت ہوگی . بیکاری کی سمسیا اور ادھک جٹل بھلے ہی ہو جائے ! کاغذوں اور رجسٹروں کا خرچ بھی کم ہو جائیگا . بینکوں کا کام کتنا آسان ہو جائیگا . حساب کی جانچ پڑتال کرنے میں بھی آسانی ہو جائیگی ودیشی بینکوں ' ودیشی بیوپاریوں اور ودیشی سرکاروں سے لین دین میں بڑی سہولتیں ہو جائینگی . اس طرح کے اور بہت سے فائدے ہیں . ان سب سے بڑھکر اس سدھار سے بھارت پرانے اندھیرے دقیانوسی زمانے سے نکل کر نئی ترقی اور سائنسی زمانے کی روشنی میں پہنچ جائیگا .

یہ سب ٹھیک . پر شاید کسی کو یہ نہ سوجھا کہ جس دیش میں ابھی اَن پڑھوں کی گنتی بیاسی فیصدی سے اوپر ہے اور جس میں کروڑوں لوگ سو تک گننا بھی نہیں جانتے ' وہاں اس پریورتن کا عام جنتا کے لیے کیا نتیجہ ہوگا .

نئے پیسوں میں پرانے سکوں کی جو قیمتیں طے کی گئی ہیں اُنہوں نے تو غضب ہی کر دیا . ہم یہ لائنیں کچھ درد کے ساتھ لکھ رہے ہیں . کاریگروں اور دوکانداروں نے چاروں طرف سیکڑوں چیزوں کے دام بڑھا دیئے ہمیں خود راجدھانی کے اندر انیک ضروری چیزیں سوائے یا ڈیوڑھے داموں میں مل رہی ہیں . دوکاندار بیچاروں کا اس میں کوئی قصور نہیں . وہ کیا کریں ؟ بہت سے دوکانداروں نے تو کئی کئی دن گھاٹا اٹھا کر ' مجبور ہو کر تیسرے اور چوتھے دن اپنی چیزوں کے دام بڑھائے ہیں پرانے چھوٹے سکوں اور نئے پیسوں کے ادل بدل کا گورکھ دھندا ایسا ہے کہ ابھی ایک دن ہم ایک دوکان پر ایک چھوٹی سی چیز خریدنے گئے . چیز کے دام پرانے سکوں میں طے تھے . ہم نے نئے پیسوں میں دام دینا چاہا . دوکان پر بیٹھا لڑکا انکار کیسے کرتا ؟ بیچارا

ख़ुद के साथ कहने लगा—"बाबूजी ! जो ठीक हो दे जाइये. हमें हिसाब नहीं आता." हमारे आँसू आ गए !

डाकख़ानों में और जगह जगह सरकारी दफ़्तरों तक में जो खिच्चा-पौं मची है वह अख़बारों तक में आ चुकी है. कहीं कहीं तो मार पीट तक की नौबत आ गई. डाकख़ानों की खिड़कियाँ भी टूटीं. डाकख़ानों के बाबू भी बेचारे मुसीबत में थे कहीं-कहीं पुलीस से काम लेना पड़ा. चीज़ों के दाम बढ़ाने में जगह जगह सरकारी और नीम सरकारी संस्थाएँ भी मामूली दूकानदारों से पीछे नहीं रहीं.

बड़े-बड़े शहरों की यह सब बातें भी बरदाश्त कर ली जा सकती थीं पर गलियों, गावों और गावों के बाज़ारों में जिस तरह हज़ारों को अपनी छल विद्या चलाने का और लाखों निर्धन ग़रीबों से उनकी गाढ़ी पसीने की कमाई छलने का मौक़ा मिला और मिल रहा है, वह इस नए सुधार का सब से अधिक दर्दनाक रूप है

हम मानते हैं कि इस सुधार से फ़ायदा है पर फ़ायदा है अधिकतर सरकार सरकारी दफ़्तरों और थोड़े से पूँजीपतियों को और परेशानी और नुक़सान उठाना पड़ा लाखों ग़रीब जनता और दरमियाने दरजे के लोगों को

काम दुनिया में बहुत से अच्छे होते हैं. पर हमारे "विशेषज्ञ" अकसर कौन चीज़ पहले और कौन पीछे नहीं समझ पाते कारण यह है कि इन बड़ी-बड़ी तनख़्वाहें पाने वालों और बड़े बड़े बंगलों में रहने वालों की निगाहें ऊपर और अपने से भी ऊपर की तरफ़ ही जाती हैं. इनकी निगाहें नीचे की दबी हुई करोड़ों जनता की तरफ़ नहीं जा पातीं. दरअसल ढंग पर सिक्के का सुधार एक अच्छी चीज़ है. पर इससे कहीं अधिक अच्छी और कहीं अधिक ज़रूरी चीज़ थी और है प्रारम्भिक शिक्षा को आम, मुफ़्त और सब के लिये लाज़मी करना और देश में पढ़े लिखों की संख्या को अठारह .फ़ीसदी से बढ़ाकर अठानवे फ़ीसदी तक पहुँचाना ऐसा कर लेने के बाद फिर सिक्कों जैसे सुधारों से परेशानी और नुक़सान भी सौ .फ़ीसदी से घटकर दो .फ़ीसदी रह जाता पर हमारे 'माहिरों' को फ़िक्र है जल्दी से-जल्दी देश की दौलत को बढ़ाने की, जिसका अर्थ है, आजकल के हालात में, पूँजीपतियों की तिजोरियों को और अधिक ऊपर तक भर देने की, जिससे ग़रीबों की मुसीबतें और अधिक बढ़ जाती हैं और ग़रीब और अमीर का फ़रक़ और अधिक चमक उठता है. हम पहले भी कह चुके हैं कि इस देश में देश की कुल दौलत को बढ़ाना हरगिज़ इतना ज़रूरी नहीं है जितना मामूली इन्सानी ज़िन्दगी के स्तर से कहीं नीचे रहकर दिन काटने वाले करोड़ों इनसानों को मामूली और स्वस्थ इनसानी ज़िन्दगी के स्तर तक लाना

خود کے ساتھ کہنے لگا—"بابو جی ! جو ٹھیک ہو دے جائیے۔ ہمیں حساب نہیں آتا۔" ہمارے آنسو آگئے !

ڈاکخانوں میں اور جگہ جگہ سرکاری دفتروں تک میں جو چل پوں مچی ہے وہ اخباروں تک میں آچکی ہے۔ کہیں کہیں تو مار پیٹ تک کی نوبت آگئی۔ ڈاکخانوں کی کھڑکیاں بھی ٹوٹیں۔ ڈاکخانوں کے بابو بھی بیچارے مصیبت میں تھے کہیں کہیں پولس سے کام لینا پڑا۔ چیزوں کے دام بڑھانے میں جگہ جگہ سرکاری اور نیم سرکاری سنستھائیں بھی معمولی دوکانداروں سے پیچھے نہیں رہیں۔

بڑے بڑے شہروں کی یہ سب باتیں بھی برداشت کر لی جا سکتی تھیں پر گلیوں، گاؤں اور گاؤں کے بازاروں میں جس طرح ہزاروں کو اپنی چھل ودیا چلانے کا اور لاکھوں نردھن غریبوں سے اُن کی گاڑھی پسینے کی کمائی چھلنے کا موقعہ ملا اور مل رہا ہے، وہ اس نئے سدھار کا سب سے ادھک دردناک روپ ہے

ہم مانتے ہیں کہ اس سدھار سے فائدہ ہے پر فائدہ ہے ادھکتر سرکار، سرکاری دفتروں اور تھوڑے سے پونجی پتیوں کو اور پریشانی اور نقصان اٹھانا پڑا لاکھوں غریب جنتا اور درمیانے درجے کے لوگوں کو۔

کام دنیا میں بہت سے اچھے ہوتے ہیں پر ہمارے "وشیشگیہ" اکثر کون چیز پہلے اور کون پیچھے نہیں سمجھ پاتے کارن یہ ہے کہ ان بڑی بڑی تنخواہیں پانے والوں اور بڑے بڑے بنگلوں میں رہنے والوں کی نگاہیں اوپر اور اپنے سے بھی اوپر کی طرف ہی جاتی ہیں۔ اُن کی نگاہیں نیچے کی دبی ہوئی کروڑوں جنتا کی طرف نہیں جا پاتیں۔ دراصل ڈھنگ پر سکے کا سدھار ایک اچھی چیز ہے۔ پر اس سے کہیں ادھک اچھی اور کہیں ادھک ضروری چیز تھی اور ہے پرارمبھک شکشا کو عام، مفت اور سب کے لئے لازمی کرنا اور دیش میں پڑھے لکھوں کی سنکھیا کو اٹھارہ فیصدی سے بڑھا کر اٹھانوے فیصدی تک پہنچانا۔ ایسا کر لینے کے بعد پھر سکوں جیسے سدھاروں سے پریشانی اور نقصان بھی سو فیصدی سے گھٹ کر دو فیصدی رہ جاتا۔ پر ہمارے 'ماہروں' کو فکر ہے جلدی سے جلدی دیش کی دولت کو بڑھانے کی جس کا ارتھ ہے، آجکل کے حالات میں، پونجی پتیوں کی تجوریوں کو اور ادھک اوپر تک بھر دینے کی، جس سے غریبوں کی مصیبتیں اور ادھک بڑھ جاتی ہیں اور غریب اور امیر کا فرق اور ادھک چمک اٹھتا ہے ہم پہلے بھی کہہ چکے ہیں کہ اس دیش میں دیش کی کل دولت کو بڑھانا ہرگز اتنا ضروری نہیں ہے جتنا معمولی انسانی زندگی کے ستر سے کہیں نیچے رہ کر دن کاٹنے والے کروڑوں انسانوں کو معمولی اور سوستھ انسانی زندگی کے ستر تک لانا۔

श्री राजगोपालाचारी ने इस नए सुधार का बहुत विरोध किया, पर आजकल उनकी सुनता कौन है? जो आदमी किसी समय कांग्रेस के अन्दर सबसे अधिक कुशाग्रबुद्धि माना जाता था और जो अंग्रेजी राज के हटने पर इस देश का पहला हिन्दुस्तानी गवरनर जनरल बना वह आज हमारे बूझ बुझक्कड़ "माहिरों" की निगाह में दकियानूसी और पिछड़ा हुआ है!

राजाजी ने भी सुझाया था कि अगर दशमल पद्धति को रायज करना ही है तो बजाय 'नया पैसा' चलाने के एक 'नया रुपया' और चला दिया जाता जो पुराने सौ पैसों यानी एक रुपया नौ आने के बराबर होता पुराना पैसा, पुराना रुपया और बाक़ी पुराने सिक्के वैसे ही कुछ दिनों चलते रहते. पाँच, दस, पच्चीस और पचास पैसो के नए सिक्के भी साथ-साथ चला दिये जाते. धीरे-धीरे एक दो बरस के अन्दर पुराने सिक्के सिवाय पैसे के बन्द कर दिये जाते और नया ढंग सारे देश मे चल पड़ता. अब भी तीन बरस लगेंगे ही, पर इससे जनता को बड़ी आसानी हो जाती किसी को कोई ख़ास परेशानी न होती, न चीजों के भाव बढ़ते, न छलियों को छल का मौका मिलता, न ग़रीब भोली जनता लुटती पर इसमें एक दिक़्क़त जरूर थी. विदेशों में हमारे आजकल के रुपए के दाम बँधे हुए हैं. 'नए रुपए' के दाम नए सिरे से तय करने पड़ते उनमे शायद एक दो महीना विदेशी बैन्कों, विदेशी व्यापारियो और विदेशी सरकारो के साथ बैठकर या लिखा पढ़ी करके बैठ बिठाव करना पड़ता. पर यह कैसे बरदाश्त किया जा सकता था! उन्हीं बड़े लोगों और बड़े व्यापारो की आसानी पर तो हमारी सारी निगाहें लगी हुई थीं.

यहाँ हम एक सच्ची घटना दे रहे हैं.—

कुछ दिन हुए पंजाब में एक मशहूर सज्जन थे सर छोटू राम. सर सिकन्दर हयात की मिनिस्टरी में वह वजीर भी थे सर सिकन्दर हयात उनकी बड़ी इज्जत करते थे और उन्हे 'चचा' कहा करते थे. छोटू रामजी पंजाब के एक पूर्वी जिले के ग़रीब जाट घर में पैदा हुए थे. बड़े जमींदारों और साहूकारो की तरफ़ से उनके दिल में नफ़रत भरी हुई थी. एक बार हम लाहौर गए. छोटू राम जी से भी मिले. उन्होने हमारे सामने पंजाब के 'बनियों' के ख़िलाफ़ जहर उगलना शुरू किया वह पंजाब के सब ऐसे लोगों को 'बनिया' कहा करते थे, हालाकि उनमें से अधिकतर जनम के खत्री हैं. हमने छोटू रामजी से पूछा कि —"आप के अन्दर इन लोगों के ख़िलाफ़ इतना जहर क्यों भरा हुआ है?" वह कुछ सोचने लगे. हमें ऐसा लगा कि उनके दिल पर कुछ असर भी हुआ. उन्होंने ज़रा सोच कर हमें जवाब दिया:—

شری اپ گوپلا چاری نے اس نئے سدھار کا بہت وروده کیا. پر آجکل اُن کی سنتا کون ہے؟ جو آدمی کسی سمے کانگریس کے اندر سب سے ادھک کشاگردھی مانا جاتا تھا اور جو انگریزی راج کے ہٹنے پر اس دیش کا پہلا ہندستانی گورنر جنرل بنا وہ آج ہمارے بوجھ بجھکڑ "ماہروں" کی نگاہ میں دقیانوسی اور پچھڑا گھسوٹ ہے!

راجا جی نے یہ بھی سمجھایا تھا کہ اگر دشمل پدھتی کو رائج کرنا ہی ہے تو بجائے 'نیا پیسہ' چلانے کے ایک 'نیا روپیہ' اور چلا دیا جاتا جو پرانے سو پیسوں یعنی ایک روپیہ نو آنے کے برابر ہوتا. پرانا پیسہ' پرانا روپیہ اور بچی پرانے سکے ویسے ہی کچھ دنوں چلتے رہتے پانچ' دس' پچیس اور پچاس پیسوں کے نئے سکے بھی ساتھ ساتھ چلا دیے جاتے دھیرے دھیرے ایک دو برس کے اندر پرانے سکے سوائے پیسے کے بند کر دیئے جاتے اور نیا ڈھنگ سارے دیش میں چل پڑتا. اب بھی تین برس لگینگے ہی' پر اس سے جنتا کو بڑی آسانی ہو جاتی کسی کو کوئی خاص پریشانی نہ ہوتی' نہ چیزوں کے بھاؤ بڑھتے' نہ چھلیوں کو چھل کا موقعہ ملتا' نہ غریب بھولی جنتا لٹتی. پر اس میں ایک دقت ضرور تھی. ودیشوں میں ہمارے آجکل کے روپئے کے دام بندھے ہوئے ہیں. نئے روپئے' کے دام نئے سرے سے طے کرنے پڑتے اس میں شاید ایک دو مہینہ ودیشی بنکوں' ودیشی وپاپاریوں اور ودیشی سرکاروں کے ساتھ بیٹھکر یا لکھا پڑھی کر کے بیٹھ بٹھاؤ کرنا پڑتا پر یہ کیسے برداشت کیا جاسکتا تھا! انہیں بڑے لوگوں اور بڑے وپاپاریوں کی آسانی پر تو ہماری ساری نگاہیں لگی ہوئی تھیں!

یہاں ہم ایک سچی گھٹنا دے رہے ہیں.—

کچھ دن ہوئے پنجاب میں ایک مشہور سجن تھے سر چھوٹو رام. سر سکندر حیات کی منسٹری میں وہ وزیر بھی تھے. سر سکندر حیات اُن کی بڑی عزت کرتے تھے اور انہیں 'چچا' کہا کرتے تھے. چھوٹو رام جی پنجاب کے ایک پوربی ضلع کے غریب جاٹ گھر میں پیدا ہوئے تھے. بڑے زمینداروں اور ساہو کاروں کی طرف سے اُن کے دل میں نفرت بھری ہوئی تھی. ایک بار ہم لاہور گئے. چھوٹو رام جی سے بھی ملے. انہوں نے ہمارے سامنے پنجاب کے 'بنیوں' کے خلاف زہر اگلنا شروع کیا. وہ پنجاب کے سب ایسے لوگوں کو 'بنیا' کہا کرتے تھے' حالانکہ اُن میں سے ادھک تر جنم کے کھتری ہیں. ہم نے چھوٹو رام جی سے پوچھا کہ—"آپ کے اندر ان لوگوں کے خلاف اتنا زہر کیوں بھرا ہوا ہے؟" وہ کچھ سوچنے لگے ہمیں ایسا لگا کہ اُن کے دل پر کچھ اثر بھی ہوا. انہوں نے ذرا سوچکر ہمیں جواب دیا:—

"सुनिये महाराज ! मैं आपको बताऊँ. मेरे अन्दर इन लोगों से घृणा कैसे और कब से पैदा हुई, मेरी उमर बारह चौदह साल की रही होगी. मेरा छोटा भाई बहुत बीमार था. दवा के लिये घर में पैसे नहीं थे. पास के एक धनी बनिये के हम क़रज़दार थे. उसी दिन सोलह रुपये की एक क़िस्त चुकानी थी. मेरे बाप ने किसी तरह सोलह रुपये जमा कर रखे थे. मुझसे कहा कि जाकर बनिये की क़िस्त चुका आओ. मैंने कहा पहले इसमें से भाई की दवा मँगा लो, क़िस्त फिर पूरी कर दी जायगी. बाप ने न माना. उनके लिये क़रज़ा चुकाना ज़ियादा ज़रूरी था. तय हुआ कि मैं 'लालाजी' से जाकर पूछ आऊँ कि वह चार दिन के लिये क़िस्त की अदायगी मुलतवी कर दें तो भाई के लिये दवा आ जावे. मैं गया. गरमियों के दिन थे. लालाजी खाना खाके बाहर निकले. मैंने अपनी बात कही. उन्होंने कहा,—'मैं थोड़ी देर सो लूँ फिर बताऊँगा. इतने तू यहाँ बैठके पंखा खींच.' लालाजी अन्दर जाकर दो घन्टे सोते रहे. मैं बरामदे की गरमी में स्टूल पर बैठा पंखा खींचता रहा. यह ज़िल्लत मैंने इसीलिये बरदाश्त की कि किसी तरह छोटे भाई की दवा के लिये पैसे मिल जावें. दो घन्टे बाद लालाजी बाहर निकले. मुझसे फिर पूछा "क्या कहना है ?" मैंने सब बात दुहरा दी और गिड़गिड़ा कर प्रार्थना की कि—"आप चार दिन के लिये क़िस्त की अदायगी मुलतवी कर दें तो भाई की दवा आ जावे." लालाजी ने मुझे झिड़ककर जवाब दिया—"मुझे कोई ग़रज़ नहीं तेरे भाई की बीमारी सीमारी से, जा बाप से कहदे क़िस्त का रुपया फ़ौरन् लाकर जमा कर दें." मैं चला आया. क़िस्त का रुपया उसी दिन चुका दिया गया. पर वह दिन और आज का दिन, उसी दिन से मैंने तय कर लिया कि इन 'बनियों' को मिटाकर छोड़ना है."

हमने इस पर श्री छोटू रामजी को काफ़ी समझाने की कोशिश की,—सब बनिये एकसे नहीं होते, नफ़रत से नफ़रत नहीं कटती, नफ़रत प्रेम और सेवा से कटती है, वग़ैरह वग़ैरह. हमें नहीं मालूम छोटू रामजी पर कोई असर हुआ या नहीं. पर हमारे दिल पर यह जम गया कि ग़रीबों की ग़रीबी को देर तक चलने देना और गिरे हुओं की गिरावट की देर तक परवाह न करना समाज के लिये एक ख़तरनाक चीज़ है. सोना और मिट्टी दोनों को मिट्टी मानने वाले महात्माओं के कथन में सचाई का एक अंश ही है. पर यह बात सोलह आने सच है कि धनवानों के धन को बढ़ाना उतना ज़रूरी नहीं है जितना ग़रीबों की ग़रीबी को कम करना, और इसके लिए बड़े बड़े दिमाग़ों वाले माहिरों की इतनी ज़रूरत नहीं है जितनी बड़े दिल वाले नेक जन सेवकों की. इस देश का कल्याण इसी मे है कि यह गाँधी जी के बताए हुए अहिंसा के रास्ते से

"سنئے مہاراج ! میں آپ کو بتاؤں . میرے اندر اِن لوگوں سے گھرنا کیسے اور کب سے پیدا ہوئی . میری عمر بارہ چودہ سال کی رہی ہوگی . میرا چھوٹا بھائی بہت بیمار تھا . دوا کے لئے گھر میں پیسے نہیں تھے . پاس کے ایک دھنی بنئے کے ہم قرضدار تھے . اُسی دن سولہ روپیہ کی ایک قسط چکانی تھی . میرے باپ نے کسی طرح سولہ روپئے جمع کر رکھے تھے . مجھ سے کہا کہ جاکر بنئے کی قسط چکا آؤ. میں نے کہا پہلے اِس میں سے بھائی کی دوا منگا لو، قسط پھر پوری کر دی جائیگی . باپ نے نہ مانا . اُن کے لئے قرضہ چکانا زیادہ ضروری تھا . طے ہوا کہ میں 'لالہ جی' سے جاکر پوچھ آؤں کہ وہ چار دن کے لئے قسط کی ادائیگی ملتوی کر دیں تو بھائی کے لئے دوا آجاوے . میں گیا . گرمیوں کے دن تھے . لالہ جی کھانا کھا کے باہر نکلے . میں نے اپنی بات کہی . اُنھوں نے کہا—'میں تھوڑی دیر سو لوں پھر بتاؤنگا . اِتنے تو یہاں بیٹھ کر پنکھا کھینچ .' لالہ جی اندر جاکر دو گھنٹے سوتے رہے . میں برآمدہ کی گرمی میں اسٹول پر بیٹھا پنکھا کھینچتا رہا . یہ ذلت میں نے اِسی لئے برداشت کی کہ کسی طرح چھوٹے بھائی کی دوا کے لئے پیسے مل جاویں . دو گھنٹے بعد لالہ جی باہر نکلے . مجھ سے پھر پوچھا "کیا کہنا ہے ؟" میں نے سب بات دہرادی اور گڑگڑا کر پرارتھنا کی کہ—"آپ چار دن کے لئے قسط کی ادائیگی ملتوی کر دیں تو بھائی کی دوا آجاوے." لالہ جی نے مجھے جھڑک کر جواب دیا—"مجھے کوئی غرض نہیں تیرے بھائی کی بیماری سیماری سے' جا باپ سے کہہ دے قسط کا روپیہ فورا لاکر جمع کرا دیں." میں چلا آیا . قسط کا روپیہ اُسی دن چکا دیا گیا . پر وہ دن اور آج کا دن' اُسی دن سے میں نے طے کر لیا کہ اِن 'بنیوں' کو مٹا کر چھوڑنا ہے ."

ہم نے اِس پر سری چھوٹو رام جی کو کافی سمجھانے کی کوشش کی'—سب بنئے ایک سے نہیں ہوتے' نفرت سے نفرت نہیں کٹتی' نفرت پریم اور سیوا سے کٹتی ہے' وغیرہ وغیرہ . ہمیں نہیں معلوم چھوٹو رام جی پر کوئی اثر ہوا یا نہیں ، پر ہمارے دل پر یہ جم گیا کہ غریبوں کی غریبی کو دیر تک چلنے دینا اور گرے ہوؤں کی گراوٹ کی دیر تک پرواہ نہ کرنا سماج کے لئے ایک خطرناک چیز ہے . سونا اور مٹی دونوں کو مٹی ماننے والے مہاتماؤں کے کتھن میں سچائی کا ایک انش ہی ہے ، پر یہ بات سولہ آنے سچ ہے کہ دھنوانوں کے دھن کو بڑھانا اتنا ضروری نہیں ہے جتنا غریبوں کی غریبی کو کم کرنا' اور اِس کے لئے بڑے بڑے دماغوں والے ماہروں کی اِتنی ضرورت نہیں ہے جتنی بڑے دل والے نیک جن سیوکوں کی. اِس دیش کا کلیان اِسی میں ہے کہ یہ گاندھی جی کے بتائے ہوئے اہنسا کے راستے سے

छिपने न पावे. इसी तथ्य को सामने रखकर हमारी अपनी सरकार से और खासकर पंडित जवाहर लाल नेहरू से विनम्र प्रार्थना है कि वह अपने 'सलाहकारों' को बदलें, या कम से कम यह करें कि इन विद्वान विशेषज्ञ सलाहकारों के साथ कुछ बेपढ़े, बूढ़े, नेक, तजरबेकार, भारत की दुनिया देखे हुए, किसानों, मजदूरों, छोटे दूकानदारों और छोटे कारीगरों को भी देश भर से चुनकर शामिल कर लें, और जनता से सम्बन्ध रखने वाली बातों में उनसे भी सलाह ले लिया करें.

9-4-57 —सुन्दरलाल.

इस चुनाव में कौन हारा ?—भूमिहीन !

बहुत जोरों से जिन चुनावों का इंतजार था, वह पूरे हो गये. जगह जगह और केन्द्र में जीतने वालों की मिनिस्ट्रियाँ बन गईं. राज काज का काम बाक़ायदा फिर से शुरू हो गया. लेकिन हमारे मन में रह रह कर एक ख़याल आता है कि इस चुनाव में जो जीते सो तो जीते, मगर हारा कौन ? आख़िर, इस अखाड़े मे कौन हारा, किसका सबसे ज्यादा नुक़सान हुआ, सबसे ज्यादा छीछालेदर किसकी हुई ? जितना भी हम इस सम्बन्ध में विचार करते हैं उतना ही ज्यादा एक ही जवाब पर पहुँचते हैं— भूमिहीन ! भूमिहीन !! भूमिहीन !!!

किसी स्कूल मे दो मास्टरों में आपस में दिल-शिकनी या लड़ाई हो जाये—तो नतीजा भोगना पड़ता है विद्यार्थियों को. बाजार में दो व्यापारियों मे लाग-डॉट हो जाये तो भुगतना पड़ता है ख़रीदारों को. अस्पताल मे दो नर्सों या डाक्टरों में कहा सुनी हो जाये तो भुगतना पड़ता है मरीजों को. कचहरी में दो वकीलों में रंजिश हो जाये तो भुगतना पड़ता है मुवक्किलों को. दफ्तर में दो साहबों या बाबुओं में मनमुटाव हो जाये तो भुगतना पड़ता है अर्जी देने वालों को. ... इसी तरह असेम्बली या पार्लियामेन्ट के लिये दो तीन या चार लोगों की लड़ाई जो होती है तो उसमें आफ़त आती है— भूमिहीन की.

इस चुनाव में कई करोड़ रुपये सरकार का ख़र्च हुआ है. वह कहाँ से आया ? देश की नंगी भूखी जनता से जिसे दो जून पूरा

دکھنے نہ پائے. اسی تتھ کو سامنے رکھ کر ہماری اپنی سرکار سے اور خاص کر پنڈت جواہر لال نہرو سے ونمر پرارتھنا ہے کہ وہ اپنے 'صلاح کاروں' کو بدلیں، یا کم سے کم یہ کریں کہ ان ودوان وشیشگیہ صلاح کاروں کے ساتھ کچھ بے پڑھے، بوڑھے، نیک، تجربہ کار بھارت کی دنیا دیکھے ہوئے، کسانوں، مزدوروں، چھوٹے دوکانداروں اور چھوٹے کاریگروں کو بھی دیش بھر سے چن کر شامل کریں، اور جنتا سے سمبندھ رکھنے والی باتوں میں ان سے بھی صلاح لے لیا کریں.

9. 4. 57 —سندر لال.

اس چناؤ میں کون ہارا ؟—بھومی ہین !

بہت زوروں سے جن چناؤ کا انتظار تھا، وہ پورے ہو گئے. جگہہ جگہہ اور کیندر میں جیتنے والوں کی منسٹریاں بن گئیں. راجکاج کا کام باقاعدہ پھر سے شروع ہو گیا. لیکن ہمارے من میں رہ رہ کر ایک خیال آتا ہے کہ اس چناؤ میں جو جیتے سو تو جیتے، مگر ہارا کون ؟ آخر، اس اکھاڑے میں کون ہارا، کس کو سب سے زیادہ نقصان ہوا، سب میں زیادہ چھیچھالیدر کس کی ہوئی ؟ جتنا بھی ہم اس سمبندھ میں وچار کرتے ہیں اتنا ہی زیادہ ایک ہی جواب پر پہونچتے ہیں— بھومی ہین ! بھومی ہین !! بھومی ہین !!!

کسی اسکول میں دو ماسٹروں میں آپس میں دلشکنی یا لڑائی ہو جائے—تو نتیجہ بھوگنا پڑتا ہے ودیارتھیوں کو. بازار میں دو ویاپاریوں میں لاگ ڈانٹ ہو جائے تو بھگتنا پڑتا ہے خریداروں کو. اسپتال میں دو نرسوں یا ڈاکٹروں میں کہا سنی ہو جائے تو بھگتنا پڑتا ہے مریضوں کو. کچہری میں دو وکیلوں میں رنجش ہو جائے تو بھگتنا پڑتا ہے موکلوں کو. دفتر میں دو صاحبوں یا بابوؤں میں من مٹاؤ ہو جائے تو بھگتنا پڑتا ہے عرضی دینے والوں کو......اسی طرح اسمبلی یا پارلیامینٹ کے لئے دو، تین یا چار لوگوں کی لڑائی جو ہوتی ہے تو اس میں آفت آتی ہے—بھومی ہین کی.

اس چناؤ میں کئی کروڑ روپیہ سرکار کا خرچ ہوا ہے. وہ کہاں سے آیا ؟ دیش کی ننگی بھوکی جنتا سے، جسے دو جون پورا

खाना भी मयस्सर नहीं होता. चुनाव में हिस्सा लेने वाली पार्टियों और उनके उम्मीदवारों ने जो लाखों-करोड़ों रुपये खर्च किये, वह कहाँ से आये? दीन-हीन-ग़रीबों से. जो लोग चुनाव में जीते वह कहाँ से खर्च निकालेंगे? अपने मासिक मेहनतानों या भत्तों से या व्यापारों से जिसका बोझ दुखियों को ही उठाना पड़ेगा. जो लोग चुनाव में हारे हैं वे अपना रुपया किस तरह पूरा करेंगे? काम-धाम या व्यापारों से—जिसका बोझ लाचारों को ही उठाना पड़ेगा. उम्मीदवार तो फिर सँभल जायेंगे, लेकिन जिन आफ़त के मारे दुःखी किसानों-मजदूरों के बल पर इन्होंने लड़ाई लड़ी उनके उठने की गुन्जायश कहाँ है?

कौन नहीं जानता कि चुनाव के कारण जात पाँत का ज़हर हमारे समाज में और भी गहराई में घुस गया है, जिस जाति-भेद पर राजा राममोहन राय से लेकर महात्मा गाँधी तक सभी करारी चोटें करते जा रहे थे और जो आख़िरी साँसें लेने लगा था—उसमें चुनाव ने नई जान फूँक दी और सालों की मेहनत मिट्टी में मिलने का अन्देशा है. हमारे देश में जात-पाँत के भेद-भाव की वजह से हम परदेसियों के आधीन हो गये. भारत माता की छाती पर यह फोड़ा है. चुनाव ने इस पर नमक छिड़कने का काम किया और सारे वातावरण को ज़हरीला बना दिया.

फिर जाति-भेद का जो फ़ायदा उठाते हैं वे कौन लोग होते हैं? वही जिनके पास धन है, धरती है, सम्पत्ति है, विद्या है, जिनका सरकार में, दफ़्तरों में, पुलिस में कुछ असर है. इस जाति-भेद से इनकी शक्ति और मज़बूत हो जाती है जिससे यह और भी निकम्मे होकर अपने से नीचे वालों को सताते हैं. मन चाहा व्यवहार उनके साथ करते हैं. और ख़ासकर भूमिहीनों की, हरिजन भूमिहीनों की तो कोई हस्ती ही नहीं समझते और उन्हें ख़ूब हैरान करते हैं. उनको घर से निकाल दें, उनकी रोज़ी छीन लें उनको पिटवा दें. उनकी इज़्ज़त आबरू उतरवा लें,. उनसे लेन-देन बन्द कर दें— जो न करें सो थोड़ा है. चुनाव से जात पाँत का भेद बढ़ा और जात-पाँत की मार सबमें ज़्यादा पड़ी भूमिहीनों पर.

पार्टी-भेद तो इन चुनावों का आधार ही है. इस पार्टी भेद ने तो और ग़ज़ब ढाया है. कितने ही ऐसे गाँव मिलते हैं जहाँ पहले कोई पार्टी नहीं थी, जहाँ झगड़े फ़िसाद नहीं होते थे— मगर चुनाव के कारण पार्टी-भेद पैदा हुआ और लोगों के बीच दलबन्दी शुरू हो गई. एक भाई कांग्रेस पार्टी में है तो दूसरा प्रजा-समाजवादी है. एक कम्यूनिस्ट है तो दूसरा जन-संघी, बाप कांग्रेसी, बेटा सोशलिस्ट, आदि आदि. दिलों के अन्दर फ़र्क़ पैदा हो गया.

کھانا بھی میسر نہیں ہوتا . چناؤ میں حصہ لینے والی پارٹیوں اور اُن کے اُمیدواروں نے جو لاکھوں کروڑوں روپئے خرچ کئے، وہ کہاں سے آئے ؟ دین ہین غریبوں سے . جو لوگ چناؤ میں جیتے وہ کہاں سے خرچ نکالینگے ؟ اپنے ماسک محنتانوں یا بھتوں سے یا ویاپاروں سے جس کا بوجھ دُکھیوں کو ہی اُٹھانا پڑیگا . جو لوگ چناؤ میں ہارے ہیں وے اپنا روپیہ کس طرح پورا کرینگے ؟ کام دھام یا ویاپار سے—جس کا بوجھ لاچاروں کو ہی اُٹھانا پڑیگا . اُمیدوار تو پھر سنبھل جائینگے، لیکن جن آفت کے مارے دکھی کسانوں مزدوروں کے بل پر اِنہوں نے لڑائی لڑی، اُن کے اُٹھنے کی گنجائش کہاں ہے ؟

کون نہیں جانتا کہ چناؤ کے کارن جات پانت کا زہر ہمارے سماج میں اور بھی گہرائی میں گھس گیا ہے. جس جاتی بھید پر راجہ رام موہن رائے سے لیکر مہاتما گاندھی تک سبھی کراری چوٹیں کرتے جا رہے تھے اور جو آخری سانسیں لینے لگا تھا—اس میں چناؤ نے نئی جان پھونک دی اور سالوں کی محنت مٹی میں ملنے کا اندیشہ ہے . ہمارے دیش میں جات پات کے بھید بھاؤ کی وجہ سے ہم پردیسیوں کے ادھین ہو گئے . بھارت ماتا کی چھاتی پر یہ پھوڑا ہے ! چناؤ نے اِس پر نمک چھڑکنے کا کام کیا اور سارے واتاورن کو زہریلا بنا دیا .

پھر جاتی بھید کا جو فائدہ اُٹھاتے ہیں وے کون لوگ ہوتے ہیں ؟ وہی جن کے پاس دھن ہے، دھرتی ہے، سمپتی ہے، ودیا ہے؛ جن کا سرکار میں، دفتروں میں، پولس میں کچھ اثر ہے . اِس جاتی بھید سے اِن کی شکتی اور مضبوط ہو جاتی ہے جس سے یہ اور بھی نکمے ہو کر اپنے سے نیچے والوں کو ستاتے ہیں . من چاہا ویوہار اُن کے ساتھ کرتے ہیں . اور خاص کر بھومی ہینوں کی، ہریجن بھومی ہینوں کی تو کوئی ہستی ہی نہیں سمجھتے اور انہیں خوب حیران کرتے ہیں . اُن کو گھر سے نکال دیں، ان کی روزی چھین لیں، اُن کو پٹوا دیں، اُن کی عزت آبرو اُتروا لیں، ان سے لین دین بند کر دیں— جو نہ کریں سو تھوڑا ہے . چناؤ سے جات پانت کا بھید بڑھا اور جات پانت کی مار سب میں زیادہ پڑی بھومی ہینوں پر .

پارٹی بھید تو ان چناؤں کا آدھار ہی ہے . اِس پارٹی بھید نے تو اور غضب ڈھایا ہے . کتنے ہی ایسے گاؤں ملتے ہیں جہاں پہلے کوئی پارٹی نہیں تھی، جہاں جھگڑے فساد نہیں ہوتے تھے—مگر چناؤ کے کارن پارٹی بھید پیدا ہوا اور لوگوں کے بیچ دلبندی شروع ہو گئی . ایک بھائی کانگریس پارٹی میں ہے تو دوسرا پرجا سماج وادی ہے . ایک کمیونسٹ ہے تو دوسرا جن سنگھی، باپ کانگریسی، بیٹا سوشلسٹ، آدی آدی . دلوں کے اندر فرق پیدا ہو گیا .

हमारे देश में भेद-भाव वैसे ही बहुत थे. जाति-भेद, समाज भेद, रहन-सहन का भेद, सम्प्रदाय का भेद, गरीब-अमीर का भेद, भूमिहीन-भूमिवान का भेद, आदि अब चुनाव की वजह से यह पार्टी-भेद और नया खड़ा हो गया. पुराने भेद खत्म नहीं हुए, नये खड़े हो गये.

ग्राम सभा व पंचायत आदि में भी पार्टी भेद के आधार पर चुनाव लड़े जाते हैं. ग्राम सभा के चुनाव, पंचायत अदालत के चुनाव, प्रधान और सरपंच के चुनाव, जिला परिषद के चुनाव, लखनऊ और दिल्ली के चुनाव. चुनाव क्या है आपस में आग लगाने का सिलसिला है. इस तरह दिल से दिल कटता चला जाता है. आपस म दरारें पड़ती चली जाती हैं.

चुनाव के तीन सूत्र होते हैं— (१) अपनी तारीफ, (२) दूसरे की बुराई, और (३) खूब झूठ बोलना. यही वजह है कि चुनाव में ईमान या नैतिकता का कोई लिहाज नहीं रहता. गोस्वामी तुलसीदास के यह शब्द चुनाव राजनीति पर खरे उतरते हैं—

झूठहि लेना झूठहि देना. झूठहि भोजन झूठ चबेना.

जब झूठ का बाजार गरम हो, पार्टी-भेद का बोलबाला हो तो इन्सानियत या सत्य की कोई गुन्जाइश रह ही नहीं जाती. देश का नैतिक ह्रास लाजमी है. लेकिन इस सारी छीना-झपटी में, मार-पीट में, हार-जीत में, दबाव किस पर आता है? वही बात, भूमिहीन पर. जो लोग चुनाव में रस लेते हैं वे ज्यादातर भूमिवान या सम्पन्न लोग होते हैं. उनके पार्टी-भेद का दुःखदायी असर गाँव के जीवन पर पड़ता है इसका बोझ भूमिहीनों के कंधों पर आता है. पक्ष-भेद की मार का खमियाजा सारा भूमिहीनों को उठाना पड़ता है.

कहा जायेगा कि भूमिहीन भी तो वोटर है. वह जिसे चाहे वोट देकर शासन बदल सकता है. बात सही दीखती है. केरल में शासन बदल भी गया. उड़ीसा में बदलते बदलते बाल-बाल बचा. मगर उस बदलने से होता क्या है? आखिर किसी का भी शासन क्यों न हो—वह है तो विधान का पाबन्द. और विधान बनाते हैं वे लोग जिनके पास माल है, सम्पत्ति है, इन्तजाम या कारोबार है. ऐसे लोग जो कुछ भी करते हैं उससे भूमिहीन की हस्ती पर क्या असर पड़ सकता है?

मिसाल लीजिये. भंगियों की हालत देखिये. स्वराज्य होने पर भी पाकिस्तान के भंगी हिन्दुस्तान नहीं आने पाये. उनकी हस्ती में क्या फ़रक़ पड़ा? खास हिन्दुस्तान में भी भंगी वहीं का वहीं रहा—समाज में सबसे नीचा. मोची के काम की, धोबी के काम की, कुम्हार के काम की कम्पनियाँ खुल गईं. लेकिन भंगी के काम की कोई कम्पनी नहीं खुली. भंगी जहाँ का तहाँ रहा. स्वराज्य से उसकी पोजीशन नहीं बढ़ी है.

ہمارے دیش میں بھید بھاؤ ویسے ہی بہت تھے ۔ جاتی بھید، سماج بھید، رہن سہن کا بھید، سمپردائے کا بھید غریب امیر کا بھید، بھومی ہین-بھومی وان کا بھید آدی ۔ اب چناؤ کی وجہہ سے یہ پارٹی بھید اور نیا کھڑا ہو گیا۔ پرانے بھید ختم نہیں ہوئے، نئے کھڑے ہو گئے ۔

گرام سبھا و پنچایت آدی میں بھی پارٹی بھید کے آدھار پر چناؤ لڑے جاتے ہیں ۔ گرام سبھا کے چناؤ، پنچایت عدالت کے چناؤ، پردھان اور سرپنچ کے چناؤ، ضلع پریشد کے چناؤ، لکھنؤ اور دلی کے چناؤ ۔ چناؤ کیا ہے آپس میں آگ لگانے کا سلسلہ ہے ۔ اِس طرح دل سے دل کٹتا چلا جاتا ہے ۔ آپس میں دراریں پڑتی چلی جاتی ہیں ۔

چناؤ کے تین سوتر ہوتے ہیں— (1) اپنی تعریف، (2) دوسرے کی برائی اور (3) خوب جھوٹ بولنا ۔ یہی وجہ ہے کہ چناؤ میں ایمان یا نیتکتا کا کوئی لحاظ نہیں رہتا ۔ گوسوامی تلسی داس کے یہ شبد چناؤ راج نیتی پر کھرے اترتے ہیں—

جھوٹے ہی لینا جھوٹے ہی دینا، جھوٹے ہی بھوجن جھوٹ چبینا۔

جب جھوٹ کا بازار گرم ہو، پارٹی بھید کا بول بالا ہو، تو انسانیت یا ستیہ کی کوئی گنجائش رہ ہی نہیں جاتی۔ دیش کا نیتک ہراس لازمی ہے ۔ لیکن اِس ساری چھینا جھپٹی میں، مار پیٹ میں، ہار جیت میں، دباؤ کس پر آتا ہے؟ وہی بات، بھومی ہین پر ۔ جو لوگ چناؤ میں رس لیتے ہیں وے زیادہ تر بھومی وان یا سمپن لوگ ہوتے ہیں ۔ اُن کے پارٹی بھید کا دکھدائی اثر گاؤں کے جیون پر پڑتا ہے اُس کا بوجھ بھومی ہینوں کے کندھوں پر آتا ہے ۔ پکش بھید کی مار کا خمیازہ سارا بھومی ہینوں کو اٹھانا پڑتا ہے ۔

کہا جائیگا کہ بھومی ہین بھی تو ووٹر ہے ۔ وہ جسے چاہے ووٹ دے کر شاشن بدل سکتا ہے ۔ بات سہی دیکھتی ہے ۔ کیرل میں شاسن بدل بھی گیا۔ اڑیسہ میں بدلتے بدلتے بال بال بچا۔ مگر اُس بدلنے سے ہوتا کیا ہے؟ آخر کسی کا بھی شاسن کیوں نہ ہو—وہ ہے تو ودھان کا پابند ۔ اور ودھان بناتے ہیں وے لوگ جن کے پاس عقل ہے، سمپتی ہے، انتظام یا کاروبار ہے ۔ ایسے لوگ جو کچھ بھی کرتے ہیں اُس بھومی ہین کی ہستی پر کیا اثر پڑ سکتا ہے؟

مثال لیجئے ۔ بھنگیوں کی حالت دیکھئے ۔ سوراج ہونے پر بھی پاکستان کے بھنگی ہندستان نہیں آنے پائے ۔ اُن کی ہستی میں کیا فرق پڑا؟ خاص ہندستان میں بھی بھنگی وہیں کا وہیں رہا—سماج میں سب سے نیچا ۔ موچی کے کام کی، دھوبی کے کام کی، کمہار کے کام کی کمپنیاں کھل گئیں ۔ لیکن بھنگی کے کام کی کوئی کمپنی نہیں کھلی ۔ بھنگی جہاں کا تہاں رہا ۔ سوراجیہ سے اُس کی پوزیشن نہیں بڑھی ۔

यही हालत भूमिहीन की है. उसका वही धंधा—दूसरों के खेत में काम करना. और जिनके खेत हैं वह हल छूना तक पाप समझते हैं. वकालत करेंगे, डाक्टरी करेंगे, प्रोफेसरी करेंगे, बाबूगीरी करेंगे, पुलिस या फौज में नौकरी करेंगे—और जमीन भी रखेंगे. भूमिहीन को न रोजगार है, न तालीम, न खेती न धंधा, वह वहीं का वहीं.

कहने को तो वोटर "किंग-मेकर" (kingmaker) है, मगर है सबसे गया बीता. उसके कंधे पर ही सब खड़े हैं. सबके भेद भाव का, सबके झगड़े का, सबके दाँव पेच का शिकार वही है.

इस चुनाव में हमने एक कम्यूनिस्ट भाई से भूमि माँगी—"आप तो जमीन पर सरकार की मिलकियत चाहते हैं, कुछ दीजिये भूमिहीनों के वास्ते". तो जवाब मिला—"यूँ माँगने से क्या होता है? कानून जब बनेगा तब देखा जायेगा."

एक समाजवादी भाई से भूमि माँगी—"आप चाहते हैं धन और धरती बँटे, तो कुछ दीजिये भूमिहीनों के वास्ते.' जवाब मिला—"वह कहने की बात और होती है. यहाँ तो और मिले तो ले लें."

एक कांग्रेसी भाई से भूमि माँगी—"आपने तो इन्दौर में प्रस्ताव किया है कि समाजवादी ढाँचे के समाज बनाने चाहियें, तो कुछ जमीन दीजिये भूमिहीनों के वास्ते." जवाब मिला—"अरे, प्रस्ताव तो यों पास हुआ ही करते हैं."

तीनों का इन्कार. जहाँ भूमिहीन की बात आती है वहाँ तीनों एक. क्योंकि तीनों भूमिवान हैं और तीनों ही भूमि के मालिक बने रहना चाहते हैं. आपस में जरूर एक कांग्रेसी है, दूसरा समाजवादी, तीसरा कम्यूनिस्ट—लेकिन भूमिहीनों का जब सवाल आया तो तीनों में कोई खास फरक नहीं. जैसे नागनाथ वैसे साँपनाथ.

सार यह है कि आज समाज में सबसे अपमानित, सबसे पीड़ित, सबसे निराश्रित भूमिहीन है. जब तक उसे अपना हक—यानी जमीन—नहीं मिलती है, जब तक जमीन की निजी मिल्कियत रहती है, जब तक जमीन की खरीद बिक्री चलती है—तब तक वही कुचला जाता है, वही सबके पैरों तले रौंदा जाता है, वही सबके मिजाज का शिकार बनता है. कोई जीते, भूमिहीन ही हारता है.

इस वास्ते भूमि की मिल्कियत मिटनी चाहिये. हवा, पानी, धूप और आकाश की तरह भूमि हर किसी को मिलनी चाहिये. देश में से भूमिहीनता मिटनी चाहिये. तभी भूमिहीन बचेगा. तभी देश की बुनियाद साबित रह सकेगी. तभी भारत सर उठाकर दुनिया के आगे खड़ा रह सकेगा.

22. 4. 57 —सुरेश रामभाई

یہی حالت بھومی ہین کی ہے۔ اس کا وہی دھندا—دوسروں کے کھیت میں کام کرنا۔ اور جن کے کھیت ہیں وہ ہل چھونا تک پاپ سمجھتے ہیں۔ وکالت کرینگے، ڈاکٹری کرینگے، پروفیسری کرینگے، بابوگیری کرینگے، پولس یا فوج میں نوکری کرینگے—اور زمین بھی رکھیں گے، بھومی ہین کو نہ روزگار ہے نہ تعلیم نہ کھیتی نہ دھندا، وہ وہیں کا وہیں۔

کہنے کو تو ووٹر "کنگ میکر" (King maker) ہے مگر ہے سب سے گیا بیتا۔ اس کے کندھے پر ہی سب کھڑے ہیں۔ سب کے بھید بھاؤ کا، سب کے جھگڑوں کا، سب کے داؤں پیچ کا شکار وہی ہے۔

اس چناؤ میں ہم نے ایک کمیونسٹ بھائی سے بھومی مانگی—"آپ تو زمین پر سرکار کی ملکیت چاہتے ہیں، کچھ دیجئے بھومی ہینوں کے واسطے۔" تو جواب ملا—"یوں مانگنے سے کیا ہوتا ہے؟ قانون جب بنے گا تب دیکھا جائیگا۔"

ایک سماج وادی بھائی سے بھومی مانگی—"آپ تو چاہتے ہیں دھن اور دھرتی بٹے، تو کچھ دیجئے بھومی ہینوں کے واسطے۔" جواب ملا—"وہ کہنے کی بات اور ہوتی ہے۔ یہاں تو اور ملے تو لے لیں۔"

ایک کانگریسی بھائی سے بھومی مانگی—"آپ نے تو اندور میں پرستاؤ کیا ہے کہ سماج واد کا ڈھانچے کے سماج بنانے چاہئیں، تو کچھ زمین دیجئے بھومی ہینوں کے واسطے۔" جواب ملا—"ارے، پرستاؤ تو یوں پاس ہوا ہی کرتے ہیں۔"

تینوں کا انکار۔ جہاں بھومی ہین کی بات آتی ہے وہاں تینوں ایک۔ کیونکہ تینوں بھومی وان ہیں اور تینوں ہی بھومی کے مالک بنے رہنا چاہتے ہیں۔ آپس میں ضرور ایک کانگریسی ہے، دوسرا سماج وادی، تیسرا کمیونسٹ—لیکن بھومی ہینوں کا جب سوال آیا تو تینوں میں کوئی خاص فرق نہیں۔ جیسے ناگ ناتھ ویسے سانپ ناتھ۔

سار یہ ہے کہ آج سماج میں سب سے اپمانت سب سے پیڑت، سب سے پراشرت بھومی ہین ہے۔ جب تک اسے اپنا حق—یعنی زمین—نہیں ملتی ہے، جب تک زمین کی نجی ملکیت رہتی ہے، جب تک زمین کی خرید بکری چلتی ہے—تب تک وہی کچلا جاتا ہے، وہی سب کے پیروں تلے روندا جاتا ہے، وہی سب کے مزاج کا شکار بنتا ہے۔ کوئی جیتے، بھومی ہین ہی ہارتا ہے۔

اس واسطے بھومی کی ملکیت مٹنی چاہئے: ہوا، پانی، دھوپ اور آکاش کی طرح بھومی ہر کسی کو ملنی چاہئے۔ دیش میں سے بھومی ہینتا مٹنی چاہئے۔ تب ہی بھومی ہین بچے گا۔ تب ہی دیش کی بنیاد ثابت رہ سکے گی۔ تب ہی بھارت سر اٹھا کر دنیا کے آگے کھڑا رہ سکے گا۔

—سریش رام بھائی 22. 4. 57

हिन्दी घर

ھندی گھر

कल्चर पर हर तरह की किताबें मिलने का एक बड़ा केन्द्र—पाठक हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी की अपनी मन-पसन्द किताबों के लिये हमें लिखें।

کلچر پر ھر طرح کی کتابیں ملنے کا ایک بڑا کیندر—پاٹھک ھندی، اردو، انگریزی کی من پسند کتابوں کے لئے ھمیں لکھیں۔

हमारी नई किताबें

ھماری نئی کتابیں

महात्मा गान्धी की वसीयत

(हिन्दी और उर्दू मे)
लेखक—गान्धीवाद के माने जाने
विद्वान स्व० श्री मजर अली सोख्ता
सफे 225, कीमत दो रुपया

مہاتما گاندھی کی وصیت

(ھندی اور اردو میں)
لیکھک—گاندھی واد کے مانے جانے
ودوان سورگیہ شری مظہر علی سوختہ
صفحے 225، قیمت دو روپیہ

— o —

गान्धी बाबा

(बच्चो के लिये बहुत दिलचस्प किताब)
लेखिका—क़ुदसिया ज़ैदी
भूमिका—पन्डित जवाहरलाल नेहरू
मोटा कागज, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तसवीरें
दाम दो रुपया

گاندھی بابا

(بچوں کے لئے بہت دلچسپ کتاب)
لیکھکا—قدسیہ زیدی
بھومکا—پنڈت جواہر لال نہرو
موٹا کاغذ، موٹا ٹائپ، بہت سی رنگین تصویریں
دام دو روپیہ

— o —

पंडित सुन्दरलाल जी की लिखी किताब

پنڈت سندرلال جی کی لکھی کتابیں

गीता और क़ुरान

275 सफ़े, दाम ढाई रुपया

گیتا اور قران

275 صفحے دام ڈھائی روپیہ

हिन्दू मुसलिम एकता

100 सफ़े, दाम बारह आने

ھندو مسلم ایکتا

100 صفحے دام بارہ آنے

महात्मा गान्धी के बलिदान से सबक़

क़ीमत बारह आने

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

قیمت بارہ آنے

पंजाब हमें क्या सिखाता है

क़ीमत चार आने

پنجاب ھمیں کیا سکھاتا ھے

قیمت چار آنے

बंगाल और उससे सबक़

क़ीमत दो आने

بنگال اور اُس سے سبق

قیمت دو آنے

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी

145 मुट्ठीगंज इलाहाबाद

ھندستانی کلچر سوسائٹی

145، مٹھی گنج الہ آباد

Printed and Published by Suresh Ramabhai at the Naya Hind Press 145 Mutthiganj Allahabad.

नया हिन्द

इस नम्बर के ख़ास लेख — اِس نمبر کے خاص لیکھ

दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद — ستانی کلچر سوسائٹی الٰہ آباد

जून 1957 جون

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Annual Subscription

Inland Rs 6/
Foreign Rs 10/
Single Copy As /10/ only

Can be had from—

Manager, NAYA HIND

145 MUTTHIGANJ ALLAHABAD 3

नया हिन्द نیا ہند

जिल्द 23 جلد   नम्बर 6 نمبر

जून 1957 جون

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद   145، مٹھی گنج، الہ آباد

जून 1957 جون

हुब्बे वतन

मौलाना हाली

[सन् 1857 की जंगे आज़ादी के बाद वतन की मोहब्बत में यह मशहूर नज़्म मौलाना अल्ताफ़ हुसेन 'हाली' ने लिखी थी. आज भी क़रीब क़रीब वही कैफ़ियत वतन में तारी है]

ऐ सिपह्रे बरीं के सय्यारो !
ऐ फ़िज़ाए ज़मी के गुलज़ारो !
ऐ पहाड़ों की दिल फ़रेब फ़िज़ा !
ऐ लबे जू की ठंडी-ठंडी हवा.
ऐ अनादिल के नग़मए सहरी,
ऐ शबे माहताब तारों भरी !
ऐ नसीमे बहार के झोंको !
दह्रे नापायदार के धोको !
तुम हर इक हाल में हो यूँ तो अज़ीज़,
थे वतन में मगर कुछ और ही चीज़
जब वतन में हमारा था रमना,
तुम से दिल बाग़-बाग़ था अपना.
तुम मेरी दिल्लगी के सामाँ थे,
तुम मेरे दर्दे दिल के दरमाँ थे.
तुम से घटता था रंजे तनहाई,
तुम से पाता था दिल शकेबाई.
आन इक-इक तुम्हारी भाती थी,
जो अदा थी वह जी लुभाती थी.
करते थे जब तुम अपनी ग़मख़्वारी,
धाई जाती थी कुलफ़तें सारी
जब हवा खाने बाग़ जाते थे,
होके ख़ुशहाल घर मे आते थे.
बैठ जाते थे जब कभी लबे आब,
धोके उठते थे दिल के दाग़ शिताब.
कोह, सहरा व आसमानो ज़मीं,
सब मेरी दिल्लगी की शक्लें थीं.
पर छुटा जब से अपना मुल्को दयार,
जी हुआ तुम से ख़ुद बख़ुद बेज़ार.
न गुलों की अदा .ख़ुश आती है,
न सदा बुलबुलों की भाती है.
सैरे गुलशन है जी का इक जंजाल,
शबे महताब जान को है वबाल.

حب وطن

مولانا حالی

[سن 1857 کی جنگ آزادی کے بعد وطن کی محبت میں یہ مشہور نظم مولانا الطاف حسین حالی نے لکھی تھی۔ آج بھی قریب قریب وہی کیفیت وطن میں طاری ہے۔]

اے سپہر بریں کے سیارو !
اے فضائے زمیں کے گلزارو !
اے پہاڑوں کی دل فریب فضا !
اے لب جو کی ٹھنڈی ٹھنڈی ہوا !
اے عنادل کے نغمۂ سحری !
اے شب ماہتاب تاروں بھری !
اے نسیم بہار کے جھونکو !
دہر ناپائدار کے دھوکو !
تم ہر اک حال میں ہو یوں تو عزیز،
تھے وطن میں مگر کچھ اور ہی چیز۔
حب وطن میں ہمارا تھا رمنا،
تم سے دل باغ باغ تھا اپنا
تم مری دل لگی کے ساماں تھے،
تم میرے درد دل کے درماں تھے۔
تم سے گھٹتا تھا رنج تنہائی،
تم سے پاتا تھا دل شکیبائی۔
آن اک اک تمہاری بھاتی تھی،
جو ادا تھی وہ جی لبھاتی تھی۔
کرتے تھے جب تم اپنی غمخواری،
دھوئی جاتی تھیں کلفتیں ساری۔
جو ہوا کھانے باغ جاتے تھے،
ہو کے خوشحال گھر میں آتے تھے۔
بیٹھ جاتے تھے جب کبھی لب آب،
دھو کے اٹھتے دل کے داغ شتاب۔
کوہ، صحرا و آسمان و زمین،
سب مری دل لگی کی شکلیں تھیں۔
پر چھٹا جب سے اپنا ملک دیار،
جی ہوا تم سے خود بخود بیزار۔
نہ گلوں کی ادا خوش آتی ہے،
نہ صدا بلبلوں کی بھاتی ہے۔
سیر گلشن ہے جی کا اک جنجال،
شب مہتاب جان کو ہے وبال۔

कोह सहरा से ता लबे दरिया,
जिस तरफ जाँय, जी नहीं लगता.
क्या हुए वह दिन और वह रातें?
तुम मे अगली सो अब नहीं बातें.
हम ही गुर्बत में हो गये कुछ और,
या तुम्हारे ही कुछ बदल गये तौर.
गो वही हम हैं और वही दुनिया,
पर नहीं हमको लुत्फ़ दुनिया का.

❀ ❀ ❀

ऐ वतन, ऐ मेरे बहिश्ते बरीं।
क्या हुए तेरे आसमानो जमीं?
रात और दिन का वह समाँ न रहा,
वह जमीं और वह आसमाँ न रहा.
तेरी दूरी है मूरिदे आलाम.
तेरे छुटने से छुट गया आराम.
काटे खाता है बाग़ बिन तेरे
गुल हैं नज़रों में दाग़ बिन तेरे.
मिट गया नक़्श कामरानी का,
तुझसे था लुत्फ़ जिन्दगानी का.
जो कि रहते हैं तुझ से दूर सदा,
उनको क्या होगा जिन्दगी का मज़ा?
हो गया याँ तो दो ही दिन में यह हाल,
तुझ बिन एक एक-पल है इक-इक साल
सच बता तू सभी को भाता है
या कि मुझसे ही तेरा नाता है?
मैं ही करता हूँ तुझ पै जान निसार
या कि दुनिया है तेरी आशिक़े ज़ार?
क्या ज़माने को तू अज़ीज़ नहीं?
ए वतन तू तो ऐसी चीज़ नहीं,
जिनो इन्सान की हयात है तू,
मुर्ग़ो माही की कायनात है तू.
है नबातात का नमू तुझ से,
रूख तुझ बिन हरे नहीं होते.
सब को होता है तुझ से नश्वो नुमा,
सब को भाती है तेरी आबो हवा.
तेरी इक मुश्ते ख़ाक के बदले,
लूँ न हरगिज़ अगर बहिश्त मिले.
जान जब तक न हो बदन से जुदा,
कोई दुश्मन न हो वतन से जुदा.

❀ ❀ ❀

کوہ صحرا سے تا لب دریا،
جس طرف جائیں، جی نہیں لگتا.
کیا ہوئے وہ دن اور وہ راتیں؟
تم میں اگلی سی اب نہیں باتیں
ہم ہی غربت میں ہو گئے کچھ اور،
یا تمہارے ہی کچھ بدل گئے طور.
گو وہی ہم ہیں، اور وہی دنیا،
پر نہیں لطف ہم کو دنیا کا.

❀ ❀ ❀

اے وطن، اے میرے بہشت بریں،
کیا ہوئے تیرے آسماں و زمیں؟
رات اور دن کا وہ سماں نہ رہا،
وہ زمیں اور وہ آسماں نہ رہا.
تیری دوری ہے مورد آلام،
تیرے چھٹنے سے چھٹ گیا آرام.
کاٹے کھاتا ہے باغ بن تیرے،
گل ہیں نظروں میں داغ بن تیرے.
مٹ گیا نقش کامرانی کا،
تجھ سے تھا لطف زندگانی کا
جو کہ رہتے ہیں تجھ سے دور سدا،
ان کو کیا ہوگا زندگی کا مزا؟
ہو گیا یاں تو دو ہی دن میں یہ حال،
تجھ بن ایک ایک پل ہے اک اک سال
سچ بتا تو سبھی کو بھاتا ہے.
یا کہ مجھ سے ہی تیرا ناتا ہے؟
میں ہی کرتا ہوں تجھ پہ جاں نثار،
یا کہ دنیا ہے تیری عاشق زار؟
کیا زمانے کو تو عزیز نہیں؟
اے وطن تو تو ایسی چیز نہیں!
جن و انساں کی حیات ہے تو،
مرغ و ماہی کی کائنات ہے تو.
ہے نباتات کو نمو تجھ سے،
روکھ تجھ بن ہرے نہیں ہوتے
سب کو ہوتا ہے تجھ سے نشو و نما،
سب کو بھاتی ہے تیری آب و ہوا
تیری اک مشت خاک کے بدلے،
لوں نہ ہرگز اگر بہشت ملے.
جان جب تک نہ ہو بدن سے جدا،
کوئی دشمن نہ ہو وطن سے جدا.

❀ ❀ ❀

हमला जब क़ौम आर्या ने किया,
और बजा उनका हिन्द पर डंका.
मुल्क वाले बहुत से काम आये,
जो बचे वह ग़ुलाम कहलाये.
शूद्र कहलाए राक्षस कहलाए,
रंज परदेस के मगर न उठाए.
गो ग़ुलामी का लग गया धब्बा,
न छुटा उनसे देस, पर न छुटा.
क़द्र ऐ दिल वतन में रहने की,
पूछे परदेसियों के जी से कोई.
जब मिला रामचन्द्र को बनबास,
और निकला वतन से होके उदास.
बाप का हुक्म रख लिया सर पर,
पर चला साथ लेके दाग़े जिगर.
पाँव उठता था उसका बन की तरफ़,
और खिंचता था दिल वतन की तरफ़.
गुज़रे ग़ुर्बत में इस क़दर मह्-ओ साल,
पर न भूला अजुध्या का ख़्याल.
देस को बन में जी भटकता रहा,
दिल मे काँटा सा इक खटकता रहा.
तीर इक दिल मे आके लगता था,
आती थी जब अयोध्या की हवा.
कटने चौदह बरस हुए थे मुहाल,
गोया एक-एक जुग था एक-एक साल.

❀ ❀ ❀

हुए यसरब की सिम्त जब राही,
सय्यदुन बतहा के हमराही.
रिश्ते उल्फ़त के सारे तोड़ चले,
और बिलकुल वतन को छोड़ चले.
गो वतन से चले थे होके ख़फ़ा,
पर वतन मे था सब का जी अटका.
दिल्लगी के बहुत मिले सामाँ,
पर न भूले वतन के रेगिस्ताँ
दिल में आठों पहर खटकते थे,
सगरेज़े ज़मीने बतहा के.
घर जफ़ाओ से जिनका छूटा था,
दिल से रिश्ता न उनका टूटा था.

❀ ❀ ❀

حملہ جب قوم آریہ نے کیا،
اور بجا اُن کا ھند پر ڈنکا۔
ملک والے بہت سے کام آئے
جو بچے وہ غلام کہلائے۔
شودر کہلائے راکشش کہلائے،
رنج پردیس کے مگر نہ اُٹھائے۔
گو غلامی کا لگ گیا دھبا،
نہ چھٹا اُن سے دیس پر نہ چھٹا۔
قدر اے دل، وطن میں رھنے کی،
پوچھے پردیسیوں کے جی سے کوئی۔
جب ملا رامچندر کو بن باس،
اور نکلا وطن سے ھو کے اُداس۔
باپ کا حکم رکھ لیا سر پر،
پر چلا ساتھ لے کے داغ جگر۔
پاؤں اُٹھتا تھا اُس کا بن کی طرف،
اور کھنچتا تھا دل وطن کی طرف۔
گذرے غربت میں اس قدر مہ و سال،
پر نہ بھولا اجودھیا کا خیال۔
دیس کو بن میں جی بھٹکتا رہا،
دل میں کانٹا سا ایک کھٹکتا رہا۔
تیر ایک دل میں آ کے لگتا تھا،
آتی تھی جب اجودھیا کی ھوا۔
کٹنے چودہ برس ھوئے تھے محال،
گویا ایک ایک جگ تھا ایک ایک سال۔

❀ ❀ ❀

ھوئے یثرب کی سمت جب راھی،
سیدن بطحہ کے ھمراھی۔
رشتے الفت کے سارے توڑ چلے،
اور بالکل وطن کو چھوڑ چلے۔
گو وطن سے چلے تھے ھو کے خفا،
پر وطن میں تھا سب کا جی اٹکا۔
دل‌لگی کے بہت ملے ساماں،
پر نہ بھولے وطن کے ریگستاں۔
دل میں آٹھوں پہر کھٹکتے تھے،
سنگریزے زمین بطحہ کے۔
گھر جفاؤں سے جن کی چھوٹا تھا،
دل سے رشتہ نہ اُن کا ٹوٹا تھا۔

❀ ❀ ❀

हुईं यूसुफ़ की सख्तियाँ जब दूर,
और हुआ मुल्के मिस्र पर मामूर.

मिस्र में चार सू था हुक्म रवाँ,
आँख थी जानिबे वतन निगराँ.
यादे कनआँ जब उसको आती थी,
सल्तनत सारी भूल जाती थी.

दुख उठाए थे जिस वतन में सख्त,
ताज भाता था उस बग़ैर न तख्त.
जिन से देखी थी सख्त बेमहरी,
लौ थी उन भाइयों की दिल को लगी.

हम भी डूबे वतन में गोकि हैं ग़र्क़,
हम में और उनमें है मगर यह फ़र्क़,
हम हैं नामे वतन के दीवाने,
वह थे पहले वतन के परवाने.

जिसने यूसुफ़ की दास्ताँ है सुनी,
जानता होगा रूदाद उसकी.
मिस्र में जब पड़ा क़हत आकर,
और हुई क़ौम भूख से मुज़तर.
कर दिया उन पै वक़्फ़ बैतुलमाल,
लब तक आने दिया न हर्फ़े सवाल.

खत्तियाँ और कोठे खोल दिये,
मुफ़्त सारे ज़ख़ीरे तोल दिये.
क़ाफ़िले खाली हाथ आते थे,
और भरपूर याँ से जाते थे.
यूँ गये क़हत के वह साल गुज़र,
जैसे बच्चों की भूख वक़्ते सेहर.
ऐ दिल, ऐ बन्दए वतन हुशयार,
ख्वाबे ग़फ़लत से हो ज़रा बेदार.

ओ शराबे खुदी के मतवाले,
घर की चौखट को चूमने वाले.
नाम है क्या इसी का हुब्बे वतन,
जिसकी तुझ को लगी हुई है लगन?
कभी बच्चों का ध्यान आता है,
कभी यारों का ग़म सताता है.

याद आता है अपना शहर कभी,
लौ कभी अहले शहर की है लगी.
नक़्श हैं दिल पै कूचओ बाज़ार,
फिरते आँखों में हैं दरो दीवार.

ھوئیں یوسف کی سختیاں جب دور،
اور ھوا ملک مصر پر معمور ۔

مصر میں چار سو تھا حکم رواں،
آنکھ تھی جانب وطن نگراں ۔
یاد کنعاں جب اُس کو آتی تھی،
سلطنت ساری بھول جاتی تھی ۔

دکھ اٹھائے تھے جس وطن میں سخت،
تاج بھاتا تھا اُس بغیر نہ تخت ۔
جن سے دیکھی تھی سخت بےمہری،
لو تھی ان بھائیوں کی دل کو لگی ۔

ھم بھی ڈوبے وطن میں گوکہ ھیں غرق،
ھم میں اور اِن میں ھے مگر یہ فرق ۔
ھم ھیں نام وطن کے دیوانے،
وہ تھے پہلے وطن کے پروانے ۔

جس نے یوسف کی داستان ھے سنی،
جانتا ھوگا روداد اِس کی ۔
مصر میں قحط جب پڑا آکر،
اور ھوئی قوم بھوک سے مضطر ۔
کر دیا اِن پہ وقف بیت المال،
لب تک آنے دیا نہ حرف سوال ۔

کھتیاں اور کوٹھے کھول دیئے،
مفت سارے ذخیرے تول دیئے ۔
قافلے خالی ھاتھ آتے تھے،
اور بھرپور یاں سے جاتے تھے ۔
یوں گئے قحط کے وہ سال گذر،
جیسے بچوں کی بھوک وقت سحر ۔
اے دل اے بندۂ وطن ھوشیار،
خواب غفلت سے ھو ذرا بیدار ۔

او شراب خودی کے متوالے،
گھر کی چوکھٹ کو چومنے والے ۔
نام ھے کیا اِسی کا حب وطن،
جس کی تجھ کو لگی ھوئی ھے لگن؟
کبھی بچوں کا دھیان آتا ھے،
کبھی یاروں کا غم ستاتا ھے ۔

یاد آتا ھے اپنا شہر کبھی،
لو کبھی اھل شہر کی ھے لگی ۔
نقش ھیں دل پہ کوچہ و بازار،
پھرتے آنکھوں میں ھیں درو دیوار ۔

क्या वतन की यही मोहब्बत है ?
यह भी उलफ़त में कोई उलफ़त है ?
इसमें इन्साँ से कम नहीं हैं दरिन्द,
इस से ख़ाली नहीं चरिन्द परिन्द.
टुकड़े होते हैं संग ग़ुर्बत में,
सूख जाते हैं रूख .फ़ुरक़त में.
जाके काबुल में आम का पौदा,
कभी परवान चढ़ नहीं सकता.
आके काबुल से याँ बिही व अनार,
हो नहीं सकते बारवर ज़िनहार.
मछली जब छूटती है पानी से,
हाथ धोती है ज़िन्दगानी से.
आग से जब हुआ समुन्दर दूर,
उसको जीने का फिर नहीं मक़दूर.
घोड़े जब खेत से बिछड़ते हैं,
जान के लाले उनका पड़ते हैं.
गाय या भैंस, ऊँट या बकरी,
अपने अपने ठिकाने .ख़ुश हैं सभी.
कहिये हुब्बे वतन इसी को अगर,
हम से हैवान कुछ नहीं कमतर.
है कोई अपने क़ौम का हमदर्द,
नौए इन्साँ का जिसको समझें .फ़र्द.
जिस पै इत्तलाक़े आदमी हो सही,
जिसको हैवाँ पै दे सकें तरजीह.
क़ौम पर कोई ज़द न देख सके,
क़ौम का हाले बद न देख सके.
क़ौम से जान तक अज़ीज़ न हो,
क़ौम से बढ़के कोई चीज़ न हो,
समझें उनकी .ख़ुशी को राहते जाँ,
वाँ जो नौरोज़ हो तो ईद हो याँ.
रंज को उनके समझें माइए ग़म,
वाँ अगर सोग हो तो याँ मातम.
भूल जाये सब अपनी क़द्रे जलील,
देखकर भाइयों को ख़्वारो ज़लील.
जब पड़े उन पै गर्दिशे अफ़लाक,
अपनी आसाइशों पै डालो ख़ाक.
बैठे बेफ़िक्र क्या हो हमवतनो,
उठ्ठो, अहले वतन के दोस्त बनो.
मर्द हो तो किसी के काम आओ,
वर्ना खाओ पियो चले जाओ.

کیا وطن کی یہی محبت ہے ؟
یہ بھی الفت میں کوئی الفت ہے ؟
اِس میں انسان سے کم نہیں ہیں درند،
اِس سے خالی نہیں چرند و پرند ۔
ٹکڑے ہوتے ہیں سنگ غربت میں،
سوکھ جاتے ہیں روکھ فرقت میں ۔
جا کے کابل میں آم کا پودا،
کبھی پروان چڑھ نہیں سکتا ۔
آ کے کابل سے یاں بہی و انار،
ہو نہیں سکتے بارو نہار ۔
مچھلی جب چھوٹتی ہے پانی سے،
ہاتھ دھوتی ہے زندگانی سے ۔
آگ سے جب ہوا سمندر دور،
اس کو جینے کا پھر نہیں مقدور ۔
گھوڑے جب کھیت سے بچھڑتے ہیں،
جان کے لالے اُن کو پڑتے ہیں ۔
گائے یا بھینس، اونٹ یا بکری،
اپنے اپنے ٹھکانے خوش ہیں سبھی ۔
کہئے حب وطن اسی کو اگر،
ہم سے حیوان کچھ نہیں کمتر
ہے کوئی اپنے قوم کا ہمدرد،
نوع انساں کا جسکو سمجھیں فرد ۔
جس پر اطلاق آدمی ہو صحیح،
جسکو حیواں پہ دے سکیں ترجیح ۔
قوم پر کوئی زد نہ دیکھ سکے،
قوم کا حال بد نہ دیکھ سکے ۔
قوم سے جان تک عزیز نہ ہو،
قوم سے بڑھ کے کوئی چیز نہ ہو،
سمجھیں اِنکی خوشی کو راحت جاں،
واں جو نوروز ہو تو عید ہو یاں ۔
رنج کو اِن کے سمجھے مایۂ غم،
واں اگر سوگ ہو تو یاں ماتم ۔
بھول جائے سب اپنی قدر جلیل،
دیکھ کر بھائیوں کو خوار و ذلیل ۔
جب پڑے اِن پہ گردش افلاک،
اپنی آسائشوں پہ ڈالو خاک ۔
بیٹھے بے فکر کیا ہو ہموطنو،
اُٹھو، اہل وطن کے دوست بنو ۔
مرد ہو تو کسی کے کام آؤ،
ورنہ کھاؤ پیو چلے جاؤ ۔

जब कोई जिन्दगी का लुत्फ़ उठाव,
दिल के दुःख भाइयों के याद दिलाव.

पहनो जब कोई उम्दा तुम पोशाक,
करो दामन से ता गरीबाँ चाक.

खाना खाओ तो जी में तुम शरमाव,
ठंडा पानी पिओ तो अश्क बहाव.

कितने भाई तुम्हारे हैं नादार,
जिन्दगी से है जिनका दिल बेज़ार.

नौकरों की तुम्हारे है जो गिज़ा,
उनको वह ख़्वाब में नहीं मिलता.

जिन पै तुम जूतियों से फिरते हो,
वाँ मयस्सर नहीं वह ओढ़ने को.

खाओ तो पहले लो ख़बर उनकी,
जिनपै बिपता है नेस्ती की पड़ी.

पहनो तो पहले भाइयों को पहनाव;
कि है उतरन तुम्हारी जिनका बनाव.

एक डाली के सब हैं बर्गों समर,
है कोई उनमें ख़ुश्क, कोई तर.

सब को है एक अस्ल से पैवन्द,
कोई आज़ुर्दा है, कोई ख़ुर्सन्द.

मुक़बिलो, मुद्बिरों को याद करो,
ख़ुशदिलो, ग़मज़दों को शाद करो.

जागने वालो, ग़ाफ़िलों को जगाओ,
तैरने वालो, डूबतों को तराव.

हैं मिले तुमको चश्मो गोश अगर,
लो, जो ली जाय कोरो कर की ख़बर.

तुम अगर हाथ पाँव रखते हो,
लँगड़े लूलों को कुछ सहारा दो.

तन्दुरुस्ती का शुक्र क्या है बताव,
रंज बीमार भाइयों का बटाव.

तुम अगर चाहते हो मुल्क की ख़ैर,
न किसी हमवतन को समझो ग़ैर.

हों मुसलमान इसमें या हिन्दू,
बौध मज़हब हो या कि हो ब्रह्मो.

जाफ़री हो या कि हो हनफ़ी,
जैन मत होय या हो वैषनवी.

सब को मीठी निगाह से देखो,
समझो आँखों की पुतलियाँ सब को.

मुल्क हैं इत्तफ़ाक़ से आज़ाद,
शहर हैं इत्तफ़ाक़ से आबाद.

جب کوئی زندگی کا لطف اٹھاؤ،
دل کو دکھ بھائیوں کے یاد دلاؤ۔

پہنو جب کوئی عمدہ تم پوشاک،
کرو دامن سے تا گریباں چاک۔

کھانا کھاؤ تو جی میں شرماؤ،
ٹھنڈا پانی پیو تو اشک بہاؤ۔

کتنے بھائی تمہارے ہیں نادار،
زندگی سے ہے جن کا دل بیزار۔

نوکروں کی تمہارے ہے جو غذا،
اُن کو وہ خواب میں نہیں ملتا۔

جس پہ تم جوتیوں سے پھرتے ہو،
واں میسر نہیں وہ اوڑھنے کو۔

کھاؤ تو پہلے لو خبر اُن کی،
جن پر بپتا ہے نیستی کی پڑی۔

پہنو تو پہلے بھائیوں کو پہناؤ،
کہ ہے اُترن تماری جنکا بناؤ۔

ایک ڈالی کے سب ہیں برگ وثمر،
ہے کوئی اِن میں خشک کوئی تر۔

سب کو ہے ایک اصل سے پیوند،
کوئی آزردہ ہے، کوئی خرسند۔

مقبلو، مدبروں کو یاد کرو،
خوش دلو، غم زدوں کو شاد کرو۔

جاگنے والے، غافلوں کو جگاؤ،
تیرنے والو، ڈوبتوں کو تراؤ۔

ہیں ملے تم کو چشم و گوش اگر،
لو جو لی جائے کور وکر کی خبر۔

تم اگر ہاتھ پاؤں رکھتے ہو،
لنگڑے لولوں کو کچھ سہارا دو۔

تندرستی کا شکر کیا ہے بتاؤ،
رنج بیمار بھائیوں کا بٹاؤ۔

تم اگر چاہتے ہو ملک کی خیر،
نہ کسی ہم‌وطن کو سمجھو غیر۔

ہوں مسلمان اِس میں یا ہندو،
بودھ مذہب ہو یا کہ ہو برھمو۔

جعفری ہوئے یا کہ ہو حنفی،
جین مت ہوئے یا ہو ویشنوی۔

سب کو میٹھی نگاہ سے دیکھو،
سمجھو آنکھوں کی پتلیاں سب کو۔

ملک ہیں اتفاق سے آزاد،
شہر ہیں اتفاق سے آباد۔

हिन्द में इत्तफ़ाक़ होता गर,
खाते ग़ैरों की ठोकरें क्योंकर.
क़ौम जब इत्तफ़ाक़ खो बैठी,
अपनी पूँजी से हाथ धो बैठी.
एक का एक हो गया बदख़्वाह,
लगी ग़ैरों की पड़ने तुम पै निगाह.
फिर गये भाइयों से जब भाई,
जो न आनी थी वह बला आई.
कभी तूरानियों ने घर लूटा,
कभी दुर्रानियों ने ज़र लूटा.
कभी नादिर ने क़त्ले आम किया,
कभी महमूद ने ग़ुलाम किया।
सब से आख़िर को ले गई बाज़ी,
एक शाइस्ता क़ौम मग़रिब की.
यह भी तुम पर ख़ुदा का था इनआम,
कि पड़ा तुमको ऐसी क़ौम से काम.
वर्ना दम मारने न पाते तुम,
पड़ती जो सर पै, वह उठाते तुम.
मुल्क रौंदे गये हैं पैरों से,
चैन किसको मिला है ग़ैरों से.
क़ौम से हैं तुम्हारे जो बर्ताव.
सोचो ऐ प्यारो और शर्माव.
अहले दौलत को है यह इसतग़ना,
कि नहीं भाइयो की कुछ परवाह.
शहर मे क़हत की दुहाई है,
जाने आलम लबो पै आई है,
भूख में है कोई निढाल पड़ा,
मौत को माँगता है कोई दुआ.
बच्चे इक घर मे बिलबिलाते हैं,
रो के माँ-बाप को रुलाते हैं.
कोई फिरता है माँगता दर-दर,
है कहीं पेट से बँधा पत्थर.
पर जो हैं उनमे साहिबे मक़दूर.
उनमें गिन्ती के ऐसे हैं ग़य्यूर.
कि जिन्हें भाइयो का ग़म होगा,
अपनी राहत का ध्यान कम होगा.
जितने देखोगे पाओगे बेदर्द,
दिल के नामर्द और नाम के मर्द.
ऐश में जिनके कटते हैं औक़ात,
ईद है दिन, तो शब्बरात है रात.

ہند میں اتفاق ہوتا گر،
کھاتے غیروں کی ٹھوکریں کیونکر۔
قوم جب اتفاق کھو بیٹھی،
اپنی پونجی سے ہاتھ دھو بیٹھی۔
ایک کا ایک ہو گیا بدخواہ،
لگی غیروں کی پڑنے تم پہ نگاہ۔
پھر گئے بھائیوں سے جب بھائی،
جو نہ آنی تھی وہ بلا آئی۔
کبھی تورانیوں نے گھر لوٹا،
کبھی درانیوں نے زر لوٹا۔
کبھی نادر نے قتل عام کیا،
کبھی محمود نے غلام کیا۔
سب سے آخر کو لے گئی بازی،
ایک شائستہ قوم مغرب کی۔
یہ بھی تم پر خدا کا تھا انعام،
کہ پڑا تم کو ایسی قوم سے کام۔
ورنہ دم مارنے نہ پاتے تم،
پڑتی جو سر پہ، وہ اٹھاتے تم۔
ملک روندے گئے ہیں پیروں سے،
چین کس کو ملا ہے غیروں سے؟
قوم سے ہیں تمہارے جو برتاؤ،
سوچو اے پیارو اور شرماؤ
اہل دولت کو ہے یہ استغنا،
نہ نہیں بھائیوں کی کچھ پرواہ۔
شہر میں قحط کی دوہائی ہے،
جان عالم لبوں پہ آئی ہے۔
بھوک میں ہے کوئی نڈھال پڑا،
موت کی مانگتا ہے کوئی دعا۔
بچے اک گھر میں بلبلاتے ہیں،
رو کے ماں باپ کو رلاتے ہیں۔
کوئی پھرتا ہے مانگتا در در،
ہے کہیں پیٹ سے بندھا پتھر۔
پر جو ہیں ان میں صاحب مقدور،
ان میں گنتی کے ایسے ہیں غیور،
کہ جنہیں بھائیوں کا غم ہوگا،
اپنی راحت کا دھیان کم ہوگا۔
جتنے دیکھو گے، پاؤگے بے درد،
دل کے نامرد اور نام کے مرد
عیش میں جن کے کٹتے ہیں اوقات،
عید ہے دن، تو شبرات ہے رات۔

क़ौम मरती है भूख से तो मरे,
काम उन्हें अपने हलवे माँडे से.
उनको अबतक ख़बर नहीं इसला,
शहर में भाव क्या है ग़ल्ले का.
ग़ल्ला अरज़ाँ है इन दिनों कि गिराँ,
काल है शहर में पड़ा कि समाँ.
काल क्या शै है किसको कहते हैं भूख,
भूख में कैसे मरते हैं मफ़लूक.
सेर भूके की क़द्र क्या समझे,
उसके नज़दीक सब हैं पेट भरे.

❀ ❀ ❀

अहले दौलत का सुन चुके तुम हाल,
अब सुनो रूदादे अहले कमाल.
फ़ाज़िलों को है फ़ाज़िलों से इनाद,
पंडितों में पड़े हुए हैं फ़साद.
है तबीबों में नोक झोंक सदा,
एक से एक का है थोक जुदा.
रहते दो अहले इल्म इस तरह,
पहलवानों में लाग हो जिस तरह.
ईदू वालों का है अगर पट्ठा,
शेख़ू वालों मे जा नही सकता.
शायरों मे भी है यही तकरार,
ख़ुशनवीसों को है यही आज़ार.
लाख नेकों का क्यों न हो इक नेक,
देख सकता नहीं है एक का एक.
उस पै तुर्रा यह है कि अहले हुनर,
दूर समझे हुए हैं अपना घर.
गर मिली एक गाँठ हल्दी की,
उसने समझा कि मैं हूँ पन्सारी.
नुसख़ा इक तिब का जिसको आता है,
सगे भाई से वह छिपाता है.
जिसको आता है फूँकना कुश्ता,
है हमारी तरफ़ से वह गूँगा.
जिसको है कुछ रमल मे मालूमात,
वह नही करता मुँह से सीधे बात.
बाप भाई हो या कि हो बेटा,
भेद पाता नहीं मुनज्जम का
काम कँदेले का जिसको है मालूम,
है ज़माने में उसके कुफ़्ल की धूम.

قوم مرتی ہے بھوک سے تو مرے،
کام انہیں اپنے حلوے مانڈے سے ۔
ان کو اب تک خبر نہیں اصلا،
شہر میں بھاؤ کیا ہے غلہ کا ۔
غلہ ارزاں ہے ان دنوں کہ گراں،
کال ہے شہر میں پڑا کہ سماں ۔
کال کیا شے ہے کس کو کہتے ہیں بھوک،
بھوک میں کیسے مرتے ہیں مفلوک ۔
سیر بھوکے کی قدر کیا سمجھے،
اس کے نزدیک سب ہیں پیٹ بھرے ۔

❀ ❀ ❀

اہل دولت کا سن چکے تم حال،
اب سنو روداد اہل کمال ۔
فاضلوں کو ہے فاضلوں سے عناد،
پنڈتوں میں پڑے ہوئے ہیں فساد ۔
ہے طبیبوں میں نوک جھونک صدا،
ایک سے ایک کا ہے بھوک جدا ۔
رہتے دو اہل علم ہیں اس طرح،
پہلوانوں میں لاگ ہو جس طرح ۔
عیدو والوں کا ہے اگر پٹھا،
شیخو والوں میں جا نہیں سکتا ۔
شاعروں میں بھی ہے یہی تکرار،
خوش نویسوں کو ہے یہی آزار ۔
لاکھ نیکوں کا کیوں نہ ہو ایک نیک،
دیکھ سکتا نہیں ہے ایک کو ایک ۔
اس پہ طرہ یہ ہے کہ اہل ہنر،
دور سمجھے ہوئے ہیں اپنا گھر ۔
گر ملی ایک گانٹھ ہلدی کی،
اس نے سمجھا کہ میں ہوں پنساری ۔
نسخہ اک طب کا جس کو آتا ہے،
سگے بھائی سے وہ چھپاتا ہے ۔
جس کو آتا ہے پھونکنا کشتہ،
ہے ہماری طرف سے وہ گونگا ۔
جس کو ہے کچھ رمل میں معلومات،
وہ نہیں کرتا منھ سے سیدھے بات ۔
باپ بھائی ہو یا کہ ہو بیٹا،
بھید پایا نہیں منجم کا ۔
کام کندلے کا جس کو ہے معلوم،
ہے زمانے میں اس کے قفل کی دھوم ۔

अलगरज़ जिसके पास है कुछ चीज़,
जान से भी सिवा है उसको अज़ीज़.
क़ौम पर उनका कुछ नहीं अहसाँ,
उनका होना न होना है यकसाँ.
सब कमालात और हुनर उनके,
क़ब्र मे उनके साथ जायेंगे.
क़ौम क्या कहके उनको रोएगी,
नाम पर किसके जान खोएगी ?
तरबियत याफ़्ता हैं जो याँ के,
ख़्वाह बी-ए हैं उनमें या एम-ए.
भरते हुब्बे वतन का गो दम हैं,
पर मुहिब्बे वतन बहुत कम हैं.
क़ौम को उनसे जो उमीदें थीं,
अब जो देखा तो सब ग़लत निकलीं,
हिस्ट्री उनकी और जागरफ़ी,
सात परदों मे मुँह दिये है पड़ी.
बन्द उस क़ुफ़्ल मे है इल्म उनका,
जिसकी कुंजी का कुछ नहीं हैं पता
लेते हैं अपने दिल ही दिल में मज़े,
गोया गूँगे का गुड़ हैं खाए हुए
करते फिरते हैं सैरे गुल तनहा,
कोई पास उनके जा नहीं सकता
अहले-इन्साफ़ शर्म की जा है,
गर नहीं बुख़्ल यह तो फिर क्या है ?
तुमने देखा है जो, वह सबको दिखाओ,
तुमने चक्खा है जो, वह सब को चखाओ.
यह जो दौलत तुम्हारे पास है आज,
हमवतन बहुत इसके हैं मोहताज.
मुंह को एक-एक तुम्हारे है तकता,
कि निकलता है मुँह से आपके क्या.
आप शाइस्ता हैं तो अपने लिये,
कुछ सुलूक अपनी क़ौम से भी किये
मेज़ कुर्सी अगर लगाते हैं आप,
क़ौम से पूछिये तो पुन है ना पाप.
मुन्दा जूता गर आपको है पसन्द,
क़ौम को इससे फ़ायदा व गज़ंद ?
क़ौम पर करते हो अगर अहसाँ,
तो दिखाओ कुछ अपना जोशे निहाँ.
कुछ दिनो ऐश मे ख़लल डालो,
पेट में जो है सब उगल डालो.

الغرض جس کے پاس ھے کچھ چیز،
جان سے بھی سوا ھے اُس کو عزیز ۔
قوم پر اُن کا کچھ نہیں احسان،
ان کا ھونا نہ ھونا ھے یکساں ۔
سب کمالات اور ھنر ان کے،
قبر میں ان کے ساتھ جائینگے ۔
قوم کیا کہہ کے ان کو روئیگی،
نام پر کس کے جان کھوئے گی ؟
تربیت یافتہ ھیں جو یاں کے،
خواہ بی۔ اے۔ ھیں ان میں یا ایم۔ اے۔
بھرتے حب وطن کا گو دم ھیں،
پر محب وطن بہت کم ھیں ۔
قوم کو اُن سے جو اُمیدیں تھیں،
اب جو دیکھا تو سب غلط نکلیں ۔
ھسٹری ان کی اور جاگرفی،
سات پردوں میں منھ دیئے ھے پڑی ۔
بند اُس قفل میں ھے علم اُن کا،
جسکی کنجی کا کچھ نہیں ھے پتا ۔
لیتے ھیں اپنے دل ھی دل میں مزے،
گویا گونگے کا گڑ ھیں کھائے ھوئے ۔
کرتے پھرتے ھیں سیر گل تنہا،
کوئی پاس ان کے جا نہیں سکتا ۔
اھل-انصاف شرم کی جا ھے،
گر نہیں بخل یہ تو پھر کیا ھے ؟
تم نے دیکھا ھے جو، وہ سب کو دکھاؤ،
تم نے چکھا ھے جو، وہ سب کو چکھاؤ ۔
یہ جو دولت تمہارے پاس ھے آج،
ھم وطن بہت اس کے ھیں محتاج ۔
منھ کو ایک ایک تمہارے ھے تکتا،
کہ نکلتا ھے منھ سے آپ کے کیا ۔
آپ شائستہ ھیں تو اپنے لئے،
کچھ سلوک اپنی قوم سے بھی کیجئے ؟
میز کرسی اگر لگاتے ھیں آپ،
قوم سے پوچھئے تو پن ھے نا پاپ ۔
مندا جوتا اگر آپ کو ھے پسند،
قوم کو اس سے فائدہ و گزند ؟
قوم پر کرتے ھو اگر احساں،
تو دکھاؤ کچھ اپنا جوش نہاں ۔
کچھ دنوں عیش میں خلل ڈالو،
پیٹ میں جو ھے، سب اگل ڈالو ۔

इल्म को करदो कू-बकू अरज़ाँ,
हिन्द को कर दिखाओ इँगलिस्ताँ.

सुनते हो सामईन बात मकी,
सुनते हो हाज़िरीन सद्रनशीं.

जो हैं दुनिया में क़ौम के हमदर्द,
बन्दए क़ौम उनके हैं ज़नो मर्द.

बाप की है दुआ बराए पिसर,
क़ौम की मैं बनाऊँ इसको सिपर.

माँ ख़ुदा से यह माँगती है मुराद,
क़ौम पर से निसार हो औलाद.

भाई आपस में करते हैं पैमाँ
तू अगर माल दे तो मैं दूँ जाँ.

अहले-हिम्मत कमा के लाते हैं,
हमवतन फ़ायदा उठाते हैं.

कहीं होते हैं मदरसे जारी,
दख़्ल और ख़र्च जिनके हैं भारी.

और कहीं होते हैं कलब क़ायम,
मुहब से हिकमतो अदब क़ायम.

नित नये खुलते हैं दवाख़ाने,
बनते हैं सैकड़ों शफ़ाख़ाने.

मुल्क मे जो मरज़ है आलमगीर,
क़ौम पर उनकी फ़र्ज़ है तदबीर.

हैं सदा इस उधेड़बुन में तबीब,
कि कोई नुसख़ा हाथ आए अजीब.

क़ौम को पहुँचे मुनफ़अत जिससे,
मुल्क मे फैले फ़ायदे जिस से.

रस्मे बद का असर जहाँ पाया,
हमले पर हमला उस पे होने लगा.

कहीं मजलिस मे होती है तक़रीर,
कहीं मज़मून होते हैं तहरीर.

एक नाटक बना के लाता है,
दूसरा उसको कर दिखाता है.

लाख तदबीरें करके जोड़ते हैं,
आख़िर उसको मिटा के छोड़ते हैं.

क़ौम की ख़ातिर उनके हैं सब काम,
ख़्वाह इसमे सफ़र हो, ख़्वाह मुक़ाम.

सैकड़ो गुल, रुख़ और महपारे,
लाड़ले माँ के, बाप के प्यारे.

जान अपनी लिये हथेली पर,
करते फिरते हैं बह्‌रो बर का सफ़र.

علم کو کر دو کوچہ کو ارزاں،
هند کو کر دکھاؤ انگلستاں ۔

سنتے هو سامعین بات مکیں،
سنتے هو حاضرین صدرنشیں ۔

جو هیں دنیا میں قوم کے همدرد،
بندۂ قوم ان کے هیں زن و مرد ۔

باپ کی هے دعا برائے پسر،
قوم کی میں بناؤں اس کو سپر ۔

ماں خدا سے یہ مانگتی هے مراد،
قوم پر سے نثار هو اولاد

بھائی آپس میں کرتے هیں پیماں،
تو اگر مال دے، تو میں دوں جاں ۔

اهل همت کما کے لاتے هیں،
هم وطن فائدہ اٹھاتے هیں ۔

کہیں هوتے هیں مدرسے جاری،
دخل اور خرچ جن کے هیں بھاری ۔

اور کہیں هوتے هیں کلب قائم،
محب سے حکمت و ادب قائم ۔

نت نئے کھلتے هیں دواخانے،
بنتے هیں سیکڑوں شفاخانے ۔

ملک میں جو مرض هے عالمگیر،
قوم پر اُن کی فرض هے تدبیر ۔

هیں سدا اس ادھیڑبن میں طبیب،
کہ کوئی نسخہ هاتھ آئے عجیب ۔

قوم کو پہنچے منفعت جس سے،
ملک میں پھیلیں فائدے جس سے ۔

رسم بد کا اثر جہاں پایا،
حملے پر حملہ اُس پہ هونے لگا ۔

کہیں مجلس میں هوتی هے تقریر،
کہیں مضموں هوتے هیں تحریر ۔

ایک ناٹک بنا کے لاتا هے،
دوسرا اُس کو کر دکھاتا هے ۔

لاکھ تدبیریں کر کے جوڑتے هیں،
آخر اس کو مٹا کے چھوڑتے هیں ۔

قوم کی خاطر اُن کے هیں سب کام،
خواہ اِس میں سفر هو، خواہ مقام ۔

سیکڑوں گلرخ اور مہ پارے،
لاڈلے ماں کے، باپ کے پیارے

جان اپنی لئے هتھیلی پر،
کرتے پھرتے هیں بحر و بر کا سفر ۔

शौक़ यह है कि जान जाय तो जाय,
पर कोई बात काम की हाथ आय.

जिससे मुश्किल हो कोई क़ौम की हल,
मुल्क का आए कोई काम निकल.

खप गये कितने बन के झाड़ों में,
मर गये सैकड़ों पहाड़ों में.

लिक्खे, जब तक जिये सफ़रनामे,
चल दिये हाथ में क़लम थामे.

गो सफ़र में उठाए रंज कमाल,
कर दिया पर वतन को अपने निहाल.

हैं अब उनके गवाह हुब्बे वतन,
दरो दीवार पेरिसो लन्दन.

कहिये दुनिया का जिसको बाग़े जिनाँ,
है फ्रांस आज, या है इँगलिस्ताँ.

काम हैं सब बशर के हमवतनो,
तुम से भी हो सके तो मर्द बनो.

छोड़ो अफ़सुर्दगी को, जोश में आओ,
बहुत सोये हो उठके होश में आओ.

क़ाफ़िले तुम से बढ़ गये कोसों,
रहे जाते हो सबसे पीछे क्यों ?

क़ाफ़िलों से अगर मिला चाहो,
मुल्क और क़ौम का भला चाहो.

गर रहा चाहते हो इज़्ज़त से.
भाइयों को निकालो ज़िल्लत से.

उनकी इज़्ज़त तुम्हारी इज़्ज़त है,
उनकी ज़िल्लत तुम्हारी ज़िल्लत है.

क़ौम का मुब्तज़िल है जो इन्साँ
बेहक़ीक़त है, गरचे है सुल्ताँ.

क़ौम दुनिया में जिसकी है मुम्ताज़,
है फ़क़ीरी में भी वह बे ऐज़ाज़'

इज़्ज़ते क़ौम चाहते हो अगर,
जाके फैलाओ उनमे इल्मो हुनर.

ज़ात का फ़र्क़ और नसब का ग़रूर,
उठ गये जहाँ से अब दस्तूर.

अब न सैयद का इफ़्तख़ार सही,
न बिरहमन को शूद्र पर तरजीह.

हुई क़ुर्क़ी तमाम ख़ानों की,
कट गई जड़ है ख़ान्दानों की.

شوق یہ ھے کہ جان جائے تو جائے'
پر کوئی بات کام کی ھاتھ آئے ۔

جس سے مشکل ھو کوئی قوم کی حل'
ملک کا آئے کوئی کام نکل ۔

کھپ گئے کتنے بن کے جھاڑوں میں'
مر گئے سیکڑوں پہاڑوں میں ۔

لکھے' جب تک جیئے' سفرنامے'
چل دیئے ھاتھ میں قلم تھامے ۔

گو سفر میں اٹھائے رنج کمال'
کر دیا پر وطن کو اپنے نہال ۔

ھیں اب ان کے گواہ حب وطن'
در و دیوار پیرس و لندن ۔

کہئے دنیا کا جس کو باغ جناں'
ھے فرانس آج' یا ھے انگلستاں ۔

کام ھیں سب بشر کے ھموطنو'
تم سے بھی ھو سکے تو مرد بنو ۔

چھوڑ افسردگی کو' جوش میں آؤ'
بہت سوئے ھو اٹھ کے ھوش میں آؤ ۔

قافلے تم سے بڑھ گئے کوسوں'
رھے جاتے ھو سب سے پیچھے کیوں ؟

قافلوں سے اگر ملا چاھو'
ملک اور قوم کا بھلا چاھو ۔

گر رھا چاھتے ھو عزت سے'
بھائیوں کو نکالو ذلت سے ۔

ان کی عزت تمہاری عزت ھے'
ان کی ذلت تمہاری ذلت ھے ۔

قوم کا مبتذل ھے جو انساں'
بے حقیقت ھے' گرچہ ھے سلطاں ۔

قوم دنیا میں جس کی ھے ممتاز'
ھے فقیری میں بھی وہ بے اعزاز ۔

عزت قوم چاھتے ھو اگر'
جاکے پھیلاؤ ان میں علم و ھنر ۔

ذات کا فرق اور نسب کا غرور'
اٹھ گئے جہاں سے اب دستور ۔

اب نہ سید کا افتخار صحیح'
نہ برھمن کو شودر پر ترجیح ۔

ھوئی قرقی تمام خانوں کی'
کٹ گئی جڑ ھے خاندانوں کی ۔

कौम की इज्जत अब हुनर से है,
इल्म से या कि सीमो ज़र से है.
कोई दिन में वह दौर आएगा,
बेहुनर भीख तक न पाएगा'
न रहेंगे सदा यही दिन रात,
याद रखना हमारी आज की बात.
गर नहीं सुनते क़ौल 'हाली' का,
फिर न कहना कि कोई कहता था

قوم کی عزت اب ہنر سے ہے،
علم سے یا کہ سیم و زر سے ہے ۔
کوئی دن میں وہ دور آئے گا،
بے ہنر بھیک تک نہ پائیگا ۔
نہ رہینگے سدا یہی دن رات،
یاد رکھنا ہماری آج کی بات ۔
گر نہیں سنتے قول 'حالی' کا،
پھر نہ کہنا کہ کوئی کہتا تھا ۔

उन्नीसवीं सदी के एक मुसलिम फ़क़ीर की डायरी

मिरज़ा ग़ुलाम ग़ौस

एक दिन गुरु जी ने इन लाइनों के लेखक को' सरमदी-अभ्यास' सिखाया और कहा कि हिन्दी में इसे 'अनहद्' कहते हैं और यही है जिसे निज़ामुद्दीन औलिया के चेले अमीर ख़ुसरो ने नीचे लिखी हिन्दी नज़्म में बयान किया है—

एके भवर गुजारसी,
दूजे घुर-घुर होय.
तीजे शब्द संख का,
चौथे घंटा होय.
चौथे घंटा होय पाँचवें टाल जो बाजे,
छठे सुमुरली नाथ सतावें भेर जो गाजे.
आठे शब्द मृदंग का,
नवे नफ़ीरी नाल.
दसवे गरजे सिन्घ सा,
सुन ख़ुसरो यह ताल.
दस प्रकार अनहद् बजे,
जित जोगी हो लीन.
इन्द्री थकी मनुवा थके,
ख़ुसरो ने कह दीन.
अनहद् बाजे बाजन लागे, चोर नगरिया तज-तज भागे,
गुरु निजाम की भई दुहाई, ख़ुसरो ने अन्तर लौ लाई.

❀ ❀ ❀

एक दिन मियाँ ग़ुलाम मोहम्मद साहब कंजपुरी ने कहा कि हज़रत मेरा इरादा मीराजी के ठसके का है ताकि शाह भीख साहब की क़ब्र की यात्रा करूँ. आपने इसके ख़िलाफ़ उन्हें समझाया और कहने लगे कि अगर तुम मोहब्बे इलाही मे फिरते हो तो किसी ईश्वरभक्तसे मिलो

दर राहे नियाज हर दिले रा दरियाब,
दर कूए हुजर मुक़ाबिले रा दरियाब.
सद काबये आबो गिल बयक दिल न रसद,
काबा चे रवी बिरौ दिले रा दरियाब.

अर्थात्—भक्ति की राह मे हरएक दिल को पहुँच और ईश्वर के कूचे में किसी सच्चे भक्त को हासिल कर. मिट्टी गारे के सौ काबे भी एक दिल को नहीं पहुँचते. तू काबे को क्यों जाता है? जा किसी दिल को ढूँढ़.

❀ ❀ ❀

اُنیسویں صدی کے ایک مسلم فقیر کی ڈائری

مرزا غلام غوث

ایک دن گرو جی نے ان لائنوں کے لیکھک کو 'سرمدی ابھیاس' سکھایا اور کہا کہ ہندی میں اسے 'انہد' کہتے ہیں اور یہی ہے جسے نظام الدین اولیا کے چیلے امیر خسرو نے نیچے لکھی ہندی نظم میں بیان کیا ہے—

ایک بھور گوجارسی،
دوجے گھر گھر ہوئے
تیجے شبد سنکھ کا،
چوتھے گھنٹا ہوئے
چوتھے گھنٹا ہوئے پانچویں ٹال جو بجائے،
چھٹے سومرلی ناتھ ساتویں بھیر جو گاجے.
آٹھے شبد مردنگ کا،
نویں نفیری نال
دسویں گرجے سنگھ سا،
سن خسرو یہ تال.
دس پرکار انہد بجیں،
جت جوگی ہو لین.
اندری تھکی منوا تھکا،
خسرو نے کہہ دین.
انہد باجے باجن لاگے، چور نگریا تج تج بھاگے،
گرو نظام کی بھئی دہائی، خسرو نے انتر لو لائی.

❀ ❀ ❀

ایک دن میاں غلام محمد صاحب کنج پوری نے کہا کہ حضرت میرا ارادہ میرا جی کے ٹھسکے کا ہے تاکہ شاہ بھیک صاحب کی قبر کی یاترا کروں. آپنے اس کے خلاف انہیں سمجھایا اور کہنے لگے کہ اگر تم محبت الٰہی میں پھرتے ہو تو کسی ایشور بھکت سے ملو.

در راہ نیاز ہر دلے را دریاب،
در کوئے حضور مقابلے را دریاب.
صد کعبہ و آب و گل بہ یک دل نہ رسد،
کعبہ چہ روی برو دلے را دریاب.

ارتھات—بھکتی کی راہ میں ہر ایک دل کو پہنچ اور ایشور کے کوچے میں کسی سچے بھکت کو حاصل کر. مٹی گارے کے سو کعبے بھی ایک دل کو نہیں پہنچتے. تو کعبے کو کیوں جاتا ہے؟ جا کسی دل کو ڈھونڈھ.

❀ ❀ ❀

एक दिन फ़क़ीरी और सच्ची ईश्वर भक्ति का चरचा था. उस समय शाह नियाज़ अहमद बरेलवी की निम्नलिखित ग़ज़ल आपने सुनाई—

नेस्ती हस्ती है यारो, और हस्ती कुछ नहीं,
बेख़ुदी मस्ती है यारो, और मस्ती कुछ नहीं,
लामकाँ की मंज़िलत, पाता है कब कौनो मकाँ,
हू के वीराने के आगे, है की हस्ती कुछ नहीं.
कुछ नहीं सब कुछ है यारो, और सब कुछ कुछ नहीं
ग़ैर इसके मायनी, रम्ज़े अलस्ती कुछ नहीं
ये जो कुछ होना जिसे कहते हैं, पस्ती कुछ मियाँ,
फ़क़्र मे पस्ती यही है, और पस्ती कुछ नहीं.
बन्दगी और हक़ परस्ती कुछ न होना, है नियाज़,
कुछ न होने के सिवा, और हक़ परस्ती कुछ नहीं.

❀ ❀ ❀

एक दिन किसी मनुष्य ने दो प्रसिद्ध मुसलमान फ़क़ीरों के विषय मे प्रश्न किये कि उनका क्या हाल है. आपने जवाब दिया कि सिद्धियो की तरफ तो सब दौड़ते हैं लेकिन उजड़े गाँव और बयाबान जगल में किसकी शामत आई है जो जाय और अपने आप को ख़त्म कर दे. भला अद्वैत के अथाह समुद्र मे जिसका कोई किनारा नहीं कौन पतवार चला सकता है. अहले इसलाम का तो यहाँ गुज़ारा ही मुश्किल है. मैं रातो इस मन्दिर के अन्दर बैठा हूँ और अन्त में हैरत ने मेरी बाँह पकड़ कर कहा कि उठ ख़ून के इस दरिया से समझदार मनुष्य डरते हैं क्योकि आज तक कोई भी अपनी किश्ती इससे बाहर निकाल कर नहीं ले गया इस भँवर के अन्दर हज़ारो किश्तियाँ डूबीं जिनमें से किसी का एक तख़्ता भी कभी किनारे आकर नहीं लगा जहाँ न मंज़िल है न मुक़ाम, न कोई पता न ठिकाना, वहाँ आदमी जाय तो कहाँ जाय ? जिस अथाह सागर मे न किनारा न दीपस्तंभ (रौशनी का मीनार), न बाँस न बल्ली, उससे कोई पार हो तो क्योकर हो ? हाँ, कोई मर्द मरदाना ऐसा होता है कि नामुरादी (निष्कामता) का लंगर बाँधकर इस सागर में कूद पड़े—

नामुरादी रा कुनी गर तोशाए,
फ़ारिग़ाई अज़ ग़मो अन्देशाए
राह रा ईंजा दरे नाकामि अस्त,
काम नेके मर्द दर बदनामि अस्त

अर्थात्—यदि तू नामुरादी को अपने रास्ते का सामान बना ले तो तेरा सब ग़म और अन्देशा जाता रहे. यहाँ पर नाकामी (निष्काम भाव) के द्वार मे से निकल कर आगे की राह मिलती है और नेक मर्द का काम देखे तो रिद्धि सिद्धियो के पीछे जाने वाले क्या और निष्काम भाव

ایک دن فقیری اور سچی ایشور بھکتی کا چرچا تھا۔ اُس سمے شاہ نیاز احمد بریلوی کی نِمن لکھت غزل آپنے سنائی:—

نیستی ہستی ہے یارو، اور ہستی کچھ نہیں،
بیخودی مستی ہے یارو، اور مستی کچھ نہیں۔
لامکاں کی منزلت، پاتا ہے کب کون و مکاں،
ہو کے ویرانے کے آگے، ہے کی ہستی کچھ نہیں۔
کچھ نہیں سب کچھ ہے یارو، اور سب کچھ، کچھ نہیں،
غیر اس کے معنی، رمز الستی کچھ نہیں۔
یہ جو کچھ ہونا جسے کہتے ہیں، پستی کچھ میاں،
فقر میں پستی یہی ہے، اور پستی کچھ نہیں۔
بندگی اور حق پرستی کچھ نہ ہونا، ہے نیاز،
کچھ نہ ہونے کے سوا، اور حق پرستی کچھ نہیں۔

❀ ❀ ❀

ایک دن کسی منشیہ نے دو پرسدھ مسلمان فقیروں کے وشئے میں پرشن کئے کہ اُن کا کیا حال ہے۔ آپنے جواب دیا سدھیوں کی طرف تو سب دوڑتے ہیں لیکن اُجڑے گاؤں اور بیابان جنگل میں کس کی شامت آئی ہے جو جائے اور اپنے آپ کو ختم کر دے۔ بھلا ادویت کے اتھاہ سمندر میں جس کا کوئی نہیں کنارہ کون پتوار چلا سکتا ہے۔ اہل اسلام کا تو یہاں گذارا ہی مشکل ہے۔ میں راتوں اس مندر کے اندر بیٹھا ہوں اور انت میں حیرت نے میری بانہہ پکڑ کر کہا کہ اٹھ خون کے اس دریا سے سمجھدار منشیہ ڈرتے ہیں کیونکہ آج تک کوئی بھی اپنی کشتی اس سے باہر نکال کر نہیں لے گیا۔ اس بھنور کے اندر ہزاروں کشتیاں ڈوبیں جن میں سے کسی کا ایک تختہ بھی کبھی کنارے آکر نہیں لگا۔ جہاں نہ منزل ہے نہ مقام، نہ کوئی پتہ نہ ٹھکانہ، وہاں آدمی جائے تو کہاں جائے؟ جس اتھاہ ساگر میں نہ کنارہ نہ دیپ استمبھ (روشنی کا مینار)، نہ بانس نہ بلی، اس سے کوئی پار ہو تو کیونکر ہو؟ ہاں، کوئی مرد مردانہ ایسا ہوتا ہے کہ نامرادی (نشکامتا) کا لنگر باندھ کر اس ساگر میں کود پڑے:—

نامرادی را کنی گر توشئہ،
فارغائی از غم و اندیشئہ
راہ را اینجا در ناکامی است،
کام نیکے مرد در بدنامی است۔

ارتھات—اگر تو نامرادی کو اپنے راستہ کا سامان بنالے تو تیرا سب غم اور اندیشہ جاتا رہے۔ یہاں پر ناکامی (نشکام بھاؤ) کے دوار میں سے نکل کر آگے کی راہ ملتی ہے۔ اور نیک مرد کا کام دیکھے تو ردھی سدھیوں کے پیچھے جانیوالے کیا اور نشکام بھاؤ

से काम करने वाले क्या सब एक ही निज-देश से आए हैं और उसी निज-देश को लौटेंगे. यह निज-देश न मिस्र है न इराक़ और न शाम. यह वह नगर है जिसका कोई नाम नहीं.

❀ ❀ ❀

एक दिन परलोकगामी (मरहूम) मौलवी फतह मोहम्मद के भाई मोहम्मद अहसानुल्ला उपस्थित थे. मैंने कहा कि मियाँ अहसानुल्ला मौलाना रूम की मसनवी .खूब पढ़ते हैं इसपर गुरू जी ने उनसे कहा कि अच्छा गड़रिये की हिकायत पढ़ो उन्होंने कठाम (ज़बानी) हिकायत कहनी शुरू की. गुरू जी के चेहरे का रंग सुर्ख़ और आँखें बत्तियो की तरह जलने लगीं. आँसू टप-टप मेंह की तरह बरसने लगे. जितने लोग मौजूद थे सबकी यह हालत थी कि एक दूसरे की सुध न रही. एक विचित्र अवस्था छा रही थी जिसे बयान नहीं किया जा सकता. 18 बरस के अन्दर मैंने केवल उसी दिन हज़रत को रोते हुए देखा वह ख़ुद भी कभी-कभी इस हिकायत के शेर पढ़ा करते थे जिनका मतलब यह है—

एक दिन मूसा ने चलते-चलते रास्ते मे एक गड़रिये को देखा वह गड़रिया यह कह रहा था कि—"ऐ ख़ुदा ! ऐ अल्लाह ! तू कहाँ है ? ताकि मैं तेरा चाकर बन जाऊँ, मैं तेरी जूती सिऊँ, तेरे सिर को कंघी करूँ ! ऐ मेरे ख़ुदा ! मेरी जान तुझ पर क़ुर्बान तू कहाँ है ? मैं तेरे सिर का कंघा करूँ, तेरी जूतियों को सिऊँ और बखिया करूँ ! तेरे कपड़ों को सिऊँ और उनमें से जुएँ बीन बीनकर निकालूँ ! ऐ महान परमात्मा ! मैं तेरे सामने दूध लाकर रखूँ और अगर तू कभी बीमार पड़े तो मैं अपने क़रीबी रिश्तेदार की तरह तेरी सेवा करूँ ! तेरे हाथ को बोसा दूँ, तेरे पाँव दबाऊँ, तेरे सोने का समय आवे तो मैं झाड़ू देकर जगह साफ करूँ ! अगर मैं हमेशा के लिये तेरा घर देख लूँ तो मैं हर रोज़ सुबह और शाम मक्खन और दूध तेरे पास लाऊँ और पनीर और रोगनी रोटियाँ और बढ़िया दही की मटकियाँ ये सब चीजें तैयार करूँ और सुबह शाम तेरे सामने पेश करूँ. मेरा काम लाना और तेरा काम उन्हें खाना हो. ऐ ख़ुदा ! मेरी सारी भेड़ें तुझ पर न्योछावर ! तेरी याद में मेरा सब कुछ अर्पण..."

वह गड़रिया इसी प्रकार ऊटपटाँग बक रहा था. मूसा ने सुनकर पूछा—"ऐ गड़रिये तू किससे बात कर रहा है ?" उसने जवाब दिया—"मैं उससे बात कर रहा हूँ जिसने हमें पैदा किया है, जिसने इस ज़मीन और आसमान को बनाया है." मूसा ने कहा—"हाय ! तू तो बेशर्म हो गया है ! तू मुसलमान के स्थान पर काफ़िर हो गया है यह क्या बेहूदा

سے کام کرنے والے کیا سب ایک ہی نج دیش سے آئے ہیں اور اسی نج دیش کو لوٹینگے ۔ یہ نج دیش نہ مصر ہے، نہ عراق اور نہ شام ۔ یہ وہ نگر ہے جس کا کوئی نام نہیں ۔

❀ ❀ ❀

ایک دن پرلوک گامی (مرحوم) مولوی فتح محمد کے بھائی محمد احسان اللہ اپستھت تھے۔ میں نے کہا کہ میاں احسان اللہ مولانا روم کی مثنوی خوب پڑھتے ہیں اس پر گرو جی نے کہا کہ اچھا گڈریے کی حکایت پڑھو ۔ انہوں نے کنٹھا گر (زبانی) حکایت کہنی شروع کی ۔ گرو جی کے چہرے کا رنگ سرخ اور آنکھیں بتیوں کی طرح جلنے لگیں ۔ آنسو ٹپ ٹپ مینھ کی طرح برسنے لگے ۔ جتنے لوگ موجود تھے سب کی یہ حالت تھی کہ ایک دوسرے کی سدھ نہ رہی ۔ ایک وچتر اوستھا چھا رہی تھی جسے بیان نہیں کیا جا سکتا ۔ 18 برس کے اندر میں نے کیول اسی دن حضرت کو روتے ہوئے دیکھا ۔ وہ خود بھی کبھی کبھی اس حکایت کے شعر پڑھا کرتے تھے جن کا مطلب یہ ہے—

ایک دن موسیٰ نے چلتے-چلتے راستے میں ایک گڈریے کو دیکھا ۔ وہ گڈریا یہ کہہ رہا تھا کہ—"اے خدا ! اے اللہ ! تو کہاں ہے ؟ تاکہ میں تیرا چاکر بن جاؤں، میں تیری جوتی سیؤں، تیرے سر کو کنگھی کروں ! اے میرے خدا ! میری جان تجھ پر قربان، میرے سب بال بچے اور مال اسباب تجھ پر نچھاور، تو کہاں ہے ؟ میں تیرے سر کو کنگھی کروں، تیری جوتیوں کو سیؤں اور بخیہ کروں ! تیرے کپڑوں کو سیؤں اور ان میں سے جوئیں بین-بین کر نکالوں ! اے مہان پرماتما ! میں تیرے سامنے دودھ لاکر رکھوں اور اگر تو کبھی بیمار پڑے تو میں اپنے قریبی رشتہ‌دار کی طرح تیری سیوا کروں ! تیرے ہاتھ کو بوسہ دوں، تیرے پاؤں دباؤں، تیرے سونے کا سمے آوے تو میں جھاڑو دے کر جگہ صاف کروں ! اگر میں ہمیشہ کے لئے تیرا گھر دیکھ لوں تو میں ہر روز صبح اور شام مکھن اور دودھ تیرے پاس لاؤں اور پنیر اور روغنی روٹیاں اور بڑھیا دہی کی مٹکیاں یہ سب چیزیں تیار کروں اور صبح شام تیرے سامنے پیش کروں۔ میرا کام لانا اور تیرا کام انہیں کھانا ہو ۔ اے خدا ! میری ساری بھیڑیں تجھ پر نچھاور ! تیری یاد میں میرا سب کچھ ارپن..."

وہ گڈریا اسی پرکار اوٹ پٹانگ بک رہا تھا ۔ موسیٰ نے سن کر پوچھا— "اے گڈریے تو کس سے بات کر رہا ہے ؟" اس نے جواب دیا— "میں اس سے بات کر رہا ہوں جس نے ہمیں پیدا کیا ہے، جس نے اس زمین اور آسمان کو بنایا ہے !" موسیٰ نے کہا—"ہائے ! تو تو بے شرم ہو گیا ہے ! تو مسلمان کے استھان پر کافر ہو گیا ہے ۔ یہ کیا بیہودہ

बक रहा है ! तू यह क्या कुफ़ उगल रहा है. तुझे अपने मुँह में कपड़ा ठूँस लेना चाहिये. तेरे कुफ़ की गन्दगी ने सारे जहान को गन्दा कर दिया और दीन के कपड़े को चीथड़ा बना दिया. जूती और पातावा तेरे पहनने की चीजे हैं. सूरज के पहनने क़ाबिल ये चीजें कहाँ ? अगर तू इस तरह की बातों से अपने मुँह को बन्द न करेगा तो एक ऐसी आग लग जायगी जो सारे संसार को भस्म कर देगी. इस तरह की आग अगर न आई होती तो यह धुआं कहां से निकलता! यह तेरी जान जो जलकर काली हो गई है यह कैसे हो गई होती ? अगर तू यह जानता है कि ईश्वर सबका मालिक है तो इसी तरह की बेहूदा गुस्ताख़ी तेरे लिये कैसे जायज हो सकती है. जाहिल की दोस्ती दुश्मनी की तरह है. उस परमात्मा को इस तरह की ख़िदमत की जरूरत नहीं है ! तू किससे बातें कर रहा है ? क्या अपने किसी चचा या फूफा से बातें कर रहा है ? उस सर्व शक्तिमान को जिस्म की क्या जरूरत है ? दूध वह पीता है कि जो बढ़ता हो, जूता वह पहनता है कि जो पाँव का मोहताज हो !"

यह सुनकर उस गड़रिये ने जवाब दिया कि—"ऐ मूसा ! तूने मेरा मुँह सी दिया और पश्चाताप (पछतावे) से मेरे दिल को जला डाला." यह कहकर उसने अपने कपड़े फाड़ डाले. एक ठन्डी साँस भरी और सिर उठाकर बयाबान की तरफ़ निकल गया.

इसपर ख़ुदा की तरफ़ से आकाशवाणी (ग़ैबी आवाज) हुई कि—

"ऐ मूसा ! तूने हमारे भक्त को हमसे जुदा कर दिया । तू मेल कराने के लिये भेजा गया था, जुदा कराने के लिये नहीं ! जब तक तुझ मे ताक़त है तू जुदाई की तरफ़ क़दम मत रख.

"हमने अलग-अलग लोगों की अलग-अलग प्रकृति (फ़ितरत) पैदा की है और सबके लिये अलग-अलग तरीक़े रखे हैं. जो चीज उसके लिये स्तुति (हम्द) है वह तेरे लिये निन्दा (ग़ीबत) है, जो उसके लिये शहद है वह तेरे लिये जहर है. जो उसके लिये नूर (प्रकाश) है वह तेरे लिये नार (आग) है, जो उसके लिये गुलाब है वह तेरे लिये काँटा है. हम पाकी (पवित्रता) और नापाकी (अपवित्रता) सबसे अलग हैं. भोलापन और चालाकी दोनो से ऊपर हैं. हमने दुनिया को इसलिये नहीं बनाया है कि उससे कुछ फ़ायदा उठावें बल्कि इसलिये बनाया है कि अपने बन्दों को लाभ पहुँचावें. हिन्दुस्तान के रहने वालो के लिये स्तुति करने का अपना तरीक़ा है, सिन्ध के रहने वालो के लिये स्तुति करने का उनका अपना ढग है. मैं उनके स्तुति करने से ज्यादा पाक नहीं होता. वे ही मेरी स्तुति करने से पाक और पवित्र बनते हैं हम लोगों की बाहरी हालत और उनके शब्दों को

بک رہا ہے ! تو یہ کیا کفر اُگل رہا ہے تجھے اپنے منھ میں کپڑا ٹھونس لینا چاہئے . تیرے کفر کی گندگی نے سارے جہاں کو گندہ کر دیا اور دین کے کپڑے کو چیتھڑا بنا دیا . جوتی اور پاتابہ تیرے پہنے کی چیز ہیں سورج کے پہننے قابل یہ چیزیں کہاں ؟ اگر تو اِس طرح کی باتوں سے اپنے منھ کو بند نہ کریگا تو ایک ایسی آگ لگ جائیگی جو سارے سنسار کو بھسم کر دے گی . اِس طرح کی آگ اگر نہ آئی ہوتی تو یہ دھواں کہاں سے نکلتا ! یہ تیری جان جو جل کر کالی ہو گئی ہے یہ کیسے ہو گئی ہوتی ؟ اگر تو یہ جانتا ہے کہ ایشور سب کا مالک ہے تو اس طرح کی بیہودہ گستاخی تیرے لئے کیسے جائز ہو سکتی ہے . جاہل کی دوستی دشمنی کی طرح ہے . اُس پرماتما کو اِس طرح کی خدمت کی ضرورت نہیں ہے ! تو کس سے باتیں کر رہا ہے ؟ کیا اپنے کسی چچا یا پھوپھا سے باتیں کر رہا ہے ؟ اس سرو شکتیمان کو جسم کی کیا ضرورت ہے ؟ دودھ وہ پیتا ہے کہ جو بڑھتا ہے' جوتا وہ پہنتا ہے کہ جو پاؤں کا محتاج ہو !"

یہ سن کر اس گڑریہ نے جواب دیا کہ "اے موسیٰ ! تونے میرا منھ سی دیا اور پشچاتاپ (پچھتاوے) سے میرے دل کو جلا ڈالا" یہ کہہ کر اس نے اپنے کپڑے پھاڑ ڈالے . ایک ٹھنڈی سانس بھری اور سر اٹھا کر بیابان کی طرف نکل گیا .

اس پر خدا کی طرف سے آکاش وانی (غیبی آواز) ہوئی کہ—

"اے موسیٰ ! تونے ہمارے بھگت کو ہم سے جدا کر دیا ! تو میل کرانے کے لئے بھیجا گیا تھا' جدا کرانے کے لئے نہیں ! جب تک تجھ میں طاقت ہے تو جدائی کی طرف قدم مت رکھ .

"ہم نے الگ الگ لوگوں کی الگ الگ پرکرتی (فطرت) پیدا کی ہے اور سب کے لئے الگ الگ طریقے رکھے ہیں . جو چیز اُس کے لئے استوتی (حمد) ہے وہ تیرے لئے نندا (غیبت) ہے' جو اس کے لئے شہد ہے وہ تیرے لئے زہر ہے . جو اس کے لئے نور (پرکاش) ہے وہ تیرے لئے نار (آگ) ہے' جو اس کے لئے گلاب ہے وہ تیرے لئے کانٹا ہے . ہم پاکی (پوترتا) اور ناپاکی (اپوترتا) سب سے الگ ہیں . بھولاپن اور چالاکی دونوں سے اوپر ہیں . ہم نے دنیا کو اس لئے نہیں بنایا کہ اس سے کچھ فائدہ اٹھاویں بلکہ اس لئے بنایا ہے کہ اپنے بندوں کو لابھ پہنچاویں ہندستان کے رہنے والوں کے لئے استوتی کرنیکا اپنا ڈھنگ ہے' سندھ کے رہنے والوں کے استوتی کرنے کا ان کا اپنا طریقہ ہے . میں ان کے استوتی کرنے سے زیادہ پاک نہیں ہوتا . وے ہی میری استوتی کرنے سے پاک اور پوتر بنتے ہیں . ہم لوگوں کی باہری حالت اور ان کے شبدوں کو

नहीं देखते, हम उनके भीतर की अवस्था और भीतरी हालत को देखते हैं. हम दिल के देखने वाले हैं और अगर हृदय भीतर से नरम हो और लफ़्ज़ ऊपर से नामुनासिब हों तो हमें कोई परवाह नहीं. ऐ मूसा ! अदब आदाब के जानने वाले दूसरे लोग होते हैं और वे जिनके दिलो जान में आग लगी हुई हो दूसरे होते हैं. प्रेमियों की हर साँस उन्हें जलाती रहती है. उजड़े हुए गाँव के ऊपर किसी राजा का टैक्स नहीं लगता. अगर इस तरह का आदमी ग़लती भी करे तो उसे ग़लत नहीं कहना चाहिये. शहीद अगर ख़ून से लिथड़ जाय तो भी दफ़न करने से पहले उसे ग़ुस्ल (स्नान) नहीं कराना चाहिये. शहीदों का ख़ून पानी से ज़्यादा पाक साफ़ चीज़ है और यह ग़लती सैकड़ों सवाबों से बढ़कर है. काबे के अन्दर पहुँचकर पूरब पच्छिम का भेद भाव नहीं होता. जिसे समुद्र में डुबकी मारने का अभ्यास (तजुर्बा) है. अगर वह मोज़े न पहने हो तो क्या चिन्ता या फ़िक्र. तू प्रेम के मतवालों से कपड़े सीकर पहनने की उम्मीद मत कर. जिन्हों ने अपने कपड़े फाड़कर फेंक दिये उनसे रफ़ू करने के लिये क्यों कहता है ? प्रेम का धर्म सब धर्मों से अलग है. प्रेमियो का मज़हब और मिल्लत सब जुदा है."

इसके बाद परमेश्वर ने मूसा के दिल मे वे राज़ (रहस्य) भर दिये जो शब्दो में नहीं बयान किये जा सकते. बहुत सी बातें उसके दिल मे भरदीं जिनमें देखना और बोलना दोनों मिलकर एक हो गये. मूसा कभी बेहोश होता था और कभी फिर होश में आ जाता था और कभी सृष्टि के आदि (शुरू) से अन्त (आख़ीर) तक अनन्त (ला महदूद) में चक्कर लगाता था. इसके बाद अगर मैं मतलब बयान करना चाहूँ तो मेरी नादानी या मूर्खता है क्योंकि इन बातों का मतलब होश और अक़्ल के उस पार है. अगर मैं कहूँ तो मेरी बात अक़्लों को उखाड़ कर फेंक दे और लिखूँ तो हज़ारो क़लमों को तोड़ कर फेंक डाले और अगर मैं उस पर विश्वस्त (यक़ीनी) नुक्ताचीनी करूँ तो क़यामत हो जाय और उस वक़्त तक भी वह संक्षिप्त (मुख़्तसिर) रहे, इसलिये मजबूर होकर मैं अपनी ज़बान को रोकता हूँ. अगर तू इन चीज़ो को पढ़ना चाहता है तो अपने भीतर से उन्हें पढ़ ले.

जब मूसा ने परमात्मा से यह फटकार सुनी तो उस गड़रिये की खोज में बयाबान के अन्दर भागा हुआ गया. मूसा उस प्रेम के मतवाले के पैरों के निशान ढूँढ़ता हुआ बयाबान के परदे में गर्द झाड़ता फिरा. प्रेम से पागल बने हुए आदमी के पैरों के निशान दूसरों के निशानों से अलग पहचाने जा सकते हैं. उनका एक क़दम शतरंज के रुख़ (हाथी) की तरह ऊपर से नीचे या नीचे से ऊपर को जाता है तो दूसरा फ़ील (ऊँट) की तरह टेढ़ा-टेढ़ा पड़ता है. कभी वह मौज की तरह ऊँची पताकाओं (झन्डों) पर चलता है.

نہیں دیکھتے، ہم ان کے بھیتر کی اوستھا اور بھیتری حالت کو دیکھتے ہیں۔ ہم دل کے دیکھنے والے ہیں اور اگر ہردے بھیتر سے نرم ہو اور لفظ اوپر سے نامناسب ہوں تو ہمیں کوئی پرواہ نہیں۔ اے موسیٰ! ادب آداب کے جاننے والے دوسرے لوگ ہوتے ہیں۔ اور وے جن کے دل و جان میں آگ لگی ہوئی ہو دوسرے ہوتے ہیں۔ پریمیوں کی ہر سانس جلاتی رہتی ہے۔ اجڑے ہوئے گاؤں کے اوپر کسی راجہ کا ٹیکس نہیں لگتا۔ اگر اس طرح کا آدمی غلطی بھی کرے تو اسے غلط نہیں کہنا چاہئے۔ شہید اگر خون سے لتھڑ جائے تو بھی دفن کرنے سے پہلے اسے غسل (اسنان) نہیں کرانا چاہیے۔ شہیدوں کا خون پانی سے زیادہ پاک صاف چیز ہے اور یہ غلطی سیکڑوں ثوابوں سے بڑھکر ہے۔ کعبے کے اندر پہنچ کر پورب پچھم کا بھید نہیں ہوتا۔ جیسے سمندر میں ڈبکی مارنے کا ابھیاس (تجربہ) ہے اگر وہ موزے نہ پہنے ہو تو کیا چنتا یا فکر۔ تو پریم کے متوالوں سے کپڑے سی کر پہننے کی امید مت کر۔ جنہوں نے اپنے کپڑے پھاڑ کر پھینک دیئے ان سے رفو کرنے کے لئے کیوں کہتا ہے؟ پریم کا دھرم سب دھرموں سے الگ ہے۔ پریمیوں کا مذہب اور ملت سب جدا ہے۔"

اس کے بعد پرمیشور نے موسیٰ کے دل میں وے راز (رہسیہ) بھر دیئے جو شبدوں میں نہیں بیان کیئے جا سکتے۔ بہت سی باتیں اس کے دل میں بھر دیں جن میں دیکھنا اور بولنا دونوں ملکر ایک ہو گئے۔ موسیٰ کبھی بیہوش ہوتا تھا اور کبھی پھر ہوش میں آجاتا تھا یا سرشٹی کے آدی (شروع) سے انت (آخر) تک اننت (لامحدود) میں چکر لگاتا تھا۔ اس کے بعد اگر میں مطلب بیان کرنا چاہوں تو میری نادانی یا مورکھتا ہے کیونکہ ان باتوں کا مطلب ہوش اور عقل کے اس پار ہے۔ اگر میں کہوں تو میری بات عقلوں کو اکھاڑ کر پھینک دے اور لکھوں تو ہزاروں قلموں کو توڑ کر پھینک ڈالے اور اگر میں اس پر وشوست (یقینی) نکتہ چینی کروں تو قیامت ہو جائے اور اس وقت تک بھی وہ سنچھپت (مختصر) رہے، اس لئے مجبور ہو کر میں اپنی زبان کو روکتا ہوں۔ اگر تو ان چیزوں کو پڑھنا چاہتا ہے تو اپنے بھیتر سے انہیں پڑھ لے۔

جب موسیٰ نے پرماتما سے یہ پھٹکار سنی تو اس گڈریے کی کھوج میں بیابان کے اندر بھاگا ہوا گیا۔ موسیٰ اس پریم کے متوالے کے پیروں کے نشان ڈھونڈتا ہوا بیابان کے پردے میں گرد جھاڑتا پھرا۔ پریم سے پاگل بنے ہوئے آدمی کے پیروں کے نشان دوسروں کے نشانوں سے الگ پہچانے جا سکتے ہیں۔ ان کا ایک قدم شطرنج کے رخ (ہاتھی) کی طرح اوپر سے نیچے یا نیچے سے اوپر کو جاتا ہے تو دوسرا فیل (اونٹ) کی طرح ٹیڑھا ٹیڑھا پڑتا ہے۔ کبھی یہ موج کی طرح اونچی پتاکاؤں (جھنڈوں) پر چلتا ہے۔

और कभी मछली की तरह पेट के बल चलता है. कभी वह मिट्टी के ऊपर अपना हाल इस तरह लिखता है कि जिस तरह एक रम्माल रमल डालता है. कभी वह हैरान होकर खड़ा हो जाता है, कभी दौड़ने लगता है. कभी इस तरह लुढ़कता चलता है जिस तरह पोलो की गेंद पोलो के डन्डे के सामने लुढ़कती जाती है.

आख़िर को मूसा ने उस गड़रिये को खोज निकाला और उसे देखा. देखते ही मूसा ने उससे कहा कि "तुझे ख़ुशख़बरी है कि तेरे लिये ईश्वर से इजाज़त आगई. तू किसी आदाब और इन्तज़ाम की परवाह न कर. तेरा नेक दिल जो चाहे सो तू कह. तेरा कुफ़्र ही धर्म है और तेरा धर्म तेरे दिल की रोशनी है. तू सज़ा जज़ा से ऊपर है. सारा जहान तुझसे अमान पाता है. ऐ चरवाहे! अल्लाह ने तेरे सब गुनाह माफ़ कर दिये हैं. तू निडर होकर चल और अपनी ज़बान से जो चाहे कह."

उस गड़रिये ने जवाब दिया कि "ऐ मूसा! अब मैं उस हालत से निकल चुका. इस वक़्त मैं अपने दिल के ख़ून में लिपटा हुआ हूँ. मैं सद्रे मुन्तही ❀ से आगे निकल चुका हूँ और उसपर लाखो साल की यात्रा तय कर चुका हूँ ऐ मूसा! तूने एक कोड़ा मार दिया है और मेरा घोड़ा दौड़ गया. मेरी लुढ़कती हुई गेंद गरदूँ (संसार-चक्र) के पार होगई. ऐ मूसा! मेरा आशीर्वाद है कि तू नासूत (जीव-लोक) और लाहूत (ब्रह्म लोक) का जानने वाला बने. तेरे हाथ और तेरे बाज़ू को शाबाश. मेरा हाल अब शब्दो के परे है और जो कुछ मैं कह रहा हूँ वह मेरा हाल नहीं है."

❀ ❀ ❀

एक दिन कहने लगे कि एक बार हमने मियाँ मरदान शाह से पूछा कि मियाँ साहब! क्या फ़क़ीरी इसी का नाम है कि किसी के चेले होकर गेरुए कपड़े पहन लिये तसबीह पढ़ली और ढोलक की गत पर नाच लिये या कुछ और चीज़ भी है? क़िस्सा है कि एक जाट किसी गुरु का चेला था जाड़े के दिनो मे गुरुजी के दर्शनो को गया. वहाँ उम्दा खिचड़ी खाने को मिली और एक लिहाफ़ ओढ़ने को. रात भर चैन से पाँव फैलाकर सोया. सुबह को उठा तो गुरु जी से कहने लगा—"खाने को खिचड़ा, ओढ़ने को सौड़! गुरु जी, मुक्ति यही है या कुछ और?" अर्थात् अगर यही है तो बस मिल गई और अगर कुछ और है तो उसका उपदेश दीजिये. बस हज़रत! अगर फ़क़ीरी

❀ सद्रे मुन्तही इसलाम के मुताबिक़ वह जगह है जहाँ जिब्रईल फ़रिश्ता रहता है और जिसके ऊपर मुहम्मद साहब के सिवाय कोई आजतक नही गया.

اور کبھی مچھلی کی طرح پیٹ کے بل چلتا ہے ۔ کبھی وہ مٹی کے اوپر اپنا حال اِس طرح لکھتا ہے کہ جس طرح ایک رمال رمل ڈالتا ہے ۔ کبھی وہ حیران ہو کر کھڑا ہو جاتا ہے، کبھی دوڑنے لگتا ہے ۔ کبھی اِس طرح لڑھکتا چلتا ہے جس طرح پولو کی گیند پولو کے ڈنڈے کے سامنے لڑھکتی جاتی ہے ۔

آخر کو موسیٰ نے اُس گڈریے کو کھوج نکالا اور اُسے دیکھا ۔ دیکھتے ہی موسیٰ نے اُس سے کہاکہ "تجھے خوشخبری ہے کہ تیرے لئے ایشور سے اجازت آگئی ۔ تو کسی آداب اور انتظار کی پرواہ نہ کر ۔ تیرا نیک دل جو چاہے سو تو کہہ ۔ تیرا کفر ہی دھرم ہے اور تیرا دھرم تیرے دل کی روشنی ہے ۔ تو سزا جزا سے اُوپر ہے ۔ سارا جہان تجھ سے امان پاتا ہے ۔ اے چرواہے ! اللہ نے تیرے سب گناہ معاف کر دیئے ہیں ۔ تو نڈر ہو کر چل اور اپنی زبان سے جو چاہے کہہ ۔"

اِس گڈریے نے جواب دیا کہ "اے موسیٰ ! اب میں اس حالت سے نکل چکا ۔ اِس وقت میں اپنے دل کے خون میں لپٹا ہوا ہوں ۔ میں صدر منتہی❀ سے آگے نکل چکا ہوں اور اِس پر لاکھوں سال کی یاترا طے کر چکا ہوں ۔ اے موسیٰ ! تو نے ایک کوڑا مار دیا ہے اور میرا گھوڑا دوڑ گیا ۔ میری لڑھکتی ہوئی گیند گردوں (سنسار چکر) کے پار ہو گئی ۔ اے موسیٰ ! میرا آشیرواد ہے کہ تو ناسوت (جیو-لوک) اور لاہوت (برہم لوک) کا جاننے والا بنے ۔ تیرے ہاتھ اور تیرے بازو کو شاباش ۔ میرا حال اب شبدوں کے پرے ہے اور جو کچھ میں کہہ رہا ہوں وہ میرا حال نہیں ہے ۔"

❀ ❀ ❀

ایک دن کہنے لگے کہ ایک بار ہم نے میاں مردان شاہ سے پوچھا کہ میاں صاحب ! کیا فقیری اسی کا نام ہے کہ کسی کے چیلے ہو کر گیروے کپڑے پہن لئے ۔ تسبیح پڑھ لی اور ڈھولک کی گت پر ناچ لئے یا کچھ اور بھی چیز ہے ؟ قصہ ہے کہ ایک جاٹ کسی گرو کا چیلا تھا ۔ جاڑے کے دنوں میں گرو جی کے درشنوں کو گیا ۔ وہاں عمدہ کھچڑی کھانے کو ملی اور ایک لحاف اوڑھنے کو ۔ رات بھر چین سے پاؤں پھیلا کر سویا ۔ صبح کو اٹھا تو گرو جی سے کہنے لگا— "کھانے کو کھچڑی اوڑھنے کو سوڑ ! گرو جی مکتی یہی ہے یا کچھ اور" ارتھات اگر یہی ہے تو بس مل گئی اور اگر کچھ اور ہے تو اُس کا اُپدیش دیجئے ۔ بس حضرت ! اگر فقیری

❀ صدر منتہی اسلام کے مطابق وہ جگہ ہے جہاں جبرئیل فرشتہ رہتا ہے اور جس کے اُوپر محمد صاحب کے سوائے کوئی آج تک نہیں گیا ۔

यही है जो मैंने बयान की तो कुछ भी बड़ी बात नहीं. सिर्फ़ एक पैसे का गेरू ख़र्च होता है. लेकिन यह गेरू का नुसख़ा शायद हमारे बुज़ुर्गों के वक़्त में ईजाद न हुआ होगा. नहीं तो वे क्यों खोज और तलाश में ज़िन्दगी भर दुनिया की ख़ाक छानते. यह बात सुनकर मरदानशाह तो चुप हो रहे लेकिन उनके पीर मियाँ ग़ुलामअली शाह नाराज़ होगये और बोले कि वाह साहब तुम फ़क़ीरों का मज़ाक़ उड़ाते हो और हम पर हँसते हो ! मरदानशाह ने उनसे कहा कि हज़रत ! नाराज़ होना तो दूसरी बात है, नहीं तो इन्साफ़ यह है कि जो कुछ मियाँ साहब ने कहा है इस ज़माने की फ़क़ीरी का तो बेशक यही हाल है

❀ ❀ ❀

एक दिन मैं ख़िदमत में हाज़िर था कि किसी आदमी ने मिरज़ा नोशे की मौत की ख़बर सुनाई. आपने कहा—

इन्ना लिल्लाहे व इन्ना अलैह राजऊन.

खाल धवनती रह गयो,
और निर्बल भए अगार.
अहरन को ठमको मिटो,
और उठ गये मीत लुहार.
सदा न फूले तोरियाँ,
और सदा न सावन होय.
सदा न यौवन थिर रहे,
और सदा न जीवे कोय.

निहायत ख़ूब आदमी थे. ख़ाकसारी और इनकिसारी बहुत थी. फ़क़ीर-दोस्त हद दरजे के थे. मिलनसारी अज़हद थी. एक दिन जो हम उनके पास गए तो उन्होंने अपने यह शेर पढ़े—

फ़ुरसत अगरत दस्त देहम मुग़तनम आँ कार,
साक़ी व मुगन्नी व शराबे व सरूदे.
ज़िनहार जा क़ौम न बाशी कि फ़रेबन्द,
हक़ रा ब सजूदे व नबी रा ब दरूदे

अर्थात—अगर तुझे फ़ुरसत मिले तो उसे ग़नीमत समझ कर साक़ी और गवइये और शराब और सरूद❀ में ख़र्च कर, लेकिन हरगिज़ कभी भी उस क़ौम में शामिल मत हो कि जो ख़ुदा को नमाज़ पढ़-पढ़ कर धोखा देते हैं.

रिन्दी* उनका दीन था. किसी को नुक़सान नहीं पहुँचाते

❀यह चारों चीज़ें सूफ़ियों की परिभाषा में योग के ख़ास दरजों के नाम हैं.

* सूफ़ी परिभाषा में रिन्द एक ख़ास जगह पर पहुँचे हुए फ़क़ीर को कहते हैं.

یہی ہے جو میں نے بیان کی تو کچھ بھی بڑی بات نہیں ۔ صرف ایک پیسے کا گیرو خرچ ہوتا ہے ۔ لیکن یہ گیرو کا نسخہ شاید ہمارے بزرگوں کے وقت میں ایجاد نہ ہوا ہوگا، نہیں تو وے کیوں کھوج اور تلاش میں زندگی بھر دنیا کی خاک چھانتے ۔ یہ بات سن کر مرداں شاہ تو چپ ہو رہے لیکن ان کے پیر میاں غلام علی شاہ ناراض ہو گئے اور بولے کہ واہ صاحب تم فقیروں کا مذاق اڑاتے ہو اور ہم پر ہنستے ہو ! مرداں شاہ نے ان سے کہا کہ حضرت ! ناراض ہونا تو دوسری بات ہے، نہیں تو انصاف یہ ہے کہ جو کچھ میاں صاحب نے کہا ہے اِس زمانے کی فقیری کا تو بیشک یہی حال ہے ۔

❀ ❀ ❀

ایک دن میں خدمت میں حاضر تھا کہ کسی آدمی نے مرزا نوشہ کی موت کی خبر سنائی ۔ آپنے کہا —

اناللہ وانا علیہ راجعون ۔

کھال دھونکتی رہ گیو،
اور نربل بھئے انگار ۔
اھرن کو ٹھمکو مٹو،
اور اٹھ گئے میت لوھار ۔
سدا نہ پھولیں توریاں،
اور سدا نہ ساون ہوئے ۔
سدا نہ یوون تھر رہے،
اور سدا نہ جیوے کوئے ۔

نہایت خوب آدمی تھے ۔ خاکساری اور انکساری بہت تھی ۔ فقیر دوست حد درجے کے تھے ۔ ملنساری ازحد تھی ۔ ایک دن جو ہم ان کے پاس گئے تو اُنھوں نے اپنے یہ شعر پڑھے —

فرصت اگرت دست دہم مغتنم آں کار،
ساقی ومغنی و شراب و سرودے ۔
زنہار را قوم نہ باشی کہ فریبند،
حق را بسجودے و نبی را بہ درودے ۔

اردھات — اگر تجھے فرصت ملے تو اُسے غنیمت سمجھ کر ساقی اور گویئے اور شراب اور سرود❀ میں خرچ کر ۔ لیکن ہرگز کبھی بھی اُس قوم میں شامل مت ہو کہ جو خدا کو نماز پڑھ پڑھ کر دھوکا دیتے ہیں ۔

رندی* ان کا دین تھا ۔ کسی کو نقصان نہیں پہنچاتے

❀ یہ چاروں چیزیں صوفیوں کی پریبھاشا میں یوگ کے خاص درجوں کے نام ہیں ۔

* صوفی پریبھاشا میں رند ایک خاص جگہ پر پہنچے ہوئے فقیر کو کہتے ہیں ۔

थे. रहमदिल थे और शायरी में तो अपना सानी न रखते थे. लेकिन अफ़सोस कि हमारे यह प्रेमी भी चल दिये.

नदी नाव का बैठना, पलक एक की प्रीत,
पल में बिछड़े जात हैं, यही जगत की रीत.
हम देखे जग जात है, जग देखे हम जाँय,
हम तो बैठे राह पर, किस-किस को पछताँय.

वडेरे

स्वर्गीय मिर्ज़ा अज़ीमबेग चुग़ताई

सौ बरस से ज़्यादा अरसा .गुज़रा, जिसका ज़िक्र है.

हुकूमत पाली१ का परवाना दरबार में गुज़रा कि देवड़ों२ का लश्कर नत्थूख़ाँ की सरकर्दगी में घुस पड़ा, लूटमार की और सरकार के एक हज़ार ऊँट और हज़ार बारह सौ दूसरे मवेशी लेकर सिरोही की तरफ़ हाँके लिये जा रहा है. मुक़ामी अफ़सर रोकने के नाक़ाबिल हैं, दरबार३ मदद करें.

दरबार हवा खाने जाते थे. इस ख़बर से सख़्त नाराज़ हुए. देवड़ों की यह हिम्मत कि पाली तक धावा मारें? नत्थूख़ां इससे पहले पाँच दफ़े धावा मारकर निकल गया था. दरबार को बहुत ही नागवार गुज़रा. यकायक उनकी नज़र बाईं तरफ़ उठी—सामने भूरसिंह मेड़तिया४ खड़ा था. कोई तीस बरस की उम्र, छरहरा .फ़ौलादी बदन, ताक़त और हिम्मत में शेर, कानों तक दाढ़ी चढ़ाये, राठौरी पेंच की वह बांकी पगड़ी, गन्दुमी रंग, खड़ी सुतवान नाक, बड़ी-बड़ी चमकीली आंखें, उस जवान को देखकर दरबार ने .फ़रमाया—"भूरया !"

"हुकुम" कहकर सूरमा हाथ जोड़कर आगे बढ़ा और सिर झुकाकर हुकुम की इन्तज़ारी में खड़ा हो गया.

दरबार ने कहा—"सुना तूने? ये देवड़े ऊँट ले गये..."

भूरसिंह ने कहा—"अन्नदाता ! हुकुम हो तो मारूँ..."

दरबार ने कहा—"जा, जल्दी जा. और देख जिस कांकड़५ में पाला६ मारे वही गाँव तेरा."

"खमा घणी !"७ झुककर दण्डवत् करते हुए भूरसिंह ने

१—जयपुर का एक ज़िला. २—सिरोही के राजपूत. ३—राजा साहब; ४—राठौर राजपूतों की एक शाख़ ५—मैदान. ६—लड़ाई ७—जो हुकुम.

تھے, رحمدل تھے اور شاعری میں تو اپنا ثانی نہ رکھتے تھے، لیکن افسوس کہ ہمارے یہ پریمی بھی چل دیئے .

ندی ناؤ کا بیٹھنا، پلک ایک کی پریت،
پل میں بچھڑے جات ہیں، یہی جگت کی ریت .
ہم دیکھے جگ جات ہے، جگ دیکھے ہم جائیں،
ہم تو بیٹھے راہ پر، کس کس کو پچھتائیں .

وڈیرے

سورگیہ مرزا عظیم بیگ چغتائی

سو برس سے زیادہ عرصہ گذرا جس کا ذکر ہے .

حکومت پالی ۱ کا پروانہ دربار میں گذرا کہ دیوڑوں۲ کا لشکر نتھو خاں کی سرکردگی میں گھس پڑا، لوٹ مار کی اور سرکار کے ایک ہزار اونٹ اور ہزار بارہ سو دوسرے مویشی لےکر سروھی کی طرف ہانکے لئے جا رہا ہے، مقامی افسر روکنے کے نااہل ہیں، دربار ۳ مدد کریں .

دربار ہوا کھانے جاتے تھے . اِس خبر سے سخت ناراض ہوئے . دیوڑوں کی یہ ہمت کہ پالی تک دھاوا ماریں؟ نتھو خاں اِس سے پہلے پانچ دفعہ دھاوا مار کر نکل گیا تھا . دربار کو بہت ہی ناگوار گذرا . یکایک ان کی نظر بائیں طرف اُٹھی—سامنے بھورسنگھ میڑتیا ۴ کھڑا تھا . کوئی تیس برس کی عمر، چھریرا فولادی بدن، طاقت اور ہمت میں شیر، کانوں تک داڑھی چڑھائے، راٹھوری پیچ کی وہ بانکی پگڑی، گندمی رنگ، کھڑی ستواں ناک، بڑی بڑی چمکیلی آنکھیں، اس جوان کو دیکھ کر دربار نے فرمایا—"بھوریا !"

"حکم" کہہ کر سورما ہاتھ جوڑ کر آگے بڑھا اور سر جھکا کر حکم کی انتظاری میں کھڑا ہو گیا .

دربار نے کہا—"سنا تو نے؟ یہ دیوڑے اونٹ لے گئے .."

بھور سنگھ نے کہا—"ان داتا ! حکم ہو تو ماروں..." .

دربار نے کہا—"جا، جلدی جا اور دیکھ جس کانکڑ ۵ میں پالا۶ مارے وہی گاؤں تیرا؟"

"کھما گھنی !" جھک کر ڈنڈوت کرتے ہوئے بھور سنگھ نے

---

۱. جے پور کا ایک ضلع ۲. سروھی کے راجپوت ۳. راجہ صاحب . ۴. راٹھور راجپوتوں کی ایک شاخ . 5. میدان . ۶. لڑائی . ۷. جو حکم .

कहा, कि कन्हैया हिजड़ा आगे बढ़ा और बोला—"अन्न-दाता ! उस भड़वे को मारने में भी जाऊँगी...भूरिया को अकेले डर लगा तो ?"

दरबार को हँसी आई और उन्होंने फ़रमाया—"भूरिया देख ! इसे भी लेजा चोर , भगड़े में इसे भी डाल दीजियो कि पड़ें कूल्हों पर देवड़ों की तलवारें, मगर मरने न पाए !"

"जो हुकुम बाप जी ! चल कन्हैया, चल !"

दरबार तो चल दिये और भूरसिंह ने सचमुच कन्हैया को पकड़ लिया कि लेजाऊँ वह मचला तो निकाली भूरसिंह ने तलवार और सिर काटने की धमकी दी क़िस्सा मुख्तसर, भूरसिंह उसी शाम को कन्हैया समेत सौ आदमी लेकर तेज ऊँटों और घोड़ों पर रवाना हो गया.

(2)

तीसरे दिन भूरसिंह ने देवड़ों को जा लिया

देवड़ों ने दुपहर को एक बाग में खाना खाया और ज़रा आराम किया

नत्थूखाँ ने दो तीन मील पीछे अपने ऊँट सवार तैनात कर दिये थे एक सवार ने हवा की तरह पहुँचकर भूरसिंह के आने की ख़बर बहुत मौके से दे दी पलक मारते सबके सब तैयार होकर भूरसिंह की आमद से पहले ही निकल गये गिरफ़्तार ऊँटो को पहले ही पानी पिलाकर आगे भगा दिया गया था भूरसिंह और उनके आदमी बाग में पहुँचे तो मैदान साफ़ था मगर जल्दी में देवड़े अपनी जाजम छोड़ गये थे जाजम पर जानिमाज़ थी और उसपर एक तसबीह दुश्मन की जाजम हाथ आना बेहतरीन शकुन था ऐसे मौके पर इससे बेहतर शकुन हाथ आना नामुमकिन था और वैसे भी जाजम बढ़िया चीज़ थी

देवड़े दूर निकल गये थे कि पता चला, जाजम रह गई है अरे ! अब क्या होगा ? नत्थूखाँ ने कहा— 'ऊँट रहे चाहे जायँ, जाजम नहीं जानी चाहिये ! इससे बढ़कर मनहूस बात कोई नहीं कि मेरी जाजम जाती रहे ऐसा आजतक कभी नहीं हुआ ' लिहाजा ऊँट तो चलते किये और आधी टुकड़ी लेकर लौट पड़े

उधर भूरसिंह आगबगूला बना आ रहा था दोनों लश्कर एक दूसरे के सामने आ गये हैं कि नत्थूखाँ ने देख लिया कि अब टकराते हैं उसे अपनी क़ूवत पर भरोसा था कि वह दुश्मन को लड़ाई में हराकर क़िस्सा तमाम कर देगा. लिहाजा लश्कर को तो उसने रोका और ख़ुद निकलकर घोड़ा चमकाकर आगे बढ़ा और हाथ उठाकर भूरसिंह के लश्कर को टकर लेने से रोका. हाथ हिलाकर उसने कहा—"ठहरो ! ठहरो !'

کہا' کہ کنھیا ھجڑا آگے بڑھا اور بولا—" ان داتا ! اس بھڑوے کو مارنے میں جاؤنگی... بھوریا کو اکیلے ڈر لگا تو ؟"

دربار کو ھنسی آئی اور انہوں نے فرمایا—"بھوریا دیکھ ! اسے بھی لے جا' اور جھگڑے میں اسے بھی ڈال دیجو کہ پڑیں کھووں پر دیوڑوں کی تلواریں' مگر مرنے نہ پائے !"

"جو حکم باپ جی ! چل کنھیا' چل !"

دربار تو چل دیئے اور بھورسنگھ نے سچ مچ کنھیا کو پکڑ لیا کہ لے جاؤں . وہ مچلا تو نکالی بھور سنگھ نے تلوار اور سر کاٹنے کی دھمکی دی. قصہ مختصر' بھور سنگھ اس شام کو کنھیا سمیت سو آدمی لے کر تیز اونٹوں اور گھوڑوں پر روانہ ھو گیا

(2)

تیسرے دن بھورسنگھ نے دیوڑوں کو جا لیا

دیوڑوں نے دوپہرکو ایک باغ میں کھانا کھایا اور ذرا آرام کیا

نتھو خاں نے دو تین میل پیچھے اپنے اونٹ سوار تعینات کر دیئے ہے .

ایک سوار نے ھوا کی طرح پہنچ کر بھورسنگھ کے آنے کی خبر بہت موقع سے دے دی پلک مارتے سب کے سب تیار ھو کر بھور سنگھ کی آمد سے پہلے ھی نکل گئے گرفتار اونٹوں کو پہلے سے پانی پلاکر آگے بھگا دیا گیا تھا بھورسنگھ اور اُن کے آدمی باغ میں پہنچے تو میدان صاف تھا مگر جلدی میں دیوڑے جاجم چھوڑ گئے تھے . جاجم پر جانماز تھی اور اس پر ایک تسبیح دشمن کی جاجم ھاتھ آنا بہترین شگن تھا ایسے موقع پر اس سے بہتر شگن ھاتھ آنا ناممکن تھا اور ویسے بھی جاجم بڑھیا چیز تھی

دیوڑے دور نکل گئے ہے کہ پتہ چلا جاجم رہ گئی ھے ارے ! اب کیا ھوگا ؟ نتھو خاں نے کہا— 'اونٹ رھیں چاھے جائیں' جاجم نہیں جانی چاھئے ! اس سے بڑھ کر منحوس بات اور کوئی نہیں کہ میری جاجم جاتی رھے ایسا آج تک کبھی نہیں ھوا لہذا اونٹ تو چلتے کیے اور آدھی ٹکڑی لے لوٹ پڑے

ادھر بھور سنگھ اک بگولہ بنا آرھا تھا دونوں لشکر ایک دوسرے کے سامنے آگئے ھیں کہ نتھو خاں نے دیکھ لیا کہ اب ٹکرانے ھیں اسے اپنی قوت پر بھروسہ تھا کہ وہ دشمن کو ھر ہر' لڑائی میں ھرا کر قصہ تمام کر دیگا لہذا لشکر کو تو اس نے روکا اور خود نکل کر گھوڑا چمکا کر آگے بڑھا اور ھاتھ اٹھا بھور سنگھ کے لشکر کو ٹکر لینے سے روکا ھاتھ ہلا کر اُس نے کہا—"ٹھہرو ! ٹھہرو !"

भूरसिंह ने देखा तो अपने आदमियों को रोककर वह भी जाँच करने के लिये आगे बढ़ा. आहिस्ता-आहिस्ता दोनों एक दूसरे के पास आये और भूरसिंह ने नत्थूखाँ को देखा. कोई चालीस-बयालीस की उम्र,बहुत ताक़त और दोहरे बदन का आदमी. कसी हुई लोहे की सी देह, सीना जैसे चक्की का पाट, एक अजीब शान से दाढ़ी चढ़ाए और मूछें जैसे बिच्छू का डंक और गोंद से इसक़दर ऐंठाई हुई कि बरछी मालूम दे. एक गहरे ज़ख्म का निशान पेशानी पर, जिसको अच्छी तरह ज़ाहिर करने के लिए पगड़ी का पेंच जान बूझकर ऊपर चढ़ाया गया था और ज़ख्म के इर्द गिर्द उसकी लम्बाई चौ-ड़ाई दूर से ही दिखाने के लिये उसमें सुर्मे की लिखत ! इसी तरह एक ज़ख्म का निशान नाक पर और एक दाईं तरफ़ गाल पर, जिसकी पूरी चौड़ाई दिखाने के लिये दाढ़ी के बालों को गोंद से चिपकाया गया था, ताकि निशान ढकने न पाये. दर असल मर्दों का ज़ेवर ही यह ज़ख्म के निशान थे. तिरछी बाँकी पगड़ी पहनी हुई, तंज़ेब का अँगरखा और चूड़ीदार पाजामा, गेंहुआ रंग और खड़ा नक़्शा, हाथ में बरछा लिये चारो तरफ़ चीते की तरह देखते हुए—इस शान के नत्थूखाँ थे.

नत्थूखाँ ने सौ ऊँटों के बदले जाजम वापस माँगी, भूर-सिंह ने शक की नज़र से देखते हुए तेवर बदलकर कहा—"ऊँट हमारे सब वापस करदो और जाजम ले लो और चले जाओ, वरना हमने वैसे ही तुमको आ लिया है."

नत्थूखाँ ने बताया कि उसके साथी अभी और भी हैं जो ऊँटों के पास हैं और ऊँट ऐसी जगह गये कि देखने को भी नहीं मिल सकते.

उसका जवाब भूरसिंह ने दिया कि हमारी तीन टुकड़ियाँ और आ रही हैं, बल्कि एक टुकड़ी ने शायद आगे बढ़कर रास्ता काट ही लिया हो. और ऊँट ढूँढ़ लेंगे.

नत्थूखाँ के मुख़बिर हर तरफ़ लगे रहते थे. लिहाज़ा उसको मालूम था कि यह कोरी धमकी है. लेकिन जाजम वह किसी तरह छोड़ना नहीं चाहता था. ऊँट कोई चीज़ नहीं. जाजम जाती रही तो यार दोस्तों में अलग ज़िल्लत होगी और सरकार में बदनामी अलग. मगर सब ऊँट देना भी क़यामत थी. उसने आधे ऊँट देकर सौदा करने की सोची कि इतने में क्या देखते हैं कि वह कन्हैया हिजड़ा जाजम बिछाकर उसपर बैठ गया, फिर दो-चार जूते उठाकर जाजम पर रखकर तालियाँ बजाता खड़ा होकर मटक-मटक कर गाने लगा—

दारू भरी बड़े सीसा रे
जाजम माले धरीबड़े

और जूतों को शराब का शीशा क़रार देकर लगा सिपा-हियों को मूठमूठ पिलाने—यानी दौड़-दौड़कर मारने. नत्थूखाँ

بھورسنگھ نے دیکھا تو اپنے آدمیوں کو روک کر وہ بھی جانچ کرنے کے لئے آگے بڑھا. آہستہ-آہستہ دونوں ایک دوسرے کے پاس آئے اور بھور سنگھ نے نتھو خاں کو دیکھا. کوئی چالیس-بیالیس کی عمر' بہت طاقت اور دوھرے بدن کا آدمی. کسی ہوئی لوہے کی سی دیہہ' سینہ جیسے چکی کا پاٹ' ایک عجیب شان سے ڈاڑھی چڑھائے اور موچھیں جیسے بچھو کا ڈنک اور گوند سے اس قد اینٹھائی ہوئی کہ برچھی معلوم دے. ایک گہرے زخم کا نشان پیشانی پر' جسکو اچھی طرح ظاہر کرنے کے لئے پگڑی کا پیچ جان بوجھ کر اوپر چڑھایا گیا تھا اور زخم کے ارد-گرد اسکی لمبائی-چوڑائی دور سے ہی دکھانے کے لئے اسمیں سرمے کی لکھت! اسی طرح ایک زخم کا نشان ناک پر اور ایک دائیں طرف گال پر' جسکی پوری چوڑائی دکھانے کے لئے ڈاڑھی کے بالوں کو گوند سے چپکایا گیا تھا کہ نشان ڈھکنے نہ پائے. دراصل مردوں کا زیور ھی یہ زخم کے نشان تھے. ترچھی بانکی پگڑی پہنی ہوئی' تنزیب کا انگرکھا اور چوڑی دار پاجامہ' گیہواں رنگ اور کھڑا نقشہ' ہاتھ میں برچھا لئے چاروں طرف چیتے کی طرح دیکھتے ہوئے—اس شان کے نتھو خاں تھے.

نتھو خاں نے سو اونٹوں کے بدلے جازم واپس مانگی بھور سنگھ نے شک کی نظر سے دیکھتے ہوئے تیور بدل کر کہا—"اونٹ ہمارے سب واپس کردو اور جازم لے لو اور چلے جاؤ' ورنہ ہم نے ویسے ہی تم کو آلیا ھے."

نتھو خاں نے بتایا کہ اس کے ساتھی ابھی اور بھی ھیں جو اونٹوں کے پاس ھیں اور اونٹ ایسی جگہ گئے کہ دیکھنے کو بھی نہیں مل سکتے.

اس کا جواب بھورسنگھ نے دیا کہ ہماری تین ٹکڑیاں اور آرھی ھیں' بلکہ ایک ٹکڑی نے شاید آگے بڑھ کر راستہ کاٹ ھی لیا ہو. اور اونٹ ڈھونڈھ لینگے.

نتھو خاں کے مخبر ہر طرف لگے رہتے تھے. لہذا اسکو معلوم تھا کہ یہ کوری دھمکی ھے. لیکن جازم وہ کسی طرح چھوڑنا نہیں چاہتا تھا. اونٹ کوئی چیز نہیں. جازم جاتی رہی تو یار-دوستوں میں الگ ذلت ہوگی اور سرکار میں بدنامی الگ. مگر سب اونٹ دینا بھی قیامت تھی. اس نے آدھے اونٹ دے کر سودا کرنے کی سوچی کہ اتنے میں کیا دیکھتے ھیں وہ کنھیا ھجڑا جازم بچھا کر اس پر بیٹھ گیا' پھر دو-چار جوتے اٹھا کر جازم پر رکھ کر تالیاں بجاتا کھڑا ہو کر مٹک-مٹک کر گانے لگا—

دارو بھری بڑے سیسارے
جازم مالے دھریوتے

اور جوتوں کو شراب کا شیشہ قرار دے کر لگا سپاھیوں کو جھوٹ-موٹ پلانے—یعنی دوڑ-دوڑ کر مارنے. نتھو خاں

ने यह देखा तो उसकी आँखों में ख़ून उतर आया. क्या ग़ज़ब है कि उनकी जाजम पर हिजड़ा बैठे और यह हरकत करे! मगर ख़्याल माल की ख़ैरियत का था, नहीं तो पलक भर में लड़ाई शुरू कर देते नतीजा यह कि नत्थूख़ाँ ने यह सोचा कि दुश्मन ने तो वैसे ही आ लिया, लड़ाई में हार हो न हो ऊँट और मवेशी लेकर निकल जाना नामुमकिन है. सौदा बुरा नहीं है, हज़ार ऊँट वापस देकर जाजम लेली जाय. बाक़ी जो हज़ार बारह सौ मवेशी हैं, वही काफ़ी हैं

इधर भूरसिंह ने देखा कि ऊँटों का पता नहीं, न मालूम किधर और कहाँ हैं वैसे मिलें या न मिलें, लिहाज़ा मवेशी नहीं तो न सही, सौदा ख़ूब है. लिहाज़ा वह भी राज़ी हो गया.

(3)

नत्थूख़ाँ ने ऊँट मँगवाकर हवाले कर दिये, और यह इधर रवाना हुए और वह उधर.

जाने को तो दोनों चले गये लेकिन ज़रा दूर जाकर सोचने लगे. नत्थूख़ाँ और उसके साथियों को मुफ़्त में ऊँट जाने की कसक थी. एक ने कहा—'बेहतर होता अगर हम लड़ते और लड़कर जाजम ले आते' दूसरे ने कहा— 'बेकार होता" तीसरा बोला—"जाजम ता हाथ आई पर हिजड़े को सज़ा न दी." एक ने कहा—"हिजड़ा क़त्ल होना था." एक और बोला—"हिजड़े को क़त्ल कौन करे, नाक काट लेनी चाहिये थी" एक साहब का ख़्याल था कि नाक ता शायद अब भी काटना दुश्वार न था. नत्थूख़ाँ भी दाँत पीस रहे थे कि वाक़ई हिजड़ा साफ़ निकल गया और उस वक़्त ख़्याल ही न रहा।

दूसरी तरफ़ की सुनिए

कन्हैया ने भूरसिंह से कहा—"मुई, तू लड़ने से डरती थी, तो आई क्यों थी? चल तो सही सौत, न तेरी नाक चाटी कटवाई तो मेरा ज़िम्मा."

भूरसिंह ने हँसकर कहा—"बदमाश, मारूँगा तुझे, चुप रह!"

कन्हैया चटख़कर बोला—"यह तो बताओ, सखी, तुमने पठान को जाजम क्यो दे दी? गोरी तुम्हें ऐसा डर लगा, तो मुझसे कहा होता, निगोड़े को मार जूतियाँ छीन लेती!"

लोगों ने हिजड़े की बातो को ध्यान से सुना. भूरसिंह भी सोच में पड़ गया. इतने में कन्हैया फिर बोला—"सोचती क्या है? चल तो सही दरबार में, कैसी जूतिया पड़ती हैं, तुझे यह बनियों का सौदा करने भेजा था या लड़ने-मरने? अरे, कोई बनिया नहीं था, जो तुझे भेजा!"

نے یہ دیکھا تو اُسکی آنکھوں میں خون اُتر آیا ۔ کیا غضب ہے کہ انکی جازم پر ہجڑا بیٹھے اور یہ حرکت کرے ! مگر خیال مال کی خیریت کا تھا، نہیں تو پلک بھر میں لڑائی شروع کر دیتے۔ نتیجہ یہ کہ نتھو خاں نے یہ سوچا کہ دشمن نے تو ویسے ہی آلیا، لڑائی میں ہار ہو نہ ہو اونٹ اور مویشی لے کر نکل جانا نا ممکن ہے ۔ سودا برا نہیں ہے، ہزار اونٹ واپس دے کر جازم لے لی جائے ۔ باقی جو ہزار بارہ سو مویشی ہیں، وہی کافی ہیں ۔

اُدھر بھور سنگھ نے دیکھا کہ اونٹ کا پتہ نہیں، نہ معلوم کدھر اور کہاں ہیں ویسے ملیں یا نہ ملیں، لہذا مویشی نہیں تو نا سہی، سودا خوب ہے لہذا وہ بھی راضی ہو گیا ۔

(3)

نتھو خاں نے اونٹ منگوا کر حوالے کر دیئے، اور یہ اُدھر روانہ ہوئے اور وہ اُدھر

جانے کو تو دونوں چلے گئے ذرا دور جاکر سوچنے لگے نتھو خاں اور اس کے ساتھیوں کو مفت میں اونٹ جانے کی کسک تھی ایک نے کہا—"بہتر ہوتا" اگر ہم لڑتے اور لڑ کر جازم لے آتے" دوسرے نے کہا— 'بیکار ہوتا' تیسرا بولا—"جازم تو ہاتھ آئی پر ہجڑے کو سزا نہ دی' ایک نے کہا— "ہجڑا قتل ہونا تھا" ایک اور بولا—"ہجڑے کو قتل کون کرے' ناک کاٹ لینی چاہئے تھی" ایک صاحب کا خیال تھا کہ ناک تو شاید اب بھی کاٹنا دشوار نہ تھا ۔ نتھو خاں بھی دانت پیس رہے تھے کہ واقعی ہجڑا صاف نکل گیا اور اس وقت خیال ہی نہ رہا ۔

دوسری طرف کی سنئے ۔

کنھیا نے بھور سنگھ سے کہا—"موئی' تو لڑنے سے ڈرتی تھی' تو آئی کیوں تھی ؟ چل تو سہی سوت' نہ تیری ناک چوٹی کٹوائی تو میرا ذمہ'

بھور سنگھ نے ہنس کر کہا—"بدمعاش' ماروں گا تجھے' چپ رہ !"

کنھیا چٹخ کر بولا—"یہ تو بتاؤ' سکھی' تم نے پٹھان کو جازم کیوں دے دی ؟ گوری تمہیں ایسا ڈر لگا تو مجھسے کہا ہوتا' نگوڑے کو مار جوتیاں چھین لیتی !'

لوگوں نے ہجڑے کی باتوں کو دھیان سے سنا بھور سنگھ بھی سوچ میں پڑ گیا اتنے میں کنھیا پھر بولا—"سوچتی کیا ہے ؟ چل تو سہی دربار میں' کیسی جوتیاں پڑتی ہیں تجھے یہ بنیوں کا سودا کرنے بھیجا تھا یا لڑنے مرنے ؟ ارے' کوئی بنیا نہیں تھا جو تجھے بھیجا !"

अब भूरसिंह गहरे सोच में पड़ गया. यह बात तो सच थी कि बनियों की तरह मोल-तोल करके ऊँटों का सौदा किया गया था. हिजड़ा बोला—"यह सौदा तो मैं भी कर लेती, बल्कि पठान की दाढ़ी मूँछ खाते में. तूने राजपूत के घर क्यों जन्म लिया ? चल, जोधपुर चलकर तुझे गोद लूँगी."

भूरसिंह का खून खौलने लगा. वह और उसके साथी सारी घटना पर ग़ौर कर रहे थे. यह तो बात सच थी कि किसी की नकसीर भी नहीं फूटी. चोरों को बग़ैर मारे क्यों छोड़ा ? अगर दरबार में यह सवाल किया गया तो क्या जवाब दिया जायगा, मगर हिजड़ा तो सोचने ही नहीं देता था. उसने दम के दम में भूरसिंह का नाम सेठ भूरा मल रख दिया और लगा खाँडा-तलवार माँगने कि हटाओ इन चीज़ों को. भूरसिंह ने जलकर, सिर पीटकर कहा—"नकटे, तू उस वक़्त कहाँ मर गया था ?"

हिजड़ा बोला—भाभी, तुम पठान से डर क्यों गईं ?"

भूरसिंह ने कहा—"अब तुझे मारूँगा..."

हिजड़ा बोला—"क्या औरतें सब मर गई थीं कि...?"

भूरसिंह मारे गुस्से के सिर धुन रहा था. वह हिजड़े को सचमुच मार डालता, अगर उसकी बात सच न होती. उसने बिल्कुल सच कहा था. सवाल यह था कि अब क्या करें ?

हिजड़ा बोला—"तरकीब मैं बताऊँ ?"

भूरसिंह ने कहा—"वह क्या ?"

कहने लगा—"आओ, सब मिलके नाचें."

भूरसिंह बिगड़ा तो हिजड़ा कहने लगा—'आओ, हम-तुम दोनों नत्थूख़ाँ से ब्याह कर लें.'

भूरसिंह ने गुस्से में हुक्म दिया कि इसकी चोटी पकड़-कर घसीट ले जाओ.

भूरसिंह के लिये यह नामुमकिन था कि वायदा तोड़कर देवड़ों से फिर जा लड़े. यह नामुमकिन था. दूसरी सूरत यह थी कि लौटकर देवड़ों को लड़ाई पर राज़ी करे और लड़ाई की कोई सूरत निकाले. उसे उम्मीद थी कि नत्थूख़ाँ का बाँकपन काम दे जायगा. इसलिये ऊंटों को आगे बढ़ने का हुक्म देकर अपने दल के साथ लौट पड़ा. अब कन्हैया बहुत घब-राया. उसको ख़्याल ही न था कि वाक़ई ऐसा होगा. और भूरसिंह ने कहा—"अबकी तुझे तो छोड़ूँगा नहीं. झगड़े में तेरे कूल्हे लाल करवाने का हुक्म ख़ुद दरबार ने दिया है तो कैसे छोड़ दूँ ?"

हिजड़ा पसर गया और रोने लगा तो भूरसिंह ने कहा कि चोटी पकड़कर मारो जूते. उसे बाँधकर ऊँट पर डालकर ले चले ! बेचारा चला—कोसता पीटता.

اب بھورسنگھ گہرے سوچ میں پڑگیا ۔ یہ بات تو سچ تھی کہ بنیوں کی طرح مول-تول کر کے اونٹوں کا سودا کیا گیا تھا ۔ ہجڑا بولا—"یہ سودا تو میں بھی کر لیتی، بلکہ پٹھان کی ڈاڑھی مونچھ کھاتے میں ۔ تونے راجپوت کے گھر کیوں جنم لیا ؟ چل، جودھپور چل کر تجھے گود لونگی ۔"

بھور سنگھ کا خون کھولنے لگا ۔ وہ اور اس کے ساتھی ساری گھٹنا پر غور کر رہے تھے ۔ یہ بات تو سچ تھی کہ کسی کی نکسیر بھی نہیں پھوٹی۔ چوروں کو بغیر مارے کیوں چھوڑا ؟ اگر دربار میں یہ سوال کیا گیا تو کیا جواب دیا جائیگا، مگر ہجڑا تو سوچنے ہی نہیں دیتا تھا ۔ اس نے دم کے دم میں بھور سنگھ کا نام سیٹھ بھورا-مل رکھ دیا اور لگا کھانڈا-تلوار مانگنے کہ ہٹاؤ ان چیزوں کو ۔ بھور سنگھ نے جل کر، سرپیٹ کر کہا—"نکٹے، تو اس وقت کہاں مر گیا تھا ؟"

ہجڑا بولا—بھابھی، تم پٹھان سے ڈر کیوں گئیں ؟"

بھور سنگھ نے کہا—"اب تجھے مارونگا..."

ہجڑا بولا—کیا عورتیں سب مر گئیں تھیں کہ...؟"

بھور سنگھ مارے غصے کے سر دھن رہا تھا ۔ وہ ہجڑے کو سچ مچ مار ڈالتا، اگر اسکی بات سچ نہ ہوتی ۔ اس نے بالکل سچ کہا تھا ۔ سوال یہ تھا کہ اب کیا کریں ؟

ہجڑا بولا—"ترکیب میں بتاؤں ؟"

بھور سنگھ نے کہا—"وہ کیا ؟"

کہنے لگا—"آؤ، سب مل کر ناچیں ۔"

بھور سنگھ بگڑا تو ہجڑا کہنے لگا—"آؤ، ہم-تم دونوں نتھو خاں سے بیاہ کر لیں ۔"

بھور سنگھ نے غصے میں حکم دیا کہ اس کی چوٹی پکڑ کر گھسیٹ لے جاؤ ۔

بھور سنگھ کے لئے یہ ناممکن تھا کہ وعدہ توڑ کر دیوڑوں سے پھر جا لڑے ۔ یہ ناممکن تھا ۔ دوسری صورت یہ تھی کہ لوٹ کر دیوڑوں کو لڑائی پر راضی کرے اور لڑائی کی کوئی صورت نکالے ۔ اسے امید تھی کہ نتھو خاں کا بانکپن کام دے جائیگا ۔ اس لئے اونٹوں کو آگے بڑھنے کا حکم دے کر اپنے دل کے ساتھ لوٹ پڑا ۔ اب کنھیا بہت گھبرایا ۔ اسکو خیال ہی نہیں تھا کہ واقعی ایسا ہوگا۔ اور بھور سنگھ نے کہا—"اب کی تجھے تو چھوڑونگا نہیں ۔ جھگڑے میں تیرے کولھے لال کروانے کا حکم خود دربار نے دیا ہے سو کیسے چھوڑ دوں ؟"

ہجڑا پسر گیا اور رونے لگا تو بھور سنگھ نے کہا کہ چوٹی پکڑکر مارو جوتے ۔ اسے باندھ کر اونٹ پر ڈال کر لے چلے ! بیچارہ چلا—کوستا پیٹتا ۔

पहले तो नत्थूखाँ ने समझा कि यह कोई और दस्ता आता है, लेकिन जब भूरसिंह कुछ सिपाहियों के साथ टोली से निकलकर आगे बढ़ा, तो इतमीनान हुआ. नत्थूखाँ भी चन्द हमराहियों के साथ बढ़े. भूरसिंह नत्थूखाँ को देखकर मुस्कराया—"ठाकरां !"

नत्थूखाँ ने हाथ से सवाल का इशारा किया—"क्या हुक्म है ?"

भूरसिंह ने मुस्कुराते हुए गरदन झुकाकर कहा—"खाँ जी, तुमने जाजम ले ली और उसके बदले ऊँट दे दिये ?

"दे दिये"

"यह सौदा तो कुछ बनियों का सा हो गया !"

नत्थूखाँ फ़ौरन ताड़ गया कि लड़ाई माँगता है और अपने वायदे से फिरने की तरकीब में है. नत्थूखाँ को, हालाँकि कि ख़ुद उस हिजड़े की ज़रूरत थी, मगर उसने लापरवाही से कहा—"हो तो गया."

भूरसिंह ने भी लापरवाही से कहा "एक चीज़ लेते न तुम अच्छे लगे न हम जाजम और ऊँट दोनो चीजें हम दोनों में से कोई एक ले जाता तो अच्छा था."

नत्थूखाँ ने कहा—'हाँ, चाहिये तो यही था, मगर ख़ैर !"

भूरसिंह ने कहा—' ख़ैर क्या, लीजिये ऊँट भी !"

नत्थूखाँ ने मुस्कराकर कहा – "हमारे तरफ़ चारे की वैसे कमी है हमने भी सोचा, चलो रहने दो जल्दी क्या है ? ज़रा एक-दो महीना और चर लें, अच्छा है ले जायंगे हम, आप इतमीनान रखो, फिर कभी झपट ले जायँगे"

भूरसिंह ने कहा—" खानजी, देवड़े और राठौर टकराये और यों बनियों की तरह सौदा करके चले जाय कि किसी की नकसीर भी न फूटे !"

नत्थूखाँ ने सजीदगी से कहा—' देखो जी, हम तो यहाँ मुसद्दी बनकर आये है अहलकार हैं हम तो."

' कैसे अहलकार ? '

"अहलकार ऐसे कि हम तो देवड़ो का लाग-बाग (टैक्स) लेने आते हैं, बहादुरी दिखाने नहीं आते लिये और चल दिये."

लाग बाग का नाम सुनते ही भूरसिंह का राठौरी खून खौल गया और उसने चीख़कर कहा—"और हमसे देवड़े बाग लें. . !"

नत्थूखाँ ने क़हक़हा लगाकर कहा—"लाग नहीं तो और क्या है ?"

"चोरी है चोरी," चीख़कर भूरसिंह ने कहा—"हम तुमसे जाजम भी लेंगे, मवेशी भी..."

(4)

پہلے تو نتھو خاں نے سمجھا کہ یہ کوئی اور دستہ آتا ہے' لیکن جب بھور سنگھ کچھ سپاہیوں کے ساتھ ٹولی سے نکل کر آگے بڑھا' تو اطمینان ہوا۔ نتھو خاں بھی چند ہمراہیوں کے ساتھ بڑھے۔ بھور سنگھ نتھو خاں کو دیکھ کر مسکرایا—' ٹھاکراں ۔ !"

نتھوخاں نے ہاتھ سے سوال کا اشارہ کیا— "کیا حکم ہے ؟"

بھورسنگھ نے مسکراتے ہوئے گردن جھکا کر کہا—"خاں جی' تم نے جازم لے لی اور اُس کے بدلے اونٹ دے دئے ؟

"دے دئے۔"

"یہ سودا تو کچھ بنیوں کا سا ہو گیا !'

نتھو خاں فوراً تاڑ گیا کہ لڑائی مانگتا ہے اور اپنے وعدے سے پھرنے کی ترکیب میں ہے نتھوخاں کو حالانکہ خود اس ہجڑے کی ضرورت تھی' مگر اُس نے لاپرواہی سے کہا—"ہو تو گیا۔"

بھورسنگھ نے بھی لاپرواہی سے کہا—"ایک چیز لیتے نہ تم اچھے لگے نہ ہم۔ جازم اور اونٹ دونوں چیزیں ہم دونوں میں سے کوئی ایک لے جاتا تو اچھا تھا "

نتھو خاں نے کہا—"ہاں' چاہئے تو یہی تھا' مگر خیر !'

بھورسنگھ نے کہا—"خیر کیا لیجئے اونٹ بھی !"

نتھو خاں نے مسکرا کر کہا—"ہمارے طرف چارے کی ویسے کمی ہے ہم نے بھی سوچا چلو رہنے دو' جلدی کیا ہے ؟ ذرا ایک دو مہینے اور چر لیں' اچھا ہے لے جائینگے ہم' آپ اطمینان رکھو' پھر کبھی جھپٹ لیجائینگے "

بھورسنگھ نے کہا—' خاں جی' دیوڑے اور راٹھور ٹکرائیں اور یوں بنیوں کی طرح سودا کر کے چلے جائیں کہ کسی کی نکسیر بھی نہ پھوٹے !'

نتھو خاں نے سنجیدگی سے کہا—'دیکھو جی' ہم تو یہاں مسدی بن کر آئے ہیں اہلکار ہیں ہم تو '

"کیسے اہلکار ؟'

"اہلکار ایسے کہ ہم تو دیوڑوں کا لاگ باگ (ٹیکس) لینے آتے ہیں' بہادری دکھانے نہیں آتے۔ لئے اور چل دیئے "

لاگ باگ کا نام سنتے ہی بھورسنگھ کا راٹھوری خون کھول گیا اور اُس نے چیخ کر کہا—"او ہم سے دیوڑے لاگ لیں۔ ! '

نتھو خاں نے قہقہہ لگا کر کہا—"لاگ نہیں تو اور کیا ہے۔"

"چوری ہے چوری" چیخ کر بھور سنگھ نے کہا—"ہم تم سے جازم بھی لیں گے' مویشی بھی ۔ "

"और अपने क़ौल से फिर जाओगे ?"

"हरगिज़ नहीं, हरगिज़ नहीं."

"फिर क्यों झगड़ते हो ? जाओ हम तुमसे नहीं झगड़ते. हम हज़ार से ऊपर मवेशी लेकर जाते हैं. जीत हमारी है, हम नहीं लड़ते."

"लड़ना तो पड़ेगा—."—भूरसिंह ने सिर हिलाकर कहा.

"हम हरगिज़ नहीं लड़ेंगे, तुम अपना क़ौल तोड़ दो—निकालो खाँडा, करो लड़ाई. . मगर याद रखना ठाकरां, मेरे साथ आग के बच्चे देवड़े हैं, भील-बावनी (चमार) नहीं हैं. गाजर मूली की तरह काटकर रख दूँगा."

"और मेरे साथ भी मेड़तिये हैं—"

कन्हैया हिजड़ा सुनता ही था और ख़ुश था कि लड़ाई नहीं होगी. उसने मज़ाक़ में बात उड़ाने की सोची. लिहाज़ा जैसे ही भूरसिंह ने अकड़कर कहा—"मेरे साथ भी मेड़तिये हैं" तो हिजड़ा बात काटकर, चीखकर, ताली बजाकर, अपने सीने पर हाथ रखकर, मटककर बोला—"मेड़तिये हैं हम...देखलो .खानजी हमें . खानजी, देखलो हमे भूल में मत रहना ..."

नत्थूखाँ ने क़हक़हा लगाया, और भूरसिंह झेंप गया उसने जल भुनकर हिजड़े की तरफ देखा नत्थूखाँ ने भी देखा कि भूरसिंह को हिजड़े ने कैसा झेंपाया—ऐसा कि बात चीत की गर्मी और लड़ाई का अन्देशा मिट गया—बात रंग पर आई थी कि हँसी मे उड़ गयी. हिजड़े ने भी भूरसिंह के तेवर देखे और अपनी गलती महसूस की, मगर ग़ल्ती क्या, उसकी तो कोशिश ही थी कि लड़ाई न हो. इधर नत्थूखाँ ने वापसी की ठानी और इजाज़त चाही तो फिर भूरसिंह अड़ गया और कहने लगा—"खानजी जाजम तो देते जाओ !"

नत्थूखाँ ने कहा—"ठाकुरों, तुम लड़ाई चाहते हो ?"

"हाँ."

"तो सुनो कान खोलकर"—नत्थूखाँ ने कहा—"भली बात तो यह है कि आज जाजम के सबब से हमारा शकुन .खराब और तुम्हारा शकुन अच्छा है दूसरे यह कि जो मेरे साथी हैं, उनकी जान सरकार ने मेरे हाथ सौंप रखी है. यह देवड़े हैं, अग्नि के बच्चे हैं एक इशारे पर अभी कट मरेंगे. मैं उनका मुफ्त में कैसे मरने दूँ ! तीसरे यह कि हमें सरकार से हुक्म है कि किसी से लड़ो मत, बल्कि माल लेकर निकल आओ, कोई रोके तो मारकर निकल आओ, वरना .खुद मत लड़ो. हम तो खाली मैदान मे आते हैं और मवेशी लेकर चले जाते हैं."

"यह भी कोई मर्दानगी है ?"

नत्थूखाँ ने कहा—"फिर वही बात. सुनलो कान खोल-कर—हमारे पाँच सिपाही मरें और हम तुम्हारे मार डालें

"اور اپنے قول سے پھر جاؤ گے ؟"

"ہرگز نہیں، ہرگز نہیں."

"پھر کیوں جھگڑتے ہو ؟ جاؤ ہم تم سے نہیں جھگڑتے۔ ہم ہزار سے اوپر مویشی لے کر جاتے ہیں۔ جیت ہماری ہے، ہم نہیں لڑتے."

"لڑنا تو پڑیگا."—بھورسنگھ نے سر ہلا کر کہا۔

"ہم ہرگز نہیں لڑیں گے۔ تم اپنا قول توڑ دو—نکالو کھانڈا، کرو لڑائی... مگر یاد رکھنا ٹھاکراں، میرے ساتھ آگ کے بچے دیوڑے ہیں، بھیل باونی (چمار) نہیں ہیں۔ گاجر مولی کی طرح کاٹ کر رکھ دونگا."

"اور میرے ساتھ بھی میڑتئے ہیں—"

کنھیا ہجڑا سنتا ہی تھا اور خوش تھا کہ لڑائی نہیں ہوگی۔ اس نے مذاق میں بات اڑانے کی سوچی۔ لہذا جیسے ہی بھورسنگھ نے اکڑ کر کہا—"میرے ساتھ بھی میڑتئے ہیں" تو ہجڑا بات کاٹ کر، چیخ کر، تالی بجا کر، اپنے سینے پر ہاتھ رکھ کر، مٹک کر بولا—"میڑتئے ہیں ہم۔ دیکھو خاں جی ہمیں—خاں جی، دیکھ لو ہمیں۔ بھول میں مت رہنا."

نتھو خاں نے قہقہہ لگایا، اور بھورسنگھ جھینپ گیا۔ اس نے جل بھن کر ہجڑے کی طرف دیکھا۔ نتھو خاں نے بھی دیکھا کہ بھورسنگھ کو ہجڑے نے کیسا جھینپایا—ایسا کہ بات چیت کی گرمی اور لڑائی کا اندیشہ مٹ گیا—بات رنگ پر آئی تھی کہ ہنسی میں اڑ گئی۔ ہجڑے نے بھی بھورسنگھ کے تیور دیکھے اور اپنی غلطی محسوس کی، مگر غلطی کیا، اس کی تو کوشش ہی تھی کہ لڑائی نہ ہو۔ ادھر نتھو خاں نے واپسی کی ٹھانی اور اجازت چاہی تو پھر بھورسنگھ اڑ گیا اور کہنے لگا—"خاں جی جاجم تو دیتے جاؤ !"

نتھو خاں نے کہا—"ٹھکراں، تم لڑائی چاہتے ہو ؟"

"ہاں."

"تو سنو کان کھول کر"—نتھو خاں نے کہا—"بھلی بات تو یہ ہے کہ آج جاجم کے سبب سے ہمارا شگون خراب اور تمہارا شگون اچھا ہے۔ دوسرے یہ کہ جو میرے ساتھی ہیں، ان کی جان سرکار نے میرے ہاتھ سونپ رکھی ہے۔ یہ دیوڑے ہیں، اگنی کے بچے ہیں۔ ایک اشارے پر ابھی کٹ مریں گے۔ میں انہیں مفت میں کیسے مرنے دوں ؟ تیسرے یہ کہ ہمیں سرکار سے حکم ہے کہ کسی سے لڑو مت، بلکہ مال لے کر نکل آؤ، کوئی روکے تو مار کر نکل آؤ ورنہ خود مت لڑو۔ ہم تو خالی میدان میں آتے ہیں اور مویشی لے کر چلے جاتے ہیں."

"یہ بھی کوئی مردانگی ہے ؟"

نتھو خاں نے کہا—"پھر وہی بات سن لو کان کھول کر—ہمارے پانچ سپاہی مریں اور ہم تمہارے مار ڈالیں

पचास, फिर भी, हमारी तारीफ़ नहीं होगी, बल्कि जवाब तलब होगा कि अपने आदमी क्यों मरे. हम मवेशी लेने आते हैं, जो बल और हठ और मर्दानगी देखनी हो तो आजाओ कभी सिरोही !"

भूरसिंह ने एक आखिरी अपील की और कहा—"खानजी बल और हठ तो यहीं देखेंगे, वर्ना हमारे साथ हिजड़ा है जाओ तुम, हम इससे ताली पिटवायेंगे."

हिजड़ा तो क़रीब ही था. अपना नाम सुनते ही मटककर, ताली बजाकर नत्थूखाँ से बोला—"गोरी, जाजम देदो. एहे गोरी जाजम दे दो."

नत्थूखाँ का यह हाल कि जैसे बारूद मे आग दे दी हो. एक तो वैसे ही कबाब हो रहे थे कि उसने यह हरकत की, उसपर लगाकर कहा. नत्थूखाँ ने भूरसिंह से एक और तजवीज़ की, वह यह कि "अब शाम हो रही है, कल पर रखो और मंगवाओ ऊँट. मगर शर्त यह है कि हम तुम अकेले निबट लेंगे, क्यो सिपाहियो का .खून हो और हिजड़ा इसके एवज़ मे दो."

भूरसिंह ने कहा—"तुम क्या करोगे हिजड़े का ?"

"हम उसकी नाक काटेंगे, यह हमारी जाजम ओढ़कर नाचा."

सिर हिलाकर भूरसिंह ने कहा—"नाक नही मिल सकती. हिजड़ा सरकारी है, मगर हाँ कूल्हे काट सकते हो."

"वह कैसे ?"

"मरने न पाये. जख्मी कर दो, मगर हड्डी न कटे. दरबार ने यही हुक्म दिया है."

"मंजूर है"—नत्थूखां ने कहा "लाओ इसे"

भूरसिंह ने कहा—"अमानत..."

"अमानत से मतलब ?"

भूरसिंह ने मुस्कराकर कहा—"चार आदमी झपटकर ले लो. हम लोग झूठी तलवार चला देंगे."

जब यह तै हो गया तो उधर भूरसिंह ने आदमियो को सिखा दिया. उधर से चार-छै आदमी एक दम से हिजड़े पर टूट पड़े और बर्छियो की डंडियो से मार पीटकर ले गये .खूब झूठी लड़ाई हुई—"मारना-पकड़ना' के सिवा कुछ न हुआ और हिजड़े का देवड़े घसीट ले गये.

तै यह हुआ कि सामने गाँव के करीब पहाड़ के दामन में एक बाग़ है, वहाँ रात गुज़ारेंगे, और सुबह मुक़ाबला होगा.

रात को देवड़ो ने हिजड़े को .खूब थपतियाया और हक़ीक़त बताई कि उस्ताद तुम्हारे कूल्हे काटे जाँयगे.यह .खुद तुम्हारे दरबार का हुक्म है. हिजड़े ने यह हक़ीक़त सुनी तो बेहद डर गया, रोया पीटा, मगर बेकार.

پچاس، پھر بھی، ہماری تعریف نہیں ہوگی، بلکہ جواب طلب ہوگا کہ اپنے آدمی کیوں مرے۔ ہم مویشی لینے آتے ہیں، جو بل اور ہٹ اور مردانگی دیکھنی ہو تو آجاؤ کبھی سروہی !"

بھورسنگھ نے ایک آخری اپیل کی اور کہا"—خان جی، بل اور ہٹ تو یہیں دیکھیں گے، ورنہ ہمارے ساتھ ہجڑا ہے، جاؤ تم، ہم اس سے تالی پٹوائیں گے۔"

ہجڑا تو قریب ہی تھا۔ اپنا نام سنتے ہی مٹک کر، تالی بجا کر نتھو خاں سے بولا—"گوری، جازم دے دو۔ اہے گوری جازم دے دو۔"

نتھو خاں کا یہ حال کہ جیسے بارود میں آگ دے دی ہو۔ ایک تو ویسے ہی کباب ہو رہے تھے کہ اس نے یہ حرکت کی، اس پر لگا کر کہا۔ نتھو خاں نے بھور سنگھ سے ایک اور تجویز کی، وہ یہ کہ "اب شام ہو رہی ہے، کل پر رکھو اور منگواؤ اونٹ، مگر شرط یہ ہے کہ ہم تم اکیلے نبٹ لیں گے، کیوں سپاہیوں کا خون ہو اور ہجڑا اس کے عوض میں دو۔"

بھورسنگھ نے کہا—"تم کیا کرو گے ہجڑے کا ؟"

"ہم اس کی ناک کاٹیں گے، یہ ہماری جازم اوڑھ کر ناچا۔"

سر ہلا کر بھورسنگھ نے کہا—"ناک نہیں مل سکتی، ہجڑا سرکاری ہے، مگر ہاں، کولہے کاٹ سکتے ہو"

"وہ کیسے ؟"

"مرنے نہ پائے، زخمی کر دو، مگر ہڈی نہ کٹے۔ دربار نے یہی حکم دیا ہے۔"

"منظور ہے" نتھو خاں نے کہا "لاؤ اسے۔"

بھورسنگھ نے کہا—"امانت"

"امانت سے مطلب ؟"

بھورسنگھ نے مسکرا کر کہا—"چار آدمی جھپٹ کر لے لو۔ ہم لوگ جھوٹی تلوار چلا دیں گے"

جب یہ طے ہو گیا تو ادھر بھورسنگھ نے آدمیوں کو سکھا دیا۔ ادھر سے چار چھ آدمی ایک دم سے ہجڑے پر ٹوٹ پڑے اور برچھیوں کی ڈنڈیوں سے مار پیٹ کر لے گئے۔ خوب جھوٹی لڑائی ہوئی—'مارنا پکڑنا' کے سوا کچھ نہ ہوا اور ہجڑے کو دیوڑے گھسیٹ لے گئے۔

طے یہ ہوا کہ سامنے گاؤں کے قریب پہاڑ کے دامن میں ایک باغ ہے، وہاں رات گزاریں گے، اور صبح مقابلہ ہوگا۔

رات کو دیوڑوں نے ہجڑے کو خوب تھپتھپایا اور حقیقت بتائی کہ استاد تمہارے کولہے کاٹے جائیں گے۔ یہ خود تمہارے دربار کا حکم ہے۔ ہجڑے نے یہ حقیقت سنی تو بےحد ڈر گیا، رویا پیٹا، مگر بیکار۔

सुबह हुई. नत्थूखाँ को फतह की सोलह आने उम्मीद थी, बल्कि रंज था कि भूरसिंह जैसा बाँका जवान क़त्ल करना पड़ेगा. नत्थूखाँ और भूरसिंह का मुक़ाबला हुआ, नत्थू.खाँ के मवेशी अब महफ़ूज़ थे और इतने आगे पहुँच चुके थे कि किसी तरह उनका पीछा करना मुमकिन न था.

दोनो फ़रीक़ों ने तलवार की मूठ पर हाथ रखकर क़रार किया. ऊँट अभी आये नहीं थे, मगर आ रहे थे और इसी का इन्तज़ार था.

नत्थू.खाँ ने भूरसिंह को समझाया कि "देखो, जवान बेमौत न मरो—मैंने तेरे जैसे कितने जवान काट कर डाल दिये हैं."

भूरसिंह ने कहा—"खानजी काटे होंगे."

"काटे होंगे !" नत्थू.खाँ ने कहा—"तुम अपने आदमी गिनो. धूलजी तुम्हारा कैसा जवान था. फ़ौलादी .ख़ुद पहने था. मगर मैंने खाँडे से ठोड़ी तक चीर दी और वहरणजी सिरोही चमकाता रह गया. मारा जो हाथ जनेऊ का तो खड़े से दो होकर रह गया, आधा इधर आधा उधर गिरा. और वह तुम्हारा हमनाम चंद्रावत...........वह बरछी वाला—चुनरी उढ़ाकर, चूड़ी पहनाकर छोड़ दिया......"

"मुझे भी पहना दो......"

"आओ, अभी लो ...."

"खानजी अभी ऊँट नहीं आए हैं."

"अव्वल तो बरछी से तुम मुझे मारे नहीं लेते हो, और ऊँट नहीं आये तो क्या है, आते हैं."

दोनो ने अपने-अपने घोड़े तलब किये और दोनों बरछियाँ लेकर तैयार होगये.

"खाँनजी चुनरी कहाँ है ?"

नत्थू.खाँ ने कहा—"तुम्हारे सिर पर आजायगी, तुम्हें क्या मतलब ?"और बहुत कुछ भूरसिंह ने देखा, मगर कहीं चुनरी या चूड़ी नज़र न पड़ी और न नत्थू.खाँ ने बताया कि कैसे पहनाऊँगा.

दोनो ने अपने-अपने घोड़े फ़ासले से एक दूसरे की सीध मे सरपट छोड़ दिये, और बरछियाँ और ढालें मौक़े से तैयार—मगर ठीक मौक़े पर जबकि सवार टकराये, नत्थू.खाँ अपना घोड़ा बिजली की तरह चमका कर बाएं को बचा ले गया और दाद देकर दुश्मन का पीछा किया. भूरसिंह ने घोड़ा मोड़ा और दोनो फिर उसी तरह आये मगर बजाय घोड़े मिलाने के बरछियाँ घुमाते फ़ासले ही से निकल गये. भूरसिंह ने अपना बालोतरा चमकाकर ऐसा निकाला और बाज़ की तरह झपटकर इस तेज़ी से नत्थू.खाँ पर गिरा कि इस दफ़ा भूरसिंह की बरछी से बचना नत्थूखाँ का ही काम था. नत्थूखाँ ने सच्चे दिल से तारीफ़ की— "वाह ठाकरां, क्या कहने हैं ! दूसरा जनम लिया है मैंने. वाह-

صبح ہوئی ۔ نتھو خاں کو فتح کی سولہ آنے اُمید تھی، بلکہ رنج تھا کہ بھورسنگھ جیسا بانکا جوان قتل کرنا پڑیگا ۔ نتھو خاں اور بھور سنگھ کا مقابلہ ہوا ۔ نتھو خاں کے مویشی اب محفوظ تھے اور اتنے آگے پہنچ چکے تھے کہ کسی طرح ان کا پیچھا کرنا ممکن نہ تھا ۔

دونوں فریقوں نے تلوار کی موٹھ پر ہاتھ رکھ کر قرار کیا ۔ اُونٹ ابھی آئے نہیں تھے، مگر آرہے تھے اور اِسی کا انتظار تھا ۔

نتھو خاں نے پھر بھورسنگھ کو سمجھایا کہ "دیکھو، جوان بےموت نہ مرو—میں نے تیرے جیسے کتنے جوان کاٹ کر ڈال دیئے ہیں ۔"

بھورسنگھ نے کہا—"خان جی کاٹے ہونگے ۔"

"کاٹے ہونگے !" نتھو خاں نے کہا—"تم اپنے آدمی گنو ۔ دھول جی تمہارا ایسا جوان تھا ۔ فولادی خود پہنے تھا ۔ مگر میں نے کھانڈے سے ٹھوڑی تک چیر دی اور وھرن جی سروہی چمکاتا رہ گیا ۔ مارا جو ہاتھ جنیو کا تو کھڑے سے دو ہو کر رہ گیا، آدھا اِدھر آدھا اُدھر گرا ۔ اور وہ تمہارا ہم نام چندراوت... وہ برچھی والا—چونری اوڑھا کر، چوڑی پہنا کر چھوڑ دیا..."

"مجھے بھی پہنا دو..."

"آؤ، ابھی لو..."

"خاں جی ابھی اونٹ نہیں آئے ہیں ۔"

"اول تو برچھی سے تم مجھے مارے نہیں لیتے ہو، اور اُونٹ نہیں آئے تو کیا ہے، آتے ہیں ۔"

دونوں نے اپنے اپنے گھوڑے طلب کئے اور دونوں برچھیاں لے کر تیار ہو گئے ۔

"خاں جی چونری کہاں ہے ؟"

نتھو خاں نے کہا— "تمہارے سر پر آجائےگی، تمہیں کیا مطلب ؟" اور بہت کچھ بھور سنگھ نے دیکھا، مگر کہیں چونری اور چوڑی نظر نہ پڑی اور نہ نتھو خاں نے بتایا کہ کیسے پہناؤنگا ۔

دونوں نے اپنے اپنے گھوڑے فاصلے سے ایک دوسرے کی سیدھ میں سرپٹ چھوڑ دیئے، اور برچھیاں اور ڈھالیں موقع سے تیار— مگر ٹھیک موقع پر جب کہ سوار ٹکرائے ۔ نتھو خاں اپنا گھوڑا بجلی کی طرح چمکا کر بائیں کو بچا لے گیا اور داد دے کر دشمن کا پیچھا کیا ۔ بھورسنگھ نے گھوڑا موڑا اور دونوں پھر اُسی طرح آئے، مگر بجائے گھوڑے ملانے کے برچھیاں گھماتے فاصلے ہی سے نکل گئے ۔ بھور سنگھ نے اپنا بالوترا چمکا کر ایسا نکالا اور باز کی طرح جھپٹ کر اِس تیزی سے نتھو خاں پر گرا کہ اِس دفع بھورسنگھ کی برچھی سے بچنا نتھو خاں ہی کا کام تھا ۔ نتھوخاں نے سچے دل سے تعریف کی—"واہ ٹھاکراں کیا کہنے ہیں ! دوسرا جنم لیا ہے میں نے ۔ واہ

वाह ! क्या कहना है ! बस तक़दीर से बचा हूँ." और सभी ने तारीफ़ की. क्या दोस्त, क्या दुश्मन, कमाल के सब ही क़द्रदाँ थे. हिजड़ा इस फ़िक्र में था कि नत्थूख़ाँ की .ख़ुशामद करे, इसलिये वह ताली पीट-पीट कर भूरसिंह पर चोटें कर रहा था.

एक दफ़ा पूरी रफ़्तार से दोनों घोड़े जो सरपट आये हैं तो सवारों ने अपने बरछे तोले और झुककर जो घोड़े मिलाये तो एकदम से सब ने देखा कि नत्थूख़ाँ का घोड़ा बाएँ को चमक-कर ऐन मौक़े इस ख़ूबसूरती से उड़ा है कि भूरसिंह अपनी तेज़ी में ख़ाली निकला चला गया, लेकिन ऐन मौक़े पर नत्थूख़ाँ और भूरसिंह के बरछों की सनानें लड़ चुकी थी और लड़ने का खटाका सबने सुना और उसी खटाके के साथ थरथराहट के साथ रंगबिरंगी चुनरी नेज़े की झड़प से निकलकर गेंद की तरह भूरसिंह के मुँह पर पहुँची है कि हवा से उड़कर सर पर ढँक गई—ऐसे कि भूरसिंह जो नेज़ा बुलन्द किये निकला है, तो चुनरी ओढ़े !

एक शोर देवड़ों के लश्कर से उठा—जवानों की गलाफाड़ आवाज़ ! और ढाल तलवार मारकर एक नारा मारा सबने—

"अधपतियाँ[1] सर चुँदरि...चुँदरि !
अधपतियाँ सर चुँदरि...चुँदरि !"

और हिजड़ा भी भूरसिंह के घोड़े की तरफ़ ताली बजाता, मटकता-टरकता, दौड़ता हुआ बोला—"गोरी घूँघट खोलो...गोरी घूँघट खोलो..." और भूरसिंह ने झपकर जो मुँह पर चुनरी को अलग फेंका, तो एक तरफ़ तो देवड़ों का "अधपति" का ताना दूसरी तरफ़ .ख़ुद अपने हिजड़े की ताली ! और सितम पर सितम कि बरछी वाले हाथ की कलाई में एक चूड़ा भी अटका हुआ था, जो इतना ढीला था कि बरछी के डॉड पर से होकर कलाई में आ पड़ा. झुँझलाकर उसने चूड़ा अलग फेंका नत्थूख़ाँ के कमाल का कमाल हो गया और वाक़ई थी कमाल की बात कि चूड़ी को अपनी बरछी से दुश्मन की बरछी में पहना दिया और साथ ही चुनरी को गेंद सी मुँह पर उसी बरछी वाले हाथ से ऐसे मारी कि फैलकर सर पर पड़ गई !

भूरसिंह का राठौरी .ख़ून खौल गया, और सब से ज़्यादा ग़ुस्सा उसे हिजड़े पर आया. उसने घोड़ा बढ़ाकर हिजड़े को नेज़े की डॉड से मारा कि वह मुँह के बल चीख़ के गिरा.

नत्थूख़ाँ भी जले ही बैठे थे. उन्होंने भी अपने आदमियों को हुक्म दिया कि "काट लो कूल्हे !" यह कहना था कि दो-चार आदमी झपट पड़े और तलवार सौंतकर जो मारना शुरू किया है, तो सचमुच हिजड़े को काटकर ही डाल दिया.

१—अधपति = नपुंसक, हिजड़ा

واہ ! کیا کہنا ہے ! بس تقدیر سے بچا ہوں." اور سبھی نے تعریف کی . کیا دوست کیا دشمن" کمال کے سبھی قدرداں تھے ہجڑا اس فکر میں تھا کہ نتھو خاں کی خوشامد کرے اِس لئے وہ تالی پیٹ پیٹ کر بھور سنگھ پر چوٹیں کر رہا تھا .

ایک دفع پوری رفتار سے دونوں گھوڑے جو سرپٹ آئے ہیں تو سواروں نے اپنے برچھے تو لے اور جھک کر جو گھوڑے ملائے ہیں تو ایکدم سے سب نے دیکھا کہ نتھو خاں کا گھوڑا بائیں کو چمک کرعین موقع پر اِس خوبصورتی سے اڑا ہے کہ بھورسنگھ اپنی تیزی میں خالی نکلا چلا گیا' لیکن عین موقع پر نتھوخاں اور بھورسنگھ کے برچھیوں کی سناںیں لڑچکیں تھیں اور لڑنے کا کھٹاکا سب نے سنا . اور اُسی کھٹاکے کے ساتھ ایک تھرتھراہٹ کے ساتھ رنگ برنگی چونری نیزے کی جھرپ سے نکل کر گیند کی طرح بھور سنگھ کے منہ پر پہنچی ہے کہ ہوا سے اُڑ کر سر پر ڈھنک گئی—ایسے کہ بھورسنگھ جو نیزہ بلند کئے نکلا ہے' تو چونری اوڑھے !

ایک شور دیوروں کے لشکر سے اُٹھا . جوانوں کی گلا پھاڑ آواز ! اور ڈھال یہ تلوار مار کر ایک نعرا مارا سب نے—

"ادھ پتیاں[1] سر چونڈری.. چونڈری !"
"ادھ پتیاں سر چونڈری.... چونڈری !"

اور ہجڑا بھی بھور سنگھ کے گھوڑے کی طرف تالی بجاتا' مٹکتا' ٹھرکتا دوڑتا ہوا بولا—"گوری گھونگھٹ کھولو ..گوری گھونگھٹ کھولو.. " اور بھور سنگھ نے جھپٹ کر جو منہ پر سے چونری کو الگ پھینکا' تو ایک طرف تو دیوروں کا "ادھ پتی" کا طعنہ اور دوسری طرف خود اپنے ہجڑے کی تالی ! اور ستم پر ستم کہ برچھی والے ہاتھ کی کلائی میں ایک چوڑا بھی اٹکا ہوا تھا' جو اتنا ڈھیلا تھا کہ برچھی کے ڈانڈ پر سے ہو کر کلائی میں آپڑا . جھنجھلا کر اس نے چوڑا الگ پھینکا . نتھو خاں کے کمال کا قائل ہو گیا . اور واقعی یہی تھی کمال کی بات کہ چوری کو اپنی برچھی سے دشمن کی برچھی میں پہنا دیا اور ساتھ ہی چونری کی گیند سی منہ پر اُسی برچھی والے ہاتھ سے ایسی ماری کہ پھیل کر سر پر پڑ گئی !

بھور سنگھ کا راٹھوری خون کھول گیا' اور سب سے زیادہ غصہ اُسے ہجڑے پر آیا . اُس نے گھوڑا بڑھا کر ہجڑے کو نیزے کی ڈانڈ سے مارا کہ وہ منھ کے بل چیخ کے گرا .

نتھو خاں بھی جلے بیٹھے تھے . انہوں نے بھی اپنے آدمیوں کو حکم دیا کہ "کاٹ لو کولھے !" یہ کہنا تھا کہ دو چار آدمی جھپٹ پڑے اور تلواریں سونت کر جو مارنا شروع کیا ہے' تو سچ مچ ہجڑے کو کاٹ کر ہی ڈال دیا .

۱—ادھ پتی = نپنسک' ہجڑا .

इस झगड़े में हिजड़े की एक उँगली भी कट गई और कुल्हे तो बिल्कुल क़ीमा हो गये भूरसिंह के आदमी उसे उधर उठाकर चले हैं कि इधर भूरसिंह ने तनकर रकाबों पर खड़े होकर कहा—"मुझे अधपति कौन कहता था, जरा फिर तो कहना ?"

नत्थूखाँ ने अपना बरछा मुलाजिम को दे दिया था और दूसरा मँगवाया था, क्योंकि नेजा खास चुनरी के खेल का था. नत्थूखाँ ने तेवर पर बल डालकर कहा—"झगड़ा मुझसे है, लिहाजा मैंने ही कहा समझो "

"जरा फिर तो कहो '—भूरसिंह ने कहा.

नत्थूखाँ ने इशारा किया तो एक जवान ने जरा आगे बढ़कर फड़ककर अपनी ढाल पर जोर से तलवार मारकर कहा—"अधपतियाँ सर चुनरी ने राठौराँ सर चुन्दरि आ मेड़तिया सर चुन्दरि !"

और 'आ मेड़तिया !" उसने भूरसिंह की तरफ इशारा करके कहा भूरसिंह के लिये बरदाश्त नामुमकिन थी आग-बगूला हो गया और अपने घोड़े को बिजली सा छू दिया और लपका तड़पकर उस गुस्ताख जवान पर एक नारे के साथ—"रणबंका मेड़तिया !"

इधर नत्थूखाँ भी तैयार ही था—"बल,हठ बल,हठ बंका देवड़ा ! " का नारा मारकर तलवार हाथ में ले उसने झपटकर भूरसिंह का रास्ता काटा ।भूरसिंह सिपाही ,को छोड़कर सीधा नत्थूखाँ पर झुका. नत्थूखाँ के पास बरछा नहीं था, इसलिये बड़ी सफाई से घोड़े को हटाकर वार खाली दिया भूरसिंह आग हो रहा था उसने भी अपना बरछा फेंक दिया और तलवार खींचकर वह फिर नत्थूखा पर गिरा नत्थूखा ने अपना घोड़ा फिराकर बचाया और जोर से चीखा —"मेरा घोड़ा कट जायेगा " यह कहता हुआ वह घोड़े से कूद पड़ा और दोनो पैंतरा बदलकर सामने आए नत्थूखाँ ने कहा —"मैं अपने इस घोड़े पर तलवार से नहीं लड़ता यह खास नेजे की लड़ाई का घोड़ा है भूरसिंह ने कहा—"खानजी, जिन्दा बचो तो नेजे से जी भरकर लड़ लेना " और यह कहकर एक ऐसा वार किया कि दोस्त दुश्मन सबके मुह से तारीफ़ें निकली मगर खान ने भी खूब बचाया, गो तलवार शाना चाटती चली गई और नत्थूखाँ को मालूम हो गया कि यह छरहरे बदन का राजपूत मामूली सिपाही नहीं है भूरसिंह बिजली के मानिन्द था और उसकी तलवार भी बिजली की तरह चमकती थी

थोड़ी देर तक लड़ाई होती रही. नत्थूखाँ ने कई बार किये मगर भूरसिंह ने या तो ढाल पर रोक लिये या खाली दिये. कोई जवाबी वार नत्थूखाँ की तरफ़ से नहीं हुआ था कि नत्थूखाँ ने अपनी तलवार फेंककर खाँडा सम्हाला और

اِس جھگڑے میں ہجڑے کی ایک اُنگلی بھی کٹ گئی اور کولہے تو بالکل قیمہ ہوگئے ۔ بھور سنگھ کے آدمی اُسے اُدھر اُٹھا کر چلے ہیں کہ اِدھر بھور سنگھ نے تن کر رکابوں پر کھڑے ہو کر کہا—"مجھے ادھپتی کون کہتا تھا' ذرا پھر تو کہنا ؟"

نتھو خاں نے اپنا برچھا ملازم کو دے دیا تھا اور دوسرا منگوایا تھا' کیونکہ نیزہ خاص چونری کے کھیل کا تھا نتھو خاں نے تیور پربل ڈال کر کہا—"جھگڑا مجھسے ہے لہذا میں نے ہی کہا سمجھو..."

"ذرا پھر تو کہو"—بھور سنگھ نے کہا

نتھو خاں نے اشارہ کیا تو ایک جوان نے ذرا آگے بڑھ کر پھڑک کر اپنی ڈھال پر زور سے تلوار مار کر کہا—"ادھ پتیاں سر چونری نے راٹھوراں سر چونری آ میڑتیا سر چونری !"

"اور آ میڑتیا !" اُس نے بھور سنگھ کی طرف اشارہ کر کے کہا ۔ بھور سنگھ کے لیے برداشت نا ممکن تھی ۔ آگ بگولہ ہو گیا اور اپنے گھوڑے کو بجلی سا چھو دیا اور لپکا تڑپ کر اُس گستاخ جوان پر ایک نعرے کے ساتھ—"رن بنکا میڑتیا !"

اِدھر نتھو خاں بھی تیار ہی تھا—'بل ہٹ بل' ہٹ بانکا دیوڑا !' کا نعرہ مار تلوار ہاتھ میں لے اُس نے جھپٹ کر بھور سنگھ کا راستہ کاٹا ۔ بھور سنگھ سپاہی کو چھوڑ کر سیدھا نتھو خاں پر جھکا نتھو خاں کے پاس برچھا نہیں تھا اس لئے بڑی صفائی سے گھوڑے کو ہٹا کر وار خالی دیا بھور سنگھ آگ ہو رہا تھا اُس نے بھی اپنا برچھا پھینک دیا اور تلوار کھینچ کر وہ پھر نتھو خاں پر گرا نتھو خاں نے اپنا گھوڑا پھرا کر بچایا اور زور سے چیخا—"میرا گھوڑا کٹ جائیگا" یہ کہتا ہوا وہ گھوڑے سے کود پڑا اور دونوں پینترا بدل کر سامنے آئے نتھو خاں نے کہا—"میں اپنے اس گھوڑے پر تلوار سے نہیں لڑتا' یہ خاص نیزے کی لڑائی کا گھوڑا ہے ۔" بھور سنگھ نے کہا—"خاں جی' زندہ بچو تو نیزے سے جی بھر کر لڑ لینا ۔' اور یہ کہہ کر ایک ایسا وار کیا کہ دوست دشمن سب کے منھ سے تعریفیں نکلیں ۔ مگر خاں نے بھی خوب بچایا' گو تلوار شانہ چاٹتی چلی گئی اور نتھو خاں کو معلوم ہو گیا کہ یہ چھریرے بدن کا راجپوت معمولی سپاہی نہیں ہے ۔ بھور سنگھ بجلی کے مانند تھا اور اُس کی تلوار بھی بجلی کی طرح چمکتی تھی

تھوڑی دیر تک لڑائی ہوتی رہی ۔ نتھو خاں نے کئی وار کئے مگر بھور سنگھ نے یا تو ڈھال پر روک لئے یا خالی دئیے ۔ کوئی جوابی وار نتھو خاں کی طرف سے نہیں ہوا تھا کہ نتھو خاں نے اپنی تلوار پھینک کر کھانڈا سنبھالا اور

अपने जबरदस्त शानों को जुम्बिश देकर कहा—"भूरजी, वह वही खाँडा है जिससे मैंने धुलजी की ठोड़ी तक चीर दिया था."

भूरसिंह ने क़हक़हा लगाया और कहा—"ख़ानजी, पुरानी बातें छोड़ दो, लाओ जो कुछ पास हो. नत्थूख़ाँ ने अपने ताक़तवर हाथों से अपना खाँडा तोला और आगे पर और सरकना शुरू किया. "बल हठ...बल हठ" का नारा जबान धीरे-धीरे खाँडे का पैंतरा बदलता नत्थूख़ाँ आगे बढ़ा, और भूरसिंह इस ताक में कि खाँडे का वार ख़ाली जाये तो सरोही चमका जाऊँ !

इसी तरह घातें होती रहीं. नत्थूख़ाँ भला ऐसा ओछा वार ही क्यों करता कि खाँडा जमीन पर आए. वह जानता था कि अगर ऐसा हुआ तो मेड़तिया चोट कर जायेगा. वह ऐसा सच्चा वार करना चाहता था कि कम से कम ढाल पर तो पड़े. वह जानता था कि अगर ज़रा सा ओछा वार किया तो भूरसिंह बिजली की तरह कुछ करके निकल जायेगा.

नत्थूख़ाँ ने "बल, हठ....बल,हठ...." का वज़ीफ़ा पढ़ते-पढ़ते एकदम से रुककर, "हठ बंका देवड़ा !" के नारे के साथ मारा जो है दोहत्थड़ खाडे का तो भूरसिंह ने ढाल पर रोका. इस जोर से खाँडा ढाल पर गिरा कि ढाल को टीन की तरह काटकर कड़ा ताड़कर ख़ुद की किनारी काट कर पेशानी पर जरब दे गया—ऐसा कि ज़रब की धमक से भूरसिंह की आखो तले अँधेरा छा गया और ढाल खाँडे में फँसी हुई चली गई.

"बल, हठ बका देवड़ा !" गरजकर नत्थूख़ाँ ने कहा—और दोहत्थड़ तानकर—ढाल उसी तरह खाँडे मे फँसी हुई—ज्यो की त्यो ! नत्थूख़ाँ ने दूसरे वार की तैयारी की है कि भूरसिंह को पीछे हटना पड़ा, मगर उसके साथी ने दूसरी ढाल फ़ौरन दे दी. नत्थूख़ाँ ने खाँडा तोलकर कहा—"ठाकरां, दो किये देता हूँ' छोड़ दे सरोही....ढाल दे सरोही . .."

भूरसिंह के एक कोड़ा-सा लगा और उसने सम्हलकर जो चोट के हाथ शुरू किये हैं तो ख़ानजी को खाँडे से अटकी हुई ढाल छुड़ाना दूभर हो गया और पसपा होना पड़ा.

इसी तरह थोड़ी देर लड़ाई रही कि नत्थूख़ाँ ने लड़ाई से हाथ रोकते हुए कहा—"ठाकरां, अब बस करो."

"क्यो ?"

"घंटे भर से खड़ा हूँ, तुम कुछ भी न बिगाड़ सके. ऐसे ही लड़े जाओगे बरसों ? मुझे तो फ़ुरसत नहीं है."

"वाह ! लड़ कैसे चुके ? मारो या मरो, हारो या जीतो. नहीं लड़ते तो जाजम दे जाओ. और नहीं कैसे लड़ोगे ? क़ौल हार चुके हो. हिजड़े के कूल्हे काट लिये हैं."

اپنے زبردست شانوں کو جنبش دے کر کہا—"بھور جی' یہ وھی کھانڈا ھے جس سے میں نے دھول جی کی ٹھوڑی تک چیر دیا تھا ."

بھور سنگھ نے قہقہہ لگایا اور کہا—"خان جی' پرانی باتیں چھوڑ دو' لاؤ جو کچھ پاس ھو . نتھوخاں نے اپنے طاقتور ھاتھوں سے اپنا کھانڈا تولا اور آگے سرکنا شروع کیا . "بل ھٹ... بل ھٹ" کا نعرہ زبان پر اور دھیرے-دھیرے کھانڈے کا پینترا بدلتا نتھوخاں آگے بڑھا' اور بھورسنگھ اِس تاک میں کہ کھانڈے کا وار خالی جائے تو سروہی چمکا جاؤں !

اِسی طرح گھاتیں ھوتی رھیں . نتھو خاں بھلا ایسا اوچھا وار ھی کیوں کرتا کہ کھانڈا زمین پر آئے . وہ جانتا تھا کہ اگر ایسا ھوا تو میڑتیا چوٹ کر جائیگا . وہ ایسا سچا وار کرنا چاھتا تھا کہ کم سے کم ڈھال پر تو پڑے. وہ جانتا تھا کہ اگر ذرا سا اوچھا وار کیا تو بھورسنگھ بجلی کی طرح کچھ کر کے نکل جائیگا .

نتھو خاں نے "بل' ھٹ.. بل' ھٹ..." کا وظیفہ پڑھتے پڑھتے ایکدم سے رک کر' "ھٹ بنکا دیوڑا !" کے نعرے کے ساتھ مارا جو ھے دوھتڑ کھانڈے کا تو بھورسنگھ نے ڈھال پر روکا . اِس زور سے کھانڈا ڈھال پر گرا کہ ڈھال کو ٹین کی طرح کاٹ کر کڑا توڑ کر خود کی کناری کاٹ کر پیشانی پر ضرب دے گیا— ایسا کہ ضرب کی دھمک سے بھورسنگھ کی آنکھوں تلے اندھیرا چھا گیا اور ڈھال کھانڈے میں پھنسی ھوئی چلی گئی .

"بل' ھٹ بنکا دیوڑا !" گرج کر نتھو خاں نے کہا—اور دوھتڑ تان کر—ڈھال اُسی طرح کھانڈے میں پھنسی ھوئی— جیوں کی تیوں ! نتھو خاں نے دوسرے وار کی تیاری کی ھے کہ بھورسنگھ کو پیچھے ھٹنا پڑا' مگر اِس کے ساتھی نے دوسری ڈھال فوراً دے دی . نتھوخاں نے کھانڈا تول کر کہا—"ٹھاکراں' دو کئے دیتا ھوں' چھوڑ دے سروھی.. ڈال دے سروھی. "

بھورسنگھ کے ایک کوڑا سا لگا اور اُس نے سنبھل کر جو وار کے ھاتھ شروع کئے ھیں تو خان جی کو کھانڈے سے اٹکی ھوئی ڈھال چھڑانا دوبھر ھو گیا اور پسپا ھونا پڑا .

اِسی طرح تھوڑی دیر لڑائی رھی کہ نتھوخاں نے لڑائی سے ھاتھ روکتے ھوئے کہا—"ٹھاکراں' اب بس کرو ."

"کیوں ؟"

گھنٹے بھر سے کھڑا ھوں' تم کچھ بھی نہ بگاڑ سکے . ایسے ھی لڑے جاؤ گے برسوں ؟ مجھے تو فرصت نہیں ھے ."

"واہ ! لڑ کیسے چکے ؟ مارو یا مرو . ھارو یا جیتو . نہیں لڑتے تو جاجم دے جاؤ . اور نہیں کیسے لڑو گے ؟ قول ھار چکے ھو . ھجڑے کے کولھے کاٹ لئے ھو ."

नत्थूखाँ ने कहा—"ठाकरों मैं तो अपनी तरफ से लड़ चुका, अब भी खड़ा हूँ, लो मारो कोई साल भर तो लड़ता नहीं रहूँगा. अब तुम ऊँट लेके जाओ अपने और नहीं तो हम जाते हैं, रोक लो हमें.

"रोक लेंगे और मारेंगे तुमको

नत्थूखाँ ने कहा—"मार लो ' और यह कहकर अपना घोड़ा लिया उधर भूरसिंह घोड़े पर आया और खानजी का रास्ता काटने बढ़ा और अपने आदमियों से कहा कि "लेना" और उधर नत्थूखाँ के आदमियों ने तलवारें खींचीं. क़रीब ही था कि दोनों लश्कर मिल जायें कि फिर नत्थूखाँ ने मना करके कहा—"ठहरो, ठहरो, आगे मैं लड़ता हूँ अरे मेड़तिये! तेरी जवानी पर रहम आता है मैं बरछी का मर्द हूँ" मेरी बरछी से कोई नहीं बचा है, क्यों अपनी जान देता है ?"

भूरसिंह ने कहा—"खानजी, दही के धोके कपास मत खा लेना बरछी से शायद मौत लिखी है. जरा होश की बातें करो. लो आओ '

नत्थूखां ने कहा—"अब तेरी मौत आई है ले आ.. दो दफा तू हमला कर ले, तीसरे में तुझे छेद दूँगा पहले तो चुनरी ओढ़ ले आ '

और दोनो ने अपने घोड़े पैंतरा देकर निकाले इधर भूरसिंह ने आगाह कर दिया कि अबकी चुनरी उढ़ाई तो खैरियत नहीं है उसका पूरा यक़ीन था कि वह हरगिज़ यह तमाशा नहीं करने देगा। इधर-उधर दौड़कर घोड़े आन मिले. भूरसिंह ने निशाना बाँधकर नत्थूखाँ के सीने मे भाला मारा मगर फिर पहले की तरह घोड़ा ऐन मौक़े पर जगह से बढ़कर बाएं को पहुँचा, नेजा की डाड़ खड़खड़ाई कि देवड़ों के नारे से जमीन हिल गई—

'अधपतिया सर चुंदरि चुंदरि।

और यह वाक़या था कि भूरसिंह लौटा और अब नत्थू खाँ ने कहा—'अरे मेड़तिया! देख, अब भी खैरियत है, क्यो मरता है ?"

भूरसिंह ने कहा—'खानजी, बस अबकी जो तुम और चुनरी उढ़ा दो तो मैं तुम्हारा चेला हो जाऊंगा '

"कौल हारता है ? नत्थूखा ने कहा—"पकड़ ले जाऊँगा दाढ़ी मूड़ के अपने साथ '

'उम्र भर तुम्हारी चाकरी करूँगा"—भूरसिंह ने वायदा किया

"अच्छा, आ जाओ! नत्थूखा ने कहा, और दोनों बहादुर फिर अपने घोड़ों को घुमाकर लाए भूरसिंह को बहुत नाप तालकर हमला करना था तीन-चार दफा वह घोड़ा बचाकर निकाल ले गया, फिर एक दफा मौक़े से उसने सीध बाँधकर और नेजा तालकर पूरी रफ़्तार से हमला किया.

نتھو خاں نے کہا—"ٹھاکروں! میں تو اپنی طرف سے لڑ چکا اب بھی کھڑا ہوں لو مارو . کوئی سال بھر تو لڑتا نہیں رہونگا . اب تم اونٹ لے کے جاؤ اپنے اور نہیں تو ہم جاتے ہیں' روک لو ہمیں ."

" روک لینگے اور ماریں گے تم کو '

نتھو خاں نے کہا—"مار لو " اور یہ کہہ کر اپنا گھوڑا لیا . ادھر بھور سنگھ گھوڑے پر آیا اور خاں جی کا راستہ کاٹنے بڑھا اور اپنے آدمیوں سے کہا کہ "لینا" اور ادھر نتھو خاں کے آدمیوں نے تلواریں کھینچیں قریب ہی تھا کہ دونوں لشکر مل جائیں کہ پھر نتھو خاں نے منع کر کے کہا— ٹھہرو' ٹھہرو' آگے میں لڑتا ہوں . ارے میڑتیئے! تیری جوانی پر رحم آتا ہے . میں برچھی کا مرد ہوں' میری برچھی سے کوئی نہیں بچا ہے' کیوں اپنی جان دیتا ہے ؟"

بھور سنگھ نے کہا—"خاں جی' دہی کے دھوکے کپاس مت کھا لینا . برچھی سے شاید موت لکھی ہے ذرا ہوش کی باتیں کرو لو آؤ "

نتھو خاں نے کہا—"اب تیری موت آئی ہے لے آ دو دفعہ تو حملہ کر لے' تیسرے میں تجھے چھید دونگا . پہلے تو چونری اوڑھ لے آ "

اور دونوں نے اپنے گھوڑے پینترا دے کر نکالے ادھر بھور سنگھ نے آگاہ کر دیا کہ اب کی چونری اوڑھائی تو خیریت نہیں ہے . اس کو پورا یقین تھا کہ وہ ہرگز یہ تماشہ نہیں کرنے دیگا ! ادھر ادھر دوڑ کر گھوڑے آن ملے بھور سنگھ نے نشانہ باندھ کر نتھو خاں کے سینے میں بھالا مارا مگر پھر پہلے کی طرح گھوڑا عین موقع پر جگہ سے بڑھ کر بائیں کو پہنچا' نیزے کی ڈانڈ کھڑکھڑائی کہ دیوڑوں کے نعرے سے زمین ہل گئی—

"ادھ پتیاں سر چندری چندری !

اور یہ واقعہ تھا کہ بھور سنگھ لوٹا اور اب نتھو خاں نے کہا— "ارے میڑتیا! دیکھ' اب بھی خیریت ہے' کیوں مرتا ہے ؟"

بھور سنگھ نے کہا—"خاں جی' بس اب کی جو تم اور چونری اڑھا دو تو میں تمہارا چیلا ہو جاونگا "

'قول ہارتا ہے ؟ نتھو خاں نے کہا—"پکڑ لے جاؤں گا داڑھی موڑ کے اپنے ساتھ ."

"عمر بھر تمہاری چاکری کرونگا .' بھور سنگھ نے وعدہ کیا

"اچھا' آجاؤ !' نتھو خاں نے کہا' اور دونوں بہادر پھر اپنے گھوڑوں کو گھما کر لائے . بھور سنگھ کو بہت ناپ تول کر حملہ کرنا تھا . تین چار دفعہ وہ گھوڑا بچا کر نکال لے گیا پھر ایک دفعہ موقع سے اس نے سیدھ باندھ کر اور نیزہ تول کر پوری رفتار سے حملہ کیا .

नत्थूखाँ तैयार ही था, लेकिन जैसे ही घोड़े मिले हैं, नत्थूखाँ के घोड़े का पिछला पैर एक सूराख़ में ऐसा फँसा कि घोड़े ने सिकन्दरी खाई और वहीं का वहीं रह गया। भूरसिंह का बरछा नत्थूखाँ के सीने के बीचोबीच लगा और पुश्त को तोड़कर नेज़े की नोक पार निकल गई. नत्थूखाँ घोड़े से जख़्मी होकर नीचे गिरा—सीने में दुश्मन की बरछी पैवस्त ! एक हुल्लड़ मच गया. करीब था कि फ़रीक़ों में तलवार चल जाये कि समझदार लोगों ने रोक दिया. भूरसिंह घोड़े से कूदकर नत्थूखाँ के पास आया. नत्थूखाँ ने फ़ौरन अपने आदमियो से कहा कि जाजम दे दी जाये.

"हरगिज नहीं, हरगिज नहीं." भूरसिंह ने कहा—"ख़ान जी, तुम नहीं हारे..."

नत्थूखाँ ने खून थूकते हुए कहा—"ठाकरा, तू जीत गया जाजम तेरी है."

"हरगिज नहीं, हरगिज नहीं," भूरसिंह ने कहा—"ख़ानजी, तुम्हारे घोड़े का पैर फँस गया, भला इसमें मेरी क्या जीत ?"

नत्थूखाँ ने देखा कि जल्द मरता हूँ तो कुछ वसीअत की और फिर अपनी क़ब्र के बारे मे परेशानी जाहिर की. भूरसिंह ने छाती ठोककर कहा—"यह गाँव अब दरबार से मुझे मिलेगा और यही तुमको जगह दूँगा."

मरते हुए पठान ने अपने शहज़ोर मगर सरेदस्त कमज़ोर हाथो से पगड़ी उतारकर कहा—"भाई "

भूरसिंह ने सर झुकाकर कहा—'भाई भाई .' और अपनी पगड़ी मरते हुए ख़ान के सर पर रख दी और ख़ान की पगड़ी अपने सर पर रख ली. बहादुर मेड़तिये की आँखो से आँसू बह रहे थे, जब उसने मरते हुए पठान के गले मे बाँह डालकर उसे सीने से लगाया. जब अलहदा किया तो पगड़ी-बदल१ भाई की रूह परवाज़ कर चुकी थी.

(6)

क़रीब के गाँव में आज भी देख लो. देख लो कि पहाड़ी पर छोटी सी गढ़ी है और नीचे मुख़्तसर बस्ती और बस्ती में एक पुख़्ता मज़ार है जिसपर शाम का जागीरदार के ख़र्च से चिराग़ रोशन होता है. अरजुन फ़क़ीर के परदादा को क़ुरानख़्वानी के लिये जागीरदार की तरफ से पचास बीघा ज़मीन माफ़ी मिली थी, जो अब भी उसके क़ब्ज़े में है. मगर क़ुरान पढ़ना अरजुन जानते नहीं, इसलिये अब सिर्फ़ ख़िद्मत चिराग़-बत्ती रह गई है, और हक़ूक़ मे नारियल जो कोई सुहागिन चढ़ाए या दस्तूर के चढ़ावे जो क़िले से आयें.

१—राजपूतों में 'पगड़ी-बदल भाई' सगे भाई की तरह होता है.

نتھو خاں تیار ہی تھا، لیکن جیسے ہی گھوڑے ملے ہیں، نتھو خاں کے گھوڑے کا پچھلا پیر ایک سوراخ میں ایسا پھنسا کہ گھوڑے نے سکندری کھائی اور وہیں کا وہیں رہ گیا ۔ بھور سنگھ کا برچھا نتھو خاں کے سینے کے بیچوں بیچ لگا اور پشت کو توڑ کر نیزے کی نوک پار نکل گئی ۔ نتھو خاں گھوڑے سے زخمی ہو کر نیچے گرا — سینے میں دشمن کی برچھی پیوست تھی ! ایک ہلڑ مچ گیا ۔ قریب تھا کہ فریقوں میں تلوار چل جائے کہ سمجھدار لوگوں نے روک دیا ۔ بھور سنگھ گھوڑے سے کود کر نتھو خاں کے پاس آیا ۔ نتھو خاں نے فوراً اپنے آدمیوں سے کہا کہ جازم دے دی جائے ۔

"ہرگز نہیں، ہرگز نہیں " بھور سنگھ نے کہا — "خان جی، تم نہیں ہارے ۔"

نتھو خاں نے خون تھوکتے ہوئے کہا — "ٹھاکراں، تو جیت گیا، جازم تیری ہے ۔"

"ہرگز نہیں، ہرگز نہیں" پھر بھور سنگھ نے کہا — "خان جی، تمہارے گھوڑے کا پیر پھنس گیا، بھلا اس میں میری کیا جیت ؟"

نتھو خاں نے دیکھا کہ جلد مرتا ہوں، تو کچھ وصیت کی اور پھر اپنی قبر کے بارے میں پریشانی ظاہر کی ۔ بھور سنگھ نے چھاتی ٹھونک کر کہا — "یہ گاؤں اب دربار سے مجھے ملیگا اور یہیں تم کو جگہ دونگا ۔"

مرتے ہوئے پٹھان نے اپنے شہ زور مگر سردست کمزور ہاتھوں سے پگڑی اتار کر کہا — "بھائی..."

بھور سنگھ نے سر جھکا کر کہا — "بھائی .. بھائی " اور اپنی پگڑی مرتے ہوئے خاں کے سر پر رکھ دی اور خان کی پگڑی اپنے سر پر رکھ لی ۔ بہادر میڑتیے کی آنکھوں سے آنسو بہہ رہے تھے ۔ جب اس نے مرتے ہوئے پٹھان کے گلے میں ہاتھ ڈال کر اسے سینے سے لگایا ۔ جب علیحدہ کیا تو پگڑی بدل* بھائی کی روح پرواز کر چکی تھی ۔

(6)

قریب کے گاؤں میں آج بھی دیکھ لو ۔ دیکھ لو کہ پہاڑی پر چھوٹی سی گڑھی ہے اور نیچے مختصر بستی اور بستی میں ایک پختہ مزار ہے جس پر شام کو جاگیردار کے خرچ سے چراغ روشن ہوتا ہے ۔ ارجن فقیر کے پردادا کو قرآن خوانی کے لئے جاگیردار کی طرف سے پچاس بیگھہ زمین معافی ملی تھی، جو اب بھی اس کے قبضے میں ہے ۔ مگر قرآن پڑھنا ارجن جانتے نہیں، اس لئے اب صرف خدمات چراغ بتی رہ گئی ہے، اور حقوق میں ناریل جو کوئی سہاگن چڑھائے یا دستور کے چڑھاوے جو قلعے سے آئیں ۔

* راجپوتوں میں 'پگڑی بدل بھائی' سگے بھائی کی طرح ہوتا ہے ۔

जब जागीरदार इधर से निकलता है तो दोनों हाथ जोड़कर झुककर मजार को ताज़ीम देकर जाता है.

जब कोई परदेसी उधर से गुजरता है और पूछता है कि यह क़ब्र किसकी है तो लोग कहते हैं कि यह "क़ब्र ठाकुर साहब के 'बछेरों' की है."

"अरे, मुसलमान ?"

"हाँ, पहले ऐसा ही होता था ."

جب جاگیردار اُدھر سے نکلتا ھے تو دونوں ھاتھ جوڑ کر جھک کر مزار کو تعظیم دے کر جاتا ھے .

جب کوئی پردیسی اُدھر سے گذرتا ھے اور پوچھتا ھے کہ یہ قبر کس کی ھے تو لوگ کہتے ھیں کہ یہ "قبر ٹھاکر صاحب کے 'بچھیروں' کی ھے ."

"ارے مسلمان ؟"

"ھاں' پہلے ایسا ھی ھوتا تھا !"

सन् 1857 की जंगे आज़ादी के बाद की दिल्ली

मिरज़ा ग़ालिब

[मिरज़ा ग़ालिब ने सन् 1857 की जंगे आज़ादी के बाद की दिल्ली की कैफ़ियत का जो आँखों देखा हाल अपने शागिरदों और दोस्तों को लिखा है उसकी एक ख़ासी झलक उनके नीचे के ख़ुतूत से साफ़ ज़ाहिर होती है.]

5 दिसम्बर सन् 1857 को मिरज़ा ग़ालिब का ख़त उनके शागिर्द मुन्शी हरी गोपाल के नाम—उसके कुछ टुकड़े यह हैं:—

"यहाँ बाहर से भीतर कोई बिना टिकट के आने- जाने नहीं पाता. तुम हरगिज़ यहाँ आने का इरादा न करना. अमीर ग़रीब सब निकल गये. जो रह गये थे वे निकाले गये. जागीरदार, पैंशनदार वग़ैरा कोई भी नहीं है. मुफ़स्सिल हाल लिखते हुये डरता हूँ. क़िले के नौकरो पर कड़ी नज़र है. उन लोगों की पूछ गछ ज़्यादा है और उनकी धर पकड़ हो रही है. फ़ौजी इन्तज़ाम 11 मई से आज यानी 5 दिसम्बर सन् 1857 तक बराबर जारी है.

माविज़े के बारे मे 31 दिसम्बर सन् 1857 का ख़त—

"इतना सुना गया है कि एक दफ़्तर लाहौर में रियाया के नुक़सान का माविज़ा देने के लिये मुक़र्रर हुआ है और हुक्म यह है कि जनता का जो धन कालो ने लूटा है, बेशक उसके माविज़े में दसवाँ हिस्सा हकूमत की तरफ़ से दिया जायगा. यानी हज़ार रुपया माँगनेवाले को सौ रुपया मिलेंगे और जो लूट गोरों के वक़्त की है उसके माविज़े में कुछ न होगा !"

سن 1857 کی جنگ آزادی کے بعد کی دلی

مرزا غالب

[مرزا غالب نے سن 1857 کی جنگ آزادی کے بعد کی دلی کی کیفیت کا جو آنکھوں دیکھا حال اپنے شاگردوں اور دوستوں کو لکھا ھے اُس کی ایک خاصی جھلک اُن کے نیچے کے خطوط سے صاف ظاھر ھوتی ھے .]

5 دسمبر سن 1857 کو مرزا غالب کا خط اُن کے شاگرد منشی ھری گوپال کے نام—اِس کے کچھ ٹکڑے یہ ھیں:—

یہاں باھر سے بھیتر کوئی بنا ٹکٹ کے آنے جانے نہیں پاتا . تم ھرگز یہاں آنے کا اِرادہ نہ کرنا . امیر غریب سب نکل گئے . جو رہ گئے تھے وے نکالے گئے . جاگیردار' پینشن دار وغیرہ کوئی بھی نہیں ھے . مفصل حال لکھتے ھوئے ڈرتا ھوں . قلعہ کے نوکروں پر کڑی نظر ھے . اُن لوگوں کی پوچھ گچھ زیادہ ھے اور اُن کی دھر پکڑ ھو رھی ھے . فوجی اِنتظام 11 مئی سے آج یعنی 5 دسمبر سن 1857 تک برابر جاری ھے .

معاوضہ کے بارے میں 31 دسمبر سن 1857 کا خط—

"اِتنا سنایا گیا ھے کہ ایک دفتر لاھور میں رعایا کے نقصان کا معاوضہ دینے کے لئے مقرر ھوا ھے اور حکم یہ ھے کہ جنتا کا جو دھن کالوں نے لوٹا ھے' بیشک اُس کے معاوضہ میں دسواں حصہ حکومت کی طرف سے دیا جائیگا . یعنی ھزار روپیہ مانگنے والے کو سو روپیہ ملینگے اور جو لوٹ گوروں کے وقت کی ھے اُس کے معاوضہ میں کچھ نہ ھوگا !"

जनता के मकानात पर सरकारी क़ब्ज़े के बारे में मिरज़ा का एक ख़त—

"एक मज़ेदार बात परसों की सुनो. हाफ़िज़ मम्मू बेगुनाह साबित हो चुके, छूट चुके. हाकिम के सामने हाज़िर हुआ करते हैं, अपनी जायदाद माँगते हैं. उनके हक़ का सबूत गुज़र चुका है. सिर्फ़ हुक्म की देरी थी. परसों वे हाज़िर हुये थे. मिसिल पेश हुई. हाकिम ने पूछा—"हाफ़िज़ मोहम्मद बख़्श कौन ?" अर्ज़ किया कि—"मैं." फिर पूछा कि— "हाफ़िज़ मम्मू कौन ?' अर्ज़ किया कि 'मैं असल नाम मेरा मोहम्मद बख़्श है. मम्मू-मम्मू मशहूर हूँ." कहा—"यह कुछ बात नहीं हाफ़िज़ मोहम्मद बख़्श भी तुम और हाफ़िज़ मम्मू भी तुम, सारा जहान भी तुम, जो कुछ दुनिया में है वह भी तुम. हम मकान किसको दें ?" मिसिल दफ़्तर में दाख़िल हुई, मियाँ मम्मू अपने घर चले आये.

मिरज़ा ग़ालिब का 9 नवम्बर स 1859 का ख़त ज़ुलफ़िक़ार उद्दीन यानी हुसेन मिरज़ा को चुंगी के बारे में—

"पौन टूटी (चुंगी) के बारे मे कौंसि हुई. परसो 7 नवम्बर से जारी होगई. सालिगराम ख़ज़ानची, छन्ना मल, महेश दास तीन आदमियों को यह काम ठीके पर मिला है अनाज और उपले को छोड़कर कोई और चीज़ ऐसी नहीं है जिस पर महसूल (चुंगी) न हो."

मिरज़ा ग़ालिब का 2 फ़रवरी 18 9 का ख़त उनके एक शागिर्द के नाम दिल्ली में आने-जाने की रुकावट पर—

'मेरठ से आकर देखा कि यहाँ बड़ी सख़्ती है और यह हालत है कि गोरों की देख-रेख पर इतमीनान नहीं है. लाहौरी दरवाज़े का थानेदार मूढ़ा बिछाकर सड़क पर बैठता है. जो बाहर से गोरे की आँख बचाकर आता है उसका यह पकड़ कर हवालात मे भेज देता है हाकिम के यहाँ से पाँच बेत लगते हैं या दो रुपया जुर्माना लिया जाता है या आठ दिन क़ैद रहना पड़ता है"

इसी बारे में 27 मार्च सन् 1859 का मिरज़ा साहब का एक और ख़त———

"भाई! यहाँ (दिल्ली) का नक़्शा ही कुछ और है. समझ में किसी के नहीं आता कि क्या तौर है. अंगरेज़ी महीने के शुरू में रोक-टोक की सख़्ती होती थी. आठवीं दसवीं तक वह कड़ाई कम होती थी. इस महीने में बराबर वही सूरत रही है. आज 27 मार्च है. पाँच-चार दिन महीने में बाक़ी हैं. आँच वैसी ही तेज़ है. ख़ुदा अपने बन्दों पर रहम करे."

جنتا کے مکانات پر سرکاری قبضہ کے بارے میں مرزا کا ایک خط—

"ایک مزیدار بات پرسوں کی سنو. حافظ ممو بےگناہ ثابت ہو چکے، چھوٹ چکے. حاکم کے سامنے حاضر ہوا کرتے ہیں، اپنی جائداد مانگتے ہیں. اُن کے حق کا ثبوت گذر چکا ہے. صرف حکم کی دیری تھی. پرسوں وہ حاضر ہوئے تھے. مثل پیش ہوئی. حاکم نے پوچھا—" حافظ محمد بخش کون؟" عرض کیا کہ—"میں." پھر پوچھا کہ—' حافظ ممو کون؟" عرض کیا کہ—"میں. اصل نام میرا محمد بخش ہے ممو، ممو مشہور ہوں." کہا—"یہ کچھ بات نہیں حافظ محمد بخش بھی تم اور حافظ ممو بھی تم، سارا جہان بھی تم، جو کچھ دنیا میں ہے وہ بھی تم. ہم مکان کس کو دیں؟" مثل دفتر میں داخل ہوئی، میاں ممو اپنے گھر چلے آئے."

مرزا غالب کا 9 نومبر سن 1859 کا خط نواب ذوالفقار الدین یعنی حسین مرزا کو چنگی کے بارے میں—

'پون ٹوٹی (چنگی) کے بارے میں کونسل ہوئی پرسوں 7 نومبر سے جاری ہو گئی. سالگ رام خزانچی، چھنا مل مہیش داس تین آدمیوں کو یہ کام ٹھیکے پر ملا ہے. اناج اور اُپلے کو چھوڑ کر کوئی اور چیز ایسی نہیں ہے جس پر محصول (چنگی) نہ ہو."

مرزا غالب کا 2 فروری سن 1859 کا خط اُن کے ایک شاگرد کے نام دلی میں آنے جانے کی رکاوٹ پر—

"میرٹھ سے آکر دیکھا کہ یہاں بڑی سختی ہے اور یہ حالت ہے کہ گوروں کی دیکھ ریکھ پر اطمینان نہیں ہے. لاہوری دروازہ کا تھانیدار موڑھا بچھا کر سڑک پر بیٹھتا ہے. جو باہر سے گورے کی آنکھ بچا کر آتا ہے اُس کو یہ پکڑ کر حوالات میں بھیج دیتا ہے. حاکم کے یہاں سے پانچ بینت لگتے ہیں یا دو روپیہ جرمانہ لیا جاتا ہے یا آٹھ دن قید رہنا ہے "

اسی بارے میں 27 مارچ سن 1859 کا مرزا صاحب کا ایک اور خط—

"بھائی! یہاں (دلی) کا نقشہ ہی کچھ اور ہے سمجھ میں کسی کے نہیں آتا کہ کیا طور ہے. انگریزی مہینے کے شروع میں روک ٹوک کی سختی ہوتی تھی آٹھویں دسویں تک وہ کڑائی کم ہوتی تھی اس مہینے میں برابر وہی صورت رہی ہے. آج 27 مارچ ہے. پانچ چار دن مہینے میں باقی ہیں. آنچ ویسی ہی تیز ہے خدا اپنے بندوں پر رحم کرے."

22 दिसम्बर सन् 1858 का मिरज़ा साहब का .ख़त अपने एक शागिर्द के नाम सड़कें निकालने और मकानात गिराने के बारे में—

"लो सुनो! अब तुम्हारे दिल्ली की बातें. चौक में बेगम के दरवाज़े के सामने हौज़ के पास जो कुआँ था उसको पत्थर, ईंट व मिट्टी डालकर बन्द कर दिया. बल्लीमारों के दरवाज़े के पास की कई दुकानें ढा कर रास्ता चौड़ा कर लिया"

इसी बारे में मिरज़ा साहब का 8 नम्बर सन् 1859 का एक और .ख़त उनके शागिर्द मीर मेहदी 'मजरूह' के नाम—

"जामा मस्जिद के गिर्द पचीस-पचीस .फ़ुट गोल मैदान निकलेगा. दुकाने व हवेलियाँ ढाई जावेंगी. दारुलबक़ा मिट्टी में मिल जावेगी. रहे नाम अल्लाह का! ख़ानचन्द का कूचा शाहबुला के बड़ से ढहेगा. दोनों तरफ़ से फावड़ा चल रहा है. बाक़ी ख़ैरोआफ़ियत है."

2 दिसम्बर सन् 1859 को एक दूसरा .ख़त मीर मेहदी के नाम—

"तुम आते हो, चले आओ. जाँनिसार .ख़ाँ के छत्ते की सड़क, ख़ानचन्द के कूचे की सड़क देख जाओ. बुलाक़ी बेगम के कूचे का ढहना, जामा मस्जिद के गिर्द सत्तर-सत्तर गज़ गोल मैदान निकलना सुन जाओ."

इसी बारे में मिरज़ा साहब का सन् 1860 का एक और .ख़त—

"बड़ी भारी आफ़त यह है कि क़ारी का कुआँ बन्द हो गया. लाल डिग्गी के कुएँ बिलकुल बन्द हो गये ख़ैर! खारी ही पानी पीते, गरम पानी निकलता है. परसों मैं सवार होकर कुओं का हाल जानने गया था. जामा मस्जिद होता हुआ राजघाट दरवाज़े को चला. जामा मस्जिद से राजघाट दरवाज़े तक बेशक एक सुनसान जङ्गल हो गया है ईंटों के जो ढेर पड़े हैं, अगर वह उठ जाँय तो वह भयानक जगह हो जाय. याद करो. मिरज़ा गौहर के बाग़ीचे के उस तरफ़ कई बाँस नीचा था, अब वह बाग़ीचा आँगन के मानिन्द हो गया यहाँ तक कि राजघाट का दरवाज़ा बन्द हो गया चहार-दीवारी के कंगूरे खुले हुए हैं बाक़ी सब अट गया काश्मीरी दरवाज़े का हाल तुम देख गये हो. अब लोहे की सड़क (रलवे लाइन) के लिये कलकत्ता दरवाज़ा से काबुली दरवाज़े तक मैदान हो गया. पंजाबी कटरा, धोबीवाड़ा, रामजीगंज, सआदत ख़ाँ का कटरा, जरनैल की बीबी की हवेली, रामजी दास गोदाम वाले के घर, साहबराम का बाग़ व हवेली, इनमें से किसी का पता नहीं मिलता. पूरा शहर जंगल हो गया.

22 دسمبر سن 1858 کا مرزا صاحب کا خط اپنے ایک شاگرد کے نام سڑکیں نکالنے اور مکانات گرانے کے بارے میں—

"لو سنو! اب تمہارے دلی کی باتیں. چوک میں بیگم کے دروازے کے سامنے حوض کے پاس جو کنواں تھا اُس کو پتھر، اینٹ و مٹی ڈالکر بند کر دیا. بلیماروں کے دروازہ کے پاس کی کئی دوکانیں ڈھا کر راستہ چوڑا کر لیا."

اسی بارے میں مرزا صاحب کا 8 دسمبر سن 1859 کا ایک اور خط ان کے شاگرد میرمہدی 'مجروح' کے نام—

"جامع مسجد کے گرد پچیس پچیس فٹ گول میدان نکلیگا. دوکانیں و حویلیاں ڈھائی جاوینگی. دارالبقا مٹی میں مل جائیگی رہے نام اللہ کا. کھانچند کا کوچہ شاہبولہ کے بڑ سے ڈھیگا. دونوں طرف سے پھاوڑا چل رہا ہے. باقی خیروعافیت ہے."

2 دسمبر سن 1859 کو ایک دوسرا خط میرمہدی کے نام—

"تم آتے ہو، چلے آؤ. جاںنثار خاں کے چھتے کی سڑک، کھانچند کے کوچہ کی سڑک دیکھ جاؤ. بلاقی بیگم کے کوچہ کا ڈھنا، جامع مسجد کے گرد ستر ستر گز گول میدان نکلنا سن جاو."

اسی بارے میں مرزا صاحب کا سن 1860 کا ایک اور خط—

"بڑی بھاری آفت یہ ہے کہ قاری کا کنواں بند ہو گیا. لال ڈگی کے کنوئیں بالکل بند ہو گئے. خیر! کھاری ہی پانی پیتے، گرم پانی نکلتا ہے. پرسوں میں سوار ہو کر کنوؤں کا حال جاننے گیا تھا. جامع مسجد ہوتا ہوا راجگھاٹ دروازے کو چلا. مسجد جامع سے راج گھاٹ دروازہ تک بےشک ایک سنسان جنگل ہو گیا ہے. اینٹوں کے جو ڈھیر پڑے ہیں، اگر وہ اُٹھ جائیں تو وہ بھیانک جگہ ہو جائے. یاد کرو. مرزا گوہر کے باغیچہ کے اُس طرف کئی بانس نیچا تھا، اب وہ باغیچہ آنگن کے مانند ہو گیا. یہاں تک کہ راجگھاٹ کا دروازہ بند ہو گیا چہار دیواری کے کنگورے کھلے ہوئے ہیں. باقی سب اَٹ گیا کاشمیری دروازہ کا حال تم دیکھ گئے ہو. اب لوہے کی سڑک (ریلوے لائن) کے لئے کلکتہ دروازہ سے کابلی دروازہ تک میدان ہو گیا. پنجابی کٹرہ، دھوبی واڑہ، رامجی گنج، سعادت خاں کا کٹرہ، جرنیل کی بی بی کی حویلی، رامجی داس گودام والے کے گھر، صاحب رام کا باغ و حویلی ان میں سے کسی کا پتہ نہیں ملتا. پورا شہر جنگل ہو گیا.

...जो कुएँ जावें और पानी की क़िल्लत हो गई तो यह जंगल करबला का मैदान हो जावेगा."

मारहरा (एटा) के बाशिन्दे चौधरी अब्दुलग़फ़ूर के नाम मिरज़ा साहब का सन् 1860 का ख़त मँहगी के बारे में—

"यहाँ शहर ढह रहा है. बड़े-बड़े नामी बाज़ार, ख़ास बाज़ार और उर्दू बाज़ार और ख़ानम का बाज़ार, जोकि इनमें से हर एक एक शहर था, अब पता ही नहीं कि कहाँ थे. घर व दूकान के मालिक यह नहीं बता सकते कि हमारा घर कहाँ था और हमारी दूकान कहाँ थी. बरसात में भी पानी नहीं बरसता. अब बसूले व फावड़े की बाढ़ से घर गिर गये. अनाज मँहगा है; मौत सस्ती है. फल के भाव अनाज बिकता है. उड़द की दाल आठ सेर, बाजरा 12 सेर, चना 16 सेर, घी डेढ़ सेर, तरकारी मँहगी, इन सब बातों से बढ़कर बात यह है कि कुंआर का महीना, जिसे जाड़े का दरवाज़ा कहते हैं, में पानी गरम, धूप तेज़ और लू चलती है. जेठ असाढ़ की सी गरमी पड़ती है."

9 जनवरी सन् 1861 को मीर मेहदी 'मजरूह' साहब को इसी बारे में मिरज़ा साहब का एक दूसरा ख़त—

"चार दिन से पुरवाई हवा चलती है. बादल आते हैं लेकिन सिर्फ़ छिड़काव होता है. पानी नहीं बरसता. गेहूँ, चना, बाजरा तीनों अनाज एक भाव है—नौ सेर, साढ़े नौ सेर."

29 जुलाई सन 1862 को मीर मेहदी साहब को मिरज़ा साहब का एक और ख़त—

"एक जंग कालों की, एक मुसीबत गोरों की, एक दुश्वारी घरों के गिराए जाने की, एक आफ़त हैजे की, एक क़यामत काल की, अब यह बरसात सब मुसीबतों से भरी है. आज इक्कीसवाँ दिन है. सूरज इस तरह देखने में आता है जैसे बिजली चमक जाती है. रात को कभी कभी अगर तारे दिखाई देते हैं तो लोग उनको जुगनू समझ लेते हैं. अँधेरी रातों मे चोरों की बन आयी है. कोई दिन नहीं कि दो-चार घरों की चोरी का हाल न सुना जाये. मुबालग़ा न समझना, हज़ारों घर गिर गये. सैंकड़ों आदमी इधर-उधर मर गये, गली-गली नदी बह रही है. कहीं वह अन्न-काल था कि पानी नहीं बरसा, अनाज नहीं पैदा हुआ. यह पन-काल है. पानी ऐसा बरसा कि बोये हुए दाने बह गये. जिन्होंने अभी नहीं बोया था वह बोने से रह गये. सुन लिया दिल्ली का हाल ? इसके सिवा कोई नई बात नहीं है."[2]

اب جو کوئیں جاتے رہے اور پانی کی قلت ہو گئی تو یہ جنگل کربلا کا میدان ہو جائیگا۔''

مارہرا (ایٹہ) کے باشندے چودھری عبدالغفور کے نام مرزا صاحب کا سن 1860 کا خط مہنگی کے بارے میں—

''یہاں شہر ڈھہ رہا ہے ۔ بڑے بڑے نامی بازار، خاص بازار اور اُردو بازار اور خانم کا بازار جو کہ اِن میں سے ہر ایک ایک شہر تھا، اب پتہ بھی نہیں کہ کہاں تھے۔ گھر و دوکان کے مالک یہ نہیں بتا سکتے کہ ہمارا گھر کہاں تھا اور ہماری دوکان کہاں تھی ۔ برسات میں بھی پانی نہیں برستا۔ اب بسولہ و پھاوڑہ کے باڑھ سے گھر گر گئے ۔ اناج مہنگا ہے، موت سستی ہے ۔ پھل کے بھاؤ اناج بکتا ہے ۔ اُڑد کی دال آٹھ سیر، باجرہ 12 سیر، چنا 16 سیر، گھی ڈیڑھ سیر، ترکاری مہنگی ۔ اِن سب باتوں سے بڑھ کر بات یہ ہے کہ کوآر کا مہینہ، جسے جاڑے کا دروازہ کہتے ہیں، میں پانی گرم، دھوپ تیز اور لو چلتی ہے ۔ جیٹھ اساڑھ کی سی گرمی پڑتی ہے ۔''

9 جنوری سن 1861 کو میر مہدی 'مجروح' صاحب کو اِسی بارے میں مرزا صاحب کا ایک دوسرا خط—

''چار دن سے پروائی ہوا چلتی ہے ۔ بادل آتے ہیں لیکن صرف چھڑکاؤ ہوتا ہے ۔ پانی نہیں برستا، گیہوں، چنا باجرہ تینوں اناج ایک بھاؤ ہیں—نو سیر، ساڑھے نو سیر۔''

29 جولائی سن 1862 کو میر مہدی صاحب کو مرزا صاحب کا ایک اور خط—

''ایک جنگ کالوں کی، ایک مصیبت گوروں کی، ایک دشواری گھروں کے گرائے جانے کی، ایک آفت ہیضہ کی بیماری کی، ایک قیامت کال کی۔ اب یہ برسات سب مصیبتوں سے بھری ہے ۔ آج اکیسواں دن ہے ۔ سورج اِس طرح دیکھنے میں آتا ہے جیسے بجلی چمک جاتی ہے ۔ رات کو کبھی کبھی اگر تارے دکھائی دیتے ہیں تو لوگ اُن کو جگنو سمجھ لیتے ہیں ۔ اندھیری راتوں میں چوروں کی بن آئی ہے۔ کوئی دن نہیں کہ دو چار گھروں کی چوری کا حال نہ سنا جائے۔ مبالغہ نہ سمجھنا، ہزاروں گھر گر گئے ۔ سیکڑوں آدمی اِدھر اُدھر مر گئے ۔ گلی گلی ندی بہہ رہی ہے ۔ کہیں وہ اَن-کال تھا کہ پانی نہیں برسا، اناج نہیں پیدا ہوا ۔ یہ پنکال ہے ۔ پانی ایسا برسا کہ بوئے ہوئے دانے بہہ گئے ۔ جنھوں نے ابھی نہیں بویا تھا وہ بونے سے رہ گئے ۔ سن لیا دلی کا حال ؟ اِس کے سوا کوئی نئی بات نہیں ہے ۔''

मिरजा साहब का 5 दिसम्बर सन् 1857 का खत—

अपने घर में बैठा हूँ. दरवाजे से बाहर निकल नहीं सकता. सवार होना और कहीं जाना तो बहुत बड़ी बात है. रहा यह कि कोई मेरे पास आवे ! शहर में है कौन, जो आवे ? घर के घर बेचिराग पड़े हैं."

5 दिसम्बर सन् 1858 का मिरज़ा साहब का .खत मौलवी अजीज़ुद्दीन के नाम आबादी के बारे में—

"साहब ! कैसी बच्चों की सी बातें करते हो, दिल्ली को वैसी ही बसी हुई जानते हो, जैसे पहले थी क़ासिम जान की गली, मीर .खैराती के फ़ाटक से फ़तहउल्ला बेग .खां के फाटक तक बेचिराग है हा, अगर आबादी है तो यह है कि ग़ुलाम हुसेन .खा की हवेली अस्पताल है और जियाउद्दीन खां के कमरे में डाक्टर साहब रहते हैं. जियाउद्दीन खा और उनके भाई अपने बाल बच्चे समेत लोहारू में जा बसे. लाल कुएँ के मोहल्ले में धूल उड़ती है, आदमी का नाम नहीं. तुम्हारे मकान में जो छोटी बेगम फ़िरंगी की बीबी रहती थी उसके पास इस इश्तहार को भेजा था. मालूम हुआ, वह लाहौर गई है. खेमी की दूकान मे कुत्ते लोटते हैं. मुफ्ती सदरुद्दीन साहब लाहौर गये हैं.

5 दिसम्बर सन 1857 का मिरजा साहब का लिखा हुआ एक और खत—

"ख़ुदा की क़सम ! ढूँढ़ने पर मुसलमान इस शहर में नहीं मिलता. क्या अमीर, क्या ग़रीब, क्या कारीगर अगर कुछ हैं तो बाहर के. हिन्दू जरूर कुछ-कुछ बस गये हैं...अभी देखा चाहिये, मुसलमानो की आबादी का हुक्म होता है या नही."

5 मार्च सन् 1858 का मिरजा साहब का .खत—

तुम्हारे इस ख़त का जवाब न लिख सका. जावाब तो लिख सकता था लेकिन कल्यान का पैर सूज गया था. वह चल नहीं सकता था. मुसलमान आदमी शहर में सड़क पर बिना टिकट नहीं चल सकता. इसी मजबूरी से तुमको ख़त न भेज सका. कई दिनों के बाद जब कहार अच्छा हुआ तब मैं तुमको आगरे में समझकर सिकन्दराबाद ख़त न भेज सका."

28 नवम्बर सन् 1859 का मिरजा साहब का ख़त घरेलू जिन्दगी के बारे मे—

"मेरा सगा भाई पागलपन की हालत में मरा. उसकी बेटी, उसके चार बच्चे, उनकी वाल्दा यानी मेरी भौजाई जैपुर में पड़े हुए हैं. इन तीन सालों मे एक भी पैसा उनको नहीं भेजा. भतीजी क्या कहती होगी कि मेरा भी कोई चचा है ! यहाँ अमीरों और बड़े-बड़े लोगों की औरतें व औलादें भीख माँगती फिरें और मैं देखूँ ! इस मुसीबत को देखने के लिए पत्थर का दिल चाहिये."

مرزا صاحب کا خط دسمبر سن 1857 کا خط—

اپنے گھر میں بیٹھا ہوں ۔ دروازے سے باہر نہیں نکل سکتا ۔ سوار ہونا اور کہیں جانا تو بہت بڑی بات ہے ۔ رہا یہ کہ کوئی میرے پاس آوے ! شہر میں ہے کون، جو آوے ؟ گھر کے گھر بے چراغ پڑے ہیں ۔"

5 دسمبر سن 1858 کا مرزا صاحب کا خط مولوی عزیزالدین کے نام آبادی کے بارے میں—

"صاحب ! کیسی بچوں کی سی باتیں کرتے ہو ۔ دلی کو ویسی ہی بسی ہوئی جانتے ہو، جیسی پہلے تھی ۔ قاسم جان کی گلی، میر خیراتی کے پھاٹک سے فتح اللہ بیگ خاں کے پھاٹک تک بے چراغ ہے ۔ ہاں، اگر آبادی ہے تو یہ ہے کہ غلام حسین خاں کی حویلی اسپتال ہے اور ضیاءالدین خاں کے کمرے میں ڈاکٹر صاحب رہتے ہیں ۔ ضیاءالدین خاں اور اُنکے بھائی اپنے بال بچے سمیت لوہارو میں جا بسے ۔ لال کنوئیں کے محلے میں دھول اُڑتی ہے، آدمی کا نام نہیں، تمہارے مکان میں جو چھوٹی بیگم فرنگی کی بی بی رہتی تھی اُسکے پاس اِس اشتہار کو بھیجا تھا ۔ معلوم ہوا، وہ لاہور گئی ہے ۔ کھیمی کی دوکان میں کتے لوٹتے ہیں ۔ مفتی صدرالدین صاحب لاہور گئے ہیں ۔"

5 دسمبر سن 1857 کا مرزا صاحب کا لکھا ہوا ایک اور خط—

خدا کی قسم ! ڈھونڈھنے پر مسلمان اِس شہر میں نہیں ملتا ۔ کیا امیر، کیا غریب، کیا کاریگر، اگر کچھ ہیں تو باہر کے ہیں ۔ ہندو ضرور کچھ کچھ بس گئے ہیں... ابھی دیکھنا چاہئے مسلمانوں کی آبادی کا حکم ہوتا ہے یا نہیں ۔

5 مارچ سن 1857 کا مرزا صاحب کا خط—

"تمہارے اس خط کا جواب نہ لکھ سکا جواب تو لکھ سکتا تھا، لیکن کلیان کا پیر سوج گیا تھا ۔ وہ چل نہیں سکتا تھا ۔ مسلمان آدمی شہر میں سڑک پر بنا ٹکٹ نہیں چل سکتا ۔ اِسی مجبوری سے تمکو خط نہ بھیج سکا ۔ کئی دن کے بعد جب کہار اچھا ہوا تب میں تمکو آگرہ میں سمجھکر سکندرآباد خط نہ بھیج سکا ۔"

8 نومبر سن 1859 کا مرزا صاحب کا خط گھریلو زندگی کے بارے میں—

"میرا سگا بھائی پاگلپن کی حالت میں مرا ۔ اُسکی بیٹی، اُسکے چار بچے، اُسکی والدہ یعنی میری بھوجائی جے پور میں پڑے ہوئے ہیں ۔ اِن تین سالوں میں ایک بھی پیسہ اُنکو نہیں بھیجا ۔ بھتیجی کیا کہتی ہوگی کہ میرا بھی کوئی چچا ہے ! یہاں امیروں اور بڑے بڑے لوگوں کی عورتیں و اولادیں بھیک مانگتی پھریں اور میں دیکھوں ! اِس مصیبت دیکھنے کے لئے، پتھر کا دل چاہئے ۔"

लोहारू के नवाब, अपने भांजे, अलाउद्दीन खाँ बहादुर मिरज़ा साहब का 16 फ़रवरी सन् 1862 का ख़त—

"ऐ मेरी जान ! यह वह दिल्ली नहीं है जिसमें तुम पैदा हो. यह वह दिल्ली नहीं है जिसमें तुमने तालीम हासिल की है. यह वह दिल्ली नहीं है जिसमें तुम शाहानबेग की हवेली में मुझसे पढ़ने आते थे. यह वह दिल्ली नहीं है जिसमें सात साल की उम्र से मैं आता जाता हूँ. यह वह दिल्ली नहीं है जिसमें 51 साल से ठहरा हुआ हूँ. एक कैम्प है. मुसलमान कमकाजी या हाकिमों के नौकर चाकर हैं, बाक़ी सब के सब हिन्दू.

"बरख़ास्त शुदा बादशाह के घराने के लोग जो बचे हैं वह पाँच-पाँच रुपया महीना पाते हैं. औरतों में से जो बुढ़िया हैं ...और जवान...! बड़े-बड़े मुसलमानों में से मरने वालों को गिनो. हसन अली खाँ, बहुत बड़े बाप का बेटा, सौ रुपया रोज़ का पेन्शनदार सौ रुपये महीने की नौकरी वाला बनकर मर गया ! अमीर नासिरुद्दीन वालिद की जानिब से आला ख़ानदान और नाना व नानी की जानिब से बहुत बड़ा अमीर था. वह बेगुनाह मारा गया ! आग़ा सुल्तान बख़्शी मोहम्मदअली ख़ाँ का लड़का जो ख़ुद बख़्शी हो चुका है, बीमार पड़ा, दवा न ग़िज़ा ! आख़ीर में मर गया ! तुम्हारे चचा के ज़रिये मरने वाले का आख़िरी काम अन्जाम दिया गया. ज़िन्दा लोगों को पूछो ! नाज़िरहुसेन मिरज़ा, जिसका बड़ा भाई मारा गया था, उसके पास एक पैसा नहीं, टके की आमदनी नहीं. मकान हालाँकि रहने को मिल गया है, लेकिन देखिये छुटा रहे या जब्त हो जाये. बुड्ढे साहब सब जायदाद बेचकर और सब कुछ खा पीकर सीधे भरतपुर चले गये. ज़ियाउद्दौला की पाँच सौ रुपये किराये की जायदाद छुट-छाटकर फिर क़ुर्क़ हो गई. बुरी हालत में लाहौर गया, वहाँ पड़ा हुआ है. देखिये, क्या होता है. क़िला, झज्जर, बहादुरगढ़, बल्लभगढ़ और फ़रुख़नगर क़रीब-क़रीब तीस लाख रुपये की रियासतें मिट गईं. शहर के अमीर मिट्टी में मिल गये...!

तज़किरा दिल्लिए मरहूम का ऐ दोस्त न छेड़;
न सुना जायगा हमसे ये फ़िसाना हरगिज़ !
चप्पे चप्पे पे हैं याँ गौहरे यक्ता तहे ख़ाक;
दफ़्न होगा न कहीं इतना ख़ज़ाना हरगिज़ !

—हाली.

لوہارو کے نواب اپنے بھانجے علاؤالدین خاں بہادر کو مرزا صاحب کا 16 فروری سن 1862 کا خط—

"اے میری جان ! یہ وہ دلی نہیں ہے جس میں تم پیدا ہوئے ہو۔ یہ وہ دلی نہیں ہے جسمیں تمنے تعلیم حاصل کی ہے۔ یہ وہ دلی نہیں ہے جسمیں تم شاہان بیگ کی حویلی میں مجھسے پڑھنے آتے تھے۔ یہ وہ دلی نہیں ہے جسمیں 7 سال کی عمر سے میں آتا جاتا ہوں۔ یہ وہ دلی نہیں ہے جسمیں 51 سال سے ٹھہرا ہوا ہوں۔ ایک کیمپ ہے۔ مسلمان کم‌کاجی یا حاکموں کے نوکر چاکر ہیں، باقی سب کے سب ہندو۔

"برخاست شدہ بادشاہ کے گھرانے کے لوگ جو بچے ہیں وہ پانچ-پانچ روپیہ مہینہ پاتے ہیں۔ عورتوں میں سے جو بڑھیا ہیں وہ...اور جوان...! بڑے-بڑے مسلمانوں میں سے مرنے والوں کو گنو۔ حسن علی خاں، بہت بڑے باپ کا بیٹا، سو روپیہ روز کا پنشن دار سو روپیہ مہینہ کی نوکری والا بنکر مر گیا ! امیر ناصرالدین والد کی جانب سے عالی خاندان اور نانا و نانی کی جانب سے بہت بڑا امیر تھا۔ وہ بے گناہ مارا گیا ! آغا سلطان بخشی محمد علی خاں کا لڑکا، جو خود بھی بخشی ہو چکا ہے، بیمار پڑا، دوا نہ غذا ! آخر میں مر گیا ! تمہارے چچا کے ذریعہ مرنے والے کا آخری کام انجام دیا گیا۔ زندہ لوگوں کو پوچھو ! ناظر حسین مرزا، جسکا بڑا بھائی مارا گیا تھا، اسکے پاس ایک پیسہ نہیں، ٹکے کی آمدنی نہیں۔ مکان حالانکہ رہنے کو مل گیا ہے، لیکن دیکھئے چھٹا رہے یا ضبط ہو جائے۔ بڑے صاحب سب جائداد بیچ کر اور سب کچھ کھا پی کر سیدھے بھرتپور چلے گئے۔ ضیاءالدولہ کی پانچسو روپیہ کرائے کی جائداد چھٹ-چھاٹ کر پھر قرق ہو گئی۔ بری حالت میں لاہور گیا، وہاں پڑا ہوا ہے۔ دیکھئے، کیا ہوتا ہے۔ قلعہ، جھجر، بہادر گڑھ، بلبھ گڑھ اور فرخ نگر قریب-قریب تیس لاکھ روپیہ کی ریاستیں مٹ گئیں۔ شہر کے امیر مٹی میں مل گئے...!"

تذکرہ دلئی مرحوم کا اے دوست نہ چھیڑ؛
نہ سنا جائیگا ہم سے یہ فسانہ ہرگز !
چپے چپے پہ ہیں یاں گوہر یکتا تہ خاک؛
دفن ہوگا نہ کہیں ایسا خزانہ ہرگز !

—حالی۔

हमारी राय

सन् सत्तावन और इतिहासकार

सारा मुल्क और हिन्दुस्तान की सरकार 1857 की आज़ादी की पहली लड़ाई की सौ साला बरसी बड़े धूम-धाम से मना रही है. 10 मई से शहीदों की याद का यह जश्न शुरू हुआ है और 16 अगस्त को ख़त्म होगा. दस मई और उसके बाद सारे मुल्क में सभायें हुई, शहीदों की यादगारें क़ायम की गई, नेताओं की मूर्तियाँ खड़ी की गई, जलसे हुये, जुलूस निकाले गये और वह सब कुछ किया गया और किया जा रहा है जो एक आज़ाद मुल्क को अपने शहीदों की याद में करना चाहिये.

इसी जश्ने-आज़ादी के दौरान में 1857 के इतिहास पर रोशनी डालते हुये मशहूर इतिहासकार डाक्टर एस. एन. सेन और डाक्टर आर. सी. मजुमदार ने दो 'मुस्तनद' किताबें लिखी हैं. पहली किताब भारत सरकार ने छापी है और दूसरी किताब ग़ैर-सरकारी तौर पर शाया हुई है. डाक्टर सेन और डाक्टर मजुमदार दोनों इतिहास के माने जाने विद्वान हैं, दोनों के आलिमाना अन्दाज़ से किसी को इन्कार नहीं हो सकता. दोनो ने अपनी सारी ज़िन्दगी तारीख़ी छान-बीन में ही खपा दी है. इसलिये 1857 के मुताल्लिक़ दोनों इतिहासकार जो कुछ कहते हैं उस पर हमें संजीदा तरीक़े से ग़ौर करना चाहिये.

डाक्टर सेन ने अपनी सरकारी किताब में 1857 के मुताल्लिक़ कुछ उसूली नतीजे निकाले हैं. सरसरी तौर पर ये नतीजे ये हैं :—

1. इसमें कोई शक नहीं कि 1857 की कोशिशों में शिरकत करने वालों में देशप्रेम का जज़बा था मगर वह जज़बा इतना मज़बूत नहीं था कि उससे इनक़लाब मुमकिन हो सकता. जनता को इनक़लाब के लिये तय्यार करने के वास्ते उसके मज़हबी जज़बातों को उभारना लाज़मी होगया थी.

2. इतिहास के हवालों की छान-बीन के बाद यह पूरी और पक्की तरह से कहा जा सकता है कि कोई हवाला

ہماری رائے

سن ستاون اور اِتہاسکار

سارا ملک اور ہندستان کی سرکار 1857 کی آزادی کی پہلی لڑائی کی سو سالہ برسی بڑے دھوم دھام سے منا رہی ہے . 10 مئی سے شہیدوں کی یاد کا یہ جشن شروع ہوا ہے اور 16 اگست کو ختم ہوگا . دس مئی اور اُس کے بعد سارے ملک میں سبھائیں ہوئیں' شہیدوں کی یادگاریں قائم کی گئیں' نیتاؤں کی مورتیاں کھڑی کی گئیں' جلسے ہوئے' جلوس نکالے گئے اور وہ سب کچھ کیا گیا اور کیا جا رہا ہے جو ایک آزاد ملک کو اپنے شہیدوں کی یاد میں کرنا چاہئے .

اسی جشن آزادی کے دوران میں 1857 کے اِتہاس پر روشنی ڈالتے ہوئے مشہور اِتہاسکار ڈاکٹر ایس. این. سین اور ڈاکٹر آر. سی. مزمدار نے دو 'مستند' کتابیں لکھی ہیں . پہلی کتاب بھارت سرکار نے چھاپی ہے اور دوسری کتاب غیر سرکاری طور پر شائع ہوئی ہے . ڈاکٹر سین اور ڈاکٹر مزمدار دونوں اِتہاس کے مانے جانے ودوان ہیں . دونوں کے عالمانہ انداز سے کسی کو اِنکار نہیں ہو سکتا . دونوں نے اپنی ساری زندگی تاریخی چھان بین میں ہی کھپا دی ہے . اِس لئے 1857 کے متعلق دونوں اِتہاسکار جو کچھ کہتے ہیں اُس پر ہمیں سنجیدہ طریقے سے غور کرنا چاہئے .

ڈاکٹر سین نے اپنی سرکاری کتاب میں 1857 کے متعلق کچھ اُصولی نتیجے نکالے ہیں . سرکاری طور پر یہ نتیجے یہ ہیں :—

1. اِس میں کوئی شک نہیں کہ 1857 کی کوششوں میں شرکت کرنے والوں میں دیش پریم کا جذبہ تھا مگر وہ جذبہ اتنا مضبوط نہیں تھا کہ اُس سے اِنقلاب ممکن ہو سکتا . جنتا کو اِنقلاب کے لئے تیار کرنے کے واسطے اُس کے مذہبی جذباتوں کو اُبھارنا لازمی ہو گیا تھا .

2. اِتہاس کے حوالوں کی چھان بین کے بعد یہ پوری اور پکی طرح سے کہا جا سکتا ہے کہ کوئی حوالہ

इस बात को साबित करने वाला नहीं मिला कि सन 57 के इनक़लाब का ख़ाका पहले से ही तय्यार कर लिया गया था या कम्पनी की हुकूमत को ख़त्म करने के लिये कम्पनी की देसी फ़ौजों और जनता में कोई साज़िशाना अहदनामा हुआ था.

3. सन 1857 के नेताओं में न कोई एकता थी और न इत्तेहाद. एक दूसरे की तरफ़ उनमें हसद का जज़बा था और एक दूसरे को नीचा दिखाने की उनकी कोशिशें बराबर जारी थीं.

4. तात्या टोपे और मौलवी अहमदुल्ला शाह को छोड़ कर सन 57 के बाक़ी नेता ज़ाती ग़रज़ और जज़बात से इनक़लाबी जंग में शामिल हुए थे. वे उस वक़्त तक अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ नहीं खड़े हुए जब तक ख़ुद उनके साथ कोई ज़्यादती नहीं हुई.

5. देशभक्तों ने सन 57 की उस पाक कोशिश को मासूमों के क़त्ल से नापाक किया लेकिन अंगरेज़ भी इस मामले में बेहतर नहीं साबित हुये.

मौलाना आज़ाद ने डाक्टर सेन की सरकारी पुस्तक की भूमिका में इस बात को साफ़ कर दिया है कि डाक्टर सेन के नतीजे अपने निजी नतीजे हैं और उनकी राय भारत सरकार की राय न समझी जाय.

दूसरी किताब डाक्टर आर सी. मजुमदार की लिखी हुई है. आज़ादी की लड़ाई का इतिहास लिखाने की ग़रज़ से सन 1952 में भारत सरकार ने इतिहासकारों की एक कमेटी मुक़र्रर की थी जिसके डाक्टर मजुमदार साहब डाइरेक्टर थे. दो बरस की कोशिशों के बाद इस कमेटी ने जो पहली जिल्द का मसविदा तैयार किया उससे किसी को तसल्ली न हो सकी. इतिहासकारों में आपस में काफ़ी मतभेद दिखाई दिया और नतीजा यह हुआ कि वह कमेटी तोड़ देनी पड़ी. मगर डाक्टर मजुमदार ने अपनी ज़ाती कोशिशें जारी रखीं और उसके नतीजे में उनकी किताब 'दि सिपाय म्युटिनी एन्ड रिवोल्ट आफ़ 1857' शाया हुई. डाक्टर मजुमदार जिन नतीजों पर पहुंचे हैं वे सरसरी तौर पर ये हैं :—

1. 1857 की कोशिशों को आज़ादी की जंग का ख़िताब देना नामुनासिब है. जंग के पीछे एक संगठन, एक मक़सद, एक अज़ीमुश्शान तैयारी, एक इत्तेहाद और एक ठोस इरादा होता है. 1857 में इनमें से कोई बात नहीं थी.

2. 1857 की कोशिशें एक तंग दायरे में ही महदूद थीं. पूरा पूरबी हिन्दुस्तान, जिसमें आसाम, बंगाल, उड़ीसा शामिल था, न सिर्फ़ 1857 के इनक़लाब में शामिल ही नहीं हुआ बल्कि 1857 की कोशिशों के साथ उनमें कोई हमदर्दी नहीं थी. दक्खिन भारत, जिसमें मद्रास, दकन और मैसूर

اِس بات کو ثابت کرنے والا نہیں ملا کہ سن 57 کے انقلاب کا خاکہ پہلے سے ہی تیار کر لیاگیا تھا یا کمپنی کی حکومت کو ختم کرنے کے لئے کمپنی کی دیسی فوجوں اور جنتا میں کوئی سازشانہ عہد نامہ ہوا تھا ۔

3. سن 1857 کے نیتاؤں میں نہ کوئی ایکتا تھی اور نہ اِتحاد ۔ ایک دوسرے کی طرف اُن میں حسد کا جذبہ تھا اور ایک دوسرے کو نیچا دکھانے کی اُن کی کوششیں برابر جاری تھیں ۔

4. تاتیا ٹوپے اور مولوی احمد اللہ شاہ کو چھوڑ کر سن 57 کے باقی نیتا ذاتی غرض اور جذبات سے اِنقلابی جنگ میں شامل ہوئے تھے ۔ وے اُس وقت تک انگریزوں کے خلاف نہیں کھڑے ہوئے جب تک خود اُن کے ساتھ کوئی زیادتی نہیں ہوئی ۔

5. دیش بھگتوں نے سن 57 کی اُس پاک کوشش کو معصوموں کے قتل سے ناپاک کیا لیکن انگریز بھی اِس معاملہ میں بہتر نہیں ثابت ہوئے ۔

مولانا آزاد نے ڈاکٹر سین کی سرکاری پستک کی بھومکا میں اِس بات کو صاف کر دیا ھے کہ ڈاکٹر سین کے نتیجے اپنے نجی نتیجے ھیں اور اُن کی رائے بھارت سرکار کی رائے نہ سمجھی جائے ۔

دوسری کتاب ڈاکٹر آر. سی. مزمدار کی لکھی ہوئی ھے ۔ آزادی کی لڑائی کا اتہاس لکھانے کی غرض سے سن 1952 میں بھارت سرکار نے اِتہاسکاروں کی ایک کمیٹی مقرر کی تھی جس کے ڈاکٹر مزمدار صاحب ڈائریکٹر تھے ۔ دو برس کی کوششوں کے بعد اِس کمیٹی نے جو پہلی جلد کا مسودہ تیار کیا اُس سے کسی کو تسلی نہ ہو سکی. اِتہاسکاروں میں آپس میں کافی مت بھید دکھائی دیا اور نتیجہ یہ ہوا کہ وہ کمیٹی توڑ دینی پڑی ۔ مگر ڈاکٹر مزمدار نے اپنی ذاتی کوششیں جاری رکھیں اور اُس کے نتیجے میں اُن کی کتاب 'دی سپائی میوٹنی اینڈ ریوولٹ آف 1857' شائع ہوئی ۔ ڈاکٹر مزمدار جن نتیجوں پر پہنچے ھیں وے سرسری طور پر یہ ھیں :—

1. 1857 کی کوششوں کو آزادی کی جنگ کا خطاب دینا نامناسب ھے ۔ جنگ کے پیچھے ایک سنگٹھن' ایک مقصد' ایک عظیم الشان تیاری' ایک اِتحاد اور ایک ٹھوس اِرادہ ہوتا ھے ۔ 1857 میں ان میں سے کوئی بات نہیں تھی ۔

2. 1857 کی کوششیں ایک تنگ دائرے میں ھی محدود تھیں. پورا پوربی ھندستان' جس میں آسام' بنگال' اڑیسہ شامل تھا' نہ صرف 1857 کے انقلاب میں شامل ھی نہیں ہوا بلکہ 1857 کی کوششوں کے ساتھ اُن میں کوئی ھمدردی نہیں تھی ۔ دکشن بھارت' جس میں مدراس' دکن اور میسور

वग़ैरह रियासतें शामिल हैं, 1857 में बिलकुल ख़ामोश रहा अलबत्ता महाराष्ट्र में इक्का-दुक्का वारदातें हुई लेकिन दिली तौर पर उसकी हमदर्दी 1857 की इनक़लाबी कोशिशों के साथ थी. राजस्थान और उस सूबे में, जो अब मध्य प्रदेश कहलाता है, फ़ौजों और जनता में जगह-जगह बहुत छोटे पैमाने पर उभार हुए मगर वे फ़ौरन दबा दिये गये. पंजाब में फ़ौजों ने बग़ावत की मगर उसे फ़ौरन कुचल दिया गया सिखों को बेहद तसल्ली थी और उन्होंने पूरी तरह, बग़ावत के दबाने में, अंगरेज़ों का साथ दिया.

3. मुल्क के उस हिस्से में, जो अब उत्तर प्रदेश कहलाता है, बेशक अंगरेज़ी सत्ता को समाप्त कर दिया गयाथा लेकिन उसके बाद जो कैफ़ियत वहाँ बरपा हुई उसमें 'जिसकी लाठी उसी की भैंस' का बोलबाला था. चारों तरफ़ अराजकता, बटमारी, डकैती, लूटमार जारी थी पदच्युत ज़मींदारों, ताल्लुक़ेदारों, गद्दी से निकाले हुये नवाबो की बन आई थी लुटेरे गूजरों के पौ बारह थे ग़रज़ यह कि चारो तरफ़ त्राहि-त्राहि और हाय तौबा मची हुई थी कोई किसी को सेंटता नहीं था.

4 समकालीन यानी उस ज़माने के लेखकों—सर सैयद अहमद, किशोरीचन्द्र मित्रा, हरिशचन्द्र मुकर्जी, या कृष्ण दास पाल के बयानो के मुताबिक़ भारत की जनता की हमदर्दी अंगरेजो के साथ थी अगरेज़ी राज को वापस लाने के लिये लोग ईश्वर से दुआयें माँग रहे थे इस सिलसिले में डाक्टर मजुमदार ने मैनुद्दीन, जीवनलाल मुन्शी, और दुर्गादास बन्द्योपाध्याय की डायरियो का हवाला दिया है. कहा जाता है कि ये लाग उस ज़माने में मौजूद थे और इन्होंने आँखों देखा हाल बयान किया है, बाग़ियों की फ़ौजें भाड़े के ट ्ओं से भरी हुई थी

5. बाग़ियो में न कोई एक ध्येय या मक़सद था न वे इत्तहाद और एकता से काम कर रहे थे काफ़ी लम्बे अरसे तक अवध का सूबा आज़ाद रहा मगर फिर भी बाग़ी अपनी बाज़ाब्ता सरकार न बना सके. बहादुरशाह ने दिल्ली में अपने को बादशाह ऐलान कर दिया और नाना साहब ने कानपुर में अपने को ख़ुदमुख़्तार पेशवा ताल्लुक़ेदार आपस में ही एक दूसरे के साथ लड़कर कट मर रहे थे

6 1857 में हिन्दू मुसलिम दगे भी जहाँ तहाँ हो रहे थे और दोनों क़ौमें एक दूसरे के ऊपर ज़ुल्म ढा रही थीं.

7. डाक्टर मजुमदार आख़ीर मे यह फ़रमाते हैं कि ऐसा नहीं कि सन 1857 मं सब बाग़ी, लुटेरे, डकैत और ख़ुदग़रज ही थे. बल्कि कुछ लोग देश भक्त भी थे इन देश-भक्तों में वे मौलवी अहमदउल्ला शाह का सबसे ऊँचा देश-भक्त मानते हैं.

وغیرہ ریاستیں شامل ہیں' 1857 میں بالکل خاموش رہا۔ البتہ مہاراشٹر میں اکا دوکا وارداتیں ہوئیں لیکن دلی طور پر اُس کی ہمدردی 1857 کی انقلابی کوششوں کے ساتھ تھی۔ راجستھان اور اُس صوبے میں' جو اب مدھیہ پردیش کہلاتا ہے' فوجوں اور جنتا میں جگہہ جگہہ بہت چھوٹے پیمانے پر اُبھار ہوئے مگر وے فوراً دبا دیئے گئے۔ پنجاب میں فوجوں نے بغاوت کی مگر اُسے فوراً کچل دیا گیا۔ سکھوں کو بیحد تسلی تھی او انہوں نے پوری طرح' بغاوت کے دبانے میں' انگریزوں کا ساتھ دیا۔

3. ملک کے اُس حصے میں' جو اب اتر پردیش کہلاتا ہے' بےشک انگریزی ستا کو سماپت کردیا گیاتھا لیکن اُس کے بعد جو کیفیت وہاں برپا ہوئی اس میں جس کی لاٹھی اُس کی بھینس' کا بول بالا تھا۔ چاروں طرف اراجکتا' بٹماری' ڈکیتی' لوٹ مار جاری تھی پدچیوت زمینداروں' تعلقہ داروں' گدی سے نکالے ہوئے نوابوں کی بن آئی تھی لٹیرے گوجروں کے دوبارہ تھے۔ غرض یہ کہ چاروں طرف تراھی تراھی اور ھائے توبہ مچی ہوئی تھی۔ کوئی کسی کو سینٹتا نہیں تھا۔

4. سمکالین یعنی اُس زمانے کے لیکھکوں—سرسید احمد' کشوری چندر مترا' ہرشچندر مکرجی' یا کرشن داس پال کے بیانوں کے مطابق بھارت کی جنتا کی ہمدردی انگریزوں کے ساتھ تھی۔ انگریزی راج کو واپس لانے کے لئے لوگ ایشور سے دعائیں مانگ رہے تھے اس سلسلے میں ڈاکٹر مزمدار نے معین الدین' جیون لال منشی' اور درگا داس بندوپادھیائے کی ڈائریوں کا حوالہ دیا ہے کہا جاتا ہے کہ یہ لوگ اُس زمانے میں موجود تھے اور انہوں نے آنکھوں دیکھا حال بیاں کیا ہے' باغیوں کی فوجیں بھاڑے کے ٹٹوؤں سے بھری ہوی تھیں۔

5. باغیوں میں نہ کوئی ایک دھییئے یا مقصد تھا نہ وے اتحاد اور ایکتا سے کام کر رہے تھے کافی لمبے عرصے تک اودھ کا صوبہ آزاد رہا مگر پھر بھی باغی اپنی باضابطہ سرکار نہ بنا سکے۔ بہادر شاہ نے دلی میں اپنے کو بادشاہ اعلان کر دیا اور نانا صاحب نے کانپور میں اپنے کو خودمختار پیشوا۔ تعلقہ دار آپس میں ہی ایک دوسرے کے ساتھ لڑ کر کٹ مر رہے تھے۔

6. 1857 میں ہندو مسلم دنگے بھی جہاں تہاں ہو رہے تھے اور دونوں قومیں ایک دوسرے کے اوپر ظلم ڈھا رہی تھیں۔

7. ڈاکٹر مزمدار آخیر میں یہ فرماتے ہیں کہ ایسا نہیں کہ سن 1857 میں سب باغی' لٹیرے' ڈکیت اور خود غرض ہی تھے۔ بلکہ کچھ لوگ دیش بھگت بھی تھے۔ ان دیش بھگتوں میں وے مولوی احمد اللہ شاہ کو سب سے اونچا دیش بھگت مانتے ہیں۔

सरसरी तौर पर ये है इन दोनों किताबों का ख़ुलासा. सवाल यह उठता है कि इन दोनों किताबों के लिखने में कौन से पुराने रिकार्ड, दस्तावेज़ों, ग्रन्थों, तारीख़ों पुस्तकों वग़ैरह का सहारा लिया गया? इन किताबों के लिखने में ख़ास तौर पर जिन ग्रन्थों का सहारा लिया गया है वे ये हैं:—सर जान के की लिखी—'हिस्ट्री आफ़ दी सिपाय म्युटिनी,' तीन जिल्दों में; सर चार्ल्स बाल की लिखी—'दि हिस्ट्री आफ़ इन्डियन म्युटिनी'; होम्स की लिखी—'द हिस्ट्री आफ़ दी इन्डियन म्युटिनी...'; फ़ारेस्ट की लिखी—'द हिस्ट्री आफ़ दी इन्डियन म्युटिनी, तीन जिल्दों मे; इनके अलावा पंजाब के काग़ज़ातों में मिली—'ट्रायल आफ़ बहादुरशाह' मुक़द्दमे की मिसिल, भारत सरकार के फ़ौजी दफ़्तर में महफ़ूज़—अफ़सरों के ख़त, ख़रीते, सरकारी ऐलान वग़ैरह चार जिल्दों में और उस ज़माने के लोगों की लिखी किताबें और डायरियाँ.

सवाल यह है कि क्या ये सरकारी काग़ज़ात, ख़त, ख़रीते, अंगरेज़ों की लिखी तारीख़ें, कम्पनी के हिन्दुस्तानी अफ़सरों की लिखी किताबें और डायरियाँ (सर सय्यद भी कम्पनी की ओर से उस ज़माने में इटावे के कलक्टर थे) सन 1857 की अज़ीमुश्शान तहरीक और उसके नेताओं पर फ़ैसला देने के लिये काफ़ी हैं? क्या इस इकतर्फ़ा मसाले पर कोई भी मुन्सिफ़ मिज़ाज जज किसी के मुताल्लिक़ कोई फ़ैसला दे सकता है? 1857 को अभी मुश्किल से सौ बरस बीते हैं. उत्तर भारत के हर घर मे बड़ी बूढ़ी नानी और दादी उस ज़माने का आँखो देखा हाल सुनाया करती थीं. पार्लिमेंट की वह तमाम बहस अब भी मौजूद है जिसमें लार्ड कैनिंग की लानत मलामत करने की वजह से पार्लिमेंट में उस ज़माने के ब्रिटिश मंत्रि मन्डल पर विरोधी दल ने अविश्वास का प्रस्ताव पेश किया था. ग़ैर सरकारी अख़बारों की फ़ाइलें अब भी ब्रिटिश म्यूज़ियम में मौजूद हैं. गली-गली और गाँव-गाँव में उस ज़माने की परम्परागत भावनाएँ ढूढ़ी जा सकती हैं. मुख़्तसिर में हमारे कहने का मतलब यह कि सन 1857 की तहरीक पर इन दोनों किताबो को आख़री लफ़्ज़ नहीं समझना चाहिये. डाक्टर सेन और डाक्टर मजुमदार की छानबीन, हमारी नाक़िस राय में क़तई सतही है. जल्दबाज़ी में न तो उन्होंने सही वाक़यात का अन्दाज़ा लगाया है और न हवालों को तोला है. उस समय के इतिहाकारों की नफ़रत, गुस्सा, डर और ख़ुशामद के जज़बात के मातहत लिखी हुई चीज़ों में से वे सच और झूठ की छान बीन करने में चूक गये.

सवाल यह है कि आख़िर ऐसी सूरत में किया क्या जाय? क्या हम 1857 की जंग और उसके नेताओं पर हिक़ारत का यह लबादा पड़ा रहने दें या सच और झूठ के अम्बार में से हँस की तरह दूध और पानी अलग करने की

سرسری طور پر یہ ہے اِن دونوں کتابوں کا خلاصہ۔ سوال یہ اُٹھتا ہے کہ اِن دونوں کتابوں کے لکھنے میں کون سے پرانے ریکارڈ، دستاویزوں، گرنتھوں، تاریخوں، پستکوں وغیرہ کا سہارا لیا گیا؟ اِن کتابوں کے لکھنے میں خاص طور پر جن گرنتھوں کا سہارا لیا گیا ہے وے یہ ہیں:—سرجان کے کی لکھی—'ہسٹری آف دی سپائے میوٹنی' تین جلدوں میں؛ سرچارلس وال کی لکھی—'دی ہسٹری آف اِنڈین میوٹنی'؛ ہومس کی لکھی—'اے ہسٹری آف دی اِنڈین میوٹنی...'؛ فاریسٹر کی لکھی—'اے ہسٹری آف دی انڈین میوٹنی' تین جلدوں میں؛ اِن کے علاوہ پنجاب سرکار کے کاغذوں میں ملی—'ٹرائل آف بہادرشاہ' مقدمے کی مثل؛ بھارت سرکار کے فوجی دفتر میں محفوظ—افسروں کے خط، خریتے، سرکاری اعلان وغیرہ چار جلدوں میں؛ اور اُس زمانے کے لوگوں کی لکھی کتابیں اور ڈائریاں۔

سوال یہ ہے کہ کیا یہ سرکاری کاغذات، خط، خریتے، انگریزوں کی لکھی تاریخیں، کمپنی کے ہندستانی افسروں کی لکھی کتابیں ڈائریاں (سر سید بھی کمپنی کی اور سے اُس زمانے میں اِٹاوہ کے کلکٹر تھے) سن 1857 کی عظیم الشان تحریک اور اُس کے نیتاؤں پر فیصلہ دینے کے لئے کافی ہیں؟ کیا اس اک طرفہ مسالے پر کوئی بھی منصف مزاج جج کسی کے متعلق کوئی فیصلہ دے سکتا ہے؟ 1857 کو ابھی مشکل سے سو برس بیتے ہیں۔ اُتر بھارت کے ہر گھر میں بڑی بوڑھی نانی اور دادی اُس زمانے کا آنکھوں دیکھا حال سنایا کرتی تھیں۔ پارلیمنٹ کی وہ تمام بحث اب بھی موجود ہے جس میں لارڈ کیننگ کی لعنت ملامت کرنے کی وجہ سے پارلیمنٹ میں اُس زمانے کے برٹش منتری منڈل پر وِرودھی دل نے اوشواس کا پرستاؤ پیش کیا تھا۔ غیر سرکاری اخباروں کی فائلیں اب بھی برٹش میوزیم میں موجود ہیں۔ گلی-گلی اور گاؤں-گاؤں میں اُس زمانے کی پرمپراگت بھاؤنائیں ڈھونڈھی جا سکتی ہیں۔ مختصر میں ہمارے کہنے کا مطلب یہ کہ سن 1857 کی تحریک پر ان دونوں کتابوں کو آخری لفظ نہیں سمجھنا چاہئے۔ ڈاکٹر سین اور ڈاکٹر مجمدار کی چھان بین ہماری ناقص رائے میں قطعی سطحی ہے۔ جلدبازی میں نہ تو اُنہوں نے صحیح واقعات کا اندازہ لگایا ہے اور نہ حوالوں کو تولا ہے۔ اُس سمے کے اتہاسکاروں کی نفرت، غصہ، ڈر اور خوشامد کے جذبات کے ماتحت لکھی ہوئی چیزوں میں سے وے سچ اور جھوٹ کی چھان بین کرنے میں چوک گئے۔

سوال یہ ہے کہ آخر ایسی صورت میں کیا کیا جائے؟ کیا ہم سن 1857 کی جنگ اور اُسکے نیتاؤں پر حقارت کا یہ لبادہ پڑا رہنے دیں یا سچ اور جھوٹ کے انبار میں سے ہنس کی طرح دودھ اور پانی الگ کرنے کی

कोशिश करें ? क्या हिन्दुस्तान में वह बड़ी ही इतिहासकार हैं ? अगर नहीं तो क्या दूसरे इतिहासकार हमारी प्रार्थना सुनेंगे ? यदि हाँ तो क्या 1857 की शानदार कोशिशों को साफ सुथरी शक्ल में भारत की जनता के सामने वे पेश करेंगे ?

—विश्वम्भरनाथ पांडे.

کوشش کریں ؟ کیا ہندوستان میں ایسے ہی اتہاسکار ہیں ؟ اگر نہیں تو کیا دوسرے اتہاسکار ہماری پرارتھنا سنینگے ؟ یدی ہاں تو کیا وے 1857 کی شاندار کوششوں کو صاف ستھری شکل میں بھارت کی جنتا کے سامنے وے پیش کرینگے ؟

—وشومبھر ناتھ پانڈے .

खामोश इनक़लाब

जब कि उत्तर भारत में [illegible] को 1817 की जंगे आज़ादी का सौ साला जश्न मनाया जा रहा था दक्खिन भारत में, शंकराचार्य की जन्मभूमि कालड़ी में, आचार्य विनोबा भावे की रहनुमाई में सर्वोदय सम्मेलन हो रहा था. उस सम्मेलन में जो सब से अहम तजवीज़ पास हुई वह यह थी :—

"अब सन 57 के साल में हमें अपनी पूरी ताक़त ग्राम-दान के काम में लगानी है. 57 का साल हमारे मुल्क की तारीख़ में एक अनोखी अहमीयत रखता है. भारत की जनता के दिलों में यह ख़ाहिश पैदा हुई है कि यह सन 57 का साल भारत की ज़िन्दगी का नया पल्टा देने वाला साल साबित हो. लेकिन जनता की यह ख़ाहिश तभी पूरी हो सकती है जब मुल्क में गान्धी जी की उम्मीदों का 'ग्राम राज' क़ायम हो. ग्राम दान में ही यह ग्राम राज क़ायम करने की ताक़त है ख़ुशी की बात है कि ग्राम दान विचार ने एक ठोस शक्ल ले ली है देश की तमाम राजनैतिक पार्टियों और विचारकों ने इसका स्वागत किया है. हम सबको ग्राम दान आन्दोलन को आगे बढ़ाने में अपनी पूरी ताक़त लगा देनी चाहिये.

ग्रामदान की तहरीक शुरू हुये अभी मुशकिल से साल भर बीता होगा कि ढाई हज़ार गाँव इस ग्रामदान की तहरीक से आचार्य विनोबा को हासिल हो चुके हैं. अन्दर अन्दर मुल्क में ग्रामदानों के ज़रिये वह ख़ामोश भूक्रान्ति ज़मीन के बटवारे का इनक़लाब पूरा हो जाना चाहिये जो किसी भी समाजवादी जम्हूरी हुकूमत की जड़ों को पुख़्ता बनाने के लिये ज़रूरी है. दूसरे मुल्कों ने यह काम रक्तमय क्रान्ति से किया है जबकि हिन्दुस्तान, गान्धी जी के महान शागिर्द विनोबा भावे की रहनुमाई में, वही काम एक शान्ति पूर्ण ख़ामोश इनक़लाब की शक्ल में कर रहा है.

—वि. ना. पांडे.

خاموش انقلاب

جب کہ اتر بھارت میں دس مئی کو 1857 کی جنگ آزادی کا سوسالہ جشن منایا جا رہا تھا دکھن بھارت میں' شنکرا-چاریہ کی جنم بھومی کالڑی میں' آچاریہ ونوبا بھاوے کی رہنمائی میں سرودے سمیلن ہو رہا تھا . اس سمیلن میں جو سب سے اہم تجویز پاس ہوئی وہ یہ تھی :—

"اب سن 57 کے سال میں ہمیں اپنی پوری طاقت گرام دان کے کام میں لگانی ہے . 57 کا سال ہمارے ملک کی تاریخ میں ایک انوکھی اہمیت رکھتا ہے . بھارت کی جنتا کے دلوں میں یہ خواہش پیدا ہوئی ہے کہ یہ سن 57 کا سال بھارت کی زندگی کو نیا پلٹا دینے والا سال ثابت ہو . لیکن جنتا کی یہ خواہش تب ہی پوری ہو سکتی ہے جب ملک میں گاندھی جی کی امیدوں کا 'گرام راج' قایم ہو . گرام دان میں ہی یہ گرام راج قایم کرنے کی طاقت ہے . خوشی کی بات ہے کہ گرام دان کے وچار نے ایک ٹھوس شکل لے لی ہے . دیش کی تمام راجنیتک پارٹیوں اور وچاروں نے اس کا سواگت کیا ہے . ہم سب کو گرام دان آندولن کو آگے بڑھانے میں اپنی پوری طاقت لگا دینی چاہئے ."

گرام دان کی تحریک شروع ہوئے ابھی مشکل سے سال بھر بیتا ہوگا کہ ڈھائی ہزار گاؤں اس گرام دان کی تحریک سے آچاریہ ونوبا کو حاصل ہو چکے ہیں . آچاریہ ونوبا چاہتے ہیں کہ سن 57 کے سال کے اندر-اندر ملک میں گرام دانوں کے ذریعہ وہ خاموش بھو کرانتی' زمین کے بٹوارے کا انقلاب پورا ہو جانا چاہئے جو کسی بھی سماج وادی جمہوری حکومت کی جڑوں کو پختہ بنانے کے لئے ضروری ہے . دوسرے ملکوں نے یہ کام خونی انقلاب سے کیا ہے جب کہ ہندوستان گاندھی جی کے مہان شاگرد ونوبا بھاوے کی رہنمائی میں وہی کام ایک شانتی پورن خاموش انقلاب کی شکل میں کر رہا ہے .

—وی. نا. پانڈے .